श्रीगणाधिपायनमः॥ **श्रीहनुमानपताका॥** श्रीहनुमतये नमः॥

दोहा.
वायु पुत्र महावीर को विधि सों पूजै कोय, अर्थ धर्म सब कामना प्राप्त होहिं नर सोय १

नरपति जयचर्या याम्. (१)

नरपति जयचर्या याम्. (२)

प्रकट हो.

कि यह (हनुमान पताका) नरपतिजयचर्या नामक ग्रन्थ से निकाल कर अति परिश्रम करके रचना की है जिन पुरुषों को अपना कार्य सिद्ध करना हो वह अच्छे विद्वान् मंत्र शास्त्र के जानने वाले सत्यवादी हरि भक्त पण्डित से जो कि इस की विधि संस्कृत श्लोकों में इसी में लिखा है अच्छे दिन व मुहूर्त में विधि पूर्वक पूजन करावे अथवा पण्डित से पूछ कर आप खुद करें तो उस का सब कामना सिद्धि हो कर सदैव विजय की प्राप्ति होगा न हो सकै तो शुद्ध मनसा से विश्वास युक्त इस (हनुमानपताका) का दर्शन व स्मरण करके कार्य करें तो संसार में कोई पदार्थ ऐसी नहीं है कि न प्राप्त हो सकै किंतु सब प्राप्त हो सक्ती है, इस में किंचित्मात्र भी सन्देह नहीं है इसलिये सर्व जनों को चाहिये कि यह (हनुमान पताका) की एक २ प्रति ले कर अपने घर विशेष कर के श्रद्धाभक्ति से पूजा व स्मरण करें तो मन वांछित फल पा कर भूत प्रेतादिक की महा बाधाओं से निर्भय रहेंगे इति॥

हनुमतयेनमः
कालराज्ञैनमः
महामारीनमः
खगाधिपायनमः

भैरवायनमः
क्षेत्रपालायनमः
[illegible]नमः
गणनायकायनमः



[illegible] नमामि नामरामायणं॥ सकल[illegible]धाम स्वर्णशैलाभदेहं दनुजवन[illegible] ज्ञानिनामग्रगण्यं [illegible] वातजातं नमामि॥ १॥

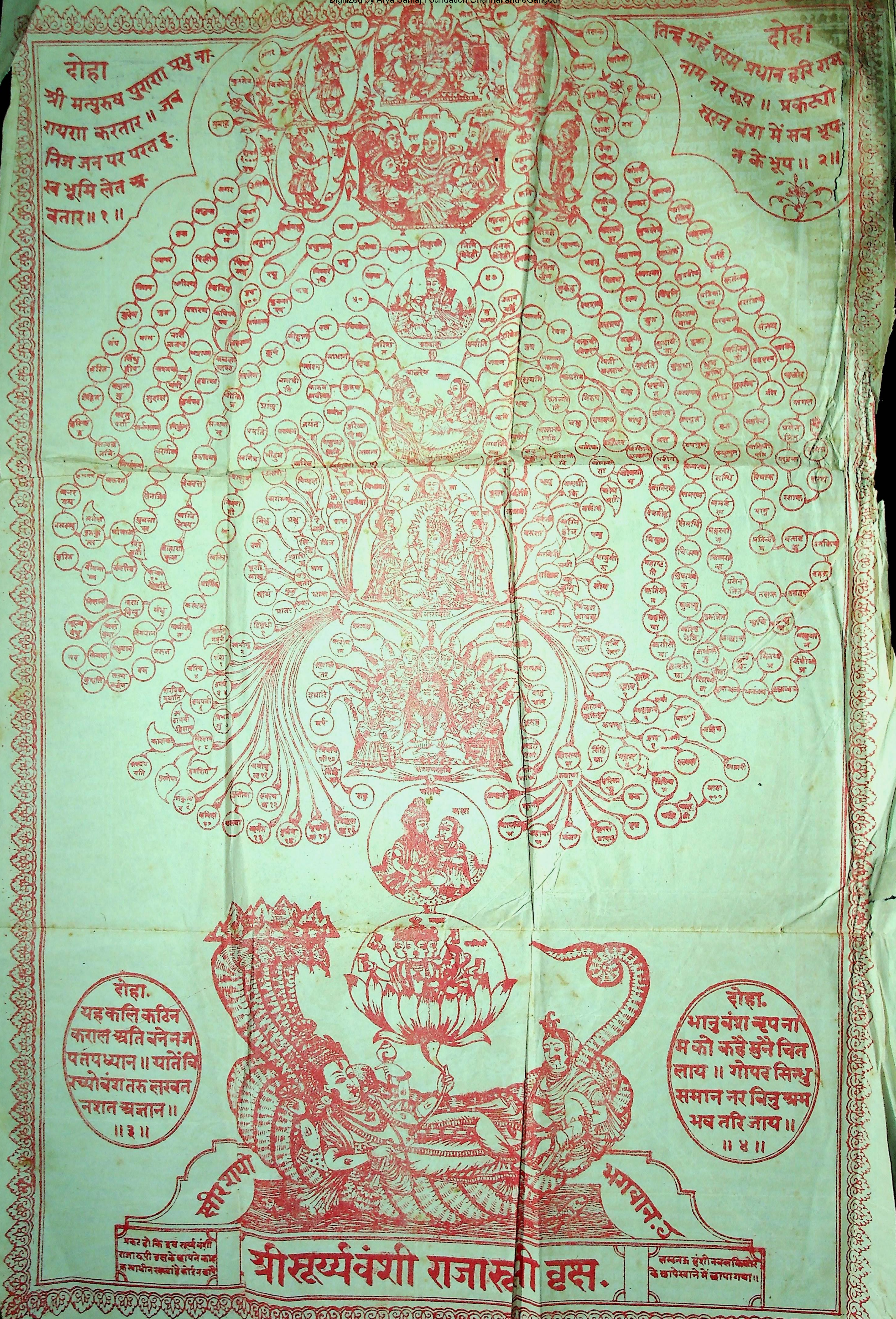
मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठं॥ वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये॥ २॥

भंजयभंजयस्वः स्वः रैंरैं हुं फट्॥ इतिमालामंत्रः॥ [illegible] संख्यया १० स्तंभनीमोहनीचैवरोधनीभंजनीतथा॥ [illegible] १२ [illegible]॥ [illegible] १३ [illegible]॥

होमंकुर्यात्[illegible] २७ कुमारीभोजये[illegible]॥ आचार्यंदक्षिणा[illegible] २८ [illegible] २९ [illegible] ३० नपतिस्य[illegible] ३१ हनुमंतपताकेयं[illegible]परिसंस्थिता॥ धारितासा[illegible] ३२ नस्या दर्शनमात्रेण॥ व्याकुलीभूतमानसा॥ नश्यंति रिपवस्तस्य सिंहस्येव मृगायथा॥ ३३॥ ॥इतिहनुमत्पताकाः समाप्ता॥

अथरक्षाः॥ अथरक्षांप्रवक्ष्यामि सर्व्वसिद्धिप्रदायिकाम्॥ [illegible] १॥ रोचनाकुंकुमाभ्यांच भूर्जपत्रेसुशोभने॥ [illegible] लिखेत॥ २॥ [illegible]॥ मालामंत्रंचतत्र्यैवत्रिधाग्रीकारवेष्टितम्॥ ३॥ त्रिलोहवेष्टितं [illegible] ४॥ [illegible]॥ [illegible] ५॥ उपसर्गादि [illegible] ६॥ [illegible] उपग्रहाः॥ जलवन्हिभयंनास्ति [illegible] ७॥ ज्वराः सर्वेप्रनश्यंति [illegible]॥ [illegible] सर्वोपद्रवनाशिनी॥ ८॥ ॥इतिरक्षाः॥

नवल किशोर प्रेस लखनऊ में छपी.
इसकाहक़ बहक़ स्वाधीनरकखाहै कोई नछापे॥


दोहा
श्री मनुरूप पुराण प्रभु ना-
रायण करतार ॥ जब
निज जन पर परत दु-
ख भूमि लेत अ-
वतार ॥ १ ॥
दोहा
तिन्ह महँ परम प्रधान हरि राम
नाम नर रूप ॥ प्रकट्यो
सूरज वंश में सब भूप-
न के भूप ॥ २ ॥
दोहा.
यह कालि कठिन
कराल अति वेनेन ज
पतप ध्यान ॥ यातें वि
रच्यो वंश तरु लखत
नशत अज्ञान ॥
॥ ३ ॥
दोहा.
भानु वंश नृप ना
म को कहै सुनै चित
लाय ॥ गोपद सिन्धु
समान नर बिनु श्रम
भव तरि जाय ॥
॥ ४ ॥
क्षीरशायी
भगवान.
श्रीसूर्य्यवंशी राजारूपी वृक्ष.

रामायण

गोस्वामि तुलसीदासकृत

जिसमें नीचे लिखीहुई रीति से संग्रह है

१ तुलसीदासजी का जीवनचरित्र २ रामायणकी प्रशंसा
३ सङ्कटमोचन ४ रामबारहखड़ी ५ बजरङ्गबाण ६ रामा-
यणमाहात्म्य ७ पूरीरामायण क्षेपकसहित ८ आरती
श्रीरामायणजीकी ९ आठवांलवकुशकाण्ड
१० श्रीसीतारामजीके बनवास की जन्त्री
११ सप्तदेवस्तुति १२ सङ्केतकोष

यह अपूर्व रामायण की प्रति अबतक जिसकदर
रामायण छापीगई हैं उन सबसे प्रशंसनीय है

उन्तीसवींबार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के
छापेखाने में छपी सन् १९०२ ई० ॥

इस मतबे में जितने प्रकारकी रामायण छपी हैं उनमें से कुछ इसमें लिखी हैं ॥

यह प्रसिद्ध पुस्तक गोस्वामि तुलसीदासजी की काव्य भारतवर्ष में है जिसके पढ़ने पढ़ाने से मनुष्य इस लोक में जीवन्मुक्त होकर अन्त में मुक्ति पाता है और इसके काण्ड पाठशालाओं में भी पढ़ाये जाते हैं और यह पुस्तक हरएक के घरमें होनी चाहिये और बहुत से छापेखानों में यह पुस्तक लाखोंशति छपी है इस छापेखाने में बहुतसे रूपों में यह पुस्तक छपी है सो नीचे लिखे के अनुसार यह पुस्तक मिलेगी ॥

रामायण मूल तुलसीकृत बहुत मोटे अक्षरों की ॥

बहुत मोटे अक्षरों में है जिसको बालक और वृद्ध सुगमता से पढ़सक्ते हैं ऐसे मोटे अक्षरों की आजतक कहीं नहीं छपी तसवीरों और क्षेपक समेत है ॥

रामायण मूल तुलसीकृत ॥

जो बहुतसी प्रतियों से शुद्ध कीगई कोई दोहा चौपाई रहने नहीं पाय और इसके काण्ड अलग अलग भी मिलते हैं ॥

रामायण तुलसीकृत टीका सुखदेवलालकृत ॥

इस टीका को मैनपुरीनिवासि श्रीसुखदेवलालजी नेरचा है इसमें सबसे उत्तमगुण यहहै कि श्रीगोस्वामि तुलसीदासजी महाराजकी रामायणके अर्थ को स्पष्टरीति से सरल देशभाषा में बखाना है न्यूनाधिक्य नहीं किया ॥

विज्ञापनपत्र ॥

विदित हो कि इस समयपर्यंत तक अनेकबार श्रीगोसाईं तुलसीदासकृतरामायणकी पुस्तकें हरेकप्रकारसे इसछापेखानेमेंछापीगईहैं और विद्यागुणग्राहक व रामभक्त्यनुरागी पुरुषोंने उनको आदरसे लिया और अवलोकन किया अबकी बार उन्हीं महज्जनों व विद्यारसामृतस्पर्शियों के विशेषानुराग से अवलोकन करने के लिये नवीन युक्ति से यह रामायण तय्यार कीगई है जिसके प्रत्येक काण्ड के आदिमें एक चित्र उसकाण्डकी सम्पूर्ण कथाका संक्षेपरूपकसे नियुक्तकियागयाहै और उत्तरकाण्ड के पश्चात् आवांकाण्ड रामाश्वमेध की कथा का संयुक्त किया गया है जिसमें रामचन्द्र के जानकी परित्याग व श्रीरामकुमार लवकुश और राम लच्मण भरत व शत्रुघ्नका परस्पर भयंकर युद्ध व श्रीरामचन्द्रकृत अश्वमेध यज्ञकी उत्तम कथा अच्छेप्रकार वर्णित है और अकारादि कोष सम्पूर्ण रामायण के कठिन शब्दोंका भी लगायागयाहै जिसके देखनेसे किसीतरह की शंका शब्द के समझने में बाक़ी नहीं रहती है और श्रीरामचन्द्र व जानकीजी के चतुर्दश वर्ष वनवास की यंत्री प्रत्येक तिथि मास की संयुक्त है आशा है कि रामरसरसिकपुरुष आदर से ग्रहण करेंगे--

मालिक मतबा अवधअख़बार
लखनऊ

सूचीपत्र रामायणतुलसीदासकृत बालकाण्ड

इति ॥

तुलसीकृतरामायणमाहात्म्यम् ॥

दो० गुरु हरि हर गणईश धी, सुमिरौं तुलसीदास ।
करत गोपाल महात्म्यश्री, रामायण सुखरास ॥

रामायण सुरतरु की छाया । दुखभयदूरि निकट जो आया ॥
सप्तकाण्ड स्कंध सोहाई । दोहा लघु शाखा छबिछाई ॥
शुचि सोरठा सीटका कोई । पत्री बहु चौपाई जोई ॥
छंदन की शोभा अति रूरी । जनु नवीन अंकुर छबिपूरी ॥
अक्षर सुमन रहे गहगाई । अति अद्भुत सुगंध कवितांई ॥
विविध प्रकार अर्थ सोई फल । श्रोता सुमनि स्वाद जानैभल ॥
भक्ति ज्ञान वैराग्य सरस रस । बीज दोय निर्गुण सगुण अस ॥
मुनिभुशुण्डि शिवप्रथमहिगाई । सोइ गाई जगहेत गोसांई ॥

दो० तुलसिदास रामायण, नहिं करते अनुसार ।
कलिके कुटिल जीव ये, को करतो निस्तार ॥

रामायण सुरधेनु समाना । दायकअभिमत फलकल्याना ॥
गुणसमूह कवि सकै कौनगनि । जासु प्रभाव सरिस चिंतामनि ॥
राम अयंन रामायन आही । वरणि पार पावै को ताही ॥
रामायण अद्भुत फुलवारी । राम भ्रमर भूषित रुचिभारी ॥
श्री रामायण जेहि घरमाहीं । भूत प्रेत तहँ भूलि न जाहीं ॥
नहिं गमि तहां दरिद्रहु केरी । तहँ श्रीमहावीर की फेरी ॥
यन्त्र मन्त्र सगुनौती जेती । रामायण महँ जानिय तेती ॥
प्रीतिकरै रामायण माहीं । तेहिसम भाग्यवन्तकोउनाहीं ॥

दो० रामायण सम नहिं कऊ, सब उपमा उपमेय ।
उपमा भाषा और की, कैसे कोऊ देय ॥

त्रेता महँ भये बालमीकिमुनि । तेकलयुगभयेतुलसिदासपुनि ॥

१ कल्पवृक्ष २ पात ३ मञ्जरी ४ नया ५ पुष्प ६ दूध ७ वाञ्छित ८ घर ९ भौंरा ॥

सत करोरि रामायण भाखी। इन मथि सार सुसूक्ष्म राखी ॥
प्रथम काण्ड है बाल रसीला। जन्म बिवाह रामकी लीला ॥
द्वितियअयोध्याकाण्ड प्रकासा। पितुआज्ञा रघुवर बनवासा ॥
पुनि अरण्य किष्किधा भाख्यो। तहँ सुग्रीव शरण महँ राख्यो ॥
सुन्दर सुन्दरकाण्ड सुहावन। युद्धकाण्ड महँ मारेउ रावन ॥
सप्तम उत्तर परम अनूपा। उत्सव प्रभु कोशलपुर भूपा ॥
तुलसीकृत रामायण येती। विविध प्रकार कथाहै केती ॥

दो० जग वारिधि को पार नहिं, ऐसो है फैलाव।
तुलसीदास कृपाकरि, रचि रामायण नाव ॥

श्री रामायण स्वर्ग निसेनी। भक्तजननकहँ आनँद देनी ॥
श्री रामायण सद्गुण माता। अज्ञं जाहि पढ़ि होहिं सुज्ञाता ॥
पाप समूह तूलै की राशी। रामायण धनंज्यकनकाशी ॥
मोहपुंज तमकिरणि तमारी। कामअग्नि कहं शीतलवारी ॥
रामायण शशिकिरणि सुहाई। संत चकोरन कहं सुखदाई ॥
धन्यधन्य श्री तुलसिदासधनि। जगहित रामायण राखीभनि ॥
नीच ऊंच जेते नर नारी। श्रीरामायण सब कहँ प्यारी ॥
रामायण सों नेह लगावैं। अधनअपत्यसो वित्तसुतपावैं ॥

दो० रामायणसों नेहकिय, सिद्धिहोत सब काम।
है सब की कल्याणदा, पढु सुनु लहु विश्राम ॥

निगमादिक तेइ ब्रह्म कमंडल। रमायण स्थित तहँ गंगाजल ॥
भागीरथसम तुलसिदास पुनि। भाषा प्रचुरकीन जनुसुरधुनि ॥
होतरहे एकठांव रमायण। तेहि मग आवत पापपरायण ॥
कतुक कानमहँ परिगइ बाता। चलत पंथ कहुं भयेपपाता ॥
गिरतहि तुरत छूटितनगयऊ। तहं अद्भुतइकअचरजभयऊ ॥
ताहि लेन आये यमदूता। निज पाशन बांध्यो मजबूता ॥
अति आतुर हरिजन तहंआये। छीनलीन बहु त्रास दिखाये ॥

१ उपमारहित २ समुद्र ३ सूर्य ४ रुई ५ सूर्य ६ धन ७ रास्ता ॥

रामायणपै सुनि यहि काना। लै जैहै बैठारि विमाना॥

दो० रामायण परतापसों, गयो पार्षद नाथ।
दूत चले यमके सदनै, खीझत मींजत हाथ॥

निज दूतन देखेउ बिलखाता। पूछी भानुतनय कुशलाता॥
किन तुमकहं दीन्हो दुखभाई। चारै चतुर तुम देहु बताई॥
कहा कहैं तुमसों महराजा। पूछत तुमहिं न आवत लाजा॥
कोउ इक मृत्युलोक बड़भागी। तुलसीदास भयो वैरागी॥
राम कथा रामायण भाखी। सो लोगन घरघर धरिराखी॥
जेजे विविध भांति के पापी। मांसाहारी और सुरापी॥
ते सब मिलि रामायण सुनिहैं। कहिहैं लिखिहैं पढ़िहैं गुनिहैं॥
ते नहिं ऐहैं सदन तुम्हारे। सत्य सत्य नृप बचन हमारे॥

दो० लेहु पाश ये आपने, राखहु अपने पास।
अमल तुम्हारो उठो अब, सुनि यम भये उदास॥

अपनी व्यथा कहै नहिं पाये। तबलगि दूत और तहं आये॥
कहनलगे रविसुतसों रोई। तव चाकरी न हमसों होई॥
जगमें कहूं न हुकुम तिहारो। यहसुनियमजेकिरहेउबिचारो॥
अहो दूत मोहिं कहो बुझाई। किन दीन्हों ममहुकुम उठाई॥
कहा कहैं कछु कही न जाई। तुलसिदास इकभयो गोसांई॥
तिनकी रामायण जग व्यापी। तेइ कीन्हे पवित्र सब पापी॥
गये हम एक अधम गृह माहीं। अतिदुखभयोजातकहिनाहीं॥
तहं देखेउ यक कपि बलवाना। उग्र रूप सदंश्य हनुमाना॥

दो० प्राणन को गहकी भयो, तब हम भये अतिदीन।
शरण शरण तव शरण हैं, अस्तुति बहुविधिकीन॥

तब तो ह्वै प्रसन्न कपिराई। हमसन पुनि परतीतिकराई॥
धरी होइ रामायण जहवां। कबहूं भूलि न जायहु तहवां॥
जे श्रोता बकता रामायन। कबहूं मति जायहु तेहिआयन॥

१ वर २ यमराज ३ दूत ४ शराबी ५ बन्दित ६ समाज॥

अस हमसों कपि शपथकराई। तब छूटन पायो सुनु राई॥
सुनि यमराज बहुत घबराये। निकट बोलाइ दूत समुझाये॥
नाम रूप गुण कथा राम की। कियेउ न फेरी तीन धाम की॥
अजामील की सुरति करौ जू। और न कछु चितमाहिं धरौजू॥
थकि से रहे दूत सुनि बानी। धनि धनि रामायण महरानी॥

दो० रामायण तजईंवरी, सत भाषा शिरमौर।
यमपुर जाको शोर है, सम ताको नहिं और॥

पातक महा लग्यो किन होई। रामायण सुनि रहै न कोई॥
चाहै चारौं फल को साधन। करु रामायण को अवरांधन॥
रामायण सुनि पाप पराने। जिमिहिमऋतुमहँमशकनशाने॥
कलियुग तरन उपाय न कोई। राम भजन रामायण दोई॥
कथा रमायन की जहँ होई। सो गृह घर मति जानै कोई॥
सो घर तीर्थरूप सम भाशै। तहां गये सब पातक नाशै॥
पाप वास देही महँ तबलग। श्री रामायण सुनै न जबलग॥
उदै पुरानी पुण्य होय जब। रामायण महँ मन लागै तब॥

दो० रामायण के सुनत ही, छूटि जात प्रेतत्व।
जाके पढ़ते सुनत ते, सूझत है परतत्व॥

को जानै रामायण को रस। यह तौ है सन्तन की सरबस॥
बनेज सनेही अलिगण जैसे। भक्तन प्रिय रामायण तैसे॥
त्यागि भक्तजन ग्रन्थ अनेकू। धारण किय रामायण एकू॥
भक्तन कहँ है भक्ति अनूपा। रसिक जनन कहँ है रस रूपा॥
ज्ञानमयी तिनकहँ जे ज्ञानी। तुलसी तारण तरण बखानी॥
काम क्रोध रुज वश संसारा। औषध रामायण अनुसारा॥
रामायण महँ नेह न जाको। जीवत शवसम जानियताको॥
रामायण जा कहँ प्रिय नाहीं। वृथा जन्म ताको जगमाहीं॥

दो० रामायण अमृत कथा, लेत न ताको स्वाद।

१ शापत्य २ पास ३ प्रतापी ४ पाद ५ कमल ६ भौंरा ७ रोग ८ झूठा॥

तिनको निश्चय जानिये, हैं पूरे मनुजाद ॥
रामायण विधि कहौं विशारद। सनत्कुमार सों भाषी नारद ॥
सहित विधान सुनै जो कोई। सहज मुक्ति पावै नर सोई ॥
कार्तिक माघ चैत्र चितलायी। नव दिन सुनै कथा सुखदायी ॥
ब्रह्म मुहूर्त्त समय हुव जबहीं। कर्म करै शौचादिक तबहीं ॥
करै दंतधावंन लटजीरा। मज्जन करै धरै मन धीरा ॥
पुनि रामायण पुस्तक अरँचै। प्रेम सहित गन्ध दिक चरचै ॥
ॐ नमो नरायण मंत्र भनीजै। तीन आहुती होम करीजै ॥
मन वच कर्म पाप तन केरे। छूटि जात नहिं आवत नेरे ॥

दो० यानिधि रामायणविधिहिं, जे करिहहिं चितलाय।
रामधाम ते जाइ हैं, संसृत दुखहि मिटाय ॥

जो कछु कारज कहँ कोउ जाई। सुमिरि चलै सो यह चौपाई ॥
प्रविशि नगर कीजै सब काजा। हृदयराखि कोशलपुर राजा ॥
जो विदेश चाहै कुशलाई। तौ यह सुमिरि चलै चौपाई ॥
रथचढ़ि सियासहितदोउभाई। चलेबनहिं अवधहिंशिरनाई ॥
भूत पिशाच जाहि जब लागैं। यह सोरठा पढ़े सों भागैं ॥

सो० बन्दौं पवनकुमार, खँलबनपावकँ ज्ञान घन।
जासु हृदय आगार, बसहिं राम शर चाप धर ॥

शत्रु निवारण चहौ जो भाई। भाव सहित जपु यह चौपाई ॥
जाके सुमिरन ते रिपु नाशा। नाम शत्रुहन वेद प्रकाशा ॥
यह चौपाई जपै जो कोई। अन्न आदि दुख ताहि न होई ॥
विश्व भरन पोषन कर जोई। ताकर नाम भरत अस होई ॥
जो उत्सव चह विविध प्रकारा। करु यह चौपाई अनुसारा ॥
जब ते राम ब्याहि घर आये। नित नवमङ्गल मोद बधाये ॥
जो चाहै जग महं जय भाई। अस्थिर ह्वै जपु यह चौपाई ॥
सखा धर्म मय असरथ जाके। जीतन कहं न कतहुं रिपु ताके ॥

---

१ [illegible] २ [illegible] ३ [illegible] ४ [illegible] ५ कहिये ६ [illegible] ७ [illegible] ८ [illegible]।

हैं बहु भांति कार्य जगमाहीं। रामायण सों सब ह्वै जाहीं ॥

दो० सकल भांति मनकामना, यह दोहा दातार।
रामायण महं खोजिकरि, करु याको अनुसार ॥
बहु शोभा जु समाज सुख, कहत न बनै खगेश।
बरणै सादर शेष पुनि, सो रस जान महेश ॥

बरणौं एक रुचिर इतिहासा। तुलसिदास जो कीन तमासा ॥
द्रावड़ अरु काशी महिपाला। कहुं एकत्र रहे कछु काला ॥
अतिशयप्रीति बढ़ी दुहुंमाहीं। मन में कपट लेश कछुनाहीं ॥
गर्भवती दोऊ नृप नारी। चली बात दुहुन कहिडारी ॥
द्रावड़ कही बात सुखरासी। सुनहु नृपति काशी के बासी ॥
जन्मै तव सुत सुता हमारे। अथवा मम सुत सुतातिहारे ॥
अस संयोग होइ जो नाहू। हम तुम करहिं बिवाह उछाहू ॥
सौंहें करि यह बात दृढ़ाई। सन्तत प्रीतिरही अब भाई ॥
सुखदसमय आयो जबकोऊ। निजनिजभवनगयउनृपदोऊ ॥

सो० कन्या भइं दुहुं ओर, जानी जात न दैवगति।
कहि पठयो सुत मोर, द्रविड दूत काशी गये ॥

यह छल होतभयो जिहिलाई। सो वह हेतु कहौं मैं गाई ॥
द्रावड़पति निजगृहआयो जब। रानीसों अस कहतभयो तब ॥
जो होई कन्या दुहुं ओरा। तौ मैं प्राण तजैंब बरजोरा ॥
सुनि रानी राजा मुख बानी। मनमहं बहुतभांति भयमानी ॥
उपरोहितकहं लिहिसि बुलाई। नृप दुराय यह बात बुझाई ॥
मम अहिवात तुम्हारे हाथा। नहिं तौ प्रभु मैं होब अनाथा ॥
रानी द्रव्य दीन्ह नहिं थोरी। भइ मायाबश द्विजमतिभोरी ॥
सेवक सेवकायन बशकीन्हेसि। आदरमान दान बहुदीन्हेसि ॥

दो० सेवकै एक दीन्ह तेहिं, बाराणसी बसाय।
तेहि ते पाइसि खबरिसब, तबयहुकिहिसिउपाय॥

१ राजा २ पुत्र ३ कन्या ४ छोकूया ५ ब्राह्मण ६ दास ७ काशी की

पुत्र नाम धरि गुप्त रखायो। द्वादश वर्ष न द्वार दिखायो ॥
विदुर्षन कहेउ न कोऊ पेखे। ब्याह समय सब कोऊ देखे ॥
मित्र मिलनहित चितअनुराग्यो। नेगीपठय ब्याह पुनि मांग्यो ॥
अतिआनन्द चल्यो मगवेगी। काशी नृप पैहं आये नेगी ॥
नृपमनमुदित पत्रिकाबांची। लै आयो बरात रंगराची ॥
आयो ब्याहन द्रावड़राजा। खुलीबात उपजी अतिलाजा ॥
क्रोधातुर काशी अवनीशा। कहकटिहौं द्रावड़कर शीशा ॥
यहसुनि द्रावड़ अधिकडरानेउ। निजछलसमुझिसमुझिपछितानेउ ॥

दो० अतिसभीत अतिदीनह्वै, गो जहँ तुलसीदास।
पाहिपाहिकहि पांयपरि, कहेउकरो दुखनास ॥

तब काशी नृपकहं बुलवायो। तुलसिदास हितकरसमुझायो ॥
सुतकहिसुताजो ब्याहनआयो। होयपुत्र तौ होयबधायो ॥
जो यहपुत्र होय महराजा। करिहिबिवाहसाजि सबसाजा ॥
तुलसिदास वेदी बिरचाई। तहँ गणेश गवरी पधराई ॥
सिंहासनपै धरि रामायण। नवदिन भरि कीन्हीं परायण ॥
जो कन्या बरवेष बनायो। ताही को सन्मुख बैठायो ॥
वक्ताआप सो श्रोताभई। दुनियांतहँ देखन सबगई ॥
पूर्ण कथा जब बांचि सुनाई। तासु शीशकर धरेउ गोसांई ॥

दो० अरु यह चौपाई पढ़ी, रामै सुमिरि प्रसन्य।
तिहि अवसर बर ह्वै गयो, श्री रामायणधन्य ॥

मंत्रमहामणि बिषय ब्यालके। मेटत कठिन कुअंक भालके ॥
रामायण जब कही गोसांई। प्रगटन हित काशी फिरआई ॥
आदरकीन्ह न पण्डित काऊ। कहैं जो हमसो करो उपाऊ ॥
जहं अस्थान कहैं तहँ जाहू। पोथी अब न देखावहु काहू ॥
श्री आनंदकानन ब्रह्मचारी। हमशिरमौर सु महिमाभारी ॥
जो याको वे आदर करिहैं। तौ हम सब लै शीशहिधरिहैं ॥

---

१ पंडितोंने २ पाव ३ पाता ४ हरमुख ५ समस्त ६ वर्ष ७ माथा ८ प्रतिष्ठा ।

गण आनंदकाननपहँ ततपर। करतप्रशंस प्रसन्न परस्पर ॥
पोथीकी चरचा पुनि कीन्ही। देखनहंत सो लै धरिलीन्ही ॥
कछु दिनपर्छेसहित अनुरागन। गये गोसाईं पोथी मांगन ॥

दो० पोथी दई अरु अस कहेउ, होई पावन लोक।
निजप्रमाणकरिलिखिदियो, इक अद्भुत अवलोक ॥

श्लो० आनन्दकानने ह्यस्मिन् जंगमस्तुलसीतरुः।
कवितामञ्जरी यस्या रामभ्रमरभूषिता ॥

छं० धनि धन्य तुलसीदास जिन जगहेत रामायण भनी।
माहात्म्य श्रीमतनकहिसकौं रसविषयमहँ मोमतिसनी ॥
निजबुद्धि के अनुसार कहि गोपाल सतगुरु की दया।
रघुबीर यशकी अधिकता श्रीसंतजन कहिहैं मया ॥

दो० श्रीमत् तुलसीदासजी, है प्रसन्न बरदेहु।
रामायण माहात्म्य सों, हरिजन करहिं सनेहु ॥
संवत वसु नभ नन्द कु, १९०८ मार्गशुक्ल गुरुवार।
एकादशि कहँ कीन्ह है, अपनी मति अनुसार ॥
रामकोट श्री अवधपुर, स्वामी राम प्रसाद।
तिनका महिमा को कहै, विश्व विदित मरयाद ॥
तिन ते गादी पाइई, सो स्वामी मैं दास।
लषणपुरी मम जन्मक्षिति, रामनगर के पास ॥
मोजमनगर प्रसिद्ध द्विज, उत्तम पूरनदास।
तस्यात्मज गोपालकृत, यह माहात्म्य इतिहास ॥

इति श्री द्विजगोपालदासकृत रामायण माहात्म्यं संपूर्णम् ॥

तुलसीदासका जीवनचरित्र ॥

तुलसीदासजी सरवरियाब्राह्मण थे चित्रकूटके इलाके में राजापुर के रहनेवाले थे इनके गुरूकानाम नृसिंहदासथा संवत् १६८० में मृतकहुये गोसाईं तुलसीदासजी को भक्तमालके कर्त्ताने बाल्मीकिजी का अवतार लिखा है सो इसमें कुछ संदेह नहीं कि उनकी वाणी में प्रभाव दिखाई पड़ता है कि हृदयमें चुभिजाती है और रामचरित्र रूपी अमृत की धाराको इस कलियुगमें प्रवाहमान कियाहै व सबको सुलभहै और चौदह रामायण अर्थात् चौपाई बन्द जो विख्यात हैं व विनयपत्रिका व गीतावली व कवितावली व दोहावली व रामशलाका व हनुमान्बाहुक व जानकीमङ्गल व पार्व्वतीमङ्गल व कड़काछन्द व बरवाछन्द व रोलाछन्द व झुलनाछन्द एक दूसरा कि प्रेमियों को व उपासकों को सब जगह मिलसक्ते हैं और भक्तोंके मुखसे निश्चय होचुकाहै कि जो कोई नेमकरके नित्य किसी रामायण का पाठ करताहै निश्चय श्रीरघुनन्दन स्वामीके चरणों में प्रीति होजाती है व कामना करके कांडका पाठकरै तो सिद्ध होजाताहै व रामशलाका में जो प्रश्नकरै तो ऐसे दोहे निकलैं कि जो होनेवालीबातहो सो ज्ञात होजाय और तुलसीकृतरामायण को काशीजी के सब पण्डितों ने सभा करके सम्पूर्ण पढ़ा आदि अन्त सब वेद शास्त्र पुराण गीताजी के अनुकूल देखकर सबने अङ्गीकार लिख-दिया कोई कोई ने द्वेष करिकै बादठाना तो विश्वेश्वरनाथजी के अंगीकार करनेसे सबको अंगीकृत हुआ गोसाईंतुलसीदासजी सरयूपारी ब्राह्मणरहे अपनीस्त्रीसे स्नेह विशेषरखते थे एकदिन स्त्री अपने मैके में मा बापसे मिलने को गई गोसाईंजीको इतना वियोग हुआ कि सहन न होसकी अपनी ससुरारिमें पहुँचे स्त्रीकोलज्जाआई क्रोधकरके गोसाईंजीसे बोली कि यह शरीर अस्थि मांसका अनित्य है रघुनन्दन स्वामी नित्य निर्विकार पूर्णब्रह्महैं तिनसों क्यों नहीं स्नेह करते कि दोनोंलोक में लाभहो इतने कहनेसे गोसाईं जी पण्डित और ज्ञानवान् थे पूर्व पुण्यके पुंज उदयहुये ज्ञान वैराग्य की आंखें खुलगईं काशीजी में आकर श्रीरघुनन्दन स्वामी के भजन कीर्त्तनमें लगे गोसाईंजी दिशाफिरने वनमें जायाकरते तो पानी शौचशेष को एक जगह नित्य डालदियाकरते थे वहां एकभूत रहताथा उस पानी से उसकी तृषा मिटतीथी एकदिन प्रसन्न होकरबोला कि तुमको कामनाहो सो कहो गोसाईंजीने कहा रघुनन्दनस्वामी का दर्शन करादे भूतने कहा कि यह सामर्थ्य मेरे में नहीं

पर हनुमान्जीका पता यह बतलाताहूं कि अमुकस्थान में कथा रामायण होती है और हनुमान्जी सबसे पहिले ऐसे कुरूपसे कि जिस को देखते डरलगै और घृणाहोय आतेहैं सबसे पीछे जातेहैं इस पहिंचान से गोसाईंजी हनुमान्जीके पीछे चलेगये वनमें चरण पकडलिया न छोडा हनुमान्जी ने दर्शनदिया कहा जो चाहना हो कहो विनय किया रघुनन्दन स्वामीका दर्शन चाहताहूं-आज्ञादी कि चित्रकूटमें दर्शनहोगा गोसाईंजी अतिअभिलाषसे चित्रकूट में आये एकदिन इस स्वरूप से दर्शन हुआ कि रघुनन्दनस्वामी श्यामसुन्दर राजकुमार के स्वरूपसे वसन भूषण बहुमूल्यके पहिने धनुषबाण लिये घोडेपर सवार और लक्ष्मणजी गौरमूर्त्ति वैसेही सजावटके सहित साथ एकहरिण के पीछे घोडाडालेहुये जाते हैं यद्यपि स्वामीकीमूर्त्ति मन और आंखोंमें समाय गई पर यह न जाना कि ये स्वामी हैं पीछे हनुमान्जी आये गोसाईंजी से पूछा कि दर्शनकिये गोसाईंजीने विनय किया कि दो राजकुमारदेखे हैं हनुमान्जी बोले कि वही रामलक्ष्मण थे गोसाईंजी उसी रूपकाध्यानकरते हुये मुख्य मनोरथको प्राप्तहुये एकहत्यारा पहिलेरामका नाम टेरकर कहाकरता कि हत्यारेको भिक्षादेव गोसाईंजी को आश्चर्य्यहुआ कि यह कैसापुरुष है कि पहिले रामनाम लेता है फिर अपने आपको हत्यारा कहताहै व ठहराताहै बुलाया और प्रेमशुद्धजान कर उसको अपने साथ भगवत् प्रसाद जिमाया काशीके पण्डितों ने सभाकरी और गोसाईंजीको बुलाकर पूछा कि प्रायश्चित्त विना किसतरह इसका पाप दूर हुआ गोसाईंजीने कहा एकबार रामनाम लेनेका क्या माहात्म्य है शास्त्र में देखो इसने तो सैकड़ोंबेर नाम उच्चारणकिया तो शास्त्रके वचन पर जो विश्वास नहीं तो अज्ञानका अंधकार दूर नहीं होसक्ता पण्डितों ने यद्यपि शास्त्रको माना तथापि बे विश्वाससे यह ठहराया कि विश्वेश्वरनाथ का नँदिया इसके हाथसे भोजनकरै तो सत्यमानैं सो नँदिया ने उसके हाथ से धरायाहुआ प्रसाद को भोगलगाया सब पण्डितों ने लज्जितहोकर नामकी महिमा व गोसाईंजीकी भक्तिपर निश्चय किया एकदिन गोसाईंजीके स्थानपर रातको चोर चोरी करनेको आये तो श्री रघुनन्दनस्वामी धनुषबाणलेकर चोरोंको डरवातेफिरे चोरीकरने न पाये गोसाईंजीसे प्रभातको आके पूछा कि महाराज वह श्यामसुन्दर किशोर मूर्त्ति परममनोहर कौन है जो रातको चौकी देताहै गोसाईंजी सब वृत्तान्त सुनकर प्रेममें डूबगये फिर विचारा इससामग्री के हेतु परिश्रम व

रातको जागरण स्वामीका अच्छानहीं बहुत रोनेलगे उसीघडी सबधन सामग्री दानकरदिया चोर यह वृत्तान्त देखकर घरबार छोड़कर भगवत् शरणहोगये और एकब्राह्मण मरगया उसकीस्त्री विमानकेसाथ सतीहो-नेजातीथी गोसाईंजीको दण्डवत्किया गोसाईंजीके मुखसे निकलगया सौभाग्यवती उसने कहा मेरापति मरगया यहदासी सती होने जातीहै सौभाग्य कहां है गोसाईंजीने उसके कुलमें भगवद्भक्ति करनेकी प्रतिज्ञा करायके पतिको जिलादिया जब यह बात विख्यातहुई तो बादशाह ने बड़े आदरसे बुलाकर उच्चआसनपर बैठालकर सिद्धाई दिखलानेको वि-नयकिया गोसाईंजी बोले सिवाय रघुनन्दनस्वामीके दूसरी सिद्धाई कुछ नहीं जानताहूं और न इस झूठे खेलसे कामरखताहूं बादशाहने कहाकि अपने स्वामीहीके दर्शन करादेव यहकहकर बंदिमें किया गोसाईंजी ने हनुमान्जीका स्मरण किया उसीघड़ी वानरों की अगणित सेनाने बाद-शाही क़िलेमें ऐसा उत्पात किया कि प्रलयकाल दिखलाईपड़ा बादशाह जब पलँगपरसे उलटागया तब ज्ञानबुद्धसे गोसाईंजीकी शरणमें आया चरणपर गिरा तब सब वानरीसेना अन्तर्द्धान होगई तब तुलसीदासजी ने आज्ञादी कि तुमदूसराक़िला रहनेको देखलेव यह स्थान रघुनाथजी का हुआ बादशाहने तुरन्त छोड़दिया तुलसीदासजी काशीको चलेआये एक कोई भक्तों के बैरीने गोसाईंजी के मारनेको अनुष्ठान जपका किया गोसाईंजी ने एक पद महादेवजी का बनाया कुछ न हुआ वह आप लज्जित होरहा फिर गोसाईंजी वृन्दावन आये नाभाजीसे मिले उनकी रचना भक्तमालकी देख सुनकर बहुत प्रसन्नहुये और यहबात जो फैली है कि गोसाईंजीने मदनगोपालजी के दर्शन के समय यह बात कहीथी कि धनुषबाण धारण करोगे तब दण्डवत् करूंगा सो यह बात निपट झूठ और विना शिरपैरकी है काहे कि कृष्णावली में कृष्णयश गोसाईं जीने गाया है सो प्रसिद्ध है सिवाय इसके सब जगत् को दण्डवत् किया है—सियाराम मय सब जगजानी। करों प्रणाम सप्रेम सुबानी॥ यह चौपाई जिसकी कही है भलासो कब भगवत् के साम्हने ऐसी हठबानी कहसकाहै इसबातके फैलनेकी बात यहहै कि उपासक जिसदेवता के मन्दिरमें जाताहै अपने इष्टकारूप ध्यानकरताहै यह रीति शास्त्रके सम्म-त के अनुकूल गृहीत है सो गोसाईंजी दर्शनकोगये व परम मनोहर मूर्त्ति को देखा तो श्रीरघुनन्दन धनुषबाणधारी का ध्यानकरके दण्डवत् किया सो गोसाईंजी भक्तसांचे व सिद्धथे इसहेतु मदनगोपालजी ने भी उनके

ध्यानके अनुकूलरूप दिखादिया जो कोई उससमय दर्शनकरनेवाले थे उनकोभी धनुषबाणधारी दृष्टिमेंआये इसहेतु वह बातफैली और किसीने एक दोहराभी बनालिया वृन्दावनमें किसीने गोसाईंजीसे प्रश्नकिया कि श्रीकृष्ण महाराज पूर्णब्रह्म और औतारीहैं और नृसिंह, वामन, परशुराम, रामचन्द्र आदि उसअवतारी के अंशकला से अवतार हैं तुम श्रीकृष्ण महाराजकी उपासना क्योंनहीं करते यद्यपि शास्त्रप्रमाणसे गोसाईंजी उत्तर देनेको समर्थ थे पर माधुर्यभाव में प्रेमभक्तिको दृढ़ करतेहुये ऐसा उत्तर दिया कि वह चुपहोरहा और सिद्धान्त बनारहा सो वह यह है कि श्री रामचन्द्र दशरथनन्दनको बहुत सुन्दर सुकुमार अंग मनोहरमूर्त्ति परम शोभायमान देखकर हमारामन लगगया है कि नहीं छूटता अब जो तुम्हारे वचन से उनमें कुछ ईश्वरताभी है तो और अधिक व मनभाई भई ॥

रामायण की प्रशंसा ॥

कवित्त ॥ रामयशमानसविचित्रत्योंपवित्रचारु गायोदासतुलसीनिसारिसारवेदनै । जाको यशछायोलोकलोकनप्रवेशकैसुमंजुलसुवेशपुंजतापतीनिछेदनै ॥ भाग्यवन्तदानिफलचारिजोप्रसिद्धिआज़ु सुखमासमृद्धिहारविश्वजीवखेदनै ॥ नौमिनौमिनौमिश्रीरामायणजुमारतण्ड जाकेउरउदितसोजानैरामभेदनै १ पावैकहिपारकौनमहिमामहानमहा मानसरामायणकिछायरहीजगमै । जाकेपढ़ेसुनेगुनेहोतहैंसकलकाम पूरणश्रीरामभक्तिपावैरामसंगमै ॥ साँचेकरिनेमप्रेमबाँचैपाहिनित्यजौन आँचैसोनतापतीनिराचैरामरंगमै । भाग्यवन्तताहिजगदुर्लभनलासकछु काय मनवचनचलैजोयाकेमगमै २ भाग्यवन्तभूपदेशब्राह्मणनरेशकाशी करिकैमिताईबातदोऊठीकर्योठयो । होयसुतएकदिशिदूसरी जोकन्यका सुकीजिये विवाह विधियोगसुताह्वैजयो ॥ कीनछलब्राह्मणसुपुत्रकहिब्याहिदैको आयोलैबरातबातखुलिजातत्योंभयो । तुलसीप्रसादमहामहिमा रामायणकी सातदिनसुनेसुतासोईसुतह्वैगयो ३ देखियमदूतगये जगमेंप्रचारमहा मानसरामायणको गावैनरनारियो । जाययमराजपैरिसायनिजदण्डफाँस दीन्हेडारि सबनदुखारियों पुकारियो ॥ महाराजराज अबजगमें न आपुरह्यो भयोएकतुलसी सोहाबऐसोकारियो । भाग्यवन्तविरची रामायणजुताहिसब पढ़िपढ़िपापी बैकुण्ठहीसिधारियो ४ ऐरेमेरेदूतौयहबात मेरीकानकरौ भूलिहूनजाइयो सुऐसेकबौंधामको । होयजहांमानस विचित्रयशरामजीको कीन्हौंदासतुलसीको दानि मनकामको ॥ जोरिहाथसादरनवायपदपद्ममाथ बारबारदूरिहीसे कीजिपेप्रणामको । भाग्यवन्तबातयह साँचीमैंपुकारिकहौं जानियोरामायणको धामसीतारामको ५ दखिजातोद्वापन कराखकलिकाजजग अबजौननामकहुंधर्मकोरहावतो ५ अटिजातोनरकानिकायमहापापिनसों घटिजातोदानदयाभक्तिनासुहावतो ॥ वेदऔपुराण सद्ग्रन्थसबैलोपहोते भूलिहूनरामयश कोऊकहूंगावतो । भाग्यवन्तजोपै दासतुलसीनकरिकृपा रामयशमानस रामायणबनावतो ६ जनिकैपहार वेदशास्त्रऔपुराणकौन रामयशमाणिकअमोलखोजिलावतो । देशदेश ग्रामग्राम घरघर कानकान अमृतसमानरामयश कौननावतो ॥ चारिहूवरनसर्वआश्रम सुग्रन्थनमें रामसीयकन्थनकि कौनछविछावतो । भाग्यवन्तजोपै दासतुलसीदयालुह्वैन रामयशमानस विचित्रयहगावतो ७ चाहैफलजौनमन तोकोहैं सकलयामें कल्पतरुरूप यह कलिमें प्रधानहै । याकीछाँहसुखदसगहैंसबसाधुसन्त भाग्यवन्तसेवतप्रकाशैउरज्ञानहै ॥ कहिकैसुनेमप्रेमगावैनित्ययाहिहृ ✓ ताकेसदारक्षकसुजानहनुमानहै । आजुकलिकालमेंकल्याणकारजीवनको मानससमानकछुदूसरोनआनहै ८ ऐसीकविताईसुखदाईश्रीगोसाईंजुकी तैसीउपाईकविकोऊभयभूरिहैं । भाग्यवन्तजाकीगतिअद्भुतनजानिजात बरनबरनरहेआनँदसोंपूरि

है ॥ आनतप्रमाणजाकोराउरङ्कआजुसबैदेवगणधारतसुमाथजाकीघूरिहै । धन्यधन्यधन्यश्री रामायणप्रतापवन्त कलिजीवजीवनकोजीवनकिमूरिहै ६ धन्यधन्यधन्यश्रीगोसाईंदासतुलसी को छायोयशजाकोलोकलोकनअपारहै । देखिकैकरालकलिकालकीकरालताई आईदौरिदाग्राहेरिमायाकोपसारहै ॥ रामयशमानसकुठारकरधारिलिय भाग्यवन्तजगहितआपुअवतारहै। क्षापिकलिभूपकोसुथापिमहिधर्मसेतु रामयशरामभक्तिकीन्हेविस्तारहै १० छूटिगईत्रासकलिकाल कीकरालजाल बानिपरीगानकीसुरामयशअरकै । भाग्यवन्तफैलिरहीजगमेंसुभक्तिचारुमानस प्रभावपैनजातकोऊनरकै ॥ प्रकटीसुरीतिएकअद्भुतअनोखीओर बरनबरनमाहिंरामनामररकै । घरघरआजुनरनारिनकेकरकर तुलसीप्रसादमालाखरखरकै ११ भागुभागुभागुरे कलंकी क्रूरक्षाँसोंकलि मोसोंअबनेकहूनतेरोजोरचलैगो। आजलौंतुकीन्हमनमानोनिज राजकाजअबना कुचाहतरुतेरोफूलिफलैगो ॥ भाग्यवन्तप्रबलप्रतापदापतुलसीके जगकोछलनहारतुहींआपुछलैगो । रामयशमानसकोरक्षकहैमहावीर मेरीओरहैकैखलतोकोसोईदलैगो १२॥

अथ सङ्कटमोचननामाष्टकमारभ्यते ॥

स०॥ बालसमयरविभक्षकियो तबतीनिहुँलोकभयोअँधियारो । तेहितेत्रासभईसबकोअति संकटकाहुतेजातनटारो ॥ देवनआनिकरीबिनती तबछाँड़िदियोरविकष्टनिवारो । को नहिंजानतहै जगमें यह संकटमोचन नामतिहारो १ बालिकेत्रास कपीशबसै तहँ जात महाप्रभुपंथनिहारो । चौंकि महामुनि शापदियो दिशि चारि फिरै न सुपासविचारो ॥ कै द्विजरूप लवाय महाप्रभु सो तुमदासको शोकनिवारो । कोनहिंजानतहै जगमें यह संकटमोचन तिहारो २ अंगद के सँगकीश अनेक गये सियखोजकपीश पुकारो । जीवत ना बचिहौ हमसों जुबिना सुधिलै इतको पगुधारो ॥ हारिथके तटसिंधुसबै तबलै सियकीसुधि प्राणउबारो । कोनहिं जानतहै जगमें यह संकटमोचन नामतिहारो ३ रावण त्रासदई सियको तब राक्षस है करिशोकनिवारो । ताहि समय हनुमान महाप्रभु जाइलवै रजनीचर मारो ॥ मांगत सीय अशोकसों आगि तौदै प्रभु मुद्रिका शोक निवारो । कोनहिं जानतहै जगमें यह संकटमोचन नाम तिहारो ४ रावण युद्धअचानककीन्ह सुनागके फाँस सबै शिरडारो । श्रीरघुवीर समेत सबै दल मोह भयो तब संकटभारो ॥ आनि खगेशहिको हनुमान सो बंधनकाटिकै फाँसनिवारो । कोनहिंजानतहै जग में यह संकटमोचन नामतिहारो ५ बाणलगे उर लक्ष्मणके प्रभु प्राणतजोसुत रावण मारो। लै गृह वैद्यसुखेन समेत सुखी गिरिद्रोणसो वीर उधारो ॥ आनि सजीवनि हाथदई तब लक्ष्मण के तुम प्राण उबारो । को नहिंजानतहै जगमें यह संकटमोचन नामतिहारो ६ बन्धु समेत जबै महिरावण लैरघुनाथ पताल सिधारो । देविहि पूजि भलीविधिसों बलिदेन दोऊजन मन्त्रविचारो॥ जायसहायभयो तबहीं महिरावणसेन समेत सँहारो । कोनहिंजानतहै जगमें यह संकटमोचन नामतिहारो ७ काजकियो बड़लोगनके तुमवीर महाप्रभु देखि विचारो । कौनसो संकट मोहिं ग़रीबको सोतुमसों नहिंजात है टारो ॥ वेगि हरो हनुमान महाप्रभु जो कछु संकट होइ हमारो। को नहिंजानत है जगमें यह संकटमोचन नामतिहारो ॥ ८ ॥ इतिश्रीसंकटमोचनाष्टकःसमाप्तः॥

अथ रामबाराखड़ी प्रारम्भः ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ चौपाई ॥ कका करुणामयरघुवीर कृपाला । अज अविनाशी दीनदयाला १ भंजनअसुरभूमिकेभारा । प्रकटभयेरघुवंशकुमारा २ खखा खेलतदशरथ आंगनमाहीं । बालरूपछविबरणिनजाहीं ३ लक्ष्मणभरतशत्रुहनभैया । निरखतजननीलेतबलैया ४ गगा गौरश्याम सुन्दरद्वउजोरी । जोकछुउपमाकहौंसोथोरी ५ करधनुहीकटिकसेनिषंगा । चढ़ेनचावहिंचपलतुरंगा ६ घघा घरबिश्वामित्रजोआये । आदरकरिभूप-

तिबठाय ७ तनधरिजोकछुकारजहोई। कहौवचनहमकरि हैंसोई ८ नना निश्चरखलमारीच सुबाहू। यज्ञविध्वंसकरैंडरदाहू ९ लक्ष्मणरामद्वऊसुतदीजे। पूरणयज्ञहोययशलीजे १० चचा चकितभयेभूपतिसुनिबानी। समुझायेवशिष्ठमुनिज्ञानी ११ दीन्होंपुत्रकरीमनुहारी। मारगचलतताडकामारी १२ छछा छांडिबाणमारीचउड़ाये। पावकबाणसुबाहुजराये १३ पूरणयज्ञभईमुनिहरषे। जयजयकरतसुमनसुरवरषे १४ जजा जनकयज्ञ सुनिचलेविचारी। पदरजपरसिअहल्यातारी १५ गयेजहाँजगपावनि गंगा। स्नानध्यानकरिनिर्मलअंगा १६ झझा झीमरनावनिकटनहिंलावै। देखतचरणप्रभावडरावै १७ चरणपखारिरामबैठाये। उतरेपारजनक पुरआये १८ नना नृपतिसुनीयहबाता। मुनिकौशिकसँगदूनौंभ्राता १९ पूजाकरिसिंहासनदीन्हा। आपनजन्मसुफलकरिलीन्हा २० टटा टरै न धनुषभूपसबहारे। रघुवरमाँझसभापगुधारे २१ तोरिधनुषकीन्होद्वइखण्डा। जयधुनिपूरिरहीब्रह्मण्डा २२ ठठा ठाढ़ेधनुषतोरिरघुराई। सीताबग्मालापहिराई २३ परशुरामवनकोपिसिधाये। साजिबरातनृपदशरथ आये २४ डडा डोमभाटनिवछावरिपाई। चारिउकुँवरिबरींचहुँभाई २५ दियदायजुबहुद्रव्यलुटाई। आयअवधपुरबजीबधाई २६ ढढा ढूंढ़िमुहूरत सजेसमाजा। रामहिरायदेहिंयुवराजा २७ शारदकुबरीमतिभरमाई। मिलीकेकयीकुमतिसिखाई २८ नना नारिबरमांगेनृपपासा। भरतहि राजरामवनबासा २९ मातपितागुरुपदशिरनाई। सीतासहितचलेद्वउ भाई ३० तता तमसातीरप्रथमदिनआये। श्रृंगबेरपुरगुहामिलाये ३१ पहुँचेगंगाउतरेप्रागा। भरद्वाजमिलिअतिअनुरागा ३२ थथा थोरेमहँसब कहौंप्रसंगा। चलेभानुकुलकमलपतंगा ३३ बाल्मीकिआश्रमप्रभुआये। चित्रकूटगृहबासबनाये ३४ ददा देखिशैलतृणशालछवाई। सीतासहित बसेद्वउभाई ३५ रामगमनसुनिनृप तनु त्यागा। चित्रकूट गय भरत सुभागा ३६ धधा धरीपावरीशिरअतिप्रेमा। आइ अवधपुर बसेसनेमा ३७ रघुवर पंचवटीकृतबासा। असुर विनाशकिये अविनासा ३८ नना नारी शूर्पणखा सुनिआई। श्रुतिनासा काटेलघुभाई ३९ सहसचतुर्दशराक्षस मारे। खरदूषण त्रिशिरासंहारे ४० पपा प्रकट बात रावणसुनिपाई। लै मारीच कियोमृगजाई ४१ मृगमारण निकसे प्रभुजबहीं। हरिजानकी रावणतबहीं ४२ फफा फिरतसियाढूंढ़तरघुराई। देखिजटायुपितागति पाई ४३ शबरीकेफलरुचिकरिखाये। हनूमानसुग्रीवमिलाये ४४ बबा बासकीन्हतहँवाँरघुराई। सियखोजनहितकीशपठाई ४५ हनुमततरिनि-

धिलंकजराई। सियसुधिलैरघुवरहिसुनाई ४६ भभा भालुकपिन्हकेकट-कबनाये। सागरऊपरशिलातराये ४७ सेनसमेतउतरिरघुराई। मिलेविभीषणलंकापाई ४८ ममा मारेउरावणसहितसहाई। लंकाफिरिगइरामदुहाई ४९ राजसमाजविभीषणदीन्हा। पुष्पविमानएकप्रभुलीन्हा ५० यया यहिविधिरणजीतेरघुराई। तबहिंजानकीनिकटबुलाई ५१ बामभाग शोभितमहरानी। अस्तुतिकरतदेवमुनिज्ञानी ५२ ररा-रामचन्द्रचढ़िचले विमाना। आयअवधपुरबजेनिशाना ५३ मिलेभरतपुरजनपरिवारा। गुरुपदकरहिंप्रणामअपारा ५४ लला लगीसासुपदसीताजाई। सबैअशीशदेतसुखदाई ५५ करैनिछावरिआरतिमाता। निरखिनिरखिहरषहिंद्वउ भ्राता ५६ ववा वैदिनधन्यघरीशुभजानी। गुरुवशिष्ठमनमेंअनुमानी ५७ राजसमाजवेदविधिकीन्हा। राजतिलकरघुवरकोदीन्हा ५८ शशा शोभत कनकसिंहासनरामा। शिरपरछत्रसियातनवामा ५९ लषणभरतद्वउचमरडोलावैं। जयसुरकरतसुमनबरषावैं ६० षषा षिजमतिकरैंप्रीतिमनलावैं। सन्ततचरणनमेंशिरनावैं६१ लक्ष्मणभरतशत्रुहनभइया।श्रीहनुमानसकल सुखदइया६२ ससा सानुकूलतिनपररघुराई।श्रीरघुवरकीप्रीतिदेखाई६३ लक्ष्मणभरतशत्रुहनभइया। निरखतजननीलेतबलइया ६४ हहा हृदय माहिंजेधरि हैंध्याना।तेनरधन्यजगतमेंजाना ६५ तीनिलोकमेंभयोअनन्दा। राजतभूपसियारघुनन्दा ६६ ॥ दोहा ॥ तुलसिदासपरकरिकृपा यह वरदीजेराम। सदारहौंसतसंगमें चितचरणनमुखराम ६७॥

इतिश्रीगोसाईंतुलसीदासकृतरामबाराखड़ीसमाप्तम् ॥

अथ बजरङ्गबाण प्रारम्भः ॥

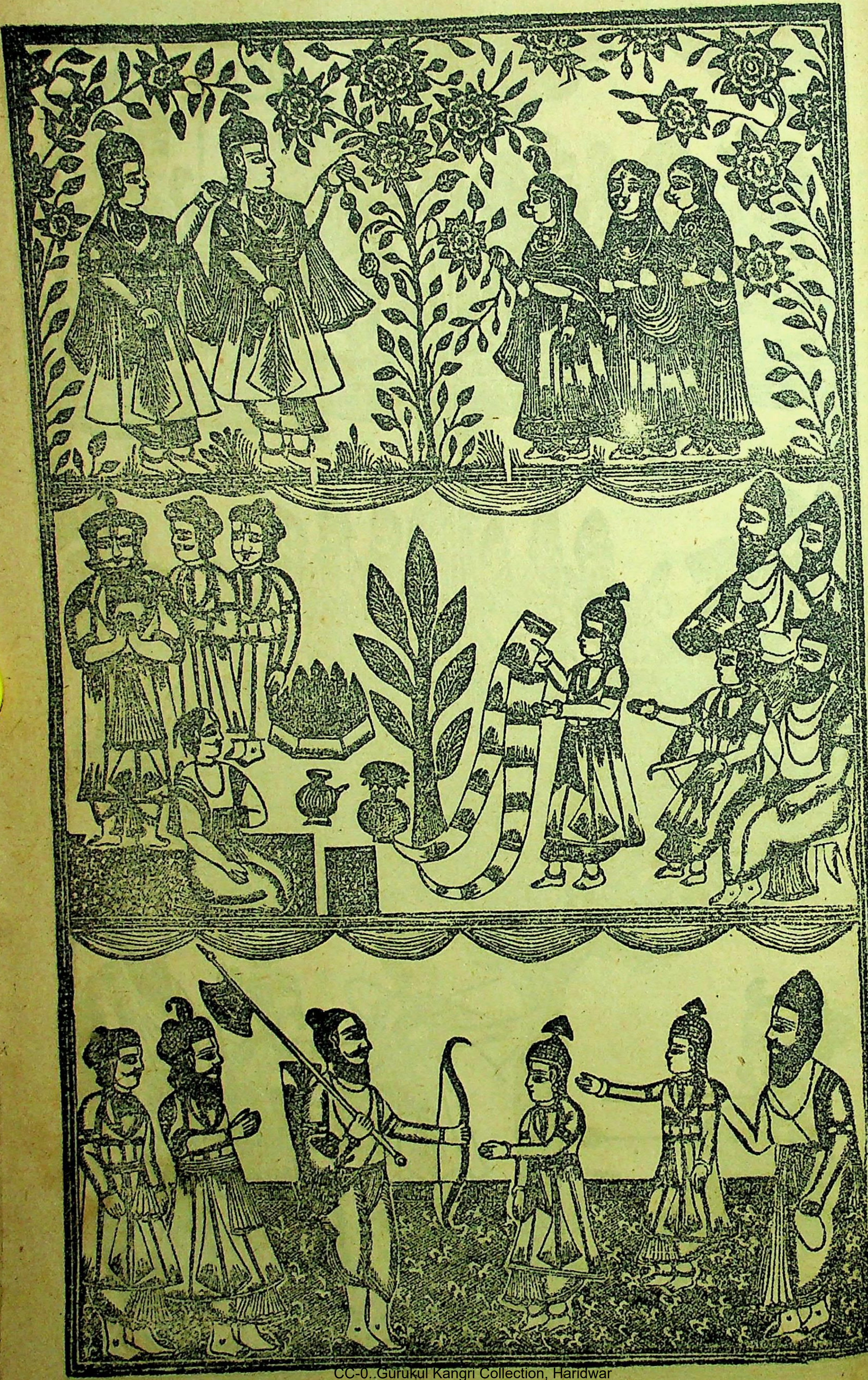
दोहा ॥ निश्चय प्रीति प्रतीति ते विनय करै सनमान। त्यहिकर काज सकल सिधि तुरत करै हनुमान ॥ १ ॥ चौपाई ॥ जय हनुमन्त संत हितकारी। सुनिलीजे प्रभु अर्ज हमारी ॥ १ ॥ जनके काज विलम्ब न कीजे। आतुर दौरि महासुख दीजे ॥ २ ॥ जैसे कूदि सिन्धु वहिपारा। सुरसा के हनिमुष्टिक मारा ॥ ३ ॥ आगे जाइ लङ्किनी रोका। मारेउ लातगई सुरलोका ॥ ४ ॥ जाइ बिभीषण को सुखदीन्हा। सीता निरखि परम पद लीन्हा ॥ ५ ॥ बाग उजारि सिन्धुमहँ बोरा। अतिआतुर यमकातरि तोरा ॥ ६ ॥ अक्षय कुमारहि मारिपछारा। लूम लपेटि लङ्का जारा ॥ ७ ॥ लाह समान लङ्कजरिगयऊ। जय जय धुनि सुरपुरमहँ भयऊ ॥ ८ ॥ अब विलम्ब क्यहि कारण स्वामी। कृपाकरहु उर अन्तर्य्यामी ॥ ९ ॥ जय लक्ष्मण प्राणके दाता। आतुर ह्वै दुखकरहु निपाता ॥ १० ॥

जय गिरिधर जयजय सुखसागर। सुरसमूह समरथ भटनागर ॥ ११ ॥ हनु हनु हनु हनुमन्त हठीला। यहिके मारु बज्रकर कीला ॥ १२ ॥ गदा बज्रसम यहिके मारौ। महाराजप्रभु दास उबारौ ॥ १३ ॥ ॐकार हुंकार मधावो। बज्रगदा हनु विलँब न लावो ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं हनुमन्त कपीशा। ॐ ह्रूं ह्रूं ह्रूं हनुपरिशीशा ॥ १५ ॥ सत्यहोहु हरिसत्यपाइके। रामदूत धरु मारु धाइकै ॥ १६ ॥ जय हनुमन्त अनन्त अगाधा। दुख पावत जन क्यहि अपराधा ॥ १७ ॥ पूजाजप तप नेम अचारा। नहिं जानतहौं दासतुम्हारा ॥ १८ ॥ वन उपवन गिरि गृह के माहीं। तुम्हरे बल हम डरपत नाहीं ॥ १९ ॥ पांयपरौं करजोरि मनावौं। अपने काज लागि गुणगावौं ॥ २० ॥ जय अंजनीकुमार अनन्ता। शङ्करसुवन वीर हनुमन्ता ॥ २१ ॥ बदन कराल काल कुलघालक। रामसहाय दासप्रतिपालक ॥ २२ ॥ भूत प्रेत पीशाच निशाचर। अग्नि बैताल काममारी मर ॥ २३ ॥ इन्हैं मारुत्वहिं शपथ रामकी। राखुलाज मर्याद नामकी ॥ २४ ॥ जनकसुता हरिदास कहावौ। ताकी शपथ विलम्ब न लावौ ॥ २५ ॥ जयजयजय धुनिहोत अकाशा। सुमिरत होत दुसहदुख नाशा ॥ २६ ॥ शरण शरण कर जोरि मनावौं। यहिअवसर अब क्यहि गोहरावौं ॥ २७ ॥ उठु उठु चलु त्वहिं रामदुहाई। पांयपरौं करजोरि मनाई ॥ २८ ॥ चं चं चं चलुचपल चलंता। हनुहनु हनु हनु हनु हनुमंता ॥ २९ ॥ हं हं हांक देत कपि चंचल। सं सं सहमि पराने खलदल ॥ ३० ॥ अपने जनको क्योंन उबारो। सुमिरत होत अनन्द हमारो ॥ ३१ ॥ यह बजरङ्गबाण जो जपै। ताको भूत प्रेत सब कँपै ॥ ३२ ॥ पाठकरै बजरङ्गबाणकी। हनुमत रक्षाकरै प्राणकी ॥ ३३ ॥ यह बजरङ्गबाण ज्यहिमारै। ताहिकहौ अबकौन उबारै ॥ ३४ ॥ दोहा ॥ प्रेमप्रीति धरिकपि भजै सदाधरै उर ध्यान। त्यहिकर कारज सकल सिधि किहेरहै हनुमान ॥ २ ॥ पद ॥ पवनतनय यशजातनगायो। जिन मिलाय रघुनाथ सुकण्ठहि कपिकुलराज करायो ॥ १ ॥ आपु उलंघि सिन्धुकौतुक में दै मुद्री सिय शोक नशायो। बाग उजारिमारि निश्चर गण जारि लङ्कगढ़ भस्मकरायो ॥ २ ॥ धीरज दै सिय लौटि राम पहि कुशलभाषि जलनाथ बँधायो। रिपुहि जीति दै राज बिभीषण लै सियसाथ नाथ ढिगआयो ॥ ३ ॥ बहुप्रकार सनमानि राम ज्यहि निजमुख रिनी कहायो। तासु सुयश भगवन्त कहै किमि ज्यहि भरि अङ्क रामउरलायो ॥ ४ ॥

इति श्रीगोस्वामितुलसीदासकृतायंबजरङ्गबाणसमाप्तम् ॥



रा० बा० चि० नं० २



श्रीगणेशायनमः ॥

रामायण तुलसीकृत ॥

बालकाण्ड ॥

श्लोक ॥

वर्णानामर्थसंघानां रसानांछंदसामपि ॥ मंगलानांचकर्त्तारौ वंदेवाणीविनायकौ ॥ १ ॥ भवानीशंकरौवंदे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ ॥ याभ्यांविनानपश्यंतिसिद्धाःस्वांतस्थमीश्वरम् ॥ २ ॥ वंदे बोधमयंनित्यंगुरुंशंकररूपिणम् ॥ यमाश्रितोहिवक्रोपिचंद्रस्स र्वत्रवंद्यते ॥ ३ ॥ सीतारामगुणग्राम पुण्यारण्यविहारिणौ ॥ वंदे विशुद्धविज्ञानौ कवीश्वरकपीश्वरौ ॥ ४ ॥ उद्भवस्थितिसंहारका रिणींक्लेशहारिणीम् ॥ सर्वश्रेयस्करींसीतांनतोहंरामवल्लभाम् ॥ ५ ॥ यन्मायावशवर्त्तिविश्वमखिलंब्रह्मादिदेवाःसुरा यत्सत्त्वाद मृषैवभातिसकलंरज्जौयथाहेर्भ्रमः ॥ यत्पादप्लव मेवभातिहिभ वांभोधेस्तितीर्षावतां वंदेहंतमशेषकारणपरंरामाख्यमीशंहरि म् ॥ ६ ॥ नानापुराणनिगमागमसंमतं यद्रामायणेनिगदितंक्व चिदन्यतोपि ॥ स्वांतस्सुखायतुलसीरघुनाथगाथा भाषानिबंध मतिमंजुलमातनोति ॥ ७ ॥

सो० ज्यहिसुमिरतसिधिहोइ गणनायककरिवरबदन ।
करौ अनुग्रहसोइ बुद्धि राशि शुभगुण सदन ॥ १ ॥
मूक होइ बाचाल पंगु चढ़ै गिरिवर गहन ।
जासुकृपासुदयाल द्रवो सकल कलिमल दहन ॥ २ ॥
नीलसरोरुहश्याम तरुण अरुण बारिजनयन ।

करौ सो ममउर धाम सदा क्षीरसागर शयन ॥ ३ ॥
कुंद इंदु सम देह उमा रमण करुणा अयन ।
जाहि दीनपर नेह करौकृपा मर्द्दन मयन ॥ ४ ॥
बंदौं गुरुपद कंज कृपासिन्धु नररूप हरि ।
महामोह तमपुंज जासु बचन रविकरनिकर ॥ ५ ॥
बंदौं गुरुपद पद्म परागा । सुरुचिसुबाससरसअनुरागा ॥
अमिय मूरिमय चूरण चारू । शमनसकलभवरुजपरिवारू ॥
सुकृतशम्भुतन बिमल बिभूती । मंजुल मंगल मोद प्रसूती ॥
जनमन मंजु मुकुर मलहरणी । कियेतिलकगुणगणबशकरणी ॥
श्रीगुरुपदनखमणिगण ज्योती । सुमिरत दिब्यदृष्टिहिय होती ॥
दलन मोहतम सोसु प्रकासू । बड़े भाग्य उर आवहिं जासू ॥
उघरहिंबिमलबिलोचन हियके । मिटहिंदोषदुख भवरजनीके ॥
सूझहिंरामचरित मणिमानिक । गुप्तप्रकटजहँजोजेहिखानिक ॥
दो० यथा सु अंजन आंजिदृग साधक सिद्ध सुजान ।
कौतुक देखहिं शैल बन भूतल भूरि निधान ॥
गुरुपद रजमृदु मंजुलअंजन । नयनअमियदृगदोषबिभंजन ॥
तेहिकरिबिमलविवेकबिलोचन । बरणौं रामचरित भवमोचन ॥
बंदौं प्रथम महीसुर चरणा । मोहजनित संशयसबहरणा ॥
सुजनसमाज सकल गुणखानी । करौं प्रणाम सप्रेम सुबानी ॥
साधु चरित शुभसरिस कपासू । निरसबिशदगुणमयफलजासू ॥
जो सहि दुख परछिद्र दुरावा । बंदनीय जेहि जगयश पावा ॥
मुद मंगल मय संत समाजू । ज्यों जग जंगम तीरथ राजू ॥
राम भक्ति जहँ सुरसरि धारा । सरस्वतिब्रह्म बिचारप्रचारा ॥
विधिनिषेधमय कलिमलहरणी । कर्म्मकथा रविनंदिनिबरणी ॥
हरिहर कथा विराजत बेनी । सुनत सकल मुदमंगलदेनी ॥
बट विश्वास अचलनिजधर्म्मा । तीरथ राज समाज सुकर्म्मा ॥
सबहिंसुलभ सबदिनसबदेशा । सेवत सादर शमन कलेशा ॥

अकथ अलौकिक तीरथ राऊ। देइसद्य फल प्रकट प्रभाऊ ॥
दो० सुनिसमुझहिंजनमुदितमनमज्जहिंअतिअनुराग।
लहहिं चारफल अछततनु साधु समाज प्रयाग ॥
मज्जन फल देखिय ततकाला। काकहोहिं पिक बकहुमराला ॥
सुनि आश्चर्य करहि जनिकोई। सतसंगति महिमा नहिंगोई ॥
बालमीकि नारद घटयोनी। निजनिजमुखनकहीनिजहोनी॥
जलचर थलचर नभचर नाना। जे जड़ चेतन जीव जहाना ॥
मतिकीरति गति भूति भलाई। जबजेहियतनजहां जेहिपाई ॥
सो जानब सतसंग प्रभाऊ। लोकहु वेद न आन उपाऊ ॥
बिनु सतसंग बिबेक न होई। रामकृपा बिनु सुलभ न सोई ॥
सतसंगति मुद मंगल मूला। सोइफलसिधसबसाधनफूला॥
शठ सुधरहिं सतसंगति पाई। पारस परसि कुधातु सुहाई ॥
बिधिबशसुजनकुसंगतिपरहीं फणिमणिसमनिजगुणअनुसरहीं॥
बिधिहरिहर कबिकोविद बानी। कहत साधुमहिमा सकुचानी ॥
सो मोसन कहि जात न कैसे। शाकबणिकमणिगुणगणजैसे॥
दो० बंदौं संत समान चित हित अनहित नहिंकोउ।
अंजलिगतशुभसुमनजिमि समसुगंधकरदोउ ॥
संत सरलचित जगत हित जानि सुभाव सनेहु।
बाल बिनय सुनि करि कृपा रामचरण रतिदेहु ॥
बहुरि बंदि खलगण सतिभाये। जे बिन काज दाहिने बाँये ॥
परहित हानि लाभ जिन्हकेरे। उजरे हर्ष बिषाद बसेरे ॥
हरि हर यश राकेश राहुसे। परअकाज भट सहसबाहुसे ॥
जे परदोष लखहिं सहसाखी। परहितघृतजिनके मनमाखी ॥
तेज कृशानु रोष महिषेशा। अघअवगुणधनधनिकधनेशा॥
उदय केतु समहित सबहीके। कुम्भकरण सम सोवत नीके ॥
परअकाजलगि तनुपरिहरहीं। जिमिहिमउपलकृषीदलगरहीं॥
बंदौं खल जस शेष सरोषा। सहस बदन बरणै परदोषा ॥

पुनि प्रणवौं पृथुराज समाना । परअघ सुनैं सहसदशकाना ॥
बहुरि शक्र सम बिनवौं तेही । संतत सुरानीक हित जेही ॥
बचन बज्र जेहि सदा पियारा । सहसनयन परदोष निहारा ॥
दो० उदासीन अरि मीतहित सुनत जरहिं खलरीति ।
जानुपाणियुग जोरि करि बिनती करौं सप्रीति ॥
मैं आपनि दिशि कीन निहोरा । तिननिजओर न लाउबभोरा॥
बायस पालिय अति अनुरागा । होहिंनिरामिषकबहुँ किकागा ॥
बंदौं संत असज्जन चरणा । दुखप्रदउभयबीचकछुबरणा ॥
बिछुरत एक प्राण हरिलेहीं । मिलत एक दारुण दुखदेहीं ॥
उपजहिं एकसंग जलमाहीं । जलजजोंकजिमिगुणबिलगाहीं ॥
सुधा सुरासम साधु असाधू । जनकएकजगजलधिअगाधू ॥
भलअनभलनिज निजकरतूती । लहतसुयशअपलोकबिभूती ॥
सुधा सुधाकर सुरसरि साधू । गरलअनलकलिमलसरिब्याधू॥
गुण अवगुण जानत सबकोई । जोजेहि भाव नीक तेहिसोई ॥
दो० भले भलाई पै लहहिं लहहिं निचाई नीच ।
सुधा सराहिय अमरता गरल सराहिय मीच ॥
खलअघअगुण साधुगुणगाहा । उभयअपार उदधिअवगाहा ॥
तेहिते कछु गुण दोष बखाने । संग्रहत्याग न बिनुपहिंचाने ॥
भलेउपोच सबबिधि उपजाये । गनि गुणदोष बेदबिलगाये ॥
कहहिं बेद इतिहास पुराना । बिधिप्रपंचगुणअवगुणसाना॥
दुख सुख पापपुण्य दिन राती । साधुअसाधु सुजातिकुजाती ॥
दानव देव ऊंच अरु नीचू । अमिय सजीवनि माहुरमीचू ॥
माया ब्रह्म जीव जगदीशा । लच्छ अलच्छ रंक अवनीशा ॥
काशि मगह सुरसरि कर्मनाशा । मरु मालव महिदेव गवाशा ॥
स्वर्ग नरक अनुराग बिरागा । निगमागमगुणदोष बिभागा ॥
दो० जड़ चेतन गुणदोष मय बिश्व कीन करतार ।
संत हंस गुण गहहिं पय परिहरि बारिबिकार ॥

असविवेक जब देहि बिधाता । तबतजिदोष गुणहिमनराता ॥
काल स्वभाव कर्म बरिआई । भलेउ प्रकृतिवश चूकभलाई ॥
सो सुधारि हरिजन जिमिलेहीं । दलिदुखदोष बिमलयश देहीं ॥
खलउ करहिं भलपाइ सुसंगू । मिटहिनमलिनसुभावअभंगू ॥
लखि सुवेष जग बंचक जेऊ । वेष प्रताप पूजियत तेऊ ॥
उघरहि अन्त न होइ निबाहू । कालनेमि जिमि रावण राहू ॥
किये कुवेष साधु सनमानू । जिमिजगजामवन्त हनुमानू ॥
हानि कुसंग सुसंगति लाहू । लोकहु वेद विदितसबकाहू ॥
गगन चढ़ै रज पवन प्रसंगा । कीचइ मिलइ नीचजलसंगा ॥
साधु असाधु सदन शुकसारी । सुमिरहिंराम देहिंगनिगारी ॥
धूम कुसंगति कारिख होई । लिखिय पुराणमंजुमसिसोई ॥
होइजलअनलअनिलसंघाता । होइ जलद जगजीवनदाता ॥

दो० ग्रह भेषज जल पवन पट पाइ कुयोग सुयोग ।
होइकुबस्तु सुबस्तु जग लखहिं सुलक्षणलोग ॥
समप्रकाश तम पाषदुहुँ नामभेद बिधि कीन्ह ।
शशिपोषकशोषकसमुझिजगयशअपयशदीन्ह॥
जड़ चेतन जग जीवजे सकल राममय जानि ।
बन्दौं सबके पद कमल सदा जोरियुग पानि ॥
देव दनुज नर नाग खग प्रेत पितर गंधर्व ।
बन्दौं किन्नर रजनिचर कृपा करहु अब सर्व ॥

आकर चारिलाख चौरासी । जातजीव नभजलथलबासी ॥
सिया राममय सब जग जानी । करौंप्रणाम जोरियुग पानी ॥
जानि कृपाकरि किंकर मोहू । सबमिलिकरहुछांड़िछलछोहू ॥
निजबलबुधि भरोसमोहिंनाहीं । ताते विनय करउँ सबपाहीं ॥
करन चहौं रघुपति गुणगाहा । लघुमतिमोरिचरितअवगाहा ॥
सूझ न एकौ अंग उपाऊ । मन मति रंक मनोरथ राऊ ॥
मतिअतिनीचऊंचरुचिआछी । चहियअमियजगजुरैनछाछी ॥

छमिहहिं सज्जन मोरि ढिठाई । सुनिहहिं बालबचन मनलाई ॥
ज्यों बालक कह तोतरि बाता ।सुनहिंमुदितमनपितुअरुमाता ॥
हँसिहहिंकूर कुटिल कुबिचारी । जे परदूषण भूषण धारी ॥
निज कवित्त केहिलाग न नीका । सरसहोउ अथवा अतिफीका ॥
जे परभणित सुनत हरषाहीं । तेबर पुरुष बहुत जग नाहीं ॥
जग बहु नर सुरसरिसमभाई । जे निज बाढ़बढ़हिं जलपाई ॥
सज्जन सुकृत सिन्धुसम कोई । देखि पूरविधु बाढ़इ जोई ॥

दो० भाग छोट अभिलाष बड़ करौं एक बिश्वास ।
पैहहिंसुखसुनिसुजनजन खलकरिहैं उपहास ॥

खल परिहास होत हित मोरा । काककहहिंकलकण्ठ कठोरा ॥
हँसिहहिंबकदादुरचातकही । हँसहिंमलिनखलविमलबतकही ॥
कवित रसिक न राम पद नेहू । तिनकहँ सुखद हासरस एहू ॥
भाषा भणित मोरिमति भोरी । हँसिबेयोग हँसे नहिं खोरी ॥
प्रभुपद प्रीति न सामुझिनीकी ।तिनहिंकथासुनिलागिहिफीकी॥
हरिहरपदरति मति न कुतरकी । तिनकहँ मधुरकथारघुवरकी ॥
रामभक्ति भूषित जिय जानी । सुनिहहिंसुजनसराहिसुबानी॥
कवि न होउँ नहिं चतुर प्रवीना । सकल कला सब विद्याहीना ॥
आखर अर्थ अलंकृत नाना । छन्द प्रबन्ध अनेक विधाना ॥
भाव भेद रस भेद अपारा । कवितदोषगुणविविधप्रकारा॥
कवित विवेक एक नहिं मोरे । सत्य कहौं लिखिकागजकोरे ॥

दो० भणितमोरसबगुणरहित विश्वविदितगुणएक ।
सोबिचारिसुनिहहिंसुमति जिनकेविमलविवेक ॥

इहिमहँ रघुपति नाम उदारा । अतिपावन पुराणश्रुतिसारा ॥
मंगल भवन अमंगल हारी । उमासहितजेहिजपुत्रिपुरारी ॥
भणित विचित्रसुकविकृतजोऊ । रामनाम बिनु सोह न सोऊ ॥
बिधु बदनी सब भांति सँवारी । सोह न बसन बिना बरनारी ॥
सब गुणरहित कुकविकृतबानी । राम नाम यश अंकितजानी ॥

सादर कहहिं सुनहिं बुधताही । मधुकरसरस सन्तगुणग्राही ॥
यदपि कवित गुण एकौ नाहीं । राम प्रताप प्रकट इहिमाहीं ॥
सोइ भरोस मोरे मन आवा । केहि न सुसंग बड़ापन पावा ॥
धूमउ तजै सहज करुवाई । अगर प्रसंग सुगन्ध बसाई ॥
भणितभदेशवस्तु भलि बरणी । रामकथा जग मंगल करणी ॥
छं० मंगलकरनि कलिमलहरनि तुलसी कथारघुनाथकी ।
गतिकूरकविता सरित की ज्यों परम पावन पाथकी ॥
प्रभुसुयशसंगतिभणितभलिहोइहिसुजनमनभावनी ।
भवभूत अंगमसानकी सुमिरत सुहावनि पावनी ॥
दो० प्रियलागहिं अतिसबहिंमम भणितरामयश संग ।
दारुबिचार कि करइ कोउ बन्दियमलय प्रसंग ॥
श्यामसुरभिपयविशदअति गुणदकरहिं तेहिपान ।
गिराग्राम सियरामयश गावहिं सुनहिं सुजान ॥
मणिमाणिक मुक्ताछबि जैसी । अहिगिरिगजशिरसोहनतैसी ॥
नृप किरीट तरुणी तनपाई । लहहिंसकलशोभाअधिकाई ॥
तैसेहिसुकविकवितबुधकहहीं । उपजहिंअनतअनतछबिलहहीं ॥
भक्तहेतु विधि भवन बिहाई । सुमिरत शारद आवतधाई ॥
रामचरित सर बिनु अन्हवाये । सो श्रमजाइ न कोटिउपाये ॥
कवि कोविद असहृदय बिचारी । गावहिंहरिगुणकलिमलहारी ॥
कीन्हे प्राकृत जन गुणगाना । शिरधुनिगिरालगतपछिताना ॥
हृदय सिन्धु मतिसीप समाना । स्वाती शारद कहहिंसुजाना ॥
जो बरषै बरवारि बिचारू । होहिंकवितमुकतामणिचारू ॥
दो० युक्ति बेधि पुनि पोहिये राम चरित बरताग ।
पहिरहिंसज्जन विमलउर शोभाअतिअनुराग ॥
जे जनमे कलिकाल कराला । करतब बायस वेष मराला ॥
चलत कुपंथ वेद मग छाँड़े । कपट कलेवर कलिमलभाँड़े ॥
बंचक भक्त कहाइ रामके । किंकर कंचन कोह कामके ॥

तिनमहँ प्रथम रेख जग मोरी । धृक धर्मध्वज धन्धक धोरी ॥
जो अपने अवगुण सब कहऊं । बाढ़े कथा पार नहिं लहऊं ॥
ताते मैं अति अल्प बखाने । थोड़ेमहँ जानिहहिं सयाने ॥
समुझिविविधविधिबिनतीमोरी । कोउ न कथासुनिदेइहिखोरी ॥
एतेहु पर करिहहिं जे शंका । मोहिंतेअधिकतेजड़मतिरंका ॥
कवि न होउँनहिं चतुरकहाऊं । मति अनुरूप रामगुणगाऊं ॥
कहँ रघुपतिके चरित अपारा । कहँमतिमोरि निरत संसारा ॥
जेहि मारुतागिरि मेरु उड़ाहीं । कहहु तूल केहि लेखे माहीं ॥
समुझतअमित राम प्रभुताई । करतकथा मन अतिकदराई ॥

दो० शारदशेष महेश विधि आगम निगम पुरान ।
नेतिनेतिकहि जासुगुण करहिं निरन्तर गान ॥

सब जानत प्रभु प्रभुता सोई । तदपि कहे बिन रहा न कोई ॥
तहां बेद अस कारण राखा । भजनप्रभाव भांतिबहुभाखा ॥
एक अनीह अरूप अनामा । अज सच्चिदानन्द परधामा ॥
व्यापक विश्वरूप भगवाना । तेइ धरिदेह चरितकृतनाना ॥
सो केवल भक्तन हित लागी । परमकृपालु प्रणत अनुरागी ॥
जेहि जनपर ममता अरु छोहू । तेहिकरुणानिधिकीन्हनकोहू ॥
गये बहोरि गरीब निवाजु । सरल सबल साहिब रघुराजू ॥
बुधबरणहिंहरियश असजानी । करहिंपुनीतसुफलनिजबानी ॥
तेहिबल मैं रघुपति गुणगाथा । कहिहौं नाइ राम पद माथा ॥
मुनिन्हप्रथम हरिकीरति गाई । तेहिमगचलतसुगममोहिंभाई ॥

दो० अति अपार ते सरितवर जो नृप सेतु कराहिं ।
चढ़िपिपीलिकापरमलघु बिनुश्रमपारहि जाहिं ॥

यहि प्रकार बल मनहिं दृढ़ाई । करिहौं रघुपति कथासुहाई ॥
व्यास आदि कवि पुंगव नाना । जिन्हसादरहरिचरितबखाना ॥
चरण कमल बन्दौं सब केरे । पुरवहु सकल मनोरथ मेरे ॥
कलिके कबिन करौं परणामा । जिन्हबरणेरघुपतिगुणग्रामा ॥

जे प्राकृत कबि परम सयाने । भाषाजिन हरिचरित बखाने ॥
भये जे अहहिं जे होइहैं आगे । प्रणवउँसबहिंकपटछलत्यागे ॥
होउ प्रसन्न देहु बरदानू । साधु समाज भणितसनमानू ॥
जे प्रबन्ध बुध नाहिं आदरहीं । तेश्रमबादि बाल कबि करहीं ॥
कीरति भणित भूति भलिसोई । सुरसरिसमसबकहँ हितहोई ॥
राम सुकीरति भणित भदेशा । असमंजस असमोहिं अँदेशा ॥
तुम्हरी कृपा सुलभ सोउ मोरे । सियनि सुहावनि टाटपटोरे ॥
करहु अनुग्रह अस जियजानी । बिमलयशहिअनुहरहुसुबानी ॥

दो० सरल कबित कीरतिबिमल सोइआदरहिं सुजान ।
सहज बैर बिसराय रिपु जो सुनि करहिं बखान ॥
सोनहोइबिनुबिमलमति मोहिंमतिबलअतिथोरि ।
करहुकृपा हरियश कहौं पुनि पुनि करहुँ निहोरि ॥
कबि कोबिद रघुबर चरित मानस मंजु मराल ।
बाल बिनय सुनि सुरुचि लखि मोपर होहु कृपाल ॥

सो० बन्दौं मुनिपद कंजु रामायण जिन निर्मयउ ।
सखरसकोमल मंजु दोष रहित दूषण सहित ॥
बन्दौं चारोंवेद भव बारिधि बोहित सरिस ।
जिनहिंनसपनेहुँखेदबरणतरघुपति बिमलयश ॥
बन्दौं बिधिपदरेनु भवसागर जिन्हकीन्ह यह ।
संत सुधाशशि धेनु प्रकटे खलबिष बारुणी ॥

दो० बिबुध बिप्रबुध गुरुचरण बन्दिकहौं करजोरि ।
होइ प्रसन्न पुरवहु सकल मंजु मनोरथ मोरि ॥

पुनि बन्दौं शारद सुर सरिता । युगल पुनीत मनोहर चरिता ॥
मज्जन पान पाप हर एका । कहतसुनत इकहरअबिबेका ॥
गुरु पितुमातु महेश भवानी । प्रणऊं दीनबन्धु दिन दानी ॥
सेवक स्वामि सखा सिय पीके । हितनिरूपसबबिधितुलसीके ॥
कलिबिलोकिजगहितहरगिरिजा । शाबरमन्त्रजालजिनसिरजा ॥

अनमिल आखर अर्थ न जापू । प्रकट प्रभाव महेश प्रतापू ॥
सो महेश मोपर अनुकूला । करौं कथा मुद मंगल मूला ॥
सुमिरिशिवा शिवपाय पसाऊ । बरणौं रामचरित चित चाऊ ॥
भणित मोरिशिव कृपा बिभाती । शशिसमाजमिलिमनहुँसुराती ॥
जो यह कथा सनेह समेता । कहिहैंसुनिहहिंसमुझिसचेता ॥
ह्वैहहिं रामचरण अनुरागी । कलिमलरहित सुमंगलभागी ॥
दो० सपनेहुँ सांचहु मोहिंपर जो हर गौरि पसाउ ।
तौ फुरहोउ जो कहहुँसब भाषाभणित प्रभाउ ॥
बन्दौं अवधपुरी अति पावनि । सरयूसरिकलिकलुषनशावनि ॥
प्रणऊं पुर नर नारि बहोरी । ममताजिनपरप्रभुहि न थोरी ॥
सिय निन्दक अघओघ नशाये । लोक बिशोक बनाइ बसाये ॥
बन्दौं कौशल्या दिशि प्राची । कीरतिजासुसकलजगमाची ॥
प्रकट्यो जहँरघुपतिशशिचारू । बिश्वसुखदखलकमलतुषारू ॥
दशरथराउ सहित सब रानी । सुकृत सुमंगल मूरतिजानी ॥
करौं प्रणाम कर्म मन बानी । करहु कृपासुत सेवकजानी ॥
जिनहिंबिरचिबड़भयउबिधाता । महिमाअवधिराम पितुमाता ॥
सो० बन्दौं अवध भुआल सत्य प्रेम जेहि रामपद ।
बिछुरत दीनदयाल प्रियतन तृण इव परिहरेउ ॥
प्रणवौं परिजन सहित बिदेहू । जा हि राम पद गूढ़ सनेहू ॥
योग भोग महँ राखेउ गोइ । रामबिलोकत प्रकटेउ सोई ॥
प्रणवौं प्रथम भरत के चरणा । जासु नेम ब्रत जाइ न बरणा ॥
राम चरण पंकज मन जासू । लुब्ध मधुपइव तजे न पासू ॥
बन्दौं लक्ष्मण पद जल जाता । शीतल सुभग भक्तसुखदाता ॥
रघुपति कीरति बिमल पताका । दण्ड समान भयोयशजाका ॥
शेष सहस्र शीश जग कारन । जो अवतरेउ भूमि भयटारन ॥
सदा सो सानुकूल रह मोपर । कृपासिन्धु सौमित्रिगुणाकर ॥
रिपुसूदन पद कमल नमामी । शूर सुशील भरत अनुगामी ॥

महाबीर बिनऊं हनुमाना । रामजासु यश आपबखाना ॥
सो० बन्दौं पवनकुमार खल बनपावक ज्ञान घन ।
जासु हृदय आगार बसहिं रामशर चापधर ॥
कपिपति ऋक्षनिशाचर राजा । अंगदादि जे कीश समाजा ॥
बन्दौं सब के चरण सुहाये । अधम शरीर राम जिनपाये ॥
रघुपति चरण उपासक जेते । खगमृग सुरनर असुरसमेते ॥
बन्दौं पद सरोज सब केरे । जे बिनु काम राम के चेरे ॥
शुकसनकादिआदि मुनिनारद । जे मुनिवर बिज्ञान बिशारद ॥
प्रणऊं सबहिं धरणिधरिशीशा । करहुकृपा जन जानिमुनीशा ॥
जनकसुताजगजननिजानकी । अतिशयप्रियकरुणानिधानकी ॥
ताके युग पद कमल मनाऊं । जासुकृपा निर्मल मति पाऊं ॥
पुनिमन बचनकर्म्म रघुनायक । चरणकमलबन्दौंसबलायक ॥
राजिव नयन धरे धनुशायक । भक्तिबिपतिभंजनसुखदायक ॥
दो० गिराअर्थजलबीचिसम कहियतभिन्न न भिन्न ।
बन्दौं सीताराम पद जिनहिं परमप्रिय खिन्न ॥
बन्दौं राम नाम रघुबर के । हेतु कृशानु भानु हिमकरके ॥
बिधिहरिहर मय वेद प्रानसे । अगुणअनूपम गुणनिधानसे ॥
महा मंत्र जो जपत महेशू । काशी मुक्ति हेतु उपदेशू ॥
महिमा जासु जान गण राऊ । प्रथम पूजियत नाम प्रभाऊ ॥
जान आदिकबि नाम प्रतापू । भयउ शुद्धकरि उलटा जापू ॥
सहस्रनाम समसुनि शिवबानी । जपि जेई शिव संग भवानी ॥
हर्ष हेतु हेरिहरही को । कियभूषण तिय भूषणतीको ॥
नाम प्रभाव जान शिवनीके । कालकूट फल दीन अमीके ॥
दो० बर्षाऋतु रघुपति भगति तुलसीशालिसुदास ।
राम नाम बर बरण युग श्रावण भादौं मास ॥
आखर मधुर मनोहर दोऊ । बरणबिलोचनजनजियजोऊ ॥
सुमिरत सुलभसुखद सबकाहू । लोक लाहु परलोक निबाहू ॥

कहतसुनत सुमिरत सुठिनीके । रामलषणसमप्रिय तुलसीके ॥
बरणत बरण प्रीति बिलगाती । ब्रह्मजीवसम सहज सँघाती ॥
नर नारायण सरिस सुभ्राता । जगपालक बिशेष जनत्राता ॥
भक्ति सुतियकलकरण बिभूषण । जगहितहेतुबिमलबिधुपूषण ॥
स्वादतोषसम सुगति सुधाके । कमठ शेष समधर बसुधाके ॥
जन मन मंजु कंज मधुकरसे । जीह यशोमति हरिहलधरसे ॥
दो० एक छत्र इक मुकुटमणि सब बर्णन पर जोउ ।
तुलसी रघुबर नाम के वर्ण बिराजत दोउ ॥
समुभत सरसनाम अरुनामी । प्रीतिपरस्पर प्रभु अनुगामी ॥
नाम रूप दोउ ईश उपाधी । अकथअनादिसुसामुभसाधी ॥
को बड़छोट कहत अपराधू । सुनि गुणभेद समुभिहैंसाधू ॥
देखिय रूप नाम आधीना । रूपज्ञान नहिं नाम बिहीना ॥
रूप बिशेष नाम बिनजाने । करतलगतन परहिंपहिंचाने ॥
सुमिरिय नाम रूप बिनु देखे । आवत हृदय सनेह बिशेखे ॥
नाम रूप गति अकथकहानी । समुभतसुखदनजातबखानी ॥
अगुणसगुण बिचनामसुसाखी । उभयप्रबोधक चतुरदुभाखी ॥
दो० राम नाम मणि दीप धरु जीह देहरी द्वार ।
तुलसी भीतर बाहिरो जोचाहसिउजियार ॥
नामजीह जपि जागहिंयोगी । बिरति बिरंचिप्रपंचबियोगी ॥
ब्रह्मसुखहिं अनुभवहिं अनूपा । अकथ अनामयनामनरूपा ॥
जाना चहहिं गूढ़गति जेऊ । नाम जीह जपि जानहिं तेऊ ॥
साधकनाम जपहिं लय लाये । होहिंसिद्ध अणिमादिकपाये ॥
जपहिं नामजन आरत भारी । मिटहिं कुसंकट होहिंसुखारी ॥
राम भक्त जग चारिप्रकारा । सुकृती चारिउअनघ उदारा ॥
चहुँचतुरन कहँ नाम अधारा । ज्ञानी प्रभुहिं बिशेष पियारा ॥
चहुँ युग चहुँश्रुति नामप्रभाऊ । कलिबिशेष नहिंआनउपाऊ ॥
दो० सकल कामना हीन जे राम भक्ति रस लीन

नाम सुप्रेम पियूष हृद तिनहुँ किये मनमीन ॥
अगुण सगुण दो ब्रह्मसरूपा । अकथअगाधअनादिअनूपा ॥
मोरे मत बड़ नाम दुहूते । कियजेहियुगनिजबशानिजहूते॥
प्रौढ़ सुजनजन जानहिंजनकी । कहहुँप्रतीतिप्रीतिरुचिमनकी॥
एक दारु गत देखिय एकू । पावक युग सम ब्रह्म विवेकू ॥
उभय अगम युग सुगमनामते । कहउँ नाम बड़ ब्रह्म रामते ॥
ब्यापक एक ब्रह्म अबिनाशी । जड़ चेतनघन आनँद राशी ॥
असप्रभुहृदय अछतअबिकारी । सकलजीव जनदीन दुखारी ॥
नाम निरूपण नाम यतन तें । सोउप्रकटतजिमिमोलरतनतें॥
दो० निर्गुणते इहि भांति बड़ नाम प्रभाव अपार ।
कहउँ नाम बड़ रामते निज बिचार अनुसार ॥
राम भक्त हित नरतनु धारी । सहिसंकटकिय साधुसुखारी ॥
नाम सप्रेम जपत अनयासा । भक्त होहिं मुद मंगलवासा ॥
राम एक तापस तिय तारी । नामकोटि खलकुमतिसुधारी ॥
ऋषि हित राम सुकेतु सुताकी । सहितसेनसुत कीन्ह बेबाकी ॥
सहित दोष दुख दास दुराशा । दलैनामजिमिरबिनिशिनाशा॥
भंज्यो राम आप भव चापू । भवभय भंजन नाम प्रतापू ॥
दंडकवन प्रभु कीन्ह सुहावन । जनमनअमितनामकियपावन ॥
निशिचरनिकरदले रघुनंदन । नामसकलकलिकलुषनिकंदन ॥
दो० शवरी गीध सुसेवकनि सुगति दीन्ह रघुनाथ ।
नामउधारे अमितखल बेद बिदित गुणगाथ ॥
राम सुकण्ठ बिभीषण दोऊ । राखे शरण जान सब कोऊ ॥
नाम अनेक गरीब निवाजे । लोक बेद बर बिरद बिराजे ॥
राम भालुकपि कटक बटोरा । सेतु हेतु श्रमकीन्ह न थोरा ॥
नाम लेत भवसिन्धु सुखाहीं । करहुबिचार सुजनमनमाहीं ॥
राम सकुल रण रावण मारा । सीयसहित निजपुरपगुधारा ॥
राजा राम अवध रजधानी । गावतगुण सुरमुनिबरबानी ॥

सेवक सुमिरत नाम सप्रीती । बिनश्रमप्रबलमोहदलजीती ॥
फिरत सनेहमगन सुख अपने । नाम प्रताप शोचनहिं सपने ॥
दो० ब्रह्म रामं ते नाम बड़ बरदायक बरदानि ।
रामचरितशतकोटिमहँ लिय महेशजियजानि ॥
नाम प्रसाद शम्भु अविनाशी । साज अमंगल मंगल राशी ॥
शुकसनकादि सिद्ध मुनि योगी । नाम प्रसाद ब्रह्म सुखभोगी ॥
नारद जानेउ नाम प्रतापू । जगप्रियहरिहरहरिप्रियआपू ॥
नाम जपत प्रभुकीन्ह प्रसादू । भक्त शिरोमणि भे प्रहलादू ॥
ध्रुव सगलानि जप्यो हरिनामू । पायउ अचल अनूपमठामू ॥
सुमिरि पवनसुत पावन नामू । अपने बश करि राख्योरामू ॥
अपर अजामिलगजगणिकाऊ । भये मुक्त हरिनाम प्रभाऊ ॥
कहउँ कहाँलगि नाम बड़ाई । राम न सकहिं नामगुणगाई ॥
दो० राम नामको कल्पतरु कलि कल्याण निवास ।
जो सुमिरत भे भागते तुलसी तुलसीदास ॥
चहुँयुग तीनिकाल तिहुँलोका । भये नामजपि जीव विशोका ॥
वेद पुराण सन्त मत येहू । सकल सुकृतफलरामसनेहू ॥
ध्यान प्रथम युग मखयुगदूजे । द्वापर परितोषत प्रभु पूजे ॥
कलि केवल मलमूल मलीना । पापपयोनिधि जनमनमीना ॥
नाम कामतरु काल कराला । सुमिरतशमनसकलजगजाला ॥
रामनाम कलि अभिमतदाता । हितपरलोक लोकपितुमाता ॥
नहिं कलिकर्म न भक्तिविवेकू । राम नाम अवलम्ब न एकू ॥
कालनेमि करि कपट निधानू । राम सुमति समरथ हनुमानू ॥
दो० राम नाम नरकेशरी कनककशिपु कलिकाल ।
जापकजनप्रहलाद जिमि पालहिंदलसुरशाल ॥
भाय कुभायअनख आलसहू । नाम जपतमंगल दिशिदसहू ॥
सुमिरिसो नाम रामगुणगाथा । करौं नाइ रघुनाथहि माथा ॥
मोरिसुधारहिं सोसब भाँती । जासु कृपानहिं कृपाअघाती ॥

राम सुस्वामि सुसेवक मोसे । निजदिशिदेखिदयानिधिपोसे ॥
लोकहुँ वेद सुसाहब रीती । बिनयसुनतपहिचानतप्रीती ॥
गनी गरीब ग्राम नर नागर । पण्डित मूढ़ मलीन उजागर ॥
सुकबिकुकबिनिजमतिअनुसारी । नृपहिसराहत सब नरनारी ॥
साधु सुजान सुशील नृपाला । ईश अंश भव परम कृपाला ॥
सुनिसनमानहिं सबन सुबानी । भणितभक्तिमतिगतिपहिंचानी॥
यह प्राकृत महिपाल सुभाऊ । जानि शिरोमणि कोशलराऊ ॥
रीझत राम सनेह निसोते । को जगमन्द मलिनमतिमोते ॥
दो० शठ सेवककी प्रीति रुचि रखिहहिं रामकृपालु ।
उपलकियेजलयानजेहिसचिवसुमतिकपिभालु ॥
हौंहु कहावत सब कहत राम कहत उपहास ।
साहिब सीता नाथसे सेवक तुलसी दास ॥
अति बड़ि मोरि ढिठाई खोरी । सुनि अघ नरकहुनाकसिकोरी॥
समुझिसहमिमोहिंअपडरअपने । सोसुधिरामकीन्हनहिंसपने ॥
सुनिअवलोकिसुचितचखुचाही । भक्तिमोरिमति स्वामिसराही ॥
कहत नशाइ होइ अति नीकी । रीझतराम जानिजन जीकी ॥
रहत न प्रभुचित चूक कियेकी । करत सुरत सौबार हियेकी ॥
जेहिअघबधेउब्याधजिमिबाली । फिरिसुकंठसोइकीन्हकुचाली ॥
सोइ करतूति बिभीषण केरी । सपने सो न राम हिय हेरी ॥
ते भरतहि भेंटत सनमाने । राज सभा रघुबीर बखाने ॥
दो० प्रभु तरुतर कपि डारपर ते किय आप समान ।
तुलसी कहूँ न रामसे साहिब शील निधान ॥
राम निकाई शबरी है सबही को नीक ।
जो यह सांची है सदा तौ नीको तुलसीक ॥
यहिबिधिनिजगुणदोषकहिसबहिंबहुरिशिरनाय ।
बरणौं रघुबर बिशदयश सुनिकलिकलुषनशाय ॥
याज्ञवल्क्य जो कथा सुहाई । भरद्वाज मुनिवरहि सुनाई ॥

कहिहौं सोइ सम्बाद बखानी । सुनहुसकलसज्जनसुखमानी ॥
शम्भु कीन्ह यहचरित सुहावा । बहुरिकृपाकरिउमहिंसुनावा ॥
सोशिवकाकभुशुण्डिहि दीन्हा । रामभक्त अधिकारी चीन्हा ॥
तेहिसनयाज्ञवल्क्य मुनि पावा । तिन पुनि भरद्वाजप्रतिगावा ॥
ते श्रोता बकता सम शीला । समदरशी जानहिंहरिलीला ॥
जानहिं तीनिकाल निजज्ञाना । करतलगत आमलकसमाना ॥
औरौ जे हरिभक्त सुजाना । कहहिंसुनहिंसमुझहिंबिधिनाना ॥
दो० मैं पुनि निज गुरुसन सुनी कथा सुशूकरखेत ।
समुझि नहींतसु बालपन तब अतिरहेउँअचेत ॥
श्रोता बकता ज्ञान निधि कथा रामकी गूढ़ ।
किमिसमुझै यहजीवजड़कलिमलग्रसितबिमूढ़ ॥
तदपि कही गुरु बारहिं बारा ।समुझिपरीकछु मतिअनुसारा॥
भाषा बन्ध करब मैं सोई । मोरे मन प्रबोधजेहि होई ॥
जस कछु बुधि विवेक बलमोरे । तस कहिहौं हिय हरिकेप्रेरे ॥
निज सन्देह मोह भ्रम हरणी । करौं कथा भवसरिता तरणी ॥
बुध बिश्राम सकलजन रंजनि । रामकथाकलिकलुषविभंजनि॥
राम कथा कलि पन्नग भरणी । पुनिविवेक पावककहँअरणी ॥
राम कथा कलिकामद गाई । सुजन सजीवनि मूरिसुहाई ॥
सोइ बसुधातल सुधातरंगिनि । भवभंजनिभ्रमभेकभुवंगिनि ॥
असुरसेनसमनरकनिकंदिनि । साधुबिबुधकुलहितागिरिनंदिनि॥
सन्त समाज पयोधि रमासी । विश्वभारधरअचल क्षमासी ॥
यमगणमुहँमसि जगयमुनासी । जीवन मुक्ति हेतु जनु कासी ॥
रामहिं प्रिय पावनि तुलसीसी । तुलसिदासहिताहियहुलसीसी॥
शिव प्रिय मेकलशैल सुतासी । सकलसिद्ध प्रतिसंपतिरासी ॥
सदगुणसुरगणअंब अदितिसी । रघुबर भक्ति प्रेमपरमितिसी ॥
दो० रामकथा मंदाकिनी चित्रकूट चित चारु ।
तुलसी सुभग सनेहबन सियरघुबीर बिहारु ॥

रामचरित चिन्तामणि चारू । संतसुमतितियसुभगशृंगारू ॥
जग मंगल गुण ग्राम रामके । दानि मुक्तिधन धर्म धामके ॥
सदगुरु ज्ञान बिराग योगके । बिबुध बैद भव भीम रोगके ॥
जननि जनक सिय रामप्रेमके । बीज सकल व्रत धर्म नेमके ॥
शमन पाप संताप शोकके । प्रिय पालक परलोकलोकके ॥
सचिव सुभट भूपति बिचारके । कुम्भजलोभ उदधिअपारके ॥
कामकोह कलिमल करिगनके । केहरिशावक जनमन बनके ॥
अतिथि पूज्यप्रीतम पुरारिके । कामद घनदारिद दवारिके ॥
मंत्रमहामणि विषय व्यालके । मेटत कठिन कुअंक भालके ॥
हरण मोहतम दिनकर करसे । सेवक शालिपाल जलधरसे ॥
अभिमत दानि देव तरबरसे । सेवतसुलभ सुखद हरिहरसे ॥
सुकबि शरदनभमनउडुगनसे । रामभक्त जन जीवन धनसे ॥
सकल सुकृत फलभूरिभोगसे । जगहितनिरुपधिसाधुलोगसे ॥
सेवक मन मानस मरालसे । पावन गंग तरंग मालसे ॥

दो॰ कुपथ कुतर्क कुचालि कलि कपटदम्भ पाखण्ड ।
दहन राम गुण ग्रामइमि इन्धन अनल प्रचण्ड ॥
राम चरित राकेशकर सरिस सुखद सबकाहु ।
सज्जन कुमुद चकोर चित हित बिशेषबड़लाहु ॥

कीन्हप्रश्न जेहि भांति भवानी । जिहिबिधिशंकरकहाबखानी ॥
सो सब हेतु कहब मैं गाई । कथा प्रबन्ध बिचित्र बनाई ॥
जिनयह कथा सुनी नहिंहोई । जनिआश्चर्य्यकरैं सुनिसोई ॥
कथाअलौकिकसुनहिंजेज्ञानी । नहिंआश्चर्य्यकरहिंअसजानी ॥
राम कथा की मिति जगनाहीं । असप्रतीति जिनकेमनमाहीं ॥
नानाभांति राम अवतारा । रामायण शतकोटि अपारा ॥
कल्प भेद हरिचरित सुहाये । भांति अनेक मुनीशन गाये ॥
करिय न संशय अस उरआनी । सुनियकथासादर रतिमानी ॥

दो॰ राम अनन्त अनन्तगुण अमितकथा बिस्तार ।

सुनि आश्चर्य्य न मानिहहिं जिनके बिमलबिचार ॥
इहिबिधि सबसंशय करिदूरी । शिरधरि गुरुपद पंकजधूरी ॥
पुनि सबही बिनवौं करजोरी । करतकथाजेहि लागनखोरी ॥
सादर शिवहि नाइ अब माथा । बरणौं बिशद रामगुणगाथा ॥
संबत सोरह से इकतीसा । करौं कथा हरिपदधरिशीसा ॥
नौमी भौम बार मधु मासा । अवधपुरी यहचरितप्रकासा ॥
जेहिदिनरामजन्मश्रुतिगावहिं । तीरथसकलतहांचलिआवहिं ॥
असुर नाग खगनर मुनिदेवा । आयकरहिं रघुनायक सेवा ॥
जन्म महोत्सव रचहिं सुजाना । करहिं रामकल कीरतिगाना ॥
दो० मज्जहिं सज्जन बृन्दबहु पावन सरयूनीर ।
जपहिं रामधरिध्यानउर सुन्दर श्यामशरीर ॥
दरश परश मज्जन अरु पाना । हरै पाप कह वेद पुराना ॥
नदीपुनीत अमितमहिमाअति । कहिनसकैशारदाबिमलमति ॥
राम धामदा पुरी सुहावनि । लोकसमस्तबिदितजगपावनि ॥
चारिखानि जगजीव अपारा । अवधतजे तनु नहिंसंसारा ॥
सबबिधि पुरी मनोहर जानी । सकल सिद्धिप्रदमंगलखानी ॥
बिमल कथाकर कीन्ह अरम्भा । सुनतनशाहिं काममददम्भा ॥
रामचरित मानस यह नामा । सुनत श्रवण पाइय बिश्रामा ॥
मनकर बिषय अनलबनजरई । सोइसुखी जो इहि सरपरई ॥
रामचरित मानस मुनिभावन । बिरचेउशम्भुसुहावन पावन ॥
त्रिबिधिदोषदुखदारिददावन । कलिकुचालकलिकलुषनशावन ॥
रचिमहेश निज मानस राखा । पाइसुसमय शिवासनभाखा ॥
ताते राम रचित मानस बर । धरेउनाम हियहेरि हरषिहर ॥
कहौं कथा सोइ सुखदसुहाई । सादरसुनहु सुजन मनलाई ॥
दो० जसमानस जेहिबिधि भयो जगप्रचार जेहिहेतु ।
अबसोइ कहौं प्रसंग सब सुमिरिउमा बृषकेतु ॥
शम्भुप्रसादसुमति हियहुलसी । रामचरितमानसकबितुलसी ॥

करउँ मनोहर मति अनुहारी । सुजनसुचितसुनिलेहुसुधारी ॥
सुमति भूमिथल हृदयअगाधू । वेदपुराण उदधि घन साधू ॥
बर्षहिं राम सुयश घन बारी । मधुर मनोहर मंगलकारी ॥
लीलासगुणजो कहहिं बखानी । सोइ स्वच्छताकरै मलहानी ॥
प्रेम भक्ति जो बरणि न जाई । सोइ मधुरता शीतलताई ॥
सो जलसुकृत शालिहितहोई । राम भक्ति जग जीवन सोई ॥
मेघामहिगत सोजल पावन । सिमिटिश्रवणमगुचलेउसुहावन ॥
भरेउ सुमानसशिथिलथिराना । सुखदशीतरुचिचारुचिराना ॥
दो० सुठि सुन्दर सम्बादबर बिरचेउबुद्धि बिचारि ।
तेयहि पावन सुभगसर घाट मनोहर चारि ॥
सप्त प्रबन्ध सुभग सो पाना । ज्ञाननयन निरखतमनमाना ॥
रघुपतिमहिमा अगुणअबाधा । बरणबसोइ बरबारिअगाधा ॥
रामसीय समसलिल सुधासम । उपमाबीचि बिलासमनोरम ॥
पुरइनि सघन चारु चौपाई । युक्तिमंजु मणि सीप सुहाई ॥
छन्द सोरठा सुन्दर दोहा । सोइबहुरंग कमलकुलसोहा ॥
अरथ अनूप सुभाव सुबासा । सोइ पराग मकरंद सुबासा ॥
सुकृत पुंज मंजुलअलि माला । ज्ञान बिराग बिचार मराला ॥
धुनिअवरेव कबित गुणजाती । मीन मनोहर ते बहु भांती ॥
अर्थ धर्म्म कामादिक चारी । कहब ज्ञान बिज्ञान बिचारी ॥
नवरस जपतप योग बिरागा । ते सब जलधरचारु तड़ागा ॥
सुकृती साधु नाम गुणगाना । ते बिचित्रजलविहगसमाना ॥
सन्तसभा चहुँदिशि अँबराई । श्रद्धा ऋतु बसंत समगाई ॥
भक्तिनिरूपणविविध बिधाना । क्षमा दया द्रुमलता बिताना ॥
संयम नियम फूलफल ज्ञाना । हरिपद रतिरसवेद बखाना ॥
औरौ कथा अनेक प्रसंगा । तेइ शुकपिकबहुबरणविहंगा ॥
दो० पुहुप बाटिका बागबन सुख सुविहंगविहारु ।
माली सुमन सनेहजल सींचत लोचनचारु ॥

जे गावहिं यह चरित सँभारे । तेयहि ताल चतुर रखवारे ॥
सदा सुनहिं सादर नरनारी । ते सुरवर मानस अधिकारी ॥
अतिखलजे बिषयी बककागा । इहसरनिकटनजाहिंअभागा ॥
शम्बुक भेक सिवार समाना । इहां न बिषय कथारसनाना ॥
तेहि कारण आवत हियहारे । कामी काक बलाक बिचारे ॥
आवत इहिसर अतिकठिनाई । राम कृपा बिनु आइ न जाई ॥
कठिन कुसंग कुपंथ कराला । तिनकेबचनब्याघ्रहरिब्याला ॥
गृह कारज नाना जंजाला । तेइ अतिदुर्गमशैलबिशाला ॥
बनबहु बिषय मोह मदनाना । नदी कुतर्क भयंकर नाना ॥
दो० जे श्रद्धा सम्बल रहित नहिं सन्तनकर साथ ।
तिनकहँमानसअगमअतिजिनहिंनप्रियरघुनाथ ॥
जो करिकष्ट जाइ पुनि कोई । जातहि नींद जुड़ाई होई ॥
जड़ता जाड़ विषम उर लागा । गयहु नमज्जनपावअभागा ॥
करि न जाइ सर मज्जन पाना । फिरिआवहिंसमेतअभिमाना ॥
जो बहोरिकोउ पूछन आवा । सरनिन्दाकरि ताहि सुनावा ॥
सकल विघ्नब्यापहिंनहिं तेही । रामकृपाकरि चितवहिं जेही ॥
सोइ सादर सरमज्जन करहीं । महाघोर त्रयताप न जरहीं ॥
तेनर यह सर तजहिं न काऊ । जिनके रामचरितभलभाऊ ॥
जो नहाइ चह इहिसर भाई । तो सतसंग करौ मन लाई ॥
अस मानस मानसचख चाही । भइकबिबुद्धि बिमलअवगाही ॥
बढ़्यो हृदय आनन्द उछाहू । उमगेउ प्रेम प्रमोद प्रबाहू ॥
चली सुभग कविता सरतासों । रामबिमल जलभरिगातासों ॥
सरयू नाम सुमंगल मूला । लोक वेद मतमंजुल कूला ॥
नदी पुनीत सुमानस नंदिनि । कलिमलतृणतरुमूलनिकंदिनि ॥
दो० श्रोता त्रिबिधसमाजपुर ग्रामनगर दुहुँकूल ।
सन्तसभाअनुपम अवध सकल सुमंगल मूल ॥
राम भक्ति सुरसरि तेहि जाई । मिली सुकीरति सरयुसुहाई ॥

सानुज राम समर यश पावन । मिलेउमहानदशोण सुहावन ॥
युग बिच भक्ति देव मुनिधारा । सोहतिसहितसुबिरतिबिचारा॥
त्रिविध ताप त्रासकत्रिमुहानी । राम सरूप सिंधु समुहानी ॥
मानस मूल मिली सुरसरिही । सुनतसुजनमन पावनकरिही ॥
बिचबिच कथाविचित्रबिभागा । जनु सरि तीरतीर बनबागा ॥
उमा महेश बिवाह बराती । तेजलचरअगणित बहुभांती ॥
रघुवर जन्म अनन्द बधाई । भँवर तरंग मनोहरताई ॥
दो० बाल चरित चहुँ बन्धुके बनजविपुल बहुरंग ।
नृप रानी परिजन सुकृत मधुकर बारि बिहंग ॥
सीय स्वयम्बर कथा सुहाई । सरित सुहावनि सो छबिछाई ॥
नदी नाव बटु प्रश्न अनेका । केवट कुशल उतर सबिवेका ॥
पुनि अनुकथन परस्पर होई । पथिक समाज सोहसरिसोई ॥
घोर धार भृगुनाथ रिसानी । घाट सुबन्ध रामबर बानी ॥
सानुज राम बिवाह उछाहू । सोशुभउमँग सुखदसबकाहू ॥
कहतसुनत हरषहिं पुलकाहीं । तेसुकृती जन मुदित नहाहीं ॥
राम तिलकहित मंगल साजा । पर्व योग जनु जुरेउ समाजा ॥
काई कुमति केकयी केरी । परी जासुफल विपति घनेरी ॥
दो० शमन अमित उतपातसब भरतचरित जपयाग ।
कलिअघखल अवगुणकथन तेजलमलबककाग ॥
कीरति सरित छहूं ऋतुरूरी । समय सुहावनि पावनि भूरी ॥
हिम हिमशैलसुता शिवब्याहू । शिशिरसुखदप्रभुजन्मउछाहू॥
बरणब राम बिवाह समाजू । सो मुदमंगलमय ऋतुराजू ॥
ग्रीषम दुसह राम वन गवनू । पंथ कथा खर आतप पवनू ॥
बर्षा घोर निशाचर रारी । सुरकुल शांति सुमंगलकारी ॥
राम राज सुख बिनय बड़ाई । बिशदसुखदसोइशरदसुहाई॥
सतीशिरोमणि सिय गुणगाथा । सोइगुणअमल अनूपमपाथा ॥
भरत सुभाव सुशीतलताई । सदा एकरस बरणि न जाई ॥

दो० अवलोकनि बोलनि मिलनि प्रीति परस्परहास।
भायप भलि चहुँ बंधुकी जल माधुरी सुबास॥
आरति विनय दीनता मोरी। लघुताललित सुबारिनथोरी॥
अद्भुत सलिलसुनत गुणकारी। आस पियास मनो मलहारी॥
राम सुप्रेमहिं पोषत पानी। हरतसकलकलिकलुषगलानी॥
भव श्रम शोषक तोषक तोषा। शमनदुरितदुख दारिददोषा॥
काम क्रोध मद मोह नशावन। विमलविवेक विरागबढ़ावन॥
सादर मज्जन पान कियेतें। मिटत पाप परिताप हियेतें॥
जिन यह बारि न मानस धोये। तिनकायर कलिकालबिगोये॥
तृषित निरखि रबिकरभववारी। फिरहिंमृगाजिमिजीवदुखारी॥
दो० मति अनुहारिसुबारिगुण गणिगुण मन अन्हवाइ।
सुमिरि भवानी शंकरहि कहकबि कथा सुहाइ॥
भरद्वाजजिमि प्रश्नकिय याज्ञवल्क्य मुनि पाय।
प्रथम मुख्य सम्बाद सोइ कहिहौं हेतु बुझाय॥
अब रघुपति पदपंकरुह हिय धरि पायप्रसाद।
कहौं युगल मुनिवर्य्य कर मिलन सुभग सम्बाद॥
भरद्वाजमुनि बसहिं प्रयागा। जिनहिंरामपदअतिअनुरागा॥
तापस शम दम दया निधाना। परमारथ पथ परम सुजाना॥
माघ मकर गत रवि जब होई। तीरथपतिहिं आव सब कोई॥
देव दनुज किन्नर नर श्रेणी। सादरमज्जहिंसकल त्रिबेणी॥
पूजहिं माधव पद जलजाता। परसिअक्षयबट हर्षितगाता॥
भरद्वाज आश्रम अति पावन। परमरम्य मुनिवरमनभावन॥
तहां होइ मुनि ऋषयसमाजा। जाहिं जे मज्जन तीरथराजा॥
मज्जहिं प्रात समेत उछाहा। कहहिं परस्पर हरिगुणगाहा॥
दो० ब्रह्मनिरूपण धर्मबिधि बरणहिं तत्त्वबिभाग।
कहहिं भक्ति भगवन्तकी संयुत ज्ञानबिराग॥
इहि प्रकार भरिमकर नहाहीं। पुनिसबनिजनिजआश्रमजाहीं॥

प्रति सम्बत अस होइ अनंदा । मकरमज्जिगवनहिंमुनिबृंदा ॥
एक बार भरि मकर नहाये । सबमुनीशआश्रमानिसिधाये ॥
याज्ञवल्क्य मुनि परम विवेकी । भरद्वाज राखेउ पद टेकी ॥
सादर चरण सरोज पखारे । अति पुनीत आसन बैठारे ॥
करि पूजा मुनि सुयश बखानी । बोले अति पुनीत मृदुबानी ॥
नाथ एक संशय बड़ मोरे । करतल वेदतत्त्व सब तोरे ॥
कहत मोहिं लागत भयलाजा । जो न कहौं बड़होइअकाजा ॥

दो० सन्तकहहिं असनीतिप्रभु श्रुतिपुराण जो गाव ।
होइ न बिमल विवेकउर गुरुसन कियेदुराव ॥

असबिचारि प्रगट्योनिजमोहू । करहुनाथ करि जनपरछोहू ॥
राम नाम कर अमित प्रभावा । सन्तपुराण उपनिषद गावा ॥
सन्तत जपतशम्भु अविनाशी । शिवभगवानज्ञानगुणराशी ॥
आकर चारि जीव जगअहहीं । काशी मरत परमपद लहहीं ॥
सोकि राम महिमा मुनिराया । शिव उपदेश करतकरिदाया ॥
राम कवन प्रभु पूछौं तोहीं । कहहुबुझाय कृपानिधिमोहीं ॥
एक राम अवधेश कुमारा । तिनकरचरितबिदितसंसारा ॥
नारिबिरह दुख लहेउ अपारा । भये रोष रण रावण मारा ॥

दो० प्रभुसोइरामकि अपरकोउ जाहि जपत त्रिपुरारि ।
सत्यधाम सर्वज्ञ तुम कहहु विवेक बिचारि ॥

जैसे मिटै मोह भ्रम भारी । कहहु सो कथानाथविस्तारी ॥
याज्ञवल्क्य बोले मुसुकाई । तुमहिंविदितरघुपतिप्रभुताई ॥
राम भक्त तुम मनक्रम बानी । चतुराई तुम्हारि मैं जानी ॥
चाहहु सुना राम गुण गूढ़ा । कीन्हेउप्रश्नमनहुं अतिमूढ़ा ॥
तात सुनहु सादर मन लाई । कहहुँ रामकी कथा सुहाई ॥
महा मोह महिषेश बिशाला । रामकथा कालिका कराला ॥
रामकथा शशिकिरणि समाना । सन्तचकोर करहिं तेहिपाना ॥
ऐसे संशय कीन्ह भवानी । महादेव तब कहा बखानी ॥

दो० कहौंसो मति अनुहार अब उमा शम्भु सम्वाद ।
भयउसमय जेहिहेतुजेहि सुनिमुनिमिटहिंबिषाद ॥
एक बार त्रेता युग माहीं । शम्भुगये कुम्भज ऋषिपाहीं ॥
संग सती जग जननि भवानी । पूजे ऋषि अखिलेश्वरजानी ॥
राम कथा मुनिवर्य्य बखानी । सुनी महेश परम सुखमानी ॥
ऋषि पूंछी हरिभक्ति सुहाई । कही शम्भु अधिकारी पाई ॥
कहतसुनत रघुपति गुणगाथा । कछुदिन तहांरहे गिरिनाथा ॥
मुनिसन बिदा मांगि त्रिपुरारी । चले भवन सँग दक्षकुमारी ॥
तेहि अवसर भंजन महि भारा । हरिरघुबंश लीन्ह अवतारा ॥
पिता बचन तजि राज उदासी । दण्डकवनबिचरतअविनासी॥
दो० हृदय बिचारत जातहर केहिबिधि दरशन होइ ।
गुप्त रूप अवतरेउ प्रभु गये जानि सब कोइ ॥
सो० शङ्कर उर अति क्षोभ सती न जानहिं मर्मसोइ ।
तुलसी दरशन लोभ मन डर लोचन लालची ॥
रावण मरण मनुजकर यांचा । प्रभुविधिवचनकीनचहसांचा॥
जो नहिं जाउँ रहै पछितावा । करत बिचार न बनतबनावा ॥
यहि बिधि भये शोचबशईशा । ताही समय जाय दशशीशा ॥
लीन्ह नीच मारीचहि संगा । भयेउ तुरत सोइकपट कुरंगा ॥
करि छल मूढ़ हरी बैदेही । प्रभु प्रतापउर विदितनतेही ॥
मृगबधिबन्धु सहित हरिआये । आश्रमदेखि नयनजलछाये ॥
बिरह बिकल नर इव रघुराई । खोजतविपिनफिरतदोउभाई॥
कबहूं योग वियोग न जाके । देखा प्रकट विरह दुखताके ॥
दो० अति बिचित्र रघुपति चरित जानहिं परमसुजान ।
जे मतिमंद बिमोहबश हृदय धरहिं कछुआन ॥
शम्भुसमय तेहि रामहिं देखा । उपजाहिय अतिहर्षविशेखा ॥
भरि लोचन छबिसिन्धुनिहारी । कुसमयजानिनकीन्हचिन्हारी॥
जय सच्चिदानन्द जग पावन । असकहिचलेमनोजनशावन ॥

चले जात शिव सती समेता । पुनिपुनिपुलकितकृपानिकेता ॥
सती सो दशा शम्भुकी देखी । उर उपजा संदेह विशेखी ॥
शंकर जगतबन्ध्य जगदीशा । सुरनरमुनि सबनावतशीशा ॥
तिननृप सुतहिकीन्ह परणामा । कहि सच्चिदानन्द परधामा ॥
भयेमगन छबि तासु बिलोकी । अजहुंप्रीति उररहतिनरोकी ॥
दो० ब्रह्मजोव्यापक बिरजअज अकलअनीह अभेद ।
सोकि देहधरि होइनर जाहि न जानत वेद ॥
विष्णु जो सुरहितनरतनुधारी । सोउ सर्वज्ञ यथा त्रिपुरारी ॥
खोजत सो कि अज्ञ इव नारी । ज्ञानधाम श्रीपति असुरारी ॥
शम्भु गिरा पुनि मृषा न होई । शिव सर्वज्ञ जान सब कोई ॥
असंसशय मन भयउ अपारा । होइ न हृदय प्रबोध प्रचारा ॥
यद्यपि प्रकट न कहेउ भवानी । हर अन्तर्य्यामी सब जानी ॥
सुनहु सती तव नारि सुभाऊ । संशयअस न धरियमनकाऊ ॥
जासु कथा कुम्भजऋषि गाई । भक्तिजासु मैं मुनिहि सुनाई ॥
सोइ मम इष्टदेव रघुबीरा । सेवत जाहि सदा मुनिधीरा ॥
छं० मुनिधीर योगीसिद्ध सन्तत बिमलमनजेहि ध्यावहीं ।
कहिनेति निगमपुराण आगम जासुकीरति गावहीं ॥
सोइ राम ब्यापक ब्रह्मभुवन निकायपति मायाधनी ।
अवतरेउ अपने भक्तहित निजतंत्रनित रघुकुलमनी ॥
सो० लाग न उर उपदेश यदपि कहेउ शिव बारबहु ।
बोलेबिहँसि महेश हरि माया बल जानि जिय ॥
जो तुम्हरे मन अति सन्देहू । तौ किन जाइ परीक्षा लेहू ॥
तबलगि बैठि रहौं बट छाहीं । जबलगितुमऐहहु मोहिपाहीं ॥
जैसे जाइ मोह भ्रम भारी । करहुसो यतनबिबेकबिचारी ॥
चलीं सती शिव आयसुपाई । करहिं बिचार करौं का भाई ॥
इहांशम्भु अस मन अनुमाना । दक्षसुताकहँ नहिं कल्याना ॥
मोरेहु कहे न संशय जाहीं । बिधि बिपरीत भलाई नाहीं ॥

होइहि सोइ जो रामरचिराखा । कोकरि तर्क बढ़ावहि शाखा ॥
असकहि जपनलगे हरिनामा । गईं सती जहँ प्रभु सुखधामा ॥
दो० पुनिपुनि हृदय बिचारकरि धरि सीताकररूप ।
आगे होइ चलिपंथतेहि जेहि आवतसुरभूप ॥
लक्ष्मण दीख उमा कृतवेषा । चकितहृदयभ्रमभयउबिशेषा ॥
कहि न सकतकछु अतिगम्भीरा । प्रभु प्रभावजानतमतिधीरा ॥
सती कपट जानेउ सुरस्वामी । समदर्शी सब अन्तर्य्यामी ॥
सुमिरत जाहि मिटै अज्ञाना । सोइ सर्वज्ञ राम भगवाना ॥
सती कीन्ह चह तहउँ दुराऊ । देखहु नारिसुभाउ प्रभाऊ ॥
निज मायाबल हृदय बखानी । बोले बिहँसि राम मृदुबानी ॥
जोरिपाणि प्रभुकीन्ह प्रणामू । पिता समेत लीन्ह निजनामू ॥
कहेउ बहोरि कहां वृषकेतू । बिपिनअकेलिफिरहुकेहिहेतू ॥
दो० राम बचनमृदु गूढ़ सुनि उपजा अति संकोच ।
सती सभीत महेश पहँ चलीं हृदय बड़शोच ॥
मैं शंकर कर कहा न माना । निज अज्ञान रामपहँ आना ॥
जाइ उतर अब देहौं काहा । उर उपजा अतिदारुणदाहा ॥
जाना राम सती दुख पावा । निजप्रभावकछुप्रकटजनावा ॥
सती दीख कौतुक मग जाता । आगेराम सहित सियभ्राता ॥
फिर चितवा पाछे प्रभु देखा । सहितबन्धु सिय सुन्दरवेखा ॥
जहँ चितवहिं तहँप्रभुआसीना । सेवहिं सिद्ध मुनीश प्रबीना ॥
देखेशिव बिधि बिष्णु अनेका । अमित प्रभाव एकते एका ॥
बन्दत चरण करत प्रभु सेवा । विविध वेष देखे सब देवा ॥
दो० सती बिधात्री इन्दिरा देखी अमित अनूप ।
जेहिजेहिवेषअजादिसुर तेहितेहितनुअनुरूप ॥
देखे जहँ तहँ रघुपति जेते । शक्तिन सहितसकलसुरतेते ॥
जीव चराचर जे संसारा । देखे सकल अनेक प्रकारा ॥
पूजहिं प्रभुहि देव बहु बेखा । रामरूप दूसर नहिं देखा ॥

अवलोके रघुपति बहुतेरे । सीता सहित न वेष घनेरे ॥
सोइरघुवर सोइ लक्ष्मणसीता । देखिसती अतिभईं सभीता ॥
हृदयकम्प तनुसुधि कछुनाहीं । नयन मूंदि बैठीं मगमाहीं ॥
बहुरि बिलोकेउ नयन उघारी । कछु न दीखतहँ दक्षकुमारी ॥
पुनि पुनि नाइ रामपद शीशा । चलीं तहां जहँरहे गिरीशा ॥
दो० गईं समीप महेश तब हँसि पूँछी कुशलात ।
लीं न परीक्षा कवनबिधि कहहु सत्य सब बात ॥
सती समुझि रघुबीर प्रभाऊ । भयबशशिवसनकीन्हदुराऊ ॥
कछु न परीक्षा लीन्ह गुसाईं । कीन्हप्रणामतुम्हारिहि नाईं ॥
जो तुमकहा सो मृषा न होई । मोरे मन प्रतीति अस सोई ॥
तब शंकर देखेउ धरि ध्याना । सतीजोकीन्हचरितसबजाना ॥
बहुरि राममायहि शिर नावा । प्रेरि सतिहिजेहिझूठकहावा ॥
हरि इच्छा भावी बलवाना । हृदयबिचारत शम्भुसुजाना ॥
सती कीन्ह सीता कर वेषा । शिव उरभयउ बिषादबिशेषा ॥
जो अब करौं सती सन प्रीती । मिटै भक्ति पथ होइ अनीती ॥
दो० परम प्रेम नहिं जायतजि किये प्रेम बड़ पाप ।
प्रकट न कहत महेशकछु हृदय अधिकसंताप ॥
तबहिंशम्भु प्रभुपद शिरनावा । सुमिरत रामहृदयअसआवा ॥
यहितनसतिहि भेंट मोहिंनाहीं । शिव संकलपकीन्ह मनमाहीं ॥
असबिचारि शंकर मति धीरा । चलेभवन सुमिरत रघुबीरा ॥
चलत गगनभइ गिरा सुहाई । जयमहेश भलि भक्तिदृढ़ाई ॥
असप्रण तुमबिन करैकोआना । रामभक्त समरथ भगवाना ॥
सुनि नभ गिरा सतीउरशोचू । पूछा शिवहि समेत सकोचू ॥
कीन्ह कवनप्रण कहहु कृपाला । सत्यधाम प्रभु दीनदयाला ॥
यदपि सती पूंछा बहु भाँती । तदपि न कहेउ त्रिपुरआराती ॥
दो० सती हृदय अनुमान किय सब जाना सर्वज्ञ ।
कीन्ह कपट मैं शम्भुसन नारिसहज जड़ अज्ञ ॥

सो० जलपयसरिसबिकाइ देखहुप्रीति कि रीतिभल ।
बिलग होइ रस जाइ कपट खटाई परतही ॥
हृदयशोचसमुझत निजकरणी । चिन्ताअमितजाइनहिंबरणी॥
कृपासिन्धु शिव परम अगाधा । प्रकट न कहेउ मोर अपराधा ॥
शंकररुख अवलोकि भवानी । प्रभुमोहिंतजेउहृदयअकुलानी ॥
निजअघसमुझिनकछुकहिजाई । तपै अवांइव उर अधिकाई ॥
सतिहि सशोच जानि वृषकेतू । कहेउ कथा सुन्दर सुखहेतू ॥
बरणत पंथ विविध इतिहासा । विश्वनाथ पहुंचे कैलासा ॥
तहँपुनिशम्भुसमुझिप्रणआपन । बैठेबटतर करि कमलासन ॥
शंकर सहज स्वरूप सँभारा । लागि समाधि अखंडअपारा ॥
दो० सती बसहिं कैलासतब अधिक शोच मनमाहिं ।
मर्म न कोऊ जानकछु युगसम दिवस सिराहिं ॥
नित नव शोच सती उरभारा । कब जैहौं दुख सागर पारा ॥
मैं जोकीन्ह रघुपति अपमाना । पुनिपतिबचनमृषाकरिजाना ॥
सो फल मोहिं बिधाता दीन्हा । जोकछुउचितरहासो कीन्हा ॥
अबबिधिअसबूझियनहिंतोहीं । शंकर बिमुख जियावहुमोहीं ॥
कहि न जाय कछु हृदयगलानी । मनमहँरामहिंसुमिरिसयानी ॥
जो प्रभु दीनदयालु कहावा । आरति हरण वेद यशगावा ॥
तौ मैं बिनय करौं करजोरी । छूटै बेगि देह यह मोरी ॥
जो मोरे शिवचरण सनेहू । मन क्रम बचन सत्यव्रतयेहू ॥
दो० तौ समदर्शी सुनिय प्रभु करौ सो बेगि उपाय ।
होइमरणजेहिबिनहिंश्रम दुस्सहबिपतिबिहाय ॥
यहिबिधि दुखितप्रजेशकुमारी । अकथनीय दारुण दुखभारी ॥
बीते संबत सहस सतासी । तजीसमाधिशम्भुअविनासी ॥
राम नाम शिव सुमिरण लागे । जानेउ सतीजगतपतिजागे ॥
जाइ शम्भुपद बन्दन कीन्हा । सन्मुख शंकरआसन दीन्हा ॥
लगे कहन हरिकथा रसाला । दक्ष प्रजेश भये तेहिकाला ॥

देखाबिधि बिचारिसबलायक । दत्तहि कीन्हप्रजापतिनायक ॥
बड़ अधिकार दत्त जब पावा । अतिअभिमानहृदयतबआवा॥
नहिंकोउ असजन्मेउजगमाहीं । प्रभुता पाइ जांहि मदनाहीं ॥
दो० दत्त लिये मुनि बोलि तब करन लगे बड़यांग ।
नेवते सादर सकल सुर जे पावत मखभाग ॥
किन्नर नाग सिद्ध गन्धर्बा । बधुन समेत चले सुर सर्बा ॥
बिष्णु बिरंचि महेश बिहाई । चले सकल सुर यान बनाई ॥
सती बिलोकेउ गगन बिमाना । जातचले सुन्दर बिधिनाना ॥
सुर सुन्दरी करहिं कलगाना । सुनतश्रवणछूटहिंमुनिध्याना ॥
पूंछेउ तब शिव कहेउ बखानी । पिता यज्ञ सुनिके हरषानी ॥
जो महेश मोहिं आयसु देहीं । कछुदिन जाइ रहौं मिसएहीं ॥
पति परित्याग हृदय दुखभारी । कहै न निज अपराधबिचारी ॥
बोलीं सती मनोहर बानी । भय संकोच प्रेम रस सानी ॥
दो० पिता भवन उत्सव परम जो प्रभु आयसु होइ ।
तौ मैं जाउँ कृपायतन सादर देखन सोइ ॥
कहेउ नीक मोरे मन भावा । यहअनुचितनहिंनेवतपठावा॥
दत्त सकल निज सुता बुलाई । हमरे बैर तुम्हैं बिसराई ॥
ब्रह्मसभा हम सन दुखमाना । तेहितेअजहुंकरहिंअपमाना ॥
जो बिन बोले जाहुभवानी । रहै न शील सनेह न कानी ॥
यद्यपिमित्र प्रभु पितु गुरु गेहा । जाइय बिनु बोले न सँदेहा ॥
तदपि बिरोध मान जहँ कोई । तहां गये कल्याण न होई ॥
भाँति अनेकशम्भु समुझावा । भावी वश न ज्ञानउरआवा ॥
कहप्रभुजाहु जो बिनहिं बुलाये । नहिं भलिबात हमारे भाये ॥
दो० कहि देखा हर यतनबहु रहै न दत्त कुमारि ।
दिये मुख्य गण संगतब बिदा किये त्रिपुरारि ॥
पिता भवन जब गईं भवानी । दत्त त्रास काहुन सम्मानी ॥
सादर भलेहि मिली इकमाता । भगिनींमिलीबहुतमुसकाता ॥

दक्ष न कछु पूंछी कुशलाता । सतिहि बिलोकिजरेसबगाता ॥
सती जाय देखेउ तब यागा । कतहुं न दीख शंभुकरभागा ॥
तब चितचढ़ेउ जोशंकरकहेऊ । प्रभुअपमानसमुझिउरदहेऊ॥
पाछिलदुख न हृदयअसव्यापा । जस यह भयउमहापरितापा ॥
यद्यपिजग दारुण दुखनाना । सबतेकठिन जाति अपमाना ॥
समुझिशोचितिहिंभाअतिक्रोधा। बहुबिधिजननीकीन्हप्रबोधा॥
दो० शिव अपमान न जाइसहि हृदय न होत प्रबोध ।
सकलसभहिं हठिहटकितब बोलींबचन सक्रोध ॥
सुनहु सभासद सकल मुनिंदा । कही सुनी जिन शंकर निंदा ॥
सो फल तुरत लहब सब काहू । भलीभांति पछिताब पिताहू ॥
सन्त शम्भु श्रीपति अपवादा । सुनियजहांतहँ असमर्य्यादा ॥
काटिय तासु जीभ जु बसाई । श्रवणमूंदि नहिंचलियपराई ॥
जगदातम महेश त्रिपुरारी । जगतजनक सबकेहितकारी ॥
पिता मन्दमति निन्दत तेही । दक्ष शुक्र सम्भव यह देही ॥
तजिहौं तुरत देह तेहि हेतू । उर धरि चन्द्रमौलि वृषकेतू ॥
असकहि योग अग्नितनजारा । भयउ सकल मखहाहाकारा ॥
दो० सती मरण सुनि शम्भुगण लगे करन मख खीश ।
यज्ञ विध्वंस बिलोकि भृगु रक्षा कीन्ह मुनीश ॥
समाचार जब शंकर पाये । बीरभद्र करि कोप पठाये ॥
यज्ञबिध्वंसजायातिन्हकीन्हा । सकलसुरन्हबिधिवतफलदीन्हा ॥
भइजगबिदित दक्षगति सोई । जसकछुशम्भु बिमुखकीहोई ॥
यह इतिहाससकल जगजाना । ताते मैं संक्षेप बखाना ॥
सतीमरत हरिसन बर मांगा । जन्मजन्म शिवपदअनुरागा ॥
तेहिकारण हिमगिरि गृहजाई । जन्मी पारवती तनु पाई ॥
जबते उमा शैल गृह आई । सकलसिद्धिसम्पतितहँछाई ॥
जहँ तहँ मुनिनसुआश्रमकीन्हे । उचित बास हिमभूधर दीन्हे ॥
दो० सदा सुमनफल सहित सब द्रुमनव नानाजाति ।

प्रकटी सुन्दर शैलपर मणिआकर बहुभांति ।
सरिता सब पुनीत जल बहईं । खगमृगमधुप सुखीसबरहईं ॥
सहज बैर सब जीवन त्यागा । गिरिपरसकलकरहिंअनुरागा॥
सोहशैल गिरिजा गृह आये । जिमि नर रामभक्तिके पाये ॥
नित नूतन मंगल गृह तासू । ब्रह्मादिक गावहिं यश जासू ॥
नारद समाचार सब पाये । कौतुक हिमगिरिगेहसिधाये ॥
शैलराज बड़ आदर कीन्हा । पद पखारि बरआसनदीन्हा ॥
नारिसहित मुनिपदशिरनावा । चरणसलिलसबभवनसिंचावा॥
निजसौभाग्यबहुत गिरिबरणा । सुताबोलि मेली मुनिचरणा ॥
दो० त्रिकालज्ञ सर्वज्ञतुम गति सर्वत्र तुम्हारि ।
कहहुसुताके दोषगुण मुनिवरहृदयबिचारि ॥
कह मुनिबिहँसि गूढ़मृदुबानी । सुतातुम्हारिसकलगुणखानी॥
सुन्दरि सहज सुशील सयानी । नाम उमा अम्बिका भवानी ॥
सब लक्षण सम्पन्न कुमारी । होइहिसन्तत पियहिपियारी ॥
सदाअचलइहिकर अहिवाता । इहिते यश पैहहिं पितुमाता ॥
होइहि पूज्य सकल जगमाहीं । इहिसेवत कछु दुर्लभनाहीं ॥
इहिकरनाम सुमिरिसंसारा । तियचढ़िहहिंपतिव्रतअसिधारा ॥
शैलसुलक्षण सुता तुम्हारी । सुनहुजेअबअवगुणदुइचारी ॥
अगुण अमान मातुपितु हीना । उदासीन सब संशय छीना ॥
दो० योगी जटिल अकाम तनु नगन अमंगल बेख ।
असस्वामी इहिकहँ मिलहि परीहस्त असरेख ॥
सुनिमुनिगिरा सत्य जियजानी । दुखदम्पतिहि उमाहरषानी ॥
नारदहू यह भेद न जाना । दशाएकसमुझत बिलगाना ॥
सकलसखी गिरिजा गिरिमैना । पुलक शरीर भरे जलनैना ॥
होय न मृषा देवऋषि भाखा । उमासो बचनहृदयधरिराखा ॥
उपजेउ शिवपद कमल सनेहू । मिलन कठिन मनयहसन्देहू ॥
जानि कुअवसर प्रीति दुराई । सखि उछंग बैठी पुनिजाई ॥

झूंठि न होइ देवऋषि बानी । शोचहिंदम्पति सखीसयानी ॥
उर धरि धीर कहै गिरिराऊ । कहहुनाथ काकरिय उपाऊ ॥
दो० कहमुनीश हिमवंतसुनु जो विधिलिखा लिलार ।
देव दनुज नरनाग मुनि कोउ न मेटनहार ॥
तदपि एक मैं कहौं उपाई । होइ करै जो दैव सहाई ॥
जस बर मैं बरणेउँ तुम पाहीं । मिलिहिउमहिंकछुसंशयनाहीं ॥
जे जे बरके दोष बखाने । तेसब शिव पहँ मैं अनुमाने ॥
जो विवाह शंकर सन होई । दोषहु गुण समकह सबकोई ॥
जो अहिसेज शयनहरिकरहीं । बुधकछुतिनकहँ दोषनधरहीं ॥
भानु कृशानु सर्व रस खाहीं । तिनकहँमन्दकहतकोउनाहीं ॥
शुभअरुअशुभसलिलसबबहहीं । सुरसरिकोउनअपावनकहहीं ॥
समरथकहँ नहिं दोष गुसाईं । रबिपावक सुरसरिकी नाईं ॥
दो० जो अस ईर्षाकरहिं नर जड़ विवेक अभिमान ।
परहिं कलपभरि नरकमहँ जीव कि ईशसमान ॥
सुरसरिजलकृत बारुण जाना । कबहुं न संतकरहिंतिहिपाना ॥
सुरसरि मिले सुपावन जैसे । ईश अनीशहि अन्तर तैसे ॥
शम्भु सहज समरथभगवाना । इहिबिवाहसबबिधिकल्याना ॥
दुराराध्य पै अहहिं महेशू । आशुतोष पुनि किये कलेशू ॥
जो तप करै कुमारि तुम्हारी । भाविउ मेटिसकैं त्रिपुरारी ॥
यद्यपि वर अनेक जगमाहीं । इहिकहँ शिवतजिदूसरनाहीं ॥
बरदायक प्रणतारत भञ्जन । कृपासिन्धु सेवकमन रञ्जन ॥
इच्छितफल बिनु शिवअवराधे । लहइ न कोटियोगजपसाधे ॥
दो० असकहिनारदसुमिरिहरि गिरिजहिंदीन्हअशीश ।
होइहि सब कल्याण अब संशय तजहु गिरीश ॥
कहिअसब्रह्मभवनमुनिगयऊ । आगिलचरितसुनहुजसभयऊ ॥
पतिहि इकांत पायकह मैना । नाथ न मैं समुझेउँ मुनिबैना ॥
जो घरबर कुलहोइ अनूपा । करिय बिवाहसुता अनुरूपा ॥

नतु कन्या बरु रहै कुमारी । कन्त उमा मम प्राणपियारी ॥
जोनमिलिहिवर गिरिजहियोगू । गिरिजइसहजकहहिंसबलोगू॥
सो बिचारि पति करहु बिवाहू । जेहि न बहोरि होइ उरदाहू ॥
अस कहिपरी चरण धरिशीशा । बोले सहित सनेह गिरीशा ॥
बरु पावक प्रकटै शशि माहीं । नारद बचन अन्यथा नाहीं ॥
दो० प्रिया शोच परिहरहु सब सुमिरहु श्रीभगवान ।
पारबती जिन निर्म्मयउ सोइ करिहैं कल्यान ॥
अब जो तुमहिं सुता पर नेहू । तौ असजाइ सिखावन देहू ॥
करै सो तप जेहि मिलहिं महेशू । आनउपाय न मिटहिकलेशू ॥
नारद बचन समुझ सब हेतू । सुन्दर सबगुणनिधि वृषकेतू ॥
अस बिचारितुमतजिसबशंका । सबहिभांति शंकर अकलंका ॥
सुनि पति बचन हर्ष मनमाहीं । गईतुरत उठि गिरिजा पाहीं ॥
उमहि बिलोकि नयनभरिबारी । सहित सनेह गोद बैठारी ॥
बारहि बार लेत उर लाई । गदगदकण्ठ न कछुकहिजाई ॥
जगत मातु सर्बज्ञ भवानी । मातु सुखद बोली मृदु बानी ॥
दो० सुनहुमातु मैं दीख अस सपन सुनाऊं तोहिं ।
सुन्दर गौर सु विप्रवर अस उपदेशेउ मोहिं ॥
करहु जाय तप शैलकुमारी । नारद कहा सो सत्य बिचारी ॥
मातु पिताहिपुनि यहमत भावा । तपसुखप्रद दुखदोष नशावा ॥
तप बल रचै प्रपंच बिधाता । तपबलबिष्णुसकलजगत्राता ॥
तप बल शम्भु करहिं संहारा । तपबलशेष धरहिं महिभारा ॥
तप अधार सब सृष्टि भवानी । करहुजाइतप असजियजानी ॥
सुनत बचन बिस्मित महतारी । सपनसुनायउ गिरिहिहँकारी ॥
मातुपितहि बहुबिधि समुझाई । चली उमा तपहित हरषाई ॥
प्रिय परिवार पिता अरुमाता । भयेबिकल मुखआव न बाता ॥
दो० बेदगिरा मुनि आइ तब सबहिं कहा समुझाइ ।
पारबती महिमा सुनत रहे प्रबोधहि पाइ ॥

उरधरि उमा प्राणपति चरणा । जाइबिपिनलागीं तपकरणा ॥
अति सुकुमारि न तनु तपयोगू । पतिपदसुमिरितजेउसबभोगू ॥
नित नवचरण उपज अनुरागा । बिसरी देह तपहि मनलागा ॥
संवत सहस्र मूल फल खाये । शाक खाइ शत बर्ष गँवाये ॥
कछु दिन भोजन बारि बतासा । कियेकठिनकछुदिनउपवासा ॥
बेल पात महि परे सुखाई । तीन सहस संबत सोखाई ॥
पुनि परिहरेउ सुखानेउ पर्णा । उमा नाम तब भयउ अपर्णा ॥
देखि उमाहिं तप क्षीण शरीरा । ब्रह्म गिरामइ गगन गँभीरा ॥
दो० भयउ मनोरथ सफलतव सुनु गिरिराजकुमारि ।
परिहरु दुसहकलेशसब अबमिलिहैं त्रिपुरारि ॥
असतप काहु न कीन्ह भवानी । भये अनेक धीर मुनिज्ञानी ॥
अब उर धरहु ब्रह्म बर बानी । सत्यसदा सन्तत शुचिजानी ॥
आवैं पिता बुलावन जबहीं । हठपरिहरि घरजायहु तबहीं ॥
मिलहिंतुमाहिं जबसप्तऋषीशा । जानेहु तब प्रमाण बागीशा ॥
सुनतगिराविधि गगन बखानी । पुलकिगात गिरिजा हरषानी ॥
उमा चरित मैं सुन्दर गावा । सुनहुशम्भुकर चरितसुहावा ॥
जब ते सती जाइ तनु त्यागा । तबते शिवमन भयउबिरागा ॥
जपहिं सदा रघुनायक नामा । जहँतहँसुनाहिं रामगुणग्रामा ॥
दो० चिदानन्द सुखधाम शिव विगत मोहमद काम ।
विचरहिंमहिधरिहृदयहरिसकललोकअभिराम ॥
कतहुँ मुनिन उपदेशहिं ज्ञाना । कतहुँरामगुण करहिं बखाना ॥
यदपि अकाम तदपि भगवाना । भक्तविरहदुखदुखितसुजाना ॥
यहिविधिगयउ काल बहुबीती । नित नव होइ रामपद प्रीती ॥
नेम प्रेम शंकर कर देखा । अविचल हृदय भक्तिकीरेखा ॥
प्रकटे राम कृतज्ञ कृपाला । रूपशीलनिधि तेज विशाला ॥
बहु प्रकार शंकरहि सराहा । तुमबिनु असव्रतकोनिरबाहा ॥
बहुबिधिराम शिवहिसमुभावा । पारबती कर जन्म सुनावा ॥

अतिपुनीत गिरिजाकी करणी । विस्तरसहितकृपानिधिबरणी ॥
दो० अब बिनती ममसुनहु शिव जो मोपर निजनेहु ।
जाय बिवाहहु शैलजहि यह मोहिं मांगे देहु ॥
कहशिवयदपिउचितअसनाहीं । नाथवचनपुनिमेटि न जाहीं ॥
शिरधरिआयसु करियतुम्हारा । परमधर्म्म यह नाथ हमारा ॥
मातु पिता गुरु प्रभुकी बानी । बिनहिबिचार करियशुभजानी॥
तुम सब भांति परम हितकारी । आज्ञा शिरपरनाथ तुम्हारी ॥
प्रभु तोषेउ सुनि शंकर वचना । भक्तिविवेक धर्म्मयुतरचना ॥
कहप्रभुहर तुम्हार प्रण रहेऊ । अबउरराखेउ जो हमकहेऊ ॥
अन्तर्द्धान भये अस भाखी । शंकर सोइ मूरति उरराखी ॥
तबहिं सप्तऋषि शिवपहँआये । बोले प्रभु असवचन सुहाये ॥
दो० पारवती पहँ जाइ तुम प्रेम परीक्षा लेहु ।
गिरिहि प्रेरि पठयहु भवन दूरकरेहु संदेहु ॥
ऋषिन गौरि देखी तहँ कैसी । मूरतिवन्त तपस्या जैसी ॥
बोले मुनि सुनु शैलकुमारी । करहु कवन कारण तपभारी ॥
केहि आराधहु का तुम चहहू । हमसन सत्यमर्म्म सबकहहू ॥
सुनत ऋषिनके वचन भवानी । बोलीं गूढ़ मनोहर बानी ॥
कहतमर्म्ममन अति सकुचाई । हँसिहहुसुनि हमारिजड़ताई ॥
मन हठ परा न सुनै सिखावा । चहत बारिपर भीति उठावा ॥
नारद कहा सत्य सोइ जाना । बिनुपंखन हम चहहिंउड़ाना ॥
देखिय मुनि अबिवेक हमारा । चाहत पतिशंकर अविकारा ॥
दो० सुनत वचन बिहँसे ऋषय गिरिसंभव तवदेह ।
नारद कर उपदेश सुनि कहहु बसेउ को गेह ॥
दक्ष सुतन उपदेशिन जाई । तिनफिरि भवन न देखाआई ॥
चित्रकेतु कर घर उन घाला । कनककशिपुकरपुनि असहाला ॥
नारदसिख जु सुनहिं नरनारी । अवशि भवनतजिहोहिंभिखारी ॥
मनकपटी तनु सज्जन चीन्हा । आपसरिससबहींचहकीन्हा ॥

तेहिके बचन मानि बिश्वासा । तुमचाहहुपति सहज उदासा ॥
निर्गुण निलज कुवेष कपाली । अकुलअगेहदिगम्बरब्याली ॥
कहहु कवन सुख असबरपाये । भलभूलिहु ठग के बौराये ॥
पंचकहें शिव सती बिवाही । पुनि अब डेरिमराइन ताही ॥
दो० अबसुखसोवतशोचनहिं भीखमांगि भवखाहिं ।
सहज एकाकिनकेभवन कबहुँ कि नारिखटाहिं ॥
अजहूं मानहु कहा हमारा । हम तुमकहँ बरनीकबिचारा ॥
अतिसुन्दरशुचिसुखदसुशीला । गावहिं वेद जासु यशलीला ॥
दूषणरहित सकल गुणरासी । श्रीपति पुर बैकुंठ निवासी ॥
असबरतुमहिं मिलाउबआनी । सुनतवचन कहवचनभवानी ॥
सत्य कहहु गिरि भवतनएहा । हठ न छूट छूटै बरु देहा ॥
कनकौ पुनि पषाण ते होई । जारेउसहज न परिहर सोई ॥
नारद वचन न मैं परिहरऊं । बसौ भवन उजरो नहिंडरऊं ॥
गुरुके वचन प्रतीति न जेही । सपनेहुसुगमनसुखसिधितेही ॥
दो० महादेव अवगुण भवन विष्णु सकल गुणधाम ।
जेहिकर मन रमजाहिसन ताहिताहि सनकाम ॥
जोतुममिलतेउप्रथममुनीशा । सुनतिउँसिखतुम्हारधरिशीशा ॥
अबमैं जन्म शम्भु हितहारा । को गुण दोषहि करै बिचारा ॥
जो तुम्हरे हठ हृदय विशेषी । रहि न जाइ विनुकिये बरेषी ॥
तौ कौतुकिअन्ह आलसनाहीं । बर कन्या अनेक जगमाहीं ॥
जन्म कोटिलगि रगर हमारी । बरौंशम्भु नतु रहौं कुमारी ॥
तजौं न नारद कर उपदेशू । आप कहहिं शतबार महेशू ॥
मैं पा परौं कहै जगदम्बा । तुमगृहगवनहुभयहुबिलम्बा ॥
देखि प्रेम बोले मुनि ज्ञानी । जयजयजयजगदम्बभवानी ॥
दो० तुममायाभगवान शिव सकलजगत पितुमात ।
नाइचरण शिर मुनिचले पुनिपुनिहर्षितगात ॥
जाइ मुनिन हिमवन्त पठाये । करिविनतीगिरिजाहिंगृहल्याये ॥

बहुरिसप्तऋषि शिवपहँ जाई। कथा उमाकी सकल सुनाई॥
भये मगन शिव सुनत सनेहा। हरषि सप्तऋषि गवने गेहा॥
मनथिरकरि तब शम्भुसुजाना। लगेकरन रघुनायक ध्याना॥
तारकअसुर भयेउ तेहिकाला। भुज प्रतापबलतेजविशाला॥
ते सबलोक लोकपति जीते। भये देव सुख सम्पति रीते॥
अजर अमरसो जीति न जाई। हारे सुर करि बिबिध लराई॥
तब बिरंचि सन जाइ पुकारे। देखे बिधि सब देव दुखारे॥
दो० सबसन कहाबुझाइ बिधि दनुजनिधन तबहोइ।
शम्भु शुक्र सम्भूत सुत इहि जीतै रणसोइ॥
मोर कहा सुनि करहु उपाई। होइहि ईश्वर करिहि सहाई॥
सती जो तजी दक्षमख देहा। जनमी जाइ हिमाचल गेहा॥
तेइँ तपकीन्ह शम्भुपतिलागी। शिव समाधि बैठेसबत्यागी॥
यदपि अहै असमंजस भारी। तदपिबातइक सुनहु हमारी॥
पठवहु कामजाय शिवपाहीं। करै क्षोभ शंकर मन माहीं॥
तब हम जाइ शिवहिंशिरनाई। करवाउब बिवाह बरिआई॥
यहि बिधि भले देव हितहोई। मत अतिनीक कहासबकोई॥
अस्तुतिसुरन्ह कीन्ह अतिहेतू। प्रकट्यो बिषमबाण झषकेतू॥
दो० सुरनकही निजबिपतिसब सुनिमनकीन्ह बिचार।
शम्भुबिरोध न कुशलमोहिं बिहँसिकह्यो असमार॥
तदपि करबमैं काज तुम्हारा। श्रुतिकह परम धर्मउपकारा॥
परहित लागि तजै जो देही। सन्ततसन्त प्रशंसहिं तेही॥
असकहिचलेउ सबहिंशिरनाई। सुमन धनुषकरसहितसहाई॥
चलतमार असहृदय बिचारा। शिव विरोध ध्रुवमरणहमारा॥
तब आपन प्रभाव बिस्तारा। निजबशकीन्हसकलसंसारा॥
कोपेउ जबहिं बारिचरकेतू। क्षणमहँ मिटेसकलश्रुतिसेतू॥
ब्रह्मचर्य्य ब्रत संयम नाना। धीरज धर्म ज्ञान विज्ञाना॥
सदाचार जप योग बिरागा। सभय बिबेक कटकसबभागा॥

छं० भागेविवेकसहायसहित सोसुभटसंयुगमहिमुरे ।
सदग्रन्थपर्वतकन्दरनमहँ जाइतेहिअवसरदुरे ॥
होनिहारकाकरतारको रखवारजग खरभरपरा ।
दुइमाथकेरतिनाथजेहिकहँकोपिधनुशरकरधरा ॥

दो० जेसजीव जग अचरचर नारिपुरुष असनाम ।
तेनिज निज मर्यादतजि भये सकल बशकाम ॥

सबकेहृदय मदन अभिलाखा । लतानिहारिनवहिंतरुशाखा ॥
नदी उमँगि अंबुधि कहँ धाई । संगम करें तलाव तलाई ॥
जहँ असदशा जड़नकीबरणी । को कहिसकै सचेतन करणी ॥
पशु पक्षी नभ जल थलचारी । भये कामबश समयबिसारी ॥
मदनअन्धव्याकुलसबलोका । निशिदिननहिंअवलोकहिंकोका ॥
देवदनुज नर किन्नर व्याला । प्रेत पिशाच भूत बैताला ॥
इनकी दशा न कहेउँ बखानी । सदा काम के चेरे जानी ॥
सिद्ध बिरक्त महामुनि योगी । तेपि कामबश भये वियोगी ॥

छं० भयेकामबश योगीश तापस पामरनकी को कहै ।
देखहिं चराचर नारिमय जे ब्रह्ममय देखत रहैं ॥
अबलाबिलोकहिंपुरुषमयजगपुरुषसबअबलामयं ।
दुइदण्डभरिब्रह्माण्डभीतर कामकृतकौतुकअयं ॥

सो० धरा न काहू धीर सबके मन मनसिज हरे ।
जेहिराखे रघुबीर ते उबरे तेहि कालमहँ ॥

उभयघरी अस कौतुक भयऊ । जबलगिकामशम्भुपहँगयऊ ॥
शिवहिं बिलोकि सशंकेउ मारू । भयउ यथाथिर सबसंसारू ॥
भये तुरत जगजीव सुखारे । जिमिमद उतरिगये मतवारे ॥
रुद्रहि देखि मदनभय माना । दुराधर्ष दुर्ग्गम भगवाना ॥
फिरतलाजकछुकहि नहिंजाई । मरणठानिमन रचेसिउपाई ॥
प्रकटेसि तुरतरुचिरऋतुराजा । कुसुमितनवतरु राजबिराजा ॥
बन उपबन बाटिका तड़ागा । परमसुभगसबदिशाबिभागा ॥

जहँतहँ जनु उमगत अनुरागा । देखिमुयहुमनमनसिजजागा ॥
छं० जागेउ मनोभव मुये मनवन सुभगता न परै कही ।
शीतलसुगन्ध सुमन्दमारुत मदनअनलसखासही ॥
बिकसे सरन्हि बहु कंज गुंजत पुंज मंजुल मधुकरा ।
कलहंसपिकशुकसरसरवकरि गाननाचहिं अप्सरा ॥
दो० सकलकला करि कोटिविधि हारेउ सेन समेत ।
चली न अचलसमाधिशिव कोपेउ हृदयनिकेत ॥
देखि रसाल बिटप बरशाखा । तेहिपरचढ़ेउ मदनमनमाखा ॥
सुमन चाप निज कर संधाने । अतिरिसताकिश्रवणलगिताने॥
छांड़े बिषम बिशिख उरलागे । छूटि समाधि शम्भु तब जागे ॥
भयो ईश मन छोभ बिशेखी । नयनउघारिसकलदिशिदेखी ॥
सौरभ पल्लव मदन बिलोका । भयउकोप कम्पेउ त्रैलोका ॥
तब शिव तीसर नयन उघारा । चितवतकामभयउ जरिछारा ॥
हाहाकार भयउ जग भारी । डरपे सुर भये असुर सुखारी ॥
समुझिकाम सुखशोचहिंभोगी । भये अकंटक साधक योगी ॥
छं० योगी अकंटकभये पतिगति सुनतिरतिमुर्छितभई ।
रोदतिबदति बहुभांति करुणा करति शंकरपहँगई ॥
अतिप्रेमकरिबिनतीबिबिधविधिजोरिकरसन्मुखरही ।
प्रभुआशुतोष कृपालुशिव अबलानिरखिबोलेसही ॥
दो० अबते रति तव नाथ कर होइहि नाम अनंग ।
बिनुबपुब्यापिहिसबहिपुनिसुननिजमिलनप्रसंग ॥
जब यदुबंश कृष्ण अवतारा । होइहि हरण महा महिभारा ॥
कृष्ण तनय होइहि पतितोरा । बचन अन्यथा होइ न मोरा ॥
रति गवनी सुनि शंकर बानी । कथा अपर अबकहौं बखानी ॥
देवन समाचार जब पाये । ब्रह्मादिक बैकुण्ठ सिधाये ॥
सबसुर विष्णु बिरंचि समेता । गये जहां शिव कृपानिकेता ॥
पृथकपृथक तिनकीन्हप्रशंसा । भये प्रसन्न चन्द्र अवतंसा ॥

बोले कृपासिन्धु बृषकेतू । कहहु अमर आयहु केहिहेतू ॥
कह बिधि तुम प्रभु अंतर्यामी । तदपिभक्तिबश बिनऊंस्वामी ॥
दो० सकल सुरन के हृदय अस शंकर परम उछाह ।
निज नयनन देखाचहहिं नाथ तुम्हार बिवाह ॥
यह उत्सव देखिय भरिलोचन । सोकछुकरियमदनमदमोचन ॥
काम जारि रतिकहँ बरदीन्हा । कृपासिंधुयहअतिभलकीन्हा ॥
सांसातिकरि पुनि करहिं पसाऊ । नाथप्रभुनकर सहजस्वभाऊ ॥
पारवती तप कीन्ह अपारा । करहुतासु अब अंगीकारा ॥
सुनिबिधिबचनसमुझिप्रभुबानी । ऐसोइहोउ कहा सुखमानी ॥
तब देवन दुन्दुभी बजाई । बरषि सुमनजयजयसुरसांई ॥
अवसर जानि सप्तऋषि आये । तुरतहिंबिधिगिरिभवनपठाये ॥
प्रथम गये जहँ रहीं भवानी । बोले बचन मधुर छलसानी ॥
दो० कहा हमार न सुनेहु तब नारद कर उपदेश ।
अबभा झूंठ तुम्हार प्रण जारेउ काम महेश ॥
सुनि बोलीं मुसुकाय भवानी । उचित कहेउमुनिवरविज्ञानी ॥
तुम्हरे जान काम हर जारा । अबलगि शम्भुरहेसाविकारा ॥
हमरे जान सदाशिव योगी । अजअनवद्यअकामअभोगी ॥
जो मैं शिव सेयउँ अस जानी । प्रीति समेत कर्म्म मनबानी ॥
तौहमार प्रण सुनहु मुनीशा । करिहहिं सत्यकृपानिधि ईशा ॥
तुम जो कहा हर जारेउ मारा । सोअतिबड़ अबिबेकतुम्हारा ॥
तात अनल कर सहजस्वभाऊ । हिमतेहिनिकटजाइनाहिंकाऊ ॥
गयेसमीप सो अवशि नशाई । जिमिसँपातिनिजपच्छ गवांई ॥
दो० हिय हरषे मुनि बचन सुनि देखिप्रीति बिश्वास ।
चले भवानिहिं नाइशिर गये हिमाचल पास ॥
सब प्रसंग गिरिपतिहिंसुनावा । मदनदहनसुनिअतिदुखपावा ॥
बहुरि कहेउ रतिकर बरदाना । सुनि हिमवंतबहुतसुखमाना ॥
हृदय बिचारि शम्भु प्रभुताई । सादर मुनिवर लिये बुलाई ॥

सुदिनसुनखत सुघरी सुहाई । वेगि वेद बिधि लगन धराई ॥
पत्री सप्तऋषिन सोइदीन्ही । गहिपदबिनयहिमाचलकीन्ही ॥
जायबिधिहितिनदीन्हसोपाती । बांचत प्रीतिनि हृदय समाती ॥
लगन बांचिअजसबहिं सुनाई । हरषे मुनिसब सुर समुदाई ॥
सुमन बृष्टि नभ बाजन बाजे । मंगलकलश दशहुदिशिसाजे ॥

दो० लगेसँवारन सकल सुर बाहन बिबिध बिमान ।
होहिंसगुण मंगलसुभग करहिं अप्सरागान ॥

शिवहिशम्भुगणकरहिंशृँगारा । जटामुकुट अहिमौर सँवारा ॥
कुण्डल कंकण पहिरे ब्याला । तनु बिभूति पट केहरिछाला ॥
शशिललाट सुन्दर शिरगंगा । नयनतीनि उपवीत भुजंगा ॥
गरलकण्ठ उर नरशिर माला । अशिववेषशिवधाम कृपाला ॥
करत्रिशुल अरु डमरु बिराजा । चलेबसहचढ़ि बाजहिंबाजा ॥
देखि शिवहिसुरत्रियमुसुकाहीं । बरलायकदुलहिन जगनाहीं ॥
बिष्णु बिरञ्चि आदिसुरब्राता । चढ़ि चढ़ि बाहनचलेबराता ॥
सुरसमाज सब भांति अनूपा । नहिंबरात दूलह अनुरूपा ॥

दो० बिष्णुकहाअसबिहँसितब बोलिसकलदिशिराज ।
बिलगबिलगहोइचलहुसब निजनिजसाहितसमाज ॥

बर अनुहार बरात न भाई । हँसी करैहहु पर पुर जाई ॥
बिष्णु बचनसुनि सुरमुसुकाने । निजनिजसेनसहितबिलगाने ॥
मनहीं मन महेश मुसुकाहीं । हरिके ब्यंग बचननहिंजाहीं ॥
अति प्रियबचन सुनतहरिकेरे । भृंगी प्रेरि सकल गणटेरे ॥
शिवअनुशासनसुनिसबआये । प्रभुपदजलजशीशतिननाये ॥
नाना बाहन नाना बेखा । बिहँसे शिवसमाज निजदेखा ॥
कोउमुखहीन बिपुल मुखकाहू । बिनुपद कर कोउबहुपदबाहू ॥
बिपुलनयनकोउनयन बिहीना । रुष्टपुष्ट कोउअति तनुचीना ॥

छं० तनुचीनकोउ अतिपीनपावनकोउअपा घनतनुधरे ।
भूषणकरालकपालकर सबसद्यशोणित तनुभरे ॥

खरश्वानसुवरशृगालमुखगणवेषअगणित कोगनै ।
बहुजिनिसप्रेतपिशाचयोगिनिभांतिबरणतनाहिंबनै ॥
सो० नाचहिं गावहिं गीत परम तरंगी भूत सब ।
देखतअति बिपरीत बोलहिंबचनबिचित्रबिधि ॥
जस दूलह तस बनी बराता । कौतुकबिबिधहोहिंमगजाता ॥
इहां हिमाचल रचेउ बिताना । अतिबिचित्रनाहिंजायबखाना॥
शैलसकल जहँलगि जगमाहीं । लघुबिशालनहिंबरणिसिराहीं॥
बन सागर सब नदी तलावा । हिमगिरिसबकहँनेवतपठावा॥
काम रूप सुन्दर तनु धारी । सहितसमाजसहितबरनारी ॥
गये सबतुरत हिमाचल गेहा । गावहिं मंगल सहितसनेहा ॥
प्रथमहि गिरि बहु गृहसँवराये । यथायोग जहँ तहँ सबछाये ॥
पुर शोभा अवलोकि सुहाई । लागैलघु बिरञ्चि निपुणाई ॥
छं० लघुलागविधिकी निपुणताअवलोकिपुरशोभासही ।
बनबाग कूप तड़ाग सरितासुभगता सककोकही ॥
मंगल विपुल तोरण पताका केतु गृह गृह सोहहीं ।
बनितापुरुषसुन्दरचतुर छबिदेखिमुनिमनमोहहीं ॥
दो० जगदम्बा जहँ अवतरी सो पुर बरणि न जाइ ।
ऋद्धिसिद्धि सम्पतिसकल नित नूतन अधिकाइ ॥
नगर निकट बरात जब आई । पुर शोभा खरभर अधिकाई ॥
करि बनाव साजि बाहननाना । चले लेन सादर अगवाना ॥
हिय हरषे सुर सेन निहारी । हरिहिदेखिअतिभयेसुखारी ॥
शिव समाज जब देखन लागे । बिडरिचले बाहन सब भागे ॥
धरि धीरज तहँ रहे सयाने । बालक सब लै जीव पराने ॥
गये भवन पूछहिं पितु माता । कहहिंबचनभय कंपितगाता ॥
कहिय कहा कहि जाइन बाता । यमकर धार किधौं बरियाता ॥
बर बौराह बरद असवारा । ब्याल कपाल बिभूषणछारा ॥
छं० तनछार ब्यालकपालभूषणनगनजटिल भयंकरा ।

सँगभूतप्रेतपिशाचयोगिनि बिकटमुखरजनीचरा ॥
जोजियतरहहिबरातदेखत पुण्यबड़तिनकरसही ।
देखहिसोउमाबिवाहघरघरबात असलरिकनकही ॥
दो० समुझि महेशसमाज सब जननिजनकमुसकाहिं ।
बाल बुझाये बिबिध बिधि निडरहोउ डरनाहिं ॥
लै अगवान बरातहि आये । दिये सबहिजनवास सुहाये ॥
मयना शुभ आरती सँवारी । संग सुमंगल गावहिं नारी ॥
कंचन थार सोह बर पानी । परिछन चलीं हरहिहरषानी ॥
बिकट वेष जब रुद्रहि देखा । अबलनउरभयभयउबिशेखा ॥
भागि भवन बैठीं अति त्रासा । गये महेश जहां जनवासा ॥
मयना हृदय भयो दुखभारी । लीन्हीं बोलि गिरीशकुमारी ॥
अधिक सनेह गोद बैठारी । इयाम सरोजनयन भरिबारी ॥
जेहिबिधितुमहिंरूपअसदीन्हा । तेहिजड़बरबावरकसकीन्हा ॥
छं० कसकीन्हबरबौराहबिधिजेहि तुमहिंसुन्दरतादई ।
जो फलचहियसुरतरुहिसो बरबशबबूरहिलागई ॥
तुमसहितगिरितेगिरौंपावकजरौंजलनिधिमहँपरौं ।
घरजाउअपयशहोउ जग जीवतबिवाहनहौंकरौं ॥
दो० भईबिकल अबलासकल दुखितदेखि गिरिनारि ।
करिबिलाप रोदति बदति सुतासनेह सँभारि ॥
नारद कर मैं कहा बिगारा । भवनमोरजिनबसत उजारा ॥
अस उपदेशउमहिं जिनदीन्हा । बौरे बरहि लागितप कीन्हा ॥
साँचेहु उनके मोह न माया । उदासीन धनधाम न जाया ॥
परघर घालक लाज न भीरा । बांझकि जान प्रसवकीपीरा ॥
जननिहिंबिकलबिलोकिभवानी । बोली युत बिवेक मृदुबानी ॥
असबिचारि शोचहु मतिमाता । सो न टरै जो रचेउबिधाता ॥
कर्म्म लिखा जो बावर नाहू । तौ कत दोष लगाइयकाहू ॥
तुमसनमिटहिं किबिधिकेअंका । मातु व्यर्थ जनिलेहु कलंका ॥

छं० जनिलेहु मातुकलंककरुणा परिहरहु अवसरनहीं ।
दुखसुखजोलिखालिलारहमरे जाबजहँ पाउबलहीं ॥
सुनिउमाबचनबिनीतकोमल सकल अबलाशोचहीं ।
बहुभाँतिविधिहि लगाइदूषण नयनबारिबिमोचहीं ॥

दो० तेहिअवसर नारदऋषय औ ऋषि सप्त समेत ।
समाचार सुनि तुहिनगिरि गवने तुरत निकेत ॥

तब नारद सबही समुझावा । पूरब कथा प्रसंग सुनावा ॥
मयना सत्य सुनहु मम बानी । जगदम्बा तव सुता भवानी ॥
अजाअनादिशक्तिअबिनाशिनि । सदाशंभुअर्द्धंगनिवासिनि ॥
जग संभव पालनलयकारिणि । निजइच्छालीलावपुधारिणि ॥
जनमी प्रथम दक्ष गृह जाई । नाम सती सुन्दर तनुपाई ॥
तहउँ सती शंकरहिं बिवाहीं । कथाप्रसिद्धसकलजगमाहीं ॥
एक बार आवत शिव संगा । देखेउरघुकुलकमल पतंगा ॥
भयउ मोहशिव कहानकीन्हा । भ्रमबश वेषसीयकरलीन्हा ॥

छं० सियवेषसती जोकीन्ह तेहि अपराध शंकरपरिहरी ।
हर बिरह जाइ बहोरि पितुके यज्ञ योगानल जरी ॥
अबजनमितुम्हरेभवननिजपतिलागिदारुणतपकिया ।
असजानि संशयतजहु गिरजा सर्वदा शंकर प्रिया ॥

दो० सुनि नारद के बचन तब सबकर मिटा बिषाद ।
क्षणमहँ ब्यापेउसकलपुर घरघर यह सम्बाद ॥

तब मयना हिमवंत अनन्दे । पुनि पुनि पारबती पदबन्दे ॥
नारि पुरुष शिशु युवा सयाने । नगरलोग सब अतिहरषाने ॥
लगेहोन पुर मंगल गाना । सजे सबहिं हाटक घटनाना ॥
भाँति अनेक भई जेवनारा । सूपशास्त्र जसकछुब्यवहारा ॥
सो जेवनार कि जाइ बखानी । बसहिंभवनज्यहिमातुभवानी ॥
सादर बोले सकल बराती । विष्णु बिरंचि देवसबजाती ॥
बिबिध पांति बैठी जेवनारा । लगे परोसन निपुणसुआरा ॥

नारि बृन्द सुर जेंवत जानी । लागीं देन गारि मृदुबानी ॥
छं० गारी मधुरस्वर देहिं सुन्दरि ब्यंगबचन सुनावहीं ।
भोजनकरहिंसुरअति बिलंबबिनोदसुनिसुखपावहीं ॥
जेंवत जोबढ़्योअनंदसो मुख कोटिहू न परै कह्यो ।
अचवाइ दीन्हें पान गवने बास जहँ जाको रह्यो ॥
दो० बहुरि मुनिन हिमवंत कहँ लगन जनाई आइ ।
समय बिलोकि बिवाह कर पठये देवबुलाइ ॥
बोलि सकल सुर सादरलीन्हें । सबहिंयथोचितआसनदीन्हें ॥
बेदी बेद बिधान सँवारी । सुभग सुमंगल गावहिंनारी ॥
सिंहासन अति दिब्य सुहावा । जाहि न बरणि बिरंचिबनावा ॥
बैठे शिव बिप्रन शिरनाई । हृदयसुमिरिनिजप्रभुरघुराई ॥
बहुरि मुनीशन उमा बुलाई । करि शृंगार सखी लै आई ॥
देखत रूप सकल सुर मोहैं । बरणैछबि असजगकबिकोहैं ॥
जगदम्बिका जानि भव बामा । सुरनमनहिंमनकीन्हप्रणामा ॥
सुन्दरता मर्य्याद भवानी । जाहि न कोटिहुबदनबखानी ॥
छं० कोटिहुबदननहिंबनैबरणत जगजननिशोभा महा ।
सकुचहिंकहतश्रुतिशेषशारदमंदमति तुलसी कहा ॥
छबिखानि मातुभवानिगमनी मध्यमंडप शिवजहां ।
अवलोकिसकहिंनसकुचिपातिपदकमलमनमधुकरतहां ॥
दो० मुनि अनुशासन गणपतिहिं पूजे शम्भु भवानि ।
कोउसुनिसंशयकरहिजनि सुरअनादिजियजानि ॥
जस बिवाहकीबिधि श्रुतिगाई । महामुनिन सो सब करवाई ॥
गहि गिरीश कुश कन्यापानी । शिवहिं समर्पीजानि भवानी ॥
पाणिग्रहण जब कीन्ह महेशा । हिय हर्षे तब सकल सुरेशा ॥
बेद मंत्र मुनिवर उच्चरहीं । जयजयजय शंकर सुरकरहीं ॥
बाजहिंबाजन बिबिध बिधाना । सुमनबृष्टिनभभै बिधिनाना ॥
हर गिरिजाकर भयहु बिवाहू । सकलभुवन भरिरहा उछाहू ॥

दासी दास तुरग रथ नागा । धेनुबसनमणि वस्तुबिभागा ॥
अन्नकनक भाजनभरिआना । दाइजदीन्ह न जाहिबखाना ॥
छं० दाइजदियोबहुभांति पुनिकरजोरि हिमभूधरकह्यो ।
का देउँ पूरणकाम शंकर चरण पंकज गहि रह्यो ॥
शिवकृपासागरश्वशुरकर परितोषसबभांतिनकियो ।
पुनि गहेउ पद पाथोज मयना प्रेमपरिपूरणहियो ॥
दो० नाथ उमा मम प्राण सम गृह किंकरी करेहु ।
क्षमेहु सकल अपराधअब होइ प्रसन्नबरदेहु ॥
बहुविधि शंभुसासु समुझाई । गवनी भवन चरण शिरनाई ॥
जननी उमा बोलितब लीन्हीं । लै उछंग सुन्दरसिख दीन्हीं ॥
करेहु सदा शंकर पद पूजा । नारिधर्म्मपति देव न दूजा ॥
बचन कहतभरि लोचन बारी । बहुरि लाइउरलीन्ह कुमारी ॥
कतबिधिसिरजिनारिजगमाहीं । पराधीन सपनेहुं सुखनाहीं ॥
भैअति प्रेम बिकल महतारी । धीरजकीन्ह कुसमयबिचारी ॥
पुनिपुनिमिलतपरतगहिचरणा । परम प्रेमकछु जाइ नबरणा ॥
सबनारिन मिलि भेंटि भवानी । जाइजननिउरपुनि लपटानी ॥
छं० जननिहिंबहुरिमिलि चली उचित अशीश सबकाहूदई ।
फिरि फिरि बिलोकत मातुतन तबसखीलै शिवपहँगई ॥
याचक सकल संतोष शंकर उमा सह भवनहिं चले ।
सबअमरहर्षे सुमन बरषि निशाननभ बाजहिं भले ॥
दो० चले संग हिमवंत तब पहुंचावन अति हेतु ।
बिबिधभांति परितोष करि बिदाकीन्हवृषकेतु ॥
तुरत भवन आये गिरिराई । सकलशैल सर लियेबुलाई ॥
आदर दान बिनय बहु माना । सबकर बिदाकीन्हसनमाना ॥
जबहिं शम्भु कैलासहिं आये । सुरसबनिजनिजधामसिधाये ॥
जगतमातु पितु शम्भु भवानी । तेहि शृङ्गार न कहौं बखानी ॥
करहिंबिबिधबिधिभोगबिलासा । गणनसमेत बसहिंकैलासा ॥

हरगिरिजाबिहार नितनयऊ । इहिविधिबिपुलकालचलिगयऊ ॥
तब जनमे षटबदन कुमारा । तारकअसुर समर जिनमारा ॥
आगम निगम प्रसिद्ध पुराना । षटमुख जन्मकर्म जगजाना ॥
छं० जग जान षटमुख जन्म कर्म्म प्रतापपुरुषारथ महा ।
तेहि हेतु मैं वृषकेतु सुत कर चरित संक्षेपहि कहा ॥
यह उमा शम्भु बिवाहजे नर नारि कहहिं जे गावहीं ।
कल्याण काज बिवाह मंगल सर्वदा सुख पावहीं ॥
दो० चरितसिंधु गिरिजारमण वेद न पावहिं पार ।
बरणै तुलसीदासकिमि अति मतिमन्दगँवार ॥
शम्भु चरितसुनिसहजसुहावा । भरद्वाजमुनि अतिसुखपावा ॥
बहु लालसा कथापर बाढ़ी । नयन नीर रोमावलि ठाढ़ी ॥
प्रेम बिबश मुख आव न बानी । दशादेखि हरषे मुनिज्ञानी ॥
अहो धन्य तव जन्म मुनीशा । तुमहिंप्राणसम प्रियगौरीशा ॥
शिवपदकमलजिनाहिंरतिनाहीं । रामहिं ते सपनेहुं न सुहाहीं ॥
बिनछल बिश्वनाथ पद नेहू । राम भक्तकर लक्षण येहू ॥
शिव सम को रघुपतिब्रतधारी । बिनुअघतजीसतीअसिनारी ॥
प्रणकरिरघुपति भक्ति दृढ़ाई । कोशिवसमरामहिं प्रियभाई ॥
दो० प्रथमकहेउँ मैं शिवचरित बूझामर्म्म तुम्हार ।
शुचि सेवक तुमरामके रहितसमस्त बिकार ॥
मैं जाना तुम्हार गुण शीला । कहौंसुनहुअबरघुपति लीला ॥
सुनु मुनि आजसमागम तोरे । कहिन जाइजससुखमनमोरे ॥
रामचरितअतिअमितमुनीशा । कहिनसकहिंशतकोटिअहीशा ॥
तदपि यथाश्रुतकहौं बखानी । सुमिरिगिरापतिप्रभुधनुपानी ॥
शारद दारु नारि सम स्वामी । राम सूत्रधर अन्तरयामी ॥
जेहिपर कृपा करहिं जनजानी । कविउरअजिरनचावहिंबानी ॥
प्रणवउँ सोइकृपालु रघुनाथा । बरणौंबिशद तासुगुणगाथा ॥
परम रम्य गिरिवर कैलासू । सदाजहां शिव उमा निवासू ॥

दो० सिद्धि तपोधन योगिजन सुरकिन्नर मुनिबृन्द ।
बसहिंतहां सुकृतीसकल सेवहिंशिवसुखकन्द ॥
हरि हर बिमुख धर्मरत नाहीं । तेनर तहां न सपनेहुँ जाहीं ॥
तेहिगिरिपरबटबिटप बिशाला । नितनूतन सुन्दरसब काला ॥
त्रिविध समीर सुशीतलछाया । शिवबिश्रामबिटपश्रुतिगाया ॥
एक बार तेहितरप्रभु गयऊ । तरुबिलोकिउरअतिसुखभयऊ ॥
निजकरडासि नागरिपु छाला । बैठे सहजहिं शम्भु कृपाला ॥
कुन्द इन्दु बर गौर शरीरा । भुजप्रलम्बपरिधनमुनिचीरा ॥
तरुणअरुणअम्बुजसमचरणा । नखद्युतिभक्तहृदयतमहरणा ॥
भुजग भूति भूषण त्रिपुरारी । आनन शरदचन्द्रछबिहारी ॥
दो० जटामुकुट सुरसरितशिर लोचननलिन बिशाल ।
नीलकण्ठ लावण्यनिधि सोह बाल बिधुभाल ॥
बैठे सोह काम रिपु कैसे । धरे शरीर शान्त रस जैसे ॥
पार्वती भल अवसर जानी । गईं शम्भु पहँ मातु भवानी ॥
जानिप्रियाआदर अति कीन्हा । बाम भाग आसनहर दीन्हा ॥
बैठीं शिव समीप हरषाई । पूरब जन्म कथा चित आई ॥
पति हिय हेतुअधिकअनुमानी । बिहँसिउमा बोलीं प्रियबानी ॥
कथाजोसकललोक हितकारी । सो पूंछन चह शैलकुमारी ॥
विश्वनाथ मम नाथ पुरारी । त्रिभुवनमहिमाबिदिततुम्हारी ॥
चर अरु अचर नागनर देवा । सकल करहिं पदपंकजसेवा ॥
दो० प्रभु समर्थ सर्वज्ञ शिव सकल कला गुणधाम ।
योगज्ञानबैराग्य निधि प्रणत कल्पतरु नाम ॥
जो मोपर प्रसन्न सुखरासी । जानियसत्यमोहिं निजदासी ॥
तौ प्रभु हरहु मोर अज्ञाना । कहिरघुनाथकथा बिधिनाना ॥
जासु भवन सुरतरु तर होई । सहकि दरिद्रजनितदुखसोई ॥
शशिभूषण असहृदय बिचारी । हरहुनाथ मममतिभ्रमभारी ॥
प्रभु जे मुनि परमारथवादी । कहहिं राम कहँ ब्रह्मअनादी ॥

शेष शारदा वेद पुराना । सकलकरहिंरघुपतिगुणगाना ॥
तुम पुनि रामनाम दिन राती । सादर जपहु अनंगअराती ॥
रामसो अवधनृपतिसुतसोई । कीअजअगुणअलखगतिकोई ॥
दो० जो नृपतनय तो ब्रह्मकिमि नारिबिरह मतिभोरि ।
देखिचरित महिमासुनत भ्रमतिबुद्धि अतिमोरि ॥
जो अनीह व्यापक बिभुकोऊ । कहहु बुझाइनाथमोहिंसोऊ ॥
अज्ञजानि रिस जनिउरधरहू । जेहिबिधिमोहमिटैसोइकरहू ॥
मैं बन दीख राम प्रभुताई । अतिभय बिकलनतुमहिंसुनाई ॥
तदपि मलिनमन बोधनआवा । सोफल भलीभांति हमपावा ॥
अजहूँ कछु संशय मन मोरे । करहुकृपा बिनवउँ करजोरे ॥
प्रभुतबमोहिंबहुभांतिप्रबोधा । नाथसोसमुझिकरहुजनिक्रोधा ॥
तबकर असबिमोहमोहिं नाहीं । रामकथा पर रुचि मनमाहीं ॥
कहहु पुनीत राम गुणगाथा । भुजगराज भूषण सुरनाथा ॥
दो० बन्दौंपदधरि धरणिशिर विनयकरौं करजोरि ।
बरणहुरघुबरबिशदयश श्रुतिसिद्धांत निचोरि ॥
यदपियोषिता अन अधिकारी । दासी मनक्रमबचनतुम्हारी ॥
गूढ़ौ तत्व न साधु दुरावहिं । आरत अधिकारीजहँपावहिं ॥
अति आरत पूछौं सुरराया । रघुपतिकथा कहहुकरिदाया ॥
प्रथम सो कारण कहहु बिचारी । निर्गुणब्रह्म सगुण बपुधारी ॥
पुनि प्रभु कहहु रामअवतारा । बाल चरित पुनिकहहुउदारा ॥
कहहु यथा जानकी बिवाहा । राज तजा सो दूषण काहा ॥
बनबसिकीन्हेउ चरित अपारा । कहहु नाथ जिमि रावणमारा ॥
राज बैठ कीन्ही बहु लीला । सकलकहहुशंकर सुखशीला ॥
दो० बहुरिकहहु करुणायतन कीन्ह जो अचरजराम ।
प्रजासहित रघुबंशमणि किमिगवने निजधाम ॥
पुनिप्रभु कहहु सोतत्त्वबखानी । जेहिबिज्ञान मगनमुनिज्ञानी ॥
भक्ति ज्ञान बिज्ञान बिरागा । पुनिसबबरणहुसहितबिभागा ॥

औरो राम रहस्य अनेका । कहहुनाथअति बिमलबिवेका ॥
जो प्रभु मैं पूँछा नहिं होई । सोउदयाल राखहुजनि गोई ॥
तुम त्रिभुवनगुरु वेद बखाना । आन जीव पामर का जाना ॥
प्रश्न उमा के सहज सुहाये । छलबिहीनसुनिशिवमनभाये ॥
हर हिय रामचरित सबआये । प्रेमपुलकि लोचनजल छाये ॥
श्री रघुनाथ रूप उर आवा । परमानन्द अमित सुखपावा ॥
दो० मग्न ध्यानरसदण्डयुग पुनि मनबाहर कीन्ह ।
रघुपति चरित महेश तब हर्षित बरणैलीन्ह ॥
भूंठौ सत्य जाहि बिनु जाने । जिमिभुजंगबिनुरजुपहिचाने ॥
जेहि जाने जग जाइ हेराई । जागे यथा स्वप्न भ्रम जाई ॥
बंदौं बाल रूप सोइ रामू । सबबिधिसुलभजपतजगनामू ॥
मंगल भवन अमंगल हारी । द्रवौसोदशरथअजिरबिहारी ॥
करि प्रणाम रामहिं त्रिपुरारी । हरषि सुधासम गिराउचारी ॥
धन्य धन्य गिरिराज कुमारी । तुमसमाननहिं कोउउपकारी ॥
पूंछेहु रघुपति कथा प्रसंगा । सकललोक यशपावनिगंगा ॥
तुम रघुबीर चरण अनुरागी । कीन्हेउप्रश्नजगतहितलागी ॥
दो० रामकृपाते पार्वति सपनेहु तव मन माहिं ।
शोक मोह संदेह भ्रम मम बिचार कछु नाहिं ॥
तदपि अशंका कीन्हेउ सोई । कहत सुनत सबकरहितहोई ॥
जिन हरिकथा सुनी नहिंकाना । श्रवणरन्ध्रअहिभवनसमाना ॥
नयनन सन्त दरश नहिं देखा । लोचन मोरपंख कर लेखा ॥
ते शिर कटु तूमरि सम तूला । जे न नमत हरिगुरु पदमूला ॥
जिनहरिभक्ति हृदयनहिंआनी । जीवत शवसमान ते प्रानी ॥
जेनहिं करहिं राम गुण गाना । जीह सुदादुर जीह समाना ॥
कुलिशकठोर निठुरसोइ छाती । सुनिहरिचरितन जोहरषाती ॥
गिरिजा सुनहु रामकर लीला । सुरहित दनुजबिमोहनशीला ॥
दो० रामकथा सुरधेनु सम सेवत सब सुखदान ।

सन्त सभा सुरलोकसम कोन सुनै असजान ।
राम कथा सुन्दर करतारी । संशय विहग उड़ावन हारी ॥
राम कथा कलि बिटप कुठारी । सादरसुनु गिरिराज कुमारी ॥
राम नाम गुण चरित सुहाये । जन्मकर्मअगणितश्रुतिगाये ॥
यथा अनन्त राम भगवाना । तथा कथा कीरति गुणनाना ॥
तदपि यथा श्रुतिजसमतिमोरी । कहिहौंदेखिप्रीति अतितोरी ॥
उमा प्रश्न तव सहज सुहाई । सुखदसन्त सम्मतम्वहिंभाई ॥
एक बात नहिं मोहिं सुहानी । यदपि मोहबश कहेउभवानी ॥
तुम जो कहाराम कोउआना । जेहिश्रुतिगावधरहिंमुनिध्याना ॥
दो० कहहिं सुनहिं असअधमनर असेजो मोहपिशाच ।
पाखण्डी हरिपद बिमुख जानहिं झूंठ न सांच ॥
अज्ञ अकोविद अन्ध अभागी । सोई विषय मुकुर मनलागी ॥
लम्पट कपटी कुटिल बिशेखी । सपनेहु सन्तसभा नहिं देखी ॥
कहहिं ते वेद असम्मत बानी । जिनहिंनसूझलाभनहिंहानी ॥
मुकुरमलिनअरु नयन बिहीना । रामरूप देखहिं किमिदीना ॥
जिनकेअगुण न सगुणबिवेका । जल्पहिंकल्पितबचनअनेका ॥
हरिमाया बशजगत भ्रमाहीं । तिनहिं कहतकछुअघटितनाहीं ॥
बातुल भूत बिवश मतवारे । तेनहिंबोलहिं बचन सम्हारे ॥
जिन कृत महामोह मदपाना । तिनकरकहाकरियनहिंकाना ॥
सो० असनिज हृदयबिचारि तजिसंशयभजु रामपद ।
सुनुगिरिराजकुमारि भ्रमतम रविकर बचनमम ॥
सगुणहिंअगुणहिंनहिंकछुभेदा । गावहिं मुनिपुराण बुधवेदा ॥
अगुणअरूपअलख अजजोई । भक्त प्रेमवश सगुणसोहोई ॥
जो गुण रहितसगुणसो कैसे । जलहिमउपल बिलगनहिंजैसे ॥
जासुनाम भ्रमतिमिरपतंगा । तिहिकिमिकहिय विमोहप्रसंगा ॥
राम सच्चिदानन्द दिनेशा । नहिंतहँ मोहनिशा लवलेशा ॥
सहज प्रकाश रूप भगवाना । नहिंतहँ पुनि बिज्ञानबिहाना ॥

हर्ष बिषाद ज्ञान अज्ञाना। जीवधर्मअहमितिअभिमाना॥
राम ब्रह्म ब्यापक जग जाना। परमानन्द परेश पुराना॥
दो० पुरुष प्रसिद्ध प्रकाश निधि प्रकट परावर नाथ।
रघुकुलमणिममस्वामिसोइ कहिशिवनायउमाथ॥
निजभ्रमनहिंसमुझहिंअज्ञानी। प्रभुपर मोहधरहिं जड़प्रानी॥
यथा गगन घन पटल निहारी। झम्पेउभानुकहहिंकुबिचारी॥
चितवत लोचन अंगुलिलाये। प्रकट युगलशशितेहिकेभाये॥
उमाराम विषयिक अस मोहा। नभतमधूम धूरि जिमिसोहा॥
बिषय करण सुर जीव समेता। सकल एक ते एक सचेता॥
सबकर परम प्रकाशक जोई। रामअनादि अवधपति सोई॥
जगत प्रकाश्य प्रकाशक रामू। मायाधीश ज्ञान गुण धामू॥
जासु सत्यता ते जड़ माया। भास्य सत्यइव मोह सहाया॥
दो० रजतसीप महँ भास जिमि यथा भानुकर बारि।
यदपिमृषा तिहुँकालसोइ भ्रम न सकै कोउटारि॥
इहिविधिजगहरिआश्रित रहई। यदपिअसत्य देतदुखअहई॥
जो सपने शिर काटै कोई। बिनुजागे दुख दूरि न होई॥
जासुकृपा अस भ्रम मिटिजाई। गिरिजा सोइकृपालु रघुराई॥
आदिअन्त कोउ जासुनपावा। मतिअनुमाननिगमअसगावा॥
बिनुपद चलै सुनै बिनु काना। करबिनु कर्मकरै बिधिनाना॥
आनन रहित सकल रसभोगी। बिनुबाणी बक्ता बड़ योगी॥
तनुबिनु परश नयनबिनुदेखा। गहै घ्राणबिनु बास अशेखा॥
अससबभाँतिअलौकिककरणी। महिमाजासुजायनहिं बरणी॥
दो० जेहिइमि गावहिं वेदबुध जाहि धरहिं मुनिध्यान।
सोइ दशरथसुत भक्तहित कोशलपति भगवान॥
काशी मरत जन्तु अवलोकी। जासुनामबल करौं विशोकी॥
सोइ प्रभु मोर चराचर स्वामी। रघुबर सब उर अन्तर्य्यामी॥
बिबशहु जासु नाम नरकहहीं। जन्मअनेकसँचितअघदहहीं॥

सादरसुमिरण जो नर करहीं । भवबारिधि गोपद इव तरहीं ॥
राम सो परमातमा भवानी । तहँभ्रमअतिअविहिततवबानी ॥
अस संशय आनत उरमाहीं । ज्ञान विराग सकलगुणजाहीं ॥
सुनिशिवकेभ्रम भंजन बचना । मिटिगइसब कुतर्ककी रचना ॥
भइ रघुपति पद प्रीतिप्रतीती । दारुण असम्भावना बीती ॥
दो० पुनिपुनिप्रभुपद कमलगहि जोरिपंकरुह पानि ।
बोलीगिरिजा बचन वर मनहुँ प्रेमरस सानि ॥
शशिकरसमसुनि गिरातुम्हारी । मिटा मोह शरदातप भारी ॥
तुम कृपालु सब संशय हरेऊ । राम स्वरूपजानि मोहिंपरेऊ ॥
नाथकृपा अब गयउ बिषादा । सुखीभइउँ प्रभुचरणप्रसादा ॥
अबमोहिंआपनिकिंकरि जानी । यदपिसहजजड़नारिअयानी ॥
प्रथमजो मैं पूंछा सो कहहू । जो मोपर प्रसन्न प्रभुअहहू ॥
राम ब्रह्म चिन्मय अबिनासी । सर्ब रहित सब उरपुर बासी ॥
नाथ धरेउ नर तनु केहि हेतू । मोहिं समुझाइ कहहुवृषकेतू ॥
उमा बचन सुनिपरम विनीता । राम कथा पर प्रीति पुनीता ॥
दो० हिय हरषे कामारि तब शंकर सहज सुजान ।
बहुबिधि उमहिं प्रशंसिपुनि बोले कृपानिधान ॥
सो० सुनशुभकथा भवानि रामचरित मानसविमल ।
कहाभुशुण्डिबखानि सुनाविहगनायक गरुड़ ॥
सोइसम्बाद उदार जिहिबिधि भा आगेकहब ।
सुनहुराम अवतार चरित परम सुन्दर अनघ ॥
हरिगुणनामअपार कथारूपअगणित अमित ।
मैं निजमति अनुसार कहौं उमासादर सुनहु ॥
सुनिगिरिजा हरिचरितसुहाये । बिपुलबिशदनिगमागमगाये ॥
हरि अवतार हेतु जेहि होई । इद मिथ्याकहिजाइ न सोई ॥
राम अतर्क बुद्धि मन बानी । मनहमार अससुनहु भवानी ॥
तदपि सन्तमुनि वेदपुराना । जसकछुकहहिंस्वमति अनुमाना ॥

तस मैं सुमुखि सुनावौंतोहीं । समुझिपरै जसकारण मोहीं ॥
जब जब होइ धर्म्मकी हानी । बाढ़हिंअसुरअधमअभिमानी ॥
करहिंअनीतिजाइ नहिं बरणी । सीदहिंविप्र धेनु सुर धरणी ॥
तबतबप्रभुधरि विविधशरीरा । हरहिंकृपानिधि सज्जनपीरा ॥
दो० असुरमारिथापहिं सुरन्ह राखहिंनिज श्रुतिसेतु ।
जग बिस्तारहिं बिशदयश रामजन्म करहेतु ॥
सोइ यश गाइभक्त भवतरहीं । कृपासिन्धुजनहित तनुधरहीं ॥
राम जन्म के हेतु अनेका । परम बिचित्र एकते एका ॥
जन्म एक दुइ कहौं बखानी । सावधान सुनुसुमतिभवानी ॥
द्वारपाल हरिके प्रिय दोऊ । जयअरुविजय जानसबकोऊ ॥
विप्र शाप ते दोनौं भाई । तामस असुर देह तिनपाई ॥
कनककशिपुअरुहाटकलोचन । जगतबिदितसुरपतिमदमोचन ॥
विजयी समर बीर विख्याता । धरि बराह बपु एक निपाता ॥
होइ नरहरि बपु दूसर मारा । जनप्रहलाद सुयश विस्तारा ॥
दो० भये निशाचर जाय ते महा बीर बलवान ।
कुम्भकरण रावणसुभट सुर विजयीजगजान ॥
मुक्त न भये हते भगवाना । तीनजन्मद्विजबचन प्रमाना ॥
एक बार तिनके हित लागी । धरेउ शरीर भक्त अनुरागी ॥
कश्यपअदिति तहांपितु माता । दशरथ कौशल्या विख्याता ॥
एककल्प यहिबिधि अवतारा । चरित पवित्र किये संसारा ॥
एककल्प सुर देखि दुखारे । समर जलन्धर सनसब हारे ॥
शम्भु कीन्ह संग्राम अपारा । दनुज महाबल मरै न मारा ॥
परम सती असुराधिप नारी । तेहिबल ताहि न जीतपुरारी ॥
दो० छल करि टारेउ तासुब्रत प्रभुसुर कारजकीन्ह ।
जबतेइ जानेउ मरम सब शाप कोपकरिदीन्ह ॥
तासुशाप हरिकीन्ह प्रमाना । कौतुकनिधि कृपालुभगवाना ॥
तहां जलन्धर रावण भयऊ । रणहतिराम परमपद दयऊ ॥

एक जन्म कर कारण एहा । जेहिलगि राम धरी नरदेहा ॥
प्रति अवतार कथा प्रभु केरी । सुनिसुनिवरणी कविनयनेरी ॥
नारद शाप दीन्ह इकबारा । कल्पएकतेहिलगि अवतारा ॥
गिरिजा चकितभई सुनिबानी । नारद विष्णुभक्त मुनिज्ञानी ॥
कारणकौन शाप मुनि दीन्हा । का अपराध रमापति कीन्हा ॥
यह प्रसंग मोहिं कहहुपुरारी । मुनिमनमोह सोअचरजभारी ॥
दो० बोले बिहँसि महेश तब ज्ञानी मूढ़ न कोइ ।
जेहिजसरघुपतिकरहिंजब सोतसतेहिछणहोइ ॥
सो० कहौं रामगुण गाथ भरद्वाज सादर सुनहु ।
भवभंजन रघुनाथ भजु तुलसी तजि मोहमद ॥
हिमगिरिगुहा एकअतिपावनि । बहसमीपसुरसरितसुहावनि ॥
आश्रम परम पुनीत सुहावा । देखिदेवऋषिमनअतिभावा ॥
निरखिशैलगिरिविपिनविभागा । भयउरमापति पदअनुरागा ॥
सुमिरतहरिहिंश्वासगति बांधी । सहजविमलमनलागिसमाधी ॥
मुनिगति देखि सुरेश डराना । कामहिं बोलि कीन्हसन्माना ॥
सहित सहाय जाहु मम हेतू । चलेउहरषिहिय जलचरकेतू ॥
सुनासीर मनमहँ अति त्रासा । चहत देवऋषि ममपुरवासा ॥
जे कामी लोलुप जग माहीं । कुटिलकाकइव सबहिंडराहीं ॥
दो० सूख हाड़लै भागशठ श्वान निरखि मृगराज ।
छीनलेइजनि जानजड़ तिमिसुरपतिहिनलाज ॥
तेहिआश्रमहिंमदनजबगयऊ । निजमाया बसन्त निर्मयऊ ॥
कुसुमित विविध बिटपबहुरंगा । कुंजहिं कोकिल गुंजहिं भृंगा ॥
चली सुहावन त्रिविधबयारी । काम कृशानु बढ़ावन हारी ॥
रम्भादिक सुर नारि नवीना । सकलअशमशरकला प्रवीना ॥
करहिं गान बहु तान तरंगा । बहुबिधिक्रीड़हिं पानिपतंगा ॥
देखि सहाय मदन हरषाना । कीन्हेसिपुनिप्रपंचबिधिनाना ॥
कामकलाकछु मुनिहिंनब्यापी । निजभय डरेउ मनोभवपापी ॥

सीम कि चापिसके कोउतासू । बड़ रखवार रमापति जासू ॥

दो० सहित सहाय सभीत अति मानिहारि मनमैन ।
गहेसिजाइ मुनिवरचरण कहिसुठि आरतबैन ॥

भयउ न नारद मन कछु रोषा । कहिप्रियवचनकामपरितोषा ॥
नाइ चरण शिर आयसु पाई । गयउमदन तबसहितसहाई ॥
मुनि सुशीलता आपनि करणी । सुरपति सभाजाइसबबरणी ॥
सुनिसबके मन अचरजआवा । मुनिहिंप्रशंसिहरिहिंशिरनावा ॥
तब नारद गवने शिव पाहीं । जीतिकामअहमितिमनमाहीं ॥
मार चरित शंकरहिं सुनावा । अतिप्रियजानिमहेशसिखावा ॥
बारबार बिनवउँ मुनि तोहीं । जिमियहकथा सुनायउमोहीं ॥
तिमिजनिहरिहिं सुनावहुकबहूं । चलेहु प्रसंग दुरायहु तबहूं ॥

दो० शम्भुदीन उपदेश हित नहिं नारदहिं सुहान ।
भरद्वाज कौतुक सुनहु हरि इच्छा बलवान ॥

राम कीन्ह चाहैं सोइ होई । करै अन्यथा असनहिं कोई ॥
शम्भुबचन मुनिमनहिंन भाये । तब विरंचि के लोक सिधाये ॥
एक बार करतल बरबीणा । गावत हरिगुण गानप्रवीना ॥
क्षीरसिन्धु गवने मुनिनाथा । जहँबसश्रीनिवासश्रुतिमाथा ॥
हर्षि मिले उठि रमा निकेता । बैठे आसन ऋषिहि समेता ॥
बोले बिहँसि चराचर राया । बहुतदिननिकीन्ही मुनिदाया ॥
काम चरित नारद सब भाखे । यद्यपिप्रथमबरजि शिवराखे ॥
अतिप्रचण्ड रघुपतिकी माया । जेहिनमोह असकोजगजाया ॥

दो० रूख बदन करि बचन मृदु बोले श्रीभगवान ।
तुम्हरे सुमिरणते मिटहिं मोहमार मदमान ॥

सुनु मुनि मोहहोइ मन ताके । ज्ञानविराग हृदयनहिं जाके ॥
ब्रह्मचर्य्य ब्रतरति मति धीरा । तुमहिं कि करै मनोभवपीरा ॥
नारदकहेउ सहित अभिमाना । कृपातुम्हारिसकल भगवाना ॥
करुणानिधि मनदीख बिचारी । उर अंकुरेउ गर्ब्ब तरुभारी ॥

बेगि सो मैं डारिहौं उपारी । प्रण हमार सेवक हितकारी ॥
मुनिकरहित मम कौतुकहोई । अवशि उपाय करवमें सोई ॥
तब नारद हरिपद शिरनाई । चलेहृदयअहमितिअधिकाई ॥
श्रीपति निजमाया तब प्रेरी । सुनहु कठिन करणीतेहिकेरी ॥
दो० बिरचेहु मगुमहँ नगरतेहि शतयोजन बिस्तार ।
श्रीनिवासपुरते अधिक रचना बिबिधप्रकार ॥
बसहिं नगर सुन्दर नरनारी । जनुबहुमनसिजरतितनुधारी ॥
तेहि पुरबसै शीलनिधिराजा । अगणितहयगजसेनसमाजा ॥
शतसुरेश समबिभव बिलासा । रूप तेज बलनीति निवासा ॥
विश्व मोहनी तासु कुमारी । श्रीबिमोह जेहि रूपनिहारी ॥
सोहरि माया सब गुणखानी । शोभा तासु कि जाइबखानी ॥
करै स्वयम्बर सो नृपबाला । आयेतहँ अगणित महिपाला ॥
मुनि कौतुकीनगर तेहिगयऊ । पुरबासिन सन पूछत भयऊ ॥
सुनिसब चरित भूपगृह आये । करिपूजा नृप मुनि बैठाये ॥
दो० आनि दिखाई नारदहिं भूपति राजकुमारि ।
कहहु नाथ गुणदोषसब इहिकरहृदय बिचारि ॥
देखि रूप मुनिबिरति बिसारी । बड़ी बार लगि रहे निहारी ॥
लक्षण तासु बिलोकि भुलाने । हृदय हर्ष नहिं प्रकट बखाने ॥
जो इहि बरै अमर सो होई । समरभूमि तेहि जीत न कोई ॥
सेवहिं सकल चराचर ताही । बरै शीलनिधि कन्याजाही ॥
लक्षण सब बिचारिउर राखे । कछुक बनाइ भूपसन भाखे ॥
सुता सुलक्षणि कहि नृपपाहीं । नारद चले शोच मनमाहीं ॥
करौं जाइ सोइ यतनबिचारी । जेहिप्रकार मोहिंबरै कुमारी ॥
जपतपकछु न होइ यहिकाला । हेबिधिमिलैकवनिबिधिबाला ॥
दो० इहि अवसर चाहियपरम शोभा रूप बिशाल ।
जो बिलोकि रीझै कुवँरि तब मेलै जयमाल ॥
हरिसन मांगौं सुन्दरताई । होइहि जात गहरु अतिभाई ॥

मोरे हित हरिसम नहिं कोऊ । इहि अवसर सहाय सोहोऊ ॥
बहुबिधिबिनयकीन्हतेहिकाला । प्रकटेउ प्रभु कौतुकीकृपाला ॥
प्रभुबिलोकिमुनिनयन जुड़ाने । होइहि काज हिये हरषाने ॥
अति आरत कहि कथासुहाई । करहु कृपा प्रभु होहु सहाई ॥
आपन रूप देहु प्रभु मोहीं । आनभांति नहिं पावहुँओहीं ॥
जेहिबिधि नाथहोहि हितमोरा । करौ सो बेगि दास मैं तोरा ॥
निजमाया बलदेखि बिशाला । हिय हँसि बोले दीनदयाला ॥
दो० जेहिबिधि होइहिपरमहित नारदसुनहु तुम्हार ।
सोइ हमकरब न आनकछु वचन न मृषाहमार ॥
कुपथ मांगरुज ब्याकुलरोगी । बैद्य न देइ सुनहु मुनियोगी ॥
यहिबिधिहित तुम्हारमैं ठयऊ । कहिअसअन्तर्हितप्रभुभयऊ ॥
माया बिबश भये मुनि मूढ़ा । समुझिनहीं हरिगिरानिगूढ़ा ॥
गमने तुरत तहां ऋषि राई । जहां स्वयम्बर भूमि बनाई ॥
निज निज आसन बैठे राजा । बहुबनायकरि सहितसमाजा ॥
मुनि मन हर्षरूप अति मोरे । मोहितजिआनबरिहिनहिंभोरे ॥
मुनि हितकारण कृपानिधाना । दीन्ह कुरूप न जाइ बखाना ॥
सो चरित्र लखि काहु न पावा । नारद जानि सबनि शिरनावा ॥
दो० रहे तहां दुइ रुद्रगण जे जानहिं सब भेउ ।
विप्र वेष देखत फिरहिं परम कौतुकी तेउ ॥
जेहि समाज बैठे मुनि जाई । हृदयरूप अहमितिअधिकाई ॥
तहँ बैठे महेश गण दोऊ । विप्र वेष गति लखै न कोऊ ॥
करहिं कूट नारदहिं सुनाई । नीक दीन्ह हरि सुन्दरताई ॥
रीझिहि राजकुवँरि छबिदेखी । इनहिंबरहि हरिजानिविशेखी ॥
मुनिहिं मोह मन हाथ पराये । हँसहिंशम्भुगणअतिसचुपाये ॥
यदपिसुनहिंमुनि अटपटिवानी । समुझि न परेबुद्धि भ्रमसानी ॥
काहु न लखासोचरितविशेखी । सो स्वरूप नृपकन्या देखी ॥
मर्कट बदन भयंकर देही । देखत हृदय क्रोध भा तेही ॥

दो० सखी संगलै कुवँरि तब चलि जनु राज मराल ।
देखत फिरै महीप सब कर सरोज जयमाल ॥
जेहि दिशि बैठे नारद फूली । सोदिशिसोनं बिलोकेउभूली ॥
पुनिपुनिमुनिउकसहिंअकुलाहीं । देखिदशा हरगणमुसुकाहीं ॥
धरिनृपतनतहँ गयउ कृपाला । कुवँरि हरषि मेली जयमाला ॥
दुलहिनिलैगये लच्छिमिनिवासा । नृपसमाजसबभयउ निरासा ॥
मुनिअति विकलमोहमतिनाठी । मणिगिरिगईछूटि जनुगांठी ॥
तब हरगण बोले मुसुकाई । निजमुख मुकुरविलोकहुजाई ॥
असकहि दोउभागे भयभारी । बदनदीख मुनिबारि निहारी ॥
वेष बिलोकि क्रोध अतिबाढ़ा । तिनहिंशापदीन्हाअतिगाढ़ा ॥
दो० होहु निशाचर जाय तुम कपटी पापी दोउ ।
हँसेहु हमहिं सो लेहुफल बहुरि हँसेहुमुनिकोउ ॥
पुनि जलदीख रूप निजपावा । तदपिहृदय सन्तोष न आवा ॥
फरकत अधर कोप मनमाहीं । सपदिचले कमलापतिपाहीं ॥
देहौं शाप कि मरिहौं जाई । जगत मोर उपहास कराई ॥
बीचहि पन्थ मिले दनुजारी । संग रमा सोइ राज कुमारी ॥
बोले मधुर बचन सुरसाईं । मुनिकहँ चले विकलकी नाईं ॥
सुनत वचनउपजा अतिक्रोधा । माया बश न रहा मन बोधा ॥
पर सम्पदा सकहु नहिं देखी । तुम्हरे ईर्षा कपट विशेखी ॥
मथत सिंधु रुद्रहिं बौरायहु । सुरन प्रेरि बिषपान करायहु ॥
दो० असुर सुरा बिष शंकरहिं आपुरमा मणिचारु ।
स्वारथ साधक कुटिलतुम सदाकपट व्यवहारु ॥
परमस्वतन्त्र न शिरपर कोई । भावै मनहिं करहु तुम सोई ॥
भलेहिमन्द मन्दहि भल करहू । विस्मयहर्ष न हियकछुधरहू ॥
डहकि डहकि परके सब काहू । अति अशंकमनसदाउछाहू ॥
कर्म्म शुभाशुभतुमहिं न बाधा । अबलगि तुमहिंनकाहूसाधा ॥
भले भवन अब बायन दीन्हा । पावहुगे फल आपन कीन्हा ॥

बंच्यहु मोहिं जवन धरि देहा । सोइ तनधरहु शाप ममयेहा ॥
कपिश्राकृति तुमकीन्ह हमारी । करिहहिंकीश सहायतुम्हारी ॥
मम अपकार कीन्ह तुम भारी । नारिविरह तुम होहु दुखारी ॥
दो० शाप शीशधरि हरषिहिय प्रभु सुरकारज कीन्ह ।
निजमायाकी प्रबलता हरषि कृपानिधि लीन्ह ॥
जब हरि माया दूरि निवारी । नहिं तहँ रमा न राजकुमारी ॥
तबमुनिअतिसभीतहरिचरणा । गहेपाहि प्रणतारति हरणा ॥
मृषा होहु मम शाप कृपाला । ममइच्छा कह दीनदयाला ॥
मैं दुर्वचन कहेउँ बहुतेरे । कहमुनि पापमिटाहिंकिमिमेरे ॥
जपहु जाइ शंकर शत नामा । होइहि हृदय तुरत बिश्रामा ॥
कोउनहिं शिवसमान प्रियमोरे । असप्रतीतित्यागहुजनिभोरे ॥
जेहि पर कृपा न करहिं पुरारी । सो न पाव मुनि भक्तिहमारी ॥
अस उरधरिमहि बिचरहुजाई । अब न तुमहिंमाया नियराई ॥
दो० बहुबिधि मुनिहिं प्रबोधि प्रभु तबभये अन्तर्द्धान ।
सत्यलोक नारद चले करत रामगुण गान ॥
हरगण मुनिहिं जातपथ देखी । विगत मोह मनहर्ष विशेखी ॥
अति सभीत नारद पहँ आये । गहिपद आरत वचनसुनाये ॥
हरगण हम न विप्र मुनिराया । बड़ अपराधकीन्ह फलपाया ॥
शाप अनुग्रह करहु कृपाला । बोले नारद दीन दयाला ॥
निशिचर जाइ होहु तुम दोऊ । वैभव विपुल तेज बल होऊ ॥
भुजबलविश्वजितवतुमजहिया । धरिहैंविष्णुमनुजतनुतहिया ॥
समर मरण हरिहाथ तुम्हारा । होइहहु मुक्त न पुनि संसारा ॥
चले युगल मुनि पद शिरनाई । भये निशाचर कालहि पाई ॥
दो० एक कल्प इहि हेतु प्रभु लीन्ह मनुज अवतार ।
सुर रंजन सज्जन सुखद हरि भंजन भूभार ॥
इहि विधि जन्म कर्म हरि केरे । सुन्दर सुखद विचित्र घनेरे ॥
कल्प कल्पप्रति प्रभु अवतरहीं । चारुचरित नानाविधिकरहीं ॥

तब तब कथा मुनीशन गाई । परम विचित्र प्रबन्ध बनाई ॥
विविध प्रसंग अनूप बखाने । करहिंनसुनिआश्चर्य्यसयाने ॥
हरिअनंतहरिकथाअनन्ता । कहहिंसुनहिंबहुविधिश्रुतिसन्ता ॥
रामचन्द्र के चरित सुहाये । कल्पकोटिलगि जाहिंनगाये ॥
यह प्रसंग मैं कहा बखानी । हरिमाया मोहहिं मुनिज्ञानी ॥
प्रभुकौतुकी प्रणत हितकारी । सेवतसुलभ सकल दुखहारी ॥
सो० सुरनरमुनि कोउनाहिं जेहिनमोह मायाप्रबल ।
असबिचारि मनमाहिं भजियमहामायापतिहि ॥
अपर हेतु सुनु शैल कुमारी । कहौं विचित्रकथा बिस्तारी ॥
जेहिकारण अजअगुण अनूपा । ब्रह्म भये कोशलपुर भूपा ॥
जोप्रभुबिपिन फिरत हमदेखा । बन्धु समेत किये मुनिवेखा ॥
जासुचरित अवलोकि भवानी । सती शरीर रहिउ बौरानी ॥
अजहुँ न छाया मिटततुम्हारी । तासुचरित सुनुभ्रमरजुहारी ॥
लीलाकीन्ह जो तेहिअवतारा । सोसबकहिहौं मति अनुसारा ॥
भरद्वाज सुनि शंकर बानी । सकुचि सप्रेम उमाहरषानी ॥
लगे बहुरि बरणै वृषकेतू । सो अवतार भयउ जेहिहेतू ॥
दो० सो मैं तुमसन कहौंसब सुनुमुनीश मनलाय ।
रामकथा कलिमलहरणि मंगल करणिसहाय ॥
स्वायम्भू मनु अरु सतरूपा । जिनते भै नरसृष्टि अनूपा ॥
दम्पति धर्म आचरण नीका । अजहुँगावश्रुतिजिनकीलीका ॥
नृप उत्तानपाद सुत तासू । ध्रुवहरिभक्त भये सुत जासू ॥
लघुसुत नाम प्रियव्रत ताही । वेद पुराण प्रशंसत जाही ॥
देवहुती पुनि तासु कुमारी । जो मुनि कर्दमकी प्रियनारी ॥
आदि देव प्रभु दीनदयाला । जठरधरेउजेहिकपिलकृपाला ॥
सांख्यशास्त्रजिनप्रकटबखाना । तत्वबिचार निपुण भगवाना ॥
तेहिंमनुराज कीन्ह बहुकाला । प्रभुआयसुबहुबिधिप्रतिपाला ॥
सो० होइनबिषय बिराग भवनबसतभा चौथपन ।

हृदयबहुत दुखलाग जन्मगयउहरिभक्तिबिन ॥
घरबसराज्य सुतहिं तब दीन्हा । नारिसमेत गवन बन कीन्हा ॥
तीरथ बर नैमिष बिख्याता । अतिपुनीतसाधकसिधिदाता॥
बसहिंतहां मुनि सिद्धसमाजा । तहँ हिय हर्षि चले मनुराजा ॥
पन्थजात सोहहिं मतिधीरा । ज्ञानभक्ति जनु धरे शरीरा ॥
पहुँचे जाय धेनुमति तीरा । हरषि नहाने निर्मल नीरा ॥
आये मिलन सिद्ध मुनिज्ञानी । धर्म धुरन्धर ऋषिमुनिजानी॥
जहँ जहँ तीरथ रहे सुहाये । मुनिन सकल सादर करवाये ॥
कृश शरीर मुनिपट परिधाना । सन्तसभा नित सुनहिंपुराना ॥
दो० द्वादशअक्षर मंत्रबर जपहिं सहित अनुराग ।
वासुदेव पदपंकरुह दम्पति मन अतिलाग ॥
करहिं अहार शाकफल कन्दा । सुमिरहिं ब्रह्म सच्चिदानन्दा ॥
पुनि हरिहेतु करन तपलागे । बारिअहार मूल फलत्यागे ॥
उर अभिलाष निरन्तर होई । देखियनयन परमप्रिय सोई ॥
अगुणअखण्डअनन्तअनादी । जेहिचिन्तहिंपरमारथ बादी ॥
नेति नेति जेहि वेद निरूपा । चिदानन्द निरुपाधि अनूपा ॥
शम्भु बिरंचि विष्णु भगवाना । उपजहिं जासु अंशते नाना ॥
ऐसे प्रभु सेवक बश अहहीं । भक्त हेतु लीला तनुगहहीं ॥
जो यह बचनसत्यश्रुति भाषा । तौहमार पूजहिं अभिलाषा ॥
दो० इहि बिधि बीते वर्षषट सहसबारि आहार ।
सम्बत सप्तसहस्र पुनि रहेसमीर अधार ॥
बर्ष सहसदश त्यागेउ सोऊ । ठाढ़े रहे एक पद दोऊ ॥
बिधि हरिहरतपदेखि अपारा । मनुसमीप आये इकबारा ॥
मांगहुबर बहुभांति लुभाये । परमधीर नहिंचलहिंचलाये ॥
अस्थिमात्र है रहे शरीरा । तदपि मनागपिनहिंमनपीरा ॥
प्रभुसर्बज्ञ दास निज जानी । गतिअनन्य तापस नृपरानी ॥
मांगु मांगु बर भै नभ बानी । परम गँभीर कृपामृत सानी ॥

मृतक जियावनि गिरा सुहाई । श्रवण रन्ध्र होइ उर जब आई ॥
हृष्ट पुष्ट तन भयउ सुहाये । मानहुँ अबहिं भवनते आये ॥
दो० श्रवणसुधा समबचनसुनि पुलकप्रफुल्लित गात ।
बोले मुनि करिदण्डवत प्रेम न हृदय समात ॥
सुनि सेवक सुरतरु सुरधेनू । विधिहरिहर बन्दित पदरेनू ॥
सेवतसुलभ सकल सुखदायक । प्रणतपाल सचराचर नायक ॥
जो अनाथ हित हमपर नेहू । तौ प्रसन्न ह्वै यहबर देहू ॥
जो स्वरूप बश शिव मनमाहीं । जेहिकारणमुनि यतनकराहीं ॥
जो भुशुण्डिमनमानस हंसा । सगुणअगुणजेहिनिगमप्रशंसा ॥
देखहिं हमसो रूपभरिलोचन । कृपाकरहु प्रणतारतिमोचन ॥
दम्पति वचन परमप्रियलागे । मृदुल विनीत प्रेमरस पागे ॥
भक्त बछल प्रभु कृपा निधाना । विश्व वास प्रकटे भगवाना ॥
दो० नील सरोरुह नीलमणि नील नीरधर श्याम ।
लाजहिंतन शोभानिरखि कोटि कोटि शतकाम ॥
शरद मयंक बदन छबिसींवा । चारुकपोल चिबुकदरग्रीवा ॥
अधर अरुण रद सुन्दर नासा । विधुकर निकरविनिंदकहासा ॥
नव अम्बुज अम्बुकुछबिनीकी । चितवनिललितभावतीजीकी ॥
भृकुटि मनोजचाप छबिहारी । तिलकललाटपटलद्युतिकारी ॥
कुण्डलमकर मुकुट शिरभ्राजा । कुलिशकेशजनुमधुपसमाजा ॥
उर श्रीबत्स रुचिर बनमाला । पदिकहार भूषण मणिजाला ॥
केहरि कन्धर चारु जनेऊ । बाहु विभूषण सुन्दर तेऊ ॥
करिकरसरिससुभग भुजदण्डा । कटि निषंगकरशरकोदण्डा ॥
दो० तड़ित विनिन्दक पीतपट उदर रेख बरतीनि ।
नाभिमनोहर लेतिजनु यमुन भवँर छबिछीनि ॥
पद राजीव बरणि नहिंजाहीं । मुनिमनमधुपबसहिंजिहिमाहीं ॥
बामभाग शोभित अनुकूला । आदिशक्तिछबिनिधिजगमूला ॥
जासुअंश उपजहिं गुणखानी । अगणित उमारमा ब्रह्मानी ॥

भृकुटि विलास जासुजग होई । राम बाम दिशि सीता सोई ॥
छबि समुद्र हरि रूप बिलोकी । इक टक रहे नयन पटरोकी ॥
चितवहिं सादर रूप अनूपा । तृप्ति न मानहिं मनुसतरूपा ॥
हर्ष बिवश तनु दशा भुलानी । परे दण्ड इव गहिपद पानी ॥
शिर परसे प्रभु निज पदकंजा । तुरत उठाये करुणा पुंजा ॥
दो० बोले कृपानिधान पुनि अति प्रसन्न मोहिं जानि ।
मांगहुवर जोइ भावमन महा दानि अनुमानि ॥
सुनि प्रभुवचन जोरि युगपाणी । धरि धीरज बोले मृदुबाणी ॥
नाथ देखि पद कमल तुम्हारे । अब पूजे सब काम हमारे ॥
एक लालसा बड़ि मन माहीं । सुगमअगमकहिजातसोनाहीं ॥
तुमहिंदेत अति सुगमगुसाईं । अगमलागिमोहिंनिजकृपणाईं ॥
यथा दरिद्र कल्पतरु पाई । बहुसम्पति मांगत सकुचाई ॥
तासु प्रभाव न जाने सोई । तथा हृदय मम संशय होई ॥
सो तुम जानहु अन्तरयामी । पुरवहु मोर मनोरथ स्वामी ॥
सकुच बिहाय मांगु नृप मोहीं । मोरे नहिं अदेय कछु तोहीं ॥
दो० दानि शिरोमणि कृपानिधि नाथ कहौं सतभाव ।
चाहौं तुमहिं समान सुत प्रभुसन कौन दुराव ॥
देखि प्रीति सुनि वचन अमोले । एवमस्तु करुणानिधि बोले ॥
आप सरिस खोजौं कहँ जाई । नृप तव तनय होब मैं आई ॥
सतरूपहिं बिलोकि करजोरे । देवि मांगुवर जो रुचितोरे ॥
जोवरनाथ चतुर नृपमांगा । सोइकृपालुमोहिंअतिप्रियलागा ॥
प्रभु परन्तु सुठि होत ढिठाई । यदपिभक्तहिततुमहिं सुनाई ॥
तुम ब्रह्मादि जनक जगस्वामी । ब्रह्म सकलउर अन्तरयामी ॥
अस समुझत मन संशयहोई । कहा जो प्रभुप्रमाणपुनिसोई ॥
जे नर भक्त नाथ तव अहहीं । जो सुखपावहिं सोगतिलहहीं ॥
दो० सोइसुखसोइगतिसोइभगति सोइनिजचरणसनेहु ।
सोइ विवेक सोइरहनि प्रभु मोहिं कृपाकरि देहु ॥

सुनिमृदुगूढ़ रुचिरबररचना । कृपासिंधु बोले मृदु बचना ॥
जो कछु रुचितुम्हरे मनमाहीं । मैं सो दीन्ह सब संशयनाहीं ॥
मातु बिवेक अलौकिक तोरे । कबहुँनमिटिहिं अनुग्रह मोरे ॥
बन्दिचरण मनु कहेउ बहोरी । अवर एक बिनती प्रभुमोरी ॥
सुत बिषयक तवपद रतिहोऊ । मोहिंबरु मूढ़कहै किनकोऊ ॥
मणिबिनुफणिजिमिजलबिनमीना।ममजीवनतिमितुमहिंअधीना॥
असबरमांगि चरणगहिरह्यऊ । एवमस्तु करुणानिधिकह्यऊ ॥
अबतुम मम अनुशासनमानी । बसहुजाइ सुरपति रजधानी ॥
सो० तहँ करि भोग बिशाल तातगये कछु कालपुनि ।
होइहहु अवध भुवाल तबमैं होब तुम्हारसुत ॥
इच्छामय नर बेष सवाँरे । होइहहुं प्रकट निकेततुम्हारे ॥
अंशन सहित देहधरि ताता । करिहौंचरित भक्तसुखदाता ॥
जेहि सुनिसादर नरबड़भागी । भवतरिहहिंममतामदत्यागी ॥
आदिशक्तिजेहि जगउपजाया । सोअवतरिहि मोरियहमाया ॥
पुरउब मैं अभिलाष तुम्हारा । सत्य सत्य प्रण सत्यहमारा ॥
पुनिपुनिअसकहि कृपानिधाना । अन्तर्द्धान भये भगवाना ॥
दम्पति उर धरि भक्तकृपाला । तेहिआश्रमनिबसे कछुकाला ॥
समयपाय तनुतजि अनयासा । जाइकीन्ह अमरावतिबासा ॥
दो० यह इतिहास पुनीत अति उमहिं कहेउ वृषकेतु ।
भरद्वाज सुनु अपर पुनि राम जन्म करहेतु ॥
सुनु मुनि कथा पुनीत पुरानी । जोगिरिजाप्रतिशम्भुबखानी॥
बिश्व बिदित इक केकय देशू । सत्यकेतु तहँ बसै नरेशू ॥
धर्म्म धुरन्धर नीति निधाना । तेज प्रताप शील बलवाना ॥
तेहि के भये युगल सुत बीरा । सब गुणधाम महारणधीरा ॥
रजधानी ज्येठे सुत आही । नाम प्रतापभानु असताही ॥
अपर सुतहि अरिमर्द्दन नामा । भुजबलअतुलअचलसंग्रामा॥
भाइहि भाइहि परम सुनीती । सकल दोषछलवर्जित प्रीती ॥

ज्येठे सुतहि राज्य नृपदीन्हा । हरिहितआपुगवनवनकीन्हा ॥
दो० जब प्रतापरवि भयउ नृप फिरी दोहाई देश ।
प्रजापाल अति वेदविधि कतहुं नहींअघलेश ॥
नृपहितकारक सचिव सुजाना । नाम धर्मरुचि शुक्र समाना ॥
सचिव समान बन्धु बलबीरा । आपु प्रताप पुंज रणधीरा ॥
सेन संग चतुरङ्ग अपारा । अमितसुभटसबसमरजुझारा॥
सेन विलोकि राउ हरषाना । अरु बाजे गह गहे निशाना ॥
बिजय हेतु कटकाइ बनाई । जहँ तहँ पड़ी अनेक लड़ाई ॥
सुदिनसाधि नृप चल्योबजाई । जीते सकल भूप बरिआई ॥
सप्तद्वीप भुज बल वश कीन्हें । लै लै दण्डछाँड़ि नृप दीन्हें ॥
सकलअवनिमण्डलतेहिकाला । एक प्रतापभानु महिपाला ॥
दो० स्ववश विश्वकरि बाहुबल निजपुर कीन्ह प्रवेश ।
अर्थ धर्म्म कामादि सुख सेवहिं सबै नरेश ॥
भूप प्रतापभानु बल पाई । कामधेनु भै भूमि सुहाई ॥
सब दुखवर्जित प्रजा सुखारी । धर्म्मशील सुन्दर नरनारी ॥
सचिव धर्मरुचि हरिपदप्रीती । नृपहित हेतु सिखावन नीती ॥
गुरु सुर सन्त पितर महिदेवा । करैं सदा नृप सबकी सेवा ॥
भूप धर्म्म जे वेद बखाने । सकल करैं सादर सुखमाने ॥
दिनप्रति देइविविधविधिदाना । सुनै शास्त्र बर वेद पुराना ॥
नाना बापी कूप तड़ागा । सुमन बाटिका सुन्दर बागा ॥
बिप्र भवन सुर भवन सुहाये । सब तीरथन विचित्र बनाये ॥
दो० जहँ लगि कहे पुराणश्रुति एक एक सब याग ।
बार सहस्र सहस्र नृप किये सहित अनुराग ॥
हृदय न कछु फलअनुसंधाना । भूप विवेकी परम सुजाना ॥
करैजो धर्म्म कर्म्म मनबानी । वासुदेव अर्प्पित नृपज्ञानी ॥
चढ़ि बरबाजि बार इक राजा । मृगयाकरसबसाजि समाजा ॥
विन्ध्याचल गँभीर बनगयऊ । मृगपुनीत बहु मारत भयऊ ॥

फिरत बिपिन नृप दीख बराहू । जनुबनदुरे शशिहिग्रस राहू ॥
बड़बिधु नहिंसमात मुखमाहीं । मनहुँ क्रोधबशउगिलतनाहीं ॥
कोल कराल दशन छबि गाई । तनुबिशाल पीवर अधिकाई ॥
घुरघुरात हय आरव पाये । चकित बिलोकत कानउठाये ॥

दो० नील महीधर शिखरसम देखि बिशाल बराह ।
चपरिचलेउ हय सुठिकनृप हांकिनहोइनिबाह ॥

आवतदेखि अधिक रवबाजी । चलाबराह मरुतगति भाजी ॥
तुरत कीन्ह नृप शरसन्धाना । महिमिलिगयउबिलोकतबाना ॥
तकि तकितीर महीश चलावा । करिछल सुअर शरीर बचावा ॥
प्रकटत दुरत जाइ मृग भागा । रिसबश भूपचलेउसँगलागा ॥
गयउ दूरि बन गहन बराहू । जहांनाहिं गजबाजि निबाहू ॥
अतिअकेल बन बिपुल कलेशू । तदपि न मृगमग तजेनरेशू ॥
कोल बिलोकि भूप बड़ धीरा । भागि पैठु गिरिगुहा गँभीरा ॥
अगमदेखि नृपअति पछिताई । फिरेउ महा बनपरेउ भुलाई ॥

दो० खेद खिन्न तिराषित क्षुधित राजा बाजि समेत ।
खोजतब्याकुलसरितसर जलबिनुभयउअचेत ॥

फिरत बिपिन आश्रम इकदेखा । तहँबसनृपतिकपटमुनि वेखा ॥
जासुदेश नृप लीन्ह छुड़ाई । समर सेन तजिगयउपराई ॥
समय प्रतापभानु करजानी । आपनअतिअसमयअनुमानी ॥
गयउन गृह मन परमगलानी । मिलानराजाहिंनृपअभिमानी ॥
रिसउरमारि रंक जिमि राजा । बिपिनबसै तापसके साजा ॥
तासु समीप गवन नृपकीन्हा । यह प्रतापरबितेइँतबचीन्हा ॥
राउ तृषित नहिं सो पहिंचाना । देखि सुवेष महामुनि जाना ॥
उतरि तुरगते कीन्ह प्रणामा । परमचतुरनकह्यउनिजनामा ॥

दो० भूपति तृषित बिलोकितेइँ सरवरदीन्ह दिखाइ ।
मज्जनपान समेतहय कीन्ह नृपति हरषाइ ॥

गाश्रमसकल सुखी नृप भयऊ । निजआश्रम तापसले गयऊ ॥

आसनदीन्ह अस्त रबि जानी । पुनि तापस बोला मृदुबानी ॥
को तुम कसबन फिरहु अकेले । सुन्दर युवा जीवपर हेले ॥
चक्रवर्त्ति के लक्षण तोरे । देखत दया लागि अतिमोरे ॥
नाम प्रताप भानु अवनीशा । तासु सचिवमैं सुनहुमुनीशा ॥
फिरत अहेरहिं परेउँ भुलाई । बड़े भाग देखेउँ पद आई ॥
हमकहँ दुर्लभ दरश तुम्हारा । जानतहौं कछुभल होनहारा ॥
कह मुनितात भयउ अँधियारा । योजनसत्तर नगर तुम्हारा ॥
दो० निशाघोर गम्भीरबन पन्थ न सूझ सुजान ।
बसहुआजु असजानितुम जायहुहोत बिहान ॥
तुलसी जस भवतव्यता तैसे मिलै सहाइ ।
आप न आवै ताहि पै ताहि तहां लैजाइ ॥
भलेहिनाथ आयसु धरिशीशा । बांधि तुरग तरुबैठ महीशा ॥
नृप सबभांति प्रशंसेउ ताही । चरणबन्दिनिजभाग्यसराही ॥
पुनि बोलेउ मृदुगिरा सुहाई । जानि पिता प्रभु करौंढिठाई ॥
म्बाहिं मुनीश सुत सेवकजानी । नाथनाम निज कहहुबखानी ॥
तेहिनजान नृपन्दपहिसोजाना । भूपसुहृदय सो कपट सयाना ॥
बैरीपुनि क्षत्री पुनि राजा । छलबलकीन्हचहै निजकाजा ॥
समुझिराजसुखदुखितअराती । अवांअनल इव जरै सुछाती ॥
सरल बचन नृपके सुनिकाना । बयर सँभारि हृदय हरषाना ॥
दो० कपट बोरिबाणी मृदुल बोलेउ युक्ति समेत ।
नाम हमार भिखारिअब निरधनरहितनिकेत ॥
कह नृप जे बिज्ञान निधाना । तुमसारिखेगलितअभिमाना ॥
सदा अपनपो रहहिं दुराये । सबबिधि कुशलकुवेष बनाये ॥
तेहिते कहहिं सन्त श्रुतिटेरे । परमअकिंचन प्रिय हरिकेरे ॥
तुमसम अधन भिखारिअगेहा । होतबिरंचि शिवहि सन्देहा ॥
योसिसोसि तव चरण नमामी । मोपर कृपाकरियअबस्वामी ॥
सहजप्रीति भूपति की देखी । आपविषे बिश्वास बिशेखी ॥

सब प्रकार राजहिं अपनाई । बोलेउ अधिक सनेह जनाई ॥
सुन सतिभाव कहौं महिपाला । इहां बसत बीते बहु काला ॥
दो० अबलगिमोहिं न मिलेउकोउ मैं न जनायउँकाहु ।
लोक मान्यता अनल सम करतप काननदाहु ॥
सो० तुलसी देखि सुबेख भूलै मूढ़ न चतुर नर ।
सुन्दर केकी पेख बचन सुधासम असनअहि ॥
ताते गुप्त रहौं जग माहीं । हरितजिकिमपिप्रयोजननाहीं ॥
प्रभुजानत सब बिनहिंजनाये । कहहुकवनासिधिलोकरिझाये ॥
तुमशुचिसुमतिपरमप्रिय मोरे । प्रीति प्रतीति मोहिंपर तोरे ॥
अब जो तात दुरावौं तोहीं । दारुण दोष बढ़ै अतिमोहीं ॥
जिमिजिमितापसकथै उदासा । तिमितिमिनृपहिंहोइबिश्वासा ॥
देखा स्वबश कर्म्म मन बानी । तब बोला तापस बकध्यानी ॥
नाम हमार एक तनु भाई । सुनि नृप बोलेउपदशिरनाई ॥
कहहु नाम कर अर्थ बखानी । मोहिंसेवकअतिआपनजानी ॥
दो० आदिसृष्टि उपजी जबै तब उतपतिभइ मोरि ।
नाम एकतनु हेतु तेहि देह न धरी बहोरि ॥
जनि आश्चर्य करहु मनमाहीं । सुत तपते दुर्लभ कछुनाहीं ॥
तप बल ते जग सृजै बिधाता । तपबल बिष्णुभये परित्राता ॥
तप बल शम्भु करहिं संहारा । तपते अगम न कछुसंसारा ॥
भयहुनृपहिसुनिअतिअनुरागा । कथा पुरातन कहै सोलागा ॥
कर्म्म धर्म्म इतिहास अनेका । करै निरूपण बिरतिबिवेका ॥
उद्भव पालन प्रलय कहानी । कहेसिअमितआश्चर्यबखानी ॥
सुनि महीश तापसबश भयऊ । आपननाम कहनतबलयऊ ॥
कह तापस नृप जानौं तोहीं । कीन्हेउकपटलागु भलमोहीं ॥
सो० सुनुमहीश असनीति जहँतहँ नाम न कहहिंनृप ।
मोहिंतोहिंपरअतिप्रीति परमचतुरता निरखितव ॥
नाम तुम्हार प्रतापदिनेशा । सत्यकेतु तव पिता नरेशा ॥

गुरुप्रसाद सब जानिय राजा । कहियनश्रानहिंजानिश्रकाजा॥
देखि तात तव सहज सुधाई । प्रीतिप्रतीतिनीति निपुणाई॥
उपजिपरी ममता मन मोरे । कहेउँ कथा निज बूझे तोरे॥
अब प्रसन्न मैं संशय नाहीं । मांगु जोभूप भाव मनमाहीं॥
सुनिसुबचन भूपति हरषाना । गहिपदविनयकीन्हविधिनाना॥
कृपासिन्धु मुनि दरशन तोरे । चारिपदारथ करतल मोरे॥
प्रभुहि तथापिप्रसन्न बिलोकी । मांगि अगमवरहोउँअशोकी॥

दो० जरा मरण दुख रहित तनु समर न जीते कोउ ।
एक छत्र रिपुहीनमहि राज कल्प शत होउ ॥

कह तापस नृप ऐसेइ होऊ । कारण एक कठिनसुनसोऊ॥
कालौ तव पद नाइय शीशा । एक विप्रकुल छाँड़ि महीशा॥
तप बल विप्र सदा बरियारा । तिनके कोप न कोउरखवारा॥
जो बिप्रन बश करहु नरेशा । तौतवबशबिधि बिष्णुमहेशा॥
चलन ब्रह्मकुलसे बरिआई । सत्यकहौं दोउभुजा उठाई॥
बिप्र शाप बिनु सुनु महिपाला । तोर नाशनहिं कवनिहुँकाला॥
हरषेउ राउ बचन सुनि तासू । नाथ न होइ मोर अब नासू॥
तव प्रसाद प्रभु कृपानिधाना । मोकहँ सर्बकाल कल्याना॥

दो० एवमस्तु कहि कपटमुनि बोला कुटिल बहोरि ।
मिलबहमारभुवालजनि कहहु तो मोरिनखोरि ॥

ताते मैं तोहिं बरजों राजा । कहे कथा तव परम अकाजा॥
छठे श्रवण यह परत कहानी । नाशतुम्हारसत्य मम बानी॥
यह प्रकटे अथवा द्विज शापा । नाश तोर सुनु भानुप्रतापा॥
आन उपाय निधन तव नाहीं । जो हरिहर कोपहिं मनमाहीं॥
सत्य नाथ पदगहि नृपभाखा । द्विजगुरुकोप कहहुको राखा॥
राखैगुरु जो कोप बिधाता । गुरुबिरोधनहिंकोउजगत्राता॥
जो न चलब हम कहे तुम्हारे । होइ नाशनहिं शोच हमारे॥
एकहि डर डरपत मन मोरा । प्रभुमहिदेव शाप अतिघोरा॥

दो० होहिं बिप्रबशकवनविधि कहहु कृपाकरि सोउ ।
तुम तजि दीनदयालुनिज हितू न देखौं कोउ ॥
सुनुनृप विविधयतन जगमाहीं । कष्टसाध्य पुनिहोहिंकिनाहीं ॥
अहै एक अति सुगम उपाई । तहां परन्तु एक कठिनाई ॥
मम आधीन युक्ति नृप सोई । मोर जाब तव नगर न होई ॥
आजुलगे अरु जब ते भयऊं । काहूके गृह ग्राम न गयऊं ॥
जो न जाब तव होइ अकाजू । बना आइ असमंजस आजू ॥
सुनि महीप बोले मृदुबानी । नाथनिगमअसनीतिबखानी ॥
बड़े सनेह लघुनपर करहीं । गिरिनिजशिरनसदातृणधरहीं ॥
जलधि अगाध मौलिवह फेनू । सन्तत धरणिधरत शिररेनू ॥
दो० असकहि गहे नरेशपद स्वामी होहु कृपालु ।
मोहिंलागि दुखसाहियप्रभु सज्जनदीनदयालु ॥
जानिनृपाहिं आपन आधीना । बोला तापस कपट प्रवीना ॥
सत्यकहौं भूपतिसुनु तोहीं । जगमहँ नहिं दुर्लभकछुमोहीं ॥
अवशि काजमैं करिहौं तोरा । मनक्रम बचन भक्त तैंमोरा ॥
योग युक्ति तप मंत्र प्रभाऊ । फलै तबहिं जबकरिय दुराऊ ॥
जो नरेश मैं करउँ रसोई । तुमपरसहु मोहिं जाननकोई ॥
अन्नसो जोइ जोइ भोजनकरई । सोइसोइतवआयसुअनुसरई ॥
पुनि तिनके गृह जेवैं जोई । तवबश होइ भूप सुनुसोई ॥
जाइ उपाय रचहु नृप येहू । संवत भरि संकल्प करेहू ॥
दो० नित नूतनद्विज सहसशत बरेहुसहित परिवार ।
मैं तुम्हरे संकल्प लगि दिनहि करब जेवनार ॥
इहिबिधि भूप कष्ट अतिथोरे । होइहहिं सकल बिप्रबशतोरे ॥
करिहहिं बिप्रहोम मखसेवा । तेहिप्रसंग सहजहि बशदेवा ॥
और एक तोहिं कहौं लखाऊ । मैं यहिवेष न आउब काऊ ॥
तुम्हरे उपरोहित कहँ राया । हरिआनब मैंकरि निजमाया ॥
तपबल तेहिकर आपसमाना । रखिहौं इहां वर्ष परमाना ॥

मैं धरि तासु वेष सुनुराजा । सबबिधितोर सवाँरब काजा ॥
गै निशि बहुतशयनअबकीजे । मोहिंतोहिं भूपभेट दिनतीजे ॥
मैं तपबल ताहितुरग समेता । पहुँचैहों सोवतहिं निकेता ॥
दो० मैंआउब सोइ वेषधरि पहिचानेहु तब मोहिं ।
जब एकान्त बुलाइ सब कथा सुनाउब तोहिं ॥
शयनकीन्ह नृप आयसु मानी । आसनजाइ बैठ छलज्ञानी ॥
श्रमित भूपनिद्रा अति आई । सोकिमिसोव शोचअधिकाई ॥
कालकेतु निश्चर तहँ आवा । जेहिंशूकरहोइ नृपहिं भुलावा ॥
परममित्र तापस नृप केरा । जानैसो अति कपट घनेरा ॥
तेहिके शतसुत अरुदशभाई । खल अतिअजय देवदुखदाई ॥
प्रथमहिं भूपसमर सबमारे । विप्र सन्त सुर देखि दुखारे ॥
तेहिखल पाछिल बैर सँवारा । तापसनृप मिलि मंत्रबिचारा ॥
जेहि रिपुक्षयसोइरचेसिउपाऊ । भावीबश न जान कछुराऊ ॥
दो० रिपुतेजसी अकेल अति लघुकरि गनिय न ताहु ।
अजहुँदेत दुखरबिशशिहि शिर अवशेषितराहु ॥
तापसनृप निजसखहिं निहारी । हरषिमिलेउउठिभयउसुखारी ॥
मित्रहिकहि सब कथा सुनाई । यातुधान बोला सुख पाई ॥
अब साधेउँ रिपु सुनहु नरेशा । जो तुम कीन्ह मोर उपदेशा ॥
परिहरि शोचकरहु तुम सोई । बिनुऔषधहिंब्याधिबिधिखोई ॥
कुल समेत रिपु मूल बहाई । चौथे दिवस मिलब मैं आई ॥
तापस नृपहि बहुत परितोषी । चला महाकपटी अतिरोषी ॥
भानुप्रतापहिं बाजि समेता । पहुँचायसि सोवतहिंनिकेता ॥
नृपहिं नारिपहँ शयन कराई । हयगृहबांधेसि बाजिहिं जाई ॥
दो० राजा के उपरोहितहिं हरि लै गयउ बहोरि ।
लै राखेसि गिरिखोहमहँ मायाकरि मतिभोरि ॥
आपबिरचि उपरोहित रूपा । पराजाय तेहि सेज अनूपा ॥
जागेउ नृप अनुभयउबिहाना । देखिभवनअतिअचरजमाना ॥

मुनि महिमा मनमहँ अनुमानी । उठेगवहिं जेहिजान न रानी ॥
कानन गयउ बाजि चढ़ि तेही । पुरनर नारि न जानेउ केही ॥
गये याम युग भूपति आवा । घरघर उत्सव बाजु बधावा ॥
उपरोहितहिं दीखजबराजा । चकितबिलोकिसुमिरिसोइकाजा ॥
युगसम नृपाहिंगये दिनतीनी । कपटीमुनिनृपमतिहरिलीनी ॥
समय जानि उपरोहित आवा । नृपहिमतोसबकहिसमुभावा ॥
दो० नृपहर्षे पहिचानि गुरु भ्रमवश रहा न चेत ।
बरे तुरत शत सहसबर बिप्र कुटुम्ब समेत ॥
उपरोहित जेवनार बनाई । छरसचारिबिधिजसश्रुतिगाई ॥
मायामय तेइँ कीन्ह रसोई । ब्यंजन बहु गनिसकै न कोई ॥
विविधमृगनकर आमिषरांधा । तेहिमहँ बिप्रमांसखलसांधा ॥
भोजन कहँ सब बिप्र बुलाये । पद पखारि सादर बैठाये ॥
परसनलाग जबहिं महिपाला । भइ अकाशबाणी तेहिकाला ॥
बिप्रबृन्द उठि उठि गृह जाहू । है बड़िहानि अन्न जनिखाहू ॥
भयउ रसोईं भूसुर मासू । सबद्विज उठे मानि बिश्वासू ॥
भूप विकल मति मोह भुलानी । भावीवश न आव मुखबानी ॥
दो० बोले बिप्रसकोप तब नहिं कछु कीन्ह बिचार ।
जाय निशाचर होहुनृप मूढ़ सहित परिवार ॥
छत्रि बन्धु तैं बिप्र बुलाई । घालै लिये सहित समुदाई ॥
ईश्वर राखा धर्म्म हमारा । जैहसि तैं समेत परिवारा ॥
संवत मध्य नाश तव होऊ । जलदाता न रहहिकुलकोऊ ॥
नृपसुनिशापविकलअतित्रासा । भइ बहोरि बरगिराअकासा ॥
बिप्रहु शाप बिचारि न दीन्हा । नहिंअपराध भूप कछुकीन्हा ॥
चकित बिप्रसब सुनिनभबानी । भूप गये जहँ भोजन खानी ॥
तहँन अशन नहिं बिप्रसुआरा । फिरेउ राउ मनशोचअपारा ॥
सब प्रसंग महिसुरन सुनाई । त्रसित परेउ अवनीअकुलाई ॥
दो० भूपति भावी मिटैनहिं यदपि न दूषण तोर ।

किये अन्यथा होइनहिं बिप्रशाप अतिघोर ॥
असकहि सब महिदेव सिधाये । समाचार पुर लोगन पाये ॥
शोचहिं दूषण दैवहिं देहीं । बिरचत हंस काक किय जेहीं ॥
उपरोहितहि भवन पहुँचाई । असुर तापसिहि खबरिजनाई ॥
तेहि खल जहँ तहँ पत्र पठाये । सजि सजिसेन भूपसबआये ॥
घेरिन्हि नगर निशान बजाई । विविधभांति नितहोतिलराई ॥
जूझे सकल सुभट करिकरणी । बन्धु समेत परे नृप धरणी ॥
सत्यकेतु कुल कोइ न बांचा । बिप्रशाप किमिहोइ असांचा ॥
रिपुहिं जीतिनृप नगर बसाई । निज निजपुरगे जययशपाई ॥
दो० भरद्वाज सुनु जाहिजब होत बिधाता बाम ।
धूरि मेरुसम जनक यम ताहि ब्यालसमदाम ॥
कालपाइ मुनि सुनु सोइ राजा । भयो निशाचरसहितसमाजा ॥
दशशिर ताहि बीसभुजदण्डा । रावण नाम बीर बरबण्डा ॥
भूप अनुज अरि मर्द्दन नामा । भयउसोकुम्भकरणबलधामा ॥
सचिव जो रहाधर्म्म रुचिजासू । भयउ विमात्र बन्धुलघुतासू ॥
नाम विभीषण जेहिजगजाना । विष्णु भक्त विज्ञान निधाना ॥
रहे जे सुत सेवक नृप केरे । भये निशाचर घोर घनेरे ॥
कामरूप खलजिनिस अनेका । कुटिल भयंकर विगतविवेका ॥
कृपा रहित हिंसक सब पापी । बरणि न जायँ विश्वपरितापी ॥
दो० उपजे यदपि पुलस्त्यकुल पावन अमल अनूप ।
तदपि महीसुर शापवश भये सकल अघरूप ॥
कीन्ह विविध तप तीनों भाई । परम उग्रसो वरणि न जाई ॥
गयउनिकट तप देखिविधाता । मांगहु बर प्रसन्न मैं ताता ॥
करिबिनतीपदगहि दशशीशा । बोलेहुबचन सुनहु जगदीशा ॥
हम काहूकर मरहिं न मारे । बानर मनुज जाति दुइबारे ॥
एवमस्तु तुम बड़ तप कीन्हा । मैं ब्रह्मामिलि तोहिंवरदीन्हा ॥
पुनिप्रभु कुम्भकरणपहँगयऊ । तेहिविलोकिमनविस्मयभयऊ ॥

जो यहखलनितकरिहि अहारा । होइहि सब उजारि संसारा ॥
शारद प्रेरि तासु मति फेरी । मांगेसि नींद मास षट केरी ॥
दो० गयउ बिभीषण पास तब कहा पुत्र बरमांग ।
तेहिमांगेउ भगवन्तपद कमल अमल अनुराग ॥
तिन्हहिं देइ बर ब्रह्म सिधाये । हर्षित ते अपने गृह आये ॥
मय तनुजा मन्दोदरि नामा । परम सुन्दरी नारि ललामा ॥
सोइमयदीन्ह रावणहि आनी । भई सो यातुधान पतिरानी ॥
हर्षित भयउ नारि भलि पाई । पुनि दोउ बंधु बिवाहेसिजाई ॥
गिरि त्रिकूट इकसिन्धुमँझारी । विधिनिर्म्मितदुर्गमअतिभारी ॥
सोइ मयदानव बहुरिसँवारा । कनकरचितमणिभवनअपारा ॥
भोगवतीजस अहिकुलबासा । अमरावति जसशक्रनिवासा ॥
तिनते अधिकरम्य अतिबंका । जगविख्यात नामतेहिलंका ॥
दो० खाईं सिन्धुगँभीरअति चारिउदिशि फिरि आव ।
कनककोटमणि खँचितदृढ़ बरणि न जाइबनाव ॥
हरिप्रेरित तेहि कल्पजोइ यातुधान पतिहोय ।
शूर प्रतापी अतुल बल दल समेत वश सोय ॥
रहे तहां निशिचर भट भारे । ते सब सुरन समर संहारे ॥
अब तहँ रहहिं शक्र के प्रेरे । रक्षक कोटि यक्ष पति केरे ॥
दशमुख कबहुंखबरि असिपाई । सेन साजि गढ़ घेरेसि जाई ॥
देखि बिकट भट बड़ि कटकाई । यक्ष जीव लै चले पराई ॥
फिरि सब नगरदशानन देखा । गयउशोचसुखभयउविशेखा ॥
सुन्दर सहज अगम अनुमानी । कीन्ह तहां रावण रजधानी ॥
जेहि जसयोग बांटिगृह दीन्हे । सुखी सकल रजनीचरकीन्हे ॥
एक बार कुबेर पहँ धावा । पुष्पक यान जीति लै आवा ॥
दो० कौतुकही कैलास पुनि लीन्हेसि जाइ उठाइ ।
मनहुं तौलि भटबाहुबल चलाअधिकसुखपाइ ॥
सुख सम्पति सुत सेनसहाई । जय प्रताप बलबुद्धि बड़ाई ॥

नित नूतन सब बाढ़त जाई । जिमिप्रतिलाभलोभअधिकाई ।
अतिबलकुम्भकर्णअसभ्राता । जेहिकहँनहिंप्रतिभटजगजाता ।
करि मद पान सोव षट मासा । जागतहोइ तिहुं पुर त्रासा ।
जो दिनप्रति अहार कर सोई । विश्व वेगि सब चौपट होई ।
समरधीर नहिं जाइ बखाना । तेहिसमअधिकनकोउबलवाना ।
बारिद नाद ज्येठ सुत तासू । भटमहँ प्रथमलीकजगजासू ।
जेहि न होइ रण सन्मुख कोई । सुर पुर नितहिं परावनहोई ।
दो० कुमुखअकम्पन कुलिश रद धूम्रकेतु अतिकाय ।
एक एक जगजीति सक ऐसे सुभट निकाय ॥
कामरूप जानहिं सब माया । सपनेहुं जिनके धर्म न दाया ।
दशमुख बैठि सभा इक बारा । देखिअमित आपनपरिवारा ।
सुत समूह जन परिजन नाती । गनै को पार निशाचरजाती ।
सेनविलोकि सहज अभिमानी । बोलाबचन क्रोध मदसानी ।
सुनहु सकल रजनीचर यूथा । हमरे बैरी बिबुध बरूथा ।
ते सन्मुख नहिंकरहिं लड़ाई । देखि सकल रिपु जाहिंपराई ।
तिनकर मरण एक विधि होई । कहौं बुझाइ सुनहुअब सोई ।
द्विजभोजन मखहोम शराधा । सबकर जाइ करहु तुमबाधा ।
दो० क्षुधाक्षीण बलहीनसुर सहजहिंमिलिहहिंआइ ।
तब मारिहौं कि छांड़िहौं भलीभांति अपनाइ ॥
मेघनाद कहँ पुनि हँकरावा । दीन्ह सीख बर बैर बढ़ावा ।
जे सुर समर धीर बलवाना । जिनके लरिबेको अभिमाना ।
तिनहिंजीतिरण आनिसिबांधी । उठिसुतपितुअनुशासनसाधी ।
इहिविधि सबहीं आज्ञा दीन्हा । आपन चलेउगदाकरलीन्हा ।
चलतदशानन डोलत अवनी । गर्जत गर्भ स्रवत सुररवनी ।
रावण आवत सुनेउ सकोहा । देवन तकेउ मेरु गिरिखोहा ।
दिगपालन के लोक सिधाये । सूने सकल दशानन पाये ।
पुनिपुनि सिंहनाद करिभारी । देइ देवतन गारि प्रचारी ।

रण मदमत्त फिरै जग धावा । प्रतिभटखोजतकतहुँनपावा ॥

क्षेपक ॥

नारद मिले कहेसि मुसुकाई । देवकहां मुनि देहु दिखाई ॥
सुनत अनख नारदहिं न भावा । श्वेतद्वीप तेहिं तुरत पठावा ॥
सागर उतरि पार सो गयऊ । नारि वृन्द तहँ देखतभयऊ ॥
तिन्हसनकहा पतिनपहँ जाहू । कहेउ कि आवनिशाचरनाहू ॥
तब मैं तिनहिं जीति संग्रामा । लैजैहौं तुमकहँ निजधामा ॥
सुनत बचन यकजरठ रिसानी । धाइचरणगहि गगनउड़ानी ॥
गई दूरि धरिधरि झकझोरा । डारेसि सिन्धुमध्यअतिजोरा ॥

दो० गयेउ पताल अचेत ह्वै मरै न बिप्र प्रसाद ।
सावधान उठिचलेउ पुनि हिये न हर्ष बिषाद ॥

जीतेसि नाग नगर सब झारी । गयो बहुरि बलिलोकसुरारी ॥
बामन रावन आवत जाना । किये देवऋषिसन अपमाना ॥
खेलतरहे नगर शिशु नाना । निजबलतिनहिंदीन्हभगवाना ॥
धाइ धरा तिन पुर लैआये । नगर नारि नर देखन धाये ॥
बीस बाहु दशकन्धर भाई । बिधियहगढ़निकहांकी आई ॥
राखिनबांधि खिझावहिं भारी । नाम न कहै सहै बरु मारी ॥
बामन दीख बहुत सकुचाना । तबछुड़ाइदिय कृपानिधाना ॥
चला तुरन्त निशाचर नाहा । लाजशंक कछुनहिं मनमाहा ॥

दो० अति निर्लज्ज दयारहित हिंसापर अतिप्रीति ।
रामबिमुख दशकन्ध शठ तापर चाहतजीति ॥
भरद्वाज सुनु जाहि जब होइ बिधाता बाम ।
मणिहु कांच होइ जायतब लहै न कौड़ी दाम ॥

जहँ कहुँ फिरत देव द्विज पावै । दण्डलेइ बहु त्रास दिखावै ॥
इहिआचरण फिरहि दिनराती । महामलिनमन खलउतपाती ॥
बहुरि तुरत पम्पापुर आवा । बालिनामकपिपतिजेहिंठावा ॥
अवलोकेसि इक सरवर शोभा । जिहिमनमहामुनिन्हकरलोभा ॥

तहां कपीश करै निज ध्याना । दशकन्धरहि देखिमुसुकाना ॥
तब रावण बोला करि क्रोधा । बकध्यानी कपिशठबिनबोधा ॥
नाम तोर सुनि आयउँ धाई । देकपि युद्ध छांड़ि कदराई ॥
दो० मोहिंजीतेबिनु समरसुनु वृथा ध्यान तवकीश ।
कटकटाइ कह रजनिचर रदन तीन से बीश ॥
बालिकहा हठि करिय न रारी । दशकन्धर घरजाहुबिचारी ॥
बल तुम्हार ऐसोइ है भाई । अजयचारिदिशिमेंसुनिपाई ॥
इहिबिधिबालिबहुत समुझावा । कवनिहुंभांतिबोधनहिंआवा ॥
तव सकोपिउठिझपटिकपीशा । दृढ़गहिकांखचापिदशशीशा ॥
बालिहि बिसरिगई सुधि तासू । इहिबिधिबिगतभये षटमासू ॥
एक दिवस रबिअंजुलि साजा । कांखतेनिसरिदशाननभाजा ॥
निलज अशंकआवपुनितहँवां । करभुजकेलिसहसभुजजहँवां ॥
दो० छोभेउजल भुजबीसबल बूड़नलगी समाज ।
सहसबाहुअतिक्रोधमनमोहिंसमआनकोआज ॥
जाइ दीख तहँ रावण ठाढ़ा । जासुबिपुलभुजबलजलबाढ़ा ॥
माया प्रबल महा बल भारी । लंकेश्वर कहँ धरिसिप्रचारी ॥
निरखितियनआश्चर्य्यबिशाला। बांधिराखिकछुदिनहयशाला ॥
लज्जित दुष्ट मष्टकरि रहई । रिसिउरमारि कष्ट बहुसहई ॥
सकल आइ देखहिं नर नारी । मारहिं लात हँसैं दै गारी ॥
नाम न कहै रहै सकुचाना । बहुबिधि पूंछे नृपतिसुजाना ॥
नृत्य करैं रम्भादिक नारी । दशहुं माथ दशदीपक बारी ॥
मुनिपुलस्त्य तब जाइछुड़ावा । पुनिनलशापआयतिहिंपावा ॥
दो० मारग जात दीख अति अनुपम सुन्दरिनारि ।
चन्दन पुष्प पत्रकर पूजन चलि त्रिपुरारि ॥
देखि उर्वशी मनं सकुचानी । तब रावण बोला मृदुबानी ॥
कोतुमनारि गमन कहँ कीन्हा । लज्जाबशतिहिउतरनदीन्हा ॥
मन मद मत्त बिचार न करेऊ । धनपति पुत्र बधूकर धरेऊ ॥

कीन्हि ताहि पुनि शंका आई । घाटिकर्म्म कीन्हीं पछिताई ॥
मन पछिताय शोच उरभयऊ । लंकेश्वर लङ्का कहँ गयऊ ॥
बिकल उर्बशी अलकहिं आई । नल कूबर सन बात जनाई ॥
दीन्हशाप तिन क्रोध अपारा । रावण बंश होहु क्षयकारा ॥
चली शाप लङ्का कहँ आई । दशकन्धर बैठा जिहिं ठाई ॥
आगे आइ ठाढ़ि भइ शापा । निरखिदशाननअतिभयकांपा॥

दो० शापहिं अङ्गीकारकरि मनमहँ कीन्ह बिचार ।
दण्ड ऋषिन्हसे लीन्हनहिं रोखेउ लङ्कभुवार ॥

दूतचारिपठयेऋषिआश्रम । निरखिबिसरिगेमुनिअधिश्रातम ॥
तिनसन तब पूछहिंमुनिहाला । कहहु कुशल लङ्केशभुआला ॥
कुशल तासुयह सुनहु मुनीशा । करतुमसन चाहतदशशीशा ॥
सुनिसो बचन महा भय पाई । कराहिंबिचार बिरतिबिसराई ॥
जेहि दरबार नीति नहिं भाई । खलमण्डली जुरीतहँ आई ॥
कुछबिन दिये नहीं गतिआछी । घटभरि रुधिरदिये तनपाछी ॥
दूतन सौंपि कहा मुनि ज्ञानी । भूपहिं कहेउ जाय यहबानी ॥

दो० घट उघरत क्षयहोइहहु सहित सकल परिवार ।
दूत तुरत घट ले गये लङ्कापति दरबार ॥

रावणघट लखि परम हुलासा । तबदूतनमुनि बचनप्रकासा ॥
सुनि मुनि शाप उपज उरदाहू । बोला घट ले उत्तर जाहू ॥
यत्न समेत धरणि धरि एहू । जानि न पाव बात यह केहू ॥
ले घट जनक नगर ते गये । गाड़त क्षेत्र मध्य तहँ भये ॥
जनक यज्ञ रचना तहँ ठयऊ । चामीकर हल करषत भयऊ ॥
प्रकट अवनिते ऋषय कुमारी । कन्या कहि लीन्हीं उरधारी ॥
नाम जानकी परम पुनीता । नारद आइ कहा पुनि सीता ॥
कहि सुकथा ऋषिराउसिधाये । बहुरिदूत लङ्कापुर आये ॥
चारि ठांव द्वारा लङ्केशा । देवन को बहु देत कलेशा ॥

इति ॥

रबि शशि पवन बरुणधनुधारी । अग्निकालयमसबअधिकारी ॥
किन्नर सिद्ध मनुज सुरनागा । हठि सबहीके पन्थहि लागा ॥
ब्रह्म सृष्टि जहँ लगि तनुधारी । दशमुख बशवर्त्ती नरनारी ॥
आयसुकरहिं सकल भयभीता । नवहिंआइनितचरणबिनीता ॥
दो० भुजबल बिश्वबश्य करि राखेसिकोउनस्वतंत्र ।
मण्डलीक महि रावण राज करै निजमंत्र ॥
देव यक्ष गन्धर्ब नर किन्नर नाग कुमारि ।
जीतिबरीं निजबाहुबल बहु सुन्दरिबर नारि ॥
इन्द्रजीत सन जो कछु कहेऊ । सो सबजनुपहिले करिरहेऊ ॥
प्रथमहिंजिनकहँ आयसुदीन्हा । तिनकहँचरितसुनहुजोकीन्हा ॥
देखत भीम रूप सब पापी । निशिचरनिकर देवपरितापी ॥
करहिं उपद्रव असुर निकाया । नाना रूप धरहिं करिमाया ॥
जेहिबिधि होय धर्म्म निर्मूला । सो सब करहिं वेदप्रतिकूला ॥
जेहिजेहि देशधेनु द्विजपावहिं । नगरग्रामपुरआगि लगावहिं ॥
शुभआचरण कतहुं नहिं होई । वेद बिप्र गुरु मान न कोई ॥
नहिं हरिभक्ति यज्ञ जपदाना । सपनेहु सुनिय न वेद पुराना ॥
छं० जपयोग बिरागा तपमखभागा श्रवणसुनैदशशीशा ।
आपुन उठि धावै रहै न पावै करिसब घालैखीशा ॥
असभ्रष्टअचारा भासंसारा धर्म्मसुनिय नहिं काना ।
तेहि बहुबिधित्रासै देशनिकासै जो कह वेदपुराना ॥
सो० बरणि न जाय अनीति घोरनिशाचर जोकरहिं ।
हिंसापर अति प्रीति तिनके पापहिं कवनमिति ॥
बाढ़े बहु खल चोर जुआरी । जे लम्पट पर धन पर नारी ॥
मानहिं मात पिता नहिं देवा । साधुन सों करवावहिं सेवा ॥
जिनके यह आचरण भवानी । ते जानहुनिशिचरसमप्रानी ॥
अतिशय देखि धर्म्मकी हानी । परम सभीत धरा अकुलानी ॥
गिरि सर सिन्धु भारनहिं मोही । जसमोहिंगरुअएकपरद्रोही ॥

सकल धर्म्म देखहिं बिपरीता । कहि न सकैं रावण भयभीता ॥
धेनु रूप धरि हृदय बिचारी । गई तहां जहँ सुर मुनिभारी ॥
निज सन्ताप सुनायसि रोई । काहूते कछु काज न होई ॥
छं० सुर मुनि गन्धर्बा मिलिकरसर्बा गयेबिरंचिके लोका ।
सँगगोतनुधारी भूमिबिचारी परमबिकलभयशोका ॥
ब्रह्मासब जाना मन अनुमाना मेरो कछु न बसाई ।
जाकरि तैं दासी सो अबिनासी हमरो तोरसहाई ॥
सो० धरणि धरहु मनधीर कहबिरंचि हरिपदसुमिरि ।
जानत जनकी पीर प्रभु भंजहिं दारुण बिपति ॥
बैठे सुर सब करहिं बिचारा । कहँ पाइय प्रभु करियपुकारा ॥
पुर बैकुण्ठ जान कह कोई । कोइकहपयनिधिमहँबससोई ॥
जाके हृदय भक्ति जस प्रीती । प्रभुतेहि प्रकटसदायहरीती ॥
तेहि समाज गिरजा मैं रह्यऊं । अवसरपायबचनइककह्यऊं ॥
हरि ब्यापक सर्वत्र समाना । प्रेम ते प्रकट होहिं मैं जाना ॥
देशकालदिशिबिदिशिहु माहीं । कहहुसो कहां जहांप्रभुनाहीं ॥
अगजगमयसबरहित बिरागी । पवनतेप्रकटहोहिंजिमिआगी॥
मोर बचन सबके मन माना । साधु साधु करि ब्रह्मबखाना ॥
दो० सुनिबिरंचि मन हर्षतन पुलक नयन बहनीर ।
अस्तुति करतसजोरिकर सावधान मतिधीर ॥
छं० जयजयसुरनायक जनसुखदायक प्रणतपालभगवन्ता ।
गो द्विजहितकारी जयअसुरारी सिंधुसुता प्रियकन्ता ॥
पालन सुरधरणी अद्भुत करणी मर्म न जानै कोई ।
जो सहज कृपाला दीनदयाला करहु अनुग्रहसोई ॥
जयजय अबिनासी सबघटबासी ब्यापक परमानन्दा ।
अबिगत गोतीता चरित पुनीता माया रहित मुकुन्दा ॥
जेहिलागिबिरागी अतिअनुरागी बिगतमोहमुनिबृन्दा ।
निशिबासरध्यावहिंहरिगुणगावहिंजयतिसच्चिदानन्दा॥

जेहि सृष्टिउपाई त्रिबिध बनाई संग सहाय न दूजा ।
सोकरहुअघारी चिन्तहमारी जानिय भक्ति न पूजा ॥
जोभवभयभंजन जनमनरञ्जन गञ्जनबिपतिबरूथा ।
मनबचक्रमबानी छांडिसयानी शरण सकलसुरयूथा ॥
शारदश्रुतिशेषा ऋषयअशेषा जाकहँ कोउ न जाना ।
जेहिदीन पियारे वेदपुकारे द्रवो सो श्री भगवाना ॥
भववारिधिमन्दर सबबिधिसुन्दर गुणमन्दिरसुखपुंजा ।
मुनिसिद्धसकलसुर परमभयातुर नमतनाथपदकंजा ॥

दो० जानिसभय सुर भूमिमुनि वचन समेत सनेह ।
गगनगिरा गम्भीरभइ हरणि शोक सन्देह ॥

जनि डरपहु मुनि सिद्ध सुरेशा । तुमहिंलागि धरिहौंनरभेशा ॥
अंशनि सहित मनुजअवतारा । लेहौं दिनकर बंश उदारा ॥
कश्यप अदिति महातपकीन्हा । तिनकहँ मैं पूरब बरदीन्हा ॥
ते दशरथ कौशल्या रूपा । कोशलपुरी प्रकट नर भूपा ॥
तिनके गृह अवतरिहौं जाई । रघुकुलतिलकसोचारिउभाई ॥
नारद बचन सत्य सब करिहौं । परमशक्ति समेत अवतरिहौं ॥
हरिहौं सकल भूमि गरुआई । निर्भय होहु देव समुदाई ॥
गगन ब्रह्म बाणी सुनि काना । तुरत फिरे सुर हृदयजुड़ाना ॥
तब ब्रह्मा धरणिहिं समुझावा । अभयभई भरोस जियआवा ॥

दो० निजलोकहि बिरंचि गये देवन इहै सिखाय ।
बानर तनुधरि धरणिमहँ हरिपद सेवहुजाय ॥

गये देव सब निजनिज धामा । भूमि सहित पाये बिश्रामा ॥
जो कछु आयसु ब्रह्मै दीन्हा । हर्षे देव बिलम्ब न कीन्हा ॥
बनचर देह धरी क्षिति माहीं । अतुलितबलप्रतापतिनपाहीं ॥
गिरितरुनख आयुध सबबीरा । हरिमारग चितवहिंरणधीरा ॥
गिरिकानन जहँ तहँ भरिपूरी । रहनिजनिजअनीकरचिरूरी ॥
यहसबरुचिर चरित मैं भाखा । अबसोसुनहुजोबीचहिं राखा ॥

अवधपुरी रघुकुल मणिराऊ । वेद विदित तेहिं दशरथनाऊ ॥
धर्म्म धुरन्धर गुणनिधि ज्ञानी । हृदय भक्तिमति शारँगपानी ॥
दो० कौशल्यादि नारि प्रिय सब आचरण पुनीत ।
पति अनुकूल प्रेम दृढ़ हरिपद कमल बिनीत ॥
एक बार भूपति मन माहीं । भै गलानि मोरे सुतनाहीं ॥
गुरुगृहगये तुरत महिपाला । चरणलागिकरिबिनयबिशाला ॥
निजदुखसुखनृपगुरुहिंसुनायो । कहिवशिष्ठबहुविधिसमुझायो ॥
धरहु धीर होइहैं सुत चारी । त्रिभुवन विदितभक्तभयहारी ॥
शृंगी ऋषिहिं बशिष्ठ बुलावा । पुत्र लागि शुभ यज्ञ करावा ॥
भक्तिसहितमुनि आहुतिदीन्हें । प्रकटे अगिनिचारुकरलीन्हें ॥
जो बशिष्ठ कछु हृदय बिचारा । सकलकाजभासिद्ध तुम्हारा ॥
यह हवि बांटि देहु नृप जाई । यथा योगि जेहि भागबनाई ॥
दो० तब अदृश्य पावकभये सकलसभहि समुझाय ।
परमानन्द मगन नृप हर्ष न हृदय समाय ॥
तबहिं राउ प्रिय नारि बुलाई । कौशल्यादि तहां चलिआई ॥
अर्द्ध भाग कौशल्यहि दीन्हा । उभय भाग आधेकर कीन्हा ॥
कैकेयी कहँ नृप ले दयऊ । रहेउसोउभयभागपुनिभयऊ ॥
कौशल्या केकयी हाथ धरि । दीन्हसुमित्रहिमनप्रसन्नकरि ॥
इहिबिधि गर्भसहित सबनारी । भयउहृदय हर्षित सुखभारी ॥
जा दिनते हरि गर्भहि आये । सकललोक सुख संपतिछाये ॥
मन्दिर महँ सब राजहिं रानी । शोभा शील तेजकी खानी ॥
सुखयुतकछुककालचलिगयऊ । जेहिप्रभुप्रकटसोअवसरभयऊ ॥
दो० योग लग्न ग्रहवारतिथि सकल भये अनुकूल ।
चर अरु अचर हर्ष युत राम जन्म सुखमूल ॥
नवमी तिथि मधुमास पुनीता । शुक्लपक्ष अभिजितहरिप्रीता ॥
मध्यदिवस अतिशीत न घामा । पावन काल लोक बिश्रामा ॥
शीतल मन्द सुरभि बहबाऊ । हर्षित सुर सन्तन मनचाऊ ॥

बनकुसुमितगिरिगणमणियारा । स्रवहिंसकलसरितामृतधारा ॥
सो अवसर बिरंचि जबजाना । चलेसकलसुरसाजि बिमाना ॥
गगन विमल संकुल सुरयूथा । गावहिं गुण गन्धर्व बरूथा ॥
बर्षहिं सुमनसुअंजलि साजी । गहगहगगन दुन्दुभी बाजी ॥
अस्तुतिकरहिं नागमुनिदेवा । बहुबिधिलावहिंनिजनिजसेवा ॥

दो० सुरसमूह बिनती करी पहुँचे निज निज धाम ।
जगनिवास प्रभु प्रकटे अखिललोक बिश्राम ॥

छं० भये प्रकट कृपाला दीनदयाला कौशल्या हितकारी ।
हर्षित महतारी मुनि मनहारी अद्भुतरूप निहारी ॥
लोचनअभिरामातनुघनश्यामा निजआयुधभुजचारी ।
भूषण बनमाला नयन बिशाला शोभा सिन्धुखरारी ॥
कहदुइंकरजोरी अस्तुतितोरी केहिबिधिकरौं अनन्ता ।
माया गुण ज्ञानातीत अमाना वेद पुराण भनन्ता ॥
करुणासुखसागरसबगुणआगरजेहिगावहिंश्रुतिसन्ता ।
सो ममहित लागी जन अनुरागी प्रकटभये श्रीकन्ता ॥
ब्रह्माण्डनिकाया निर्मितमाया रोमरोम प्रतिवेद कहै ।
ममउरसोबासीयहउपहासी सुनतधीरमति थिरनरहै ॥
उपजाजबज्ञानाप्रभुमुसकानाचरितबहुतबिधिकीन्हचहै ।
कहिकथासुनाई मातुबुझाई जेहिप्रकार सुतप्रेमलहै ॥
माता पुनिबोली सो मतिडोली तजहु तात यहरूपा ।
कीजैशिशुलीला अतिप्रियशीला यहसुखपरम अनूपा ॥
सुनि बचन सुजाना रोदनठाना है बालक सुरभूपा ।
यह चरितजेगावहिं हरिपदपावहिं तेनपरहिं भवकूपा ॥

दो० विप्र धेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतार ।
निज इच्छा निर्म्मित तनु माया गुण गोपार ॥

सुनि शिशुरुदनपरमप्रियबानी । सम्भ्रम चलि आईं सबरानी ॥
हर्षित जहँ तहँ धाईं दासी । आनँद मगन सकलपुरवासी ॥

दशरथ पुत्र जन्म सुनि काना । मानहुँ ब्रह्मानन्द समाना ॥
परम प्रेम मन पुलक शरीरा । चाहत उठनकरत मतिधीरा ॥
जाकर नाम सुनत शुभ होई । मोरे गृह आवा प्रभु सोई ॥
परमानन्द पूरि मन राजा । कहा बुलाइ बजावहु बाजा ॥
गुरु बशिष्ठ कहँगयउ हँकारा । आये द्विजनसहित नृपद्वारा ॥
अनुपम बालक देखि न जाई । रूपराशि गुण कहिन सिराई ॥
दो० तब नांदीमुखश्राद्धकरि जातकर्म्म सबकीन्ह ।
हाटक धेनु बसनमणि नृप बिप्रन कहँदीन्ह ॥
ध्वज पताक तोरण पुर छावा । कहिनजायजेहिभांतिबनावा ॥
सुमन बृष्टि आकाश ते होई । ब्रह्मानन्द मगन सब कोई ॥
बृन्द बृन्द सब चलीं लुगाईं । सहशृङ्गार किये उठि धाईं ॥
कनककलश मंगल भरिथारा । गावत पैठहिं भूप दुआरा ॥
करि आरती निछावरि करहीं । बारबार शिशु चरणन धरहीं ॥
मागध सूत बन्दिगुण गायक । पावन गुणगावहिं रघुनायक ॥
सर्बस दान दीन्ह सबकाहू । जेहि पावा राखा नहिं ताहू ॥
मृगमद चन्दन कुंकुम सींचा । मचीसकलबीथिनबिचकींचा ॥
दो० गृहगृह बाजबधाव शुभ प्रकट भये सुखकन्द ।
हर्षवन्त सब जहँ तहँ नगर नारि नर बृन्द ॥
केकयसुता सुमित्रा दोऊ । सुन्दरसुत जन्मत भइँ सोऊ ॥
यहसुखसम्पति समय समाजा । कहिन सकैं शारदअहिराजा ॥
अवधपुरी सोहै इहिभांती । प्रभुहिमिलन आई जनुराती ॥
देखिभानु जनु मन सकुचानी । तदपिबनी सन्ध्या अनुमानी ॥
अगर धूप जनु बहुआँधियारी । उड़ै अबीर मनहुँ अरुणारी ॥
मन्दिर मणिसमूह जनु तारा । नृपगृह कलशसोइन्दुउदारा ॥
भवन वेदध्वनि अतिमृदुबानी । जनुखगमुखरसमयसुखसानी ॥
कौतुक देखि पतंग भुलाना । एक मास तेहिजात न जाना ॥
दो० मासदिवस का दिवस भा मरम न जानैकोइ ।

॥ रथसमेत रबि थाकेउ निशा कवनबिधि होइ ॥

यह रहस्य काहू नहिं जाना। दिनमणिचलेकरतगुणगाना ॥
देखि महोत्सव सुरमुनि नागा। चले भवन बर्णत निजभागा ॥
औरो एक कहौं निज चोरी। सुनुगिरिजाअतिदृढ़मतितोरी ॥
काकभुशुण्डि संग हम दोऊ। मनुजरूप जानै नहिं कोऊ ॥
परमानन्द प्रेम सुख फूले। बीथिनफिरहिंमगनमनभूले ॥
यह सब चरित जान पै सोई। कृपा रामकी जापर होई ॥
तेहिअवसरजोजेहिबिधिआवा। दीन्ह भूप जोजेहिमनभावा ॥
गजरथ तुरग हेम गो हीरा। दीन्हे नृप नानाविधि चीरा ॥

दो० मन सन्तोष सबनके जहँ तहँ देहिं अशीश ।
सकल तनय चिरजीवहु तुलसिदासके ईश ॥

कछुक दिवस बीते यहि भांती। जातनजानहिं दिनअरुराती ॥
नामकरणकर अवसर जानी। भूप बोलि पठये मुनिज्ञानी ॥
करिपूजा भूपति अस भाखा। धरियनामजो मुनिगुनिराखा ॥
इनके नाम अनेक अनूपा। मैं नृपकहबस्वमतिअनुरूपा ॥
जो आनन्द सिन्धु सुखरासी। सीकर तें त्रैलोक्य सुपासी ॥
सो सुखधाम राम अस नामा। अखिललोकदायक विश्रामा ॥
बिश्व भरण पोषण करु जोई। ताकर नाम भरत असहोई ॥
जाके सुमिरण ते रिपु नाशा। नाम शत्रुहन बेद प्रकाशा ॥

दो० लक्षण धाम रामप्रिय सकलजगत आधार ।
गुरु बशिष्ठ तेहि राखेऊ लक्ष्मणनाम उदार ॥

धरे नाम गुरु हृदय बिचारी। वेदतत्त्व नृप तव सुत चारी ॥
मुनिजन धनसर्बस शिवप्राना। बालकेलिरस तेहिसुखमाना ॥
बारेहिते निजहित पतिजानी। लक्ष्मणरामचरण रतिमानी ॥
भरत शत्रुहन दोनों भाई। प्रभु सेवकजस प्रीति बढ़ाई ॥
श्यामगौर सुन्दर दोउ जोरी। निरखहिंछबिजननीतृणतोरी ॥
चारिउ शीलरूप गुण धामा। तदपिअधिकसुखसागररामा ॥

हृदय अनुग्रह इन्दु प्रकासा। सूचत किरण मनोहर हासा ॥
कबहुं उछंग कबहुं बरपालन। मातुदुलारहिंकहिप्रियलालन ॥
दो० व्यापक ब्रह्म निरंजन निर्गुण बिगत बिनोद।
सो अज प्रेम भक्तिबश कौशल्या की गोद ॥
काम कोटि छबिश्याम शरीरा। नील कंज बारिद गम्भीरा ॥
अरुण चरण पंकज नखजोती। कमल दलन बैठे जनुमोती ॥
रेख कुलिश ध्वज अंकुशसोहैं। नूपुरध्वनिसुनि मुनिमनमोहैं ॥
कटि किङ्किणी उदर त्रय रेखा। नाभिगँभीर जानि जेहिदेखा ॥
भुज बिशाल भूषणयुत भूरी। हियहरिनखशोभा अतिरूरी ॥
उर मणिहार पदिककी शोभा। बिप्र चरण देखत मनलोभा ॥
कम्बु कंठ अति चिबुक सुहाई। आननअमितमदनछबिछाई ॥
दुइ दुइ दशनअधर अरुणारे। नासा तिलक को बरणै पारे ॥
सुन्दर श्रवण सुचारुकपोला। अतिप्रियमधुरसुतोतरिबोला ॥
नीलकमलदोउ नयनबिशाला। बिकटभृकुटिलटकनबरभाला ॥
चिक्कनकच कुञ्चित गभुवारे। बहुप्रकार रचिमातु सवाँरे ॥
पीत झँगुलिया तनु पहिराये। जानुपाणिबिचरत महिभाये ॥
रूपसकहिंनहिंकहि श्रुतिशेखा। सो जानै सपनेहुँ जिनदेखा ॥
दो० सुख सन्दोह मोहपर ज्ञान गिरा गोतीत।
दम्पति परमप्रेमबश करिशिशुचरित पुनीत ॥
इहिबिधिरामजगत पितुमाता। कोशलपुरबासिन सुखदाता ॥
जिन रघुनाथ चरण रतिमानी। तिनकीयहगतिप्रकटभवानी ॥
रघुपति बिमुख यतन करकोरी। कवन सकै भवबन्धन छोरी ॥
जीव चराचर बश कै राखे। सो माया प्रभुसों भय भाखे ॥
भृकुटि बिलास नचावै ताही। असप्रभुछाँड़िभजियकहुकाही ॥
मनक्रम बचन छाँड़ि चतुराई। भजतहि कृपा करैं रघुराई ॥
इहिबिधिशिशुबिनोदप्रभुकीन्हा। सकलनगरबासिनसुखदीन्हा ॥
कै उछंग कबहुं हलरावैं। कबहुं पालने घालि झुलावैं ॥

दो० प्रेम मगन कौशल्या निशिदिन जात न जान ।
सुत सनेह बश माता बाल चरित कर गान ॥

एक बार जननी अन्हवाये । करि शृँगार पलना पौढ़ाये ॥
निज कुल इष्ट देव भगवाना । पूजा हेतु कीन्ह पकवाना ॥
करि पूजा नैवेद्य चढ़ावा । आपु गई जहँ पाक बनावा ॥
बहुरि मातु तहँवाँ चलिआई । भोजन करत दीख रघुराई ॥
गइजननी शिशुपहँ भयभीता । देखा बाल तहाँ पुनि सूता ॥
बहुरि आइ देखा सुतसोई । हृदय कम्पमन धीर न होई ॥
इहाँ उहाँ दुइ बालक देखा । मतिभ्रममोरिकिआनबिशेखा ॥
देखिराम जननी अकुलानी । प्रभुहँसिदीन मधुरमुसुकानी ॥

दो० दिखरावामातहिं निज अद्भुत रूप अखण्ड ।
रोम रोम प्रतिराजाहिं कोटि कोटि ब्रह्मण्ड ॥

अगणितरबिशशिशिवचतुरानन।बहुगिरिसरितसिन्धुमहिकानन॥
काल कर्म गुण दोष स्वभाऊ । सो देखो जो सुना न काऊ ॥
देखी माया सब बिधि गाढ़ी । अति सभीत जोरे कर ठाढ़ी ॥
देखा जीव नचावै जाही । देखी भक्ति जो छोरै ताही ॥
तनुपुलकित मुखबचननआवा । नयनमूंदि चरणन शिरनावा ॥
बिस्मयवन्त देखि महतारी । भये बहुरि शिशुरूप खरारी ॥
अस्तुतिकरि न जायभयमाना । जगतपिता मैं सुतकरिजाना ॥
हरिजननिहिं बहुबिधिसमुझाई । यहजनिकतहुंकहासिसुनुमाई ॥

दो० बार बार कौशल्या विनय करै कर जोरि ।
अब जनि कबहूं ब्यापै प्रभुमोहिं माया तोरि ॥

बालचरितहरि बहुबिधिकीन्हा । अतिअनन्ददासनकहँदीन्हा ॥
कछुक काल बीते सब भाई । बड़े भये परिजन सुखदाई ॥
चूड़ाकरण कीन्ह गुरु आई । पुनि दक्षिणा द्विजन बहुपाई ॥
परम मनोहर चरित अपारा । करत फिरतचारिउसुकुमारा ॥
मन क्रम बचन अगोचर जोई । दशरथअजिरबिचरप्रभुसोई ॥

भोजन करत बुलावत राजा । नहिंआवहिंतजिबालसमाजा ॥
कौशल्या जब बोलन जाई । ठुमुकिठुमुकिप्रभुचलहिंपराई ॥
निगमनेति शिवअन्त न पावा । ताहि धरै जननी हठिधावा ॥
धूसर धूर भरे तनु आये । भूपति बिहँसि गोद बैठाये ॥
दो० भोजन करत चपलचित इत उत अवसर पाइ ।
भाजिचले किलकात मुख दधिओदन लपटाइ ॥
बाल चरित अतिसरल सुहाये । शारदशेष शम्भु श्रुतिगाये ॥
जिनकर मन इनसन नहिंराता । तेजग बंचित किये बिधाता ॥
भये कुमार जबहिं सब भ्राता । दीन्ह जनेऊ गुरु पितु माता ॥
गुरु गृह गये पढ़न रघुराई । अल्प काल विद्या सब पाई ॥
जाकी सहज श्वास श्रुतिचारी । सो हरि पढ़ यह कौतुकभारी ॥
विद्याविनय निपुण गुणशीला । खेलहिं खेलसकल नृपलीला ॥
करतलबाण धनुष अति सोहा । देखत रूप चराचर मोहा ॥
जिनबीथिन बिहरहिं सबभाई । थकितहोहिं सबलोगलुगाई ॥
दो० कोशल पुर बासी नर नारि बृन्द अरु बाल ।
प्राणहुंते प्रिय लागहीं सब कहँ रामकृपाल ॥
बन्धु सखा सब लेहिं बुलाई । बनमृगया नितखेलहिं जाई ॥
पावनमृग मारहिं जियजानी । दिनप्रतिनृपहिंदेखावहिंआनी॥
जे मृग राम बाण के मारे । तेतनु तजि सुरलोक सिधारे ॥
अनुजसखा सँग भोजनकरहीं । मातु पिता आज्ञा अनुसरहीं ॥
जेहिबिधिसुखी होहिं पुरलोगा । करहिं कृपानिधिसोइ संयोगा ॥
वेद पुराण सुनहिं मन लाई । आपुकहहिं अनुजहिसमुझाई ॥
प्रातकाल उठिकै रघुनाथा । मातु पितागुरु नावहिं माथा ॥
आयसु मांगि करहिं पुरकाजा । देखि चरित हर्षहिं मनराजा ॥
दो० ब्यापक अकल अनीहअज निर्गुण नाम न रूप ।
भक्तहेतु नाना विधिहि करत चरित्र अनूप ॥
यह सब चरित कहा मैं गाई । आगिल कथासुनहु मनलाई ॥

विश्वामित्र महामुनि ज्ञानी । बसहिंबिपिनशुभआश्रमजानी ॥
तहँ जप यज्ञ योगमुनि करहीं । अतिमारीच सुबाहुहिडरहीं ॥
देखत यज्ञ निशाचर धावहिं । करहिंउपद्रवमुनिदुखपावहिं ॥
गाधितनयमन चिन्ता व्यापी । हरिबिनमरहिंननिशिचरपापी ॥
तब मुनिवर मनकीन्ह बिचारा । प्रभुअवतरेउहरणमहिभारा ॥
इहिमिसु देखौं प्रभुपद जाई । करि बिनतीआनौं दोउभाई ॥
ज्ञानविराग सकलगुण अयना । सोप्रभु मैं देखबभरिनयना ॥
दो० बहुबिधि करत मनोरथ जात न लागीबार ।
करि मज्जन सरयू जल गये भूप दरबार ॥
मुनि आगमन सुना जबराजा । मिलनगयउ लैबिप्र समाजा ॥
करिदण्डवत मुनिहिंसनमानी । निज आसन बैठारे आनी ॥
चरण पखारि कीन्ह अतिपूजा । मोसम धन्यआन नहिंदूजा ॥
बिबिधभांति भोजन करवावा । मुनिवर हृदयहर्ष अतिछावा ॥
पुनि चरणन मेले सुत चारी । रामदेखिमुनि बिरतिबिसारी ॥
भये मगन देखत मुख शोभा । जनुचकोर पूरण शशिलोभा ॥
तब मन हर्ष बचन कहराऊ । मुनिअसकृपा कीन्हनहिंकाऊ ॥
केहि कारण आगमन तुम्हारा । कहहुसो करत न लाउबबारा ॥
असुर समूह सतावहिं मोहीं । मैं याचन आयउँ नृप तोहीं ॥
अनुज समेत देहु रघुनाथा । निशिचरबध मैं होब सनाथा ॥
दो० देहु भूप मन हर्षित तजहु मोह अज्ञान ।
धर्म्म सुयशनृपतुमकहँ इनकहँ अतिकल्यान ॥
सुनिराजा अति अप्रिय बानी । हृदयकम्पमुखद्युतिकुँभिलानी ॥
चौथे पन पायउँ सुतचारी । बिप्रबचननहिं कहेउ बिचारी ॥
माँगहु भूमि धेनु धन कोषा । सर्वस देउँ आजु सह रोषा ॥
देह प्राण ते प्रिय कछु नाहीं । सोउमुनिदेउँनिमिषइकमाहीं ॥
सबसुत प्रियमोहिंप्राणकिनाईं । राम देत नहिं बनै गोसाईं ॥
कहँ निशिचर अतिघोरकठोरा । कहँसुन्दर सुत परमकिशोरा ॥

सुनि नृप गिरा प्रेमरस सानी । हृदय हर्ष माना मुनि ज्ञानी ॥
तब बशिष्ठ बहुबिधि समुझावा । नृप सन्देह नाश कहँ पावा ॥
अति आदर दोउतनय बुलाये । हृदयलाय बहुभांति सिखाये ॥
मेरे प्राणनाथ सुत दोऊ । तुममुनिपिता आननहिंकोऊ ॥
दो० सौंपे भूपति ऋषिहिसुत बहुबिधि देइ अशीश ।
जननी भवन गये प्रभु चले नाइ पद शीश ॥
सो० पुरुषसिंह दोउ बीर हर्षिचले मुनि भय हरण ।
कृपासिन्धुमतिधीर अखिलबिश्वकारण करण ॥
अरुणनयन बरबाहु बिशाला । नीलजलजतनुश्यामतमाला ॥
कटि पटपीत कसे बरभाथा । रुचिरचाप शायक दुहुंहाथा ॥
श्याम गौर सुन्दर दोउ भाई । बिश्वामित्र महानिधि पाई ॥
प्रभु ब्रह्मण्यदेव मैं जाना । मोहिंहितपितातजे भगवाना ॥
चले जात मुनि दीन्ह दिखाई । सुनि ताड़का क्रोधकरि धाई ॥
एकहि बाण प्राण हरि लीन्हा । दीनजानितेहिनिजपददीन्हा ॥
तबऋषिनिजनाथहिंजियचीन्हा । बिद्यानिधिकहँबिद्यादीन्हा ॥
ताते लागि न क्षुधा पियासा । अतुलितबलतनुतेजप्रकासा ॥
दो० आयुधसकल समर्पिकै प्रभुनिज आश्रमआनि ।
कन्द मूल फल भोजन दिये भक्त हित जानि ॥
प्रात कहा मुनि सन रघुराई । निर्भय यज्ञ करहु तुमजाई ॥
होम करन लागे मुनि झारी । आपु रहे मखकी रखवारी ॥
सुनि मारीच निशाचरकोही । लै सहाय आवा मुनिद्रोही ॥
बिनु फरबाण रामतेहि मारा । शत योजन गा सागर पारा ॥
पावक शर सुबाहु पुनि मारा । अनुजनिशाचरकटकसँहारा ॥
मारि असुर द्विज निर्भयकारी । अस्तुतिकरहिंदेवमुनिझारी ॥
तहँ पुनि कछुकदिवस रघुराया । रहे कीन बिप्रन पर दाया ॥
भक्ति हेतु बहु कथा पुराना । कहैं बिप्र यद्यपि प्रभु जाना ॥
तब मुनि सादर कथा बुझाई । चरित एक देखिय प्रभुजाई ॥

धनुष यज्ञ सुनि रघुकुलनाथा । हर्षिचले मुनिबर के साथा ॥
आश्रम एक दीख मग माहीं । खग मृग जीवजन्तुतहँ नाहीं ॥
पूंछा मुनिहिं शिला प्रभु देखी । सकलकथाऋषिकहीबिशेखी ॥
दो० गौतम नारी शापबश उपल देह धरि धीर ।
चरण कमल रज चाहती कृपा करहु रघुबीर ॥
छं० परसत पदपावनशोकनशावन प्रकटभई तपपुंजसही ।
देखतरघुनायकजनसुखदायकसन्मुखहोइकरजोरिरही ॥
अतिप्रेमअधीरापुलकशरीरा मुखनहिंआवै बचनकही ।
अतिशयबड़भागीचरणनलागीयुगलनयनजलधारबही ॥
धीरजमनकीन्हाप्रभुकहँचीन्हा रघुपतिकृपा भक्तिपाई ।
अतिनिर्मलबानी अस्तुतिठानी ज्ञानगम्यजयरघुराई ॥
मैंनारिअपावनि प्रभुजगपावन रावणरिपुजनसुखदाई ।
राजीवविलोचनभवभयमोचनपाहिपाहिशरणहिंआई ॥
मुनिशापजोदीन्हाअतिभलकीन्हापरमअनुग्रहमैंमाना ।
देखेउँभरिलोचनहरिभवमोचन यहैलाभ शंकरजाना ॥
बिनतीप्रभुमोरीमैं मतिभोरी नाथ न बरमांगौं आना ।
पदकमलपरागारसअनुरागा मममनमधुप करैपाना ॥
जेहिपदसुरसरितापरमपुनीताप्रकटभई शिवशीशधरी ।
सोईपदपंकजजेहिपूजतअज ममशिरधरेउकृपालुहरी ॥
इहिभांतिसिधारी गौतमनारी बारबार हरिचरणपरी ।
जो अतिमनभावासोबरपावागइपतिलोक अनन्दभरी ॥
दो० अस प्रभु दीनबन्धु हरि कारण रहित कृपाल ।
तुलसिदास शठताहिभज छांड़िकपट जंजाल ॥
चले राम लछमण मुनि संगा । गये जहां जगपावनि गंगा ॥
अनुजसहितप्रभुकीन्ह प्रणामा । बहुप्रकार सुखपायउ रामा ॥
क्षेपक ॥
पुनि सुरसरि उतपति रघुराई । कौशिक सन पूंछी शिरनाई ॥

कहमुनिप्रभुतवकुल इकराजा। नामसगर तिहुंलोक बिराजा॥
तेहिके युग भामिनि सुकुमारी। प्रथमकेशिनी सुमतिपियारी॥
सबप्रकार सम्पति सुरभ्राजा। सुतबिहीन मनबिस्मय राजा॥
एकसमय भामिनि दोउसाथा। गये बन तनय हेतु रघुनाथा॥
सघन सफलतरु सुन्दरनाना। तहँ भृगुमुनितपतेज निधाना॥

दो० सहित नारिनृप मुदितमन रहेवर्ष शतएक।
कीन्हे तपबल देखिभृगु अस्तुति कीन्ह अनेक॥

कहिनिजदुखप्रणामनृप कीन्हा। दै अशीशतब मुनिबरदीन्हा॥
नृपरानी सन मुनि असभाषा। लेहुस्ववर जो जेहिअभिलाषा॥
सुनि मुनिबचनशीशातिननावा। देहु नाथ जो अति मनभावा॥
एकहि कह्यो एक सुत होना। दूसरि साठिसहस गुणलोना॥
हरषित भयो सुभग बर पाई। पाणिजोरि चरणन शिरनाई॥
सहितभामिनी अवधहिआये। हर्षसहित कछु दिवस गँवाये॥
जानिसुघरि सुन्दरि सुखदाई। नामकेशि असमंजस जाई॥
सुमतिप्रसव इक तुम्बरि सोई। भये सुतप्रकट कहे मुनिजोई॥
निरखे सुत हरषित सब होई। मंगलचार किये सबकोई॥
हर्ष सहित दिये दान नरेशू। पूजिबिप्र गुरु गौरि गणेशू॥
घृतघटसुंदर विविध मँगाये। तेसब सुत नृप तिनमहँ नाये॥

दो० यहिविधि भयउ सकल सुत पूजे सबमन काम।
जाइदिवसनिशिहरषबश सुनहुरामघनश्याम॥

पुरजन सब घर घरनि नरेशू। अति आनँदतनुमिटाअँदेशू॥
बाल केलि कर भये कुमारा। लीला करैं अगम संसारा॥
होयँ सो काज सकल मनचीते। यहिसुखबसतबहुत दिनबीते॥
सरयू नदी अवध जो अहई। बिमलसलिल उत्तरतटबहई॥
प्रजा लोक के बालक नाना। नित उठितहां करैं अस्नाना॥
असमंजस तहँ तरणी आनी। तिनहिं चढ़ाइ बोरिनिजपानी॥
भये प्रजा सब परम दुखारी। बालकबधसुनि सुनहु खरारी॥

सकल गये जहँ बैठ नृपाला । बोले बचन नाइ पद भाला ॥
तुम नृपचहहु प्रजाप्रतिपाला । सुततुम्हार भा सबकरकाला ॥
तजब देश सब सुनहु नरेशू । बिना तजे नहिं मिटै कलेशू ॥
दो० तवसुतकीन्हे पापबहु मारे बालक बृन्द ।
तुमकहँ प्राणसमान यह सकलप्रजनकहँमन्द ॥
प्रजागिरा सुनि धीरज दीन्हा । सुतहि देशते बाहरकीन्हा ॥
तासु तनयजगविदित प्रभाऊ । गुणनिधिअंशुमानतेहिनाऊ ॥
बसत हृदय नृपके सो कैसे । मुनिमन मीनसलिलरहजैसे ॥
गयेप्रजा सब निजनिजधामा । भयेबिलोकिमनगुणविश्रामा ॥
बहुरिनृपति मन कीन्हबिचारा । आइभयो पन चौथ हमारा ॥
हित मंत्री गुरुसुतहु बुलाये । हिमगिरिबिन्ध्यमध्यतबआये ॥
रुचिर वेदिका एक बनाई । देखत बनै बरणिनहिं जाई ॥
मखअरम्भ छांड़े तब तुरगा । वेगवन्त जिमि देखियउरगा ॥
दो० सुरपति सुनभयदारुणहिं मनमहँकरि अनुमान ।
आनतुरग तब लीन्हेउ मर्म्म न काहू जान ॥
राखेहु आनि कपिलमुनि पाहीं । कोउनजान काहुहिगमनाहीं ॥
जुगवत रहे जे सुभट सयाने । ले तुरंग रहे किनहु न जाने ॥
तिन सब आयकही नृप पाहीं । महाराज हम कहत डराहीं ॥
लीन्ह तुरग कोइ जान न कोई । कहा करिय जो आयसु होई ॥
सुनत बचन नृपबिस्मय पाये । सकलसुतनकहँ तुरतबुलाये ॥
जाहु तुरग तुम हेरहु जाई । सकल चले चरणनशिरनाई ॥
सुरपतिसम देखिय सबबीरा । सकल धनुर्द्धर अतिरणधीरा ॥
तिनहिं चलत धरणी अकुलाई । बलिपशु जीव भये सबत्राई ॥
सुमन बाटिका उपबन बागा । सरित कूप बापिका तड़ागा ॥
नगर गांव मुनीश थल नाना । गिरिकन्दर कानन अस्थाना ॥
दो० इहि विधि खोजेहु तुरग तिन आये भूपतिपाहिं ।
बरणन माथहि नाइकहि खोज अश्वकीनाहिं ॥

खोदहु महि सुत करहि पठाये। चले सकल पूरब दिशि आये॥
तिनकेकरजिमिकुलिशसमाना। योजनभरि खोदहिं बलवाना॥
देखि अतुल बल देव डराने। नरनाहन बिरंचि सनमाने॥
शोधत महि पताल सब आये। दिग्गज देखि एक शिरनाये॥
तिन पूंछा सब कथा सुनाये। बहुरिसकलदक्षिणदिशिआये॥
इहिबिधि पुनि दूसरगजदेखा। अतिउतंगगजबिमलबिशेखा॥
ताहु बहु प्रणाम तिन कीन्हे। चलेसुनतपश्चिमाचित दीन्हे॥
तीसर देखि प्रदक्षिण कीन्ही। पुनिउत्तरदिशिशोधहिलीन्ही॥
दिग्गजश्वेत निरखि सुखपाये। सकलकपिलमुनिपहँपुनिआये॥
खोजत मही पार नहिं पावा। शोभाचहुँदिशिजलधिसुहावा॥

दो० देखिनि आइ तुरंग तब बांधा मुनिवर पास।
बोले बचन सकोपकरि भाचहु सबकर नास॥

खोदी महि हम चारिउ कोधा। रेरेदुष्ट बहुत तोहिं शोधा॥
कोउ कह चोर दीख बहु होई। यहिसमछली और नहिं कोई॥
पर धन लै पताल पुनि आयो। तस्कर मुनिवर बेष बनायो॥
कोउ कहै यह मुनिवर नाहीं। समुझिदेखि लक्षणमनमाहीं॥
कोउकह बकतप कीन्ह अपारा। अहो दुष्ट लै तुरग हमारा॥
सुनतवचनमुनि चितवाजबहीं। भये भस्म सबक्षणमें तबहीं॥
उमावचन जेहिसमुझिनबोला। सुधाहोइ बिष तिक्तमओला॥
पावक जानिधरहिं करप्रानी। जरहिंकाहिनहिंअतिअभिमानी॥
जानि गरल जे संग्रह करहीं। सुनहु रामते काहे न मरहीं॥
क्रोध करै बिन किये बिचारा। भयेसकल तेहिते जरिछारा॥
इहाँ नृपति अँशुमान बुलाये। नहिंआये सब तिनहिं पठाये॥

दो० दीन्हीनृपति अशीश तब अतिहित बारहिंबार।
बेगि फिरहु लै तुरग सुत मेरे प्राण अधार॥

चले नाइ पद शीश कुमारा। विष्णुभक्तहितकुलउजियारा॥
जहँतहँ देखि मुनिन के धामा। पूंछिखबरि करिदण्डप्रणामा॥

पन्नग अहि सन पाइ अशीशा । चहुंदिग्गजकहँ नायउशीशा ॥
यहिविधिशोधतमगमहँ जाता । मिलेगरुड़ सुमनीकरभ्राता ॥
चरणपरत तब आशिषदयऊ । जरेसकलजेहिबिधिसोकह्यऊ ॥
सुनतहिबचन शोचभयोभारी । लिये खगेश दिखायलवारी ॥
अंशुमान तहँ मज्जन कीन्हा । क्रम२सबहिजलांजलिदीन्हा ॥
बहुरिगरुड़ बोले सुनु त्राता । मैं तोहिंकहौं करियइकबाता ॥

सो० करुसुत सोइ उपाय गंगा आवहिं अवनिमहँ ।
दर्शन ते अघजाय मज्जन कीन्हे परमसुख ॥

षष्टि सहस तरिहैं येहीबिधि । गंगापाय परम पावननिधि ॥
सुनि असबचनहृदय मनभाये । सहितगरुड़मुनिवरपहँआये ॥
तबखगेश मुनि चरणननायउ । पूरबकथासकल मुनिगायउ ॥
आयसु देइ तुरगमुनि दीन्हा । हर्षिहृदयनिजअश्वाहिचीन्हा ॥
नगर समीप गरुड़ पहुंचाई । गये भवन निज तबरघुराई ॥
इहाँ तुरग लै नृप शिरनाई । षष्टिसहस मुनि कथा सुनाई ॥
विस्मय हर्ष विवश नृपभयऊ । कीन्हा यज्ञ दान बहु दयऊ ॥
बहुविधिनृपति राजपुनिकीन्हा । प्रजालोगकहँअतिसुखदीन्हा ॥

दो० अंशुमान हित राजदै निज मन हरिपद लाग ।
गयउसगरतपकाज बन हृदयअधिक अनुराग ॥

तासुतनय दिलीप नृप भयऊ । बनतपहेतु उतरादिशिगयऊ ॥
वहां अगम तपकीन्ह नृपाला । भयेकालबश गये कछुकाला ॥
कहहु कवन दिलीप प्रभुताई । सेवै सकल नृपति जेहिआई ॥
जुगवतजेहिनितसुरपति रहहीं । महिमातासुकबिकेहि विधिकहहीं ॥
भागीरथ अस सुतभयो जासू । पितुसमप्रीतिअधिकउरतासू ॥
तिनहिं बोलि नृप दीन्हेउराजू । आप चले उठि तपके काजू ॥
मनमहँ करत पन्थ अनुमाना । सुरसरि आवतजउँनतुप्राना ॥
निजमनु तनुदीन्हेउनिमिदेऊ । फिरिनिजनगरकनाम न लेऊ ॥

सो० यहिबिधिकरत विचार नृपकीन्हे तप प्रबलतब ।

बीते कछु इक काल देहतजी कोउ प्रकट नाहिं ॥
जेहिसुरसरि लगितजितनुभूपा। सोतजिमूढ़ पियहिंजलकूपा ॥
इहां भगीरथ अस मनभयऊ। पितुनआवबहुदिनचलिगयऊ॥
काकुत्स्थ नाम तनययक रहेऊ। दीन्हा राजनीति बहुकहेऊ ॥
कहि तब पूर्व कथा सुत पाहीं। दीन्ह अशीश चलेनरनाहीं ॥
निकसतनगर शकुनभलपाये। अतिहिनिबिड़बनजहँनृपआये॥
देखि भगीरथ बन सुख पावा। सुरसरिहिततपकहँमनलावा ॥
एक चरण दोउ भुजा उठाये। रबि सन्मुखचितवहिंमनलाये॥
बर्ष सहस बीते यहि भाँती। जात न जाने दिनअरुराती ॥
देखि उग्रतप अज चलिआये। बोले बचन नृपहिं मनभाये ॥
चहहि नृपति जो ले बरदाना। बोलेनृपकरि अजहिंप्रमाना ॥
जो माँगौं सो जानत अहहू। मोसनमाँगनप्रभुकिमिकहहू ॥
दो० तदपि कहौं प्रभु देहुबर सब सन्तन कहँ बृद्धि।
दूसर माँगहुं जोरिकर गङ्गा आवहिं निद्धि ॥
एवमस्तुकहि पुनि बिधिभवही। सुरसरिदेहुं राखिको सकही ॥
बूड़जाहिं पुनितुरत रसातल। फिरहिंननृपतिबहुरिसुनुभूतल ॥
तेहिते कहौं एक तोहिं पाहीं। अतिदयालु शंकर मनमाहीं ॥
सोइशंकर रखि सुरसरि आजू। उनहिं जपे तब होइहै काजू ॥
असकहि बिधिअन्तरहित भये। बहुरि भगीरथ शिवपहँगये ॥
बिबुध बर्ष अंगुष्ठ अधारा। बारबार शिव नाम उचारा ॥
शिव दयालु प्रकटे तब आई। हाथजोरिनृप बिनय सुनाई ॥
मैं राखब सुरसरि कहँ ईशा। बहुरिरमापति ध्यानकरीशा ॥
दो० उहां देवसरि शिव बचन सुनिमन कीन्हबिचार।
जाउँ रसातल शिव सहित जात न लावों बार ॥
अन्तरयामी शिवहिं उपाई। निजशिरजटासोअगमबनाई ॥
इहां भगीरथ अस्तुतिकीन्हीं। सुनिमृदुगिराछाँड़िबिधिदीन्हीं ॥
छूटे शोर भयउ जग भारी। चकितदेवअहिदिग्गजचारी ॥

सुरसरि पुनि हरजटा समानी । बर्ष एक तहँ रही भवानी ॥
कौतुक देखि सकल सुर हर्षे । कहिजय जयतिसुमनबहुबर्षे ॥
बहुरिभगीरथ सुमिरण कीन्हा । डारिजटा शिव बुन्दकदीन्हा ॥
तेहिते भई तीनि पुनि धारा । एक गई नभ एक पतारा ॥
गइनभसोइकिभईअघनाशिनि । देवन धरा नाम मन्दाकिनि ॥

दो० दूसरिगई पतालमें नाम प्रभावति हरण दुख ।
तीसरिभइ गङ्गासोई सब सन्तनको करणसुख ॥
जलप्रबाहनिकसतनृपति उरअतिभयोअनन्द ।
जैसे उमड़त सिन्धुतब पूर्ण कला लखिचन्द ॥

आयभगीरथ पुनि शिरनाये । बोली सुरसरि बचन सुहाये ॥
बेगवन्त नृप रथले आनू । तुरततुरगशुभगतिजिमिभानू ॥
तेहिरथचढ़ि नृपचलुममआगे । चलिहौं मैं तव पाछे लागे ॥
सुनिनृप दिब्य तुरगरथ आना । चलेहृदय सुमिरतभगवाना ॥
चली अग्रकरि नृपहिं सुरसरी । देवनमुदित सुमन झरिकरी ॥
चलततेज कछु बरणि न जाई । टूटहिं गिरितरु शैलसुहाई ॥
करैं कुलाहल बिधि बहु भाँती । कमठनक्रझषब्यालसोमाती ॥
मज्जन करहिं देव तहँ आई । सुनिगतिसिद्ध रहे सब छाई ॥

सो० तर्प्पणकर मनलाय हर्ष हृदय नहिं जातकहि ।
दर्शन से अघ जाय तरैं सकल मुनिजन कहैं ॥
मज्जनकरहरषाय सुरअजादिसनकादि ऋषि ।
पान करत अघजाय असमन सबकोऊ कहैं ॥

करैं जे मज्जन जपमनलाई । तिनकीमहिमा कहिनसिराई ॥
रथपर जात सोह नृप कैसे । तेजवन्त रबि देखिय जैसे ॥
लांघत शैल सुहावन देशा । पाछे सुरसरि अग्र नरेशा ॥
हरद्वार समीप जब आये । तीर्थदेखि सुरसरि मनलाये ॥
तीर्थनिरखिमनभयो सुखभारी । आदिप्रयागपहुँचि अघहारी ॥
तहँ मज्जन कीन्हे अघ जाई । बहुरि देवसरि काशीआई ॥

सो शिवपुरी सहज सुखदाई । बरणि न जाइ मनोहरताई ॥
अक्षसेतीर्थ विविधविधिजानी । गई तहां किमिकहों बखानी ॥
मग लोगनकहँ करतसनाथा । जाइचली इहिविधिरघुनाथा ॥
दो० मिलीजाइ पुनिउदधिमहँ उदधिहृदय सुखमान ।
लगेकहन भागीरथहि तुमसम धन्य न आन ॥
कीन्हों अस जो करहि न कोई । तपमहिमाबल कसनहिंहोई ॥
सगर सुतनय तरे ततकाला । हर्षवन्त तब भयो नृपाला ॥
अबलों रहोहै कुलमहिं कोऊ । तिनके संग तरे अब सोऊ ॥
तुमसमान नृप अवरनभयऊ । जगबिख्यातअचलयशलयऊ ॥
सकलसुरन तहँ संग विधाता । नृपसन आय कहीसबबाता ॥
धन्य भगीरथ जग यशलयऊ । तुमसमान नृपअवरनभयऊ ॥
आपनि सत्य प्रतिज्ञा कियऊ । सम्मतवेद जननसुखदयऊ ॥
गंगासागर सब कोइ कहहीं । अघ उलूक देखतरबिडरहीं ॥
भागीरथी नाम अरु कहहीं । मुनिसुरसिद्धनागयश लहहीं ॥
असविधिकहिनिजलोकहिआये । जहांभगीरथ अतिसुखपाये ॥
छं० पायोअमितसुखबहुरिपूजा सुरसरिहि मनलाइकै ।
तबदीन्ह आशिषमुदितगंगानृपभवनसुखपाइकै ॥
इहिभाँतिसुनिगंगाकथा तबरामरुचिचरणननये ।
कहदासतुलसीरामलषणहिं महामुनिआशिषदये ॥
दो० कौशिक आशिष अमियसम पाय हर्ष रघुराज ।
प्रभुसंशयसब इमिगई लवानिरखि जिमिबाज ॥
आशिष सुधा समान सुनि हरषे श्री रघुनाथ ।
प्रभुसुखपाइ कहेउपुनि वेगिचलिय मुनिनाथ ॥
राम नाम ते संशय जाई । देह धरे कर यह फल भाई ॥
इति ॥
गाधिसुवन सब कथा सुनाई । जेहिप्रकारसुरसरिमहिआई ॥
तब प्रभुऋषिनसमेत अन्हाये । विविधदान महिदेवन पाये ॥

हर्षिचले मुनि वृन्द सहाया । बेगि विदेह नगर नियराया ॥
पुर रम्यता राम जब देखी । हर्षे अनुज समेत विशेखी ॥
वापी कूप सरित सर नाना । सलिलसुधासममणिसोपाना ॥
गुंजत मंजु मत्त रस भृंगा । कूजत कलबहु बरण बिहंगा ॥
बरण बरण बिकसे जलजाता । त्रिबिध समीरसदासुखदाता ॥
दो० सुमन बाटिका बागबन बिपुल बिहंग निवास ।
फूलत फलत सुपल्लवित सोहत पुर चहुंपास ॥
बनै न बरणत नगर निकाई । जहाँ जाइ मन तहाँ लुभाई ॥
चारु बजार बिचित्र अटारी । मणिमयबिधिजनुस्वकरसवाँरी ॥
धनिकबणिक बरधनद समाना । बैठे सकल बस्तु लै नाना ॥
चौहट सुन्दर गली सुहाई । सन्ततरहहिं सुगन्धसिंचाई ॥
मंगलमय मन्दिर सब केरे । चित्रितजनु रतिनाथ चितेरे ॥
पुरनर नारि सुभग शुचिसन्ता । धर्म्मशील ज्ञानी गुणवन्ता ॥
अतिअनूपजहँजनकनिवासू । बिथकहिंबिबिधविलोकिविलासू ॥
होत चकितचित कोटविलोकी । सकलभुवन शोभाजनुरोकी ॥
दो० धवलधाम मणिपुरट पट सुघटित नानाभाँति ।
सियनिवाससुन्दरसदन शोभा किमिकहिजाति ॥
सुभगद्वारसब कुलिश कपाटा । भूप भीर नट मागध भाटा ॥
बनी बिशाल वाजि गजशाला । हयगजरथसंकुल सबकाला ॥
शूर सचिव सेनप बहुतेरे । नृपगृहसरिस सदन सबकेरे ॥
पुरबाहिर सर सरित समीपा । उतरे जहँ तहँ बिपुल महीपा ॥
देखि अनूप एक अँबराई । सब सुपास सबभाँति सुहाई ॥
कौशिक कहेउ मोर मनमाना । इहां रहिय रघुबीर सुजाना ॥
भलेहि नाथकहि कृपानिकेता । उतरे तहँ मुनिवृन्द समेता ॥
विश्वामित्र महामुनि आये । समाचार मिथिलापतिपाये ॥
दो० संग सचिव शुचि भूरिभट भूसुर वर गुरु ज्ञाति ।
चलेमिलन मुनिनायकहि मुदित राउ इहिभाँति ॥

कीन्हप्रणाम धरणिधरिमाथा । दीन्हअशीशमुदितमुनिनाथा ॥
बिप्र बृन्द सब सादर बन्दे । जानि भाग्यबड़ राउअनन्दे ॥
कुशलप्रश्न कहि बारहिंबारा । बिश्वामित्र नृपहि बैठारा ॥
तेहि अवसर आये दोउ भाई । गये रहे देखन फुलवाई ॥
श्याम गौर मृदु बयसकिशोरा । लोचनसुखदबिश्वचितचोरा ॥
उठे सकल जब रघुपति आये । बिश्वामित्र निकट बैठाये ॥
भे सब सुखी देखि दोउ भ्राता । बारिबिलोचनपुलकितगाता ॥
मूरति मधुर मनोहर देखी । भयउ बिदेह बिदेह बिशेखी ॥
दो० प्रेममगन मन जानिनृप करि बिवेक धरिधीर ।
बोलेउ मुनिपद नाइशिर गद्गद गिरागँभीर ॥
कहहुनाथसुन्दरदोउबालक । मुनिकुलतिलककिनृपकुलपालक ॥
ब्रह्मजोनिगमनेति कहिगावा । उभयबेषधरिसोइ कि आवा ॥
सहज बिराग रूप मन मोरा । थकितहोत जिमिचंदचकोरा ॥
ताते प्रभु पूंछौं सतिभाऊ । कहहुनाथ जनिकरहु दुराऊ ॥
इनहिं बिलोकतअतिअनुरागा । बरबसब्रह्मसुखहि मनलागा ॥
कहमुनिबिहँसिकहेहुनृप नीका । बचनतुम्हार न होइअलीका ॥
ये प्रियसबहि जहांलगिप्राणी । मनमुसुकाहिं रामसुनिबाणी ॥
रघुकुलमणि दशरथके जाये । ममहित लागि नरेश पठाये ॥
दो० रामलषण दोउ बन्धु बर रूप शील बलधाम ।
मखराखेउसब साखिजग जीतिअसुर संग्राम ॥
मुनि तव चरण देखि कहराऊ । कहिनसकौंनिजपुण्यप्रभाऊ ॥
सुन्दर श्याम गौर दोउ भ्राता । आनँदहू के आनँददाता ॥
इनकी प्रीति परस्पर पावनि । कहिनजायमनभावसुहावनि ॥
सुनहुनाथ कह मुदित बिदेहू । ब्रह्म जीव इव सहज सनेहू ॥
पुनिपुनि प्रभुहिचितवनरनाहू । पुलकगातउर अधिकउछाहू ॥
मुनिहिंप्रशंसि नाइ पद शीशा । चले लिवाय नगरअवनीशा ॥
सुन्दरसदन सुखद सब काला । तहां बासलै दीन्ह भुवाला ॥

करि पूजा सब बिधि सेवकाई । गयउराउ गृह बिदाकराई ॥
दो० ऋषयसङ्ग रघुबंश मणि करि भोजन बिश्राम ।
बैठे प्रभु भ्राता सहित दिवस रहा भरियाम ॥
लषण हृदय लालसा बिशेखी । जाय जनकपुर आइयदेखी ॥
प्रभुभयबहुरिमुनिहिंसकुचाहीं । प्रकटनकहहिंमनहिंमुसुकाहीं ॥
राम अनुज मनकी गतिजानी । भक्तबछलता हियहुलसानी ॥
परम बिनीत सकुचि मुसुकाई । बोले गुरु अनुशासन पाई ॥
नाथ लषण पुर देखन चहहीं । प्रभुसकोच डरप्रकटनकहहीं ॥
जो राउर अनुशासन पाऊं । नगरदिखाय तुरत लै आऊं ॥
सुनिमुनीश कहबचन सप्रीती । कस न राम राखहु तुमनीती ॥
धर्म्मसेतु पालक तुम ताता । प्रेम बिबश सेवक सुखदाता ॥
दो० जाइ देखि आवहु नगर सुखनिधान दोउ भाइ ।
करहु सफल सबके नयन सुन्दरबदन दिखाइ ॥
मुनिपदकमलबन्दिदोउभ्राता । चले लोक लोचन सुखदाता ॥
बालक बृन्द देखि अति शोभा । लगे संग लोचन मनलोभा ॥
पीत बसन परिकर कटिभाथा । चारु चाप शर सोहतहाथा ॥
तनु अनुहरत सुचन्दन खोरी । श्यामल गौर मनोहर जोरी ॥
केहरि कन्धर बाहु बिशाला । उरअतिरुचिर नागमणिमाला ॥
सुभगश्रवण सरसीरुहलोचन । बदन मयंक तापत्रयमोचन ॥
कानन कनकफूल छबि देहीं । चितवत चितै चोरि जनुलेहीं ॥
चितवनि चारु भृकुटिबरबाँकी । तिलकरेख शोभाजनुचाँकी ॥
दो० रुचिर चौतनी सुभगशिर मेचक कुंचित केश ।
नखशिख सुन्दर बंधुदोउ शोभासकलसुदेश ॥
देखन नगर भूप सुत आये । समाचार पुरबासिन पाये ॥
धाये धाम काम सब त्यागे । मनहुं रंक निधि लूटन लागे ॥
निरखि सहज सुन्दरदोउभाई । होहिंसुखी लोचन फलपाई ॥
युवती भवन झरोखनि लागी । निरखहिं रामरूप अनुरागी ॥

कहहिं परस्पर बचन सप्रीती । सखिइनकोटिकामछबिजीती ॥
सुर नर असुर नाग मुनिमाहीं । शोभाअसकहुं सुनियतनाहीं ॥
विष्णुचारिभुज बिधिमुखचारी । बिकट वेष मुख पंच पुरारी ॥
अपरदेव असको जग आही । इहि बिधिछबिपटतरियेजाही ॥
दो० बयकिशोर सुखमासदन श्यामगौरसुखधाम ।
अंग अंग पर वारिये कोटिकोटि शत काम ॥
कहहु सखी असको तनुधारी । जो न मोह यह रूप निहारी ॥
कोउ सप्रेम बोली मृदु बानी । जो मैं सुनासो सुनहुसयानी ॥
ये दोउ नृप दशरथ के ढोटा । बाल मरालन के कल जोटा ॥
मुनि कौशिक मख के रखवारे । जिनरणअजयनिशाचरमारे ॥
श्यामगात कलकंज बिलोचन । जो मारीच सुभुज मदमोचन ॥
कौशल्यासुत सो सुखखानी । नाम राम धनु शायक पानी ॥
गौर किशोर बेष बर काछे । कर शर चाप रामके पाछे ॥
लक्ष्मण नाम राम लघुभ्राता । सुनुसखितासु सुमित्रा माता ॥
दो० बिप्रकाजकरि बन्धु दोउ मगमुनि बधू उधारि ।
आये देखन चापमख सुनि हर्षीं सब नारि ॥
देखि राम छबि कोउ इक कहई । योग्यजानकी यह बरअहई ॥
जो सखि इनहिं देखि नरनाहू । प्रणपरिहरिहठिकरहि बिवाहू ॥
कोउ कह इनभूपति पहिंचाने । मुनि समेत सादर सनमाने ॥
सखि परन्तुप्रण राउनतजई । बिधिबशहठिअविवेकहिभजई ॥
कोउकह जो भलअहै बिधाता । सबकहँसुनियउचितफलदाता ॥
तौ जानकिहि मिलिहि बरयेहू । नाहिंन आली यह सन्देहू ॥
जो बिधिवश अस बनै सँयोगू । तौ कृतकृत्य होहिं सबलोगू ॥
सखिहमरे आति आरति ताते । कबहुंक ये आवहिं यहिनाते ॥
दो० नाहित हमकहँ सुनहुसखि इनकर दर्शन दूरि ।
यह संघट तब होइ जब पुण्य पुराकृत भूरि ॥
बोली अपर कहेउ सखिनीका । यहबिवाहअतिहितसबहीका ॥

कोउ कह शंकर चाप कठोरा । येश्यामल मृदुगात किशोरा ॥
सब असमंजस अहै सयानी । यहसुनि अपरकहैं मृदुबानी ॥
सखिइनकहँ कोउकोउअसकहहीं । बड़प्रभावदेखतलघुअहहीं ॥
परसि जासु पदपंकज धूरी । तरी अहल्या कृत अघभूरी ॥
सोकि रहैं बिनु शिव धनु तोरे । यह प्रतीत परिहरिय न भोरे ॥
जेहिं बिरंचि रचिसीय सँवारी । तेहिंश्यामलबररचेउबिचारी ॥
तासु बचन सुनिसब हरषानी । ऐसेइ होउ कहहिं मृदुबानी ॥

दो० हियहरषहिं बरषहिं सुमन सुमुखि सुलोचनिबृन्द ।
जाहिं जहां जहँ बन्धु दोउ तहँ तहँ परमानन्द ॥

पुर पूरब दिशिगे दोउ भाई । जहां धनुष मखभूमि बनाई ॥
अतिबिस्तार चारु गच ढारी । बिमलबेदिका रुचिरसँवारी ॥
चहुँदिशि कंचनमंच बिशाला । रचे जहां बैठहिं महिपाला ॥
तेहि पाछे समीप चहुं पासा । अपर मंच मण्डलीबिलासा ॥
कछुक ऊंच सब भाँति सुहाई । बैठहिं नगर लोग सबआई ॥
तिनके निकट बिशाल सुहाये । धवल धाम बहु बरणबनाये ॥
जहँ बैठी देखहिं पुरनारी । यथायोग्य निजकुलअनुहारी ॥
पुरबालक कहिकहिमृदुबचना । सादरप्रभुहिं देखावहिंरचना ॥

दो० सबशिशुमिसु इहिप्रेमबश परसि मनोहरगात ।
तनुपुलकहिं अतिहर्षहिय देखिदेखिदोउभ्रात ॥

शिशु सब राम प्रेमबश जाने । प्रीति समेत निकेत बखाने ॥
निजनिजरुचि सब लेहिंबुलाई । सहित सनेह जाहिंदोउभाई ॥
रामदेखावहिं अनुजहि रचना । कहिमृदुमधुरमनोहर बचना ॥
लव निमेषमहँ भुवन निकाया । रचैजासु अनुशासन माया ॥
भक्त हेतु सोइ दीनदयाला । चितवतचकित धनुषमखशाला ॥
कौतुक देखि चले गुरु पाहीं । जानि बिलम्बत्रासमनमाहीं ॥
जासु त्रास डरकहँ डर होई । भजन प्रभाव देखावत सोई ॥
कहि बातें मृदुमधुर सुहाई । कियेबिदा बालक बरिआई ॥

दो० सभयसप्रेम विनीतअति सकुचसहित दोउभाइ ।
गुरुपद पंकज नाइ शिर बैठे आयसु पाइ ॥
निशिप्रवेश मुनि आयसुदीन्हा । सबही सन्ध्यावन्दन कीन्हा ॥
कहत कथा इतिहास पुरानी । रुचि रजनी युगयामसिरानी ॥
मुनिवर शयन कीन्ह तबजाई । लगे चरण चापन दोउभाई ॥
जिनके चरण सरोरुह लागी । करतविविधजपयोगविरागी ॥
ते दोउ बन्धु प्रेम जनु जीते । गुरुपदकमल पलोटत प्रीते ॥
बार बार मुनि आज्ञा दीन्हा । रघुवरजाइ शयनतबकीन्हा ॥
चापत चरण लषण उरलाये । सभय सप्रेम परम सुखपाये ॥
पुनिपुनि प्रभुकह सोवहु ताता । पौढ़े धरि उरपद जलजाता ॥
दो० उठेलषणनिशिविगतसुनिअरुणशिखाधुनिकान ।
गुरुते पहिले जगतपति जागे राम सुजान ॥
सकल शौचकरि जाय नहाये । नित्यनिबाहिगुरुहिंशिरनाये ॥
समय जानि गुरु आयसु पाई । लेन प्रसून चले दोउ भाई ॥
भूप बाग बर देखेउ जाई । जहँ बसन्तऋतु रहै लुभाई ॥
लागे बिटप मनोहर नाना । बरण बरण वरबेलि बिताना ॥
नव पल्लव फल सुमन सुहाये । निजसम्पतिसुरतरुहिलजाये ॥
चातक कोकिल कीर चकोरा । कूजतविहग नचतकलमोरा ॥
मध्यबाग सर सोह सुहावा । मणि सोपान विचित्रबनावा ॥
विमलसलिल सरसिजबहुरंगा । जलखगकूजत गुंजत भृंगा ॥
दो० बाग तड़ाग बिलोकि प्रभु हर्षे बन्धु समेत ।
परमरम्य आराम यह जो रामहिं सुखदेत ॥
चहुंदिशि चितै पूंछि मालीगन । लगे लेनदलफूल मुदितमन ॥
तेहि अवसर सीता तहँ आई । गिरिजा पूजन जननिपठाई ॥
संग सखी सब सुभग सयानी । गावहिं गीत मनोहर बानी ॥
सरसमीप गिरिजा गृह सोहा । बरणि न जाय देखिमनमोहा ॥
मज्जन करि सर सखी समेता । गई मुदित मन गौरिनिकेता ॥

पूजा कीन्ह अधिक अनुरागा । निजअनुरूप सुभगबरमांगा ॥
एक सखी सिय संग विहाई । गई रही देखन फुलवाई ॥
तेइ दोउ बन्धु विलोकेउ जाई । प्रेम विवश सीता पहँ आई ॥
दो० तासु दशा देखी सखिन पुलकगात जलनैन ।
कहु कारण निज हर्षकर पूछहिं सब मृदुबैन ॥
देखन बाग कुंवर दोउ आये । बयकिशोर सबभाँति सुहाये ॥
श्याम गौर किमि कहौं बखानी । गिराअनयननयनबिनुबानी ॥
सुनि हरषीं सब सखी सयानी । सियहियअतिउतकण्ठाजानी ॥
एक कहहिं नृपसुत ते आली । सुनेजे मुनि सँग आयेकाली ॥
जिन निजरूप मोहनी डारी । कीन्हे स्ववश नगरनरनारी ॥
बरणत छबि जहँ तहँ सबलोगू । अवशि देखिये देखन योगू ॥
तासुवचनअति सियहि सुहाने । दरशलागिलोचन अकुलाने ॥
चली अग्रकरि प्रियसखि सोई । प्रीति पुरातन लखै न कोई ॥
दो० सुमिरि सीय नारद वचन उपजी प्रीति पुनीत ।
चकितविलोकतिसकलदिशिजनुशिशुमृगीसभीत ॥
कंकणकिंकिणि नूपुर धुनिसुनि । कहतलषणसनरामहृदयगुनि ॥
मानहुं मदन दुन्दुभी दीन्ही । मनसा विश्वविजयकहँकीन्ही ॥
असकहिफिरचितयेत्यहिओरा । सियमुखशशिभयेनयनचकोरा ॥
भये विलोचन चारुअचंचल । मनहुंसकुचिनिमितजेउदृगंचल ॥
देखि सीय शोभा सुखपावा । हृदयसराहत वचन न आवा ॥
जनुविरंचि सबनिज निपुणाई । विरचिविश्वकहँ प्रकटदिखाई ॥
सुन्दरता कहँ सुन्दर करई । छबिगृह दीपशिखा जनुबरई ॥
सब उपमा कवि रहे जुठारी । किहिपटतरिय विदेह कुमारी ॥
दो० सियशोभाहियबरणिप्रभु आपनिदशा बिचारि ।
बोलेशुचिमनअनुजसन वचन समयअनुहारि ॥
तात जनक तनया यह सोई । धनुषयज्ञ जेहिकारण होई ॥
पूजन गौरि सखी लै आई । करतिप्रकाश फिरतिफुलवाई ॥

जासुबिलोकि अलौकिक शोभा । सहज पुनीत मोरमनछोभा ॥
सो सब कारण जान बिधाता । फरकहिंसुभगअंगसुनुभ्राता ॥
रघुबंशिन कर सहज सुभाऊ । मन कुपन्थ पगधरैं न काऊ ॥
मोहिंअतिशयप्रतीतिजियकेरी । जेहि सपनेहु परनारिनहेरी ॥
जिनके लहहिं न रिपुरणपीठी । नहिंलावहिं परतियमनडीठी ॥
मंगन लहहिं न जिनके नाहीं । ते नर बर थोरे जगमाहीं ॥
दो० करत बतकही अनुजसन मन सियरूप लुभान ।
मुखसरोज मकरन्द छबि करत मधुप इव पान ॥
चितवतचकितचहूंदिशिसीता । कहँगये नृपकिशोरमनचीता ॥
जहँबिलोकिमृगशावकनयनी । जनुतहँबरषकमलसितश्रयनी ॥
लता ओट तब सखिनलखाये । श्यामलगौर किशोर सुहाये ॥
देखि रूप लोचन ललचाने । हर्षे जनुनिजनिधि पहिंचाने ॥
थके नयन रघुपति छबिदेखी । पलकनहूं परिहरी निमेखी ॥
अधिक सनेह देह भइभोरी । शरदशशिहिजनुचितवचकोरी ॥
लोचन मगु रामहिं उर आनी । दीन्हे पलक कपाट सयानी ॥
जबसियसखिनप्रेमवशजानी । कहिनसकहिंकछुमनसकुचानी ॥
दो० लता भवनते प्रकटभे तेहिअवसर दोउभाइ ।
निकसेजनुयुगबिमलबिधुजलदपटलबिलगाइ ॥
शोभा सींव सुभग दोउ बीरा । नील पीत जलजात शरीरा ॥
काकपच्छ शिर सोहत नीके । गुच्छाबिचबिचकुसुमकलीके ॥
भालतिलक श्रमबिन्दु सुहाये । श्रवणसुभग भूषणछबिछाये ॥
बिकट भृकुटि कच घूंघर वारे । नव सरोज लोचन रतनारे ॥
चारु चिबुकनासिका कपोला । हास बिलास लेतजनुमोला ॥
मुखछबिकहिनजाहिमोहिंपाहीं । जो बिलोकिबहुकामलजाहीं ॥
उर मणिमाल कम्बु कलग्रींवा । कामकलभकरभुजबल सींवा ॥
सुमन समेत बामकर दोना । सांवरकुँवर सखी सुठिलोना ॥
दो० केहरि कटि पट पीत धरि सुखमा शीलनिधान ।

देखि भानुकुलभूषणहिं बिसरा सखिन अपान ॥
धरि धीरज इक सखी सयानी । सीतासन बोली गहि पानी ॥
बहुरि गौरि कर ध्यान करेहू । भूपकिशोर देखि किन लेहू ॥
सकुचिसीय तब नयन उघारे । सन्मुख दोउ रघुबंशनिहारे ॥
नखशिख देखि रामकीशोभा । सुमिरिपिताप्रणमनअतिछोभा ॥
परवश सखिनलखी जबसीता । भईगहरु सबकहहिंसभीता ॥
पुनि आउब इहिबिरियां काली । असकहिमनविहँसीइकआली ॥
गूढ़ गिरासुनि सिय सकुचानी । भयउ बिलम्बमातुभयमानी ॥
धरि बड़ धीर राम उरआनी । फिरआपनप्रणपितुवशजानी ॥
दो० देखन मिसुमृग विहगतरु फिरै बहोरि बहोरि ।
निरखिनिरखिरघुबीर छबि बाढ़ीप्रीति न थोरि ॥
जानिकठिन शिवचापबिसूरति । चली राखिउरश्यामलमूरति ॥
प्रभुजबजात जानकी जानी । सुख सनेह शोभा गुणखानी ॥
परम प्रेममय मृदुमसि कीन्ही । चारुचित्रभीतरलिखिदीन्ही ॥
गई भवानी भवन बहोरी । वन्दि चरण बोली करजोरी ॥
जयजयजय गिरिराज किशोरी । जयमहेश मुखचन्द्र चकोरी ॥
जय गजबदन षड़ाननमाता । जगतजननिदामिनिद्युतिगाता ॥
नहिंतव आदिमध्य अवसाना । अमितप्रभाव वेदनहिंजाना ॥
भवभौविभवपराभवकारिणि । विश्वबिमोहनिस्ववशबिहारिणि ॥
दो० पति देवता सुतीय महँ मातु प्रथम तव रेख ।
महिमाअमितनकहिसकहिं सहस शारदाशेख ॥
सेवततोहिं सुलभ फलचारी । वरदाइनि त्रिपुरारि पियारी ॥
देवि पूजि पदकमल तुम्हारे । सुरनरमुनि सबहोहिं सुखारे ॥
मोर मनोरथ जानहु नीके । बसहु सदा उरपुर सबहीके ॥
कीन्ह्यउँ प्रकट न कारण तेही । असकहि चरण गहे वैदेही ॥
विनय प्रेमवश भई भवानी । खसी माल मूरति मुसुकानी ॥
सादर सिय प्रसाद उरधरेऊ । बोली गौरि हर्ष हिय भरेऊ ॥

सुनु सिय सत्य असीश हमारी । पूजहिं मन कामना तुम्हारी ॥
नारद बचन सदा शुचि सांचा । सो बर मिलहि जाहि मन रांचा ॥
छं० मन जाहि राचो मिलहि सो बर सहज सुन्दर सांवरो ।
करुणानिधान सुजान शील सनेह जानत रावरो ॥
इहि भांति गौरि असीश सुनि सिय सहित हिय हर्षित अली ।
तुलसी भवानिहिं पूजि पुनि पुनि मुदित मन मंदिर चली ॥
सो० जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हर्ष न जाय कहि ।
मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे ॥
हृदय सराहत सीय लुनाई । गुरु समीप गवने दोउ भाई ॥
राम कहा सब कौशिक पाहीं । सरल सुभाव छुवा छल नाहीं ॥
सुमन पाइ मुनि पूजा कीन्हीं । पुनि असीश दोउ भाइन दीन्हीं ॥
सुफल मनोरथ होहिं तुम्हारे । राम लषण सुनि भये सुखारे ॥
करि भोजन मुनिवर विज्ञानी । लगे कहन कछु कथा पुरानी ॥
बिगत दिवस मुनि आयसु पाई । सन्ध्या करन चले दोउ भाई ॥
प्राची दिशि शशि उगेउ सुहावा । सिय मुख सरिस देखि सुख पावा ॥
बहुरि बिचार कीन्ह मन माहीं । सीय बदन सम हिमकर नाहीं ॥
दो० जन्म सिन्धु पुनि बन्धु विष दिन मलीन सकलंक ।
सिय मुख समता पाव किमि चन्द्र बापुरो रंक ॥
घटै बढ़ै बिरहिनि दुखदाई । ग्रसै राहु निज संधिहि पाई ॥
कोक शोक प्रद पंकज द्रोही । अवगुण बहुत चन्द्रमा तोही ॥
बैदेही मुख पटतर दीन्हे । होइ दोष बड़ अनुचित कीन्हे ॥
सिय मुख छबि बिधु ब्याज बखानी । गुरु पहँ चले निशा बड़ि जानी ॥
करि मुनि चरण सरोज प्रणामा । आयसु पाइ कीन्ह विश्रामा ॥
बिगत निशा रघुनायक जागे । बंधु बिलोकि कहन अस लागे ॥
उगेउ अरुण अवलोकहु ताता । पंकज कोक लोक सुखदाता ॥
बोले लषण जोरि युग पाणी । प्रभु प्रभाव सूचक मृदु बाणी ॥
दो० अरुणोदय सकुचे कुमुद उडुगण ज्योति मलीन ।

तिमितुम्हार आगमनसुनि भयेनृपति बलहीन ॥
नृप सबनखत कराहिंउजियारी । टारि न सकहिं चापतमभारी ॥
कमल कोक मधुकरखल नाना । हरषेसकल निशाअवसाना ॥
ऐसहि प्रभु सब भक्त तुम्हारे । होइहहिं टूटे धनुष सुखारे ॥
उदयभानु बिनुश्रम तमनाशा । दुरेनखत जग तेज प्रकाशा ॥
रविनिज उदय ब्याजरघुराया । प्रभुप्रतापसबनृपनदिखाया ॥
तव भुजबल महिमा उदघाटी । प्रकटी धनुविघटन परिपाटी ॥
बंधुवचनसुनि प्रभु मुसकाने । होइशुचिसहजपुनीतअन्हाने ॥
नित्यक्रियाकरि गुरुपहँ आये । चरण सरोजसुभगशिरनाये ॥
शतानन्द तब जनक बुलाये । कौशिक मुनिपहँ तुरतपठाये ॥
जनकविनय तिनआय सुनाई । हर्षे बोलि लिये दोउ भाई ॥
दो० शतानंद पदबंदि प्रभु बैठे गुरु पहँ जाइ ।
चलहुतात मुनिकहेउतब पठवा जनकबुलाइ ॥
सीय स्वयम्बर देखिय जाई । ईश काहि धौं देहिं बड़ाई ॥
लषण कहा यश भाजन सोई । नाथ कृपा तव जापर होई ॥
हरषे सुनि सब मुनिवर बानी । दीन्हअशीशसबहिसुखमानी ॥
पुनिमुनि वृन्द समेत कृपाला । देखनचले धनुष मखशाला ॥
रंगभूमि आये दोउ भाई । अससुधि सबपुरबासिनपाई ॥
चले सकल गृह काज बिसारी । बालक युवा जरठ नर नारी ॥
देखी जनक भीर भइ भारी । शुचिसेवक सब लियेहँकारी ॥
तुरत सकल लोगन पहँ जाहू । आसन उचित देहुसबकाहू ॥
दो०. कहि मृदु बचन बिनीत तिन बैठारे नर नारि ।
उत्तममध्यमनीचलघु निजनिजथलअनुहारि ॥
राजकुँवर तेहि अवसर आये । मनहुँ मनोहरता छबिछाये ॥
गुणसागर नागर बर बीरा । सुन्दर श्यामल गौर शरीरा ॥
राज समाज बिराजत रूरे । उडुगणमहँ जनुयुग बिधुपूरे ॥
जिनके रही भावना जैसी । प्रभु मूरति देखी तिन तैसी ॥

देखहिं भूप महा रण धीरा । मनहुं बीर रस धरे शरीरा ॥
डरे कुटिल नृप प्रभुहि निहारी । मनहुँ भयानक मूरतिभारी ॥
रहे असुरछल जो नृप वेखा । तिनप्रभु प्रकटकालसमदेखा ॥
पुरवासिन देखे दोउ भाई । नर भूषण लोचन सुखदाई ॥
दो० नारिबिलोकहिंहरषिहियनिजनिजरुचिअनुरूप ।
जनुसोहत शृंगार धरि मूरति परम अनूप ॥
बिदुषण प्रभु बिराटमय दीशा । बहुमुखकरपगलोचनशीशा ॥
जनक जाति अवलोकहिं कैसे । सजनसगे प्रियलागहिं जैसे ॥
सहित विदेह बिलोकहिं रानी । शिशुसमप्रीतिनजायबखानी ॥
योगिन परम तत्त्व मय भासा । सन्तशुद्धमन सहजप्रकासा ॥
हरिभक्तन देखे दोउ भ्राता । इष्ट देव इव सब सुखदाता ॥
रामहिं चितव भाव जेहिसीया । सो सनेहसुखनहिंकथनीया ॥
उर अनुभवतिनकहि सककोऊ । कवनप्रकार कहै कबिकोऊ ॥
यहि बिधिरहा जाहिजसभाऊ । तेइँतस देखेउ कोशलराऊ ॥
दो० राजत राज समाज महँ कोशलराज किशोर ।
सुन्दर श्यामल गौरतन विश्वविलोचन चोर ॥
सहज मनोहर मूरति दोऊ । कोटिकाम उपमा लघुसोऊ ॥
शरद चन्द निन्दक मुख नीके । नीरज नयन भावते जीके ॥
चितवनिचारु मार मदहरणी । भावत हृदयजाइनहिंवरणी ॥
कलकपोल श्रुति कुण्डललोला । चिबुकअधरसुन्दरमृदुबोला ॥
कुमुद बन्धुकर निन्दक हासा । भृकुटी बिकट मनोहरनासा ॥
भालबिशालतिलकझलकाहीं । कचबिलोकिअलिअवलिलजाहीं ।
पीत चौतनी शिरन सुहाई । कुसुमकली बिचबीच बनाई ॥
रेखा रुचिर कम्बु कल ग्रींवा । जनुत्रिभुवनसुखमाकीसींवा ॥
दो० कुञ्जर मणि कण्ठा कलित उर तुलसीकीमाल ।
वृषभकन्धकेहरिठवनि बलनिधि बाहु बिशाल ॥
कटि तूणीर पीत पट बांधे । करशर धनुष बामवर कांधे ॥

पीत यज्ञ उपवीत सुहाई । नखशिख मंजु महाछबिछाई ॥
देखि लोग सब भये सुखारे । इकटक लोचन टरहिं न टारे ॥
हरषे जनक देखि दोउ भाई । मुनिपद कमलगहे तबजाई ॥
करि बिनती निजकथा सुनाई । रंगअवनिसबमुनिहि दिखाई ॥
जहँजहँ जाहिं कुँवरबर दोऊ । तहँतहँचकितचितवसबकोऊ ॥
निजनिजरुचिरामहिंसब देखा । कोउ न जान कछुमर्मविशेखा ॥
भलिरचनानृपसन मुनिकहेऊ । राजामुदित परमसुख लहेऊ ॥
दो० सब मञ्चनते मञ्चइक सुन्दर विशद बिशाल ।
मुनि समेत दोउ बन्धु तहँ बैठारे महिपाल ॥
प्रभुहि देखि सबनृप हियहारे । जनुराकेश उदय भये तारे ॥
अस प्रतीति तिनके मनमाहीं । रामचाप तोरब शक नाहीं ॥
बिन भंजेहु भवधनुष बिशाला । मेलहि सीय राम उरमाला ॥
अस बिचारि गवनहु घरभाई । जय प्रताप बल तेजगँवाई ॥
बिहँसे अपर भूप सुनि बानी । जे अविवेक अन्धअभिमानी ॥
तोरेउ धनुष ब्याह अवगाहा । बिनुतोरेको कुँवरि बिवाहा ॥
एक बार कालहु किन होई । सियहितसमरजितबहमसोई ॥
यह सुनि अपर भूप मुसुकाने । धर्म शील हरिभक्त सयाने ॥
सो० सीय बिवाहब राम गर्व दूरिकरि नृपन कर ।
जीतकोसक संग्राम दशरथ के रण बांकुरे ॥
वृथा मरहु जनि गाल बजाई । मनमोदक नहिं भूखबुताई ॥
सिख हमारि सुनु परम पुनीता । जगदम्बा जानहुजियसीता ॥
जगतपिता रघुपतिहि बिचारी । भरिलोचन छबिलेहुनिहारी ॥
सुन्दरसुखद सकल गुणरासी । ये दोउ बन्धु शम्भुउरबासी ॥
सुधा समुद्र समीप बिहाई । मृगजलनिरखिमरहुकतधाई ॥
करहु जाय जाकहँ जो भावा । हमतो आज जन्मफलपावा ॥
अस कहि भले भूप अनुरागे । रूप अनूप बिलोकन लागे ॥
देखहिं सुर नभ चढ़े बिमाना । बरषहिंसुमनकरहिंकलगाना ॥

दो० जानि सुअवसर सीय तब पठवा जनक बुलाय ।
चतुरसखी सुन्दरिसकल सादर चलीं लिवाय ॥
सियशोभा नहिं जाइ बखानी । जगदम्बिका रूप गुणखानी ॥
उपमासकल मोहिं लघुलागी । प्राकृत नारि अंग अनुरागी ॥
सीय बरणि तेहि उपमा देई । को कविकहै अयशको लेई ॥
जो पटतरिय तीयसम सीया । जगअसयुवतिकहांकमनीया ॥
गिरामुखरतनुअर्द्ध भवानी । रतिअतिदुखितअतनुपतिजानी ॥
बिष बारुणी बन्धु प्रिय जेही । कहिय रमासब किमिवैदेही ॥
जो छबिसुधा पयोनिधि होई । परमरूप मय कच्छप सोई ॥
शोभा रजु मन्दर शृङ्गारू । मथै पाणि पङ्कज निजमारू ॥
दो० इहिविधि उपजै लच्छिजब सुन्दरता सुखमूल ।
तदपि सकोच समेतकवि कहहिं सीयसमतूल ॥
चली संगलै सखी सयानी । गावत गीत मनोहर बानी ॥
सोहनवलतन सुन्दरि सारी । जगतजननिअतुलितछबिभारी ॥
भूषण सकल सुदेश सुहाये । अंगअंगराचि सखिन बनाये ॥
रंगभूमि जब सिय पगु धारी । देखि रूप मोहे नर नारी ॥
हर्षि सुरन दुन्दुभी बजाई । वर्षि प्रसून अप्सरा गाई ॥
पाणि सरोज सोह जयमाला । औचकचितैसकलमहिपाला ॥
सीय चकिताचित रामहिं चाहा । भये मोहबश सब नरनाहा ॥
मुनि समीप बैठे दोउ भाई । लगेललकिलोचन निधिपाई ॥
दो० गुरुजन लाजसमाज बड़ि देखिसीय सकुचानि ।
लगीबिलोकन सखिनतन रघुबीरहि उरआनि ॥
रामरूप अरु सियछबि देखी । नर नारिनपरिहरेउ निमेखी ॥
शोचहिंसकल कहतसकुचाहीं । विधिसनविनयकरहिंमनमाहीं ॥
हरुविधि वेगि जनकजड़ताई । मतिहमारि असिदेहु सुहाई ॥
बिन बिचार प्रणताजि नरनाहू । सीय राम कर करै बिवाहू ॥
जगभल कहहि भाव सबकाहू । हठ कीन्हे उर अन्तहु दाहू ॥

यह लालसा मगन सबलोगू। बर सांवरो जानकी योगू॥
तब बन्दीजन जनक बुलाये। बिरदावली कहत चलिआये॥
कह नृप जाइकहहु प्रण मोरा। चले भाट हिय हर्ष न थोरा॥
दो० बोले बन्दी बचन बर सुनहु सकल महिपाल।
प्रण विदेहकर कहहिं हम भुजा उठायबिशाल॥
नृप भुजबलबिधु शिवधनुराहू। गरुअकठोरविदितसबकाहू॥
रावण बाण महाभट भारे। देखि शरासन गवहिंसिधारे॥
सोइ पुरारि कोदण्ड कठोरा। राजसमाज आजु जोइतोरा॥
त्रिभुवन जय समेत वैदेही। बिनहिबिचारि बरै हठितेही॥
सुनिप्रणसकल भूप अभिलाषे। भटमानी अतिशय मनमाषे॥
परिकर बांधि उठे अकुलाई। चले इष्ट देवन शिरनाई॥
तमकिताकितकिशिवधनुधरहीं। उठै न कोटिभांति बलकरहीं॥
जिनके कछु बिचार मनमाहीं। चाप समीप महीप न जाहीं॥
दो० तमकिधरहिंधनुमूढ़नृप उठइ न चलहिंलजाइ।
मनहुँपाइभटबाहुबल अधिक अधिकगरुआइ॥
भूप सहस दश एकहि बारा। लगे उठावन टरइ न टारा॥
डगै न शम्भु शरासन कैसे। कामी वचन सतीमन जैसे॥
सबनृप भये योग उपहासी। जैसे बिनु बिराग संन्यासी॥
कीरति विजय वीरता भारी। चले चापकर सर्वस हारी॥
श्रीहत भये हारि हिय राजा। बैठे निजनिज जाइ समाजा॥
नृपनबिलोकि जनकअकुलाने। बोले वचन रोष जनु साने॥
द्वीप द्वीप के भूपति नाना। आयेसुनि हमजो प्रणठाना॥
देव दनुज धरि मनुज शरीरा। विपुल बीर आये रण धीरा॥
दो० कुँवरिमनोहरिविजयबड़ि कीरतिअतिकमनीय।
पावन हार बिरंचि जनु रचेउ न धनु दमनीय॥
कहहुकाहि यह लाभ न भावा। काहु न शंकर चाप चढ़ावा॥
रहा चढ़ाउब तोरब भाई। तिलभरिभूमिनसकेउछुड़ाई॥

अब जनिकोउ माखै भटमानी। बीर बिहीन मही मैं जानी ॥
तजहुआश निजनिजगृहजाहू। लिखा न विधिवैदेहि बिवाहू ॥
सुकृत जाय जो प्रण परिहरऊं। कुंवरि कुंवारि रहै का करऊं ॥
जो जनतेउँ बिनुभट महिभाई। तौप्रणकरिकरतेउँ न हँसाई ॥
जनक वचनसुनिसब नरनारी। देखि जानकी भये दुखारी ॥
सुनतहिलषण कुटिलभइँ भौंहैं। रदपुट फरकत नयनरिसौंहैं ॥
दो० कहिन सकत रघुबीर डर लगे वचन जनुबाण।
नाइ रामपद कमल शिर बोले गिरा प्रमाण ॥
रघुबंशिन महँ जहँ कोउ होई। तेहिसमाजअसकहै न कोई ॥
कहीजनक जसअनुचितबानी। विद्यमानरघुकुलमणि जानी ॥
सुनहु भानु कुल पंकज भानू। कहौंसुभाव न कछुअभिमानू ॥
जो राउर अनुशासन पाऊं। कन्दुकइव ब्रह्माण्ड उठाऊं ॥
काचे घट जिमि डारौं फोरी। सकौं मेरु मूलक इव तोरी ॥
तव प्रताप महिमा भगवाना। का बापुरो पिनाक पुराना ॥
नाथ जानि असआयसु होऊ। कौतुककरौं बिलोकिय सोऊ ॥
कमलनाल इमि चाप चढ़ावों। शत योजन प्रमाण लैधावों ॥
दो० तोरौंछत्रक दण्ड जिमि तव प्रताप बलनाथ।
जोनकरौं प्रभुपदशपथ पुनि न धरौं धनुहाथ ॥
लषण सकोप वचन जबबोले। डगमगानिमहिदिग्गजडोले ॥
सकल लोक सब भूप डराने। सियहियहर्षजनक सकुचाने ॥
गुरुरघुपति सबमुनि मनमाहीं। मुदितभयेपुनिपुनिपुलकाहीं ॥
सैनहिं रघुपति लषण निवारे। प्रेम समेत निकट बैठारे ॥
विश्वामित्र समय शुभ जानी। बोले अति सनेह मृदुबानी ॥
उठहु राम भंजहु भवचापू। मेटहु तात जनक परितापू ॥
सुनिगुरुवचन चरण शिरनावा। हर्षविषाद न कछु उरआवा ॥
ठाढ़ भये उठि सहज सुभाये। ठवनियुवा मृगराज लजाये ॥
दो० उदित उदय गिरिमंचपर रघुबर बाल पतंग।

विकसे सन्त सरोज सब हरषेलोचन भृंग ॥
नृपन केरि आशा निशि नाशी । वचननखतअवलीनप्रकाशी॥
मानी महिप कुमुद सकुचाने । कपटी भूप उलूक लुकाने ॥
भये बिशोक कोक मुनि देवा । वरषहिंसुमनजनावहिं सेवा ॥
गुरुपद बन्दि सहित अनुरागा । राममुनिनसन आयसुमांगा ॥
सहजहिचले सकलजगस्वामी । मत्त मंजु कुंजर बर गामी ॥
चलत राम सबपुर नर नारी । पुलक पूरितन भये सुखारी ॥
बन्दि पितर सुर सुकृत सँभारे । जो कछुपुण्य प्रभाव हमारे ॥
तौ शिवधनुष मृणाल कि नाईं । तोरहिं राम गणेश गुसाईं ॥
दो० रामहिंप्रेम समेत लखि सखिन समीप बुलाइ ।
सीता मातु सनेह बश वचन कहै बिलखाइ ॥
सखिसब कौतुक देखन हारे । जोउ कहावत हितू हमारे ॥
कोउ न बुझाइ कहइ नृपपाहीं । येबालक असहठ भलनाहीं ॥
रावण बाण छुआ नहिं चापा । हारे सकल भूपकरि दापा ॥
सो धनुराज कुंवर कर देहीं । बाल मराल कि मन्दरलेहीं ॥
भूपसयानप सकल सिरानी । सखिविधिगतिकछुजायनजानी॥
बोली चतुर सखी मृदु बानी । तेजवन्तलघु गणियनरानी ॥
कहँ कुंभज कहँ सिन्धु अपारा । शोषेउ सुयशसकल संसारा ॥
रवि मंडल देखत लघुलागा । उदयतासुत्रिभुवनतमभागा ॥
दो० मंत्र परमलघु जासुबश विधिहरि हरसुर सर्ब्ब ।
महा मत्त गजराज कहँ बशकर अंकुश खर्ब्ब ॥
काम कुसुम धनुशायक लीन्हे । सकल भुवनअपनेबशकीन्हे ॥
देवितजिय संशय असजानी । भंजबधनुष राम सुनु रानी ॥
सखीवचन सुनि भइ परतीती । मिटा विषादबढ़ी अतिप्रीती ॥
तब रामहिं बिलोकि वैदेही । सभयहृदयाबिनवतिजेहितेही॥
मनहींमन मनाय अकुलानी । होहु प्रसन्न महेश भवानी ॥
करहु सुफल आपनि सेवकाई । हरिहित हरहुचाप गरुआई ॥

गणनायक बरदायक देवा । आजु लगे कीन्हीं तव सेवा ॥
बारबार बिनती सुनि मोरी । करहुचाप गरुता अतिथोरी ॥
दो० देखि देखि रघुबीर तन सुरमनाव धरिधीर ।
भरे बिलोचन प्रेमजल पुलकावली शरीर ॥
नीके निरखि नयनभरिशोभा । पितुप्रणसुमिरिबहुरिमनछोभा॥
अहह तात दारुण हठ ठानी । समुझतनाहिंकछुलाभनहानी ॥
सचिवसभय सिखदेइ न कोई । बुधसमाजबड़अनुचितहोई ॥
कहँ धनुकुलिशहु चाहिकठोरा । कहँश्यामलमृदुगात किशोरा ॥
बिधि केहिभांति धरौंउरधीरा । सिरससुमनाकिमिबेधिहिहीरा॥
सकल सभाकी मतिभइ भोरी । अबमोहिंशम्भुचापगतितोरी॥
निजजड़ता लोगन परडारी । होहुहरुअरघुपतिहि निहारी ॥
अति परिताप सीय मनमाहीं । लवनिमेषयुगसमचलिजाहीं ॥
दो० प्रभुहि चितैपुनि चितैमहि राजत लोचन लोल ।
खेलत मनसिज मीनयुग जनुविधुमंडलडोल ॥
गिरा अलिन मुखपंकजरोकी । प्रकटनलाजनिशाअवलोकी ॥
लोचनजल रहु लोचन कोना । जैसे परम कृपणकरसोना ॥
सकुची ब्याकुलता बड़िजानी । धरि धीरजप्रतीत उरआनी ॥
तन मन बचन मोर मनसाँचा । रघुपति पदसरोज मनराँचा ॥
तौ भगवान सकल उरबासी । करिहहिंमुहिंरघुपतिकीदासी॥
जेहि के जेहिपर सत्यसनेहू । सो तेहि मिलत न कछुसंदेहू ॥
प्रभु तन चितै प्रेम प्रणठाना । कृपानिधानराम सब जाना ॥
सियहि बिलोकि तकेउधनुकैसे । चितवगरुड़लघुब्यालहिजैसे॥
दो० लषणलखेउ रघुबंशमणि ताकेउ हरकोदण्ड ।
पुलकिगात बोलेबचन चरणचापि ब्रह्मण्ड ॥
दिशिकुञ्जरहुकमठअहिकोला । धरहुधरणिधरि धीरनडोला ॥
राम चहहिं शंकर धनु तोरा । होहुसजगसुनि आयसुमोरा ॥
चाप समीप राम जब आये । नर नारिन सुरसुकृतमनाये ॥

सब कर संशय अरु अज्ञानू । मन्दमहीपनकर अभिमानू ॥
भृगुपति केरि गर्ब गरुआई । सुर मुनिवरन केरि कदराई ॥
सियकर शोच जनकपरितापा । रानिनकर दारुण दुखदापा ॥
शम्भु चाप बड़ बोहित पाई । चढ़े जाइ सब संग बनाई ॥
राम बाहु बल सिन्धु अपारा । चहतपार नहिंकोउकनहारा ॥

दो० राम बिलोकेलोग सब चित्र लिखेसे देखि ।
चितई सीय कृपायतन जानीबिकल बिशेखि ॥

देखी बिपुल बिकल बैदेही । निमिष बिहातकल्पसम तेही ॥
तृषित बारिबिनु जो तनु त्यागा । मुये करै का सुधा तड़ागा ॥
का बर्षा जब कृषी सुखाने । समयचूक पुनि कापछिताने ॥
अस जियजानि जानकी देखी । प्रभुपुलकेलखिप्रीतिबिशेखी ॥
गुरुहिप्रणाम मनहिंमन कीन्हा । अतिलाघवउठायधनुलीन्हा ॥
दमकेउदामिनिजिमिघनलयऊ । पुनिधनुनभमंडलसमभयऊ ॥
लेत चढ़ावत खैंचत गाढ़े । काहु न लखा देख सबठाढ़े ॥
तेहि क्षण मध्य राम धनुतोरा । भरेउभुवन ध्वनिघोरकठोरा ॥

छं० भरि भुवनघोरकठोर रव रविबाजितजिमारगचले ।
चिक्करहिंदिग्गजडोलमहि अहिकोलकूरमकलमले ॥
सुरअसुरमुनिकरकानदीन्हे सकल बिकलबिचारहीं ।
कोदण्डभञ्जेउ राम तुलसी जयतिबचनउचारहीं ॥

सो० शङ्करचाप जहाज सागर रघुबर बाहुबल ।
बूड़े सकल समाज चढ़े जे प्रथमहिं मोहबश ॥

प्रभु दोउखण्ड चाप महिडारे । देखि लोगसब भयेसुखारे ॥
कौशिकरूप पयोनिधि पावन । प्रेम बारिअवगाह सुहावन ॥
राम रूप राकेश निहारी । बढ़ी बीचि पुलकावलिभारी ॥
बाजे नभ गहगहे निशाना । देवबधू नाचहिं करिगाना ॥
ब्रह्मादिक सुर सिद्ध मुनीशा । प्रभुहिंप्रशंसाहिं देहिंअशीशा ॥
बरषहिं सुमन रंग बहु माला । गावहिं किन्नर गीतरसाला ॥

रहीभुवन भरि जयजय बानी । धनुषभङ्गध्वनि जातनजानी ॥
मुदितकहहिं जहँतहँ नरनारी । भञ्जेउराम शम्भुधनु भारी ॥
दो० बन्दी मागध सूतगण बिरद बदहिं मतिधीर ।
करहिंनिछावरिलोगसब हयगजधनमणिचीर ॥
झांझ मृदङ्ग शङ्ख सहनाई । भेरि ढोल दुन्दुभी सुहाई ॥
बाजहिं बहु बाजने सुहाये । जहँतहँ युवतिन मङ्गलगाये ॥
सखिनसहितहर्षित अतिरानी । सूखत धानपरा जनु पानी ॥
जनकलहेउ सुखशोच बिहाई । पैरत थके थाह जनु पाई ॥
श्रीहत भये भूप धनु टूटे । जैसे दिवस दीप छबि छूटे ॥
सियहियसुखवरणियकेहिभांती। जनु चातकपाये जलस्वाती ॥
रामहिं लषण बिलोकत कैसे । शशिहिचकोरकिशोरक जैसे ॥
शतानन्द तब आयसु दीन्हा । सीता गमन रामपहँ कीन्हा ॥
दो० संगसखी सुन्दरि चतुर गावहिं मंगलचार ।
गवनी बालमरालगति सुखमा अंग अपार ॥
सखिन मध्य सियसोहत कैसी । छबिगणमध्य महाछबि जैसी ॥
कर सरोज जयमाल सुहाई । विश्वविजय शोभा जनुछाई ॥
तन सकोच मन परम उछाहू । गूढ़ प्रेम लखि परै न काहू ॥
जाइ समीप राम छबि देखी । रहिजनुकुंवरि चित्रअवरेखी ॥
चतुर सखी लखि कहाबुझाई । पहिरावहु जयमाल सुहाई ॥
सुनत युगल कर माल उठाई । प्रेम विवश पहिराइ न जाई ॥
सोहत जनु युगजलजसनाला । शशिहिसभीत देतजयमाला ॥
गावहिं छबि अवलोकिसहेली । सिय जयमाल रामउरमेली ॥
सो० रघुवर उर जयमाल देखिदेव बरषहिं सुमन ।
सकुचेसकलभुआलजनुबिलोकिरविकुमुदगण ॥
पुर अरु ब्योम बाजने बाजे । खलभयेमलिनसाधुसबगाजे ॥
सुर किन्नर नर नाग मुनीशा । जयजयसबकहिदेहिंअशीशा॥
नाचहिं गावहिं बिबुधबधूटी । बारबार कुसुमावलि छूटी ॥

जहँ तहँ बिप्र बेदध्वनि करहीं । बन्दी बिरदावलि उच्चरहीं ॥
महि पाताल नाक यशव्यापा । राम बरी सिय भंजेउ चापा ॥
करहिं आरती पुर नर नारी । देहिं निछावरि बित्तिबिसारी ॥
सोहत सीय रामकी जोरी । छबि शृंगार मनहुँ इकठोरी ॥
सखीकहहिं प्रभु पद गहुसीता । करतिनचरणपरसअतिभीता॥
दो० गौतमतियगतिसुरतिकरि नहिंपरसतिपदपानि ।
मन बिहँसे रघुबंशमणि प्रीति अलौकिकजानि ॥
तब सियदेखि भूप अभिलाषे । कूर कपूत मूढ़ मन माषे ॥
उठिउठि पहिरिसनाह अभागे । जहँतहँ गाल बजावन लागे ॥
लेहु छुड़ाइ सीयकहँ कोऊ । धरिबांधहु नृपबालक दोऊ ॥
तोरे धनुष काज नहिं सरई । जीवत हमहिं कुँवरिको बरई ॥
जो विदेह कछुकरै सहाई । जीतहुसमरसहित दोउभाई ॥
साधु भूप बोले सुनिबानी । राज समाजहि लाजलजानी ॥
बल प्रताप बीरता बड़ाई । नाक पिनाकहि संगासिधाई ॥
सोइ शूरता कि अब कहुँ पाई । असबुधितौविधिमुंहमसिलाई॥
दो० देखहु रामहिं नयनभरि तजि ईर्षा मद मोहु ।
लषणरोष पावकप्रबल जानि शलभजनिहोहु ॥
बैनतेय बलि जिमिचहकागू । जिमिशशचहहिनागअरिभागू ॥
जिमिचहकुशल अकारणकोही । सुखसम्पदाचहहिशिवद्रोही ॥
लोभी लोलुप कीरति चहई । अकलङ्कता कि कामीलहई ॥
हरिपदबिमुख परमगति चाहा । तसतुम्हार लालचनरनाहा ॥
कोलाहल सुनिसीय सकानी । सखीलिवाय गईं जहँ रानी ॥
रामसुभाय चले गुरु पाहीं । सियसनेह बरणतमनमाहीं ॥
रानिन सहित शोचबशसीया । अबधौंबिधिहिकहाकरणीया॥
भूपबचन सुनि इतउततकहीं । लषणराम डरबोलिनसकहीं ॥
दो० अरुणनयन भृकुटी कुटिल चितवतनृपनसकोप ।
मनहुँ मत्तगजगण निरखि सिंहकिशोरहि चोप ॥

खरभर देखि विकल नरनारी । सब मिलिदेहिं महीपनगारी ॥
तेहिअवसर सुनिशिवधनुभङ्गा । आये भृगुकुल कमलपतङ्गा ॥
देखि महीप सकल सकुचाने । बाजझपट जनुलवालुकाने ॥
गौर शरीर भूति भलिभ्राजा । भालबिशाल त्रिपुंड् बिराजा ॥
शीशजटा शशि बदन सुहावा । रिसबशकछुकअरुणहोइआवा ॥
भृकुटी कुटिल नयन रिसराते । सहजहिंचितवतमनहुँरिसाते ॥
बृषभ कन्ध उरबाहु बिशाला । चारु जनेउ मालमृगछाला ॥
कटि मुनि बसन तूण दुइबाँधे । धनुशर कर कुठार कलकाँधे ॥
दो॰ सन्त वेष करणी कठिन बरणि न जायस्वरूप ।
धरि मुनि तनु जनु बीररस आये जहँ सबभूप ॥
देखत भृगुपति वेष कराला । उठेसकलभय विकलभुवाला ॥
पितु समेतकहिकहि निजनामा । लगे करनसब दण्ड प्रणामा ॥
जेहिस्वभावचितवहिंहितजानी । सो जानै जनुआयु खुटानी ॥
जनक बहोरि आय शिरनावा । सीय बुलाय प्रणाम करावा ॥
आशिष दीन्ह सखी हरषानी । निज समाज लै गई सयानी ॥
बिश्वामित्र मिले पुनि आई । पद सरोज मेले दोउ भाई ॥
राम लषण दशरथ के ढोटा । दीन्हअशीष जानिभलजोटा ॥
रामहिं चितयरहे थकिलोचन । रूप अपार मार मदमोचन ॥
दो॰ बहुरि बिलोकि बिदेह सन कहहुकहा अतिभीर ।
पूछत जान अजान जिमि व्यापेउ कोप शरीर ॥
समाचार कहि जनक सुनाये । जेहि कारण महीप सबआये ॥
सुनतबचन फिरि अनतनिहारे । देखे चाप खण्ड महि डारे ॥
अतिरिस बोले बचन कठोरा । कहुजड़जनक धनुषकेइँतोरा ॥
बेगि दिखाव मूढ़ नतु आजू । उलटौंमहि जहँलगितवराजू ॥
अति डर उतर देत नृप नाहीं । कुटिल भूप हरषे मन माहीं ॥
सुर मुनि नाग नगर नर नारी । शोचहिं सकलत्रासउरभारी ॥
मन पछिताति सीय महतारी । बिधिसँवारि सबबात बिगारी ॥

भृगुपतिकर स्वभावसुनिसीता । अर्द्ध निमेष कल्प समबीता ॥

दो० सभय विलोके लोग सब जानि जानकी भीर ।
हृदय न हर्ष विषाद कछु बोले श्री रघुबीर ॥

नाथ शम्भु धनु भञ्जनहारा । होइहिकोउयकदासतुम्हारा ॥
आयसुकहा कहिय किन मोही । सुनिरिसाय बोले मुनिकोही ॥
सेवक सो जो करै सेवकाई । अरिकरणीकरि करियलराई ॥
सुनहु राम जेइँ शिवधनुतोरा । सहसबाहु सम सोरिपुमोरा ॥
सो बिलगाइ विहाइ समाजा । नतु मारे जैहैं सब राजा ॥
सुनिमुनिबचन लषणमुसुकाने । बोले परशुधरहि अपमाने ॥
बहु धनुहीं तोरेउँ लरिकाईं । कबहुंनअसरिसकीन्हगुसाईं ॥
इहि धनुपर ममता केहि हेतू । सुनिरिसायकह भृगुकुलकेतू ॥

दो० रेनृप बालक कालबश बोलत तोहिं न सँभार ।
धनुहींसम त्रिपुरारि धनु बिदितसकल संसार ॥

लषण कहा हँसि हमरे जाना । सुनहु देव सब धनुषसमाना ॥
का क्षतिलाभ जीर्ण धनु तोरे । देखा राम नये के भोरे ॥
छुवत टूट रघुपतिहिं न दोषू । मुनिबिनुकाजकरिय कतरोषू ॥
बोले चितय परशु की ओरा । रेशठ सुनेसिप्रभाव न मोरा ॥
बालक बोलि बधौं नाहिं तोहीं । केवलमुनिजड़जानेसिमोहीं ॥
बाल ब्रह्मचारी अतिकोही । विश्वविदितक्षत्रियकुलद्रोही ॥
भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्ही । बिपुलबार महिदेवन दीन्ही ॥
सहसबाहु भुज छेदनहारा । परशु बिलोकु महीपकुमारा ॥

दो० मातु पितहि जनिशोचबश करसि महीपकिशोर ।
गर्भनके अर्भक दलन परशु मोर अति घोर ॥

बिहँसि लषण बोले मृदुबानी । अहो मुनीश महा भट मानी ॥
पुनिपुनि मोहिं देखाव कुठारा । चहत उड़ावन फूंकि पहारा ॥
इहां कुम्हड़ बतिया कोउनाहीं । जो तर्जनि देखत मरिजाहीं ॥
देखि कुठार शरासन बाना । मैंकछुकहासहित अभिमाना ॥

भृगुकुलसमुझिजनेउ बिलोकी । जो कछु कहहुसहौं रिसरोकी ॥
सुर महिसुर हरिजन अरुगाई । हमरे कुल इनपर न शुराई ॥
बधे पाप अपकीरति हारे । मारतहूं पाँपरिय तुम्हारे ॥
कोटिकुलिशसमबचन तुम्हारा । बृथाधरहु धनुबाण कुठारा ॥
दो० जो बिलोकिअनुचितकहेउँ सुनहुमहामुनि धीर ।
सुनिसरोष भृगुबंश मणि बोले गिरा गँभीर ॥
कौशिकसुनहुमन्दयहबालक । कुटिलकालवशनिजकुलघालक ॥
भानु बंश राकेश कलंकू । निपट निरंकुश अबुधअशंकू ॥
कालकवर होइहि क्षण माहीं । कहौंपुकारि खोरि मोहिंनाहीं ॥
तुम हटकहु जो चहहु उबारा । कहि प्रतापबल रोषहमारा ॥
लषणकहेउमुनिसुयशतुम्हारा । तुमहिं अछत को बरणैपारा ॥
अपनेमुख तुम आपनिकरणी । बार अनेक भाँति बहुबरणी ॥
नाहिं संतोष तो पुनिकछु कहहू । जनिरिसरोंकिदुसहदुखसहहू ॥
बीरब्रत्ति तुम धीर अक्षोभा । गारीदेत न पावहु शोभा ॥
दो० शूर समर करणी कराहिं कहि न जनावहिंआपु ।
विद्यमान रणपाइ रिपु कायर कथहिं प्रतापु ॥
तुमतौ काल हाँकि जनु लावा । बारबार मोहिं लागिबुलावा ॥
सुनत लषण के बचन कठोरा । परशु सुधारिधरेउ करघोरा ॥
अबजनि देहु दोष मोहिंलोगू । कटुबादी बालक बध योगू ॥
बाल बिलोकि बहुत मैं बाँचा । अब यह मरनहारभा साँचा ॥
कौशिक कहा क्षमिय अपराधू । बालदोषगुणगणहिं न साधू ॥
कर कुठार मैं अकरुण कोही । आगे अपराधी गुरुद्रोही ॥
उतर देत छाँड़ों बिनु मारे । केवल कौशिक शील तुम्हारे ॥
नतुइहि काटि कुठार कठोरे । गुरुहिंउऋणहोतेउँ श्रमथोरे ॥
दो० गाधिसुवनकह हृदयहँसि मुनिहिंहरिअरे सूझ ।
अजगवखण्डेउऊखजिमिअजहुँनबूझअबूझ ॥
क्षमो लषण मुनिशीलतुम्हारा । कोनहिंजान बिदित संसारा ॥

मातहिंपिताहिं उऋण भयनीके । गुरुऋणरहा शोचबड़जीके॥
सो जनु हमरे माथे काढ़ा ।दिनचलिगयउब्याजबहुबाढ़ा॥
अबआनिय ब्यवहरिया बोली । तुरत देउँ मैं थैली खोली॥
सुनिकटुबचन कुठार सुधारा । हाहा कहिसबलोग पुकारा॥
भृगुवर परशु देखावहु मोही । बिप्रबिचारि बचौ नृपद्रोही॥
मिले न कबहुं सुभट रणगाढ़े । द्विज देवता घरहि के बाढ़े॥
अनुचितकहि सबलोग पुकारे । रघुपतिसैनहिंलषण निवारे॥

दो० लषण उतरआहुतिसरिस भृगुवर कोपकृशानु ।
बढ़त देखिजल सम बचन बोले रघुकुलभानु ॥

नाथ करहु बालकपर छोहू । शुद्धदूध मुखकरिय न कोहू॥
जोपैप्रभु प्रभाव कछु जाना । तौकि बराबर करत अयाना॥
जोलरिका कछु अनुचितकरहीं । गुरुपितुमातु मोदमनभरहीं॥
करिय कृपा शिशु सेवकजानी । तुमसमशीलधीर मुनिज्ञानी॥
रामबचन सुनि कछुक जुड़ाने । कहिकछुलषणबहुरिमुसुकाने॥
हँसतदेखिनखशिख रिसब्यापी । रामतोर भ्राता बड़ पापी॥
गौर शरीर श्याम मनमाहीं । कालकूट मुख पयमुख नाहीं॥
सहज टेढ़ अनुहरै न तोहीं । नीचमीचसम लखै न मोहीं॥

दो० लषण कहेउ हँसि सुनहुमुनि क्रोध पापकर मूल ।
जेहिवशजनअनुचितकरहिंचरहिंविश्वप्रतिकूल ॥

मैं तुम्हार अनुचर मुनिराया । परिहरिकोप करियअबदाया॥
टूटचाप नहिं जुरहि रिसाने । बैठिय होइहिं पाँय पिराने॥
जो अतिप्रिय तौ करिय उपाई । जोरियकोउ बड़गुणीबुलाई॥
बोलत लषणहिं जनक डराहीं । मष्टकरहुअनुचित भलनाहीं॥
थर थर काँपहिं पुर नर नारी । छोटकुमार खोट अतिभारी॥
भृगुपतिसुनिसुनि निर्भयबानी । रिसतनुजरै होय बलहानी॥
बोले रामहिं देइ निहोरा । बचौबिचारिबन्धुलघु तोरा॥
मन मळीन तन सुन्दर कैसे । बिषरसभरा कनकघट जैसे॥

दो० सुनि लक्ष्मण बिहँसे बहुरि नयन तरेरे राम ।
गुरु समीप गवने सकुचि परिहरि बाणीबाम ॥
अति बिनीतमृदुशीतल बाणी । बोलेराम जोरि युग पाणी ॥
सुनहु नाथ तुम सहज सुजाना । बालकबचनकरियनहिंकाना ॥
बररे बालक एक स्वभाऊ । इनाहिं न सन्तबिदूषहिंकाऊ ॥
तिन नाहीं कछु काज बिगारा । अपराधी मैं नाथ तुम्हारा ॥
कृपा कोप बध बन्धु गुसाईं । मोपर करिय दासकी नाईं ॥
कहियबेगि जेहिबिधि रिसजाई । मुनिनायक सोइकरियउपाई ॥
कह मुनि राम जाइ रिस कैसे । अजहुँबन्धुतव चितवअनैसे ॥
इहिके कण्ठ कुठार न दीन्हा । तोमैं कहा कोपकरि कीन्हा ॥
दो० गर्भस्रवहिं अवनिपरमणि सुनि कुठारगति घोर ।
परशु अछत देखौं जियत बैरी भूप किशोर ॥
बहै न हाथ दहै रिस छाती । भा कुठार कुण्ठित नृपघाती ॥
भयउबाम बिधिफिरेउस्वभाऊ । मोरे हृदय कृपा कस काऊ ॥
आजु दैव दुख दुसह सहावा । सुनिसौमित्रबिहँसिशिरनावा ॥
बाउ कृपा मूरति अनुकूला । बोलतबचन झरतजनुफूला ॥
जो पै कृपा जरै मुनि गाता । क्रोधभये तनु राखु बिधाता ॥
देखु जनक हठि बालक येहू । कीन्हचहत जड़ यमपुरगेहू ॥
वेगि करहु किन आंखिनओटा । देखत छोट खोट नृपढोटा ॥
बिहँसे लषण कहा मुनिपाहीं । मूंदियआंखिकतहुँकोउनाहीं ॥
दो० परशुराम तबरामप्रति बोले बचन सक्रोध ।
शम्भुशरासन तोरिशठ करासि हमार प्रबोध ॥
बन्धुकहै कटु सम्मत तोरे । तूछल बिनय करसिकरजोरे ॥
करु परितोष मोर संग्रामा । नाहिंत छांडु कहाउबरामा ॥
छलतजिकरहुसमर शिवद्रोही । बन्धुसहित नतु मारौं तोही ॥
भृगुपति तमकिकुठार उठाये । मनमुसुकाहिं राम शिरनाये ॥
गुणहु लषण कर हमपर रोषू । कतहुं सुधाइहु ते बड़दोषू ॥

टेढ़ जानि शङ्का सब काहू । बक्र चन्द्रमहिं ग्रसै न राहू ॥
रामकहेउ रिसतजिय मुनीशा । कर कुठार आगे यह शीशा ॥
जेहिरिसजाइकरियसोइस्वामी । मोहिंजानि आपनअनुगामी ॥
॥ दो० प्रभुहिं सेवकहिं समरकस तजहु बिप्र बररोष ।
वेष बिलोकि कहेसि कछु बालकहू नहिं दोष ॥
देखि कुठार बाण धनु धारी । भैलरिकहि रिसबीर बिचारी ॥
नाम जानपै तुमहिं न चीन्हा । बंशस्वभाव उतरतेहिदीन्हा ॥
जो तुम अवतेउ मुनिकी नाईं । पदरजशिरशिशुधरतगुसाईं ॥
क्षमहु चूक अनजानत केरी । चहिय बिप्र उर कृपा घनेरी ॥
हमहिंतुमहिंसरिबरिकस नाथा । कहहुतो कहांचरणकहँमाथा ॥
राम मात्र लघु नाम हमारा । परशुसहितबड़नामतुम्हारा ॥
देव एक गुण धनुष हमारे । नव गुण परमपुनीत तुम्हारे ॥
सब प्रकार हम तुमसन हारे । क्षमहु बिप्र अपराध हमारे ॥
॥ दो० बार बार मुनि बिप्रबर कहा राम सन राम ।
बोले भृगुपति सरुषहोइ तुहूं बन्धुसम बाम ॥
निपटहि द्विजकरिजानेहु मोहीं । मैं जस बिप्र सुनाऊं तोहीं ॥
चापश्रुवा शर आहुति जानू । कोपमोर अति घोर कृशानू ॥
समिध सेन चतुरंग सुहाई । महा महीप भये पशुआई ॥
मैंइहि परशुकाटि बलि दीन्हा । समरयज्ञ जगकोटिनकीन्हा ॥
मोर प्रभाव बिदित नहिं तोरे । बोलसि निदरि बिप्रकेभोरे ॥
भंजेउ चाप दाप बड़ बाढ़ा । अहमितिमनहुँजीतिजगकाढ़ा ॥
रामकहा मुनि कहहु बिचारी । रिसअतिबड़लघुचूकहमारी ॥
छुवतहि टूट पिनाक पुराना । मैं केहिहेतु करौं अभिमाना ॥
॥ दो० जोहम निदरहिंबिप्रबदि सत्यसुनहु भृगुनाथ ।
तौ असकोजगसुभटजेहि भयबशनावहिंमाथ ॥
देव दनुज भूपति भट नाना । समबलअधिकहोउबलवाना ॥
जो रण हमहिं प्रचारय कोऊ । लरहिं सुखेनकालकिनहोऊ ॥

क्षत्रिय तनुधरि समर सकाना । कुल कलंक तेहिपांवरजाना ॥
कहौं स्वभाव न कुलहिंप्रशंसी । कालहुडरहिं न रणरघुबंसी ॥
बिप्र बंशकी अस प्रभुताई । अभय होइजो तुमहिं डराई ॥
सुनि मृदुगूढ़ बचन रघुपतिके । उघरेपटल परशुधर मतिके ॥
राम रमापति कर धनु लेहू । खैंचहु चाप मिटै संदेहू ॥
देत चाप आपुहि चढ़ि गयऊ । परशुराममन बिस्मयभयऊ ॥

दो० जाना राम प्रभाव तब पुलक प्रफुल्लितगात ।
जोरिपाणि बोले बचन प्रेम न हृदय समात ॥

जय रघुबंश बनज बन भानू । गहनदनुजकुल दहनकृशानू ॥
जय सुर बिप्र धेनु हितकारी । जय मदमोहक्रोह भ्रमहारी ॥
बिनयशील करुणागुणसागर । जयतिवचनरचनाअतिनागर ॥
सेवक सुखद सुभग सबअंगा । जय शरीर छबिकोटिअनंगा ॥
करौं कहा मुख एक प्रशंसा । जय महेश मन मानसहंसा ॥
अनुचित बहुत कहेउँ अज्ञाता । क्षमहुक्षमा मन्दिरदोउ भ्राता ॥
कहिजयजय जयरघुकुल केतू । भृगुपति गये बनहिं तपहेतू ॥
अपभय कुटिल महीप डराने । उठिउठि कायरगवहिं पराने ॥

दो० देवन दीन्ही दुन्दुभी प्रभुपर बरषहिं फूल ।
हरषे पुर नरनारि सब मिटा मोह भयशूल ॥

अति गहगहे बाजने बाजे । सबहिं मनोहर मंगल साजे ॥
यूथयूथमिलि सुमुखिसुनयनी । कराहिंगानकलकोकिलबयनी ॥
सुख बिदेहकर बरणि न जाई । जन्म दरिद्रमनहुँ निधिपाई ॥
बिगत त्रास भइ सीयसुखारी । जनु बिधुउदयचकोरकुमारी ॥
जनककीन्हकौशिकहि प्रणामा । प्रभु प्रसाद धनु भंजेउरामा ॥
मोहिंकृतकृत्य कीन्ह दुहुँभाई । अबजोउचितसोकहियगुसाँई ॥
कह मुनि सुनु नरनाह प्रबीना । रहा बिवाह चाप आधीना ॥
टूटतही धनु भयउ बिवाहू । सुरनरनाग बिदितसबकाहू ॥

दो० तदपि जाइतुम करहु अब यथा बंश ब्यवहार ।

बूझि बिप्र कुलवृद्ध गुरु वेद विदित आचार ॥
दूत अवधपुर पठवहु जाई । आनै नृप दशरथहिं बुलाई ।
मुदितराउ कहि भलेहिकृपाला । पठये दूत अवध तेहिकाला ।
बहुरि महाजन सकल बुलाये । आइ सबनिसादर शिरनाये ।
हाट बाट मन्दिर पुर बासा । नगर सँवारहु चारिहु पासा ।
हरषिचले निजनिज गृहआये । पुनि परिचारक बोलिपठाये ।
रचहु विचित्र वितान बनाई । शिर धरिबचनचले सचुपाई ।
पठये बोलि गुणी तिन्हनाना । जेवितानविधिकुशलसुजाना ।
विधिहिबन्दितिन्हकीन्हअरम्भा । बिरचे कनककेदलीथम्भा ।
दो० हरित मणिनके पत्र फल पद्मराग के फूल ।
रचना देखिबिचित्र अति मनविरंचिकरभूल ॥
बेणु हरित मणिमय सबकीन्हे । सरस सबर्णपरहिनाहिंचीन्हे ।
कनक कलित अहिबेलिबनाई । लखि नहिं परै सुवर्णसुहाई ।
तेहिके रचि पचि बन्ध बनाये । बिचबिच मुकतादामसुहाये ।
माणिकमरकतकुलिश पिरोजा । चीरि कोरि पचिरचेसरोजा ।
किये भृङ्ग बहु रङ्ग बिहङ्गा । गुञ्जहिंकुञ्जहिंपवनप्रसङ्गा ।
सुरप्रतिमा खम्भन गहिकाढ़ीं । मङ्गलद्रव्य लिये सब ठाढ़ीं ।
चौके भांति अनेक पुराईं । सिन्दुरमणिमयसहजसुहाईं ।
दो० सौरभ पल्लव सुभगसुठि किये नीलमणिकोर ।
हेम बौर मरकत घवरि लसतपाटमय डोर ॥
रचे रुचिर वर बन्दनवारे । मनहुँ मनोभव फन्द सँवारे ।
मङ्गल सकल अनेक बनाये । ध्वज पताकपट चमरसुहाये ।
दीप मनोहर मणिमय नाना । जाइनबरणिविचित्रविताना ।
जेहि मण्डप दुलहिनि वैदेही । सोबरणै असमति कबिकेही ।
दूलह राम रूप गुण सागर । सोवितान तिहुँलोकउजागर ।
जनक भवनकी शोभा जैसी । गृह गृहपति पुरदेखियतैसी ।
जेहितिरहुतितेहि समयनिहारी । तेहिलघुलगेभुवन दशचारी ।

जो सम्पदा नीच गृह सोहा । सो बिलोकिसुरनायकमोहा ॥

दो० बसै नगर जेहि लक्षिकरि कपट नारि वरवेष ।
तेहि पुरकी शोभा कहत सकुचैं शारद शेष ॥

पहुंचे दूत रामपुर पावन । हरषे नगर बिलोकिसुहावन ॥
भूपद्वार तिन खबरि जनाई । दशरथनृप सुनिलिये बुलाई ॥
करि प्रणाम तिन्हपातीदीन्ही । मुदितमहीपआपउठिलीन्ही ॥
बारि बिलोचन बांचत पाती । पुलकिगात आई भरि छाती ॥
राम लषण उर कर बर चीठी । रहिगये कहत न खाटीमीठी ॥
पुनि धरि धीर पत्रिका बांची । हरषीसभा बात सुनिसांची ॥
खेलत रहे तहां सुधि पाई । आये भरतसहित दोउभाई ॥
पूछत अति सनेह सकुचाई । तात कहां ते पाती आई ॥

दो० कुशलप्राणप्रियबन्धुदोउ अहहिंकहहु केहिदेश ।
सुनि सनेह साने वचन बांची बहुरि नरेश ॥

सुनिपाती पुलके दोउ भ्राता । अधिकसनेह समात न गाता ॥
प्रीति पुनीत भरतकी देखी । सकलसभासुखलहेउबिशेखी ॥
तब नृप दूत निकट बैठारे । मधुर मनोहर बचन उचारे ॥
भैया कुशल कहहु दोउ बारे । तुमनीके निजनयन निहारे ॥
श्यामल गौर धरे धनु भाथा । बयकिशोरकौशिकमुनिसाथा ॥
पहिचानेउ तो कहहु स्वभाऊ । प्रेमविवश पुनिपुनि कहराऊ ॥
जादिन ते मुनिगये लिवाई । तबते आजु सांचि सुधिपाई ॥
कहहु बिदेह कवनबिधिजाने । सुनिप्रियबचन दूतमुसुकाने ॥

दो० सुनहुमहीपति मुकुटमणि तुमसम धन्य न कोउ ।
रामलषण जिनके तनय विश्व विभूषण दोउ ॥

पूंछन योग न तनय तुम्हारे । पुरुषसिंह तिहुँपुर उजियारे ॥
जिनके यश प्रताप के आगे । शशिमलीन रबिशीतललागे ॥
तिनकहँकहियनाथकिमिचीन्हे । देखियरबिहि किदीपकलीन्हे ॥
सीय स्वयम्बर भूप अनेका । सिमिटे सुभट एक ते एका ॥

शम्भु शरासन काहु न टारा। हारे सकल भूप बरिआरा॥
तीन लोकमहँ जे भटमानी। सबकीशक्ति शम्भु धनुभानी॥
सकै उठाइ सुरासुर मेरू। सो हियहारि गयउ करफेरू॥
जेहि कौतुक शिवशैल उठावा। सोउ तेहिसभा पराभवपावा॥
दो० तहांराम रघुबंश मणि सुनिय महा महिपाल।
भंजेउचाप प्रयासबिनु जिमिगज पंकजनाल॥
सुनि सरोष भृगुनायक आये। बहुतभांतितिनआंखिदिखाये॥
देखिरामबल निजधनु दीन्हा। करि बहुविनयगवनबनकीन्हा॥
राजत राम अतुलबल जैसे। तेजनिधान लषण पुनि तैसे॥
कम्पहिं भूप बिलोकत जाके। जिमिगजहरिकिशोरके ताके॥
देव देखि तव बालक दोऊ। अवनिआंखतरआव न कोऊ॥
दूत बचन रचना प्रियलागी। प्रेम प्रताप बीर रसपागी॥
सभा समेत राउ अनुरागे। दूतहि देन निछावरि लागे॥
कहिअनीति तेहि मूंदेउ काना। धर्मबिचारिसबहिं सुखमाना॥
दो० तबउठि भूप बशिष्ठ कहँ दीन्हि पत्रिकाजाइ।
कथा सुनाई गुरुहिं सब सादर दूत बुलाइ॥
सुनिबोले मुनि अतिसुखपाई। पुण्यपुरुषकहँ महिसुखछाई॥
जिमिसरिता सागर महँ जाहीं। यद्यपि ताहि कामना नाहीं॥
तिमिसुखसम्पतिबिनहिंबुलाये। धर्मशील पहँ जाहिं सुभाये॥
तुम गुरु विप्र धेनु सुरसेवी। तसि पुनीत कौशल्या देवी॥
सुकृती तुम समान जगमाहीं। भयउ न है कोउ होनेउनाहीं॥
तुमते अधिकपुण्य बड़ काके। राजन राम सरिस सुतजाके॥
बीर विनीत धर्म व्रत धारी। गुणसागर बालकबर चारी॥
तुम कहँ सर्व्वकाल कल्याना। सजहुबरात बजाइ निशाना॥
दो० चलेउ वेगिसुनिगुरुबचन भलेहिनाथ शिरनाइ।
भूपति गवने भवन तब दूतहिं बास दिवाइ॥
राजा सब रनिवास बुलाई। जनक पत्रिका बांचि सुनाई॥

सुनि सन्देश सकल हरषानी । अपरकाज सब भूपबखानी ॥
प्रेम प्रफुल्लित राजा रानी । मनहुँशिखिनसुनिबारिदबानी ॥
मुदित अशीश देहिं गुरुनारी । बारहिंबार मगन महतारी ॥
लेहिं परस्पर अतिप्रिय पाती । हृदय लगाइ जुड़ावहिंछाती ॥
राम लषण की कीरति करणी । बारहिंबार भूप बर बरणी ॥
मुनि प्रसाद कहि द्वारसिधाये । रानिन्ह तब महिदेव बुलाये ॥
दिये दान आनन्द समेता । चले बिप्रवर आशिष देता ॥
सो० याचकलिये हँकारि दीन्हिनिछावरि कोटिबिधि ।
चिरजीवहु सुत चारि चक्रवर्त्ति दशरत्थके ॥
कहत चले पहिरे पट नाना । हरषि हने गह गहे निशाना ॥
समाचार सब लोगन पाये । लागे घर घर होन बधाये ॥
भुवन चारि दश भरेउ उछाहू । जनक सुता रघुबीर बिवाहू ॥
सुनि शुभ कथा लोगअनुरागे । मग गृह गली सँवारनलागे ॥
यद्यपि अवध सदैव सुहावनि । राम पुरी मङ्गल मय पावनि ॥
तदपि प्रीति की रीति सुहाई । मङ्गल रचना रची बनाई ॥
ध्वज पताक पट चामर चारू । छावा परम बिचित्र बजारू ॥
कनककलश तोरणमणिजाला । हरद दूब दधि अक्षतमाला ॥
दो० मङ्गलमय निजनिज भवन लोगन रचे बनाइ ।
बीथी सींची चतुर सब चौके चारु पुराइ ॥
जहँतहँयूथयूथमिलिभामिनि । सजिनवसप्तसकलद्युतिदामिनि ॥
बिधुबदनी मृगशावकलोचनि । निजस्वरूपरतिमानबिमोचनि ॥
गावहिं मङ्गल मञ्जुल बानी । सुनिकलरवकलकण्ठलजानी ॥
भूप भवन किमिजाइ बखाना । बिश्वबिमोहनरचेउ बिताना ॥
मङ्गल द्रव्य मनोहर नाना । गाजतबाजतबिपुलनिशाना ॥
कतहुं बिरद बन्दी उच्चरहीं । कतहुं वेदध्वनि भूसुर करहीं ॥
गावहिं सुन्दरि मङ्गल गीता । लैलै नाम राम अरु सीता ॥
बहुत उछाह भवन अतिथोरा । मानहुंउमगिचला चहुंओरा ॥

दो० शोभा दशरथ भवनकी को कबि बरणै पार ।
जहां सकल सुरशीशमणि रामलीन्ह अवतार ॥
भूप भरत पुनि लिये बुलाई । हयगजस्यन्दन साजहुजाई ॥
चलहु बेगि रघुबीर बराता । सुनत पुलक पूरे दोउभ्राता ॥
भरत सकल साहनी बुलाये । आयसुदीन्हमुदित उठिधाये ॥
रचिरुचि तुरगसाज तिनसाजे । बर्ण बर्ण बर बाजि बिराजे ॥
सुभगसकलसुठिचंचलकरणी । अयजिमिजरतधरतपगुधरणी ॥
नाना भांति न जाहिं बखाने । निदरिपवनजनुचहत उड़ाने ॥
तिन पर छयल भये असवारा । भरतसरिस सब राजकुमारा ॥
सब सुन्दर सब भूषण धारी । करशर चाप तूण कटिभारी ॥
दो० छरे छबीले छयल सब शूर सुजान नबीन ।
युगपदचर असवारप्रति जे असिकलाप्रवीन ॥
बांधे बिरद बीर रण गाढ़े । निकसि भये पुरबाहिर ठाढ़े ॥
फेरहिं चतुर तुरङ्गनि नाना । हरषहिंधुनिसुनिपणवनिशाना ॥
रथ सारथिन बिचित्र बनाये । ध्वजपताक मणिभूषणछाये ॥
चमरचारु किंकिणिध्वनिकरहीं । भानुयान शोभा अपहरहीं ॥
श्याम कर्ण अगणित हयहोते । तेतिन्ह रथनसारथिन जोते ॥
सुन्दर सकल अलंकृत सोहैं । जिनहिंबिलोकतमुनिमनमोहैं ॥
जेजल चलहिं थलहिं की नाईं । टाप न बूड़ बेग अधिकाई ॥
अस्त्र शस्त्र सब साज सजाई । रथी सारथिन लिये बुलाई ॥
दो० चढ़ि चढ़ि रथ बाहर नगर लागी जुरन बरात ।
होतसगुन सुन्दर सुखद जो जेहि कारजजात ॥
सुन्दर हस्तिन सोह अँबारी । कहिनजाय जेहिभांतिसँवारी ॥
चले मत्त गज घण्ट बिराजे । मनहुँ सुभगसावन घनगाजे ॥
बाहन अपर अनेक बिधाना । शिबिकासुभगसुखासनयाना ॥
तिन्हचढ़ि चले बिप्रबर बृन्दा । जनुतनुधरेसकलश्रुतिछन्दा ॥
मागध सूत बन्दि गुण गायक । चलेयानचढ़िजो जेहिलायक ॥

बेसर ऊंट वृषभ बहु जाती । चलेबस्तुभरिअगणितभांती ॥
कोटिन कांवरि चले कहारा । बिबिध बस्तु को बरणैपारा ॥
चले सकल सेवक समुदाई । निजनिज साजसमाजबनाई ॥
दो० सबके उर निर्भर हरष पूरित पुलक शरीर ।
कबहि देखिहैं नयनभरि रामलषण दोउबीर ॥
गरजहिं गज घण्टाध्वनि घोरा । रथरव बाजिहींस चहुँओरा ॥
निदरिघनहिघुमराहिं निशाना । निजपरावकछुसुनियनकाना ॥
महाभीर भूपति के द्वारे । रज होइजायँ पषाण पँवारे ॥
चढ़ी अटारिन देखहिं नारी । लिये आरती मंगल थारी ॥
गावहिं गीत मनोहर नाना । अतिअनन्दनहिं जाइबखाना ॥
तब सुमन्त दुइस्यन्दन साजी । जोतेरविहय निन्दक बाजी ॥
दोउ रथ रुचिर भूपपहँ आने । नहिंशारद प्रतिजाहिंबखाने ॥
राज समाज एक रथ आजा । दूसर तेज पुंज अति राजा ॥
दो० तेहि रथ रुचिर बशिष्ठ कहँ हरषि चढ़ाइ नरेश ।
आपु चढ़ेउ स्यंदनसुमिरि हरगुरु गौरि गणेश ॥
सहित बशिष्ठ सोह नृप कैसे । सुरगुरु संग पुरन्दर जैसे ॥
करि कुलरीति वेदविधि राऊ । देखिसबहि सबभांतिबनाऊ ॥
सुमिरि राम गुरुआयसु पाई । चले महीपति शंख बजाई ॥
हरषे विबुध बिलोकि बराता । बरषहिंसुमन सुमंगल दाता ॥
भयउकोलाहल हय गजगाजे । व्योम बरात बाजने बाजे ॥
सुर नर नारि सुमंगल गाई । सरसराग बाजहिं सहनाई ॥
घण्टघंटि ध्वनि बरणि न जाई । सरौं करैं पायक फहराई ॥
कराहिं बिदूषक कौतुक नाना । हासकुशलकलगान सुजाना ॥
दो० तुरँग नचावहिं कुंवरबर अँकनि मृदंग निशान ।
नागरनटचितवहिंचकित डिगहिनतालविधान ॥
बनै न बरणत बनी बराता । होइंसगुन सुन्दर शुभदाता ॥
चारा चाख बामदिशि लेई । मनहुँ सकल मंगल कहिदेई ॥

दाहिन काग सुखेत सुहावा । नकुल दरश सबकाहुनपावा ॥
सानुकूल बह त्रिबिध बयारी । सघट सबाल आव बरनारी ॥
लोवा फिरिफिरिदरश दिखावा । सुरभीसन्मुखशिशुहिंपियावा ॥
मृगमाला दाहिनिदिशि आई । मंगलगण जनु दीनदिखाई ॥
क्षेमकरी कह क्षेम विशेखी । श्यामा बाम सुतरुपर देखी ॥
सन्मुखआयउ दधि अरुमीना । कर पुस्तक दुइविप्र प्रवीना ॥
दो० मंगलमय कल्याणमय अभिमत फलदातार ।
जनु सब सांचेहोन हित भये सगुन इकबार ॥
मंगल शकुन सुगम सब ताके । सगुण ब्रह्म सुन्दर सुतजाके ॥
रामसरिसबर दुलहिन सीता । समधी दशरथजनकपुनीता ॥
सुनिअसब्याह सगुनसबनाचे । अबकीन्हें बिरंचि हमसांचे ॥
इहिविधि कीन्हबरात पयाना । हयगजगाजहिंहनहिंनिशाना ॥
आवत जानि भानुकुल केतू । सरितन जनक बँधाये सेतू ॥
बीच बीच बर बास बनाये । सुरपुर सरिस सम्पदाछाये ॥
असन शयनबरबसन सुहाये । पावहिंसबनिजनिजमनभाये ॥
नितनूतन सुखलखि अनुकूला । सकल बरातिन मन्दिरभूला ॥
दो० आवतजानिबरात बर सुनि गहगहे निशान ।
सजि गजरथ पदचर तुरँग लेनचले अगवान ॥
कनक कलश कल कोपर थारा । भोजनललित अनेकप्रकारा ॥
भरे सुधासम सब पकवाना । भांतिभांतिनहिंजाहिंबखाना ॥
फल अनेक बर बस्तु सुहाई । हरषि भेंट हित भूप पठाई ॥
भूषण बसन महामणि नाना । खगमृगहयगजबहुबिधियाना ॥
मंगल सगुन सुगन्ध सुहाये । बहुतभांति महिपाल पठाये ॥
दधि चिड़ुवा उपहार अपारा । भरि भरि कांवरि चले कहारा ॥
अगवानन जब दीख बराता । उर आनन्द पुलक भरगाता ॥
देखि बनाव सहित अगवाना । मुदित बरातिन हनेनिशाना ॥
दो० हरषि परस्पर मिलन हित कछुक चले बगमेल ।

जनु आनन्द समुद्र दुइ मिलत बिहाय सुबेल ।
बरषि सुमन सुरसुन्दरिगावहिं । मुदितदेव दुन्दुभी बजावहिं ॥
बस्तु सकल राखी नृपआगे । बिनयकीन्हतिन्हअतिअनुरागे ॥
प्रेमसमेत राउ सब लीन्हा । भै बखशीशयाचकन दीन्हा ॥
करि पूजा मान्यता बड़ाई । जनवासे कहँ चले लिवाई ॥
बसन बिचित्र पांवड़े परहीं । नृप दशरथ तापर पगधरहीं ॥
देखि धनदधनमद परिहरहीं । बरषिसुमनसुरजयजयकरहीं ॥
अति सुन्दर दीन्हेउ जनवासा । जहँसबकहँ सब भांतिसुपासा ॥
जानी सिय बरातपुर आई । कछुनिज महिमाप्रकटजनाई ॥
हृदय सुमिरि सबसिद्धि बुलाईं । भूप पहुनई करन पठाईं ॥
दो० सिय आयसु शिरसिद्धिधरि गईं जहां जनवास ।
लिये सम्पदा सकल सुख सुरपुर भोगबिलास ॥
निजनिजबास बिलोकिबराती । सुरसुखसकलसुलभसबभांती॥
बिभव भेद कछुकाहुन जाना । सकलजनककरकरहिंबखाना ॥
सिय महिमा रघुनायक जानी । हरषे हृदय हेतु पहिचानी ॥
पितु आगमनसुनत दोउभाई । हृदय न अति आनन्दसमाई ॥
सकुचत कहिनसकत गुरुपाहीं । पितु दर्शन लालचमनमाहीं ॥
बिश्वामित्र बिनय बड़ि देखी । उपजा उर सन्तोष विशेखी ॥
हरषि बन्धु दोउ हृदयलगाये । पुलकिअंगलोचन जल छाये ॥
चले जहां दशरथ जनवासे । मनहुं सरोवर तकेउ पियासे ॥
दो० भूप बिलोके जबहिं मुनि आवत सुतन समेत ।
उठे हरषि सुख सिन्धु महँ चले थाहसी लेत ॥
मुनिहिं दण्डवतकीन्ह महीशा । बारबार पदरज धरि शीशा ॥
कौशिक राउ लिये उर लाई । कहि अशीश पूंछी कुशलाई ॥
पुनि दण्डवत करत दोउ भाई । देखिनृपति उरसुखन समाई ॥
सुत हिय लाइ दुसह दुख मेटे । मृतक शरीर प्राण जनु भेटे ॥
पुनिबशिष्ठ पदशिर तिन नाये । प्रेम मुदितमुनिवर उरलाये ॥

बिप्र बृन्द बन्दे दुहु भाई । मन भावतिअशीशतिनपाई ॥
भरतसहानुज कीन्ह प्रणामा । लिये उठाइ लाइ उर रामा ॥
हरषे लषण देखिदोउ भ्राता । मिले प्रेम परिपूरण गाता ॥
दो० पुरजन परिजन जातिजन याचक मंत्री मीत ।
मिलेयथाबिधि सबहिं प्रभु परमकृपालुबिनीत ॥
रामहिं देखि बरात जुड़ानी । प्रीतिकिरीतिनजाय बखानी ॥
नृप समीप सोहहिं सुतचारी । जनुधन धर्म्मादिकतनुधारी ॥
सुतन सहित दशरथकहँदेखी । मुदितनगरनरनारि विशेखी ॥
सुमन बरषि सुरहनहिंनिशाना । नाकनटी नाचहिं करिगाना ॥
शतानन्दअरुबिप्र सचिवगन । मागधसूत बिदुष बन्दीजन ॥
सहित बरात राउ सनमाना । आयसुमांगि चलेअगवाना ॥
प्रथम बरात लगनते आई । ताते पुर प्रमोद अधिकाई ॥
ब्रह्मानन्द लोगसबलहहीं । बढ़हुदिवसनिशिबिधिसनकहहीं ॥
दो० रामसीय शोभा अवधि सुकृत अवधि दोउराज ।
जहँतहँपुरजन कहहिंअसमिलिनरनारिसमाज ॥
जनक सुकृति मूरति बैदेही । दशरथ सुकृत राम धरिदेही ॥
इनसम काहु न शिव आराधे । काहु न इनसमान फलसाधे ॥
इनसमकोउ न भयउजगमाहीं । हैनहिं कतहूं होनेउ नाहीं ॥
हमसब सकल सुकृतकी रासी । भयेजगजन्मिजनकपुरबासी ॥
जिन जानकी राम छबि देखी । कोसुकृतीहमसरिस बिशेखी ॥
पुनि देखब रघुबीर बिवाहू । लेब भलीविधि लोचनलाहू ॥
कहहिं परस्पर कोकिलबयनी । यहिबिवाह बड़लाहुसुनयनी ॥
बड़े भाग बिधि बात बनाई । नयनअतिथिहोइहैंदोउभाई ॥
दो० बारहिं बार सनेह बश जनक बोलाउब सीय ।
लेन आइहैं बन्धु दोउ कोटि काम कमनीय ॥
बिविध भांति होइहि पहुनाई । प्रियनकाहि अससासुरमाई ॥
तबतबराम लषणहिं निहारी । होइहहिंसबपुरलोग सुखारी ॥

सखिजस रामलषणकर जोटा। तैसेइ भूप संग दुइ ढोटा॥
श्याम गौर सब अंग सुहाये। ते सबकहहिं देखि जे आये॥
कहा एक मैं आजु निहारे। जनु विरंचि निजहाथसँवारे॥
भरत राम एकहि अनुहारी। सहसालखिनसकहिं नरनारी॥
लषण शत्रुसूदन इक रूपा। नखशिखते सब अंगअनूपा॥
मनभावहिं मुखबरणि न जाहीं। उपमाकहँ त्रिभुवनकोउनाहीं॥
छं० उपमानकोउकहदासतुलसी कतहुं कबिकोबिद कहैं।
बलविनयविद्याशीलशोभा सिन्धु इन सम ये लहैं॥
पुरनारिसकलपसारिअंचल विधिहि बचनसुनावहीं।
व्याहियसुचारिउभाइ इहिपुर हमसुमंगलगावहीं॥
सो० कहहिं परस्पर नारि बारि बिलोचन पुलक तन।
सखि सब करब पुरारि पुण्य पयोनिधि भूप दोउ॥
इहिविधिसकल मनोरथकरहीं। आनँदउमँगिउमँगिउरभरहीं॥
जे नृप सीय स्वयम्बर आये। देखि बन्धुसब तिनसुखपाये॥
कहत रामयशविशदविशाला। निजनिजभवनगयेमहिपाला॥
गये बीति कछुदिन यहिभाँती। प्रमुदितपुरजनसकलबराती॥
मंगल मूल लगनदिन आवा। हिमऋतुअगहनमाससुहावा॥
ग्रहतिथिनखत योग बरबारू। लगनशोधिविधिकीन्हाबिचारू॥
पठैदीन नारद सन सोई। गुणी जनक के गणकनजोई॥
सुनी सकल लोगन यह बाता। कहहिंज्योतिषीअहहिंविधाता॥
दो० धेनु धूलि बेला बिमल सकल सुमंगल मूल।
विप्रन कहेउ विदेहसन जानिसमय अनुकूल॥
उपरोहितहि कहेउ नरनाहा। अब बिलम्बके कारण काहा॥
शतानन्द तब सचिव बुलाये। मंगलकलश साजिसबलाये॥
शंख निशान पणव बहुबाजे। मंगलकलश सगुनसबसाजे॥
सुभग सुआसिन गावहिं गीता। करहिं वेदधुनि बिप्र पुनीता॥
लेन चले सादर यहि भांती। गये जहाँ जनवास बराती॥

कोशल पतिंकर देख समाजू। अतिलघुलगेतिनहिंसुरराजू।
भयउ समय अब धारिय पाऊ। यह सुनिपरा निशाननघाऊ।
गुरुहिंपूंछिकरिकुल विधिराजा। चले संग मुनिसाजसमाजा।
दो० भाग्य विभव अवधेश कर देखि देव ब्रह्मादि।
लगेसराहन सहसमुख जानिजन्म निजबादि॥
सुरन सुमंगल अवसर जाना। बरषहिंसुमनबजाइ निशाना।
शिवब्रह्मादिक विबुध बरूथा। चढ़े विमानन नाना यूथा।
प्रेम पुलक तन हृदय उछाहू। चले विलोकन राम बिवाहू।
देखि जनक पुर सुर अनुरागे। निजनिजलोकसबहिंलघुलागे।
चितवहिंचकितविलोकिबिताना। रचनासकलअलौकिकनाना।
नगर नारिनर रूप निधाना। सुघरसुधर्म सुशील सुजाना।
तिनहिं देखि सब सुरनरनारी। भये नखतजनु बिधुउजियारी।
बिधिहिभयउ आश्चर्य विशेखी। निजकरणीकछुकतहुँ न देखी।
दो० शिव समुझाये देव सब जनिआश्चर्य भुलाहु।
हृदय विचारहु धीर धरि सिय रघुबीर विवाहु॥
जिनकर नाम लेत जगमाहीं। सकल अमंगल मूल नशाहीं।
करतल होहिं पदारथ चारी। ते सिय राम कहेउ कामारी।
इहिविधि शंभु सुरन समुझावा। पुनि आगे बरबसह चलावा।
देवन देखे दशरथ जाता। महा मोदमन पुलकितगाता।
साधु समाज संग महिदेवा। जनुतनु धरे कराहिं सुरसेवा।
सोहत साथ सुभगसुत चारी। जनु अपवर्गसकल तनुधारी।
मरकत कनक बरणबर जोरी। देखि सुरन भइप्रीतिनथोरी।
पुनिरामहिं विलोकि हियहरषे। नृपहिंसराहिसुमनतिन्हबरषे।
दो० रामरूप नख शिख सुभग बारहिंबार निहारि।
पुलकगात लोचन सजल उमा समेत पुरारि॥
केकिकंठ द्युति श्यामल अंगा। तड़ित विनिन्दकबसनसुरंगा।
ब्याह विभूषण विविध बनाये। मंगलमय सबभांति सुहाये।

शरदबिमलबिधुबदनसुहावन । नयननवलराजीव लजावन ॥
सकल अलौकिक सुन्दरताई । कहिन जाय मनहीं मनभाई ॥
बन्धु मनोहर सोहहिं संगा । जातनचावत चपल तुरंगा ॥
राज कुवँर बरबाजि नचावहिं । बंशप्रशंसक बिरदसुनावहिं ॥
जेहितुरंग पर राम बिराजे । गतिबिलोकिखगनायकलाजे ॥
कहि न जाइ सबभांतिसुहावा । बाजि वेष जनुकाम बनावा ॥
छं० जनुबाजिवेष बनाइमनसिज रामहित अति सोहही ।
अपनबयबल रूपगुणगति सकलभुवन विमोहही ॥
जगमगतिजीनजड़ावज्योतिसुमोतिमाणिकतेहिलगे ।
किंकिणिललामलगामललितबिलोकिसुरनरमुनिठगे ॥
दो० प्रभुमनसहिंलयलीनमन चलतबाजिछबिपाव ।
भूषणउडुगणताड़ितघन जनुबर बरहि नचाव ॥
जेहि बारबाजि राम असवारा । तेहि शारदहु न बरणै पारा ॥
शङ्कर राम रूप अनुरागे । नयनपंचदशअति प्रियलागे ॥
हरिहित सहित राम जब जोहे । रमा समेत रमापति मोहे ॥
निरखिरामछबि बिधि हरषाने । आठहिनयन जानिपछिताने ॥
सुर सेनप उर बहुत उछाहू । बिधि ते डेवढ़े लोचन लाहू ॥
रामहिं चितव सुरेश सुजाना । गौतम शापपरमहित माना ॥
देव सकल सुरपतिहि सिहाहीं । आजु पुरन्दरसम कोउनाहीं ॥
मुदित देवगण रामहिं देखी । नृपसमाज दुहुंहरष विशेखी ॥
छं० अतिहर्ष राज समाज दुहुंदिशि दुन्दुभी बाजहिंघनी ।
बरषहिंसुमनसुरहरषिकहि जयजयतिजयरघुकुलमनी ॥
यहिभांति जानि बरात आवत बाजने बहुबाजहीं ।
रानीसुआसिनि बोलि परिछन हेतु मङ्गल साजहीं ॥
दो० सजिआरती अनेकबिधि मङ्गलसकल सँवारि ।
चलींमुदितपरिछनकरन गजगामिनिबरनारि ॥
बिधुबदनीमृगशावकलोचनि।सबनिजतनछबिरतिमदमोचनि ॥

पहिरें बरण बरण बर चीरा । सकल विभूषण सजेशरीरा ॥
सकल सुमंगल अंग बनाये । करहिंगान कलकंठ लजाये ॥
कंकण किंकिणि नूपुरबाजहिं । चालबिलोकिकामगजलाजहिं ॥
बाजहिं बाजन विविधप्रकारा । नभअरु नगर सुमंगलचारा ॥
शची शारदा रमा भवानी । जेसुरतियशुचिसहजसयानी ॥
कपट नारि बर वेष बनाई । मिलींसकल रनिवासहिआई ॥
करहिंगान कल मंगल बानी । हरष विवशसबकाहुनजानी ॥

छं० कोजानक्यहिआनन्दवश सबब्रह्मवरपरिछनचली ।
कलगानमधुरनिशानबरषहिं सुमनसुरशोभाभली ॥
आनन्दकन्द बिलोकिदूलह सकलहियहर्षित भई ।
अम्भोजअम्बकअम्बुउमँगिसुअंगपुलकावलिछई ॥

दो० जोसुखभा सियमातु मन देखि राम वरवेष ।
सोनसकहिंकहि कल्पशत सहस शारदा शेष ॥

नयन नीर हठि मंगल जानी । परिछनिकरहिंमुदितमनरानी ॥
वेद बिहित अरुकुलब्यवहारू । कीन्हभलीबिधिसबपरिचारू ॥
पंचशब्द धुनि मंगल गाना । पट पांवड़े पराहिं बिधिनाना ॥
करिआरती अर्घ्य तिनदीन्हा । राम गमनमण्डप तबकीन्हा ॥
दशरथ सहित समाज बिराजे । बिभवविलोकिलोकपतिलाजे ॥
समय समय सुर बर्षहिंफूला । शांतिपढ़हिंमहिसुरअनुकूला ॥
नभअरु नगर कोलाहल होई । आपन पर कछुसुनै न कोई ॥
यहिबिधि राम मण्डपहि आये । अर्घ्य देइ आसन बैठाये ॥

छं० बैठारिआसन आरती करि निरखिबर सुखपावहीं ।
मणि बसन भूषण भूरि वारहिंनारिमंगल गावहीं ॥
ब्रह्मादि सुर वर बिप्रवेष बनाइ कौतुक देखहीं ।
अवलोकिरविकुलकमलरविछबिसुफलजीवनलेखहीं ॥

दो० नाऊ बारी भाट नट राम निछावरि पाइ ।
मुदित अशीषहिं नाइशिर हर्ष न हृदयसमाइ ॥

मिलेजनकदशरथ अति प्रीती । करिवैदिकलौकिक सबरीती ॥
मिलत यथादोउ राज बिराजे । उपमा खोजिखोजिकबिलाजे ॥
लही न कतहुँ हारि हियमानी । इनसम यइ उपमा उरआनी ॥
समधी देखि देव अनुरागे । सुमनबरषि यशगावनलागे ॥
जग विरंचि उपजावा जबते । देखे सुने ब्याह बहु तबते ॥
सकलभांति सब साज समाजू । सम समधी देखे हम आजू ॥
देवगिरा सुनि सुन्दरिसांची । प्रीतिअलौकिकदुहुँदिशिमांची ॥
देत पांवड़े अर्घ्य सुहाये । सादरजनक मण्डपहिंल्याये ॥

छं० मण्डपविलोकि विचित्ररचना रुचिरता मुनिमनहरे ।
निजपाणिजनकसुजान सबकहँ आनिसिंहासनधरे ॥
कुलइष्ट सरिस बशिष्ठपूजे बिनयकरि आशिषलही ।
कौशिकहि पूजत परमप्रीति कि रीतितौन परैकही ॥

दो० बामदेव आदिक ऋषय पूजे मुदित महीश ।
दिये दिब्यआसनसबहिं सबसनलही अशीश ॥

बहुरिकीन्ह कोशलपति पूजा । जानि ईशसम भाव न दूजा ॥
कीन्ह जोरि कर बिनय बड़ाई । कहिनिजभाग्यविभवबहुताई ॥
पूजे भूपति सकल बराती । समधीसम सादर सबभांती ॥
आसन उचित दिये सबकाहू । कहौं कहा मुख एक उछाहू ॥
सकल बरात जनक सनमानी । दान मान बिनती बर बानी ॥
बिधिहरिहरदिशिपतिदिनराऊ । जे जानहिं रघुबीर प्रभाऊ ॥
कपट बिप्र बर वेष बनाये । कौतुकदेखहिं अतिसचुपाये ॥
पूजे जनक देव सम जाने । दियेसुआसन बिनपहिंचाने ॥

छं० पहिंचानको केहिजान सबहि अपान सुधिभोरीभई ।
आनन्दकन्द विलोकिदूलह उभयदिशिआनँदमई ॥
सुरलखे राम सुजान पूजे मानसिक आसन दये ।
अवलोकिसरलसुभावप्रभुकोबिबुधमनप्रमुदितभये॥

दो० रामचन्द्र मुखचन्द्र छबि लोचन चारु चकोर ।

करत पान सादर सकल प्रेमप्रमोद न थोर ।

समय बिलोकि बशिष्ठ बुलाये । सादर शतानन्द मुनि आये ॥
बेगि कुवँरि अब आनहु जाई । चले मुदितमन आयसुपाई ॥
रानी सुनि उपरोहित बानी । प्रमुदितसखिनसमेतसयानी ॥
विप्र बधू कुल बृद्ध बुलाई । करि कुलरीतिसुमंगल गाई ॥
नारिवेष जे सुर बर बामा । सकलसुभाय सुन्दरीश्यामा ॥
तिनहिंदेखि सुख पावहिं नारी । बिनुपहिंचान प्राणते प्यारी ॥
बार बार सनमानहिं रानी । उमा रमा शारद समजानी ॥
सीय सवाँरि समाज बनाई । मुदितमण्डपहिंचलीं लिवाई ॥

छं० चलिल्याइसीतहिंसखीसादर सजिसुमंगल भामिनी ।
नव सप्त साजे सुन्दरी सब मत्त कुंजर गामिनी ॥
कलगान सुनिमुनिध्यानत्यागहिं कामकोकिललाजहीं ।
मंजीर नूपुर कलित कंकण तालगति बरबाजहीं ॥

दो० सोहतिबनिता बृन्दमहँ सहज सुहावनि सीय ।
छबिललनागणमध्यजनु सुखमाअतिकमनीय ॥

सिय सुन्दरता बरणि न जाई । लघुमति बहुत मनोहरताई ॥
आवत दीख बरातिन सीता । रूप राशि सबभांति पुनीता ॥
सबहिं मनहिमनकीन्ह प्रणामा । देखिराम भये पूरण कामा ॥
हरषे दशरथ सुतन समेता । कहि न जाइउर आनँदजेता ॥
सुर प्रणाम करि बर्षहिं फूला । मुनिअशीशध्वनिमंगलमूला ॥
गान निशान कुलाहल भारी । प्रेम प्रमोद नगर नरनारी ॥
यहिविधि सीयमण्डपहि आई । प्रमुदितशांतिपढ़हिंमुनिराई ॥
तेहिअवसरकरिबिधिब्यवहारू । दुहुँकुलगुरुसबकीन्हअचारू ॥

छं० आचारकरिगुरुगौरिगणपति मुदितबिप्र पुजावहीं ।
सुरप्रकटपूजा लेहिंदेहिं अशीश अतिसुख पावहीं ॥
मधुपर्कमंगल द्रब्य जो जेहि समयमुनि मनमेंचहैं ।
भरेकनककोपर कलश सबकरलिये परिचारकरहैं ॥

कुलरीतिप्रीतिसमेतरविकहि देतसबसादरकिये ।
यहिभांतिदेवपुजाइसीतहि सुभगसिंहासनदिये ॥
सियराम अवलोकनिपरस्पर प्रेमकाहुनलखिपरै ।
मनबुद्धिबर बाणी अगोचर प्रकटकवि कैसेकरै ॥

दो० होमसमयतनुधरिअनलअतिहितआहुतिलीन्ह ।
विप्रवेषधरि वेदसब कहि बिवाह विधिदीन्ह ॥

जनक पाटमहिषी जगजानी । सीयमातु किमिजाइ बखानी ॥
सुयश सुकृत सुख सुन्दरताई । सबसमेटि विधि रचीबनाई ॥
समय जानि मुनिवरन बुलाई । सुनतसुआसिनि सादरल्याई ॥
जनकबामदिशिसोह सुनयना । हिमगिरिसंगबनी जनुमयना ॥
कनक कलश मणि कोपर रूरे । शुचि सुगन्ध मंगलजलपूरे ॥
निजकर मुदित राउ अरुरानी । धरे राम के आगे आनी ॥
पढ़हिं वेद मुनि मंगलबानी । गगनसुमनझरिअवसरजानी ॥
बर विलोकि दम्पति अनुरागे । पांय पुनीत पखारन लागे ॥

छं० लागे पखारन पांय पंकज प्रेम तनु पुलकावली ।
नभनगरगाननिशानजयधुनिउमँगिजनुचहुँदिशिचली ॥
जेपदसरोज मनोज अरि उरसरसदैव बिराजहीं ।
जेसुकृतमूरति बिमलतामनसकलकलिमलभाजहीं ॥
जेपरसि मुनिबनितालही गतिरही जो पातकमई ।
मकरन्दजिनकोशम्भुशिरशुचिताअवधिसुरबरनई ॥
करिमधुपमनमुनियोगिजनजेसेइअभिमतगतिलहैं ।
तेपदपखारतभाग्यभाजन जनकजयजय सबकहैं ॥
बरकुवँरिकरतल जोरिशाखोच्चार दोउ कुलगुरुकरैं ।
भयोपाणिग्रहणविलोकिविधिसुरमनुजमुनिआनँदभरैं ॥
सुखमूल दूलहदेखिदम्पति पुलक तनुहुलसैंहिये ।
करि लोक वेद विधान कन्यादान नृपभूषणदिये ॥
हिमवन्तजिमिगिरिजामहेशहि हरिहिश्रीसागरदई ।

तिमि जनकसिय रामहिंसमर्पी बिश्वकलकीरतिनई ॥
किमिकरौं बिनय बिदेह कीन्ह बिदेहमूरतिसांवरी ।
करि होम बिधिवत गांठिजोरी होनलागीं भांवरी ॥
दो० जयध्वनि बन्दी वेदध्वनि मंगल गान निशान ।
सुनिहरषहिंवरषहिंबिबुध सुरतरुसुमनसुजान ॥
कुँवरि कुँवर कल भांवरिदेहीं । नयन लाभ सब सादरलेहीं ।
जाइ न बरणि मनोहर जोरी । जो उपमाकछुकहिय सोथोरी ।
राम सीय सुन्दरि परिछाहीं । जगमगातिमणिखम्भनमाहीं ।
मनहुँ मदन रतिधरि बहुरूपा । देखहिं राम बिवाह अनूपा ।
दरश लालसा सकुच न थोरी । प्रकटत दुरत बहोरि बहोरी ।
भये मगन सब देखन हारे । जनकसमान अपान बिसारे ।
प्रमुदित मुनिन भांवरी फेरी । नेगसहित सबरीति निबेरी ।
राम सीय शिर सिन्दुर देहीं । शोभा कहिनजात बिधिकेहीं ।
अरुण पराग जलजभरिनीके । शशिहिभूखअहि लोभअमीके ।
बहुरि बशिष्ठ दीन्हअनुशासन । बरदुलहिनि बैठे इकआसन ।
छं० बैठेबरासनरामजानकि मुदितमनदशरथभये ।
तनुपुलकिपुनिपुनि देखिअपने सुकृतसुरतरुफलनये ॥
भरि भुवन रहाउछाह राम बिवाह भा सबही कहा ।
केहि भांति बरणि सिरातरसना एक मुखमंगलमहा ॥
तब जनकपाइ बशिष्ठआयसु ब्याहसाज सवाँरिकै ।
माण्डवी श्रुति कीर्त्ति उर्मिला कुँवरि लई हँकारिकै ॥
कुश केतुकन्या प्रथम जो गुणशील सुख शोभामई ।
सबरीति प्रीतिसमेत करि सो ब्याहि नृपभरतहिदई ॥
जानकी लघुभगिनि जो सुन्दरि शिरोमणि जानिकै ।
सोजनकदीन्हीब्याहिलषणहिसकलबिधिसनमानिकै ॥
जेहिनामश्रुतिकीरतिसुलोचनिसुमुखिसबगुणआगरी ।
सो दई रिपुसूदनहिं भूपति रूपशील उजागरी ॥

अनुरूपबरदुलहिनिपरस्पर लखिसकुचिहियहर्षहीं ।
सबमुदित सुन्दरतासराहहिं सुमनसुरगण बर्षहीं ॥
सुन्दरी सुन्दर बरनसह एक मण्डप राजहीं ।
जनुजीवअरुचारिउअवस्थाबिभुनसहितबिराजहीं ॥
दो० मुदित अवधपति सकल सुत बधुनसमेत निहारि ।
जनु पाये महिपाल मणि क्रियन सहित फलचारि ॥
जस रघुबीर ब्याहविधिबरणी । सकलकुवँर ब्याहेतेहिकरणी ॥
कहि न जाइ कछु दाइजभूरी । रहा कनकमणि मण्डपपूरी ॥
कम्बल वसन विचित्र पटोरे । भांतिभांति बहुमोल न थोरे ॥
गज रथ तुरँगदास अरुदासी । धेनु अलंकृत काम दुहासी ॥
बस्तु अनेक करियकिमिलेखा । कहिनजाइजानहिंजिनदेखा ॥
लोकपाल अवलोकि सिहाने । लीन्हअवधपतिसबसुखमाने ॥
दीन्ह याचकन जो जेहिभावा । उबरा सो जनवासहिंआवा ॥
तब करजोरि जनक मृदुबानी । बोले सब बरात सनमानी ॥
छं० सनमानिसकलबरात सादर दान बिनय बड़ायकै ।
प्रमुदित महामुनि बृन्द बन्दे पूजिप्रेम लड़ायकै ॥
शिरनाइ देव मनाइ सबसन कहत कर संपुटकिये ।
सुरसाधुचाहतभावसिन्धुकि तोषजलअंजलिदिये ॥
करजोरि जनकबहोरिबन्धु समेत कोशलरायसों ।
बोले मनोहर वचनसानि सनेह शील सुभायसों ॥
सम्बन्ध राजन रावरे हम बड़े अब सबविधि भये ।
यहराज साजसमेत सेवक जानबी बिनुगथ लये ॥
ये दारिका परिचारिका करि पालबी करुणामयी ।
अपराधक्षमिबो बोलि पठये बहुत हौं ढीठीदयी ॥
पुनिभानुकुलभूषणसकलसनमानबिधिसमधीकिये ।
कहिजातनहिं बिनती परस्पर प्रेमपरिपूरण हिये ॥
बृन्दारका गण सुमन बरषहिं राउजनवासहिंचले ।

दुन्दुभी ध्वनि वेदध्वनि नभ नगर कौतूहल भले ॥
तब सखी मंगल गान करत मुनीशआयसु पाइकै ।
दूलहदुलहिनिनसहितसुन्दरि चलींकुहवरल्याइकै ॥
दो० पुनिपुनिरामाहिं चितवासिय सकुचतिमनसकुचैन ।
हरति मनोहर मीनछबि प्रेम पियासे नैन ॥
श्याम शरीर सुभाय सुहावन । शोभाकोटि मनोज लजावन ॥
जावक युत पद कमल सुहाये । मुनिमनमधुप रहतजहँछाये ॥
पीत पुनीत मनोहर धोती । हरतबालरबि दामिनिज्योती ॥
कलकिंकिणि कटिसूत्र मनोहर । बाहु विशाल विभूषणसोहर ॥
पीत जनेउ महा छबि देई । कर मुद्रिका चोरि चितलेई ॥
सोहत ब्याह साज सब साजे । उर आयत सबभूषण राजे ॥
पीत उपरना कांखा सोती । दुहुँआचरन्ह लगेमणिमोती ॥
नयन कमल कल कुंडलकाना । बदनसकल सौंदर्य्यनिधाना ॥
सुन्दरभृकुटि मनोहर नासा । भालतिलकशुचिरुचिरनिवासा ॥
सोहत मौर मनोहर माथे । मंगलमय मुकतामणि गाथे ॥
छं० गाथे महा मणि मौर मंजुल अंग सब चितचोरहीं ।
पुरनारिसुन्दरबरविलोकहिं निरखिछबितृणतोरहीं ॥
मणिवसनभूषणबारिआरति करहिं मंगल गावहीं ।
सुरसुमनबरषहिं सूतमागध बन्दिसुयशसुनावहीं ॥
कुहवरहिं आनेकुवँरकुवँरि सुआसिनिन्हसुखपाइकै ।
अतिप्रीति लौकिकरीतिलागीं करनमंगल गाइकै ॥
लहकौरिगौरिसिखाव रामहिं सीयसन शारदकहैं ।
रनिवासहास बिलासरसवश जनमकोफलसबलहैं ॥
निजपाणिमणिमहँदेखिप्रतिमूरतिस्वरूपनिधानकी ।
चालतिनभुजबल्लीविलोकति बिरहवशभइजानकी ॥
कौतुकबिनोद प्रमोदप्रेम न जाइकहि जानहिंअलीं ।
घरकुँवरिसुन्दरिसकलसखी लिवाइजनवासहिंचलीं ॥

तेहिसमयसुनियअशीशजहँतहँ नगरनभआनँदमहा ।
चिरजियहुजोरी चारुचारिउ मुदितमन सबहीकहा ॥
योगीन्द्र सिद्धमुनीशदेव विलोकि प्रभु दुन्दुभिहनी ।
चलेहरषिबरषिप्रसूननिजनिजलोकजयजयजयभनी ॥

दो० सहित बधूटिन कुँवर सब तब आये पितु पास ।
शोभा मंगल मोद भरि उमँगेउ जनु जनवास ॥

पुनि जेउनार भयउ बहुभांती । पठये जनक बुलाइ बराती ॥
परत पांवड़े बसन अनूपा । सुतन समेत गवनकियभूपा ॥
सादर सब के पांव पखारे । यथा योग्य पीढ़न बैठारे ॥
धोये जनक अवधपति चरणा । शीलसनेह जाइनहिं बरणा ॥
बहुरि राम पद पंकज धोये । जे हरहृदय कमलमहँ गोये ॥
तीनों भाइ राम सम जानी । धोयेचरण जनक निजपानी ॥
आसनउचित सबहिं नृपदीन्हे । बोलि सूपकारी सब लीन्हे ॥
सादर लगे परन पनवारे । कनककील मणिपरणसवाँरे ॥

दो० सूपोदन सुरभी सरपि सुन्दर स्वादु पुनीत ।
क्षणमहँ सबके परसिगे चतुरसुआर बिनीत ॥

पञ्च कौर करि जेवन लागे । गारिगानसुनिअतिअनुरागे ॥
भांति अनेक परे पकवाना । सुधासरिसनहिंजाहिंबखाना ॥
परुसन लगे सुआर सुजाना । ब्यंजन बिबिधनामकोजाना ॥
चारिभांति भोजनबिधि गाई । एकएकबिधि बरणि न जाई ॥
छरस रुचिरब्यंजन बहुजाती । एकएक रस अगणितभांती ॥
जेंवत देहिं मधुर ध्वनि गारी । लै लै नाम पुरुष अरु नारी ॥
समय सुहावन गारि बिराजा । हँसतरावसुनिसहितसमाजा ॥
इहिबिधि सबही भोजनकीन्हा । आदरसहितआचमनलीन्हा ॥

दो० देइ पान पूजे जनक दशरथ सहित समाज ।
जनवासे गवने मुदित सकल भूप शिरताज ॥

नितनूतन मंगल पुरमाहीं । निमिषसरिसदिनयामिनिजाहीं ॥

बड़े भोर भूपति मणि जागे । याचक गुणगण गावनलागे ॥
देखि कुँवर बर बधुन समेता । किमिकहिजातमोदमनजेता ॥
प्रात क्रिया करिगे गुरु पाहीं । महा प्रमोद प्रेम मन माहीं ॥
करि प्रणाम पूजा कर जोरी । बोलेगिरा अमिय जनु बोरी ॥
तुम्हरी कृपा सुनिय मुनिराजा । भयउ आज मम पूरणकाजा ॥
अब सब बिप्र बुलाइ गुसांई । देहु धेनु सब भांति बनाई ॥
सुनिगुरु करि महिपाल बड़ाई । पुनि पठये मुनिवृन्द बुलाई ॥
दो० बामदेव अरु देवऋषि बालमीकि जाबालि ।
आयेमुनिबर निकरतब कौशिकादि तपशालि ॥
दण्ड प्रणाम सबहिं नृपकीन्हा । पूजि सप्रेम बरासन दीन्हा ॥
चारि लक्ष वर धेनु मँगाई । कामसुरभि सम शीलसुहाई ॥
सबबिधिसकलअलंकृत कीन्ही । मुदितमहीपऋषिनकहँदीन्ही ॥
करत बिनय बहुबिधि नरनाहू । लहेउआजु जगजीवनलाहू ॥
पाइ अशीश महीश अनन्दा । लियेबोलिपुनि याचक वृन्दा ॥
कनकबसनमणिहयगजस्यंदन । दियेबूझिरुचिरबिकुलनंदन ॥
चले पढ़त गावत गुण गाथा । जयजयजयदिनकरकुलनाथा ॥
इहिविधि रामबिवाह उछाहू । सकैंन बरणिसहसमुखजाहू ॥
दो० बार बार कौशिक चरण शीश नाइ कहराउ ।
यहसबसुख मुनिराजतव कृपाकटाक्ष प्रभाउ ॥
जनक सनेह शील करतूती । नृप सब भांति सराह बिभूती ॥
दिनउठिबिदा अवधपतिमाँगा । राखहिंजनकसहितअनुरागा ॥
नित नूतन आदर अधिकाई । दिनप्रतिसहसभांतिपहुँनाई ॥
नित नव नगर अनन्द उछाहू । दशरथगवनसुहाइ न काहू ॥
बहुत दिवस बीते इहि भांती । जनु सनेह रजु बँधे बराती ॥
कौशिक सतानन्द तब जाई । कही बिदेह नृपहि समुझाई ॥
अब दशरथ कहँ आयसु देहू । यद्यपि छांड़ि नसकहु सनेहू ॥
भलेहिनाथकहि सचिवबुलाये । कहिजयजीव शीशतिननाये ॥

दो० अवध नाथ चाहत चलन भीतर करहु जनाव ।
भये प्रेम बश सचिवसुनि बिप्र सभासद राव ॥
पुरबासी सुनि चली बराता । पूंछत बिकल परस्पर बाता ॥
सत्य गवन सुनि सबबिलखाने । मनहुंसांझसरसिजसकुचाने ॥
जहँ जहँ आवत बसे बराती । तहँ तहँसीध चला बहुभांती ॥
बिविध भांति मेवा पकवाना । भोजनसाज न जाइबखाना ॥
भरि भरि बसह अपार कहारा । पठये जनक अनेक सुआरा ॥
तुरग लाखरथ सहस पचीसा । सकलसँवारेनख अरुशीसा ॥
मत्त सहस दश सिन्दुर साजे । जिनहिंदेखिदिशिकुंजरलाजे ॥
कनकवसनमणिभरिभरियाना । महिषीधेनु बस्तु बिधिनाना ॥
दो० दायज अमित न सकियकहि दीन्ह बिदेहबहोरि ।
जो अवलोकत लोकपति लोक सम्पदा थोरि ॥
सब समाज यहि भांति बनाई । जनक अवधपुर दीन्हपठाई ॥
चलिहि बरातसुनत सबरानी । बिकलमीनगणजिमिलघुपानी ॥
पुनि पुनि सीय गोदकरिलेहीं । देहँ अशीश सिखावन देहीं ॥
होइहहु सन्तत पियहि पियारी । चिरअहिवातअशीशहमारी ॥
सासु श्वशुर गुरु सेवा करहू । पतिरुखलखिआयसुअनुसरहू ॥
अतिसनेह बश सखी सयानी । नारिधर्मसिखवहिं मृदुबानी ॥
सादर सकल कुँवरि समुझाईं । रानिन बार बार उर लाईं ॥
बहुरि बहुरि भेंटहिं महतारी । कहहिं बिरंचिरची कतनारी ॥
दो० तेहि अवसर भाइन सहित राम भानुकुल केतु ।
चले जनकमन्दिर मुदित बिदा करावन हेतु ॥
चारिउ भाइ सुभाय सुहाये । नगर नारि नर देखन धाये ॥
कोउ कह चलन चहतहैं आजू । कीन्ह बिदेह बिदाकर साजू ॥
लेहु नयन भरि रूप निहारी । प्रिय पाहुने भूप सुत चारी ॥
को जानै केहि सुकृत सयानी । नयनअतिथिकीन्हेंबिधिआनी ॥
मरणशील जिमि पाव पियूषा । सुरतरु लहै जन्मकर भूषा ॥

पाव नारकी हरि पद जैसे । इन कर दर्शन हमकहँ तैसे ॥
निरखि राम शोभा उर धरहू । निजमनफणिमूरतिमणिकरहू ॥
इहिबिधिसबहिनयनफलदेता । गये कुँवर सब राज निकेता ॥
दो० रूप सिन्धु सबबन्धु लखि हरषिउठीं रनिवासु ।
करहिं निछावर आरती महामुदित मन सासु ॥
देखि रामछबि अति अनुरागीं । प्रेमविवसपुनिपुनि पदलागीं ॥
रही न लाज प्रीति उर छाई । सहजसनेहबरणि किमिजाई ॥
भाइनसहित उबटि अन्हवाये । छरसअशनअतिहेतु जिंवाये ॥
बोले राम सुअवसर जानी । शीलसनेह सकुचमय बानी ॥
राउ अवधपुर चहत सिधाये । बिदाहोन हित हमहिं पठाये ॥
मातु मुदित मन आयसु देहू । बालक जानि करब नितनेहू ॥
सुनतबचन बिलखेउ रनिवासू । बोलि न सकहिं प्रेमबशसासू ॥
हृदयलगाइ कुवँरि सबलीन्हीं । पतिनसौंपिबिनतीअतिकीन्हीं ॥
छं० करिबिनय सियरामहिंसमर्पी जोरिकरपुनिपुनि कहै ।
बलिजाउँतातसुजानतुमकहँबिदितगतिसबकीअहै ॥
परिवार पुरजन मोहिंराजहिं प्राणप्रिय सिय जानवी ।
तुलसीसुशील सनेहलखि निजकिंकरीकरि मानवी ॥
सो० तुम परिपूरण काम ज्ञान शिरोमणि भाव प्रिय ।
जन गुण गाहक राम दोष दलन करुणायतन ॥
असकहि रही चरण गहिरानी । प्रेमपङ्क जनु गिरा समानी ॥
सुनि सनेह सानी बर बानी । बहुबिधि राम सासुसनमानी ॥
राम बिदा मांगत करजोरी । कीन्ह प्रणाम बहोरि बहोरी ॥
पाइ अशीश बहुरि शिरनाई । भाइन सहित चले रघुराई ॥
मंजु मधुर मूरति उर आनी । भई सनेह शिथिल संबरानी ॥
पुनि धीरज धरि कुवँरिहँकारी । बार बार भेंटहिं महतारी ॥
पहुँचावहिं फिरिमिलहिंबहोरी । बढ़ी परस्पर प्रीति न थोरी ॥
पुनिपुनिमिलतिसखिनबिलगाई । बाल बत्स जनु धेनु लवाई ॥

दो० प्रेमविवश नर नारिसब सखिन सहित रनिवास ।
मानहुँ कीन्ह बिदेहपुर करुणा बिरह निवास ॥
शुक सारिक जानकी जिआये । कनक पींजरन राखि पढ़ाये ॥
ब्याकुल कहहिं कहां बैदेही । सुनिधीरज परिहरै न केही ॥
भयेबिकल खगमृग इहिभांती । मनुजदशा कैसे कहिजाती ॥
बन्धु समेत जनक तब आये । प्रेमउमँगि लोचनजलछाये ॥
सीय बिलोकि धीरता भागी । रहे कहावत परम बिरागी ॥
लीन्ह राउ उर लाइ जानकी । मिटी महा मर्य्याद ज्ञानकी ॥
समुझावत सब सचिव सयाने । कीन्हविचार न अवसरजाने ॥
बारहिं बार सुता उर लाई । सजि सुन्दरिपालकी मँगाई ॥
दो० प्रेमविवश परिवार सब जानि सुलगन नरेश ।
कुँवरि चढ़ाईं पालकिन सुमिरे सिद्ध गणेश ॥
बहु बिधि भूप सुता समुझाई । नारि धर्म कुलरीति सिखाई ॥
दासी दास दिये बहुतेरे । शुचिसेवक जे प्रिय सियकेरे ॥
सीय चलत ब्याकुल पुरबासी । होहिंसगुनशुभ मंगल रासी ॥
भूसुर सचिव समेत समाजा । संगचले पहुँचावन राजा ॥
रथ गज बाजि बरातिन साजे । सुनि गहगहे बाजने बाजे ॥
दशरथ बिप्र बोलि सब लीन्हे । दान मान परिपूरण कीन्हे ॥
चरण सरोज धूरि धरि शीशा । मुदितमहीपतिपाइअशीशा ॥
सुमिरि गजानन कीन पयाना । मंगल मूल शकुनभे नाना ॥
दो० सुर प्रसून बर्षहिं हरषि करहिं अप्सरा गान ।
चलेअवधपति अवधपुर मुदित बजाइनिशान ॥
नृप करि बिनय महाजन फेरे । सादर सकल मांगने टेरे ॥
भूषण बसन बाजि गज दीन्हे । प्रेम पोषि ठाढ़े सब कीन्हे ॥
बार बार बिरदावलि भाखी । फिरे सकल रामहिं उरराखी ॥
बहुरिबहुरि कोशलपति कहहीं । जनकप्रेमवश फिरानचहहीं ॥
पुनि कह भूपति बचन सुहाये । फिरिय महीप दूरिबड़िआये ॥

राउ बहोरि उतरि भये ठाढ़े। प्रेम प्रबाह बिलोचन बाढ़े॥
तब बिदेह बोले करजोरी। बचन सनेह सुधाजनु बोरी॥
करौं कवनबिधि बिनय सुहाई। महाराज मोहिं दीन्ह बड़ाई॥
दो० कोशलपति समधी सजन सनमाने सबभांति।
मिलनपरस्परविनयअति प्रीतिनहृदयसमाति॥
मुनिमण्डली जनक शिरनावा। आशिरबाद सबहिं सनपावा॥
सादर पुनि भेंटे जामाता। रूपशीलगुणनिधिसबभ्राता॥
जोरि पंकरुह पाणि सुहाये। बोले बचन प्रेम जनु जाये॥
राम करौं केहिभांति प्रशंसा। मुनि महेश मन मानस हंसा॥
करहिं योग योगी जेहिलागी। कोह मोह ममता मदत्यागी॥
व्यापकब्रह्म अलखअविनाशी। चिदानन्द निर्गुण गुणराशी॥
मनसमेत जेहि जान न बानी। तरकिनसकहिंसकलअनुमानी॥
महिमानिगम नेतिकरि कहहीं। जो तिहुँकाल एकरस रहहीं॥
दो० नयन विषय मोकहँ भयउ सो समस्त सुखमूल।
सबहिं लाभ जग जीव कहँ भये ईश अनुकूल॥
सबहिभांति मोहिंदीन्ह बड़ाई। निजजनजानिलीन्हअपनाई॥
होहिं सहस्र दश शारद शेखा। करहिंकलपकोटिकभरिलेखा॥
मोर भाग्य राउर गुणगाथा। कहिनसिराहिंसुनियरघुनाथा॥
मैं कछु कहौं एक बल मोरे। तुम रीझहु सनेहसुठि थोरे॥
बार बार मांगौं कर जोरे। मन परिहरै चरण जनिभोरे॥
मुनिवर बचन प्रेम जनु पोषे। पूरण काम राम परितोषे॥
करिबरबिनय श्वशुर सनमाने। पितु कौशिकवशिष्ठसमजाने॥
बिनतीबहुरि भरतसन कीन्ही। मिलिसुप्रेमपुनिआशिषदीन्ही॥
दो० मिलेलषण रिपुसूदनहिं दीन्हि अशीश महीश।
भये परस्पर प्रेमवश फिरिफिरि नावहिंशीश॥
बार बार करि बिनय बड़ाई। रघुपति चले संग सब भाई॥
जनक गहे कौशिक पद जाई। चरणरेणु शिर नयननलाई॥

सुन मुनीश सब दरशन तोरे । अगमनकछुप्रतीति मनमोरे ॥
जोसुखसुयशलोकपति चहहीं । करतमनोरथसकुचतअहहीं ॥
सोसुखसुयशसुलभमम्बहिंस्वामी । सबबिधितवदर्शनअनुगामी ॥
कीन्ह बिनयपुनिपुनिशिरनाई । फिरे महीपति आशिष पाई ॥
चली बरात निशान बजाई । मुदितछोटबड़ सब समुदाई ॥
रामहिं निरखि ग्राम नर नारी । पाइ नयनफल होहिंसुखारी ॥
दो० बीच बीच बर बास करि मगलोगन सुखदेत ।
अवध समीप पुनीत दिन पहुँची आय जनेत ॥
हने निशान पणव बहु बाजे । भेरि शंखध्वनि हयगयगाजे ॥
झांझ मृदँग डिमडिमी सुहाई । सरस राग बाजें सहनाई ॥
पुरजन आवत अकनि बराता । मुदितसकलपुलकावलिगाता ॥
निज निज सुन्दरसदन सँवारे । हाट बाट चौहट पुर द्वारे ॥
गली सकल अरगजा सिंचाई । जहँ तहँ चौके चारु पुराई ॥
बना बजार न जात बखाना । तोरण केतु पताक विताना ॥
सुफल पुंगफल कदलि रसाला । रोपे बकुल कदम्ब तमाला ॥
लगे सुभगतरु परसत धरणी । मणिमयआलबालकलकरणी ॥
दो० विविधभांति मङ्गल सकल गृह गृह रचे सँवारि ।
सुर ब्रह्मादि सिहाहिं सब रघुबरपुरी निहारि ॥
भूप भवन तेहि अवसर सोहा । रचना देखिमदन मनमोहा ॥
मङ्गल शकुन मनोहरताई । ऋधिसिधिसुखसम्पदासोहाई ॥
जनु उछाह सब सहज सुहाये । तनुधरिधरिदशरथगृहआये ॥
देखन हेतु राम वैदेही । कहहु लालसा होइ न केही ॥
यूथयूथमिलिचलींसुआसिनि । निजछबिनिदरहिंमदनविलासिनि ॥
कलश सुमंगल सजी आरती । गावहिं जनु बहुवेष भारती ॥
भूपति भवन कुलाहल होई । जाइ न बरणिसमयसुखसोई ॥
कौशल्यादि राम महतारी । प्रेमविवश जनुदशा बिसारी ॥
दो० दिये दान बिप्रन बिपुल पूजि गणेश पुरारि ।

प्रमुदित परम दरिद्रजनु पाइ पदारथचारि ॥
प्रेम प्रमोद विवशसबमाता । चलहिंनचरणशिथिलसबगाता ॥
रामदरश हित अति अनुरागीं । परिछनसाजसजनसबलागीं ॥
विविध विधान बाजने बाजे । मंगल मुदित सुमित्रासाजे ॥
हरद दूब दधि पल्लव फूला । पान पुंगफल मंगल मूला ॥
अक्षत अंकुर रोचन लाजा । मंजुल मंजरितुलसिबिराजा ॥
छुहे पुरट घट सहज सुहाये । मदन शकुनिजनुनीड़ बनाये ॥
शकुन सुगन्ध न जाहिंबखानी । मंगलसकलसजहिं सबरानी ॥
रची आरती विविध विधाना । मुदितकरहिंकलमंगल गाना ॥
दो० कनकथारभरिमंगलहिं कमलकरनलिये मात ।
चलींमुदित परिछनकरन पुलकपल्लवितगात ॥
धूप धूम नभ मेचक भयऊ । सावन घन घमंड जनुठयऊ ॥
सुरतरु सुमन माल सुरवर्षहिं । मनहुँबलाकअवलिमनकर्षहिं ॥
मंजुल मणिमय बन्दनवारा । मनहुँ पाकरिपु चापसँवारा ॥
प्रकटहिंदुरहिंअटन्हपरभामिनि। चारुचपलजनुदमकहिंदामिनि
दुन्दुभिध्वनि घनगरजहिंघोरा । याचक चातक दादुर मोरा ॥
शुचिसुगन्ध बहुवरषहिं बारी । सुखीसकलशशिपुरनर नारी ॥
समयजानि गुरुआयसु दीन्हा । पुरप्रवेश रघुकुलमणिकीन्हा ॥
सुमिरिशंभु गिरिजा गणराजा । मुदितमहीपतिसहितसमाजा ॥
दो० होहिं शकुन बरषहिंसुमन सुर दुन्दुभी बजाइ ।
बिबुध बधू नाचहिं मुदित मंजुल मंगल गाइ ॥
मागध सूत बन्दि नट नागर । गावहिंयशतिहुँलोकउजागर ॥
जयध्वनि बिमल वेदबरबानी । दशदिशिसुनियसुमंगलसानी ॥
बिपुल बाजने बाजन लागे । नभसुर नगर लोग अनुरागे ॥
बने बराती बरणि न जाहीं । महामुदितमनसुखनसमाहीं ॥
पुरबासिन तब राउ जुहारे । देखत रामहिं भये सुखारे ॥
करहिंनिछावरि मणिगणचीरा । बारि बिलोचन पुलकशरीरा ॥

आरति करहिं मुदित पुरनारी । हरषहिं निरखिकुँवरबर चारी ॥
शिविका सुभग उघारि उघारी । देखिदुलहिनिन्ह होहिंसुखारी ॥
दो० यहिविधि सबही देत सुख आये राज दुवार ।
मुदित मातु परिछनि करहिं बधुनसमेतकुमार ॥
करहिं आरती बारहिं बारा । प्रेम प्रमोद लहै को पारा ॥
भूषण मणि पट नानाजाती । करहिंनिछावरिअगणितभांती ॥
बधुन समेत देखि सुत चारी । परमानन्द मगन महतारी ॥
पुनि पुनि सीय रामछबि देखी । मुदितसुफल जगजीवनलेखी ॥
सखी सीय मुख पुनिपुनिचाही । गानकरहिं निजसुकृतसराही ॥
बरषहिं सुमन क्षणहिंक्षण देवा । नाचहिंगावहिं लावहिं सेवा ॥
देखि मनोहर चारिउ जोरी । शारद उपमा सकल ढँढोरी ॥
देत न बनहिं निपट लघुलागी । इकटक रही रूप अनुरागी ॥
दो० निगम नीति कुलरीति करि अरघ पांवड़े देत ।
बधुनसहित सुतपरछिसब चलींलिवाय निकेत ॥
चारि सिंहासन सहज सुहाये । जनुमनोज निजहाथ बनाये ॥
तिनपर कुँवरि कुँवर बैठारे । सादर पांय पुनीत पखारे ॥
धूप दीप नैवेद्य वेद विधि । पूजेबरदुलहिनि मंगलनिधि ॥
बारहिं बार आरती करहीं । ब्यजनचारु चामराशिरढरहीं ॥
बस्तु अनेक निछावरि होहीं । भरीं प्रमोद मातु सबसोहीं ॥
पावा परम तत्त्व जनु योगी । अमृतलह जनु सन्ततरोगी ॥
जन्म रंक जनु पारस पावा । अन्धहि लोचनलाभ सुहावा ॥
मूक बदन जस शारद छाई । मानहुँ समर शूर जय पाई ॥
दो० इहि सुखते शतकोटि गुण पावहिं मातु अनन्द ।
भाइन सहित बिवाहि घर आये रघुकुल चन्द ॥
लोकरीतिजननीकरहिं बर दुलहिनि सकुचाहिं ।
मोदविनोद बिलोकि बड़ राममनहिंमुसुकाहिं ॥
देव पितर पूजे विधि नीकी । पूजी सकल बासना जीकी ॥

सबहि बन्दि मांगहिं बरदाना । भाइन सहित राम कल्याना ॥
अन्तर हित सुर आशिष देहीं । मुदित मातु अंचल भरिलेहीं ॥
भूपति बोलि बरातिन्ह लीन्हे । यान बसनमणि भूषणदीन्हे ॥
आयसुपाइ राखिउर रामहिं । मुदितगयेसबनिजनिजधामहिं ॥
पुर नर नारि सकल पहिराये । घर घरबाजहिं अनँदबधाये ॥
याचक जन याचहिं जोइजोई । प्रमुदित राउ देइँ सोइ सोई ॥
सेवक सकल बजनियां नाना । पूरण किये दान सनमाना ॥

दो० देहिं अशीशजुहारिसब गावहिं गुण गण गाथ ।
तब गुरु भूसुरसहितगृह गमन कीन्ह नरनाथ ॥

जो बशिष्ठ अनुशासन दीन्हा । लोक वेदविधि सादर कीन्हा ॥
भूसुर भीर देखि सब रानी । सादर उठीं भाग्य बड़जानी ॥
पायँ पखारि सकल अन्हवाये । पूजि भलीविधि भूपजेंवाये ॥
आदर दान प्रेम परिपोषे । देत अशीश चले मनतोषे ॥
बहुविधि कीन्ह गाधिसुत पूजा । नाथ मोहिंसम धन्य न दूजा ॥
कीन्ह प्रशंसा भूपति भूरी । रानिन्हसहित लीन्हपग धूरी ॥
भीतर भवन दीन्ह बर बासू । मनजुगवत रह नृप रनिवासू ॥
पूजे गुरु पद कमल बहोरी । कीन्ह विनयमनप्रीतिनथोरी ॥

दो० बधुन समेत कुमारसब रानिन्ह सहितमहीश ।
पुनिपुनि बन्दत गुरुचरण देतअशीश मुनीश ॥

विनय कीन्ह उरअतिअनुरागे । सुत सम्पदा राखिसबआगे ॥
नेग मांगि मुनिनायक लीन्हा । आशिरबादबहुतबिधिदीन्हा ॥
उर धरि रामहिं सीय समेता । हरषिकीन्हगुरुगमन निकेता ॥
विप्र बधू कुल वृद्ध बुलाई । चीर चारु भूषण पहिराई ॥
बहुरिबुलाइ सुआसिनिलीन्ही । रुचिबिचारिपहिरावनिदीन्ही ॥
नेगी नेग योग सब लेहीं । रुचि अनुरूप भूपमणिदेहीं ॥
प्रिय पाहुने पूज्य जे जाने । भूपति भलीभांति सनमाने ॥
देव देखि रघुबीर बिवाहू । बरषि प्रसून प्रशंसि उछाहू ॥

दो० चले निशान बजाइ सुर निजनिज पुर सुखपाइ ।
कहत परस्पर राम यश हर्ष न हृदय समाइ ॥
सबबिधिसबहि समदि नरनाहू । रहाहृदय भरि पूरि उछाहू ॥
जहँ रनिवास तहां पगुधारे । सहित बधूटिन कुँवरनिहारे ॥
लिये गोद करि मोद समेता । कोकहिसकै भयउ सुखजेता ॥
बधू सप्रेम गोद बैठारी । बार बार हियहरषि दुलारी ॥
देखि समाज मुदित रनिवासू । सबके उर आनन्द बिलासू ॥
कह्यो भूपजिमि भयउ बिवाहू । सुनिसुनिहरषहोत सबकाहू ॥
जनक राजगुण शील बड़ाई । प्रीतिरीति सम्पदा सुहाई ॥
बहुबिधि भूपभाट जिमिबरणी । रानीसबप्रमुदितसुनिकरणी ॥
दो० सुतनसमेत नहाइनृप बोलिलिये गुरुज्ञाति ।
भोजन किये अनेकबिधि घरीपांच गइराति ॥
मंगल गानकरहिं बरभामिनि । भइ सुखमूलमनोहरयामिनि ॥
अँचैपान सब काहुन पाये । स्रगसुगन्ध भूषितछबिछाये ॥
रामहिं देखि रजायसु पाई । निजनिजभवनचलेशिरनाई ॥
प्रेम प्रमोद बिनोद बड़ाई । समय समाज मनोहरताई ॥
कहिनसकहिं श्रुति शारदशेशू । वेद बिरंचि महेश गणेशू ॥
सोमैं कहौं कवनबिधि बरणी । भूमिनाग शिरधरै कि धरणी ॥
नृपसबभांति सबहि सनमानी । कहि मृदुवचन बुलाई रानी ॥
बधू लरिकिनी परघर आईं । राखेहु नयन पलककी नाईं ॥
दो० लरिका श्रमित उनींदवश शयन करावहु जाइ ।
असकहिगे बिश्राम गृह रामचरण चितलाइ ॥
भूप वचनसुनि सहज सुहाये । जड़ितकनकमणिपलँगडसाये ॥
सुभग सुरभि पयफेनु समाना । कोमल कलित सुपेती नाना ॥
उपबरहन बर बरणि न जाहीं । स्रगसुगन्धमणिमन्दिरमाहीं ॥
रतन दीप सुठि चारु चँदोवा । कहत न बनैजानजेहिजोवा ॥
सेज रुचिर रचि राम उठाये । प्रेम समेत पलँग पौढाये ॥

आज्ञा पुनिपुनिभाइन दीन्हीं । निजनिजसेजशयनतिनकीन्हीं॥
देखिश्याम मृदुमंजुल गाता । कहहिंसप्रेमवचन सबमाता॥
मारग जात भयावनि भारी । केहिबिधितात ताड़का मारी॥
दो० घोर निशाचर बिकट भट समरगनै नहिंकाहु ।
मारे सहित सहायकिमि खल मारीच सुबाहु ॥
मुनि प्रसादबल तात तुम्हारे । ईश अनेक करवरे टारे॥
मख रखवारी करि दुहुँ भाई । गुरुप्रसाद सब बिद्या पाई॥
मुनितियतरी लगत पगधूरी । कीरति रही भुवनभरि पूरी॥
कमठपीठ पवि कूट कठोरा । नृपसमाजमहँ शिवधनुतोरा॥
विश्वविजय यश जानकिपाई । आये भवन ब्याहि सबभाई॥
सकल अमानुष कर्म तुम्हारे । केवल कौशिक कृपा सुधारे॥
आजु सफल जगजन्म हमारे । देखि तातबिधु बदनतुम्हारे॥
जे दिनगये तुमहिं बिनुदेखे । तेबिरंचि जनि पावहिं लेखे॥
दो० राम प्रतोषी मातुसब कहि बिनीत बर बयन ।
सुमिरि शम्भुगुरु बिप्रपदकिये नींदबशनयन ॥
नींदहु बदन सोह सुठिलोना । मनहुँ सांझसरसीरुह सोना॥
घरघर करहिं जागरण नारी । देहिं परस्पर मंगल गारी॥
पुरी बिराजति राजत रजनी । रानीकहहिं बिलोकहुसजनी॥
सुन्दर बधुन सासुलै सोई । फणिपतिजनुशिरमणिउरगोई॥
प्रात पुनीत काल प्रभु जागे । अरुणचूड़ बर बोलन लागे॥
बन्दी मागध गुण गण गाये । पुरजन द्वार जुहारन आये॥
बन्दिविप्र सुर गुरु पितु माता । पाइअशीशमुदितसबभ्राता॥
जननिन्ह सादर बदन निहारे । भूपति संग द्वार पगुधारे॥
दो० कीन्हशौच सबसहजशुचि सरितपुनीत नहाइ ।
प्रात क्रियाकरि तात पहँ आये चारिउ भाइ ॥
भूप बिलोकि लिये उरलाई । बैठे हरषि रजायसु पाई॥
देखि राम सब सभा जुड़ानी । लोचनलाभअवधिअनुमानी॥

पुनि वशिष्ठमुनि कौशिक आये । सुभग आसनन मुनिबैठाये ॥
सुतन समेत पूजि पद लागे । निरखिरामदोउउर अनुरागे ॥
कहहिं वशिष्ठ धर्म इतिहासा । सुनहिंमहीपसहितरनिवासा ॥
मुनिमनअगमगाधिसुतकरणी।मुदितवशिष्ठविपुलबिधिबरणी ॥
बोले बामदेव सब साँची । कीरतिकलितलोकतिहुँमाची ॥
सुनि आनन्द भयउ सब काहू । रामलषणउर अधिकउछाहू ॥
दो० मंगलमोद उछाह नित जाहिं दिवस इहिभांति ।
उमँगीअवधअनंदभरि अधिकअधिकअधिकाति ॥
सुदिन शोधि कर कंकण छोरे । मंगल मोद बिनोद न थोरे ॥
नितनव सुख सुर देखिसिहाहीं । अवधजन्मयाचहिंबिधिपाहीं ॥
बिश्वामित्र चलननित चहहीं । राम सप्रेम विनय बशरहहीं ॥
दिनादिन सद्गुण भूपतिभाऊ । देखि सराह महा मुनिराऊ ॥
मांगत बिदा राउ अनुरागे । सुतन समेत ठाढ़ भे आगे ॥
नाथ सकल सम्पदा तुम्हारी । मैं सेवक समेत सुतनारी ॥
करब सदा लरिकन पर छोहू । दरशन देत रहब मुनि मोहू ॥
असकहि राउसहित सुतरानी । परेउचरण मुख आवनबानी ॥
दीन्ह अशीशबिप्र बहुभांती । चले नप्रीतिरीति कहिजाती ॥
रामसप्रेम संग सब भाई । आयसु पाइ फिरे पहुँचाई ॥
छो० रामरूप भूपति भगाति ब्याह उछाह अनन्द ।
जातसराहत मनहिंमन मुदितगाधिकुलचन्द ॥
बामदेव रघुकुल गुरु ज्ञानी । बहुरिगाधिसुतकथाबखानी ॥
सुनिसुनिसुयशमनहिं मनराऊ । बरणत आपन पुण्यप्रभाऊ ॥
बहुरे लोग रजायसु भयऊ । सुतनसमेतनृपतिगृहगयऊ ॥
जहँ तहँ रामब्याह यश गावा । सुयशपुनीतलोकतिहुँ छावा ॥
आये ब्याहि राम घर जबते । बसेअनन्द अवध सबतवते ॥
प्रभुबिवाहजस भयउ उछाहा । सकहिंनबरणिगिराअहिनाहा॥
कबिकुलजीवन पावन जानी । राम सीय यश मंगल खानी ॥

तेहिते मै कछु कहा बखानी । करन पुनीतहेतु निज बानी ॥

छं० निजगिरापावनकरनकारण रामयशतुलसी कह्यो ।
रघुवीर चरितअपारबारिधि पारकबिकवनेलह्यो ॥
उपवीत ब्याहउछाहमंगल सुनहिंसादर गावहीं ।
वैदेहि रामप्रसाद ते जन सर्व्वदा सुख पावहीं ॥
सुनिगायकहौंगिरीशकन्या धन्य अधिकारीसही ।
नितप्रीति अनुपमसुनतहरिगुणभक्तिअनुपमतेलही॥
रघुवीरपदअनुराग जल लोभाग्नि बेगिबुझावई ।
यह जानितुलसीदासमनक्रमबचन हरिगुणगावई ॥

दो० कठिनकालमल ग्रसिततनु साधनकछुक न होइ ।
यह बिचारि बिश्वासकरि हरि सुमिरे बुधिसोइ ॥

सो० मन हरि पद अनुराग करहु त्यागि नाना कपट ।
महा मोह निशि जाग सोवत बीते काल बहु ॥
सिय रघुबीर बिवाह जे सप्रेम सादर सुनहिं ।
तिनकहँ सदा उछाह मंगलायतन रामयश ॥

इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेविमल
वैराग्य विज्ञानसन्तोषसंपादनोनामतुलसीकृत
बालकाण्डप्रथमःसोपानः ॥ १ ॥

इति ॥





श्रीगणेशायनमः

रामायण तुलसीकृत ॥

अयोध्याकाण्ड ॥

श्लोक ॥

वामांकेचविभातिभूधरसुतादेवापगामस्तके भालेबालविधु
र्गलेचगरलंयस्योरसिव्यालराट् ॥ सोयंभूतिविभूषणः सुरवरः
सर्वाधिपःसर्व्वदा शर्वःसर्वगतःशिवःशशिनिभः श्रीशंकरःपातु
माम् १ प्रसन्नतांयानगताभिषेकतस्तथानमम्लौवनवासदुःख
तः ॥ मुखाम्बुजश्रीरघुनन्दनस्यसासदास्तुतन्मंजुलमंगलप्रदा
२ ॥ नीलाम्बुजश्यामलकोमलांगं सीतासमारोपितबामभाग
म् ॥ पाणौमहाशायकचारुचापं नमामिरामंरघुवंशनाथम् ३ ॥

दो० श्रीगुरुचरण सरोजरज निजमनमुकुरसुधारि ।
बरणौंरघुबरबिमलयश जो दायक फलचारि ॥

जबते राम ब्याहि घर आये । नितनव मंगलमोद बधाये ॥
भुवन चारिदश भूधर भारी । सुकृत मेघ बरषहिं सुखबारी ॥
ऋधिसिधि सम्पतिनदीसुहाई । उमँगिअवधअम्बुधिकहँआई ॥
मणिगण पुर नरनारि सुजाती । शुचिअमोलसुन्दरसबभांती ॥
कहिन जाइ कछु नगरविभूती । जनु इतनी बिरंचि करतूती ॥
सबबिधि सबपुरलोग सुखारी । रामचन्द्र मुखचन्द्र निहारी ॥
मुदितमातु सब सखी सहेली । फलितविलोकिमनोरथबेली ॥
रामरूप गुण शील स्वभाऊ । प्रमुदितहोहिंदेखि सुनिराऊ ॥

दो० सबके उर अभिलाषअस कहहिं मनाइ महेश ।
आप अछत युवराजपद रामहिं देहिं नरेश ॥
एकसमय सब सहित समाजा । राजसभा रघुराज बिराजा ॥
सकल सुकृत मूरति नरनाहू । रामसुयशसुनिअतिहिउछाहू ॥
नृपसबरहहिं कृपा अभिलाखे । लोकप रहहिं प्रीतिरुखराखे ॥
त्रिभुवन तीनिकाल जगमाहीं । भूरिभाग दशरथ समनाहीं ॥
मंगल मूल रामसुत जासू । जो कछु कहिय थोरसब तासू ॥
राउ स्वभाव मुकुरकर लीन्हा । बदनबिलोकिमुकुटसमकीन्हा ॥
श्रवणसमीप भये सित केशा । मनहुँ चौथपन असउपदेशा ॥
नृप युवराज राम कहँ देहू । जीवनजन्म सुफल करिलेहू ॥
दो० असबिचारिउर आनिनृप सुदिन सुअवसरपाइ ।
तनपुलकितमनमुदितअति गुरुहिं सुनायउजाइ ॥
कह्योभुआलसुनियमुनिनायक । भयेरामसबबिधि सबलायक ॥
सेवक सचिव सकल पुरबासी । जे हमार अरिमित्र उदासी ॥
सबहिंरामप्रिय जेहिबिधिमोहीं । प्रभुअशीशजनुतनुधरिसोहीं ॥
विप्र सहित परिवार गुसाईं । करहिं छोहसब रौरेहि नाईं ॥
जे गुरुचरण रेणु शिर धरहीं । तेजनुसकलबिभवबशकरहीं ॥
मोहिंसमान अरु भयउ न दूजे । सब पायउँ प्रभुपद रजपूजे ॥
अब अभिलाष एक मनमोरे । पूजिहिनाथ अनुग्रह तोरे ॥
मुनि प्रसन्न लखि सहजसनेहू । कह्यो नरेश रजायसु देहू ॥
दो० राउर राजन नामयश सब अभिमत दातार ।
फलअनुगामीमहिपमणिमनअभिलाषतुम्हार ॥
सबबिधिगुरुप्रसन्नजियजानी । बोल्योराउ बिहँसिमृदुबानी ॥
नाथ राम करिये युवराजू । कहियकृपाकरि करियसमाजू ॥
मोहिं अछत अस होउ उछाहू । लहहिंलोग सबलोचनलाहू ॥
प्रभुप्रसाद शिव सबै निबाहीं । इहै लालसा इक मनमाहीं ॥
पुनि न शोच तनुरहै कि जाऊ । जेहि न होइ पाछे पछिताऊ ॥

सुनिमुनि दशरथ बचनसुहाये । मंगल मूल मोद अति पाये ॥
सुनुनृपजासु बिमुख पछिताही । जासुभजनबिनुजरनिनजाही ॥
भये तुम्हार तनय सो स्वामी । रामपुनीत प्रेम अनुगामी ॥
दो० बेगि बिलम्ब न करियनृप साजियसबै समाज ।
सुदिन सुमंगल तबहिं जब रामहोहिं युवराज ॥
मुदित महीपति मन्दिर आये । सेवक सचिव सुमन्त बुलाये ॥
कहि जयजीव शीश तिननाये । भूप सुमंगल बचन सुनाये ॥
प्रमुदित मोहिंकह्यो गुरुआजू । रामहिं राज देहु युवराजू ॥
जो पांचहि मत लागै नीका । करहु हर्षि हिय रामहिं टीका ॥
मंत्री मुदित सुनत प्रियबानी । अभिमतबिरवपरेउजनुपानी ॥
बिनती सचिव करहिं करजोरी । जियहुजगतपतिबरषकरोरी ॥
जगमंगल भलकाज बिचारा । बेगहिं नाथ न लाइय बारा ॥
नृपहिंमोदसुनिसचिव सुभाखा । बढ़तबिटपजनुलहीसुशाखा ॥
दो० कहेउ भूप मुनिराजकर जो जो आयसु होइ ।
रामराज्य अभिषेकहित बेगिकरहु सोइसोइ ॥
हरषि मुनीश कह्यो मृदुबानी । आनहुसकल सुतीरथ पानी ॥
औषध मूलफूल फल नाना । कहे नामगनि मंगल जाना ॥
चामर चमर बसन बहुभांती । रोमपाट पट अगणित जाती ॥
मणिगण मंगल बस्तु अनेका । जो जगयोगभूप अभिषेका ॥
बेद बिहितकहि सकलबिधाना । कह्योरचहुपुरबिबिधबिताना ॥
पनस रसाल पुंगफल केरा । रोपहु बीथिन पुर चहुँ फेरा ॥
रचहु मंजुमणि चौके चारू । कहेउ बनावन बेगि बजारू ॥
पूजहु गणपति गुरु कुलदेवा । सबबिधि करहु भूमिसुरसेवा ॥
दो० ध्वजपताक तोरण कलश सजहु तुरग रथनाग ।
शिरधरिमुनिबरबचनसब निजनिजकाजहिंलाग ॥
जेहि मुनीश जो आयसुदीन्हा । सो जनुकाजप्रथमतेइकीन्हा ॥
बिप्र साधु सुर पूजत राजा । करत रामहित मङ्गल काजा ॥

सुनत राम अभिषेक सुहावा । बाजु गहागह अवधबधावा ॥
रामसीय तनु शकुन जनाये । फरकहिं मंगल अंग सुहाये ॥
पुलकि सप्रेम परस्पर कहहीं । भरतआगमन सूचकअहहीं ॥
भये बहुतदिन अति अवसेरी । शकुन प्रतीति भेंट प्रियकेरी ॥
भरतसरिस प्रियको जगमाहीं । यहै शकुनफल दूसर नाहीं ॥
रामहिं बन्धु शोच दिनराती । अंडन्हकमठ हृदयजेहिभांती ॥

दो० तेहि अवसर मंगलपरम सुनिहरषेउ रनिवास ।
शोभितलखिविधुबढ़तजनुबारिधिबीचिबिलास ॥

प्रथमजाइ जेहि वचनसुनावा । भूषण बसन भूरितिन्हपावा ॥
प्रेम पुलकि तन मन अनुरागीं । मंगलसाज सजनसबलागीं ॥
चौके चारु सुमित्रा पूरी । मणिमयविविधभांतिअतिरूरी ॥
आनँद मगन राम महतारी । दिये दान बहुविप्र हँकारी ॥
पूजेउ ग्राम देव सुर नागा । कहेउ बहोरि देन बलिभागा ॥
जेहिबिधि होइ राम कल्याना । देहु दयाकरि सो बरदाना ॥
गावहिं मंगल कोकिल बयनी । विधुबदनी मृगशावकनयनी ॥

दो० रामराज अभिषेक सुनि हिय हरषीं बरनारि ।
लगीं सुमंगलसजनसब विधिअनुकूल बिचारि ॥

तब नरनाह बशिष्ठ बुलाये । राम धाम सिख देन पठाये ॥
गुरु आगमन सुनत रघुनाथा । द्वार आइ नायउ पदमाथा ॥
सादर अर्घ्य देइ घर आने । सोरहभांति पूजि सनमाने ॥
गहे चरण सिय सहित बहोरी । बोले राम कमल करजोरी ॥
सेवक सदन स्वामि आगमनू । मंगल मूल अमंगल दमनू ॥
यदपिउचितअसबोलिसप्रीती । पठइयनाथ काज असनीती ॥
प्रभुता तजि प्रभु कीन्हसनेहू । भयउ पुनीत आजु ममगेहू ॥
आयसु होय सो करिय गुसाईं । सेवक लहै स्वामि सेवकाईं ॥

दो० सुनिसनेह साने बचन मुनि रघुबरहि प्रशंस ।
रामकस न तुम कहहु अस हंसबंश अवतंस ॥

बरणि रामगुण शील स्वभाऊ । बोले प्रेम पुलकि मुनिराऊ ॥
भूप सजेउ अभिषेक समाजू । चाहत देन तुमहिं युवराजू ॥
राम करहु सब संयम आजू । जोविधि कुशल निबाहैकाजू ॥
गुरु सिख देइ राउपहँ गयऊ । रामहृदय असविस्मयभयऊ ॥
जनमे एक संग सब भाई । भोजन शयनकेलि लरिकाई ॥
कर्णवेध उपवीत विवाहा । संग संग सब भयउ उछाहा ॥
विमलबंश यह अनुचितएका । अनुजबिहाय बड़े अभिषेका ॥
प्रभु सप्रेम पछितानि सुहाई । हरेउ भरत मनकी कुटिलाई ॥
दो० तेहि अवसर आये लषण मगन प्रेम आनन्द ।
सनमाने प्रिय वचन कहि रविकुल कैरवचन्द ॥
बाजहिंबाजन विविध विधाना । पुर प्रमोदनहिं जाइ बखाना ॥
भरत आगमन सकलमनावहिं । आवहिंबेगिनयन फलपावहिं ॥
हाट बाट घर गली अथाई । कहहिं परस्पर लोगलुगाई ॥
काल्हिलग्न भल केतिकबारा । पूजिहिंविधिअभिलाषहमारा ॥
कनक सिंहासन सीय समेता । बैठहिंराम होइ चित चेता ॥
सकलकहहिं कबहोइहिकाली । विघ्न मनावहिं देव कुचाली ॥
तिनहिंसुहात नअवधबधावा । चोरहि चांदनिराति न भावा ॥
शारदबोलि विनय सुरकरहीं । बारहिं बार पायँलै परहीं ॥
दो० बिपति हमारि बिलोकिबड़ि मातु करिय सोइकाज ।
राम जाहिं बन राज तजि होइ सकल सुरकाज ॥
सुनिसुरविनयठाढ़ि पछिताती । भइउँसरोजविपिन हिमराती ॥
देखिदेव पुनि कहहिं बहोरी । मातुतोहिं नहिं थोरिउखोरी ॥
विस्मय हर्ष रहित रघुराऊ । तुम जानहु रघुबीर स्वभाऊ ॥
जीवकर्म्मवश दुखसुख भागी । जाइयअवध देवहित लागी ॥
बारबार गहिचरण सकोची । चलीबिचारिविबुधमतिपोची ॥
ऊंच निवास नीच करतूती । देखि न सकहिंपराइ बिभूती ॥
आगिलकाज बिचारि बहोरी । करिहैंचाह कुशल कबिमोरी ॥

हरषि हृदय दशरथ पुर आई । जनुग्रहदशा दुसह दुखदाई ॥
दो० नाम मन्थरा मन्द मति चेरि केकयी केरि ।
अयशपिटारी ताहिकरि गई गिरामति फेरि ॥
देखि मन्थरा नगर बनावा । मंगल मंजुल बाजु बधावा ॥
पूंछिसि लोगन्ह काह उछाहू । राम तिलकसुनिभा उरदाहू ॥
करै बिचार कुबुद्धि कुजाती । होइ अकाजकवनबिधिराती ॥
देखिलागु मधु कुटिलकिराती । जिमिगवँतकै लेउँ केहिभांती ॥
भरत मातुपहँ गइबिलखानी । कान्ननमनिहासिहँसिकहरानी ॥
उतर न देइ सो लेइ उसांसु । नारिचरितकरिढाराति आंसु ॥
हँसि कह रानि गाल बड़ तोरे । दीन्हलषणसिखअसमनमोरे ॥
तबहुँ न बोलिचेरिबड़िपापिनि । छांड़ै श्वासकारिजनुसांपिनि ॥
दो० सभयरानिकह कहसिकिन कुशलराम महिपाल ।
भरत लषण रिपुदमनसुनि भाकुबरी उरशाल ॥
कत सिख देहि हमहिंको माई । गालकरब केहिकर बलपाई ॥
रामहिंछांड़ि कुशल केहिआजू । जाहि नरेश देत युवराजू ॥
भाकौशल्यहिविधिअतिदाहिन । देखतगर्व रहत उरनाहिन ॥
देखहु कस न जाइ सबशोभा । जो अवलोकि मोरमनछोभा ॥
पूत विदेश न शोच तुम्हारे । जानतिहौ बश नाह हमारे ॥
नींद बहुत प्रिय सेज तुराई । लखहु न भूप कपट चतुराई ॥
सुनिप्रियबचनकुटिलमनजानी । झुकी रानि अरहू अरगानी ॥
पुनिअसकबहुँकहसि घरफोरी । तौ धरि जीह कढ़ावों तोरी ॥
दो० काने खोरे कूबरे कुटिल कुचाली जानि ।
तियविशेषपुनिचेरिकहि भरतमातुमुसकानि ॥
प्रियबादिनिसिखदीन्हेउँतोहीं । सपनेहु तोपर कोप न मोहीं ॥
सुदिन सुमङ्गल दायक सोई । तोर कहा फुर जादिनहोई ॥
जेठ स्वामि सेवक लघु भाई । यहदिनकर कुलरीतिसदाई ॥
रामतिलक जो सांचहु काली । मांगु देउँ मनभावत आली ॥

कौशल्या सम सब महतारी । रामहिंसहज स्वभावपियारी ॥
मोपर करहिं सनेह बिशेखी । मैं करि प्रीति परीक्षा देखी ॥
जो विधि जन्म देइ करि छोहू । होहिं रामसिय पूत पतोहू ॥
प्राणते अधिक रामसियमोरे । तिनके तिलक छोभकसतोरे ॥
दो० भरत शपथतोहिं सत्यकहु परिहरिकपटदुराव ।
हर्ष समय बिस्मयकरसि कारण मोहिं सुनाव ॥
एकहिबार आश सब पूजी । अबकछुकहब जीहकरिदूजी ॥
फोरै योग कपार अभागा । भलोकहत दुखरौरेहु लागा ॥
कहै भूंठ फुर बात बनाई । सो प्रिय तुमहिं करुइमैंभाई ॥
हमहुँ कहब अब ठकुर सुहाती । नाहिंतो मौनरहब दिनराती ॥
करि कुरूप बिधिपरबश कीन्हा । बवासोलुनियलहियजोदीन्हा ॥
कोउ नृप होउ हमैं का हानी । चेरिछांड़ि अबहोब कि रानी ॥
जारै योग स्वभाव हमारा । अनभलदेखिनजाइतुम्हारा ॥
तातें कछुक बात अनुसारी । क्षमब देवि बड़ि चूकहमारी ॥
दो० गूढ़ कपट प्रिय बचन सुनि तीय अधरबुधिरानि ।
सुर मायाबश बैरिणिहि सुहृदजानि पतियानि ॥
सादर पुनिपुनि पूंछति वोही । शवरीनाद मृगी जनु मोही ॥
तसमति फिरी अहै जसभावी । रहसी चेरि घातभलि फावी ॥
तुम पूंछहु मैं कहत डराऊं । धरेहु मोर घरफोरी नाऊं ॥
सजिप्रतीतिगढ़िबहुबिधिछोली । अवधसाढ़साती जनुबोली ॥
प्रिय सियराम कहा तुम रानी । रामहिं तुमप्रियसो फुरबानी ॥
रहे प्रथम अब सो दिन बीते । समयपाइ रिपु होहिं पिरीते ॥
भानुकमल कुल पोषनिहारा । बिनुजल जारिकरै सो छारा ॥
जर तुम्हारिचह सवति उपारी । रूंधहु करि उपाय बरबारी ॥
दो० तुमहिं न शोच सुहागबल निजबश जानहुराव ।
मनमलीन मुंह मीठ नृप राउर सरल स्वभाव ॥
चतुर गँभीर राम महतारी । बीचपाइ निजकाज सवाँरी ॥

पठये भरत भूप ननिश्रौरे । राम मातु मत जानब रौरे ॥
सेवहिंसकलसवति मोहिं नीके । गर्वित भरत मातुबल पीके ॥
शालु तुम्हार कौशलहि माई । चतुरकपट नहिं परतलखाई ॥
राजहिं तुमपर प्रीतिबिशेखी । सवतिस्वभावसकैनहिं देखी ॥
रचि प्रपंच भूपहि अपनाई । राम तिलक हितलगनधराई ॥
इहिकुल उचित रामकहँटीका । सबहि सुहाइमोहिंसुठिनीका ॥
आगिलि बातसमुझि डरमोहीं । दैव देवफल सो फिरि वोहीं ॥

दो० रचिपचिकोटिककुटिलपन कीन्हेसिकपटप्रबोध ।
कहेसि कथा शत सवतिकर जाते बढ़े बिरोध ॥

भावी बश प्रतीति उर आई । पूंछिनारि निजशपथ दिवाई ॥
का पूंछहुतुम अजहुँ नजाना । हितअनहितनिजपशुपहिंचाना ॥
भये पाख दिन सजत समाजू । तुमसुधिपायहु मोसन आजू ॥
खाइय पहिरिय राज तुम्हारे । सत्य कहे नहिं दोष हमारे ॥
जो असत्य कछु कहब बनाई । तौ विधि देइहि मोहिंसजाई ॥
रामहिं तिलककाल्हिजो भयऊ ।तुमकहँबिपतिबीजबिधिबयऊ॥
रेखा खैंचि कहौं बल भाखी । भामिनिभइउ दूधकी माखी ॥
जोसुत सहित करहु सेवकाई । तौ घर रहहु न आन उपाई ॥

दो० कद्रू बिनतहि दीन दुख तुमहिं कौशला देव ।
भरत बन्दि गृह सेइहैं राम लषण कर नेव ॥

केकय सुता सुनत कटु बानी । कहिनसकैकछुसहमिसुखानी ॥
तन पसेव कदलि जनु काँपी । कुबरी दशन जीह तबचापी ॥
कहिकहि कोटिन कपटकहानी । धीरज धरहु प्रबोधिसिरानी ॥
कीन्हेसि कठिन पढ़ाय कुपाठू । जिमिनवैफिरिउकठकुकाठू ॥
फिराकर्म्म प्रियलागु कुचाली । बकिहिसराहत मनहुंमराली ॥
सुनु मंथरा बात फुर तोरी । दहिनआँखिनितफरकतमोरी ॥
दिनप्रति देखौं राति कुसपना । कहौं न तोहिंमोहबशअपना ॥
काह कहौं सखि शुद्ध सुभाऊ । दाहिन बामनहिं जानौं काऊ ॥

दो० अपनेचलत न आजुलगि अनभल काहुक कीन्ह ।
केहि अघ एकहि बारमोहिं दैव दुसहदुख दीन्ह ॥
नैहर जन्म भरब बरु जाई । जियत न करबसवतिसेवकाई ॥
अरिबश दैव जिआवै जाही । मरणनीकतेहिजियब न चाही ॥
दीनबचन कह बहु विधि रानी । सुनि कुबरी तियमाया ठानी ॥
अस कस कहहुमानिमनऊना । सुखसुहाग तुमकहँ दिनदूना ॥
जो राउर अस अनभल ताका । सोपाइहि यहफल परिपाका ॥
जबते कुमतिसुना मैं स्वामिनि । भूख न बासरनींद न यामिनि ॥
पूंछा गुणिन रेख तिन खाँची । भरत भुवालहोब यह साँची ॥
भामिनि करहुतो कहौं उपाऊ । हैं तुम्हरे सेवा बश राऊ ॥
दो० परौं कूप तव बचन लगि सकौं पूत पतित्यागि ।
कहसिमोरदुखदेखिबड़ कस न करब हितलागि ॥
कुबरी करी कुबलि कैकेयी । कपट छुरी उर पाहन टेयी ॥
लखै न रानिनिकट दुख कैसे । चरै हरिततृणबलिपशु जैसे ॥
सुनत बात मृदु अंत कठोरी । देति मनहुँ मधु माहुर घोरी ॥
कहै चेरि सुधि अहै कि नाहीं । स्वामिनिकहेहुकथामोहिंपाहीं ॥
दुइ बरदान भूप सन थाती । माँगहु आजु जुड़ावहु छाती ॥
सुतहि राज रामहिं बनबासू । देहुलेहु सब सवति हुलासू ॥
भूपति राम शपथ जब करई । तबमांगेहु जेहिबचन न टरई ॥
होइ अकाज आजु निशि बीते । बचन मोर प्रिय मानहु जीते ॥
दो० बड़कुघातकरि पातकिनि कहेसि कोपगृह जाहु ।
काज सँवारहु सजगसब सहसा जनि पतियाहु ॥
कुबरिहिरानि प्राणसम जानी । बार बार बड़ि बुद्धि बखानी ॥
तुहि सम हित न मोर संसारा । बहे जात करभइसि अधारा ॥
जो विधिपुरब मनोरथ काली । करौं तोहिं चष पूतरि आली ॥
बहु बिधि चेरिहि आदर देयी । कोपभवन गवनी कैकेयी ॥
बिपति बीज बर्षा ऋतु चेरी । भुइँ भइ कुमति केकयीकेरी ॥

पाइ कपट जल अंकुर जामा । बरदोउदलफलदुखपरिणामा ॥
कोप समाज साज सजि सोई । राजकरत तेहि कुमतिविगोई ॥
राउर नगर कुलाहल होई । यह कुचालकछुजान न कोई ॥
दो० प्रमुदितपुर नरनारि सब साजि सुमंगल चार ।
इक प्रविशहिं इक निकसहीं भीर भूप दरबार ॥
बाल सखा सुनि हियहरषाहीं । मिलिदश पांच रामपहँजाहीं ॥
प्रभु आदरहिं प्रेम पहिंचानी । पूछहिं कुशल क्षेम मृदुबानी ॥
फिरहिं भवनप्रभु आयसुपाई । करत परस्पर राम बड़ाई ॥
को रघुबीर सरिस संसारा । शील सनेह निबाहनहारा ॥
जेहि जेहियोनिकर्मबशभ्रमहीं । तहँ तहँ ईशदेहिं यह हमहीं ॥
सेवक हम स्वामी सिय नाहू । होउ नाथ यह ओर निबाहू ॥
अस अभिलाष नगरसबकाहू । केकयसुता हृदय अतिदाहू ॥
को न कुसंगति पाइ नशाई । रहै न नीच मते गरुआई ॥
दो० सांझ समय सानन्द नृप गये केकयी गेह ।
गवन निठुरतानिपटकिय जनुधरिदेह सनेह ॥
कोपभवन सुनि सकुचे राऊ । भयवश अगमपरै नहिं पाऊ ॥
सुरपति बसै बाहु बल जाके । नरपतिरहहिं सकलरुखताके ॥
सो सुनि तियरिस गयेसुखाई । देखहु काम प्रताप बड़ाई ॥
शूलकुलिश असिअँगवनिहारे । तेरतिनाथ सुमन शर मारे ॥
सभय नरेश प्रिया पहँ गयऊ । देखि दशादुख दारुणभयऊ ॥
भूमि शयन पट मोट पुराना । दिये डारि तनु भूषण नाना ॥
कुमतिहि कस कुरूपता फावी । अनहितबातशोच जनुभावी ॥
जाइ निकट नृपकह मृदुबानी । प्राणप्रिया केहिहेतु रिसानी ॥
छं० केहिहेतुरानिरिसानिपरसत पानि पतिहिनिवारई ।
मानहुँसरोषभुअंगभामिनि विषमभांति निहारई ॥
दुइ वासना रसना दशन बर मर्म ठाहर देखई ।
तुलसी नृपति भवितव्यता वशकामकौतुकलेखई ॥

सो० बार बार कह राउ सुमुखि सुलोचनि पिकवचनि ।
कारण मोहिं सुनाउ गजगामिनि निज कोपकर ॥
अनहित तोर प्रिया केहि कीन्हा । केहि दुइ शिर केहि यम चह लीन्हा ॥
कहु केहि रंकहि करौं नरेशू । कहु केहि नृपहि निकारौं देशू ॥
सकौं तोर अरि अमरहु मारी । कहा कीट बपुरे नर नारी ॥
जानसि मोर स्वभाव बरोरू । तव मुख मम दृग चन्द्र चकोरू ॥
प्रिया प्राण सुत सर्वस मोरे । परिजन प्रजा सकल वश तोरे ॥
जो कछु कहौं कपट करि तोहीं । भामिनि राम शपथ शत मोहीं ॥
बिहँसि माँगु मनभावति बाता । भूषण साजु मनोहर गाता ॥
घरी कुघरी समुझि जिय देखू । बेगि प्रिया परिहरहु कुवेखू ॥
दो० यह सुनि मन गुनि शपथ बड़ि बिहँसि उठी मतिमन्द ।
भूषण सजति बिलोकि मृग मनहुँ किराति निफन्द ॥
पुनि कह राउ सुहृद जिय जानी । प्रेम पुलकि मृदु मंजुल बानी ॥
भामिनि भयउ तोर मनभावा । घर घर नगर अनन्द बधावा ॥
रामहिं देउँ कालि युवराजू । सजहु सुलोचनि मंगल साजू ॥
दलकि उठी सुनि बचन कठोरा । जनु छुइ गयउ पाक बरतोरा ॥
ऐसी पीर बिहँसि उर गोई । चोर नारि जिमि प्रकट न रोई ॥
लखी न भूप कपट चतुराई । कोटि कुटिल गुण गुरू पढ़ाई ॥
यद्यपि नीति निपुण नरनाहू । नारिचरित जलनिधि अवगाहू ॥
कपट सनेह बढ़ाइ बहोरी । बोली बिहँसि नयन मुख मोरी ॥
दो० माँगु माँगु पै कहहु पिय कबहुं देहु न लेहु ।
देन कहेउ बरदान दुइ तेउ पावत सन्देहु ॥
जानेउँ मर्म्म राउ हँसि कहई । तुमहिं कोहाब परम प्रिय अहई ॥
थाती राखि न माँगेउ काऊ । बिसरि गयो मम भोर सुभाऊ ॥
झूठहु दोष हमहिं जनि देहू । दुइ के चारि माँगि किन लेहू ॥
रघुकुल रीति सदा चलि आई । प्राण जाइँ बरु बचन न जाई ॥
नहिं असत्य सम पातक पुंजा । गिरि सम होहिं कि कोटिक गुंजा ॥

सत्यमूल सब सुकृत सुहाई । वेदपुराण बिदित मुनिगाई ॥
तेहिपर राम शपथ करिआई । सुकृत सनेहअवधि रघुराई ॥
बात दृढ़ाइ कुमति हँसि बोली । कुमतिबिहंगकुलहजनुखोली ॥

दो० भूप मनोरथ सुभगबन सुख सुबिहंग समाज ।
भिल्लिनिजनुछाँड़नचहत वचनभयङ्कर बाज ॥

सुनहु प्राणपति भावत जीका । देहु एकबर भरतहिं टीका ॥
दूसर बर मांगों कर जोरी । नाथ मनोरथ पुरवहु मोरी ॥
तापस वेष विशेष उदासी । चौदह वर्ष राम बनबासी ॥
सुनितियवचन भूपउरशोकू । शशिकरछुवतबिकलजिमिकोकू ॥
गयेसहमिकछु कहिनाहिं आवा । जनुशचान बनझपटेउलावा ॥
बिवरण भयउ निपट महिपालू । दामिनिहनेउमनहुँ तरुतालू ॥
माथे हाथ मूंदि दोउ लोचन । तनुधरिशोचलागुजनुशोचन ॥
मोर मनोरथ सुरतरु फूला । फरतकरिणिजनुहतेउसमूला ॥
अवध उजारि कीन्ह कैकेयी । दीन्हेसिअचलबिपतिकैनेयी ॥

दो० कवने अवसर का भयउ गयउँ नारिबिश्वास ।
योगसिद्धफलसमयजिमि यतिहिअविद्यानास ॥

इहिविधि राउ मनहिंमन दहई । देखिकुभाँतिकुमतिअसकहई ॥
भरत कि राउर पूत न होहीं । आनेहु मोलबेसाहि किमोहीं ॥
जो सुनि शरसमलाग तुम्हारे । काहे न बोलेहु बचन सँभारे ॥
देहुउतर अस कहहु कि नाहीं । सत्यसिन्धु तुमरघुकुलमाहीं ॥
देन कहेउबर अब जनि देहू । तजहु सत्यजगअपयशलेहू ॥
सत्य सराहि कहेउ बर देना । जानेहु लेइहि माँगि चबेना ॥
शिविदधीचिबलिजोकछुभाखा । तनधनतजेउबचनप्रणराखा ॥
अति कटुबचन कहति कैकेयी । मानहुँ लोन जरेपर देयी ॥

दो० धर्म्मधुरन्धर धीरधरि नयन उघारे राउ ।
शिरधुनिलीन्हउसासअति मारेसिमोहिंकुठाउ ॥

आगे देखि बरति रिसभारी । मनहुँ रोष तरवारि उघारी ॥

मूढ़ कुबुद्धि धार निठुराई । धरि कुबरी जनु सानबनाई ॥
लखेउ महीप कराल कठोरा । सत्य कि जीवन लेइहिमोरा ॥
बोले राउ कठिन करि छाती । बानीबिनय न ताहिसोहाती ॥
मोरे भरत राम दोउ आंखी । सत्य कहौं करिशंकर साखी ॥
प्रियाबचन कसकहसिकुभाँती । रीतिप्रतीति प्रीतिकरिघाती ॥
अवशि दूत मैं पठउब प्राता । ऐहैं बेगि सुनत दोउ भ्राता ॥
सुदिन साधि सबसाज सजाई । देहौं भरतहिं राज बजाई ॥

दो० लोभ न रामहिं राजकर बहुत भरतपर प्रीति ।
मैं बड़ छोट बिचारकरि करतरहेउँ नृपनीति ॥

राम शपथ शत कहौं स्वभाऊ । राममातु मोहिंकहा न काऊ ॥
मैं सब कीन्ह तोहिं बिनु पूंछे । ताते परेउ मनोरथ छूंछे ॥
रिसिपरिहरि अब मङ्गलसाजू । कछु दिनगये भरत युवराजू ॥
एकहि बात मोहिं दुख लागा । बर दूसर असमंजस मांगा ॥
अजहूं हृदय दहततेहि आंचा । रिसिपरिहासकिसांचहुसांचा ॥
कहु तजि रोष राम अपराधू । सबकोउ कहतरामसुठिसाधू ॥
तुहूं सराहसि करसि सनेहू । अबसुनि मोहिं परमसन्देहू ॥
जासु स्वभावअरिहु अनुकूला । सोकिमिकरहिमातुप्रतिकूला ॥

दो० प्रियाहास्यरिसि परिहरहु मांगुबिचारि विवेक ।
जेहिदेखौं अबनयनभरि भरतराज अभिषेक ॥

जियै मीन बरुबारि बिहीना । मणिबिनुफणिकजियैदुखदीना ॥
कहौं स्वभाव न छल मनमाहीं । जीवन मोर राम बिनु नाहीं ॥
समुझि देखु तैं प्रिया प्रवीना । जीवन दशरथ रामअधीना ॥
सुनिमृदुबचनकुमतिअतिजरई । मनहुँअनलआहुति घृतपरई ॥
कहहु करहुकिन कोटि उपाया । इहां न लागिहि राउरमाया ॥
देहु कि लेहु अयश करिनाहीं । मोहिं न बहुपरपंचसोहाहीं ॥
राम साधु तुम साधु सुजाना । राममातुतुम भलिपहिचाना ॥
जस कौशल्या मोर भल ताका । तसफलदेउँ उन्हें करिशाका ॥

दो० होत प्रात मुनि वेषधरि जो न रामबनजाहिं ।
मोरमरण राउरअयश नृपसमुझहु मनमाहिं ॥
असकहि कुटिल भईउठिठाढ़ी । मानहुं रोष तरंगिनि बाढ़ी ॥
पाप पहार प्रकट भइ सोई । भरी क्रोधजल जाइ न जोई ॥
दोउ बर कूलकठिन हठ धारा । भँवर कूबरी बचन प्रचारा ॥
ढाहति भूप रूप तरु मूला । चलीबिपतिबारिधिअनुकूला ॥
लखी नरेश बात सब सांची । तियमिसुमीचशीश परनाची ॥
गहि पद बिनय कीन्ह बैठारी । जनिदिनकरकुलहोसिकुठारी ॥
मांगु माथ अबहीं देउँ तोहीं । रामबिरह जनिमारसि मोहीं ॥
राखु रामकहँ जेहि तेहि भांती । नाहितजरिहिजन्मभरिछाती ॥
दो० देखीब्याधिअसाध्यन्टप परेउधरणि धुनिमाथ ।
कहत परम आरत बचन राम राम रघुनाथ ॥
ब्याकुलराउ शिथिलसबगाता । करिणिकल्पतरुमनहुँनिपाता ॥
कण्ठ सूख मुख आव न बानी । जिमि पाठीनदीन बिनुपानी ॥
पुनि कह कटु कठोर कैकेयी । मर्म पाछि जनु माहुर देयी ॥
जो अन्तहु अस करतवरहेऊ । मांगु मांगु केहिकेबलकहेऊ ॥
दुइकि होइँ यक संग भुवालू । हँसब ठठाइ फुलाउबगालू ॥
दानि कहाउब अरु कृपणाई । चाहिय क्षेम कुशल रौताई ॥
छांड़हु बचन कि धीरज धरहू । जनिअबलाइव करुणाकरहू ॥
तन तिय तनयधामधनधरणी । सत्यासिन्धुकहँतृणसमबरणी ॥
दो० मर्मबचन सुनि राउकह कछुक दोषनहिंतोर ।
लागेउ मोहि पिशाचजनु कालकहावत मोर ॥
चहत न भरत भूप पद भोरे । विधिवशकुमतिवसी उरतोरे ॥
सो सब मोर पाप परिणामू । कछुनबसाइ भयो विधिबामू ॥
सुवसबसिहिपुनिअवध सुहाई । सब गुण धाम राम प्रभुताई ॥
करिहैं भाइ सकल सेवकाई । होइहै तिहुँ पुर राम बड़ाई ॥
तोर कलंक मोर पछिताऊ । मुयहुमेटि नहिंजाइहि काऊ ॥

अबतोंहिं नीक लागु करु सोई । लोचन ओट बैठु मुखगोई ॥
जौलौं जियौं कहौं कर जोरी । तौलौं जनिकछुकहसिबहोरी ॥
फिरि पछितैहसि अन्तअभागी । मारसि गाय नाहरू लागी ॥
दो० परेउराउ कहि कोटि बिधि काहे करसि निदान ।
कपटचतुरनाहिं कहतिकछु जागति मनहुँमशान ॥
राम राम रटि विकल भुआलू । जनुबिनु पंखबिहंग बिहालू ॥
हृदय मनाव भोर जनि होई । रामहिं जाइ कहै जनिकोई ॥
उदयकरहु जनि रबिकुल पूरा । अवध बिलोकिहोइ उरशूरा ॥
भूप प्रीति केकयि निठुराई । उभयअवधिबिधिरचीबनाई ॥
बिलपतनृपहिभयउ भिनुसारा । बीणा बेणु शंख धुनि द्वारा ॥
पढ़हिं भाट गुणगावहिं गायक । सुनतनृपहिलागतजनुशायक ॥
मंगल सकल सुहाइ न कैसे । सह गामिनी बिभूषण जैसे ॥
तेहि निशि नींदपरी नहिंकाहू । राम दरश लालसा उछाहू ॥
दो० द्वारभीर सेवक सचिव कहहिं उदय रबि देखि ।
जागे अजहुँ न अवधपति कारणकवन बिशेखि ॥
पछिले पहर भूप नितजागा । आजुहमहिंबड़अचरजलागा ॥
जाहु सुमन्त जगावहु जाई । कीजिय काजरजायसु पाई ॥
गे सुमन्त नृप मन्दिर पाहीं । देखि भयानक जात डराहीं ॥
धाइ खाइ जनु जात न हेरा । मानहुँ बिपतिविषाद बसेरा ॥
पूंछत कोउ न उतर कछु देयी । गे जेहि भवन भूप कैकेयी ॥
कहि जय जीव बैठि शिरनाई । देखि भूपगति गयउ सुखाई ॥
शोक विकलविवरण महिपरेऊ । मानहुँ कमलमूल परिहरेऊ ॥
सचिव सभीतसकहिंनहिंपूछी । बोली अशुभभरी शुभ छूंछी ॥
दो० परी न राजहिं नींद निशि मर्म्म जानु जगदीश ।
राम राम रटि भोर किय हेतु न कहेउ महीश ॥
आनहु रामहिं वेगि बुलाई । समाचार तब पूछहु आई ॥
चलेउ सुमन्त राउ रुखजानी । लखी कुचालकीन्ह कछुरानी ॥

शोचविवश महि परै न पाऊ। रामहिंबोलि कहहिंका राऊ॥
उर धरि धीरज गयउ दुआरे। पूंछहिं सकल देखि मनमारे॥
समाधान मन कर सबहीका। गयेजहां दिनकर कुलटीका॥
राम सुमन्तहि आवत देखा। आदरकीन्ह पिता समलेखा॥
निरखि बदन कहि भूप रजाई। रघुकुलदीपहि चले लिवाई॥
रामकुभाँति सचिव सँगजाहीं। देखिलोगजहँतहँबिलखाहीं॥
दो० आइ दीख रघुबंश मणि नरपति निपट कुसाज।
सहमिपरेउलखि सिंहनिहिं मनहुँ बृद्धगजराज॥
सूखे अधर जरे सब अंगा। मनहुँदीन मणिहीन भुजंगा॥
सरुष समीप देखि कैकेयी। मानहुँ मृत्यु घरी गनिलेयी॥
करुणामय रघुनाथ सुभाऊ। प्रथमदीखदुखसुना न काऊ॥
तदपि धीरधरि समय बिचारी। पूंछा मधुर बचन महतारी॥
मोहिंकहुमातु तातदुख कारण। करिययत्न जेहिहोइनिवारण॥
सुनहु राम सब कारण एहू। राजहि तुमपर बहुत सनेहू॥
देन कहेउ मोहिं दुइ बरदाना। मांगेउँ जोकछु मोहिं सुहाना॥
सो सुनि भयउ भूप उर शोचू। छाँड़िनसकहिंतुम्हारसँकोचू॥
दो० सुत सनेह इत बचन उत संकट परेउ नरेश।
सकहु तो आयसुशीशधरि मेटहु कठिनकलेश॥
निधरक बैठि कहत कटुबानी। सुनतकठिनताअतिअकुलानी॥
जीभ कमान वचन शर जाना। मनहुँ भूप मृदुलक्ष्य समाना॥
जनु कठोर पन धरे शरीरा। सीख धनुष विद्या बर बीरा॥
सब प्रसंग रघुपतिहि सुनाई। बैठी जनु तनु धरि निठुराई॥
मनमुसुकाहिं भानुकुल भानू। राम सहज आनन्द निधानू॥
बोले वचन विगत सब दूषण। मृदुमंजुल जनुबाग बिभूषण॥
सुनुजननी सोइसुत बड़भागी। जो पितुमातु वचन अनुरागी॥
तनय मातु पितु पोषण हारा। दुर्ल्लभ जननी यह संसारा॥
दो० मुनिगण मिलन बिशेषबन सबहि भाँति भलमोर।

तेहि महँ पितु आयसु बहुरि सम्मतजननीतोर ॥
भरत प्राणप्रिय पावहिं राजू । बिधिसबविधिमोहिंसन्मुखआजू ॥
जोन जाहुँ बन ऐसेहु काजा । प्रथमगणियमोहिंमूढ़समाजा ॥
सेवहिं अरण्ड कल्पतरु त्यागी । परिहरिअमियलेहिंबिषमांगी ॥
तेउनपाइ अस समय चुकाहीं । देखुबिचारि मातु मनमाहीं ॥
अम्ब एक दुख मोहिं बिशेखी । निपटबिकल नरनायकदेखी ॥
थोरिहिबात पितहिं दुखभारी । होतप्रतीतिन मोहिंमहतारी ॥
राउधीरगुण उदधि अगाधू । भा मोते कछु बहु अपराधू ॥
ताते मोहिं न कहत कछु राऊ । मोरशपथतोहिंकहुसतिभाऊ ॥
दो० सहजसरल रघुवरवचन कुमति कुटिलकरिजान ।
चलैजोंकजिमिबक्रगति यद्यपिसलिलसमान ॥
रहसी रानि राम रुख पाई । बोली कपट सनेह जनाई ॥
शपथ तुम्हार भरत कै आना । हेतु न दूसर मैं कछु जाना ॥
तुम अपराध योगनहिं ताता । जननी जनकबन्धु सुखदाता ॥
राम सत्य तुम जो कछुकहहू । तुम पितु मातुवचनरतअहहू ॥
पितहिं बुझाइ कहौबलि सोई । चौथेपन अघ अयश न होई ॥
तुमसमसुवन सुकृतजेहि दीन्हे । उचितन तासु निरादरकीन्हे ॥
लागहिंकुमुखि वचन शुभकैसे । मगहगयादिक तीरथ जैसे ॥
रामहिं मातु वचन सब भाये । जिमिसुरसरिगतसलिलसुहाये ॥
दो० गैमुर्च्छारामहिं सुमिरि नृप फिरि करवट लीन्ह ।
सचिवरामआगमनकहि विनयसमयसमकीन्ह ॥
जब नृप अकनि राम पगुधारे । धरि धीरज तब नयनउघारे ॥
सचिव सँभारि राउ बैठारे । चरण परत नृप रामनिहारे ॥
लिये सनेह बिकल उरलाई । गैमणिफणिकबहुरिजिमिपाई ॥
रामहिं चितै रहे नरनाहू । चला बिलोचन वारिप्रबाहू ॥
शोक बिकल कछु कहै न पारा । हृदय लगावत बारहिंबारा ॥
बिधिहि मनाव राउ मनमाहीं । जेहि रघुनाथ न काननजाहीं ॥

सुमिरिमहेशहिं कहहिं निहोरी । विनतीसुनहु सदाशिवमोरी ॥
आशुतोष तुम औढ़रदानी । आरति हरहु दीनजनजानी ॥
दो० तुम प्रेरक सबके हृदय सो मति रामहिं देहु ।
वचन मोर तजि रहहिंघर परिहरिशीलसनेहु ॥
अयशहोहु बरु सुयशनशाऊं । नरक परौं बरु सुरपुरजाऊं ॥
सब दुख दुसह सहावहुमोहीं । लोचन ओट राम जनिहोहीं ॥
असमन गुनत राउ नहिंबोला । पीपर पात सरस मनडोला ॥
रघुपति पितहिं प्रेमबशजानी । पुनिकछुकहेउमातुअनुमानी ॥
देशकाल अवसर अनुसारी । बोले बचन विनीत बिचारी ॥
तात कहौं कछु करौं ढिठाई । अनुचितछमबजानिलरिकाई ॥
अतिलघुबात लागि दुखपावा । काहुनमोहिंकहिप्रथमजनावा ॥
देखि गुसाईंहिं पूंछेउँ माता । सुनिप्रसंगभो शीतल गाता ॥
दो० मंगल समय सनेह वश शोच परिहरियतात ।
आयसु देइय हरषिहिय कहि पुलके प्रभुगात ॥
धन्य जन्म जगती तल तासू । पितहिंप्रमोदचरितसुनजासू ॥
चारि पदारथ करतल ताके । प्रिय पितुमातुप्राणसमजाके ॥
आयसु पालि जन्म फल पाई । ऐहौं बेगिहि देहु रजाई ॥
बिदा मातु सन आवौं माँगी । चलिहौं बनहिंबहुरिपालागी ॥
असकहि रामगवन तबकीन्हा । भूपशोकबश उतर न दीन्हा ॥
नगर ब्यापि गइ बात सुतीछी । छुवतचढ़ी जनुसबतनुबीछी ॥
सुनिभये विकलसकल नरनारी । बेलि विटप जनुलागुदवारी ॥
जो जहँ सुनै धुनै शिर सोई । बड़विषाद नहिं धीरजहोई ॥
दो० मुखसुखहिं लोचन स्रवहिं शोक न हृदयसमाय ।
मानहुँकरुणा रस कटक उतरा अवध बजाय ॥
भलि बनाइ विधि बात बिगारी । जहँ तहँ देहिंकेकयिहिगारी ॥
इहि पापिनिहिं बूझिका परेऊ । छाय भवनपरपावक धरेऊ ॥
निजकरनयन काढ़ि चहदीखा । डारि सुधा बिषचाहतचीखा ॥

कुटिल कठोर कुबुद्धि अभागी । भइ रघुबंश बेणु बन आगी ॥
पल्लव बैठि पेड़ इन काटा । सुखमहँ शोक ठाट इनठाटा ॥
सदा राम इहि प्राण समाना । कारणकवनकुटिलपन ठाना ॥
सत्यकहहिं कवि नारि सुभाऊ । सबविधिअगमअगाधदुराऊ ॥
निजप्रतिबिम्बमुकुर गहिजाई । जानि न जाइनारिगतिभाई ॥
दो० का नहिं पावक जरिसकै का न समुद्र समाइ ।
का न करै अबलाप्रबल केहिजगकालन खाइ ॥
का सुनाइ विधि काह सुनावा । कादिखाइचहकाह दिखावा ॥
एक कहैं भल भूप न कीन्हा । वरबिचारिनहिंकुमतिहिदीन्हा ॥
जोहठिभयउसकलदुखभाजन । अबलाविवशज्ञानगुणगाजन ॥
एक धर्म परमिति पहिंचाने । नृपहिं दोष नहिं देहिंसयाने ॥
शिविदधीचि हरिचन्द्र कहानी । एकएकसन कहहिं बखानी ॥
एक भरत कर सम्मत कहहीं । एक उदासभाव सुनिरहहीं ॥
कान मूंद कर रद कर जीहा । एक कहहिं यह बात अलीहा ॥
सुकृत जाइ असकहत तुम्हारे । भरत राम कहँ प्राण पियारे ॥
दो० चन्द्र स्रवै बरु अनल कण सुधाहोइ बिष तूल ।
सपनेहुकबहुँ न करहिंकछु भरत रामप्रतिकूल ॥
एक बिधातहि दूषण देहीं । सुधादिखाइ दीन्हबिष जेहीं ॥
खरभर नगर शोच सबकाहू । दुसह दाह उर मिटाउछाहू ॥
विप्र बधू कुल मान जिठेरी । जे प्रिय परम केकयी केरी ॥
लगीं देन सिख शील सराही । बचन बाणसमलागहिं ताही ॥
भरत न प्रियमोहिं रामसमाना । सदाकहहु यहसबजगजाना ॥
करहु राम पर सहज सनेहू । केहि अपराध आजु बन देहू ॥
कबहुँ न कीन्ह सवति अवरेशू । प्रीति प्रतीति जान सब देशू ॥
कौशल्या अब कहा बिगारा । तुम जेहिलागिबज्रपुर पारा ॥
दो० सीयकिपियसँगपरिहरहि लषणकिरहिहहिंधाम ।
भरतकि भूजब राजपुर नृपकि जियहिं बिनुराम ॥

असबिचारिजियछांड़हु कोहू । शोक कलंक कोट जनिहोहू ॥
भरतहि अवशि देहु युवराजू । कानन कौन राम कर काजू ॥
नाहिंन राम राज कर भूखे । धर्म्म धुरीण विषयरस रूखे ॥
गुरु गृह बसहिं राम तजि गेहू । नृपसन अस वर दूसर लेहू ॥
राम सरिस सुत काननयोगू । कहाकहहिंसुनि तुमकहँलोगू ॥
जो न मानिहौ कहे हमारे । नहिंलागिहिकछुहाथतुम्हारे ॥
जो परिहास कीन कछु होई । तौ कहि प्रकट जनावहुसोई ॥
उठहु वेगि सोइ करहु उपाई । जेहिबिधिशोककलंक नशाई ॥
छं० जेहि भांति शोक कलंक जाइ उपाइ करि कुलपालहू ।
हठि फेरु रामहिंजात बन जनि बात दूसरि चालहू ॥
जिमिभानुबिनुदिनप्राणबिनुतनुचंदबिनुजिमियामिनी ।
तिमिअवधतुलसीदासप्रभुबिनुसमुझिधौंमनभामिनी ॥
सो० सखिन सिखावन दीन्ह सुनत मधुर परिणामहित ।
तेइँ कछु कान न कीन्ह कुटिल प्रबोधी कूबरी ॥
उतर न देइदुसहरिसरूखी । मृगिहिचितवजनुबाघिनिभूखी ॥
व्याधिअसाधिजानितिनत्यागी । चलींकहत मतिमंद अभागी ॥
राज करत इहि दैव बिगोई । कीन्हेसि असजसकरैन कोई ॥
इहिविधि बिलपहिं पुरनरनारी । देहिंकुचालिहि कोटिकगारी ॥
जरहिंविषमज्वर लेहिं उसासा । कवन रामबिनु जीवनआसा ॥
बिकलवियोग प्रजाअकुलानी । जिमिजलचरगणसूखतपानी ॥
अति विषादवश लोग लुगाई । गये मातु पहँ राम गुसाई ॥
मुख प्रसन्न चित चौगुण चाऊ । यहै शोच जनि राखहिंराऊ ॥
दो० नव गयंद रघुवंशमणि राज अलान समान ।
छूटिजानबनगवन सुनि उर आनँद अधिकान ॥
रघुकुलतिलक जोरिदोउ हाथा । मुदित मातु पद नायउमाथा ॥
दीन्ह अशीश लाइ उर लीन्हें । भूषण वसन निछावरिकीन्हें ॥
बार बार मुख चूंबति माता । नयननेह जलपुलकितगाता ॥

गोदराखि पुनि हृदय लगाये । स्रवत प्रेम रस पयद सुहाये ॥
प्रेम प्रमोद न कछु कहि जाई । रंक धनद पदवी जनु पाई ॥
सादर सुन्दर बदन निहारी । बोली मधुर बचन महतारी ॥
कहहु तात जननी बलिहारी । कबहिं लगन मुदमंगलकारी ॥
सुकृत शील सुख सींव सुहाई । जन्मलाभलहिअवधअघाई ॥
दो० जेहि चाहत नरनारि सब अतिआरत इहि भाँति ।
जिमिचातकि चातकतृषित वृष्टिशरदऋतुस्वाति ॥
तात जाउँ बलिवेगि अन्हाहू । जो मन भाव मधुर कछुखाहू ॥
पितु समीप तब जायहु भैया । प्रेमविवश सादर कहि मैया ॥
मातुवचनसुनि अतिअनुकूला । जनु सनेह सुरतरु के फूला ॥
सुख मकरन्द भरे श्रीमूला । निरखिराममनभँवरन भूला ॥
धर्म्म धुरीण धर्म गति जानी । कहेउमातुसनअतिमृदुबानी ॥
पिता दीन्ह मोहिं कानन राजू । जहँ सबभाँति मोर बड़काजू ॥
आयसु देहु मुदित मन माता । जेहिमुद मंगल काननजाता ॥
जनि सनेह वश डरपसि भोरे । आनँद मातु अनुग्रह तोरे ॥
दो० वर्षचारिदश बिपिनबसि करिपितुबचनप्रमान ।
आयपायँ पुनिदेखिहौं मनजनिकरासि मलान ॥
वचन बिनीत मधुर रघुवरके । शरसमलाग मातु उर करके ॥
सहमि सूखिसुनि शीतलवानी । जिमिजवासपर पावसपानी ॥
कहि न जाय कछुहृदयविषादू । जनु सहमे करिकेहरि नादू ॥
नयन सलिल तनु थरहरकाँपी । माँजामनहुँ मीनकहँ व्यापी ॥
धरि धीरज सुत बदन निहारी । गद्गदवचनकहतिमहतारी ॥
तात पितहि तुम प्राणपियारे । देखिमुदितनितचरिततुम्हारे ॥
राजदेन कहँ शुभदिन साधा । कहेउजानबनकेहि अपराधा ॥
तात सुनावहु मोहिं निदानू । कोदिनकरकुल भयउकृशानू ॥
दो० निरखिरामरुखसचिवसुत कारणकहेउ बुझाय ।
सुनिप्रसंगरहि मूकगति दशाबरणिनहिंजाय ॥

राखिनसकहिं नकहिसकजाहू। दुहू भाँति उर दारुण दाहू॥
लिखत सुधाकर लिखिगाराहू। विधिगतिबामसदा सबकाहू॥
धर्म्म सनेह उभय मति घेरी। भइ गति साँप छछूंदरिकेरी॥
राखौं सुतहि होइ अनरोधू। धर्म्म जाइ अरु बन्धुविरोधू॥
कहौं जानबन तौ बड़ि हानी। संकट शोच विकलभइ रानी॥
बहुरिसमुझितियधर्म्म सयानी। रामभरत दोउसुतसमजानी॥
सरल स्वभाव राम महतारी। बोली बचन धीर धरि भारी॥
तातजाउँ बलि कीन्हेउ नीका। पितुआयसु सबधर्म्मकटीका॥

दो० राज देन कह दीन्हवन मोहिं न शोच लवलेश।
तुमबितभरतहिभूपतिहि प्रजहिप्रचण्डकलेश॥

जो केवल पितु आयसु ताता। तौ जनिजाहुजाइबलिमाता॥
जो पितु मातु कहैं बन जाना। तौकानन शतअवध समाना॥
पितु बन देव मातु बन देवी। खग मृगचरण सरोरुहसेवी॥
अन्तहु उचित नृपहि बनबासू। बयविलोकि हियहोत हरासू॥
बड़ भागी बन अवध अभागी। जो रघुवंशतिलकतुमत्यागी॥
जो सुत कहौं संगमोहिं लेहू। तुम्हरे हृदय होहि संदेहू॥
पुत्र परमप्रिय तुम सबहीके। प्राण प्राण के जीवन जीके॥
ते तुम कहहु मातु बन जाऊं। मैं सुनिवचन बैठिपछिताऊं॥

दो० यह विचारि नहिं करउँहठ झूठ सनेह बढ़ाइ।
मानि मातुकेनातबलि सुरति बिसारि नाहिंजाइ॥

देव पितर सब तुमहिं गुसाईं। राखहु पलक नयन की नाईं॥
अवधिअम्बुप्रियपरिजन मीना। तुम करुणाकरधर्म्मधुरीना॥
असविचारि सोइ करहु उपाई। सबहिजियतजेहिभेंटहुआई॥
जाउ सुखेन बनहिं बलिजाऊँ। करिअनाथजनपरिजनगाऊँ॥
सबकर आजुसुकृत फलबीता। भये कराल काल बिपरीता॥
बहुविधिविलपिचरणलपटानी। परमअभागिनिआपुहिजानी॥
दारुण दुसह दाह उर व्यापा। बरणिन जाइबिलापकलापा॥

राम उठाय मातु उरलावा । कहिमृदुबचनबहुतसमुझावा ॥
दो० समाचार तेहि समयसुनि सीयउठी अकुलाय ।
जायसासु पगकमलयुग बन्दिबैठि शिरनाय ॥
दीन्ह अशीश सासु मृदुबानी । अतिसुकुमारिदेखिअकुलानी ॥
बैठि नमितमुखसोचति सीता । रूपराशि पतिप्रेम पुनीता ॥
चलन चहत बन जीवन नाथा । कवनसुकृतसनहोइहि साथा ॥
की तनु प्राण कि केवल प्राना । विधिकरतबकछुजातनजाना ॥
चारुचरणनख लेखति धरणी । नूपुरमुखर मधुरकबि बरणी ॥
मनहुँ प्रेमबश बिनती करहीं । हमहिंसीयपदजनिपरिहरहीं ॥
मंजु बिलोचन मोचति बारी । बोली देखि राम महतारी ॥
तात सुनहु सियअतिसुकुमारी । सासुससुरपरिजनहिंपियारी ॥
दो० पिता जनक भूपालमणि ससुरभानुकुल भान ।
पतिरबिकुलकैरव बिपिन बिधुगुणरूपनिधान ॥
मैं पुनि पुत्रबधू प्रिय पाई । रूपराशि गुण शील सुहाई ॥
नयन पुतरिइव प्रीति बढ़ाई । राखहुँप्राण जानकिहिं लाई ॥
कल्पबेलिजिमिबहुबिधिलाली । सींचिसनेह सलिलप्रतिपाली ॥
फूलत फलत भये विधिबामा । जानि न जाइकाहपरिणामा ॥
पलँग पीठि तजि गोदहिं डोरा । सियनदीन्हपगुअवनिकठोरा ॥
जिवनिमूरिजिमिजुगवतिरहेऊं । दीपबाति नहिंटारन कहेऊं ॥
सो सिय चहतिचलनबनसाथा । आयसुकहा होइ रघुनाथा ॥
चन्द्रकिरणिरसरसिक चकोरी । रबिरुखनयनसकैकिमिजोरी ॥
दो० करिकेहरि निशिचरचरहिं दुष्टजन्तु बन भूरि ।
बिषबाटिका कि सोहसुत सुभगसजीवनमूरि ॥
बनहित कोलकिरात किशोरी । रचीबिरंचि बिषय रसभोरी ॥
पाहनकृमिजिमिकठिन स्वभाऊ । तिनहिंकलेश न काननकाऊ ॥
के तापस तिय कानन योगू । जिन तपहेतु तजासब भोगू ॥
सियबनबसिहि तातकेहिभाँती । चित्रलिखितकपिदेखिडेराती ॥

सुरसरिसुभग बनजबन चारी । डावर योग कि हंसकुमारी ॥
अस बिचारिजस आयसु होई । मैं सिखदेउँ जानकिहि सोई ॥
जो सिय भवन रहे कहअम्बा । मोकहँ होइ प्राण अवलम्बा ॥
सुनि रघुबीर मातु प्रियबानी । शील सनेह सुधाजनु सानी ॥
दो० कहिप्रियवचन विवेकमय कीन्हमातु परितोष ।
लगे प्रबोधन जानकिहि प्रकटबिपिनगुणदोष ॥
मातु समीप कहत सकुचाहीं । बोलेसमय समुझिमनमाहीं ॥
राजकुमारि सिखावन सुनहू । आनभाँतिजियजनिकछुगुनहू ॥
आपन मोर नीक जो चहहू । बचनहमार मानिघर रहहू ॥
आयसु मोर सासु सेवकाई । सबबिधिभामिनिभवनभलाई ॥
इहिते अधिक धर्म्म नहिंदूजा । सादरसासु ससुरपद पूजा ॥
जबजब मातु करिहि सुधिमोरी । होइहि प्रेम विकलमतिभोरी ॥
तब तब तुमकहि कथा पुरानी । सुन्दरि समुझायहुमृदुबानी ॥
कहौं स्वभाव शपथ शतमोहीं । सुमुखि मातुहितराखौं तोहीं ॥
दो० गुरु श्रुतिसम्मत धर्म्मफलपाइयबिनाहिंकलेश ।
हठबश सब संकटसहे गालव नहुष नरेश ॥
मैं पुनिकरि प्रमाण पितुबानी । बेगिफिरबसुनुसुमुखिसयानी ॥
दिवसजात नहिंलागहि बारा । सुन्दरिसिखवनसुनहुहमारा ॥
जो हठकरहु प्रेमबश बामा । तौ तुम दुखपाउब परिणामा ॥
कानन कठिन भयंकर भारी । घोर घाम हिमबारि बयारी ॥
कुश कंटक मग कंकर नाना । चलब पयादे बिनु पदत्राना ॥
चरण कमलमृदु मंजुतुम्हारे । मारग अगम भूमिधर भारे ॥
कन्दर खोह नदी नद नारे । अगमअगाध न जाहिंनिहारे ॥
भालुबाघ वृक केहरि नागा । कराहिं नाद सुनिधीरजभागा ॥
दो० भूमि शयनबलकलबसन अशन कंद फलमूल ।
तेकिसदासबदिनमिलहिं समयसमय अनुकूल ॥
नर अहार रजनीचर करहीं । कपट बेषबन कोटिनफिरहीं ॥

लागै अति पहार कर पानी । बिपिनबिपतिनहिंजातबखानी ॥
व्याल कराल बिहग बनघोरा । निशिचरनिकरनारिनरचोरा ॥
डरपहिं धीरगहन सुधि आये । मृगलोचनि तुमभीरुसुभाये ॥
हंसगमनि तुम नहिं बनयोगू । सुनिअपयशदेहहिंमोहिंलोगू ॥
मानससलिल सुधाप्रतिपाली । जियइकिलवणपयोधिमराली ॥
नवरसाल बन बिहरणशीला । सोहकिकोकिलबिपिनकरीला ॥
हहु भवन असहृदय बिचारी । चन्द्रबदनि दुखकानन भारी ॥
दो० सहज सुहृद गुरुस्वामिसिख जोन करैहितमानि ।
सो पछिताय अघायउर अवशि होइ हितहानि ॥
निमृदु बचन मनोहर पियके । लोचननलिनभरेजल सियके ॥
ीतल सिख दाहक भइ कैसे । चकइहि शरदचाँदनी जैसे ॥
तर न आव बिकल बैदेही । तजनचहतमोहिंपरमसनेही ॥
बसरोंकि बिलोचन बारी । धरिधीरज उरअवनिकुमारी ॥
ागि सासु पद कहकरजोरी । छमब मातुबड़िअबिनयमोरी ॥
नप्राणपति मोहिं सिखसोई । जेहि बिधिमोर परमहितहोई ॥
पुनि समुझि दीख मनमाहीं । प्रियबियोगसमदुखजगनाहीं ॥
हिबिधिसियसासुहिसमुझाई । कहतिपतिहिबरबिनयसुनाई ॥
ो० प्राणनाथ करुणायतन सुन्दर सुखद सुजान ।
तुमबिनुरघुकुलकुमुदबिधु सुरपुर नरक समान ॥
पिता भागिनी प्रिय भाई । प्रियपरिवार सुहृद समुदाई ॥
ससुर गुरु सुजन सहाई । सुठिसुन्दर सुशील सुखदाई ॥
लगिनाथ नेह अरु नाते । पियबिनुतियहितरणि तेताते ॥
बन धाम धरणि पुरराजू । पतिबिहीन सबशोक समाजू ॥
रोग सम भूषण भारू । यमयातना सरिस संसारू ॥
नाथ तुम बिनु जगमाहीं । मोकहँसुखदकतहुँ कोउनाहीं ॥
बिनु देह नदी बिनु बारी । तैसहि नाथ पुरुष बिनुनारी ॥
सकल सुखसाथ तुम्हारे । शरदबिमलबिधुबदननिहारे ॥

दो० खगमृगपरिजन नगर बन बल्कल बसन दुकूल।
नाथ साथ सुर सदन सम पर्णशाल सुख मूल॥
बन देवी बन देव उदारा। करिहैं सासु ससुर समसारा।
कुश किशलय साथरी सुहाई। प्रभु सँग मंजु मनोज तुराई।
कन्दमूलफल अमिय अहारू। अवधसहससुखसरिसपहारू
छणछणप्रभुपदकमलबिलोकी। रहिहौंमुदितादिवसजिमिकोकी
बन दुख नाथ कहेउ बहुतेरे। भय बिषाद परिताप घनेरे
प्रभु बियोग लवलेश समाना। सबमिलिहोहिंनकृपानिधाना
असजियजानिसुजानशिरोमनि। लेइयसंग मोहिंछाँड़ियजनि
बिनती बहुत करौं का स्वामी। करुणामय उर अन्तरयामी
दो० राखियअवधजोअवधिलगि रहत जानियेप्रान।
दीनबन्धु सुन्दर सुखद शील सनेह निधान॥
मोहिंमगचलत न होइहिहारी। छणछणचरणसरोज निहा
सबहि भाँति प्रिय सेवाकरिहौं। मारगजनितसकलश्रमहरि
पाँव पखारि बैठि तरु छाहीं। करिहौं बायुमुदित मनमा
श्रमकण सहित श्यामतनुदेखे। कादुख समय प्राणपतिपे
सममहि तृणतरु पल्लवडासी। पाँयपलोटिहिसबनिशिदा
बार बार मृदु मूरति जोही। लागिहितातिबयारि न मो
कोप्रभुसँगमोहिंचितवनहारा। सिंहबधुहिजिमिशशकसि
मैं सुकुमारि नाथ बन योगू। तुमहिं उचिततपमोकहँ भो
दो० ऐसहु वचनकठोर सुनि जो न हृदय बिलगान।
तौप्रभु बिषम बियोगदुख सहिहैं पामरप्रान॥
असकहिसीय बिकलभइभारी। बचनबियोग न सकीसँभ
देखिदशा रघुपति जियजाना। हठिराखे राखिहि नहिंप्र
कह्यउ कृपालु भानुकुलनाथा। परिहरिशोचचलहुबनसा
नहिंविषादकर अवसर आजू। वेगि करहु बनगमन स
कहिप्रियबचनप्रियासमुझाई। लगे मातु पद आशिष

वेगि प्रजादुख मेटब आई । जननी निठुरबिसरिजनिजाई ॥
फिरिहिदशाविधिबहुरिकिमोरी । देखिहौं नयन मनोहर जोरी ॥
सुदिन सुघरी तात कब होई । जननी जियतबदनबिधुजोई ॥

दो० बहुरिबच्छकहि लालकहि रघुपति रघुवर तात ।
कबहुँ बुलाइ लगाइउर हरषि निरखिहौं गात ॥

लखि सनेह कातरि महतारी । बचननआव बिकलभइभारी ॥
राम प्रबोध कीन्ह बिधि नाना । समयसनेह न जाइबखाना ॥
तब जानकी सासु पग लागी । सुनियमातु मैं परमअभागी ॥
सेवा समय दैव बन दीन्हा । मोरमनोरथसफल न कीन्हा ॥
तजब छोभ जनि छाँड़ब छोहू । कर्म्मकठिनकछुदोष न मोहू ॥
सुनिसियवचन सासु अकुलानी । दशाकवनबिधि कहौंबखानी ॥
बारहिंबार लाइ उर लीन्हीं । धरिधीरजसिखआशिषदीन्हीं ॥
अचल होउ अहिवात तुम्हारा । जबलग गंगयमुनजलधारा ॥

दो० सीतहि सासु अशीशासिख दीन्ह अनेक प्रकार ।
चली नाइपद पद्मशिर अतिहित बारहिंबार ॥

समाचार जब लक्ष्मण पाये । ब्याकुलबिलखिबदनउठिधाये ॥
कम्पपुलक तनु नयन सनीरा । गहेचरण अतिप्रेम अधीरा ॥
कहि न सकतकछुचितवतठाढ़े । मीन दीन जनु जलते काढ़े ॥
शोच हृदय बिधिका होनहारा । सबसुख सुकृतसिरानहमारा ॥
मो कहँ कहा कहब रघुनाथा । रखिहैं भवन कि लैहैं साथा ॥
राम बिलोकि बन्धु करजोरे । देह गेह सबसन तृणतोरे ॥
बोले वचन राम नय नागर । शील सनेह सरलसुखसागर ॥
तात प्रेमबश जनि कदराहू । समुझिहृदय परिणामउछाहू ॥

दो० मातुपितागुरु स्वामिसिख शिरधरिकरहिसुभाय ।
लह्यउलाभ तिनजन्मके नतरु जन्म जगजाय ॥

असजिय जानिसुनहुसिखभाई । करौमातुपितु पद सेवकाई ॥
भवन भरत रिपुसूदन नाहीं । राउबृद्ध ममदुख मनमाहीं ॥

मैं बनजाउँ तुमहिं लै साथा । होइहिसबबिधिअवधअनाथा ॥
गुरु पितु मातु प्रजा परिवारा । सबकहँपरै दुसहदुख भारा ॥
रहहु करहु सब कर परितोषू । नतरुतात होइहि बड़ दोषू ॥
जासु राज्य प्रिय प्रजादुखारी । सोनृपअवशिनरकअधिकारी ॥
रहहुतात अस नीति बिचारी । सुनतलषणभये ब्याकुलभारी ॥
सियरे बदन सूखि गये कैसे । परसत तुहिन तामरस जैसे ॥
दो० उतर न आवत प्रेमबश गहे चरण अकुलाइ ।
नाथ दास मैं स्वामितुम तजहुतो कहाबसाइ ॥
दीन्ह मोहिं सिख नीक गुसांईं । लागत अगमअपनिकदराईं ॥
नर बर धीर धर्म्म धुरधारी । निगम नीतिके ते अधिकारी ॥
मैं शिशुप्रभु सनेह प्रतिपाला । मन्दरमेरु कि लेइ मराला ॥
गुरु पितु मातु न जानौं काहू । कहौं स्वभावनाथ पतियाहू ॥
जहँ लगि जगत सनेह सगाई । प्रीतिप्रतीतिनिगमनिजगाई ॥
मोरे सबै एक तुम स्वामी । दीनबन्धु उर अन्तरयामी ॥
धर्म्म नीति उपदेशिय ताही । कीरतिभूतिसुगतिप्रियजाही ॥
मनक्रम बचन चरणरत होई । कृपासिन्धु परिहरियकिसोई ॥
दो० करुणासिंधु सुबन्धुके सुनि मृदुबचन विनीत ।
समुझाये उरलायप्रभु जानि सनेह सभीत ॥
माँगहु बिदा मातु सनजाई । आवहु बेगि चलहु बनभाई ॥
मुदित भये सुनि रघुवर बानी । भयउ लाभबड़ मिटीगलानी ॥
हर्षितहृदय मातु पहँ आये । मनहुँअन्धफिरिलोचन पाये ॥
जाइ जननिपद नायउ माथा । मनरघुनन्दनजानकि साथा ॥
पूंछेउ मातु मलिनमन देखी । लषणकहेउसबकथाविशेखी ॥
गई सहमि सुनि वचन कठोरा । मृगी देखि जनुदवचहुँओरा ॥
लषण लखेउभाअनरथ आजू । यह सनेहवश करबअकाजू ॥
माँगत बिदा समय सकुचाहीं । जानसंगविधिकहहिंकिनाहीं ॥
दो० समुझिसुमित्रारामसिय रूपसुशीलस्वभाव ।

नृपसनेहलखि धुनेउशिर पापिनिकीन्हकुदाव ॥
धीरज धरेउ कुअवसर जानी । सहज सुहृद बोलीमृदुबानी ॥
तात तुम्हार मातु बैदेही । पिता राम सबभांति सनेही ॥
अवध तहां जहँ रामनिवासू । तहां दिवस जहँभानुप्रकासू ॥
जोपै राम सीय बन जाहीं । अवधतुम्हारकाज कछुनाहीं ॥
गुरु पितु मातु बन्धु सुरसाईं । सेइय सकल प्राण की नाईं ॥
राम प्राण प्रिय जीवन जीके । स्वारथ रहितसखा सबहीके ॥
पूजनीय प्रिय परम जहांते । मानहिं सकल राम के नाते ॥
अस जियजानिसंग बनजाहू । लेहु तात जगजीवन लाहू ॥
दो० भूरिभाग भाजन भयउ मोहिं समेत बलि जाउँ ।
जो तुम्हरे मन छांड़ि छल कीन्ह रामपद ठाउँ ॥
पुत्रवती युवती जग सोई । रघुबरभक्त जासु सुत होई ॥
नतरुबांझ भलिबादि बियानी । राम बिमुखसुतते हितहानी ॥
तुम्हरेहि भाग राम बनजाहीं । दूसर हेतु तात कछु नाहीं ॥
सकल सुकृत करफल सुतयेहू । राम सीय पद सहज सनेहू ॥
राग रोष ईर्षा मद मोहू । जनि सपनेहु इनके बशहोहू ॥
सकल प्रकार विकार बिहाई । मन क्रमबचनकरहुसेवकाई ॥
तुमकहँ बन सबभांति सुपासू । सँग पितुमातुरामसियजासू ॥
जेहि न रामबन लहहिंकलेसू । सुत सोइ करेहु मोरउपदेसू ॥
छं० उपदेश यह जेहि तात तुमते रामसिय सुखपावहीं ।
पितुमातुप्रियपरिवारपुरसुख सुरतिबनबिसरावहीं ॥
तुलसीसुतहिसिखदेइ आयसु देइपुनिआशिषदई ।
रतिहोउअबिरलअमलसियरघुबीरपदनितनितनई ॥
सो० मातु चरण शिरनाइ चले तुरत शंकित हिये ।
वागुरुबिषम तुराइ मनहुँ भाग मृग भागवश ॥
गये लषणजहँ जानकि नाथा । भे मनमुदित पाइप्रियसाथा ॥
बन्दि रामसिय चरण सुहाये । चले संग नृपमन्दिर आये ॥

कहहिं परस्पर पुर नर नारी । भलिबनाइबिधिबाताबिगारी ॥
तनु कृशमनदुखबदन मलीना । बिकलमनहुँ माखीमधुछीना ॥
करमींजहिं शिरधुनिपछिताहीं । जनुबिनुपंखविहगअकुलाहीं ॥
भइ बड़ि भीर भूप दरबारा । बरणि न जाइबिषाद अपारा ॥
सचिव उठाइ राउ बैठारे । कहिप्रियबचन राम पगधारे ॥
सिय समेत दोउ तनयनिहारी । व्याकुलभये भूमिपति भारी ॥

दो० सीयसहितसुत सुभगदोउ देखिदेखिअकुलाइ ।
बारहिं बार सनेह बश राउ लिये उर लाइ ॥

सके न बोलि बिकल नरनाहू । शोक बिकल उरदारुणदाहू ॥
नाइ शीश पद अतिअनुरागा । उठि रघुनाथ बिदातबमांगा ॥
पितु अशीशआयसु मोहिंदीजै । हर्षसमय बिस्मय कतकीजै ॥
तात किये प्रिय प्रेम प्रमादू । यश जग जाइ होइअपबादू ॥
सुनि सनेहबश उठि नरनाहू । बैठारे रघुपति गहि बाहू ॥
सुनहुतात तुमकहँमुनि कहहीं । राम चराचर नायक अहहीं ॥
शुभ अरुअशुभकर्म अनुहारी । ईश देइ फल हृदय बिचारी ॥
करै जो कर्म्म पाव फलसोई । निगमनीतिअसकहसबकोई ॥

दो० और करै अपराध कोइ और पाव फल भोग ।
अतिविचित्र भगवंतगति कोजग जानै योग ॥

राउर राम लषण हित लागी । बहुत उपायकीन्हछलत्यागी ॥
लखे रामरुख रहत न जाने । धर्म्म धुरंधर धीर सयाने ॥
तब नृप सीयलाइ उरलीनी । अतिहितबहुतभांतिसिखदीनी ॥
कहिबनके दुख दुसह सुनाये । सासुश्वशुरपितुसुखसमुझाये ॥
सियमन रामचरण अनुरागा । घरनसुगमबनअगमनलागा ॥
औरो सबहिसीय समुझाई । कहिकहिविपिनविपतिअधिकाई ॥
सचिव नारि गुरुनारिसयानी । सहितसनेह कहहिंमृदुबानी ॥
तुम कहँ तौ न दीन्ह बनवासू । करहुजोकहहिंश्वशुरगुरुसासू ॥

दो० सिखशीतलहितमधुरमृदु सुनिसीतहि न सुहानि ।

शरदचन्द्रचांदनिलगत जनुचकई अकुलानि ॥
सीय सकुच बश उतर न देई । सो सुनि तमकिउठी कैकेई ॥
मुनि पट भूषण भाजन आनी । आगे धरि बोली मृदु बानी ॥
नृपहि प्राणप्रिय तुमरघुबीरा । शील सनेह न छांड़हिंभीरा ॥
सुकृत सुयश परलोक नशाऊ । तुमहिंजानबन कहहिंनराऊ ॥
अस बिचारिसोइकरौजो भावा । रामजननिसिखसुनिसुखपावा ॥
भूपहि बचन बाण सम लागे । कराहिं न प्राणपयानअभागे ॥
शोक बिकल मूर्च्छित नरनाहू । कहा करिय कछुसूझनकाहू ॥
राम तुरत मुनि वेष बनाई । चले जनक जननी शिरनाई ॥
दो० सजिबनसाज समाजप्रभु बनिताबन्धु समेत ।
बन्दिविप्रगुरु चरणप्रभु चलेकरिसबहिंअचेत ॥
निकसि वशिष्ठ द्वार भे ठाढ़े । देखे लोग बिरह दव डाढ़े ॥
कहिप्रियबचन सबहिंसमुझाये । विप्र वृन्द रघुबीर बुलाये ॥
गुरु सन कहि बर्षाशनदीन्हे । आदरदान विनय बहु कीन्हे ॥
याचक दान मान सन्तोषे । मीत पुनीत प्रेम परितोषे ॥
दासी दास बुलाइ बहोरी । गुरुहि सौंपि बोले करजोरी ॥
सबकर सार सँभाल गुसाईं । करबजनक जननी की नाईं ॥
बारहिं बार जोरि युग पानी । कहतराम सबसनमृदुबानी ॥
सोइ सब भांति मोरहितकारी । जेहिते रहैं भुवाल सुखारी ॥
दो० मातु सकल मोरे बिरह जेहि न होहिं दुखदीन ।
सो उपाय तुम करब सब पुरजन परमप्रवीन ॥
इहिविधिरामसबहिंसमुझावा । गुरुपदपद्म हरषि शिरनावा ॥
गणपति गौरि गिरीश मनाई । चले अशीश पाइ रघुराई ॥
राम चलत अतिभयो बिषादू । सुनिनजाइ पुर आरत नादू ॥
कुशकुन लंक अवध अतिशोकू । हर्षविषाद बिबश सुरलोकू ॥
गै मूर्च्छा तब भूपति जागे । बोलिसुमन्त्रकहन असलागे ॥
राम चले बन प्राण न जाहीं । केहिसुखलागिरहे तनुमाहीं ॥

इहि ते कवन व्यथा बलवाना । जोदुखपाइ तजहितनुप्राना ॥
पुनि धरि धीर कहहिं नरनाहू । लै रथ संग सखा तुमजाहू ॥
दो० सुठि सुकुमार कुमारदोउ जनकसुता सुकुमारि ।
रथ चढ़ाइ दिखराइ बन फिरहु गये दिनचारि ॥
जो नहिं फिरहिं धीर दोउभाई । सत्यसिन्धु दृढ़व्रत रघुराई ॥
तौ तुम बिनय करहु करजोरी । फेरियप्रभुमिथिलेशकिशोरी ॥
जब सिय कानन देखि डराई । कहेउमोरसिख अवसर पाई ॥
सासु ससुर अस कहेउ सँदेशू । पुत्रिफिरियबन बहुत कलेशू ॥
पितुगृह कबहुँ कबहुँ ससुरारी । रहेउ जहांरुचिहोइ तुम्हारी ॥
इहिविधि कह्यउ उपायकदंबा । फिरइतोहोइ प्राण अवलंबा ॥
नाहिंत मोर मरण परिणामा । कछुनबसाइ भयोबिधिबामा ॥
असकहि मूर्च्छिपरेउमहिराऊ । रामलषणसियआनिदिखाऊ ॥
दो० पाय रजाइसु नाइ शिर रथ अति बेगिबनाइ ।
गये जहां बाहर नगर सीय सहित दोउ भाइ ॥
तब सुमन्त्र नृप बचन सुनाये । करिबिनती रथ राम चढ़ाये ॥
चढ़िरथ सीय सहित दोउभाई । चले हर्षि अवधहि शिरनाई ॥
चलत रामलखिअवध अनाथा । बिकल लोगलागे सब साथा ॥
कृपासिंधुबहुविधिसमुझावहिं । फिरहिंप्रेमबशपुनिफिरिआवहिं ॥
लागत अवध भयानक भारी । मानहुँ कालराति अँधियारी ॥
घोर जन्तु सब पुर नर नारी । डरपहिं एकहि एक निहारी ॥
घर मशान परिजन जनु भूता । सुत हितमीत मनहुँ यमदूता ॥
बागन बिटपबेलि कुम्हिलाहीं । सरित सरोवर देखि न जाहीं ॥
दो० हयगय कोटिक केलिमृग पुरपशु चातकमोर ।
पिक रथांग शुक सारिका सारस हंसचकोर ॥
राम बियोग बिकल सब ठाढ़े । जहँतहँमनहुँचित्रलिखिकाढ़े ॥
नगर सकल बनगहवर भारी । खगमृगबिकलसकलनरनारी ॥
बिधि कैकयि किरातिनीकीनी । जेहिदवदुसहदशहुदिशिदीनी ॥

सहि न सके रघुबर बिरहागी । चलेलोगसब ब्याकुल भागी ॥
सबहिं बिचार कीन्ह मनमाहीं । रामलषणसियबिनुसुखनाहीं ॥
जहां राम तहँ सकल समाजू । बिनुरघुबीर अवधकेहिकाजू ॥
चलेसाथ अस मंत्र दृढ़ाई । सुरदुर्लभ सुखसदन बिहाई ॥
रामचरण पंकज प्रिय जिनहीं । बिषय भोगवशकरैंकितिनहीं ॥
दो० बालक बृद्ध बिहाइगृह लगे लोग सब साथ ।
तमसातीर निवासकिय प्रथम दिवस रघुनाथ ॥
रघुपति प्रजा प्रेम बश देखी । सदयहृदयदुखभयउ विशेखी ॥
करुणामय रघुनाथ गुसाईं । बेगिपाइ यह पीर पराईं ॥
कहि सप्रेम मृदुबचन सुहाये । बहुबिधि रामलोगसमुझाये ॥
किये धर्म उपदेश घनेरे । लोग प्रेमबश फिरहिं न फेरे ॥
शील सनेह छाँड़ि नहिं जाई । असमंजस बश भे रघुराई ॥
लोग शोक श्रमबश गये सोई । कछुक देव माया मति मोई ॥
जबहिं याम युग यामिनिबीती । रामसचिवसनकहेउसप्रीती ॥
खोज मारि रथ हांकहु ताता । आनउपाय बनिहिंनहिंबाता ॥
दो० राम लषण सिय यानचढ़ि शम्भुचरण शिरनाइ ।
सचिव चलायउ तुरतरथ इत उत खोज दुराइ ॥
जागे सकल लोग भये भोरू । गये रघुबीरभयो अतिशोरू ॥
रथकरखोज कतहुंनहिं पावहिं । रामरामकहिचहुंदिशिधावहिं ॥
मनहुं बारिनिधि बूड़ जहाजू । भयउबिकलजनुबणिकसमाजू ॥
एकहि एक देहिं उपदेशू । तजेउ राम हम जानिकलेशू ॥
निन्दहिं आपु सराहहिंमीना । धृग जीवन रघुबीर बिहीना ॥
जोपैप्रिय बियोगविधि कीन्हा । तोकस मरण न मांगेदीन्हा ॥
इहिविधि करतप्रलापकलापा । आये अवध भरे परितापा ॥
बिषम बियोग न जाइ बखाना । अवधिआशराखहिंसबप्राना ॥
दो० राम दरश हित नेम ब्रत लगे करन नरनारि ।
मनहुं कोककोकी कमल दीनबिहीन तमारि ॥

सीता सचिव सहित दोउभाई । शृङ्गबेर पुर पहुँचे जाई ॥
उतरे राम देवसरि देखी । कीन्ह दण्डवत हर्ष बिशेखी ॥
लषणसचिवसियकीन्हप्रणामा । सबहि सहितसुखपायउरामा ॥
गंग सकल मुद मंगलमूला । सबसुखकरनिहरनिसबशूला ॥
कहिकहि कोटिक कथाप्रसंगा । राम बिलोकत गंग तरंगा ॥
सचिवहिअनुजहिप्रियहिसुनाई । बिबुधनदी महिमाअधिकाई ॥
मज्जनकीन्हपन्थश्रमगयऊ । शुचिजलपियतमुदितमनभयऊ ॥
सुमिरत जाहिमिटहिंभवभारू । तेहिश्रमयहलौकिकब्यवहारू ॥

दो० शुद्ध सच्चिदानन्द मय राम भानु कुलकेतु ।
चरित करतनर अनुहरत संसृत सागरसेतु ॥

यह सुधिगुह निषाद जबपाई । मुदितलियेप्रियबन्धु बुलाई ॥
लै फल मूल भेंट भरि भारा । मिलनचल्योहियहर्ष अपारा ॥
करि दण्डवत भेंट धरि आगे । प्रभुहिबिलोकतअतिअनुरागे ॥
सहज सनेह बिबश रघुराई । पूंछेउ कुशल निकट बैठाई ॥
नाथ कुशल पद पंकज देखे । भयउभाग्य भाजनजनलेखे ॥
देव धरणि धन धाम तुम्हारा । मैंजननीच सहित परिवारा ॥
कृपाकरिय पुर धारिय पाऊ । थापियजनसबलोगसिहाऊ ॥
कहेउ सत्य सब सखा सुजाना । मोहिंदीन्हपितुआयसुआना ॥

दो० वर्षचारिदश बासबन मुनि ब्रत वेष अहार ।
ग्रामबासनहिंउचितसुनि गुहहिभयोदुखभार ॥

राम लषण सियरूप निहारी । कहहिंसप्रेम नगर नरनारी ॥
ते पितु मातु कहहु सखि कैसे । जिन पठये बन बालक ऐसे ॥
एक कहहिं भूपति भल कीन्हा । लोचनलाहुहमहिंजिनदीन्हा ॥
तब निषादपति उर अनुमाना । तरु शिंशुपा मनोहर जाना ॥
लै रघुनाथहिं ठौर बतावा । कहेउ राम सबभाँति सुहावा ॥
पुरजनकरि जुहार गृह आये । रघुबर सन्ध्याकरन सिधाये ॥
गुह सवाँरि साथरी बनाई । कुशकिशलयमृदुपरमसुहाई ॥

शुचिफल मूलमृदुल मधु जानी । दोनामरिभरि राखेसिआनी ॥
दो० सियसुमन्त्र भ्रातासहित कंदमूल फलखाइ ।
शयनकीन्ह रघुबंशमणि पायँपलोटत भाइ ॥
उठे लषण प्रभु सोवत जानी । कहिसचिवहिंसोवनमृदुबानी ॥
कछुक दूरिसजि बाणशरासन । जागन लगे बैठि बीरासन ॥
गुह बुलाइ पाहरू प्रतीती । ठांव ठांव राखे अति प्रीती ॥
आप लषण पहँ बैठेउ जाई । कटि भाथा शरचाप चढ़ाई ॥
सोवत प्रभुहि निहारिनिषादा । भयउ प्रेमबश हृदयबिषादा ॥
तनु पुलकित लोचन जलबहई । बचनसप्रेम लषणसनकहई ॥
भूपति भवन सुसहज सुहावा । सुरपतिसदननपटतरआवा ॥
मणिमय रचित चारु चौबारे । जनुरतिपतिनिजहाथसँवारे ॥
दो० शुचिसुबिचित्र सुभोगमय सुमनसुगन्धसुबास ।
पलँग मंजुमणिदीपजहँ सबबिधिसकलसुपास ॥
बिबिध बसन उपधान तुराई । चीरफेन मृदु बिशदसुहाई ॥
तहँसियरामशयन निशिकरहीं । निजछबिरतिमनोजमदहरहीं ॥
ते सियराम साथरी सोये । श्रमितबसनबिनजाहिंनजोये ॥
मातु पिता परिजन पुरबासी । सखासुशील दासअरुदासी ॥
जुगवहिं जिनहिं प्राणकीनाईं । महिसोवतसो राम गुसाईं ॥
पिताजनक जगबिदितप्रभाऊ । श्वशुर सुरेश सखारघुराऊ ॥
रामचन्द्र पति सो बैदेही । महिसोवतबिधिबाम न केही ॥
सिय रघुबीर कि कानन योगू । कर्म प्रधान सत्यकह लोगू ॥
दो० केकयनन्दिनिमन्दमति कठिनकुटिलपणकीन्ह ।
जैंरघुनन्दनजानकिहि सुखअवसर दुखदीन्ह ॥
भइ दिनकरकुल बिटपकुठारी । कुमतिकीन्हअबबिश्वदुखारी ॥
रामसीय महि शयन निहारी । भयउबिषाद निषादहिभारी ॥
बोले लषण मधुर मृदुबानी । ज्ञान बिराग भक्ति रससानी ॥
कोउ न काहु दुखसुखकरदाता । निजकृतकर्म भोगसबभ्राता ॥

योग वियोग भोग भलमन्दा । हितअनहितमध्यमभ्रमफन्दा॥
जन्म मरणजहँलगि जगजालू । सम्पातिबिपतिकर्म अरुकालू॥
धरणिधाम धनपुर परिवारू । स्वर्गनरकजहँलगिव्यवहारू॥
देखिय सुनिय गुनिय मनमाहीं । मोह मूल परमारथ नाहीं॥
दो० सपने होहि भिखारिनृप रंक नाकपति होइ ।
जागे लाभ न हानिकछु तिमिप्रपंचजियजोइ ॥
अस विचारि नहिं कीजियरोषू । बादिकाहु नहिं दीजियदोषू॥
मोहनिशा सब सोवन हारा । देखहिं स्वप्न अनेक प्रकारा॥
इहिजगयामिनि जागहिं योगी । परमारथ परपंच बियोगी॥
जानिय तबहिं जीवजगजागा । जबसबविषयबिलासबिरागा॥
होइ विवेक मोह भ्रम भागा । तब रघुबीर चरण अनुरागा॥
सखा परम परमारथ एहू । मन क्रम बचन रामपद नेहू॥
रामब्रह्म परमारथ रूपा । अविगतअलखअनादिअनूपा॥
दो० भक्तभूमि भूसुर सुरभि सुरहित लागि कृपाल ।
करतचरितधरिमनुजतनु सुनतमिटै जगजाल ॥
सखासमुझि असपरिहरिमोहू । सियरघुबीर चरणरत होहू॥
कहत रामगुण भा भिनसारा । जागे जग मंगल दातारा॥
सकल शौचकरिराम अन्हाये । शुचि सुजानबटक्षीर मँगाये॥
अनुज सहित शिरजटा बनाये । देखिसुमन्त्र नयन जलछाये॥
हृदय दाह अति बदनमलीना । कह करजोरिवचनअतिदीना॥
नाथ कहेउ अस कोशलनाथा । लै रथ जाहु रामके साथा॥
बन दिखाइ सुरसरि अन्हवाई । आनेहु बेगि फेरिदोउ भाई॥
लषण रामसिय आनेहु फेरी । संशय सकल सकोच निवेरी॥
दो० नृपअस कहेउगुसाइँ जस कहियकरौं बलिसोइ ।
करिविनती पायँन परेउ दीनबाल जिमि रोइ ॥
तात कृपाकरि कीजिय सोई । जाते अवध अनाथ न होई॥
मंत्रिहि राम उठाय प्रबोधा । तात धर्ममग तुमसबशोधा॥

शिवि दधीचि हरिचन्द्र नरेशा । सहे धर्महित कोटि कलेशा ॥
रन्तिदेव बलि भूप सुजाना । धर्म धरेउ सहि संकट नाना ॥
धर्म्म न दूसर सत्य समाना । आगम निगम पुराणबखाना ॥
मैं सोइ धर्म सुलभ करिपावा । तजेसो तिहुँपुरअपयशछावा ॥
सम्भावित कहँ अपयश लाहू । मरण कोटिसम दारुण दाहू ॥
तुमसन तात बहुत का कहऊँ । दियेउतरफिरि पातकलहऊँ ॥
दो० पितुपदगहिकहिकोटिविधि विनयकरब करजोरि ।
चिन्ता कवनिहुँ बातकी तात करिय जनिमोरि ॥
तुम पुनिपितु समान हितमोरे । बिनती करौं तात कर जोरे ॥
सबविधिसोइ करतब्य तुम्हारे । दुख न पाव नृपशोच हमारे ॥
सुनि रघुनाथ सचिव सम्बादू । भयउसपरिजनबिकलनिषादू ॥
पुनिकछुलषण कहेउ कटुबानी । प्रभुबरजेउबड़अनुचितजानी ॥
सकुचिराम निज शपथदिवाई । लषणसंदेश कहब जनिजाई ॥
कह सुमन्त्र पुनि भूप सँदेशू । सहिनसकिहिंसियबिपिनकलेशू ॥
जेहिबिधिअवधआवफिरिसीया । सोइ रघुनाथतुमहिंकरणीया ॥
नतरुनिपट अवलंब बिहीना । मैंनाजियबजिमिजलबिनमीना ॥
दो० मैके ससुरे सकलसुख जबहिं जहां मनमान ।
तबतहँरहबसुखेनासिय जबलगिविपतिविहान ॥
बिनती कीन्ह भूप जेहिभांती । आरतिप्रीतिनसोकहि जाती ॥
पितुसँदेश सुनि कृपानिधाना । सियहिंदीन्हशिषकोटिबिधाना ॥
सासुश्वशुर गुरुप्रिय परिवारू । फिरहुतोसबकर मिटैखभारू ॥
सुनिपति बचन कहति बैदेही । सुनहु प्राणपति परमसनेही ॥
प्रभु करुणामय परम विवेकी । तनुतजिछाहँरहतकिमिछेकी ॥
प्रभाजाइ कहँ भानु बिहाई । कहँ चन्द्रिका चन्द्रतजिजाई ॥
पतिहि प्रेममय बिनय सुनाई । कहतसचिवसन गिरासुहाई ।
तुम पितुश्वशुरसरिसहितकारी । उतरुदेउँफिरिअनुचितभारी ॥
दो० आरतबश सन्मुखभइउँ बिलग न मानब तात ।

आरयसुत पदकमलबिनु बादिजहांलगिनात ॥
पितुहि विभवबिलास मैं दीठा । नृपमणिमुकुटमिलतपदपीठा ॥
सुखनिधान असपितु गृहमोरे । पतिबिहीन मन भाव न मोरे ॥
श्वशुर चक्रवै कोशल राऊ । भुवन चारिदशप्रकट प्रभाऊ ॥
आगे ह्वै जेहि सुरपति लेई । अर्द्ध सिंहासन आसन देई ॥
श्वशुर एतादृश अवध निवासू । प्रिय परिवार मातुसम सासू ॥
बिनु रघुपति पदपदुमपरागा । मोहिंकोउसपनेहुसुखदनलागा ॥
अगमपन्थ बन भूमि पहारा । करिकेहरि सरसरित अपारा ॥
कोल किरात कुरंग बिहंगा । मोहिंसबसुखदप्राणपतिसंगा ॥
दो० सासुश्वशुरसनमोरिहुति बिनयकरबपरिपाय ।
मोरशोचजनिकरियकछु मैंबनसुखी सुभाय ॥
प्राणनाथ प्रिय देवर साथा । बीर धुरीण धरे धनु भाथा ॥
नहिं मगश्रमभ्रमदुखमनमोरे । मोहिंलगिशोचकरियजनिभोरे ॥
सुनिसुमन्त्र सियशीतलबानी । भयेबिकलजनुफणिमणिहानी ॥
नयन न सूझ सुनै नहिं काना । कहिनसकैकछुअतिअकुलाना ॥
राम प्रबोध कीन्ह बहुभांती । तदपिहोइनाहिं शीतलछाती ॥
यतन अनेक साथहित कीन्हा । उचितउत्तररघुनन्दन दीन्हा ॥
मेटि जाय नहिं राम रजाई । कठिनकर्म्मगतिकछुनबसाई ॥
रामलषण सिय पद शिरनाई । फिरेउबणिकजिमिमूरगँवाई ॥
दो० रथ हांके हय राम तन हेरि हेरि हिहनाहिं ।
देखिनिषादविषादबश शिरधुनिधुनिपछिताहिं ॥
जासु वियोग विकल पशु ऐसे । प्रजा मातुपितु जीवहिं कैसे ॥
बरबस राम सुमन्त्र पठाये । सुरसरितीर आपु चलिआये ॥
मांगी नाव न केवट आना । कहै तुम्हार मरम मैं जाना ॥
चरणकमल रजकहँ सबकहई । मानुषकरणि मूरि कछुअहई ॥
छुवत शिलाभइ नारि सुहाई । पाहन ते न काठ कठिनाई ॥
तरणिउँ मुनिघरणी होइजाई । बाट परै मोरिनाव उड़ाई ॥

यह प्रतिपाले सब परिवारू। नहिं जानौं कछु और कबारू॥
जो प्रभु अवशि पारगा चहहू। तौपद पदुम पखारन कहहू॥
छं० पदपद्मधोइ चढ़ाइ नाव न नाथ उतराई चहौं।
मोहिंरामराउरिआनिदशरथशपथ सबसांचीकहौं॥
बरुतीरमारहिंलषणपै जबलगि न पांवपखारिहौं।
तबलगिनतुलसीदास नाथकृपालु पारउतारिहौं॥
सो० सुनि केवट के बयन प्रेम लपेटे अटपटे।
बिहँसे करुणा अयन चितै जानकी लषणतन॥
कृपासिन्धु बोले मुसकाई। सोइ करहु जेहि नावनजाई॥
वेगि आनि जल पांव पखारू। होत बिलम्ब उतारहु पारू॥
जासुनाम सुमिरत यकबारा। उतरहिंनरभवसिन्धु अपारा॥
सो कृपालु केवटहि निहोरा। जे किय जग तिहुँपगतेथोरा॥
पदनख निरखि देवसरिहरषी। सुनिप्रभुवचनमोहमतिकरषी॥
केवट राम रजायसु पावा। पानिकठवता भरि लै आवा॥
अतिआनन्द उमँगि अनुरागा। चरणसरोज पखारन लागा॥
बर्षिसुमनसुर सकल सिहाहीं। इहिसम पुण्यपुंज कोउनाहीं॥
दो० पदपखारि जलपानकरि आपुसहित परिवार।
पितरपारकरि प्रभुहिपुनि मुदितगयउ लैपार॥
उतरि ठाढ़भये सुरसरि रेता। सीय रामगुह लषण समेता॥
केवट उतरि दण्डवत कीन्हा। प्रभुसकुचेकछुयहि नहिंदीन्हा॥
पिय हियकीसिय जाननहारी। मणिमुँदरी मनमुदित उतारी॥
कहेउ कृपालु लेहु उतराई। केवटचरण गहेउ अकुलाई॥
नाथ आजु हम काह न पावा। मिटे दोषदुख दारिद दावा॥
अमितकाल मैं कीन्ह मँजूरी। आजुदीन्ह विधिसबभरिपूरी॥
अब कछुनाथ न चाहिय मोरे। दीन दयालु अनुग्रह तोरे॥
फिरतिबार जो कछु मोहिंदेबा। सो प्रसाद मैं शिर धरिलेबा॥
दो० बहुत कीन्हहठ लषणप्रभु नहिंकछु केवटलेइ।

बिदाकीन्ह करुणायतन भक्ति बिमलबर देइ ॥

तब मज्जनकरि रघुकुल नाथा । पूजि पारथी नायउ माथा ॥
सिय सुरसरिहि कहा करजोरी । मातु मनोरथ पुरवहु मोरी ॥
पति देवर सँग कुशल बहोरी । आइ करौं जेहि पूजा तोरी ॥
सुनि सिय विनयप्रेम रससानी । भइतबविमल बारिवरबानी ॥
सुनु रघुबीर प्रिया बैदेही । तवप्रभावजगबिदितनकेही ॥
लोकप होहिं बिलोकत तोरे । तोहिंसेवहिंसबासिधिकरजोरे ॥
तुमजो हमहिंबड़िबिनयसुनाई । कृपाकीन्ह मोहिंदीन्हबड़ाई ॥
तदपि देवि मैं देब अशीशा । सफलहोनहितानिजबागीशा ॥

दो० प्राणनाथ देवर सहित कुशल कोशला आय ।
पूरिहि सब मनकामना सुयशरहिहिजगछाय ॥

गङ्ग बचन सुनि मङ्गल मूला । मुदितसीय सुरसरिअनुकूला ॥
तब प्रभु गुहहिं कहा घरजाहू । सुनतसूख मुखभा उरदाहू ॥
दीन वचन गुह कह करजोरी । बिनयसुनियरघुकुलमणिमोरी ॥
नाथ साथ रहि पंथ दिखाई । करिदिनचारि चरणसेवकाई ॥
जेहि बन जाइ रहब रघुराई । पर्णकुटी मैं करब सुहाई ॥
तब मोकहँ जस देब रजाई । सो करिहौं रघुबीर दुहाई ॥
सहज सनेह राम लखि तासू । सङ्गलीन्ह गुह हृदय हुलासू ॥
पुनि गुहज्ञातिबोलि सबलीन्हे । करि परितोष बिदासबकीन्हे ॥

दो० तबगणपतिशिवसुमिरिप्रभु नाइसुरसरिहिमाथ ।
सखाअनुजसियसहितबन गमनकीन्ह रघुनाथ ॥

तेहिदिन भयउ बिटपतर बासू । लषणसखासब कीन्हसुपासू ॥
प्रात प्रातकृत करि रघुराई । तीरथराज दीख प्रभुजाई ॥
सचिव सत्य श्रद्धा प्रिय नारी । माधव सरिस मीत हितकारी ॥
चारिपदारथ भरा भँडारू । पुण्य प्रदेश देश अतिचारू ॥
क्षेत्र अगम गढ़ गाढ़ सुहावा । सपनेहु जिन्ह प्रतिपक्षनपावा ॥
सेनसकल तीरथबर बीरा । कलुषअनीक दलन रणधीरा ॥

संगम सिंहासन सुठि सोहा । छत्र अक्षयबट मुनिमनमोहा ॥
चमर यमुन जल गंग तरंगा । देखि होहिंदुखदारिदभंगा ॥
दो० सेवहिं सुकृती साधुशुचि पावहिं सबमनकाम ।
बन्दी बेद पुराणगण कहहिं बिमल गुणग्राम ॥
को कहि सकै प्रयाग प्रभाऊ । कलुष पुंज कुंजर मृगराऊ ॥
अस तीरथपति देखि सुहावा । सुखसागर रघुवर सुखपावा ॥
कहिसियअनुजहिसखहिसुनाई । श्रीमुख तीरथराज बड़ाई ॥
करि प्रणाम देखत बनबागा । कहतमहातमअतिअनुरागा ॥
इहिबिधि आइ बिलोकेउ बेनी । सुमिरत सकलसुमंगलदेनी ॥
मुदित अन्हाइ कीन्हशिव सेवा । पूजि यथाविधि तीरथदेवा ॥
तब प्रभु भरद्वाज पहँ आये । करतदण्डवत मुनिउरलाये ॥
मुनिमन मोद न कछु कहिजाई । ब्रह्मानन्द राशि जनु पाई ॥
दो० दीन्हअशीशमुनीशउर अतिआनँदअसजानि ।
लोचनगोचरसुकृतफल मनहुंकिये बिधिआनि ॥
कुशलप्रश्नकरि आसन दीन्हा । पूजि प्रेम परिपूरण कीन्हा ॥
कन्द मूल फल अंकुर नीके । दियेआनिमुनिमनहुँ अमीके ॥
सीयलषण जनसहित सुहाये । अति रुचिराममूलफलखाये ॥
भये बिगतश्रम राम सुखारे । भरद्वाज मृदु वचन उचारे ॥
आजु सुफल तप तीरथ यागू । आजु सुफलजपयोगबिरागू ॥
सुफलसकल शुभसाधन साजू । रामतुमहिं अवलोकतआजू ॥
लाभअवधि सुखअवधिनदूजी । तुम्हरेदरश आशसबपूजी ॥
अबकरिकृपा देव बर येहू । निजपदसरसिजसहजसनेहू ॥
दो० कर्म्मबचनमनछाँड़िछलजबलगि जनन तुम्हार ।
तबलगि सुखसपनेहुं नहीं कियेकोटि उपचार ॥
सुनिमुनि बचनराम सकुचाने । भावभक्ति आनन्द अघाने ॥
तबरघुबर मुनि सुयशसुहावा । कोटिभाँतिकहिसबहिसुनावा ॥
सोबड़ सो सब गुणगण गेहू । जेहि मुनीश तुम आदर देहू ॥

मुनि रघुबीर परस्पर नवहीं । बचनअगोचरसुखअनुभवहीं ॥
यह सुधिपाइ प्रयाग निवासी । बटुतापस मुनिसिद्धउदासी ॥
भरद्वाज आश्रम सब आये । देखन दशरथसुवन सुहाये ॥
राम प्रणाम कीन्ह सबकाहू । मुदितभये लहिलोचन लाहू ॥
देहिं अशीश परमसुख पाई । फिरे सराहत सुन्दरताई ॥

दो० रामकीन्ह विश्रामनिशि प्रात प्रयाग अन्हाइ ।
चलेसहितसियलषणजनमुदितमुनिहिंशिरनाइ ॥

राम सप्रेम कह्यो मुनि पाहीं । नाथकहहुहमकिहिमगुजाहीं ॥
सुनिमुनिबिहँसिरामसनकहहीं । सुगमसकलमगुतुमकहँअहहीं ॥
साथलागि मुनिशिष्य बुलाये । सुनिमनमुदितपचासकआये ॥
सबहि राम पदप्रेम अपारा । सबहिकहहिंमगुदीखहमारा ॥
मुनिबटु चारि संग तबदीन्हे । जिनबहुजन्मसुकृतबड़कीन्हे ॥
करि प्रणाम मुनि आयसु पाई । प्रमुदित हृदय चले रघुराई ॥
ग्राम निकट जबनिसरहिंजाई । देखहिं दरश नारि नर धाई ॥
होहिं सनाथ जन्मफल पाई । फिरहिंदुखितमन संगपठाई ॥

दो० बिदाकीन्ह बटुबिनयकरि फिरे पाइ मन काम ।
उतरि नहाये यमुनजल जो शरीर समश्याम ॥

सुनत तीर बासी नर नारी । धायेनिजनिजकाज बिसारी ॥
लषणराम सिय सुन्दरताई । देखिकरहिं निजभाग्यबड़ाई ॥
अतिलालसासबहिं मनमाहीं । नामग्राम पूछत सकुचाहीं ॥
जे तिनमहँ बय बृद्ध सयाने । तिनकरियुक्तिराम पहिंचाने ॥
सकलकथाकहि तिनहिं सुनाई । बनहिंचले पितुआयसु पाई ॥
सुनिसबिषाद सकलपछिताहीं । रानीराय कीन्ह भलनाहीं ॥
रामलषण सियरूप निहारी । शोचसनेह बिकल नरनारी ॥
ते पितुमातु कहौ सखि कैसे । जिन पठये बन बालक ऐसे ॥

दो० तबरघुबीर अनेकबिधि सखहि सिखावन दीन्ह ।
रामरजायसु शीशधरि गवन भवन तिनकीन्ह ॥

पुनिसियराम लषण कर जोरी । यमुनहिंकीन्ह प्रणाम बहोरी ॥
गवने सीय सहित दोउ भाई । रवितनया कर करत बड़ाई ॥
पथिक अनेकमिलहिं मगुजाता । कहहिं सप्रेम देखिदोउभ्राता ॥
राज लच्छण सब अङ्ग तुम्हारे । देखि शोच हिय होत हमारे ॥
मारग चलहु पयादेहि पाये । ज्योतिष झूठ हमारेहिभाये ॥
अगम पन्थ गिरिकानन भारी । तेहिमहँसाथनारि सुकुमारी ॥
करिकेहरि बन जाहिं न जोई । हमसँगचलहिं जोआयसुहोई ॥
जाब जहां लगि तहँ पहुंचाई । फिरब बहोरितुमहिं शिरनाई ॥
दो० इहिबिधि बूझहिं प्रेमबश पुलकगात जलनैन ।
कृपासिन्धु फेरहिंतिनहिं करिबिनती मृदुबैन ॥
जेपुर ग्राम बसहिं मगु माहीं । तिनहिंनागसुरनगरसिहाहीं ॥
केहि सुकृती केहिघरी बसाये । धन्य पुण्यमय परम सुहाये ॥
जहँ जहँ रामचरण चलिजाहीं । तेहिसमान अमरावतिनाहीं ॥
पुण्यपुञ्ज मगुनिकट निवासी । तिनहिंसराहहिं सुरपुरवासी ॥
जोभरिनयनबिलोकहिंरामहिं । सीतालषणसहितघनश्यामहिं ॥
जेहि सरसरितराम अवगाहहिं । तिनहिंदेवसरसरितसराहहिं ॥
जेहितरुतर प्रभु बैठहिं जाई । करहिंकलपतरु तासुबड़ाई ॥
परसि राम पद पद्म परागा । मानति भूरिभूमि निजभागा ॥
दो० छाँहकरहिंबनबिबुधगण बरषहिंसुमन सिहाहिं ।
देखत गिरिबन बिहगमृग रामचले मगुजाहिं ॥
सीत लषण सहित रघुराई । गाँवनिकटजबनिसरहिंजाई ॥
सुनि सब बाल बृद्ध नर नारी । चलहिंतुरतगृहकाजबिसारी ॥
रामलषण सिय रूप निहारी । पाइनयनफल होहिं सुखारी ॥
सजलनयन अतिपुलक शरीरा । सबभयेमगन देखिदोउबीरा ॥
बरणि न जाइ दशा तिनकेरी । लही रंक जनु सुरमणिढेरी ॥
एकहिं एक बोलि सिख देहीं । लोचनलाहु लेहु क्षण येहीं ॥
रामहिं देखि एक अनुरागे । चितबतचले जातसँगलागे ॥

एक नयन मगुछबि उरआनी । होहिंशिथिलतनमानसबानी ॥
दो० एकदेखि बटछांह भलि डासिमृदुल तृणपात ।
कहहिंगँवाइयछणकश्रमगवनबश्रबहिंकिप्रात ॥
एक कलशभरि आनहिं पानी । अँचइयनाथकहहिंमृदुबानी ॥
सुनिप्रियबचनप्रीति अतिदेखी । रामकृपालु सुशील बिशेखी ॥
जानी सीय श्रमित मन माहीं । घरिकबिलम्बकीन्हबटछाहीं ॥
मुदित नारि नर देखहिं शोभा । रूप अनूप देखि मनलोभा ॥
इकटक सब जोवहिं चहुंओरा । रामचन्द्रमुख चन्द्र चकोरा ॥
तरुण तमाल बरण तनसोहा । देखत काम कोटि मनमोहा ॥
दामिनिबरण लषण सुठिनीके । नखशिख सुभगभावतेजीके ॥
मुनि पट कटिन कसे तूणीरा । सोहत कर कमलनधनुतीरा ॥
दो० जटामुकुट शीशनसुभग उरभुज नयन बिशाल ।
शरदपर्व बिधुबदनवर लसत स्वेदकण जाल ॥
बरणि न जाइ मनोहर जोरी । शोभाअमितमोरि मतिथोरी ॥
राम लषण सिय सुन्दरताई । सबचितवहिंमनबुधिचितलाई ॥
थके नारि नर प्रेम पियासे । मनहुँ मृगीमृग देखिदिवासे ॥
सीय समीप ग्राम तिय जाहीं । पूँछत अतिसनेह सकुचाहीं ॥
बार बार सब लागहिं पाये । कहहिंबचनमृदुसरलसुहाये ॥
राजकुमारि बिनय हम करहीं । तियसुभाव कछु पूँछतडरहीं ॥
स्वामिनिअबिनय छमबहमारी । बिलगनमानब जानिगवांरी ॥
राजकुवँर दोउ सहज सलोने । इनतेलहिद्युति मरकतसोने ॥
दो० श्यामल गौर किशोर बर सुन्दर सुखमाऐन ।
शरद शर्वरीनाथ मुख शरद सरोरुह नैन ॥
कोटि मनोज लजावन हारे । सुमुखिकहहुकोअहहिंतुम्हारे ॥
सुनि सनेह मय मञ्जुल बानी । सकुचिसीयमनमहँमुसुकानी ॥
तिनहिंबिलोकिबिलोकेउधरणी । दुहुँसकोचसकुचतिबरबरणी ॥
सकुचि सप्रेम बाल मृगनयनी । बोली मधुरबचनपिकबयनी ॥

सहज सुभाव सुभग तनगोरे । नाम लषण लघु देवर मोरे ॥
श्यामबरण बिशालभुजनयना । अतिसुन्दरबोलनिमृदुबयना ॥
बहुरिबदन बिधु अंचल ढांकी । पियतनचितै दृष्टिकरिबांकी ॥
खंजनमंजु तिरीछणनयनी । निजपतिकह्योतिनहिंपियसयनी ॥
भईं मुदित सबग्राम बधूटी । रंकन रतन राशि जनु लूटी ॥

दो० अतिसप्रेम सियपांयपरि बहुबिधिदेहिंअशीश ।
सदासुहागिनिरहहुतुम जबलगिमहिअहिशीश ॥

पारवती सम पति प्रिय होहू । देवि न हमपर छांड़ब छोहू ॥
पुनिपुनि बिनय कराहिंकरजोरी । जो यहिमारग फिरियबहोरी ॥
दरशन देब जानि निज दासी । लखी सीयसब प्रेमपियासी ॥
मधुरबचन कहिकहि परितोषी । जनु कुमुदिनी कौमुदीपोषी ॥
तबहिं लषण रघुबर रुखजानी । पूंछेउ मगुलोगन मृदुबानी ॥
सुनत नारि नर भये दुखारी । पुलकितअंग बिलोचनबारी ॥
मिटामोद मन भये मलीने । बिधिनिधिदीन्हलीन्हजनुछीने ॥
समुझिकर्म्मगतिधीरजकीन्हा । शोधिसुगममगुतिन्हकहिदीन्हा ॥

दो० लषणजानकी सहितबन गमन कीन्ह रघुनाथ ।
फेरेसब प्रिय बचनकहि लिये लाइ मनसाथ ॥

फिरत नारिनर अति पछिताहीं । दैवहि दोष देहिं मनमाहीं ॥
सहित विषाद परस्पर कहहीं । बिधिकरतबसबउलटेअहहीं ॥
निपट निरंकुश निठुर निशंकू । जेहिंशशिकीन्हसरुजसकलंकू ॥
रुख कलपतरु सागर खारा । तेहिं पठये बन राजकुमारा ॥
जोपै इनहिं दीन्ह बन बासू । कीन्हबादिविधिभोगबिलासू ॥
ये बिचरहिं मगु बिनुपदत्राना । रचे बादि बिधिबाहन नाना ॥
ये महिपरहिं डासिकुश पाता । सुभगसेजकतकीन्हबिधाता ॥
तरुतर बासइनहिंबिधिदीन्हा । धवलधामरचिकतश्रमकीन्हा ॥

दो० जो येमुनिपट धरजटिल सुन्दर सुठि सुकुमार ।
बिबिध भाँति भूषणबसन बादिकिये करतार ॥

जो ये कन्दमूल फलखाहीं । बादिसुधादिअशनजगमाहीं ॥
एक कहहिं यह सहज सुहाये । आपुप्रकटभे विधि न बनाये ॥
जहँलगिवेदकहेउ बिधिकरणी । अवणनयनमनगोचरबरणी ॥
देखहु खोजि भुवन दशचारी । कहँअसपुरुषकहांअसिनारी ॥
इनहिंदेखिविधिमन अनुरागा । पटुतरयोग बनावन लागा ॥
कीन्ह बहुत श्रमएक न आये । तेहि इरषा बन आनिदुराये ॥
एककहहिं हम बहुत न जानहिं । आपुहिपरमधन्यकरिमानहिं ॥
ते पुनि पुण्य पुंज हम लेखे । जे देखहिं देखिहिं जिनदेखे ॥

दो० इहिबिधिकहिकहिबचनप्रिय लेहिंनयनभरिनीर ।
किमिचलिहैं मारग अगम सुठि सुकुमारशरीर ॥

नारि सनेह बिकल सब होहीं । चकईसांझसमयजिमिसोहीं ॥
मृदुपदकमल कठिन मगजानी । गहबरिहृदयकहहिं मृदुबानी ॥
परसतमृदुल चरण अरुणारे । सकुचतिमहिजिमिहृदयहमारे ॥
जो जगदीश इनहिं बनदीन्हा । कसनसुमनमयमारगकीन्हा ॥
जो मांगे पाइय विधि पाहीं । राखियसखिइनआंखिनमाहीं ॥
जे नर नारि न अवसर आये । तेसियराम न देखन पाये ॥
सुनि स्वरूप पूंछहिं अकुलाई । अबलगिगये कहांलगिभाई ॥
समरथ धाइ बिलोकहिं जाई । प्रमुदितफिरहिंनयनफलपाई ॥

दो० अबला बालक वृद्धजन करमींजहिं पछिताहिं ।
होहिं प्रेमवश लोगइमि रामजहां जहँ जाहिं ॥

गांवगांव असहोहि अनन्दा । देखि भानुकुल कैरवचन्दा ॥
जे कछु समाचार सुनि पावहिं । तेनृप रानिहि दोषलगावहिं ॥
कहहिं एक अतिभलनरनाहू । दीन्हहमहिंजिनलोचनलाहू ॥
कहहिं परस्पर लोग लुगाई । बातें सरल सनेह सुहाई ॥
ते पितु मातु धन्य जे पाये । धन्य सो नगर जहांते आये ॥
धन्य सो शैल देश बन गाऊं । जहँजहँजाहिं धन्यसो ठाऊं ॥
सुखपायो विरंचि रचि तेही । ये जिन्हके सबभांति सनेही ॥

रामलषण सिय कथा सुहाई । रही सकल मग काननछाई ॥
दो० इहिबिधिरघुकुलकमलरबि मगलोगन सुखदेत ।
जाहिंचले देखत बिपिन सिय सौमित्रि समेत ॥
आगे राम लषण पुनि पाछे । तापस वेष बिराजत आछे ॥
उभयमध्य सियशोभित कैसी । ब्रह्म जीव बिच माया जैसी ॥
बहुरिकहौं छबिजसमन बसई । जनुमधुमदन मध्यरतिलसई ॥
उपमा बहुरिकहौं जियजोही । जनुबुधबिधुबिचरोहिणिसोही ॥
प्रभु पदरेख बीचबिच सीता । धरहिंचरणमगचलहिंसभीता ॥
सीय राम पद अंक बराये । लषणचलहिंमगदाहिनबांये ॥
राम लषण सियप्रीति सुहाई । बचनअगोचरकिमिकहिजाई ॥
खगमृगमगन देखिछबि होहीं । लिये चोर चित रामबटोहीं ॥
दो० जिन्हजिन्हदेखेपथिकप्रियसीयसहितदोउभाइ ।
भव मग अगम अनन्दते बिन श्रमरहे सिराइ ॥
अजहुँ जासुउर सपनेहुँ काऊ । बसहिंरामसियलषण बटाऊ ॥
राम धाम पथ जाइहि सोई । जो पथ पाव कबहुँ मुनिकोई ॥
तबरघुबीर श्रमित सियजानी । देखि निकटबट शीतलपानी ॥
तहँ बसि कन्दमूल फल खाई । प्रात अन्हाय चले रघुराई ॥
देखत बन सर शैल सुहाये । बालमीकिआश्रम प्रभुआये ॥
राम देखि मुनि बास सुहावन । सुन्दर गिरिकाननजलपावन ॥
सरन सरोज बिटप बन फूले । गुंजत मंजु मधुप रस भूले ॥
खगमृग बिपुल कुलाहलकरहीं । रहितबैरप्रमुदित मनचरहीं ॥
दो० शुचि सुन्दर आश्रमनिरखि हरषे राजिव नैन ।
सुनिरघुबर आगमन मुनि आगे आये लैन ॥
मुनि कहँ रामदण्डवत कीन्हा । आशिरबाद बिप्रबर दीन्हा ॥
देखि राम छबि नयन जुड़ाने । करिसनमान आश्रमहिंआने ॥
तब मुनि आसन दिये सुहाये । मुनिवरअतिथिप्राणप्रियपाये ॥
कंद मूल फल मधुर मंगाये । सिय सौमित्रिराम फलखाये ॥

बालमीकि मन आनँद भारी । मंगल मूरति नयन निहारी ॥
तब कर कमल जोरि रघुराई । बोले बचन श्रवण सुखदाई ॥
तुम त्रिकाल दरशी मुनिनाथा । बिश्वबदर जिमितुम्हरेहाथा ॥
असकहिसबप्रभु कथाबखानी । जेहिजेहिभांतिदीन्हबनरानी ॥
दो० तातबचन पुनि मातुमत भाइ भरत अस राउ ।
मोकहँ दरशतुम्हार प्रभु सबमम पुण्यप्रभाउ ॥
देखि पाँय मुनि राय तुम्हारे । भयेसुकृत सबसुफल हमारे ॥
अब जहँ राउर आयसु होई । मुनि उद्वेग न पावहिं कोई ॥
मुनितापस जिनते दुखलहहीं । ते नरेश बिनु पावक दहहीं ॥
मंगल मूल बिप्र परितोषू । दहै कोटि कुल भूसुर रोषू ॥
अस जियजानिकहियसोठाऊँ । सियसौमित्रिसहिततहँजाऊँ ॥
तहँरचिरुचिर पर्ण तृणशाला । बासकरौं कछुकाल कृपाला ॥
सहजसरल सुनि रघुबर बानी । साधुसाधु बोले मुनि ज्ञानी ॥
कस न कहहु अस रघुकुलकेतू । तुमपालक सन्ततश्रुतिसेतू ॥
छं० श्रुतिसेतु पालक राम तुम जगदीश माया जानकी ।
जोसृजतिजगपालतिहरति रुखपाइकृपानिधानकी ॥
जोसहसशीशअहीशमहिधरु लषणसचराचरधनी ।
सुरकाजधरिनरराजतनचलेदलनखलनिशिचरअनी ॥
सो० राम स्वरूप तुम्हार बचन अगोचर बुद्धिबर ।
अबिगतअकथअपार नेतिनेतिनितनिगमकह ॥
जग पेखन तुम देखन हारे । बिधिहरिशम्भु नचावनहारे ॥
तेउन जानहिं मर्म्म तुम्हारा । और तुमहिंको जानन हारा ॥
सो जानै जेहि देहु जनाई । जानत तुमहिंतुमहिं ह्वैजाई ॥
तुम्हरी कृपातुमहिं रघुनन्दन । जानत भक्त भक्त उर चन्दन ॥
चिदानन्दमय देह तुम्हारी । विगतबिकारजान अधिकारी ॥
नरतनु धरेहु सन्त सुरकाजा । कहहुकरहुजस प्राकृतराजा ॥
राम देखिसुनि चरित तुम्हारे । जड़ मोहहिंबुध होहिंसुखारे ॥

तुम जो कहहु करहुसबसांचा । जसकाछियतसचाहियनाचा ॥
दो० पूछेउ मोहिं कि रहौं कहँ मैं कहतेउ सकुचाउँ ।
जहँ न होहुतहँ देहुँकहि तुमहिंदिखावौं ठाउँ ॥
सुनि मुनि वचन प्रेमरससाने । सकुचिराममनमहँ मुसुकाने ॥
बालमीकि हँसि कहहिं बहोरी । बाणी मधुर अमियरसबोरी ॥
सुनहु राम अब कहौं निकेता । बसहुजहांसियलषणसमेता ॥
जिनके श्रवण समुद्र समाना । कथातुम्हारिसुभगसरिनाना ॥
भरहिं निरन्तर होहिं न पूरे । तिनके हिये सदन तव रूरे ॥
लोचन चातक जिन करिराखे । रहहिंदरशजलधरअभिलाखे ॥
निदरहिं सिन्धु सरितसरवारी । रूप विन्दुलहिहोहिं सुखारी ॥
तिनकेहृदय सदन सुखदायक ।बसहुलषणसियसहरघुनायक॥
दो० यशतुम्हार मानसबिमल हंसनिजीहा जासु ।
मुक्ताहल गुणगणचुगहिं बसहुराम हियतासु ॥
प्रभुप्रसाद शुचिसुभगसुबासा । सादर जासु लहै नितनासा ॥
तुमहिं निवेदित भोजन करहीं । प्रभुप्रसाद पटभूषणधरहीं ॥
शीशनवहिं सुरगुरु द्विजदेखी । प्रीतिसहितकरिविनयविशेखी॥
कर नित कराहिं रामपद पूजा । राम भरोस हृदय नाहिं दूजा ॥
चरण राम तीरथ चलिजाहीं । राम बसहु तिनके मनमाहीं ॥
मंत्रराज नित जपहिं तुम्हारा । पूजहिंतुमहिं सहितपरिवारा ॥
तर्प्पण होम करहिंबिधिनाना । बिप्र जेंवाइ देहिं बहु दाना ॥
तुमतेअधिकगुरुहि जियजानी । सकलभाव सेवहिं सनमानी ॥
दो० सब कर मांगहिं एक फल रामचरण रतहोउ ।
तिनकेमन मन्दिरबसहु सिय रघुनन्दन दोउ ॥
काम क्रोध मद मान न मोहा । लोभ न क्षोभ न राग न द्रोहा ॥
जिनके कपट दम्भ नाहिं माया । तिनके हृदय बसहु रघुराया ॥
सबके प्रिय सबके हितकारी । दुख सुख सरिसप्रशंसागारी ॥
कहहिं सत्याप्रियवचन विचारी । जागत सोवत शरणतुम्हारी ॥

तुमहिं छाड़े गति दूसरिनाहीं । रामबसहु तिनके उरमाहीं ॥
जननी सम जानहिं पर नारी । धन पराय विषते विषभारी ॥
जे हरषहिं पर सम्पति देखी । दुखितहोहिंपरबिपतिबिशेखी ॥
जिनहिं रामतुम प्राण पियारे । तिनकेउरशुभ सदनतुम्हारे ॥
दो० स्वामि सखा पितुमातुगुरु जिनकेसबतुमतात ।
तिनकेमनमन्दिरबसहु सीय सहित दोउभ्रात ॥
अवगुणतजिसबके गुणगहहीं । बिप्र धेनुहित संकट सहहीं ॥
नीति निपुणजिनकी जगलीका । घरतुम्हार तिनके मननीका ॥
गुणतुम्हारसमुझहिं निजदोसू । जेहिसबभांति तुम्हारभरोसू ॥
रामभक्त प्रिय लागहिं जेही । तेहि उर बसहु सहित बैदेही ॥
जातिपाँति धन धर्म्म बड़ाई । प्रिय परिवारसदन समुदाई ॥
सब तजि तुमहिं रहै लवलाई । ताके हृदय बसहु रघुराई ॥
स्वर्ग्ग नरक अपवर्ग्गसमाना । जहँ तहँ दीखधरे धनुवाना ॥
मनक्रम वचन जो राउर चेरा । राम करहु ताके उर डेरा ॥
दो० जाहिनचाहिय कबहुँ कछु तुमसनसहजसनेह ।
बसहु निरन्तर तासुउर सो राउर निज गेह ॥
इहि विधिमुनिवर ठामदिखाये । बचन सप्रेम राम मनभाये ॥
कहमुनिसुनहु भानुकुलनायक । आश्रमकहौंसमयसुखदायक ॥
चित्रकूट गिरि करहु निवासू । तहँतुम्हार सब भांति सुपासू ॥
शैल सुहावन कानन चारू । करि केहरिमृग बिहगबिहारू ॥
नदी पुनीत पुराण बखानी । अत्रितीय निजतपबलआनी ॥
सुरसरिधार नाम मन्दाकिनि । जोसब पातकपोतकडाकिनि ॥
अत्रिआदि मुनिवर तहँबसहीं । करहिंयोगजपतपतनुकसहीं ॥
चलहु सफलश्रमसबकर करहू । र न देहु गौरव गिरिवरहू ॥
दो० चित्रकूट महिमा अमित कही महामुनि गाय ।
आइ अन्हाने सरितवर सीयसहित दोउभाय ॥
रघुबर कहेउ लषणभल घाटू । करहु कतहुँ अबठाहर ठा

लषणदीखतब उतरकरारा । चहुंदिशिफिरयोधनुषजिमिनारा ॥
नदी पनचशर शमदम दाना । सकलकलुषकलिसाउजनाना ॥
चित्रकूट जनु अचल अहेरी । चूकन घात मारु मुठभेरी ॥
असकहिलषणठाउँ दिखरावा । थलबिलोकिरघुपतिसुखपावा॥
रमेउ राम मन देवन जाना । चलेसहित सुरपतिपरधाना ॥
कोल्ह किरात वेष धरि आये । रच्योपरणतृण सदन सुहाये॥
बरणि न जाइ मंजु दुइ शाला । एकललितलघुएक बिशाला ॥
दो० लषणजानकी सहित प्रभु राजत परण निकेत ।
सोह मदन मुनिवेष जनु रति ऋतुराज समेत ॥
अमर नाग किन्नर दिगपाला । चित्रकूट आये तेहि काला ॥
राम प्रणाम कीन्ह सब काहू । मुदितदेव लहि लोचनलाहू ॥
बरषि सुमन कह देव समाजू । नाथ सनाथ भये हम आजू ॥
करिबिनती दुखदुसह सुनाये । हरषितनिजनिजगेहसिधाये ॥
चित्रकूट रघुनन्दन छाये । समाचारसुनिसुनिमुनिआये ॥
आवत देखि मुदितमुनिबृन्दा । कीन्ह दण्डवतरघुकुलचन्दा ॥
मुनिरघुबरहि लाइ उर लेहीं । सुफल होनहित आशिषदेहीं ॥
सियसौमित्र रामछबिदेखहिं । साधनसकलसुफलकरिलेखहिं॥
दो० यथायोग सनमानि प्रभु बिदाकिये मुनिबृन्द ।
करहिंयोग जपयज्ञतप निजआश्रमनस्वछन्द ॥
यह सुधि कोल्ह किरातनपाई । हरषे जनुनवनिधि घर आई ॥
कन्दमूल फल भरिभरि दोना । चले रंकजनु लूटन सोना ॥
तिन्हमहँ जिनदेखे दोउ भ्राता । और तिनहिंपूछहिंमगुजाता ॥
कहत सुनत रघुबीर निकाई । आय सबन देखे रघुराई ॥
करहिं जोहारि भेंटधरिआगे । प्रभुहिबिलोकतअतिअनुरागे॥
चित्रलिखे जनु जहँ तहँ ठाढ़े । पुलकशरीर नयन जलबाढ़े ॥
राम सनेह मगन सब जाने । कहिप्रियबचनसकलसनमाने॥
प्रभुहि जोहारि बहोरिबहोरी । बचनबिनीत कहहिंकरजोरी ॥

दो० अब हम नाथ सनाथ सब भये देखि प्रभुपाय ।
भाग्य हमारे आगमन राउर कोशलराय ॥
धन्य भूमि बन पन्थ पहारा । जहँ जहँ नाथपांवतुम धारा ॥
धन्य बिहँग मृग काननचारी । सुफलजन्मभयेतुमहिंनिहारी ॥
हम सब धन्य सहित परिवारा । देखिनयनभरिदरशतुम्हारा ॥
कीन्ह बास भल ठांव बिचारी । इहांसकलऋतु रहब सुखारी ॥
हम सब भांति करब सेवकाई । करि केहरिअहि बाघ बराई ॥
बन बेहड़ गिरि कन्दर खोहा । सब हमारप्रभु पगपगजोहा ॥
तहँतहँ तुमहिं अहेर खेलाउब । सरनिर्झर सबठांवदिखाउब ॥
हम सेवक परिवार समेता । नाथ न सकुचबआयसुदेता ॥
दो० वेद बचन मुनि मन अगम ते प्रभुकरुणा ऐन ।
वचन किरातनके सुनत जिमि पितुबालकबैन ॥
रामहिं केवल प्रेम पियारा । जानि लेहु जो जाननिहारा ॥
राम सकल बनचर परितोषे । कहिमृदुबचन प्रेम परिपोषे ॥
विदा किये शिर नाय सिधाये । प्रभुगुणकहतसुनत घरआये ॥
इहिबिधिसीयसहित दोउभाई । बसहिंबिपिनसुरमुनिसुखदाई ॥
जबते आइ रहे रघुनायक । तबते भो बन मंगल दायक ॥
फूलहिंफलहिंबिटप बिधिनाना । मंजुललित बरबेलि बिताना ॥
सुरतरु सरिस स्वभाव सुहाये । मनहुँबिबुधबनपरिहरिआये ॥
गुंजत मंजुल मधुकर श्रेनी । त्रिविध बयारि बहै सुखदेनी ॥
दो० नीलकण्ठ कलकण्ठ शुक चातक चक्र चकोर ।
भांतिभांतिबोलहिंबिहगश्रवणसुखदचितचोर ॥
करि केहरि कपि कोल कुरंगा । बिगतबैर बिहरहिं यकसंगा ॥
फिरत अहेर राम छबि देखी । होहिंमुदित मृगबृन्दविशेखी ॥
बिबुधविपिनजहँलगजगमाहीं । देखिराम बनसकल सिहाहीं ॥
सुरसरिसरस्वतिदिनकरकन्या । मेकलसुता गोदावरि धन्या ॥
सबसर सिन्धुनदी नद नाना । मन्दाकिनिकरकरहिं बखाना ॥

उदय अस्त गिरि अरु कैलासू । मन्दर मेरु सकल सुर बासू ॥
शैल हिमाचल आदिक जेते । चित्रकूट यश गावहिं तेते ॥
बिन्ध्यमुदितमन सुखनसमाई । बिनु श्रम बिपुल बड़ाई पाई ॥
दो० चित्रकूट के विहगमृग बेलि विटप तृणजाति ।
पुण्यपुंज सब धन्य अस कहहिं देव दिनराति ॥
नयनवन्त रघुपतिहि बिलोकी । पाइ जन्मफल होहिंबिशोकी ॥
परसि चरणरज अचरसुखारी । भये परमपद के अधिकारी ॥
सो बन शैल सुभाय सुहावन । मंगलमय अतिपावन पावन ॥
महिमा कहौं कवनविधि तासू । सुखसागर जहँ कीन्हनिवासू ॥
पय पयोधि तजि अवधबिहाई । जहँ सियरामलषण रहेआई ॥
कहिनसकहिंसुखभाजसकानन । जो शतसहसहोहिंसहसानन ॥
सो मैं बरणि कहौं विधि केहीं । डाबर कमठ कि मन्दर लेहीं ॥
सेवहिं लषण कर्म मन बानी । जाइ न शील सनेह बखानी ॥
दो० क्षणक्षणसियलखि रामपद जानिआपु परनेह ।
करतलषण सपने न चित बन्धु मातु पितु गेह ॥
राम संग सिय रहहिं सुखारी । पुरपरिजनगृहसुरति बिसारी ॥
क्षणक्षणपियाबिधुबदन निहारी । प्रमुदितमनहुँ चकोरकुमारी ॥
नाह नेह नित बढ़त बिलोकी । हर्षितरहतिदिवसजिमिकोकी ॥
सियमन रामचरण अनुरागा । अवधसहससमबनप्रियलागा ॥
पर्णकुटी प्रिय पीतम संगा । प्रिय परिवार कुरंग विहंगा ॥
सासुश्वशुरसममुनितियमुनिवर । अशनअमियसमकन्दमूलफर ॥
नाथ साथ साथरी सुहाई । मयनशयनशतसमसुखदाई ॥
लोकप होहिं बिलोकत जासू । तेहिकिमिमोहै बिषयबिलासू ॥
दो० सुमिरतरामहिंतजाहिंजनतृणसमबिषयबिलास ।
रामप्रियाजगजननिसिय कछुन आचरजतास ॥
सीयलषणजेहिबिधिसुखलहहीं । सोइरघुनाथकरैं जोइकहहीं ॥
कहहिं पुरातन कथाकहानी । सुनहिंलषणसियअतिसुखमानी ॥

जबजबराम अवध सुधि करहीं । तबतबबारि बिलोचनभरहीं॥
सुमिरि मातुपितु परिजनभाई । भरत सनेह शील सेवकाई॥
कृपासिन्धु प्रभु होहिं दुखारी । धीरजधरहिं कुसमयबिचारी॥
लखिसियलषणबिकलह्वै जाहीं ।जिमिपुरुषहिंअनुसरपरिछाहीं॥
प्रियाबन्धुगति लखिरघुनन्दन । धीर कृपालु भक्तउर चन्दन॥
लगेकहन कछुकथा पुनीता । सुनिसुखलहहिंलषणअरुसीता॥

दो० रामलषण सीता सहित सोहत पर्णनिकेत ।
जिमिबासव बस अमरपुर शचीजयन्तसमेत ॥

जुगवहिंप्रभुसियअनुजहि कैसे । पलकबिलोचन गोलक जैसे॥
सेवहिं लषण सीय रघुबीरहि । जिमिअबिवेकीपुरुषशरीरहि॥
इहिबिधिप्रभु बनबसहिंसुखारी । खगमृगसुरतापस हितकारी॥
कहेउँ रामबन गवन सुहावा ।सुनहुसुमन्तअवधजिमिआवा॥
फिरेउनिषाद प्रभुहि पहुँचाई । सचिवसहितरथ देखेउआई॥
मन्त्रीबिकल बिलोकि निषादू ।कहिनसकहिंजसभयउबिषादू॥
राम राम सिय लषण पुकारी । परेउधरणितलब्याकुलभारी॥
देखिदक्षिणदिशिहयहिहिनाहीं ।जिमिबिनुपङ्खबिहगअकुलाहीं॥

दो० नहिंतृणचरहिंनपियहिंजल मोचतलोचनबारि ।
ब्याकुलभयउ निषादगण रघुबरबाजि निहारि ॥

धरि धीरज तब कहहिं निषादू । अबसुमन्तपरिहरहु बिषादू॥
तुम पंडित परमारथज्ञाता । धरहुधीर लखिबाम बिधाता॥
बिविधकथा कहिकहिमृदुबानी । रथ बैठारेउ बरबस आनी॥
शोकशिथिल रथसकहिंनहांकी । रघुबर बिरह पीर उरबांकी॥
तरफराहिं मगु चलहिं न घोरे । बनमृग मनहुंआनिरथजोरे॥
अटकिपरहिंफिरिचितवहिंपीछे । रामबियोग बिकलदुखतीछे॥
जो कह राम लषण बैदेही । हिकरिहिकरिहयहेरहिं तेही॥
बाजिबिरहगतिकिमिकहिजाती ।बिनुमणिफणीबिकलजेहिभांती

दो० भये निषाद बिषाद बश देखत सचिवतुरंग ।

बोलि सुसेवक चारि तब दिये सारथी संग ।
गुह सारथिहि फिरेउ पहुँचाई । विरह विषादवरणिनहिं जाई ॥
चले अवधलै रथहि निषादा । होतक्षणहिंक्षणमगनविषादा ॥
शोचसुमन्त विकल दुख दीना । धिकजीवन रघुबीर बिहीना ॥
रहहि न अन्तहु अधमशरीरू । यशनलहेउ बिछुरतरघुबीरू ॥
भये अयश अघ भाजन प्राना । कौन हेतु नहिं करतपयाना ॥
अहह मन्दमति अवसरचूका । अजहुँ न हृदयहोत दुइटूका ॥
मींजिहाथ शिरधुनि पछिताई । मनहुँकृपण धनराशिगँवाई ॥
बिरद बांधि बर बीर कहाई । चले समर जनु सुभट पराई ॥
दो० विप्र विवेकी वेदविद सम्मत साधु सुजाति ।
जिमिधोखेमदपानकर सचिवशोचतेहिभांति ॥
जिमि कुलीनतियसाधुसयानी । पति देवता कर्म्म मन बानी ॥
रहै कर्म्म बश परिहरि नाहू । सचिवहृदयतिमिदारुणदाहू ॥
लोचन सजल दृष्टि भइ थोरी । सुनैनश्रवणबिकलमतिभोरी ॥
सूखहिं अधर लागि मुँहलाटी । जियनजाइउरअवध कपाटी ॥
विवरण भयउ न जाइ निहारी । मारेसि मनहुँ पितामहतारी ॥
हानि गलानिबिपुलमनब्यापी । यमपुरपन्थशोच जिमिपापी ॥
बचन न आव हृदय पछिताई । अवध काह मैं देखब जाई ॥
रामरहित रथ देखिहि जोई । सकुचिहिमोहिंबिलोकतसोई ॥
दो० धाइ पूंछिहहिंमोहिंजब बिकल नगरनरनारि ।
उतर देब मैं सबहि तब हृदय बज्र बैठारि ॥
पुंछिहहिं दीनदुखितसबमाता । कहब काहमैंतिनहिंबिधाता ॥
पुंछिहहिंजबहिं लषणमहतारी । कहिहौं कौन सँदेश सुखारी ॥
राम जननि जब आइहिधाई । सुमिर बच्छजिमिधेनुलवाई ॥
पूंछत उत्तर देब मैं तेही । गे बन राम लषण बैदेही ॥
जेइ पूंछिहि तेहि उत्तर देबा । जाइअवधअबयहसुख लेबा ॥
पूंछहिं जबहिं राउ दुख दीना । जीवन जासु राम आधीना ॥

देहौं उतर कवन मुँहलाई । आयउँ कुशल कुँवरपहुँचाई ॥
सुनत लषण सिय राम सँदेशू । तृणइव तन परिहरब नरेशू ॥
दो० हृदय न बिदरत पङ्कजिमि बिछुरत प्रीतमनीर ।
जानतहौं मोहिं दीन्हबिधि यह यातनाशरीर ॥
इहिबिधि करतपन्थपछितावा । तमसा तीर तुरत रथआवा ॥
बिदाकिये करि बिनय निषादू । फिरे पांयपरि बिकलबिषादू ॥
पैठत नगर सचिव सकुचाई । जनुमारेसि गुरुब्राह्मणगाई ॥
बैठि बिटप तर दिवस गँवावा । सांझसमय तेइअवसरआवा ॥
अवध प्रवेश कीन्ह अँधियारे । पैठु भवन रथ राखि दुआरे ॥
जिन्हजिन्हसमाचार सुनिपाये । भूप द्वार रथ देखन आये ॥
रथपहिचानि बिकललखिघोरे । गरहिंगातजिमि आतपबोरे ॥
नगर नारि नर ब्याकुल कैसे । निघटत नीर मीनगण जैसे ॥
दो० सचिव आगमन सुनतसब बिकलभईं रनिवास ।
भवन भयङ्कर लाग तेहि मानहुँ प्रेत निवास ॥
अति आरत सब पूंछहि रानी । उतरनआव बिकलभइबानी ॥
सुनै न श्रवणनयन नहिं सूझा । कहहुकहां नृपजेहितेहिबूझा ॥
दासिन्ह दीखसचिव बिकलाई । कौशल्या गृह गईं लिवाई ॥
जाइ सुमन्त दीख कस राजा । अमियरहितजनुचन्द्रबिराजा ॥
अशन न शयन बिभूषणहीना । परेउभूमितल निपटमलीना ॥
लेइ उसास शोच इहिभांती । सुरपुरते जनुखस्यो ययाती ॥
लेत शोचभरि क्षणक्षण छाती । जनुजरि पङ्ख परेउसम्पाती ॥
राम राम कह राम सनेही । पुनि कह राम लषणबैदेही ॥
दो० देखि सचिव जयजीवकहि कीन्हेंसि दण्डप्रणाम ।
सुनत उठे ब्याकुल नृपति कहु सुमन्त कहँराम ॥
भूप सुमन्त लीन्ह उर लाई । बूड़त कछु अधार जनु पाई ॥
सहित सनेह निकट बैठारी । पूंछत राउ नयन भरि बारी ॥
राम कुशल कहुसखा सनेही । कहँ रघुनाथ लषण बैदेही ॥

आनेहु फेरिकि बनहि सिधाये । सुनतसचिवलोचनजलछाये ॥
शोक विकल पुनि पूँछ नरेशू । कहु सिय राम लषणसंदेशू ॥
राम रूप गुण शील स्वभाऊ । सुमिरिसुमिरिउरशोचतराऊ ॥
राज्य सुनाइ दीन बन बासू । सुनिमनभयउ न हरषहरासू ॥
सो सुत बिछुरतगये न प्राना । को पापी जगमोहिं समाना ॥
दो० सखाराम सिय लषण जहँ तहांमोहिंपहुँचाउ ।
नाहित चाहत चलन अब प्राणकहौंसतभाउ ॥
पुनि पुनि पूँछत मंत्रिहि राऊ । प्रीतम सुवन सँदेश सुनाऊ ॥
सुनहु सखासोइ करिय उपाऊ । रामलषणसियवेगि दिखाऊ ॥
सचिव धीरधरिकहि मृदुबानी । महाराज तुम पण्डितज्ञानी ॥
बीर सुधीर धुरन्धर देवा । साधुसमाज सदा तुम सेवा ॥
जन्ममरणसबदुखसुखभोगा । हानिलाभप्रियमिलनबियोगा ॥
काल कर्म्म बश होहिं गुसाईं । बरबस राति दिवसकी नाईं ॥
सुख हर्षहिंजड़ दुख बिलखाहीं । दोउसमधीरधराहिं मनमाहीं ॥
धीरज धरहु विवेक बिचारी । छांड़ियशोचसकलहितकारी ॥
दो० प्रथम बास तमसा भयउ दूसर सुरसरितीर ।
न्हाय रहे जलपानकरि सिय समेत दोउबीर ॥
केवट कीन्ह बहुत सेवकाई । सो यामिनि शृँगवेर गँवाई ॥
होत प्रात बट क्षीर मँगावा । जटामुकुट निजशीशबनावा ॥
राम सखा तब नाव मँगाई । प्रिया चढ़ाइ चले रघुराई ॥
लषण धरे धनु बाण बनाई । आपुचढ़े प्रभु आयसु पाई ॥
बिकलबिलोकि मोहिं रघुबीरा । बोले मधुरबचन धरिधीरा ॥
तात प्रणाम तात सन कहेऊ । बार बार पद पंकज गहेऊ ॥
करब पायँ परि विनय बहोरी । तातकरियजनि चिन्तामोरी ॥
बन मग मंगल कुशल हमारे । कृपा अनुग्रह पुण्य तुम्हारे ॥
छं० तुम्हरे अनुग्रह तात कानन जात सब सुख पाइहौं ।
प्रतिपालिआयसुकुशलदेखन पायँपुनि फिरिआइहौं ॥

जननी सकलपरितोषकरि परिपायँकरि विनतीघनी।
तुलसीकरेहुसोइयत्नजेहिविधि कुशलरहकोशलधनी ॥
सो० गुरुसन कहब सँदेश बार बार पद पद्मगहि।
करब सोईउपदेश जेहिनशोचमोहिं अवधपति ॥
पुरजन परिजन सकलनिहोरी। तात सुनायहु विनती मोरी॥
सोइ सब भांति मोर हितकारी। जाते रह नरनाह सुखारी॥
कहब सँदेश भरत के आये। नीति न तजब राजपदपाये॥
पालहु प्रजहि कर्म मन बानी। सेयहु मातु सकलसमजानी॥
और निबाहब भायप भाई। करि पितुमातुसुजनसेवकाई॥
तात भांति तेहि राखब राऊ। शोचमोरजेहिकरहिं न काऊ॥
लषणकहेउ कछुबचन कठोरा। बरजिरामपुनिमोहिं निहोरा॥
बारबार निज शपथ दिवाई। कहब न तातलषणलरिकाई॥
दो० कहिप्रणामकछुकहनलिय सियभइशिथिलसनेह।
थकित बचन लोचन सजल पुलकपल्लवित देह ॥
तेहि अवसर रघुबर रुख पाई। केवट पारहि नाव चलाई॥
रघुकुलतिलक चले इहि भांती। देखेउँठाढ़कुलिशधरि छाती॥
मैं आपन किमि कहब कलेशू। जियत फिरेउँलै रामसँदेशू॥
असकहिसचिवबचनरहिगयऊ। हानिगलानिशोचबशभयऊ॥
सुनत सुमंत्र बचन नरनाहू। परेउ धरणि उर दारुणदाहू॥
तलफत बिषम मोहमन मापा। मांजामनहुँ मीनकहँ ब्यापा॥
करि बिलाप सबरोवहिं रानी। महाबिपतिकिमिजाइबखानी॥
सुनिविलाप दुखहू दुखलागा। धीरजहूकर धीरज भागा॥
दो० भयो कोलाहल अवध अति सुनि नृपराउरशोर।
विपुल विहग बन परेउनिशि मानहुँकुलिशकठोर॥
प्राणकंठगत भयउ भुआलू। मणिविहीनाजिमिब्याकुलब्यालू॥
इन्द्रियसकल विकलभइँभारी। जनुसरसरसिजबनबिनुबारी॥
कौशल्या नृप दीख मलीना। रविकुल रविअथयेजनदीना॥

उर धरि धीर राम महतारी । बोलीं बचन समय अनुहारी ॥
नाथसमुझिमनकरिय बिचारू । राम वियोग पयोधि अपारू ॥
कर्णधार तुम अवधि जहाजू । चढ़ेउसकलप्रियपथिकसमाजू ॥
धीरज धरिय तो पाइय पारू । नाहिंत बूड़िहि सब परिवारू ॥
जोजियधरियबिनय पियमोरी । रामलषणसिय मिलब बहोरी ॥
दो० प्रियावचनमृदुसुनतनृप चितयउआंखिउघारि ।
तलफत मीनमलीनजनु सींचत शीतल बारि ॥
धरि धीरज उठि बैठु भुआलू । कहु सुमन्त्र कहँरामकृपालू ॥
कहां लषण कहँ राम सनेही । कहँ प्रिय पुत्र बधू बैदेही ॥
बिलपत राउ बिकलबहुभांती । भइयुगसरिस सिरातिनराती ॥
तापस अन्ध शाप सुधि आई । कौशल्यहि सब कथा सुनाई ॥
भयउ बिकलबरणत इतिहासा । रामरहित धिकजीवनश्वासा ॥
सो तनु राखि करब मैं काहा । जेइ न प्रेमप्रण मोरनिबाहा ॥
हा रघुनन्दन प्राण पिरीते । तुमबिनजियतबहुतादिनबीते ॥
हा जानकी लषण हा रघुबर । हापितुहितचितचातकजलधर ॥
दो० राम राम कहि राम कहि राम राम कहि राम ।
तनु परिहरि रघुबर बिरह राउ गये सुरधाम ॥
जियन मरण फलदशरथपावा । अण्डअनेकअमलयशछावा ॥
जियत राम बिधुबदन निहारी । राम बिरहमरि मरणसँवारी ॥
शोक बिकल सब रोवहिं रानी । रूप शील बल तेजबखानी ॥
करहिं बिलाप अनेक प्रकारा । परहिं भूमितल बारहिंबारा ॥
बिलपहिंबिकलदास अरुदासी । घरघर रुदनकरहिंपुरबासी ॥
अथयउ आजु भानुकुल भानू । धर्म्मअवधि गुणरूपनिधानू ॥
गारी सकल केकयिहि देहीं । नयनविहीनकीन्ह जगजेहीं ॥
इहिबिधि बिलपतरैनिबितानी । आये सकल महामुनिज्ञानी ॥
दो० तब बशिष्ठमुनि समयसम कहिअनेक इतिहास ।
शोक निवारेउ सकलकर निजबिज्ञान प्रकास ॥

तेल नावभरि नृप तनु राखा । दूत बुलाइ बहुरिअसभाखा ॥
धावहु बेगि भरत पहँ जाहू । नृपसुधिकतहुँकहहुजनिकाहू ॥
इतनै कहेउ भरत सन जाई । गुरु बुलाइ पठये दोउभाई ॥
सुनि मुनिआयसु धावन धाये । चले बेगि बरबाजि लजाये ॥
अनरथ अवध अरंभेउजबते । कुशकुनहोहिं भरतकहँ तबते ॥
देखहिं राति भयानक सपना । जागिकरहिंबहुकोटिकलपना ॥
विप्र जेंवाइ देहिं बहु दाना । शिवअभिषेककरहिंबिधिनाना ॥
मांगहिं हृदय महेश मनाई । कुशलमातुपितुपरिजन भाई ॥

दो० इहिबिधि शोचत भरत मन धावन पहुँचे जाइ ।
गुरुअनुशासन श्रवणसुनि चले गणेशमनाइ ॥

चले समीर बेग हय हांके । लांघत सरित शैलबनबांके ॥
हृदय शोचबड़ कछु न सोहाई । असजानहिंजिय जाउँ उड़ाई ॥
एक निमेष बरष सम जाई । इहिबिधि भरतनगर नियराई ॥
अशकुन होहिं नगर पैठारा । रटहिंकुभांति कुखेत करारा ॥
खरशृगाल बोलहिं प्रतिकूला । सुनिसुनिहोहि भरतउरशूला ॥
श्रीहत सर सरिता बनबागा । नगर बिशेष भयावनलागा ॥
खगमृग हयगयजाहिं न जोये । राम बियोग कुयोग बिगोये ॥
नगर नारि नर निपटदुखारी । मनहुँ सबनिसबसम्पतिहारी ॥

दो० पुरजनमिलहिंनकहहिंकछु गवहिंजोहारहिंजाहिं ।
भरत कुशलपूंछिनसकहिं भयबिषादमनमाहिं ॥

हाट बाट नहिं जाइ निहारी । जनुपुरदशदिशिलागिदवारी ॥
आवत सुतसुनिकेकयनन्दनि । हरषीरबिकुलजलरुहचन्दनि ॥
सजि आरती मुदित उठिधाई । द्वारहि भेंटि भवन लैआई ॥
भरत दुखित परिवार निहारी । मानहुँ तुहिनबनजबनमारी ॥
कैकेयी हर्षित इहि भांती । मनहुँमुदितदवलाइ किराती ॥
सुतहि सशोच देखि मन मारे । पूंछति नैहर कुशल हमारे ॥
सकल कुशलकहभरत सुनाई । पूंछीनिजकुल कुशलभलाई ॥

कहु कहँ तात कहां सब माता । कहँसियरामलखणप्रियभ्राता॥
दो० सुनि सुतबचन सनेहमय कपट नीर भरिनैन ।
भरत श्रवणमनशूल सम पापिनि बोली बैन ॥
तात बात मैं सकल सवाँरी । भइ मंथरा सहाय विचारी ॥
कछुककाज विधिबीचबिगारेउ । भूपति सुरपतिपुरपगुधारेउ ॥
सुनत भरतभये विवशविषादा । जनु सहमेउ करिकेहरिनादा ॥
तात तात हा तात पुकारी । परेउ भूमितलव्याकुलभारी ॥
चलत न देखन पायउँ तोहीं । तात न रामहिंसौंपेउ मोहीं ॥
बहुरि धीर धरि उठे सँभारी । कहु पितु मरणहेतुमहतारी ॥
सुनि सुत बचन कहत कैकेई । मर्म्म पाछि जनु माहुरदेई ॥
आदिहिते सब आपनि करणी । कुटिलकठोरमुदितमनबरणी॥
दो० भरतहिबिसरेउ पितुमरण सुनत राम बनगौन ।
हेतु अपनपुनिजान जिय थकित रहे धरिमौन ॥
बिकलबिलोकिसुतहिसमुझावति । मनहुँजरेपरलोनलगावति ॥
तात राउ नहिं शोचन योगू । बिढ़इसुकृतयशकीन्हेउभोगू ॥
जीवत सकल जन्म फलपाये । अन्तअमरपतिसदनसिधाये॥
अस अनुमानि शोच परिहरहू । सहित समाजराज्यपुरकरहू ॥
सुनिसुठि सहमेउ राजकुमारा । पाके क्षत जनु लाग अँगारा ॥
धीरज धरि भरि लेहिंउसासा । पापिनिसबहिभांतिकुलनासा॥
जोपै कुरुचि रही असि तोहीं । जन्मत काहे न मारेसिमोहीं ॥
पेड़ काटि तैं पल्लव सींचा । मीनजियनहितबारिउलीचा ॥
दो० हंस बंस दशरथ जनक राम लषण से भाइ ।
जननी तू जननी भई विधिते कहा बसाइ ॥
जबते कुमति कुमत मनठयऊ । खंड खंड ह्वै हृदय न गयऊ ॥
वर मांगत मन भइ नहिं पीरा । जरिन जीह मुंहपरेउ न कीरा॥
भूपप्रतीतितितोरि किमिकीन्ही । मरणकालबिधिमतिहरिलीन्ही॥
बिधिहुननारिहृदयगतिजानी । सकलकपटअघअवगुणखानी॥

सरल सुशील धर्म्म रत राऊ। सोकिमिजाननहितीयस्वभाऊ॥
अस को जीव जन्तु जगमाहीं। जेहिरघुनाथ प्राणप्रियनाहीं॥
भे अति अहित रामतेउतोहीं। कोतूअहसि सत्यकहु मोहीं॥
जोहसिसोहसि मुंहमसि लाई। आंखि ओट उठिबैठहिजाई॥
दो० राम बिरोधी हृदयते प्रकट कीन्ह विधि मोहिं।
मोसमानको पातकी बादि कहौं कछु तोहिं॥
सुनि शत्रुघ्न मातु कुटिलाई। जरहिं गातरिसकछुनबसाई॥
तेहि अवसर कुबरी तहँ आई। वसन विभूषणबिबिधबनाई॥
लखि रिसभरेउलषणलघु भाई। बरतअनल घृतआहुतिपाई॥
हुमुकि लात तकि कूबर मारा। परिमुंहभरिमहिकरतपुकारा॥
कूबर टूटेउ फूट कपारू। दलितदशनमुखरुधिरप्रचारू॥
आहि दइय मैं काह नशावा। करतनीकफलअनइसपावा॥
पुनिरिपुहनलखिनखशिखखोंटी। लगे घसीटनधरिधरि झोंटी॥
भरत दयानिधि दीन्हछुड़ाई। कौशल्या पहँगे दोउ भाई॥
दो० मलिन बसनविवरणविकल कृशशरीरदुखभार।
कनक कमल बरबेलिबन मानहुँहनी तुषार॥
भरतहिं देखिमातु उठि धाई। मूर्छित अवनिपरी झँवआई॥
देखत भरत बिकलभये भारी। परे चरण तनुदशा बिसारी॥
मातु तात कहँ देहि दिखाई। कहँसियरामलषणदोउभाई॥
केकयिकत जनमी जग माँझा। जो जनमीतौभइकिनबाँझा॥
कुल कलंकजेहिंजनमेउ मोही। अपयशभाजनप्रियजनद्रोही॥
कोत्रिभुवनमोहिंसरिसअभागी। गतिअसितोरिमातुजेहिलागी॥
पितु सुरपुर बन रघुकुलकेतू। मैं केवल सब अनरथ हेतू॥
धिक मोहिंभयउँवेणुवन आगी। दुसह दाह दुखदूषणभागी॥
दो० मातु भरतके वचन मृदु सुनिपुनि उठी सँभारि।
लिये उठाय लगाय उर लोचन मोचति वारि॥
सरल सुभाय माय उर लाये। अतिहितमनहुँरामफिरिआये॥

भेंटेउ बहुरि लखण लघु भाई । शोक सनेह न हृदयसमाई ॥
देखि स्वभाव कहत सबकोई । राममातु अस काहे न होई ॥
माता भरत गोद बैठारे । आंशु पोंछि मृदुबचनउचारे ॥
अजहुँबच्छबलि धीरज धरहू । कुसमयसमुझिशोकपरिहरहू ॥
जनिमानहु जियहानि गलानी । कालकर्मगतिअघटितजानी ॥
काहुहि दोष देहु जनि ताता । भामोहिंसबबिधिबामबिधाता ॥
जो ऐसेहु दुख मोहिं जियावा । अजहुँ कोजानै कातेहिभावा ॥

दो० पितु आयसु भूषणबसन तात तजे रघुबीर ।
बिस्मय हर्ष न हृदय कछु पहिरेबल्कलचीर ॥

मुख प्रसन्न मनराग न रोषू । सबकरसबबिधिकरिपरितोषू ॥
चलेबिपिनसुनिसियसँगलागी । रही न राम चरण अनुरागी ॥
सुनतहिलषणचले लगिसाथा । रहे न यतन किये रघुनाथा ॥
तब रघुपति सबही शिरनाई । चलेसंग सिय अरुलघुभाई ॥
रामलषणसिय बनहिं सिधाये । गई न संग न प्राण पठाये ॥
यह सबभा इन आंखिन आगे । तउ न तजातनुजीवअभागे ॥
म्वाहिं न लाज निज नेहनिहारी । राम सरिससुत मैं महतारी ॥
जियै मरै भल भूपति जाना । मोरहृदय शतकुलिश समाना ॥

दो० कौशल्या के वचन सुनि भरतसहित रनिवास ।
ब्याकुल बिलपतराजगृह मानहुँ शोक निवास ॥

बिलपहिं बिकलभरत दोउभाई । कौशल्या लिय हृदयलगाई ॥
भाँति अनेक भरत समुझाये । कहि विवेकवरवचनसुनाये ॥
भरतहु मातु सकल समुझाई । कहिपुराण श्रुतिकथासुनाई ॥
छलबिहीनशुचि सरलसुबाणी । बोले भरत जोरि युग पाणी ॥
जे अघ मातु पिता गुरु मारे । गाइ गोठ महि सुर पुरजारे ॥
जे अघतिय बालकबध कीन्हे । मीतमहीपति माहुर दीन्हे ॥
जे पातक उपपातक अहहीं । कर्मबचनमनभवकबिकहहीं ॥
ते पातक मोहिं होउ बिधाता । जो यह होइ मोरमतमाता ॥

दो० जे परिहरिहरिहरचरण भजहिं भूत गणघोर ।
तिनकीगति मोहिंदेउबिधि जोजननीमतमोर ॥
बेचहिं वेद धर्म्म दुहि लेहीं । पिशुन परावपाप कहिदेहीं ॥
कपटीकुटिल कलहप्रिय क्रोधी । वेद विदूषक विश्वविरोधी ॥
लोभी लम्पट लोल लवारा । जेताकहिं परधन परदारा ॥
पावउँ मैं तिनकी गतिघोरा । जो जननी यह सम्मतमोरा ॥
जे नहिं साधु संग अनुरागे । परमारथपथ विमुखअभागे ॥
जे न भजहिं हरिनरतनु पाई । जिनाहिंनहरिहरसुयशसुहाई ॥
तजि श्रुतिपन्थबामपथचलहीं । बंचकबिरचिवेष जगछलहीं ॥
तिनकी गति शंकरमोहिं देऊ । जननी जो यह जानौं भेऊ ॥
छं० मनवचनकर्म्म कृपायतन कर दास मैं सुनुमातुरी ।
उरबसतरामसुजान जानत प्रीतिअरु छलचातुरी ॥
असकहतलोचन बहतजलतनु पुलकनखलेखतमही।
हियलाय लियेबहोरिजननी जानिप्रभुपदरतसही ॥
दो० मातुभरतके वचनसुनि सांचे सरलसुभाय ।
कहतराम प्रियताततुम सदा बचन मनकाय ॥
रामप्राण ते प्राण तुम्हारे । तुम रघुपतिहिप्राणतेप्यारे ॥
विधु विषचुवै स्रवै हिम आगी । होइ वारिचर वारि विरागी ॥
भयेज्ञान बरु मिटै न मोहू । तुमरामहिंप्रतिकूल न होहू ॥
मततुम्हारअसजोजगकहहीं । सोसपनेहुँसुखसुगतिनलहहीं ॥
असकहिमातु भरत हियलाये । थनपयस्रवहिंनयनजलछाये ॥
करत बिलाप विपुलइहिभांती । बैठे बीति गई सब राती ॥
बामदेव बशिष्ठ मुनि आये । सचिवमहाजनसकलबुलाये ॥
मुनि बहु भांति भरत उपदेशे । कहि परमारथ वचन सुदेशे ॥
दो० तातहृदय धीरज धरहु करहु जो अवसर आजु ।
उठे भरतगुरुबचनसुनि करन कहेउसबकाजु ॥
नृपतनु वेद विहित अन्हवावा । परम विचित्र बिमानबनावा ॥

गहिपद भरतमातु सबराखी । रहीँराम दरशन अभिलाखी ॥
चन्दन अगर भार बहु आये । अमित अनेक सुगन्धसुहाये ॥
सरयु तीर रचि चिता बनाई । जनु सुरपुर सोपान सुहाई ॥
याविधिदाहक्रियासबकीन्हीं । बिधिवतन्हायतिलांजलिदीन्हीं ॥
शोधि सुस्मृति सब वेद पुराना । कीन्हभरतदशगात्र बिधाना ॥
जहँजस मुनिवरआयसु दीन्हीं । तहँतससहसभांतिसबकीन्हीं॥
भये विशुद्ध दिये सब दाना । धेनु बाजि गज बाहननाना ॥
दो० सिंहासन भूषण बसन अन्न धरणिधनधाम ।
दिये भरत लहि भूमिसुर भे परिपूरण काम ॥
पितुहित भरतकीन्हजसकरणी । सो मुखलाखजाइनाहिंबरणी॥
सुदिन शोधिमुनिवर तहँआये । सकलमहाजनसचिवबुलाये ॥
बैठे राजसभा सब जाई । पठये बोलि भरत दोउभाई ॥
भरत बशिष्ठ निकट बैठारे । नीति धर्म्ममय बचनउचारे ॥
प्रथम कथासब मुनिवर बरणी । केकयिकठिनकीन्हजसकरणी॥
भूप धर्म्म ब्रत सत्य सराहा । जेहितनुपरिहरि प्रेमनिबाहा ॥
कहत रामगुण शील सुभाऊ । सजल नयनपुलके मुनिराऊ ॥
बहुरिलषण सियप्रीतिबखानी । शोक सनेहमगनमुनिज्ञानी ॥
दो० सुनहु भरत भावी प्रबल बिलखि कहेउ मुनिनाथ।
हानिलाभ जीवन मरण यश अपयश बिधिहाथ॥
असबिचारि केहिदीजियदोषू । व्यर्थ काहि पर कीजियरोषू ॥
तात बिचार करहु मनमाहीं । शोचयोग दशरथ नृपनाहीं ॥
शोचिय बिप्रजोवेद बिहीना । तजिनिजधर्म्म विषयलवलीना॥
शोचिय नृपतिजु नीतिनजाना । जेहिनप्रजाप्रियप्राणसमाना ॥
शोचिय बैश्य कृपण धनवानू । जोनअतिथिशिवभक्तसुजानू ॥
शोचिय शूद्र बिप्र अपमानी । मुखरमानप्रिय ज्ञान गुमानी ॥
शोचिय पुनि पतिबंचक नारी । कुटिलकलहप्रिय इच्छाचारी ॥
शोचिय बटुनिजब्रत परिहरई । जोनहिं गुरुआयसुअनुसरई ॥

दो० शोचियगृही जो मोह बश करै धर्म्मपथत्याग।
शोचिय यतीप्रपञ्च रत बिगतबिबेक बिराग॥
बैषानस सोइ शोचन योगू। तप बिहाय जेहि भावै भो
शोचिय पिशुनअकारणक्रोधी। जननिजनकगुरुबन्धुबिरो
सबबिधि शोचियपरअपकारी। निज तनपोषक निर्दयभा
शोचनीय सबही बिधि सोई। जोनछांड़िछल हरिजन हो
शोचनीय नहिं कोशलराऊ। भुवनचारि दशप्रकटप्रभा
भयउ न अहै न होनिउहारा। भूप भरतजस पितातुम्हा
बिधिहरिहरसुरपतिदिशिनाथा। बरणहिंसबदशरथगुणगा
तीनिकाल त्रिभुवन जगमाहीं। भूरिभाग दशरथ समना
दो० कहहु तात केहि भांति कोउ करहि बड़ाई तासु।
रामलषण तुम शत्रुहन सरिससुवनसुतजासु॥
सब प्रकार भूपति बड़ भागी। बादिबिषादकरिय तेहिला
यह सुनिसमुझिशोचपरिहरहू। शिरधरि रायरजायसुकर
राव राज पद तुम कहँ दीन्हा। पिताबचनफुरचाहिय कीन्
तजेरामजेहि बचनहिं लागी। तन परिहरेउ राम बिरहा
नृपहिवचनप्रियनहिंप्रियप्राणा। करहुतातपितुबचनप्रमा
करहु शीश धरि भूप रजाई। है तुमकहँ सबभांति भल
परशुराम पितु आज्ञा राखी। मारी मातु लोक सबसा
तनय ययातिहि यौवनदयऊ। पितुआज्ञाअघअयशनभ
दो० अनुचित उचित बिचारतजि जेपालहिं पितु बैन।
ते भाजन सुख सुयश के बसहिं अमरपति ऐन॥
अवशि नरेशबचन फुर करहू। पालहु प्रजा शोकपरिह
सुर पुर नृप पाइहि परितोषू। तुमकहँसुकृतसुयशनहिं
वेद बिहित सम्मत सबहीका। जेहि पितु देइ सोपावै टी
करहु राज परिहरहु गलानी। मानहु मोर बचन हितजा
सुनि सुख लहब राम बैदेही। अनुचितकहब न पंडित

कौशल्यादि सकल महतारी । तेउ प्रजासुख होहिं सुखारी ॥
परमतुम्हार रामसबजानहिं । सोसबबिधितुमसनभलमानहिं ॥
सौंपेहु राज राम के आये । सेवा करेहु सनेह सुहाये ॥
दो० कीजिय गुरुआयसु अवशि कहहिंसचिव करजोरि ।
रघुपति आये उचित जस तबतस करब बहोरि ॥
कौशल्या धरि धीरज कहई । पूत पिता गुरुआयसु अहई ॥
सो आदरिय करिय हितमानी । तजियबिषादकालगतिजानी ॥
बन रघुपति सुरपुर नरनाहू । तुम इहिभांति तातकदराहू ॥
परिजनप्रजा सचिवकहअम्बा । तुमहींसुत सबकरअवलम्बा ॥
लखिबिधि बामकाल कठिनाई । धीरज धरहु मातु बलिजाई ॥
शिरधरिगुरु आयसुअनुसरहू । प्रजापालिपुरजन दुखहरहू ॥
गुरुकेबचनसचिवअभिनन्दन ।सुनतभरतहियजलरुहचन्दन॥
सुनी बहोरि मातु मृदु बानी । शील सनेह सरल रससानी ॥
छं० सानीसरल रस मातुबानी सुनिभरत ब्याकुलभये ।
लोचनसरोरुहस्रवतसींचत बिरहउर अंकुर नये ॥
सोदशादेखत समयतेहि बिसरीसबहिसुधिदेहकी ।
तुलसीसराहत सकलसादर सींवसहज सनेहकी ॥
सो० भरत कमल करजोरि धर्म्म धुरन्धर धीरधरि ।
बचनअमियजनुबोरि देत उचित उत्तरसबहिं ॥
मोहिं उपदेश दीन्ह गुरुनीका । प्रजासचिवसम्मतसबहीका ॥
मातुउचितपुनिआयसुदीन्हा । अवशिशीशधरिचाहियकीन्हा ॥
गुरुपितुमातुस्वामिहितबानी । सुनिसुनिमुदितकरियभलजानी॥
उचितकिअनुचितकियेबिचारू । धर्म्म जाइ शिरपातकभारू ॥
तुम तो देहु सरल सिख सोई । जो आचरतमोर हित होई ॥
यद्यपि यह समुझत हौं नीके । तदपिहोत परितोष न जीके ॥
अब तुम बिनयमोरिसुनिलेहू । मोहिंअनुहरत सिखावनदेहू ॥
उत्तर देउँ छमब अपराधू । दुखितदोषगुणगनहिंनसाधू ॥

दो० पितु सुरपुर सिय रामबन करन कहहु मोहिंराज ।
इहिते जानहु मोर हित कै आपन बड़ काज ॥
हित हमार सियपति सेवकाई । सो हरिलीन्ह मातुकुटिलाई
मैं अनुमानि दीख मन माहीं । आन उपाय मोर हितनाहीं
शोक समाज राजकेहि लेखे । लषणरामसिय पदबिनु देखे
बादि बसन बिनु भूषण भारू । बादिविरतिबिनु ब्रह्मबिचारू
सरुजशरीर बादि सब भोगा । बिनुहरिभक्तिबादि जपयोगा
जाय देह बिनु जीव सुखाई । बादि मोर सब बिनु रघुराई
जाउँ राम पहँ आयसु देहू । एकहि आंक मोर हित येहू
मोहिंनृपकरि आपनभलचहहू । सो सनेह जड़ता बश कहहू
दो० कैकेयी सुत कुटिल मति राम बिमुख गतलाज ।
तुमचाहत सुखमोहवश मोहिंसे अधम्मके राज ॥
कहौं सांच सब सुनिपतियाहू । चाहिय धर्म्म शील नरनाहू
मोहिं राज हठि देहहु जबहीं । रसा रसातल जाइहि तबहीं
मोहिं समानको पाप निवासी । जेहि लगि सीयरामबनवासी
राव राम कहँ कानन दीन्हा । बिछुरतगमनअमरपुरकीन्हा
मैं शठ सब अनरथ करहेतू । बैठि बात सब सुनउँ सचेतू
बिनु रघुबीर बिलोकिय बासू । रहेप्राण सहि जग उपहासू
राम पुनीत बिषय रस रूखे । लोलुप भूप भोग के भूखे
कहँलगि कहउँ हृदयकठिनाई । निदरिकुलिशजेहिलहीबड़ाई
दो० कारण ते कारजकठिन होयदोष नहिं मोर ।
कुलिश अस्थिते उपलते लोहकराल कठोर ॥
कैकेयी भव तन अनुरागे । पामर प्राण अघाइ अभागे
जो प्रिय बिरहप्राणप्रिय लागे । देखबसुनब बहुत अबआगे
लषण रामसियकहँ बन दीन्हा । पठइअमरपुरपतिहितकीन्हा
लीन्ह बिधवपन अपयश आपू । दीन्हेउप्रजहिं शोकसन्तापू
मोहिं दीन्ह सुख सुयशसुराजू । कीन्ह केकयी सबकर काजू

इहिते मोर कहा अवनीका । तेहिपर देन कहहु तुमटीका ॥
केकयिजठर जन्मि जगमाहीं । यह मोकहँकछुअनुचितनाहीं ॥
मोरिबात सब बिधिहि बनाई । प्रजा पांच कत करहु सहाई ॥
दो० ग्रहग्रहीत पुनि बातबश तेहि पुनि बीछीमार ।
ताहि पियाइय बारुणी कहहु कवन उपचार ॥
केकयि सुवन योग जग जोई । चतुरबिरंचि रचा मोहिं सोई ॥
दशरथ तनय राम लघु भाई । दीन्ह मोहिं बिधिबादिबड़ाई ॥
तुम सब कहहु कढ़ावनटीका । राय राज सबहीकहँ नीका ॥
उतर देउँ केहिबिधि केहिकेही । कहहु सुखेन यथा रुचिजेही ॥
मोहिं कुमातु समेत बिहाई । कहहुकहिहिको कीन्हभलाई ॥
मोहिं बिनुको सचराचर माहीं । जेहिसियराम प्राणप्रियनाहीं ॥
परम हानि सब कहँ बड़ लाहू । अदिन मोर नहिं दूषणकाहू ॥
संशय शील प्रेमबश अहहू । सबै उचितसब जोकछुकहहू ॥
दो० राम मातु सुठि सरल चित मोपर प्रेम विशेखि ।
कहहिं सुभाव सनेह बश मोरि दीनता देखि ॥
गुरु विवेक सागर जगजाना । जिनहिंविश्वकरबदरसमाना ॥
मोकहँतिलकसाजिसजिसोऊ । भाविधिविमुखविमुखसबकोऊ ॥
परिहरि राम सीय जग माहीं । कोउ न कहिहिमोरमतनाहीं ॥
सो मैं सुनब सहब सुख मानी । अन्तहु कीच तहांजहँपानी ॥
डर नमोहिं जगकहिहिकिपोचू । परलोकहु कर नाहिंनशोचू ॥
एकै बड़ उर दुसह दवारी । मोहिं लगिभे सियरामदुखारी ॥
जीवन लाहु लखण भल पावा । सबतजिरामचरण मनलावा ॥
मोर जन्म रघुबर बन लागी । झूठ काह पछिताउँअभागी ॥
दो० आपनि दारुण दीनता सबहिं कह्यों समुझाय ।
देखे बिन रघुवीर पद जियकी जरनि न जाय ॥
आन उपाय मोहिं नाहिं सूझा । को जियकीरघुबरबिनु बूझा ॥
एकहि आंक इहै मन माहीं । प्रातकाल चलिहौं प्रभुपाहीं ॥

यद्यपि मैं अनभल अपराधी । भइमोहिंकारणसकलउपाधी
तदपि शरणसन्मुखमोहिंदेखी । छमिसबकरिहहिंकृपाविशेखी
शील सकुचिसुठिसरलसुभाऊ । कृपा सनेह सदन रघुराऊ
अरिहुक अनभलकीन्हनरामा । मैं शिशु सेवक यद्यपिबामा
तुम पै पांच मोर भल मानी । आयसु आशिषदेहु सुबानी
जेहिसुनि बिनयमोहिंजनजानी । आवहिं बहुरि रामरजधानी
दो० यद्यपि जन्म कुमातुते मैं शठ सदा सदोस ।
आपन जानि न त्यागिहैं मोहिंरघुबीरभरोस ॥
भरतबचन सबकहँ प्रियलागे । राम सनेह सुधा सम पागे
लोग बियोग विषम दुखदागे । मंत्र सबीज सुनतजनु जागे
मातु सचिव गुरु पुर नर नारी । सकलसनेह बिकलभइँभारी
भरतहि कहहिं सराहि सराही । राम प्रेम मूरति तनु आही
तात भरत असकाहेन कहहू । प्राण समान रामप्रिय अहहू
जो पामर आपनि जड़ताई । तुमहिं सुगाइमातु कुटिलाई
सो शठ कोटिक पुरुष समेता । बसहिकल्पशतनरकनिकेता
अहिअघअवगुणमणिनहिंगहई । हरै गरल दुखदारिद दहई
दो० अवशि चलिय बन रामपहँ भरत मंत्रभलकीन्ह ।
शोकसिन्धु बूड़त सबहिं तुम अवलम्बन दीन्ह ॥
भा सब के मन मोद न थोरा । जनुघनधुनिसुनिचातकमोरा
चलत प्रात लगि निर्णयनीके । भरत प्राणप्रिय भे सबहीके
मुनिहिंवन्दि भरतहिं शिरनाई । चले सकल घर बिदाकराई
धन्य भरत जीवन जग माहीं । शील सनेह सराहत जाहीं
कहहिं परस्पर भा बड़ काजू । सकलचलैकर साजहिंसाजू
जेहि राखहिं घर रहु रखवारी । सो जानै जनु गरदन मारी
कोउ कहरहन कहियनहिंकाहू । को न चहै जगजीवन लाहू
दो० जरै सुसम्पति सदनसुख सुहृद मातुपितुभाइ ।
सन्मुखहोत जो राम पद करै न सहज सहाइ ॥

घरघर बाहन साजहिं नाना । हर्षहिं हृदय प्रभात पयाना ॥
भरत जाइघर कीन्ह बिचारू । नगर बाजिगजभवनभँडारू ॥
सम्पति सब रघुपतिकै आही । जोबिनुयतनचलौंतजिताही ॥
तौ परिणाम न मोरि भलाई । पापि शिरोमणि साइँदुहाई ॥
करहि स्वामि हित सेवक सोई । दूषण कोटि देइ किन कोई ॥
असबिचारि शुचि सेवक बोले । जे सपनेहुं निज धर्म न डोले ॥
कहि सब मर्म धर्म सब भाखा । जोजेहिलायक सो तहँराखा ॥
करि सब यतन राखि रखवारे । राममातु पहँ भरत सिधारे ॥

दो० आरत जननी जानि सब भरत सनेह सुजान ।
कहेउ सजावन पालकी सुखद सुखासन यान ॥

चक चकई इव पुर नर नारी । चलब प्रातउर आनँद भारी ॥
जागतसबनिशिभयउ बिहाना । भरतबुलाये सचिव सुजाना ॥
कहेउ लेहु सब तिलक समाजू । बनहिं देव मुनि रामहिंराजू ॥
बेगि चलहु सुनिसचिव जुहारे । तुरत तुरग रथनागसँवारे ॥
अरुन्धती अरु अग्नि समाजू । रथचढ़ि चलेप्रथम मुनिराजू ॥
विप्र वृन्द चढ़ि बाहन नाना । चले सकल तप तेजनिधाना ॥
नगरलोग सबसाजिसाजियाना । चित्रकूट कहँ कीन्ह पयाना ॥
शिविकासुभग न जाइँबखानी । चढ़िचढ़िचलत भईंसबरानी ॥

दो० सौंपिनगर शुचिसेवकन्ह सादर सबहिचलाइ ।
सुमिरिरामासिय चरण तब चलेभरतदोउभाइ ॥

म दरशहित सब नर नारी । जनुकरिकरिणिचलेतकिबारी ॥
न सियराम समुझिमनमाहीं । सानुज भरतपयादेहि जाहीं ॥
खि सनेह लोग अनुरागे । उतरिचले हयगज रथत्यागे ॥
ाइसमीप राखि निज डोली । राम मातु मृदु बाणी बोली ॥
त चढ़हु रथ बलि महतारी । होइहि प्रियपरिवार दुखारी ॥
म्हरेचलत चलिहिं सबलोगू । सकलशोककृशनाहिंमगयोगू ॥
र धरिबचनचरण शिरनाई । रथचढ़िचलतभये दोउभाई ॥

तमसा प्रथम दिवस करिवासू । दूसर गोमति तीर निवासू ॥
दो० पयअहारफलअशनइक निशिभोजनसबलोग ।
करत रामहित नेमब्रत परिहरि भूषण भोग ॥
सई तीर बसि चले बिहाने । शृङ्गबेर पुर सब नियराने ॥
समाचार सब सुने निषादा । हृदय बिचारकरै सविषादा ॥
कारण कवन भरत बन जाहीं । है कछु कपटभाव मनमाहीं ॥
जो पै जिय न होत कुटिलाई । तौ कस लीन्ह सङ्ग कटकाई ॥
जानहिं सानुज रामहिं मारी । करौं अकपटक राज सुखारी ॥
भरत न राजनीति उरआनी । तबकलङ्क अब जीवन हानी ॥
सकलसुरासुर जुरहिं जुझारा । रामहिं समर न जीतनहारा ॥
काआश्चर्य भरतअस करहीं । नहिंविषबेलिअमियफलफरहीं ॥
दो० असबिचारिगुह ज्ञातिसन कहेउ सजग सबहोहु ।
हथवासहु बोरहु तरणि कीजिय घाटा रोहु ॥
होइ सजग सब रोकहु घाटा । ठाटहु सकल मरण के ठाटा ॥
सन्मुखलोह भरत सन लेहू । जियत न सुरसरिउतरनदेहू ॥
समरमरण पुनि सुरसरितीरा । रामकाज क्षणभंगु शरीरा ॥
भरतभाइ नृप मैं जन नीचू । बड़े भाग अस पाइय मीचू ॥
स्वामिकाजु करिहौं रण रारी । लेइहौंसुयश भुवनदशचारी ॥
तजहुँ प्राण रघुनाथ निहोरे । दुहूं हाथ मुद मोदक मोरे ॥
साधु समाज न जाकर लेखा । रामभक्त महँ जासु न रेखा ॥
जाय जियत जगसो महिभारू । जननी यौवन बिटपकुठारू ॥
दो० विगत विषाद निषाद पति सबहिंबढ़ाय उछाहु ।
सुमिरि राम मांगेउ तुरत तरकस धनुष सनाहु ॥
बेगिहि भाइ सजहु संजोऊ । सुनि रजाय कदराय न कोऊ ॥
भले नाथ सब कहहिं सहर्षा । एकहि एक बढ़ावहिं कर्षा ॥
चले निषाद जुहारि जुहारी । शूर सकल रण रुचै न रारी ॥
सुमिरि राम पद पंकज पनहीं । भाथा बांधि चढ़ावहिं धनुहीं ॥

अंगुरी पहिरि कूँड़ि शिरधरहीं। फरसा बांस सेल समकरहीं॥
एक कुशल अति ओड़न खांड़े। कूदहिंगगनमनहुँछितिछांड़े॥
निज निज साज समाजबनाई। गुहरावतहिं जुहारहिं जाई॥
देखि सुभट सब लायक जाने। लै लै नाम सकल सनमाने॥
दो० भाइहुलावहु धोखजनि आजु काज बड़ मोहु।
सुनि सरोष बोलेसुभट बीर अधीर न होहु॥
राम प्रताप नाथ बल तोरे। करहिंकटकबिनुभटबिनुघोरे॥
जियत पाँवनहिं पीछे धरहीं। रुण्डमुण्डमयमेदिनि करहीं॥
दीख निषादनाथ भल टोलू। कहेउ बजाउ जुझाऊ ढोलू॥
इतना कहत छींक भइ बांये। कहेउशकुनियन्हखेतसुहाये॥
बूढ़ एक कह शकुन बिचारी। भरतहिमिलियनहोइहिरारी॥
रामहिं भरत मनावन जाहीं। शकुनकहै असविग्रह नाहीं॥
सुनि गुहकहै नीककह बूढ़ा। सहसाकरिपछिताहिंबिमूढ़ा॥
भरतस्वभाव शीलबिनु बूझे। बड़िहितहानिजानिबिनुजूझे॥
दो० गहहुघाट भटसिमिटसब लेउमर्म्म मिलिजाय।
बूझिमित्र अरि मध्यगति तबतस करब उपाय॥
लखब सनेह स्वभाव सुहाये। बैरप्रीति नहिं दुरत दुराये॥
अस कहिभेंट सजोवन लागे। कन्दमूल फल खगमृगमाँगे॥
मीन पीन पाठीन पुराने। भरिभरिभार कहारन आने॥
सकलसाजसजिमिलनसिधाये। मंगल मूल शकुन शुभपाये॥
देखि दूरिते कहि निज नामू। कीन्ह मुनीशहिंदण्डप्रणामू॥
जानि रामप्रिय दीन्ह अशीशा। भरतहिकहेउबुझाइ मुनीशा॥
रामसखा सुनिस्यन्दन त्यागा। चलेउतरिउमँगतअनुरागा॥
गाँव जाति गुह नांव सुनाई। कीन्ह जुहारिमाथमहि लाई॥
दो० करत दण्डवत देखितेहि भरतलीन्ह उरलाइ।
मनहुँ लषण सन भेंटभइ प्रेम न हृदय समाइ॥
भेंटे भरत ताहि अति प्रीती। लोग सिहाहिं प्रेमकै रीती॥

धन्य धन्य ध्वनि मंगल मूला। सुरसराहि तेहि बरषहिं फूला॥
लोकवेद सब भांतिहि नीचा। जासुछांह छुइलेइयसींचा॥
तेहिभरि अंकराम लघुभ्राता। मिलतपुलकपरिपूरितगाता॥
रामराम कहि जे जमुहाहीं। तिनहिं न पापपुंजसमुहाहीं॥
इहि तो राम लाय उर लीन्हा। कुल समेतजगपावनकीन्हा॥
करमनाश जल सुरसरि परई। तेहिको कहहुशीशनहिंधरई॥
उलटा नाम जपत जग जाना। बालमीकि भे ब्रह्म समाना॥
दो० श्वपच शवरखलयवनजड़ पांवरकोल किरात।
रामकहत पावन परम होत भुवन विख्यात॥
नहिंअचरजयुगयुगचलिआई। केहिन दीन्ह रघुबीर बड़ाई॥
राम नाम महिमा सुरकहहीं। सुनिसुनिअवधलोगसुखलहहीं॥
राम सखहिमिलि भरतसप्रेमा। पूछहिं कुशल सुमंगल क्षेमा॥
देखि भरत कर शील सनेहू। भानिषाद तेहिसमय विदेहू॥
सकुच सनेह मोद मन बाढ़ा। भरतहिंचितवतइकटक ठाढ़ा॥
धरिधीरज पद बन्दि बहोरी। बिनय सप्रेमकरत करजोरी॥
कुशल मूल पद पंकज पेखी। मैंतिहुँकालकुशलनिजदेखी॥
अबप्रभु परम अनुग्रह तोरे। सहित कोटिकुलमंगल मोरे॥
दो० समुझिमोरिकरतूति कुल प्रभुमहिमाजियजोइ।
जोन भजै रघुबीर पद जग बिधिबंचक सोइ॥
कपटी कायर कुमतिकुजाती। लोक वेद बाहिर सबभाँती॥
राम कीन्ह आपन जबहींते। भयउँ भुवनभूषण तबहींते॥
देखिप्रीति सुनि बिनय सुहाई। मिले बहोरि लषण लघुभाई॥
कहि निषाद निजनाम सुबानी। सादर सकल जुहारी रानी॥
जानि लषण समदेहिं अशीशा। जियहुसुखीसौलाख बरीशा॥
निरखि निषाद नगर नरनारी। भयेसुखी जनुलषणनिहारी॥
कहहिं लहेउ यह जीवन लाहू। भेंटेउ राम भाइ भरि बाहू॥
सुनि निषाद निजभाग बड़ाई। प्रमुदितमनलैचलेउ लिवाई॥

दो० सनकारे सेवक सकल चले स्वामि रुख पाइ ।
घरतरु तर सर बाग बन बास बनायउ जाइ ॥
शृंगबेर पुर भरत दीखजब । भेसनेहबशअंगशिथिलतब ॥
सोहत दिये निषादहि लागू । जनुतनु धरेबिनय अनुरागू ॥
यहि बिधि भरतसेन सब सङ्गा । दीखजाय जग पावनि गङ्गा ॥
रामघाट कहँ कीन्ह प्रणामा । भा मनमगन मिलेजनुरामा ॥
करहिं प्रणाम नगर नर नारी । मुदित ब्रह्ममय बारिनिहारी ॥
करि मज्जन माँगहिं करजोरी । रामचन्द्र पद प्रीति न थोरी ॥
भरत कहेउ सुरसरि तव रेनू । सकल सुखदसेवक सुरधेनू ॥
जोरि पाणि बर मांगौं एहू । सीय रामपद सहज सनेहू ॥
दो० इहिबिधि मज्जनभरतकरि गुरुअनुशासनपाइ ।
मातु नहानी जानि सब डेरा चले लिवाइ ॥
जहँ तहँ लोगन डेरा कीन्हा । भरत शोधसबही करलीन्हा ॥
गुरु सेवा करि आयसु पाई । राम मातु पहँगे दोउ भाई ॥
चरणचापि कहिकहि मृदुबानी । जननीसकलभरतसनमानी ॥
भाइहि सौंपि मातु सेवकाई । आप निषादहि लीन्हबुलाई ॥
चले सखा करसों कर जोरे । शिथिल शरीरसनेह न थोरे ॥
पूछत सखहि सो ठाँव दिखाऊ । नेकु नयन मनजरनिजुड़ाऊ ॥
जहँसिय रामलषण निशिसोये । कहत भरे जल लोचनकोये ॥
भरतबचन सुनिभयउ बिषादू । तुरत तहाँले गयउ निषादू ॥
दो० जहँ शिंशिपा पुनीत तरु रघुबरकिय बिश्राम ।
अतिसनेह सादरभरत कीन्ह्यउ दण्डप्रणाम ॥
कुश साथरी निहारि सुहाई । कीन्ह प्रणाम प्रदक्षिणलाई ॥
चरण रेख रज आंखिन लाई । बनैनकहतप्रीति अधिकाई ॥
कनक बिन्दु दुइ चारिक देखे । राखे शीश सीय सम लेखे ॥
सजल बिलोचन हृदयगलानी । कहत सखासनबचनसुबानी ॥
श्रीहत सीय बिरहद्युति हीना । यथा अवधनरनारि मलीना ॥

पिता जनक देउँ पटुतर केही । करतल भोगयोग जग जेही॥
श्वशुरभानुकुलभानु भुवालू । जेहि सिहातअमरावतिपालू॥
प्राणनाथ रघुनाथ गुसांई । जो बड़होत सो राम बड़ाई॥

दो० पति देवता सुतीय मणि सीय साथरी देखि ।
बिहरतहृदयनहहरिमम पवितेकठिनबिशेखि ॥

लालनयोग लषण लघु लोने । भेनभाइ अस अहहिं न होने॥
पुरजन प्रिय पितुमातु दुलारे । सिय रघुबीरहि प्राणपियारे॥
मृदुमूरति सुकुमार स्वभाऊ । तातिवायु तनुलागिनकाऊ॥
ते बनवसहिंबिपति सबभाँती । निदरे कोटिकुलिशयहछाती॥
रामजननि जगकीन्हउजागर । रूपशीलसुखसबगुणसागर॥
पुरजन परिजन गुरुपितुमाता । रामस्वभावसबहिं सुखदाता॥
बैरिउ राम बड़ाई करहीं । बोलनिमिलनि बिनयमनहरहीं॥
शारद कोटिकोटि शतशेशा । करिनसकहिंप्रभुगुणलवलेशा॥

दो० सुखस्वरूप रघुबंशमणि मंगल मोद निधान ।
तेसोवतकुशडासिमहि बिधिगति अतिबलवान॥

रामसुना दुख कानन काऊ । जीवनतरु जिमिजुगवतराऊ॥
पलकनयनफणिमणिजेहिभाँती।जुगवहिंजननिसकलदिनराती॥
ते अबफिरत बिपिन पदचारी । कन्द मूलफल फूल अहारी॥
धिक कैकेयि अमंगल मूला । भइसिप्राणप्रीतमप्रतिकूला॥
मैंधिकधिकअघउदधि अभागी । सबउतपातभयउजेहिलागी॥
कुलकलंक करिसृजेउ बिधाता । साइँद्रोहमोहिं कीन्हकुमाता॥
सुनि सप्रेम समुझाव निषादू । नाथकरियकतबादि बिषादू॥
राम तुमहिंप्रियतुमप्रियरामाहिं । यहनिरदोषदोषबिधिबामाहिं॥

छं० बिधिबामकी करणी कठिन जेहि मातुकीन्हीबावरी ।
तेहिरातिपुनिपुनिकरहिंप्रभु सादर सराहनरावरी ॥
तुलसीनतुमसो राम प्रीतम कहत हौं सौहें किये ।
परिणाममंगल जानि अपने आनिये धीरज हिये ॥

सो० अन्तरयामी राम सकुच सप्रेम कृपायतन ।
चलियकरिय विश्राम यहविचार दृढ़आनिमन ॥
सखावचन सुनि उर धरिधीरा । बासचले सुमिरत रघुबीरा ॥
यहसुधिपाइ नगर नर नारी । चलेविलोकन आरत भारी ॥
परदक्षिण करि करहिं प्रणामा । देहिंकेकयिहि खोरि निकामा ॥
भरि भरि बारि बिलोचन लेहीं । बाम बिधातहि दूषण देहीं ॥
एक सराहहिं भरत सनेहू । कोउकह नृपति निबाहेउनेहू ॥
निन्दहिंआपु सराहनिषादहि । को कहिसकै विमोहविषादहि ॥
इहिबिधि रातिलोगसबजागा । भा भिनुसार उतारा लागा ॥
गुरुहि सुनाव चढ़ाव सुहाई । नई नाव सब मातु चढ़ाई ॥
दण्डचारि महँ भा सब पारा । उतरिभरततबसबहिं सँभारा॥
दो० प्रातक्रियाकरि मातुपद वन्दि गुरुहिं शिरनाइ ।
आगेकिये निषादगण दीन्हेउ कटकचलाइ ॥
किये निषाद नाथ अगुआई । मातु पालकी सकल चलाई ॥
साथ बुलाइ भाइ लघु दीन्हा । बिप्रनसहित गवनगुरुकीन्हा ॥
आइ सुरसरिहि कीन्ह प्रणामू । सुमिरेलषण सहितसियरामू ॥
गवने भरत पयादेहि पाये । कोतलसंग जाहिं डोरिआये ॥
कहहिं सुसेवक बारहिंबारा । होइय नाथ अश्व असवारा ॥
राम पयादेहि पाँव सिधाये । हमकहँ रथगजबाजि बनाये ॥
शिरभरजाउँ उचितअसमोरा । सबते सेवक धर्म्म कठोरा ॥
देखि भरतगतिसुनि मृदुबानी । सबसेवकगण करहिं गलानी ॥
दो० भरत तीसरे पहर कहँ कीन्ह प्रवेश प्रयाग ।
कहतरामसियरामसिय उमँगिउमँगि अनुराग ॥
झलका झलकत पांयन कैसे । पंकज कोस ओस कण जैसे ॥
भरत पयादेहि आये आजू । देखिदुखितसुनिसकलसमाजू ॥
खबरि लीन्हसबलोग अन्हाये । कीन्ह प्रणाम त्रिवेणी आये ॥
सबिधि सितासितनीर अन्हाने । दिये दान महिसुर सन्माने ॥

देखत श्यामल धवल हिलोरे । पुलक शरीर भरत करजोरे ॥
सकल कामप्रद तीरथ राऊ । वेदविदित जगप्रकटप्रभाऊ ॥
माँगों भीख त्यागि निजधरमू । आरतकाह न कराहिं कुकरमू ॥
असजियजानिसुजानिसुदानी । सकलकरौ जगयाचकबानी ॥
दो० अर्थ न धर्म न कामरुचि गति न चहौं निर्वान ।
जन्म जन्म रति रामपद यहबरदान न आन ॥
जानहिं राम कुटिलकरि मोही । लोग कहैं गुरु साहब द्रोही ॥
सीताराम चरण रति मोरे । अनुदिन बढ़ौ अनुग्रहतोरे ॥
जलदजन्मभरि सुरति बिसारे । याचत जलपवि पाहनडारे ॥
चातक रटनि घटे घटि जाई । बढ़े प्रेम सबभाँति भलाई ॥
कनकहि बान चढ़े जिमि दाहे । तिमिप्रीतम पदनेम निबाहे ॥
भरत बचनसुनि मांझ त्रिबेनी । भै मृदुवाणि सुमंगल देनी ॥
तातभरत तुमसबबिधि साधू । रामचरण अनुराग अगाधू ॥
बादि गलानि करहु मनमाहीं । तुमसमरामहिंप्रियकोउनाहीं ॥
दो० तनु पुलके हिय हर्षिसुनि बेणिबचन अनुकूल ।
भरतधन्यकहि धन्यकहि नभ सुर बर्षहिं फूल ॥
प्रमुदित तीरथराज निवासी । बैखानस बटु गृही उदासी ॥
कहहिं परस्पर मिलिदशपाँचा । भरतसनेहशील शुचिसाँचा ॥
सुनत राम गुण गान सुहाये । भरद्वाज मुनिवर पहँ आये ॥
दण्ड प्रणाम करत मुनि देखे । मूरतिवन्त भाग निज लेखे ॥
धाइ उठाइ लाइ उर लीन्हे । दीन्ह अशीश कृतारथकीन्हे ॥
आसन दीन्ह नाइ शिर बैठे । चहतसकुचिगृह जनुभरिपैठे ॥
मुनि पूछब कछु यह बड़शोचू । बोलेऋषि लखिशीलसँकोचू ॥
सुनहु भरत हम सबसुधिपाई । बिधिकरतबपर कछुनबसाई ॥
दो० तुमगलानि जियजनिकरहु समुझिमातुकरतूति ।
तात केकयिहि दोषनाहिं गई गिरामतिधूति ॥
यहउ कहतभल कहहिंनकोऊ । लोक बेद बुध सम्मत दोऊ ॥

तात तुम्हार विमल यशगाई । पाइहि लोकहु वेद बड़ाई ॥
लोकवेद सम्मत बिधिकहई । जेहिपितु राज्यदेइ सो लहई ॥
राउ सत्यव्रत तुमहिं बुलाई । देत राज्यसुख धर्म बड़ाई ॥
राम गमन बन अनरथमूला । जोसुनिसकलविश्वभइ शूला ॥
सो भावीबश रानि अयानी । करिकुचालिअन्तहुपछितानी ॥
तहँउँ तुम्हार अल्प अपराधू । कहैसोअधम अयानअसाधू ॥
करतेहु राज्य तुमहिं नहिंदोषू । रामहिं होत सुनत सन्तोषू ॥
दो० अबअतिकीन्हेउभरतभल तुमहिंउचितमतएहु ।
सकल सुमंगलमूलजग रघुबर चरण सनेहु ॥
सोतुम्हार धन जीवन प्राना । भूरिभागको तुमहिं समाना ॥
सोतुम्हार आचरज न ताता । दशरथसुवन रामलघुभ्राता ॥
सुनहु भरत रघुपति मनमाहीं । प्रेमपात्र तुमसम कोउनाहीं ॥
लषणराम सीतहि अतिप्रीती । निशिसबतुमहिंसराहतबीती ॥
जानामर्म्म अन्हात प्रयागा । मगनहोहिं तुम्हरे अनुरागा ॥
तुमपर अस सनेह रघुबरके । सुखजीवनजगजसजड़नरके ॥
यह न अधिक रघुबीर बड़ाई । प्रणत कुटुम्बपाल रघुराई ॥
तुमतो भरत मोरमत एहू । घरे देह जनु राम सनेहू ॥
दो० तुमकहँ भरत कलंक यह हमसबकहँ उपदेश ।
रामभक्तिरस सिद्धि हित भायहिसमयगणेश ॥
नवविधु बिमलतात यशतोरा । रघुबर किङ्करकुमुद चकोरा ॥
उदयसदा अथइय कबहूँना । घटहिनजगनभदिनदिनदूना ॥
कोक त्रिलोकप्रीतिअतिकरहीं । प्रभुप्रतापरबिछबिहिनहरहीं ॥
निशिदिन सुखदसदासबकाहू । ग्रसिहिन कैकयि करतबराहू ॥
पूरण राम सुप्रेम पियूषा । गुरु अपमान दोषनहिं दूषा ॥
रामभक्ति अबअमिय अघाहू । कीन्हेउ सुलभ सुधाबसुधाहू ॥
भूपभगीरथ सुरसरि आनी । सुमिरत सकलसुमङ्गलखानी ॥
दशरथगुणगणबरणिन जाहीं । अधिककहाजेहिसमजगनाहीं ॥

दो० जासु सनेह सकोचबश राम प्रकट भे आय ।
जेहरिहियनयनन्हकबहुँ निरखेनाहिं अघाय ॥
कीरति बिधु तुमकीन्ह अनूपा । जहँ बसराम प्रेम मृगरूपा ॥
तात गलानि करहु जियजाये । डरहु दरिद्रहिं पारस पाये ॥
सुनहु भरत हमझूंठ न कहहीं । उदासीन तापस बन रहहीं ॥
सब साधनकर सुफल सुहावा । लषणरामसिय दरशनपावा ॥
तेहिफलकरफल दरशतुम्हारा । सहितप्रयाग सुभाग हमारा ॥
भरत धन्य तुमजगयशलयऊ । कहिअसप्रेममगनमुनिभयऊ ॥
सुनिमुनिबचन सभासदहरषे । साधुसराहि सुमनसुर बरषे ॥
धन्यधन्य ध्वनि गगनप्रयागा । सुनिसुनिभरतमगनअनुरागा ॥
दो० पुलकगात हियराम सिय सजल सरोरुह नैन ।
करि प्रणाम मुनिमंडलिहि बोले गदगद बैन ॥
मुनिसमाज अरु तीरथराजू । सांचेहुशपथ अघाइ अकाजू ॥
इहिथलजो कछुकहिय बनाई । इहिसमनहिंकछुअघअधमाई ॥
तुम सरवज्ञ कहौं सतिभाऊ । उर अन्तरयामी रघुराऊ ॥
म्वहिंनमातु करतब करशोचू । नहिंदुखजियजगजानहिंपोचू ॥
नाहिंन डर बिगरहि परलोकू । पितहु मरेकर नाहिंन शोकू ॥
सुकृतसुयशभरि भुवन सुहाये । लक्ष्मण रामसरिस सुतपाये ॥
रामबिरह तजितनु क्षणभंगू । भूपशोचकर कवन प्रसंगू ॥
रामलषण सिय बिनुपगपनहीं । करिमुनिवेष फिरहिंबनबनहीं ॥
दो० अजिन बसनफलअशन महि शयनडासि कुशपात ।
बसितरुतरनित सहत दुख हिम तप बरषाबात ॥
यहदुखदाह दहै नित छाती । भूँख न बासर नींद न राती ॥
यह कुरोगकर ओषधि नाहीं । शोधेउँ सकल बिश्वमनमाहीं ॥
मातुकुमति बढ़ई अघमूला । तेहिहमार हितकीन्ह बसूला ॥
कलिकुकाठकर कीन्ह कुयन्त्रू । गाड़िअवधिपाढ़िकठिनकुमन्त्रू ॥
मोहिंलगियहकुठाट जेहिठाटा । घालिसि सबजग बारहबाटा ॥

मिटै कुयोग राम फिरि आये । बसहिंअवधनहिंआन उपाये ॥
भरतबचन सुनिसुनिसुखपाई । सबहिंकीन्ह बहुभांति बड़ाई ॥
तातकरहुजनि शोच बिशेखी । सबदुख मिटिहिरामपददेखी ॥
दो० करिप्रबोध मुनिवर कहेउ अतिथि प्राणप्रिय होहु ।
कन्दमूल फल फूल हम देहिं लेहु करि छोहु ॥
सुनिमुनिवचन भरतहियशोचू । भयउकुअवसरकठिनसकोचू॥
जानिगरुअ गुरु गिराबहोरी । चरण बन्दि बोले करजोरी ॥
शिरधरि आयसुकरियतुम्हारा । परमधर्म यह नाथ हमारा ॥
भरतबचन मुनिवर मन भाये । शुचिसेवकशिषनिकटबुलाये ॥
चाहिय कीन्ह भरत पहुनाई । कन्दमूल फल आनहु जाई ॥
भलेनाथकहितिन्हशिरनाये । प्रमुदित निजनिज काजसिधाये॥
मुनिहि शोचपाहुन बड़नेवता । तसपूजा चाहिय जसदेवता ॥
सुनि ऋधिसिधिअणिमादिकआईं । आयसुहोइसोकरैंगुसाईं ॥
दो० राम बिरह व्याकुल भरत सानुज सकल समाज ।
पहुनाई करि हरहु श्रम कहेउ मुदित मुनिराज ॥
ऋधिसिधिशिरधरमुनिवरबानी।बड़भागिनिआपुहिअनुमानी॥
कहहिंपरस्पर सिधिसमुदाई । अतुलितअतिथिरामलघुभाई ॥
मुनिपदबन्दि करियसोइआजू । होइ सुखी सबराजसमाजू ॥
असकहि रुचिररचे गृहनाना । जे बिलोकिबिलखाहिं बिमाना ॥
भोग बिभूति भूरि भरि राखे । देखतजिनहिंअमरअभिलाखे॥
दासी दास साज सब लीन्हे । जुगवतरहहिं मनहिंमनदीन्हे ॥
सबसमाजसजिसिधिपलमाहीं। जे सुखसपनेहुँ सुरपुरनाहीं ॥
प्रथमहिं बास दिये सब केही । सुन्दर सुखद यथारुचिजेही ॥
दो० बहुरिसपरिजन भरत कहँ ऋषिआयसु असदीन्ह ।
विधिविस्मयदायक विभव मुनिवर तपबलकीन्ह ॥
मुनिप्रभाव जबभरत बिलोका । सबलघुलगे लोकपतिलोका ॥
सुखसमाज नहिं जाइ बखानी । देखत बिरतिबिसारहिंज्ञानी ॥

आसनशयन सुबसन बिताना । बनबाटिका बिहगमृगनाना
सुरभिफूलफलअमियसमाना । विमलजलाशयविविधविधाना
अशनपान शुचिअमितअमीसे । देखि लोकसकुचात जमीसे
सुर सुरभी सुरतरु सबहीके । लखिअभिलाषसुरेशशचीके
ऋतु बसन्तबह त्रिबिधबयारी । सबकहँ सुलभ पदारथचारी
स्रकचन्दन बनितादिक भोगा । देखि हर्ष विस्मयसबलोगा
दो० सम्पति चकई भरत चक मुनिआयसु खेलवार ।
तेहि निशि आश्रम पींजरा राखे भा भिनुसार ॥
कीन्ह निमज्जन तीरथराजा ।नाइमुनिहिशिरसहितसमाजा
ऋषिआयसुअशीश शिरराखी । करिदंडवत बिनय बहुभाखी
पथ गथ कुशलसाथसबलीन्हे । चले चित्रकूटहि चितदीन्हे
राम सखा कर दीन्हे लागू । चलत देहधरि जनुअनुरागू
नहिं पदत्राण शीश नहिं छाया । प्रेम नेम ब्रत धर्म्म अमाया
लषण राम सिय पंथ कहानी । पूंछतसखहिकहत मृदुबानी
रामबास थल बिटप बिलोके । उर अनुराग रहतनहिं रोके
देखि दशा सुर वर्षहिं फूला । भइमृदुमहि मगुमंगलमूला
दो० किये जाहिं छायाजलद सुखद बहत बरबात ।
तसमगुभयउ न रामकहँ जसभा भरतहिजात ॥
जड़ चेतन जग जीव घनेरे । जेचितये प्रभुजिन्ह प्रभुहेरे
ते सब भये परमपद योगू । भरत दरश भेषज भवरोगू
यह बड़िबात भरत की नाहीं । सुमिरतजिन्हें राममनमाहीं
बारेक राम कहत जग जेऊ । होत तरण तारण नर तेऊ
भरतरामप्रिय पुनिलघुभ्राता । कस न होइ मगुमंगलदाता
सिद्धिसाधु मुनिवरअसकहहीं । भरतहिनिरखिहर्षहियलहहीं
देखि प्रभाव सुरेशहि शोचू । जगभलभलहि पोचकहपोचू
गुरुसन कहेउ करउ प्रभु सोई । रामहि भरतहि भेंट न होई
दो० राम सकोची प्रेमबश भरत सप्रेम पयोधि ।

बनी बात बिगरन चहत करियय यतन छलशोधि ॥
बचन सुनत सुरगुरु मुसकाने । सहसनयन बिनुलोचन जाने ॥
कह गुरुबादि छोभ छल छांडू । इहां कपट करि होइय भांडू ॥
माया पति सेवक सन माया । करियत उलटि परे सुरराया ॥
तब कछु कीन्ह रामरुख जानी । अबकुचालकरि होइहिहानी ॥
सुनु सुरेश रघुनाथ सुभाऊ । निजअपराध रिसाहिंनकाऊ ॥
जो अपराध भक्त कर करई । राम रोष पावक सो जरई ॥
लोकहु वेद विदित इतिहासा । यह महिमा जानहिं दुर्वासा ॥
भरत सरिस को राम सनेही । जग जपु राम राम जपु जेही ॥
दो० मनहुंनआनिय अमरपति रघुपति भक्त अकाज ।
अयशलोक परलोकदुख दिनदिन शोकसमाज ॥
सुनु सुरेश उपदेश हमारा । रामहिं सेवक परम पियारा ॥
मानत सुख सेवक सेवकाई । सेवक बैर बैर अधिकाई ॥
यद्यपि समनहिं राग न रोषू । गहहि न पापपुण्य गुणदोषू ॥
कर्म प्रधान विश्व करि राखा । जोजसकरै सोतसफलचाखा ॥
तदपिकरहिंसम विषमविहारा । भक्तअभक्त हृदय अनुसारा ॥
अगुण अलेख अमान एकरस । रामसगुणभये भक्त प्रेमबस ॥
राम सदा सेवक रुचि राखी । वेद पुराण साधु सुर साखी ॥
असजियजानितजहु कुटिलाई । करहु भरतपद प्रीति सुहाई ॥
दो० राम भक्त परहित निरत परदुख दुखीदयाल ।
भक्तशिरोमणि भरत ते जनिडरपहु सुरपाल ॥
सत्य सिन्धु प्रभुसुर हितकारी । भरत राम आयसुअनुसारी ॥
स्वारथ विवश बिकल तुमहोहू । भरत दोषनहिं राउर मोहू ॥
सुनि सुरवर सुरगुरु बर बानी । भा प्रबोध मन मिटीगलानी ॥
बरषि प्रसून हर्षि सुरराऊ । लगे सराहन भरत सुभाऊ ॥
इहिविधि भरत चले मगुजाहीं । दशादेखिमुनि सिद्धसिहाहीं ॥
जबहिं रामकहिलेहिं उसासा । उमँगतप्रेम मनहुँ चहुँपासा ॥

द्रवहिंबचनसुनिकुलिशपखाना । पुरजनप्रेम न जाइ बखाना ॥
बीच बासकरि यमुनहिं आये । निरखि नीर लोचनजलछाये ॥
दो० रघुबर वर्ण विलोकि वर बारिसमेत समाज ।
होत विरह वारिधि मगन चढ़े बिवेक जहाज ॥
यमुनतीर तेहि दिन कर बासू । भयउसमयसमसबहिसुपासू ॥
रातिहि घाट घाट की तरणी । आईंअगणितजाइँ न वरणी ॥
प्रात पार भे एकहि खेवा । तोषे राम सखा करिसेवा ॥
चले अन्हाइ नदिहि शिर नाई । साथ निषादनाथ लघु भाई ॥
आगे मुनिवर बाहन आछे । राजसमाज जाय सब पाछे ॥
तेहि पाछे दोउ बन्धु पयादे । भूषणबसन वेष सुठि सादे ॥
सेवक सुहृदसचिव सुतसाथा । सुमिरतलषणसीयरघुनाथा ॥
जहँ जहँ राम बास विश्रामा । तहँतहँ करहिंसप्रेमप्रणामा ॥
दो० मगबासी नर नारि सुनि धाम काम तजि धाइ ।
देखि स्वरूप सनेह बश मुदित जन्म फल पाइ ॥
कहहिं सप्रेम एक इक पाहीं । रामलषणसखिहोहिंकिनाहीं ॥
वय बपुबसन रूप सोइआली । शीलसनेह सरिससमचाली ॥
बेष न सो सखि सीय न संगा । आगे अनी चली चतुरंगा ॥
नहिं प्रसन्न मुख मानसखेदा । सखि सन्देह होत इहिभेदा ॥
तासुतर्क तियगण मनमानी । कहहिंसकलतोहिंसमनसयानी ॥
तेहि सराहि बाणी फुर पूजी । बोली मधुर वचन तियदूजी ॥
कहि सप्रेम सब कथा प्रसंगू । जेहिबिधि राम राज रसभंगू ॥
भरतहि बहुरि सराहन लागी । शील सनेह सुभाव सुभागी ॥
दो० चलत पयादे खातफल पिता दीन्ह तजिराज ।
जातमनावन रघुबरहि भरत सरिसको आज ॥
भायप भक्ति भरत आचरणू । कहत सुनत दुखदूषणहरणू ॥
जो कछु कहिय थोरसखिसोई । रामबन्धु अस काहे न होई ॥
तबसब सानुजभरतहि देखे । भये धन्य युवती जन लेखे ॥

मुनिगण देखि दशापछितार्ही । केकयि जननि योगसुतनार्ही ॥
कोउकहदूषणरानिहुनाहिन । विधिसबभांति हमहिंजोदाहिन ॥
कहँ हमलोग वेदविधि हीना । लघुकुलतियकरतूतिमलीना ॥
बसहिं कुदेश कुगाँव कुठामा । कहँयह दरश पुण्यपरिणामा ॥
असअनन्दअचरजप्रतिग्रामा । जनु मरुभूमि कल्पतरुजामा ॥
दो० भरत दरश देखत खुलेहु मगु लोगन्हकर भाग ।
जनुसिंहलबासिन्हभयउविधिवशसुलभप्रयाग ॥
निजगुणसहित रामगुणगाथा । सुनतजाहिंसुमिरत रघुनाथा ॥
तीरथ मुनिआश्रमसुरधामा । निरखिनिमज्जहिंकरहिंप्रणामा ॥
मनहीं मन मांगहिं बरयेहू । सीय राम पद पद्म सनेहू ॥
मिलहिं किरात कोलबनबासी । बैखानस बटु यती उदासी ॥
करि प्रणाम पूंछहिं जेहितेही । केहिबन लषण राम बैदेही ॥
ते प्रभु समाचार सब कहहीं । भरतहिं देखिजन्मफललहहीं ॥
जेजन कहहिं कुशल हम देखे । ते प्रिय रामलषण समपेखे ॥
इहिविधिबूझत सबहिसुबानी । सुनत राम बनवास कहानी ॥
दो० तेहि बासर बस प्रातही चले सुमिरि रघुनाथ ।
राम दरशकी लालसा भरत सरिस सबसाथ ॥
मङ्गल शकुन होहिं सबकाहू । फरकहिंसुखद विलोचनबाहू ॥
भरतहिं सहित समाजउछाहू । मिलिहहिंराममिटहिंदुखदाहू ॥
करत मनोरथ जससजियजाके । जाहिं सनेह सुरा सब छाके ॥
शिथिलअंगमगुपगडगडोलहिं । विह्वलबचन प्रेमबशबोलहिं ॥
रामसखा तेहिसमय दिखावा । शैलशिरोमणि सहजसुहावा ॥
जासुसमीप सरितपय तीरा । सीय समेत बसहिं दोउबीरा ॥
देखिकरहिं सब दण्डप्रणामा । कहिजय जानकिजीवनरामा ॥
प्रेम मगन अस राजसमाजू । जनुफिरि अवधचले रघुराजू ॥
दो० भरत प्रेम तेहिसमय जस तस कहिसकै न शेषु ।
कबिहि अगमजिमिब्रह्मसुख अहममलिनजनेषु ॥

सकलसनेह शिथिलरघुबरके । गये कोस दुइ दिनकर ढरके ॥
जलथल देखिचले निशिबीते । कीन्ह गवन रघुनाथ पिरीते ॥
उमा राम रजनी अवरेखा । जागे सीय सपन अस देखा ॥
सहित समाज भरत जनुआये । नाथ बियोग ताप तन ताये ॥
सकलमलिन मनदीन दुखारी । देखी सासु आन अनुहारी ॥
सुनि सियसपनभरेजललोचन । भयेशोचबश शोकबिमोचन ॥
लषणसपन यह नीक न होई । कठिन कुचाह सुनाइहिकोई ॥
असकहि बन्धु समेत अन्हाने । पूजिपुरारि साधु सनमाने ॥
छं० सनमानि सुरमुनि बन्दिबैठे उतरदिशिदेखतभये ।
नभधूरिखगमृगभूरिभागे बिकलप्रभुआश्रमगये ॥
तुलसीउठे अवलोकि कारण काहचित चकितरहे ।
सबसमाचार किरातकोलन आइतेहिअवसरकहे ॥
सो० सुनत सुमंगल बैन मन प्रमोद तन पुलकभर ।
शरद सरोरुह नैन तुलसी भरे सनेह जल ॥
बहुरि शोचबशभे सियरमनू । कारणकवन भरत आगमनू ॥
एक आइ अस कहा बहोरी । सेन संग चतुरंग न थोरी ॥
सोसुनिरामहिं भा अतिशोचू । इतपितु बच उतबन्धुसकोचू ॥
भरतस्वभाव समुझिमनमाहीं । प्रभुचितहितथितिपावतनाहीं ॥
समाधान तब भा यह जाने । भरत कहे महँ साधु सयाने ॥
लषणलखेउ प्रभुहृदयखँभारू । कहतसमयसमनीतिबिचारू ॥
बिनु पूछे कछु कहउँ गुसांई । सेवक समय न ढीठ ढिठाई ॥
तुम सर्बज्ञ शिरोमणि स्वामी । आपुनिसमुझिकहौंअनुगामी ॥
दो० नाथसुहृदसुठि सरलचित शील सनेह निधान ।
सबपर प्रीति प्रतीतिजिय जानियआपुसमान ॥
बिषयी जीव पाइ प्रभुताई । मूढ़ मोह बश होहिं जनाई ॥
भरत नीतिरत साधु सुजाना । प्रभुपदप्रेमसकल जगजाना ॥
तेऊ आज राज पद पाई । चले धर्म मर्य्याद मिटाई ॥

कुटिलकुबन्धु कुअवसर ताकी । जानि राम बनवास एकाकी ॥
करि कुमंत्र मन साजि समाजू । आये करन अकंटक राजू ॥
कोटिप्रकार कलपि कुटिलाई । आये दल बटोरि दोउ भाई ॥
जोजियहोति न कपटकुचाली । केहिसुहात रथबाजिगजाली ॥
भरतहि दोष देइ को जाये । जग बौराइ राज पद पाये ॥
दो० शशि गुरुतियगामी नहुष चढ़े भूमिसुर यान ।
लोक वेदते विमुख भा अधमको बेनु समान ॥
सहसबाहु सुरनाथ त्रिशंकू । केहि न राजमद दीन्हकलंकू ॥
भरत कीन्ह यहउचित उपाऊ । रिपु रण रंच न राखबकाऊ ॥
एक कीन्ह नहिं भरत भलाई । निदरे राम जानि असहाई ॥
समुझिपरिहि सोआजुबिशेखी । समरसरोष रामरुख देखी ॥
इतना कहत नीति रस भूला । रणरसविटपपुलकजिमिफूला ॥
प्रभु पद बन्दि शीश रजराखी । बोले सत्यसहज बलभाखी ॥
अनुचित नाथ न मानब मोरा । भरतहमहिं उपचार न थोरा ॥
कहँलगि सहिय रहिय मनमारे । नाथ साथ धनुहाथ हमारे ॥
दो० क्षत्रिजाति रघुकुल जनम रामअनुज जगजान ।
लातहु मारे चढ़त शिर नीचको धूरि समान ॥
उठि करजोरि रजायसु मांगा । मनहुँ बीररस सोवतजागा ॥
बांधिजटाशिरकसि कटिभाथा । साजिशरासन शायकहाथा ॥
आजु राम सेवक यश लेऊं । भरतहि समर सिखावनदेऊं ॥
राम निरादर कर फल पाई । सोवहु समरसेज दोउ भाई ॥
आइ बना भल सकलसमाजू । प्रकटकरौं रिसपाछिलआजू ॥
जिमिकरि निकर दलै मृगराजू । लेइलपेटि लवा जिमि बाजू ॥
तैसहि भरतहि सेन समेता । सानुज निदरि निपातौंखेता ॥
जो सहाय कर शंकर आई । तदपि हतौं रण राम दुहाई ॥
दो० अति सरोष माषेलषण लखि सुनि शपथप्रमान ।
सभय बिलोकत लोकपति चाहत भभरि भगान ॥

जग मा मगन गगनभै बानी । लषणबाहुबल बिपुलबखानी ॥
तात प्रताप प्रभाव तुम्हारा । कोकहिसक को जाननिहारा ॥
अनुचित उचितकाजकछु होई । समुझिकरियभलकहसबकोई॥
सहसा करि पाछे पछिताहीं । कहहिं बेद बुधते बुध नाहीं ॥
सुनिसुरबचन लषणसकुचाने । राम सीय सादर सनमाने ॥
कही तात तुम नीति सुहाई । सबते कठिन राज मद भाई ॥
जो अँचवत मातहिं नृप तेई । नाहिंन साधुसभा जिन्हसेई ॥
सुनहु लषणभलभरत सरीखा । बिधिप्रपञ्चमहँसुनानदीखा॥

दो० भरतहि होइ न राजमद बिधिहरिहर पदपाइ ।
कबहुँ किकांजी सीकरन्हि क्षीरसिंधु बिनशाइ ॥

तिमिरतरुणतरणिहिसकगिलई । गगनमगनमकुमेघहिंमिलई॥
गोपद जल बूड़हिं घटयोनी । सहजक्षमाबरु छांड़हिंछोनी ॥
मशक फूंक बरु मेरु उड़ाई । होइ न नृपमद भरतहिभाई ॥
लषणतुम्हारशपथ पितुआना । शुचिसुबन्धुनाहिंभरतसमाना॥
सगुणक्षीर अवगुण जलताता । मिले रचे परपंच बिधाता ॥
भरत हंस रबि बंश तड़ागा । जनमिकीन्हगुणदोषबिभागा॥
गहिगुणपयतजिअवगुणबारी । निजयशजगतकीन्हउजियारी॥
कहत भरत गुणशील सुभाऊ । प्रेम पयोधि मगन रघुराऊ ॥

दो० सुनिरघुबर बाणी बिबुध देखि भरत पर हेतु ।
लगे सराहन सहसमुख प्रभुको कृपानिकेतु ॥

जो न होत जगजन्म भरतको । सकलधरमधुरधरणिधरतको॥
कबिकुलअगम भरतगुणगाथा । कोजाने तुमबिन रघुनाथा ॥
लषणराम सियसुनि सुरबानी । अतिसुखलहेउनजाइबखानी॥
इहांभरत सब सहित सुहाये । मन्दाकिनी पुनीत अन्हाये ॥
सरित समीप राखि सबलोगा । मांगिमातुगुरुसचिवनियोगा॥
चले भरत जहँ सिय रघुराई । साथ निषाद नाथलघुभाई ॥
समुझिमातु करतब सकुचाहीं । करत कुतर्क कोटि मनमाहीं ॥

रामलषणसिय सुनिमनाऊँ । उठिजनअनतजाहिंतजिठाऊँ ॥
दो० मातुमतेमहँ जानिमोहिं जोकछुकरहिं सो थोर ।
अघअवगुणतजिआदरहिं समुझिआपनी ओर ॥
जो परिहरहिं मलिनमनजानी । जो सनमानहिं सेवक मानी ॥
मोरे शरण रामकी पनहीं । रामसुस्वामि दोषसबजनहीं ॥
जगयश भाजन चातक मीना । नेमप्रेम निज निपुणनवीना ॥
असमनगुणत चलेमगजाता । सकुचिसनेहशिथिलसबगाता ॥
फेरति मनहुँ मातु कृत खोरी । चलत भक्तिबल धीरजधोरी ॥
जब समुझहिं रघुनाथसुभाऊ । तब पथ परत उतावलपाऊ ॥
भरतदशा तेहिअवसरकैसी । जलप्रवाहजलअलिगति जैसी ॥
देखि भरत कर शोच सनेहू । भा निषाद तेहिसमय बिदेहू ॥
दो० लगे होन मंगलशकुन सुनिगुणिकहत निषाद ।
मिटिहिशोच होइहिहरष पुनिपरिणाम विषाद ॥
सेवक बचन सत्यसब जाने । आश्रमनिकट जाय नियराने ॥
भरत दीख बन शैल समाजू । मुदितक्षुधितजनुपाइ सुनाजू ॥
ईति भीति जनु प्रजा दुखारी । त्रिबिधतापपीड़ित ग्रहमारी ॥
जाइ सुराज सुदेश सुखारी । भईभरतगति तेहि अनुहारी ॥
रामबास बन सम्पति भ्राजा । सुखी प्रजाजनु पाइ सुराजा ॥
सचिव बिराग विवेक नरेशू । विपिन सुहावन पावन देशू ॥
भट यमनियम शैल रजधानी । शांतिसुमतिशुचिसुन्दररानी ॥
सकल अंग सम्पन्न सुराऊ । रामचरणआश्रित चितचाऊ ॥
दो० जीतिमोह महिपालदल सहित विवेक भुआल ।
करत अकण्टक राजपुर सुखसम्पदा सुकाल ॥
बन प्रदेश मुनि बास घनेरे । जनुपुर नगर गांवगण खेरे ॥
विपुलबिचित्र बिहगमृगनाना । प्रजासमाज न जाइ बखाना ॥
खरहा करि हरिबाघ बराहा । वृषभ महिषवृक साजसराहा ॥
बैर बिहाय चरहिं इकसंगा । जहँतहँ मनहुँ सेन चतुरंगा ॥

झरनाझरहिंमत्तगजगाजहिं ।मनहुँनिशानाबिबिधबिधिबाजहिं॥
चकचकोरचातकशुकपिकगन । कूजत मंजु मरालमुदितमन॥
अलिगण गावत नाचत मोरा । जनु सुराज मंगल चहुँओरा॥
बेलिबिटप तृणसफल सफूला । सब समाज मुद मङ्गलमूला॥

दो० रामशैल शोभा निरखि भरतहृदय अति प्रेम ।
तापस तप फल पाइजिमि सुखी सिराने नेम ॥

तब केवट ऊंचे चढ़ि जाई । कहा भरत सन भुजा उठाई॥
नाथ देख यह बिटप बिशाला । पाकरजम्बु रसाल तमाला॥
तिन तरुवरन्ह मध्यबट सोहा । मंजु बिशाल देखि मन मोहा॥
नील सघन पल्लवफल लाला । अबिचलछांहसुखदसबकाला॥
मानहुँ तिमिरअरुणमय राशी । बिरचीबिधिसकेलिसुखमासी॥
तेहितरु सरितसमीप गोसांई । रघुबर पर्ण कुटी जहँ छाई॥
तुलसी तरुवर बिबिध सुहाये । कहुँसियपिय कहुँलषणलगाये॥
बट छाया बेदिका बनाई । सियानिजपाणि सरोज सुहाई॥

दो० जहँ बैठे मुनिगण सहित नित सियरामसुजान ।
सुनहिं कथाइतिहाससब आगमनिगम पुरान ॥

सखा बचनसुनि बिटपनिहारी । उमँगे भरत बिलोचन बारी॥
करत प्रणाम चले दोउभाई । कहत प्रीति शारद सकुचाई॥
हर्षहिं निरखि राम पद अंका । मानहुँ पारस पायहु रंका॥
रजशिरधरिहियनयनलगावहिं ।रघुबरमिलनसरिससुखपावहिं॥
देखि भरतगतिअकथ अतीवा । प्रेममगन मृगखग जड़जीवा॥
सखहि सनेह बिबश मग भूला । कहिसुपंथ सुर बर्षहिं फूला॥
निरखि सिद्ध साधक अनुरागे । सहज सनेह सराहन लागे॥
होत न भूतल भाव भरत को । अचरसचरचरअचरकरतको॥

दो० प्रेमअमिय मन्दर बिरह भरत पयोधिगँभीर ।
मथि प्रकटे सुर साधुहित कृपासिंधु रघुबीर ॥

सखा समेत मनोहर जोटा । लखेउनलषणसघनबनओटा॥

भरत दीख प्रभु आश्रमपावन । सकलसुमङ्गलसदनसुहावन ॥
करत प्रवेश मिटा दुखदावा । जनु योगी परमारथ पावा ॥
देखे लषण भरत प्रभु आगे । पूछत बचन कहत अनुरागे ॥
शीश जटा कटि मुनि पट बांधे । तूणकसे कर शर धनुकांधे ॥
वेदी पर मुनि साधु समाजू । सीय सहित राजत रघुराजू ॥
बलकलबसनजटिलतनुश्यामा । जनुमुनिवेष कीन्ह रतिकामा ॥
कर कमलन धनु शायकफेरत । जीकीजरनि हरत हँसिहेरत ॥

दो० लसत मंजु मुनिमण्डली मध्य सीय रघुनन्द ।
ज्ञानसभा जनु तनुधरे भक्तिसच्चिदानन्द ॥

सानुज सखा समेत मगनमन । बिसरेहर्ष शोक सुखदुखगन ॥
पाहि नाथ कहि पाहि गुसाईं । भूतल परे लकुट की नाईं ॥
बचन सप्रेम लषण पहिंचाने । करत प्रणाम भरतजियजाने ॥
बन्धु सनेह सरस यहि ओरा । उत साहब सेवा बरजोरा ॥
मिलनजाइ नहिंगुदरत बनई । सुकबिलषणमनकीगतिभनई ॥
रहे राखि सेवा पर भारू । चढ़ी चङ्ग जनु खैंचखिलारू ॥
कहत सप्रेम नाइमहि माथा । भरत प्रणाम करत रघुनाथा ॥
उठे राम सुनि प्रेम अधीरा । कहुँपट कहुँ निषंग धनुतीरा ॥

दो० बरबस लिये उठाय उर लाये कृपानिधान ।
भरतरामकी मिलनलखि बिसरे सबहिंअपान ॥

मिलनप्रीतिकिमिजाहिबखानी । कबिकुलअगम कर्ममनबानी ॥
परमप्रेम पूरण दोउ भाई । मनबुधिचितअहमितबिसराई ॥
कहहु सप्रेम प्रकट को करई । केहिछायाकबिमति अनुसरई ॥
कबिहि अर्थ आखरबल सांचा । अनुहरतालगतिहि नटनाचा ॥
अगम सनेह भरत रघुबर को । जहँनजाइमन बिधिहरिहरको ॥
सो मैं बरणि कहौं केहि भांती । बाजु सुराग कि गाडरितांती ॥
मिलनिबिलोकिभरतरघुबरकी । सुरगणसभयधुकधुकी धरकी ॥
समुझाये सुरगुरु जड़ जागे । बरषि प्रसून प्रशंसन लागे ॥

दो० मिलि सप्रेम रिपुसूदनहिं केवट भेंटे राम ।
भूरिभाइ भेंटे भरत लक्ष्मण करत प्रणाम ॥
भेंटेउ लषण ललकि लघुभाई । बहुरिनिषाद लीन्ह उरलाई ॥
पुनि मुनिगण दोउभाइनबन्दे । अभिमत आशिषपाइअनन्दे ॥
सानुज भरत उमँगि अनुरागा । धरिशिर सियपदपद्म परागा ॥
पुनि पुनि करत प्रणाम उठाये । सियकर कमल परसि बैठाये ॥
सीय अशीश दीन्ह मनमाहीं । मगन सनेह देह सुधिनाहीं ॥
सबबिधि सानुकूल लखिसीता । भे अशोच उर अपडर बीता ॥
कोउ कछु कहै न कोउ कछुपूछा । प्रेम भरामन निजगति छूछा ॥
तेहि अवसर केवट धीरजधरि । जोरिपाणिबिनवतप्रणामकरि ॥
दो० नाथ साथ मुनिनाथके मातु सकल पुरलोग ।
सेवक सेनप सचिवसब आये बिकल बियोग ॥
शीलसिन्धु सुनि गुरुआगमनू । सीय समीपराखि रिपुदमनू ॥
चले सवेग राम तेहि काला । धीर धर्म्मधुर दीनदयाला ॥
गुरुहि देखि सानुज अनुरागे । दण्ड प्रणाम करन प्रभुलागे ॥
मुनिवर धाइ लिये उरलाई । प्रेम उमँगि भेंटे दोउ भाई ॥
प्रेम पुलकि केवट कहि नामू । कीन्ह दूरिते दण्ड प्रणामू ॥
राम सखा ऋषि बरबस भेंटे । जनु महि लुटत सनेहसमेटे ॥
रघुपति भक्ति सुमंगल मूला । नभसराहि सुर बर्षहिं फूला ॥
इहिसम निपटनीच कोउनाहीं । बड़ वशिष्ठसम को जगमाहीं ॥
दो० जेहिलखि लषणहुँते अधिक मिलेमुदित मुनिराउ ।
सो सीतापति भजन को प्रकटप्रताप प्रभाउ ॥
आरत लोग रामसब जाना । करुणाकर सुजान भगवाना ॥
जो जेहिभांति रहाअभिलाखी । तेहि तेहिकी तैसी रुचिराखी ॥
सानुज मिलिपलमहँ सबकाहू । कीन्ह दूरिदुख दारुण दाहू ॥
यह बड़िबात रामकै नाहीं । जिमिघटकोटि एकरबिछाहीं ॥
मिलि केवटहिउमँगि अनुरागा । पुरजनसकल सराहहिंभागा ॥

देखी राम दुखित महतारी । जनुसुबेलि अवली हिममारी ॥
प्रथम राम भेंटे कैकेयी । सरलस्वभाव भक्तिमतिभेयी ॥
पगपरि कीन्ह प्रबोध बहोरी । कालकर्म्मबिधिशिरधरिखोरी ॥
दो० भेंटे रघुबर मातुसब करि प्रबोध परितोष ।
अम्ब ईश आधीन जग काहु न देइयदोष ॥
गुरुतियपद बन्दे दोउ भाई । सहित बिप्रतियजे सँगआई ॥
गङ्ग गौरिसम सब सनमानी । देहिंअशीश मुदितमृदुबानी ॥
गहिपद लगे सुमित्रा अङ्का । जनु भेंटीसम्पति अति रङ्का ॥
पुनिजननी चरणन दोउभ्राता । परेप्रेम ब्याकुल सब गाता ॥
अति अनुराग अम्बउरलाये । नयन सनेहसलिलअन्हवाये ॥
तेहि अवसर कर हर्ष बिषादू । किमिकबिकहैमूकजिमिस्वादू ॥
मिलिजननिहिं सानुजरघुराऊ । गुरुसनकहेउ किधारियपाऊ ॥
पुरजन पाइ मुनीश नियोगू । जलथलतकितकिउतरे लोगू ॥
दो० महिसुर मंत्रीमातुगुरु गने लोग लियेसाथ ।
पावनआश्रमगमनकिय भरतलषण रघुनाथ ॥
सीय आइ मुनिवर पग लागी । उचितअशीशलही मनमांगी ॥
गुरुपत्निहि मुनितियन्ह समेता । मिलिसप्रेमकहि जाइनजेता ॥
बन्दि बन्दि पदसिय सबहीके । आशिष बचनलहे प्रियजीके ॥
सासु सकल जबसीयनिहारी । मूंदेउ नयनसहमि सुकुमारी ॥
परी बधिक बश मनहुँ मराली । काह कीन्हकरतार कुचाली ॥
तिन्हसियनिरखिनिपटदुखपावा । सोसबसहियजोदैवसहावा ॥
जनकसुता तब उरधरिधीरा । नीलनलिनलोचनभरि नीरा ॥
मिली सकलसासुन्हशिरनाई । तेहिअवसर करुणामहिछाई ॥
दो० लागिलागिपग सबनि सिय भेंटतिअति अनुराग ।
हृदय अशीशहिं प्रेमबश रहिहौ भरी सुहाग ॥
बिकल सनेह सीय सब रानी । बैठन सबहि कहेउगुरुज्ञानी ॥
प्रथमकही जगगतिमुनिनाथा । कहे कछुक परमारथ गाथा ॥

नृपकर सुरपुर गमन सुनावा । सुनि रघुनाथदुसहदुखपावा ॥
मरण हेतु निज नेह बिचारी । भे अतिबिकलधीररघुरधारी ॥
कुलिश कठोर सुनत कटुबानी । बिलपतलषणसीयसबरानी ॥
शोक बिकलअतिसकलसमाजू । मानहुँ राज अकाजेउआजू ॥
मुनिवर बहुरि राम समुझाये । सहितसमाजसुसरितअन्हाये ॥
ब्रत निरम्बुतेहिदिनप्रभुकीन्हा । मुनिहुँ कहेजलकाहुनलीन्हा ॥
दो० भोर भये रघुनन्दनहिं जो मुनि आयसु दीन्ह ।
श्रद्धा भक्ति समेतप्रभु सो सब सादर कीन्ह ॥
करिपितुक्रिया वेद जसबरणी । भे पुनीत पातक तम तरणी ॥
जासु नाम पावक अघ तूला । सुमिरतसकल सुमंगलमूला ॥
शुद्धसोभये साधु सम्मत अस । तीरथआवाहन सुरसरिजस ॥
शुद्ध भये दुइ बासर बीते । बोले गुरुसन राम पिरीते ॥
नाथ लोग सब निपट दुखारी । कन्दमूलफल अम्बु अहारी ॥
सानुजभरत सचिव सबमाता । देखिमोहिंपलजिमियुगजाता ॥
सब समेत पुर धारिय पाऊ । आपु इहां अमरावतिराऊ ॥
बहुत कहेउँ सब कियउँढिठाई । उचित होइतसकरियगुसांई ॥
दो० धर्म हेतु करुणायतन कसन कहहु अस राम ।
लोकदुखितादिनदुइदरश देखिलहहिं विश्राम ॥
राम बचन सुनिसभयसमाजू । जनुजलनिधिमहँबिकलजहाजू ॥
सुनि मुनिगिरा सुमंगलमूला । भयउमनहुँ मारुत अनुकूला ॥
पावनपय तिहुंकाल अन्हाहीं । जेहिबिलोकिअघओघनशाहीं ॥
मंगल मूरति लोचन भरिभरि । निरखहिंहर्षिदण्डवतकरिकरि ॥
राम शैल वन देखन जाहीं । जहँसुखसकलसकलदुखनाहीं ॥
झरना झरहिं सुधासम बारी । त्रिविधतापहर त्रिविधबयारी ॥
बिटपबेलितृणअगणितजाती । फल प्रसून पल्लव बहुभांती ॥
सुन्दर शिला सुखदतरुछाहीं । जाइबरणिछबिवनकेहि पाहीं ॥
दो० सरनि सरोरुहजल बिहग कूजत गुंजत भृंग ।

बैर बिगत बिहरत बिपिन मृग बिहंग बहुरंग ॥
कोल किरात भिल्ल बन बासी । मधुशुचिसुंदरस्वादुसुधासी ॥
भरि भरि पर्णकुटी रचि रूरी । कन्द मूल फल अंकुर जूरी ॥
सबहिंदेहिंकरिविनय प्रणामा । कहिकहिस्वादु भेदगुणनामा ॥
देहिंलोग बहुमोल न लेहीं । फेरत राम दोहाई देहीं ॥
कहहिं सनेह मगन मृदुबानी । मानत साधु प्रेम पहिंचानी ॥
तुम सुकृती हम नीच निषादा । पावा दर्शन राम प्रसादा ॥
हमहिंअगमअतिदरशतुम्हारा । जस मरुधरणि देवसरिधारा ॥
राम कृपालु निषाद नेवाजा । परिजनप्रजाचलियजसराजा ॥
दो० यह जियजानिसकोचतजि करियछोह लखिनेहु ।
हमहिं कृतारथ करनलगि फलतृण अंकुर लेहु ॥
तुम प्रिय पाहुन बन पगुधारे । सेवा योग न भाग हमारे ॥
देब कहा हम तुमहिं गुसांई । ईंधन पात किरात मिताई ॥
यह हमार अतिबड़ सेवकाई । लेहिंन बासन बसन चुराई ॥
हम जड़ जीव जीवगण घाती । कुटिलकुचालीकुमतिकुजाती ॥
पापकरत निशि बासर जाहीं । नहिंकटिपटनहिंपेट अघाहीं ॥
सपनेहुँ धर्म्म बुद्धि कसकाऊ । यह रघुनन्दन दरश प्रभाऊ ॥
जबते प्रभु पद पद्म निहारे । मिटे दुसह दुख दोष हमारे ॥
बचन सुनत पुरजन अनुरागे । तिनके भाग सराहन लागे ॥
छं० लागे सराहन भाग सब अनुराग बचन सुनावहीं ।
बोलनिमिलनिसियरामचरण सनेहलखिसुखपावहीं ॥
नरनारिनिदरहिंनेहनिज सुनि कोल भिल्लनकीगिरा ।
तुलसी कृपा रघुबंश मणिकी लोह लै नौकातरा ॥
सो० बिहरहिंबनचहुँओर प्रतिदिनप्रमुदित लोगसब ।
जल जिमि दादुर मोर भये पीन पावस प्रथम ॥
पुरजन नारि मगन अतिप्रीती । बासर जाहिं पलकसमबीती ॥
सीय सासु प्रति बेष बनाई । सादर करहिंसरिस सेवकाई ॥

लखा न मर्म राम बिनु काहू । मायाबश सिय माया माहू ॥
सीयसासुसेवासबकीन्ही । तिन्हलहिसुखशिषआशिष दीन्ही ॥
लखिसियसहितसरलदोउभाई । कुटिलरानि पछिताइ अघाई ॥
अब जियमाहिं याचति कैकेयी । मोहिं नबीचबिधिमीचुनदेयी ॥
लोकहु वेदबिदित कबि कहहीं । रामविमुखखलनरकनलहहीं ॥
यह संशय सबके मन माहीं । रामगवनविधिअवधकिनाहीं ॥
दो० निशि न नींद नहिंभूखदिन भरतविकलसुठिशोच ।
नीचकीचबिचमगन जस मीनहिं सलिलसकोच ॥
कीन्ह मातु मिसु कालकुचाली । ईतिभीति जसपाकतशाली ॥
केहिबिधि होइ राम अभिषेकू । मोहिं अबफुरतउपाय न एकू ॥
अवशिफिरहिंगुरु आयसुमानी । मुनिपुनिकहबरामरुचिजानी ॥
मातु कहें बहुरहिं रघुराऊ । रामजननिहठकरब किकाऊ ॥
मोहिं अनुचरकर केतिक बाता । तेहिमहँकुसमयबामविधाता ॥
जोहठकरौं तो निपट कुकरमू । हर गिरिते गुरु सेवक धरमू ॥
एकौ युक्ति न मन ठहरानी । शोचत भरताहिं रैनिसिरानी ॥
प्रात अन्हाइ प्रभुहि शिरनाई । बैठत पठये ऋषय बुलाई ॥
दो० गुरु पद कमल प्रणामकरि बैठे आयसुपाइ ।
बिप्र महाजन सचिव सब जुरेसभासद आइ ॥
बोले मुनिवर समय समाना । सुनहुसभासदभरतसुजाना ॥
धर्म्म धुरीण भानुकुल भानू । राजा राम स्वबश भगवानू ॥
सत्यसिंधु पालक श्रुति सेतू । राम जन्म जग मंगल हेतू ॥
गुरु पितुमातु वचन अनुसारी । खलदलदलनदेव हितकारी ॥
नीति प्रीति परमारथ स्वारथ । कोउनराम समजानयथारथ ॥
विधिहरिहरशशिरबिदिशपाला । मायाजीव करमकलिकाला ॥
अहिपमहिपजहँलगि प्रभुताई । योग सिद्ध निगमागमगाई ॥
करि विचार जिय देखहु नीके । राम रजाय शीश सबहीके ॥
दो० राखे राम रजाय रुख हम सबकर हित होइ ।

समुझिसयाने करहु अब सब मिलिसम्मतसोइ ।
सब कहँ सुखद राम अभिषेकू । मंगलमूल मोद मगु एकू ॥
केहिबिधि अवधचलहिंरघुराई । कहहु समुझि सोइकरैं उपाई ॥
सबसादर मुनिवर सुनिबानी । नय परमारथ स्वारथ सानी ॥
उतर न आव लोग भे भोरे । तब शिरनाय भरत करजोरे ॥
भानुबंश भे भूप घनेरे । अधिक एक ते एक बड़ेरे ॥
जन्म हेतु सब कहँ पितुमाता । करम शुभाशुभ देइ विधाता ॥
दलि दुख तजे सकलकल्याना । सब अशीश राउरजगजाना ॥
सो गुसाइँ बिधिगतिजेइ छेकी । सकै को टारि टेक जो टेकी ॥
दो० बूझिय मोहिं उपायअब सो सब मोरअभाग ।
सुनि सनेहमय बचनगुरु उरउपजा अनुराग ॥
तात बात फुर राम कृपाहीं । रामबिमुखसुख सपनेहुँनाहीं ॥
सकुचौं तात कहत इकबाता । अरधतजहिंबुधसरबसजाता॥
तुम कानन गवनहु दोउभाई । फिरिहहिंलषण सीयरघुराई ॥
सुनि शुभबचनहर्ष दोउभ्राता । भे प्रमोद परिपूरण गाता ॥
मन प्रसन्न तन तेज बिराजा । जनु जिय राउ रामभे राजा ॥
बहुतलाभ लोगन्ह लघुहानी । समदुखसुख सबरोवहिंरानी ॥
कहहिंभरतमुनि कहासोकीन्हें । फलजगजीवनअभिमतदीन्हें॥
कानन करउँ जन्म भरि बासू । इहितेअधिक न मोरसुपासू ॥
दो० अन्तरयामी राम सिय तुम सर्वज्ञ सुजान ।
जोफुरकहहुँतोनाथ निज कीजियवचनप्रमान ॥
भरत बचनसुनि देखि सनेहू । सभासहित मुनिभयउबिदेहू॥
भरत शील महिमा जलरासी । मुनिमतिठाढ़ि तीर अबलासी॥
भा चह पार यतन बहु हेरा । पावति नाव न बोहित बेरा ॥
और करहिं को भरत बड़ाई । सरसि सीपरी सिन्धु समाई ॥
भरत मुनिहिं मन भीतरपाये । सहितसमाज रामपहँ आये ॥
प्रभुप्रणामकरिदीन्हसुआसन । बैठे सबमुनिसुनिअनुशासन ॥

बोले मुनिवर बचन बिचारी । देशकाल अवसर अनुहारी ॥
सुनहु राम सरवज्ञ सुजाना । धर्म्मनीति गुणज्ञाननिधाना ॥
दो० सबके उर अन्तर बसहु जानहु भावकुभाय ।
पुरजन जननी भरतहित होइसो करियउपाय ॥
आरतकहहिं बिचार न काऊ । सूझ जुआँरिहि आपनदाऊ ॥
सुनिमुनिबचन कहत रघुराऊ । नाथतुम्हारेहि हाथ उपाऊ ॥
सबकर हित रुख राउर राखे । आयसुदिये मुदित फुरभाखे ॥
प्रथम जो आयसु मोकहँ होई । माथे मानि करौं सिख सोई ॥
पुनि जेहिकहँ जस होब रजाई । सो सबभांतिकरिहि सेवकाई ॥
कह मुनि राम सत्य तुमभाखा । भरत सनेहबिचार न राखा ॥
तेहिते कहौं बहोरि बहोरी । भरतभक्ति भइममतिभोरी ॥
मोरे जान भरत रुचि राखी । जोकीजियसोशुभशिवसाखी ॥
दो० भरतबिनय सादरसुनिय करियबिचार बहोरि ।
करबसाधुमत लोकमत नृपनयनिगमनिचोरि ॥
गुरु अनुराग भरतपर देखी । राम हृदय आनन्द विशेखी ॥
भरतहिं धर्म धुरन्धर जानी । निज सेवकतन मानसबानी ॥
बोले गुरु आयसु अनुकूला । बचन मंजुमृदु मङ्गलमूला ॥
नाथ शपथ पितु चरण दुहाई । भयउनभुवन भरतसमभाई ॥
जे गुरुपद अम्बुज अनुरागी । ते लोकहु वेदहु बड़ भागी ॥
राउर जापर अस अनुरागू । को कहिसकै भरतसमभागू ॥
लखि लघुबन्धु बुद्धि सकुचाई । करत बदन पर भरत बड़ाई ॥
भरत कहहिं सो किये भलाई । असकहि राम रहे अरगाई ॥
दो० तब मुनि बोलेभरतसन सबसकोच तजि तात ।
कृपासिन्धु प्रिय बन्धुसन कहहु हृदयकी बात ॥
सुनि मुनि बचनराम रुखपाई । गुरुसाहिब अनुकूल अघाई ॥
लखि अपनेशिर सबछरभारू । कहि न सकैं कछुकरैं बिचारू ॥
पुलक शरीर सभा भे ठाढ़े । नीरज नयन नेह जल बाढ़े ॥

कहब मोर मुनिनाथ निबाहा । यहिते अधिक कहौं मैं काहा ॥
मैं जानौं निज नाथ सुभाऊ । अपराधिहु परकोह न काऊ ॥
मोपर कृपा सनेह बिशेखी । खेलतखुनसकबहुँ नहिंदेखी ॥
शिशुपन ते परिहरेउ न संगू । कबहुँ न कीन्हमोर मन भंगू ॥
मैं प्रभु कृपा रीति जिय जोहीं । हारेउ खेलि जितावहिंमोहीं ॥
दो० महूंसनेह सकोचबश सनमुख कहेउँ न बैन ।
दरशनतृप्ति न आजुलगि प्रेमपियासे नैन ॥
विधिनसकेउसहि मोरदुलारा । नीच बीच जननी मिसुपारा ॥
इहौ कहतमोहिं आजुनशोभा ।आपुनसमुझिसाधुशुचिकोभा॥
मातु मन्दि मैं साधु सुचाली । उरअसआनतकोटिकुचाली ॥
फरै कि कोदव बालि सुशाली । मुकता स्रवै कि शंबुकताली ॥
सपनेहुँ दोष कलेश न काहू । मोरअभाग उदधि अवगाहू ॥
बिनुसमुझे निजअघ परिपाकू । जानेउजाइ यतन कहकाकू ॥
हृदय हेरि हारेउँ सब ओरा । एकहिभांतिभलिहिभलमोरा ॥
गुरु गुसाइँ साहिब सियरामू । लागत मोहिं नीकपरिणामू ॥
दो० साधु सभाप्रभुगुरुनिकट कहौंसुथल सतिभाउ ।
प्रेम प्रपंच कि झूँठ फुर जानहिं मुनि रघुराउ ॥
भूपति मरण प्रेम प्रण राखी । जननीकुमतिजगतसबसाखी॥
देखि न जाहिं बिकलमहतारी । जरहिंदुसहज्वर पुरनरनारी ॥
महीं सकल अनरथ कर मूला । सोसुनिसमुझिसहौंसबशूला॥
सुनि बन गमनकीन्ह रघुनाथा । करिमुनिवेषलषणसियसाथा॥
बिनु पनहीं अरु प्यादेहि पाये । शंकर साखि रह्यों इहिघाये ॥
बहुरि निहारि निषाद सनेहू । कुलिशकठिन उरभयउनवेहू॥
अब सब आंखिन देखेउँ आई । जियत जीवजड़ सबै सहाई ॥
जिनहिं निरखिमगुसांपिनबीछी । तजहिंविषमविषतामसतीछी॥
दो० तेइ रघुनन्दन लषण सिय अनहित लागेजाहि ।
तासु तनय तजिदुसह दुख दैव सहावै काहि ॥

सुनिअति बिकलभरतवरबानी। आरतिप्रीतिबिनयनयसानी॥
शोक मगनसब सभा खँभारू। मनहुँ कमलबनपरयो तुषारू॥
कहि अनेकबिधि कथा पुरानी। भरतप्रबोधकीन्ह मुनिज्ञानी॥
बोले उचित बचन रघुनन्दू। दिनकर कुल कैरवबनचन्दू॥
तात जीय जनिकरहु गलानी। ईशअधीन जीवगति जानी॥
तीनकाल त्रिभुवन मत मोरे। पुण्यश्लोक तात कर तोरे॥
उर आनत तुमपर कुटिलाई। जाइ लोक परलोक नशाई॥
दोष देहिं जननिहिं जड़ तेई। जिन्हगुरुसाधुसभा नहिंसेई॥
दो० मिटहिं पाप परिपंच सब अखिल अमंगल भार।
लोक सुयश परलोक सुख सुमिरत नामतुम्हार॥
कहौं सुभाव सत्य शिवसाखी। भरत भूमि रह राउर राखी॥
तात कुतर्क करहु जनि जाये। बैर प्रेम नहिं दुरै दुराये॥
मुनिगणनिकट बिहँगमृगजाहीं। बाधकबधिक बिलोकिपराहीं॥
हितअनहितपशु पक्षिउ जाना। मानुष तनुगुणज्ञाननिधाना॥
तात तुमहिं मैं जानौं नीके। करौं कहा असमंजस जीके॥
राखेउ राउ सत्यमोहिं त्यागी। तनपरिहरेउ प्रेमप्रणलागी॥
तासु बचन मेटत मन शोचू। तेहिते अधिकतुम्हारसकोचू॥
तापरगुरुमोहिं आयसुदीन्हा। अवशिजोकहहु चहौंसोकीन्हा॥
दो० मन प्रसन्न करि सकुचतजि कहहु करौं सो आज।
सत्यसिन्धु रघुवर बचन सुनिभा सुखीसमाज॥
सुरगण सहित सभयसुरराजू। शोचहिं चाहतहोन अकाजू॥
करत विचार बनत कछु नाहीं। राम शरण सबके मनमाहीं॥
बहुरि बिचार परस्पर कहहीं। रघुबरभक्त भक्तिबशअहहीं॥
सुधि करि अम्बरीष दुर्बासा। भेसुरसुरपति निपटनिरासा॥
सहे सुरन्ह बहुकाल बिषादा। नरहरिकिये प्रकट प्रहलादा॥
लगिलगिकानकहहिंधुनिमाथा। अब सुरकाज भरतके हाथा॥
आन उपाय न देखिय देवा। मानत राम सुसेवक सेवा॥

हियसप्रेम सेवहिंसब भरतहिं । निजगुणशीलरामबशकरतहिं ॥

दो० सुनिसुरमतसुरगुरुकहेउ भल तुम्हारबड़भाग ।
सकलसुमंगलमूलजग भरतचरण अनुराग ॥

सीतापति सेवक सेवकाई । कामधेनु शत सरिस सुहाई ॥
भरत भक्ति तुम्हरेमन आई । तजहुशोच विधिबात बनाई ॥
देखि देवपति भरत प्रभाऊ । सहजस्वभाव विवशरघुराऊ ॥
मन थिर करहु देव डर नाहीं । भरतहिजानि रामपरिछाहीं ॥
सुनिसुरगुरुसुर सम्मत शोचू । अन्तर्यामी प्रभुहि सकोचू ॥
निजशिरभार भरतजियजानी । करतकोटिबिधिउरअनुमानी ॥
करि बिचार मनदीन्ह्यो टीका । राम रजायसु आपन नीका ॥
निज प्रणतजिराखेउप्रणमोरा । छोह सनेह कीन्हनहिं थोरा ॥

दो० कीन्ह अनुग्रह अमितअति सबबिधिसीतानाथ ।
करिप्रणाम बोले भरत जोरि जलज युगहाथ ॥

कहउँ कहावउँ का अब स्वामी । कृपा अम्बुनिधि अन्तर्यामी ॥
गुरु प्रसन्न साहिब अनुकूला । मिटीमलिनमनकलपितशूला ॥
अपडर डरउँ न शोच समूले । रविहि न दोषदेवदिशिभूले ॥
मोर अभाग मातु कुटिलाई । बिधिगतिविषमकालकठिनाई ॥
पांवरोपि सबमिलिमोहिं घाला । प्रणतपाल प्रण आपनपाला ॥
यह नइरीति न राउरि होई । लोकहु बेद बिदित नहिंगोई ॥
जग अनभल भलएक गुसांई । कहियहोइ भलकासु भलाई ॥
देव देवतरु सरिस स्वभाऊ । सनमुखबिमुखनकाहुहिकाऊ ॥

दो० जाइनिकट पहिंचानितरु छांहशमनसबशोच ।
मांगत अभिमत पावफल राउ रंकभल पोच ॥

लखिसबबिधि गुरुस्वामिसनेहू । मिटेउ छोभ नहिंमन संदेहू ॥
अब करुणाकर कीजिय सोई । जनहितप्रभुचितछोभनहोई ॥
जो सेवक साहिब संकोची । निजहितचहै तासुमतिपोची ॥
सेवक हित साहिब सेवकाई । करै सकलसुख लोभबिहाई ॥

स्वारथ नाथ फिरे सबहीका । कियेरजाइ कोटिबिधिनीका ॥
यह स्वारथ परमारथसारू । सकलसुकृतफलसुगतिशृँगारू ॥
देव एक बिनती सुनि मोरी । उचित होइतसकरब बहोरी ॥
तिलकसमाज साजिसबआना । करियसुफलप्रभुजोमनमाना ॥
दो० सानुजपठइयमोहिंबन कीजियसबहि सनाथ ।
नातरु फेरिय बन्धुदोउ नाथचलौं मैं साथ ॥
नतरु जाहिं बन तीनिउँ भाई । बहुरिय सीय सहित रघुराई ॥
जेहि बिधि प्रभु प्रसन्नमनहोई । करुणासागर कीजिय सोई ॥
देव दीन्ह सब मोपर भारू । मोरेनीति न धर्म्म बिचारू ॥
कहौं बचन सब स्वारथ हेतू । रहत न आरतके चित चेतू ॥
उतर देइ बिनु स्वामि रजाई । सो सेवक लखिलाज लजाई ॥
अस मैं अवगुणउदधि अगाधू । स्वामि सनेह सराहत साधू ॥
अब कृपालुमोहिं सोमत भावा । सकुचस्वामिमन जाइनपावा ॥
प्रभुपद शपथ कहौंसतिभाऊ । जग मंगलहित एक उपाऊ ॥
दो० प्रभु प्रसन्नमन सकुचतजि जो जेहि आयसुदेव ।
सोशिरधरिधरिकिरहिंसब मिटिहिअनटअवरेव ॥
भरत बचन शुचिसुनिसुरहरषे । साधु सराहि सुमनसुरबरषे ॥
असमंजसबश अवधनिवासी । प्रमुदितमनतापस बनबासी ॥
चुप रहिगे रघुनाथ सकोची । प्रभुगतिदेखिसभासबशोची ॥
जनकदूत तेहिअवसर आवा । मुनिबशिष्ठसुनि बेगिबुलावा ॥
करि प्रणाम तिन रामनिहारे । बेष देखि भे निपट दुखारे ॥
दूतहिं मुनिवर पूंछी बाता । कहहु बिदेह भूप कुशलाता ॥
सुनि सकुचाइ नाइमहिमाथा । बोले चरवर जोरे हाथा ॥
बूझत राउर सादर साईं । कुशल हेतु सोभयउ गुसाईं ॥
दो० नाहित कोशलनाथ के साथकुशल गइ नाथ ।
मिथिला अवधविशेषते जगसबभयउअनाथ ॥
कोशलपतिगति सुनिजनकौरा । भे सब लोग शोचबशबौरा ॥

जेहि देखा तेहि समय बिदेहू । नाम सत्यअस लाग न केहू ॥
नारिकुचालि सुनत महिपाले ।सूझनकछुजसमणिबिनुव्याले ॥
भरतराज रघुबर बनबासू । भा मिथिलेशहि हृदय हरासू ॥
नृप बूझेबुध सचिव समाजू । कहहुबिचारि उचितकाआजू ॥
समुझि अवधअसमंजसदोऊ । चलियकिरहियनकहकछुकोऊ ॥
नृपति धीरधरि हृदय बिचारी । पठये अवध चतुर चरचारी ॥
बूझि भरत गति भाउ कुभाऊ । आयहु बेगि न होइ लखाऊ ॥
दो० गये अवध चरभरत गति बूझि देखि करतूति ।
चले चित्रकूटहि भरत चार चले तिरहूति ॥
दूतन आइ भरत की करणी । जनकसमाजयथामतिबरणी ॥
सुनिगुरुपुरजनसचिवमहीपति । भेसबशोचसनेहबिकलमति ॥
धरि धीरज करि भरत बड़ाई । लिये सुभट साहनी बुलाई ॥
घर पुर देश राखि रखवारे । हय गज रथ बहुयानसँवारे ॥
दुघड़ी साधि चलेततकाला । कियबिश्राम न मगुमहिपाला ॥
भोरहि आजु नहाइ प्रयागा । चलेयमुन उतरन सबलागा ॥
खबरि लेन हम पठये नाथा । तिनकहि असमहिनायहुमाथा ॥
साथ किरात छसातक दीन्हे । मुनिवर तुरत बिदाचरकीन्हे ॥
दो० सुनत जनक आगमन सब हर्षेउ अवध समाज ।
रघुनन्दनहिं सकोचबड़ शोच बिबश सुरराज ॥
गरइ गलानि कुटिल कैकेई । काहि कहै केहि दूषणदेई ॥
असमनआनि मुदित नरनारी । भयउ बहोरिरहब दिनचारी ॥
इहिप्रकार गत बासर सोऊ । प्रात अन्हान लगे सबकोऊ ॥
करि मज्जन पूजहिं नर नारी । गणपति गौरिपुरारि तमारी ॥
रमारमण पद बन्दि बहोरी । बिनवहिंअंचलअंजलिजोरी ॥
राजा राम जानकी रानी । आनँदअवधिअवधरजधानी ॥
सबसबसे फिरिसहितसमाजा । भरतहि राम करें युवराजा ॥
इहिसुख सुधासींचि सबकाहू । देव देहु जगजीवन लाहू ॥

दो० गुरु समाज भाइन सहित रामराज पुर होउ ।
अछत राम राजाअवध मरिय माँगु सबकोउ ॥
सुनि सनेहमय पुरजनबानी । निन्दहिंयोगबिरतिमुनिज्ञानी॥
इहिबिधिनित्यकर्मकरि पुरजन । रामहिंकरहिंप्रणामपुलकितन॥
ऊँच नीच मध्यम नर नारी । लहैंदरश निजनिजअनुहारी ॥
सावधान सबही सनमानहिं । सकलसराहतकृपानिधानहिं ॥
लरिकाई ते रघुबर बानी । पालत प्रीतिरीति पहिंचानी ॥
शील सकोच सिन्धु रघुराऊ । सुमुखसुलोचनसरलसुभाऊ ॥
कहत राम गुण गण अनुरागे । सब निज भागसराहनलागे ॥
हम सम पुण्य पुंज जग थोरे । जिनहिं रामजानत करिमोरे ॥
दो० प्रेम मगन तेहिसमयसब सुनि आवत मिथिलेश ।
सहित सभा संभ्रम उठे रबिकुल कमल दिनेश ॥
आगे गमन कीन्ह रघुनाथा । भाइसचिव गुरुपुरजनसाथा ॥
गिरिवर दीख जनकनृपजबहीं । करिप्रणाम त्यागारथ तबहीं ॥
राम दरश लालसा उछाहू । पथश्रमलेश कलेश न काहू ॥
मन तहँ जहँ रघुवर बैदेही ।बिनुमनतजदुखसुखसुधिकेही॥
आवत जनकचले इहि भाँती । सहित सनेह प्रेम मदमाती ॥
आये निकट देखि अनुरागे । सादर मिलन परस्पर लागे ॥
लगे जनकमुनिगणपदवन्दन ।ऋषिनप्रणामकीन्हरघुनन्दन॥
भाइन सहितराममिलिराजहिं । चले लिवाइ समेतसमाजहिं ॥
दो० आश्रम सागर शान्तरस पूरण पावन पाथ ।
सैन मनहुँ करुणासरित लियेजात रघुनाथ ॥
बोरति ज्ञान बिराग करारे । बचनसशोकमिलतनदिनारे ॥
शोच उसास समीर तरंगा । धीरज तटतरुवर करभंगा ॥
विषम बिषाद तुरावति धारा । भय भ्रम भवँरावर्त अपारा ॥
केवट बुध विद्या बड़ि नावा । सकहिन खेइ एकनहिंआवा ॥
बनचर कोल्ह किरात बिचारे । थकेबिलोकि पथिकहियहारे ॥

आश्रमउदधि मिली जब जाई । मनहुँउठेउ अंबुधिअकुलाई ॥
शोकबिकल दोउ राजसमाजा । रहान ज्ञानन धीरज लाजा ॥
भूप रूप गुण शील सराही । शोचहिंशोकसिंधु अवगाही ॥
छं० अवगाहिशोकसमुद्रशोचहिं नारिनरव्याकुलमहा ।
देदोषसकलसरोषबोलहिं बामबिधिकीन्हीकहा ॥
सुरसिद्धतापसयोगिजन मुनिदशादेखि विदेहकी ।
तुलसी न समरथकोउजो तरिसकैसरितसनेहकी ॥
सो० किये अमित उपदेश जहँ तहँ लोगनमुनिवरन ।
धीरज धरियनरेश कहेउ वशिष्ठ विदेह सन ॥
जासुज्ञानरबिभवनिशिनाशा । बचनकिरणमुनिकमलबिकाशा ॥
तेहिकि मोह महिमा नियराई । यह सिय राम सनेह बड़ाई ॥
बिषयी साधक सिद्ध सयाने । त्रिविधजीव जगवेद बखाने ॥
राम सनेह सरस मन जासू । साधु सभा बड़आदर तासू ॥
सोह न राम प्रेम बिनुज्ञाना । कर्णधारबिनुजिमिजलयाना ॥
मुनिबहुबिधिविदेह समुझाये । रामघाट सबलोग अन्हाये ॥
सकल शोक संकुल नर नारी । सो बासर बीतेउ बिनुबारी ॥
पशुखगमृगनन्ह कीन्ह अहारा । प्रियपरिजनकरकवनविचारा ॥
दो० दोउ समाज निमि राजरघु राजनहाने प्रात ।
बैठे सबबट बिटप तर मन मलीन कृशगात ॥
जे महिसुर दशरथ पुरबासी । जेमिथिलापतिनगरनिवासी ॥
हंस बंश गुरु जनक पुरोधा । जिन्हजगमगपरमारथशोधा ॥
लगे कहन उपदेश अनेका । सहित धर्मनयविरतिविवेका ॥
कौशिककहिकहि कथापुरानी । समुझाई सब सभा सुबानी ॥
तबरघुनाथ कौशिकहि कहेऊ । नाथकालिबिनुजलसबरहेऊ ॥
मुनिकहउचित कहत रघुराई । गयउ बीतिदिन पहरअढ़ाई ॥
ऋषिरुखलखिकहतिरहुतिराजू । इहांउचितनहिंअशनअनाजू ॥
कहा भूपभल सबहि सोहाना । पाइ रजायसु चले नहाना ॥

दो० तेहि अवसर फल फूलदल मूल अनेक प्रकार।
लैआये बनचर बिपुल भरि भरि कांवरि भार॥

कामद भे गिरि रामप्रसादा। अवलोकत अपहरतबिषादा॥
सर सरिताबन भूमिबिभागा। जनुउमँगत आनँदअनुरागा॥
बेलिबिटप सबसफल सफूला। बोलतखगमृगअतिअनुकूला॥
तेहि अवसरबनअधिकउछाहू। त्रिविधसमीर सुखदसबकाहू॥
जाइ न बरणि मनोहरताई। जनुमहिकरति जनकपहुनाई॥
तब सब लोग नहाइ नहाई। रामजनक मुनि आयसु पाई॥
देखि देखि तरुवर अनुरागे। जहँतहँ पुरजन उतरनलागे॥
दल फलफूल कन्दबिधिनाना। पावन सुन्दर सुधा समाना॥

दो० सादर सबकहँ राम गुरु पठये भरि भरि भार।
पूजिपितरसुर अतिथि गुरु लगेकरन फलहार॥

इहिबिधि बासर बीते चारी। रामनिरखि नरनारि सुखारी॥
दुहुँ समाजअसरुचि मनमाहीं। बिनसियरामफिरबभलनाहीं॥
सीता राम संग बनबासू। कोटिअमरपुर सरिससुपासू॥
परिहरि लषण राम वैदेही। जेहिघरभाव बाम बिधितेही॥
दाहिन दैव होइ जब सबहीं। रामसमीप बसियबनतबहीं॥
मन्दाकिनि मज्जन तिहुँकाला। रामदरश मुद मंगल माला॥
अटनरामगिरिबनतापसथल। अशनअमियसमकन्दमूलफल॥
सुख समेत संवत दुइ साता। पलसमहोहिंन जानियजाता॥

दो० इहिसुख योगन लोगसब कहहिं कहां असभाग।
सहज सुभावसमाजदुहुँ रामचरण अनुराग॥

इहिबिधि सकल मनोरथकरहीं। बचनसप्रेम सुनतमनहरहीं॥
सीय मातु तेहि समय पठाई। दासी देखि सुअवसर आई॥
सावकाशसुनि सब सियसासू। आई जनक राज रनिवासू॥
कौशल्या सादर सनमानी। आसनदीनसमयसमआनी॥
शील सनेह सरस दुहुँ ओरा। द्रवहिंदेखिसुनिकुलिशकठोरा॥

पुलकशिथिलतनुबारिविलोचन।महिनखलिखनलगींसबशोचन
सब सियराम प्रेमकी मूरति । जनु करुणा बहुवेष बिसूरति ॥
सीयमातुकह बिधिबुधिबांकी । जिमिपयफेनु फोर पविटांकी ॥
दो० सुनिय सुधा देखियगरल सबकरतूति कराल ।
जहँतहँ काक उलूकबक मानस सकृतमराल ॥
सुनिसशोचकहदेविसुमित्रा । विधिगतिअतिबिपरीतविचित्रा ॥
जो सृजि पालै हरै बहोरी । बालकेलिसमविधिमतिभोरी ॥
कौशल्या कह दोष न काहू । कर्मबिबशदुखसुखक्षतिलाहू ॥
कठिन कर्मगतिजान विधाता । जोशुभअशुभ कर्मफलदाता ॥
ईश रजाइ शीश सबही के । उतपतिथितिलयविषमअमीके ॥
देवि मोहबश शोचिय बादी । बिधिप्रपंचअसअचलअनादी ॥
भूपतिजियबमरबउरआनी । शोचियसखिलखिनिजहितजानी ॥
सीय मातु कह सत्य सुवानी । सुकृतीअवधिअवधपतिरानी ॥
दो० लषणराम सियजाहिंबन भलपरिणाम नपोच ।
गहबरिहिय कहकौशला मोहिं भरतकरशोच ॥
ईश प्रसाद अशीश तुम्हारी । सुत सुतबधूदेवसरि बारी ॥
राम शपथ मैं कीन्ह न काऊ । सोकरिसखीकहों सतिभाऊ ॥
भरतशील गुण बिनय बड़ाई । भायप भक्ति भरोस भलाई ॥
कहत शारदहु के मति हीचे । सागरसीप कि जाहिंउलीचे ॥
जानौ सदा भरत कुल दीपा । बारबार मोहिंकहेउ महीपा ॥
कसे कनक मणि पारिख पाये । पुरुष परखिये समयसुभाये ॥
अनुचित आजुकहबअसमोरा । शोकसनेह सयानप थोरा ॥
सुनि सुरसरि समपावनिबानी । भई सनेह बिकल सबरानी ॥
दो० कौशल्या कह धीर धरि सुनहुदेवि मिथिलेशि ।
को बिबेक निधिबल्लभहि तुमहिंसकै उपदेशि ॥
रानि राय सन अवसर पाई । आपनिभांतिकहब समुभाई ॥
राखियलषण भरतगबनाहिंबन । जो यह मतमानैं महीपमन ॥

तौ भलियतन सुकरहु बिचारी । मोरे शोच भरत कर भारी ॥
गूढ़ सनेह भरत मन माहीं । रहेनीकमोहिं लागत नाहीं ॥
लखिस्वभावसुनिसरलसुबानी । सबमहँमगनकरुणरससानी ॥
नभप्रसून झरिधन्यधन्य धुनि । शिथिलसनेहसिद्धयोगीमुनि ॥
सबरनिवासथकित लखि रहेऊ । तब धरिधीर सुमित्रा कहेऊ ॥
देवि दण्ड युग यामिनि बीती । राम मातुसुनि उठी सप्रीती ॥
दो० बेगिपाँय धारियथलहि कहसनेह सतिभाय ।
हमरे तौ अब ईश गति के मिथिलेश सहाय ॥
लखिसनेह सुनि बचनबिनीता । जनकप्रियागहि पांवपुनीता ॥
देविउचित अस बिनयतुम्हारी । दशरथघरनि राम महतारी ॥
प्रभु अपने नीचहु आदरहीं । अग्निधूमगिरिशिरतृणधरहीं ॥
सेवक राउ कर्म्म मम बानी । सदा सहाय महेश भवानी ॥
रौरे अंग योग जग को है । दीपसहाय कि दिनकर सोहै ॥
रामजाय बन करि सुरकाजू । अचलअवधपुर करिहहिंराजू ॥
अमर नाग नर रामबाहुबल । सुखबसिहहिंअपनेअपनेथल ॥
यह सबयाज्ञवल्क्य कहिराखा । देवि न होइ मृषा मुनिभाखा ॥
दो० असकहिपगुपरिप्रेमअति सियहित बिनयसुनाइ ।
सिय समेत सिय मातुतब चली सुआयसुपाइ ॥
प्रिय परिजनहिं मिली बैदेही । जो जेहियोगभांति तसतेही ॥
तापस वेष जानकिहि देखी । भेसबबिकल बिषादबिशेखी ॥
जनक राम गुरु आयसु पाई । चले थलहि सिय देखीआई ॥
लीन्ह लाइउर जनक जानकी । पाहुनि पावनि प्रेमप्रानकी ॥
उर उमगेउ अम्बुधि अनुरागू । भयहु भूपमन मनहुँप्रयागू ॥
सिय सनेह बट बाढ़त जोहा । तापर रामप्रेम शिशुसोहा ॥
चिरंजीविमुनिज्ञान विकलजनु । बूड़त लहेउ बालअवलम्बनु ॥
मोह मगन मतिनहिं बिदेहकी । महिमासियरघुबर सनेहकी ॥
दो० सिय पितुमात सनेहवश बिकलनसकी सँभारि ।

धरविसुता धीरजधरेउ समय सुधर्मविचारि ॥
तापस वेष जनक सिय देखी । भयउ प्रेमपरितोष विशेखी ॥
पुत्रि पवित्र किये कुल दोऊ । सुयशधवलजगकहसबकोऊ ॥
जिमिसुरसरि कीरतिसरितोरी । गवनकीन्हविधिअण्डकरोरी ॥
गंग अवनि थल तीनि बड़ेरे । यहिकिय साधु समाजघनेरे ॥
पित कह सत्य सनेह सुबानी । सीयसकुचिमनमाहँ समानी ॥
पुनि पितु मातुलीन्ह उरलाई । सिखआशिषहितदीन्हसुहाई ॥
कहति न सीयसकुचमनमाहीं । इहां बसब रजनीभलनाहीं ॥
लखि रुखरानि जनायउ राऊ । हृदय सराहत शीलसुभाऊ ॥
दो० बारबार मिलिभेंटि सिय बिदाकीन्हसनमानि ।
कहीसमयशिर भरतगति रानिसुबानिसयानि ॥
सुनि भूपाल भरत ब्यवहारू । सोनसुगन्ध सुधाशशिसारू ॥
मूंदे सजल नयन पुलके तन । सुयशसराहनलगेमुदितमन ॥
सावधानसुनुसुमुखि सुलोचनि । भरतकथाभवबन्धविमोचनि ॥
धर्मराज नय ब्रह्म बिचारू । यहां यथामति मोरप्रचारू ॥
सोमतिमोरि भरत महिमाहीं । कहौंकाहछलिछुअतिनछाहीं ॥
बिधिगणपतिअहिपतिशिवशारद । कबिकोबिदबुधबुद्धिबिशारद ॥
भरत चरित कीरति करतूती । धर्म्मशीलगुणबिमलबिभूती ॥
समुझतसुनत सुखदसबकाहू । लोक लाज परलोक निबाहू ॥
दो० निरवधिगुणनिरुपम पुरुष भरतभरतसमजानि ।
कही सुमेरु कि सेरसम कबिकुलमतिसकुचानि ॥
अगम सबहिबरणत बरबरणी । जिमिजलहीनमीनगणधरणी ॥
भरत अमित महिमासुनुरानी । जानहिंरामनसकहिं बखानी ॥
वरणिसप्रेम भरत सतभाऊ । तियजियकीरुचिलखिकहराऊ ॥
बहुरहिं लषण भरत बनजाहीं । सबकर भल सबके मनमाहीं ॥
देवि परन्तु भरत रघुबरकी । प्रीतिप्रतीति जाइनहिंतरकी ॥
भरत सनेह अवधि ममताके । यद्यपि राम सींव समताके ॥

परमारथ स्वारथ सुख सारे । भरत न सपनेहुँ मनहुँ निहारे ॥
साधन सिद्धि राम पद नेहू । मोहिंलखिपरतभरत मतयेहू ॥
दो० भोरेहु भरत न पेलिहहिं मनमहँ रामरजाइ ।
करिय न शोच सनेहवश कहेउ भूपबिलखाइ ॥
राम भरतगुण कहत सप्रीती । निशिदम्पतिहिपलकसमबीती ॥
राज समाज प्रात युग जागे । न्हाइ न्हाइ सुर पूजन लागे ॥
गे नहाइ गुरुपहँ रघुराई । बन्दि चरण बोले रुख पाई ॥
नाथ भरत पुरजन महतारी । शोच बिकल बनबासदुखारी ॥
सहितसमाज राउ मिथिलेशू । बहुत दिवसभे सहतकलेशू ॥
उचितहोय सो कीजिय नाथा । हित सबही कर रौरे हाथा ॥
असकहि अतिसकुचे रघुराऊ । मुनिपुलके लखिशीलसुभाऊ ॥
तुम बिनुराम सकलसुखसाजा । नरकसरिस दुहुँराजसमाजा ॥
दो० प्राण प्राणके जीवके जिय सुखके सुख राम ।
तुमतजितातसोहातगृहजिनहिंतिनहिंबिधिबाम ॥
सोसुख करम धरम जरिजाऊ । जहँ न राम पद पंकजभाऊ ॥
योग कुयोग ज्ञान अज्ञानू । जहां न राम प्रेम परधानू ॥
तुमबिन दुखी सुखी तुम तेही । तुमजानहुजियजोजेहि केही ॥
राउर आयसु शिर सबही के । विदितकृपालहिंगतिसबनीके ॥
आपु आश्रमहि धारिय पाऊ । भये सनेह शिथिलमुनिराऊ ॥
करि प्रणाम तब राम सिधाये । ऋषिधरिधीरजनकपहँआये ॥
राम बचन गुरु नृपहि सुनाये । शील सनेह सुभाव सुहाये ॥
महाराज अब कीजिय सोई । सबकर धर्म्मसहितहितहोई ॥
दो० ज्ञाननिधान सुजान शुचि धर्म्मधीर नरपाल ।
तुम बिनु असमंजस शमन को समर्थ इहिकाल ॥
सुनिमुनिबचन जनकअनुरागे । लखिगतिज्ञानबिरागबिरागे ॥
शिथिलसनेह गुणत मनमाहीं । आये इहां कीन्ह भल नाहीं ॥
रामहिं राय कहेउ बनजाना । कीन्हआपुप्रियप्रेम समाना ॥

हम अब बन ते बनहिं पठाई । प्रमुदित फिरब बिवेकबड़ाई ॥
तापसमुनिमहिसुरगति देखी । भयेप्रेमबश बिकल बिशेखी ॥
समय समुझि धरिधीरजराजा । चलेभरतपहँ सहितसमाजा ॥
भरत आय आगे ह्वै लीन्हा । अवसरसरिससुआसनदीन्हा ॥
तात भरत कह तिरहुति राऊ । तुमहिंबिदितरघुबीरसुभाऊ ॥
दो० राम सत्य ब्रत धर्म्मरत सब कर शील सनेहु ।
संकटसहत सकोचबश, कहिय जो आयसुदेहु ॥
सुनितनपुलकिनयन भरिबारी । बोले भरत धीर धरि भारी ॥
प्रभु प्रियपूज्य पितासम आपू । कुलगुरुसमहितमाय न बापू ॥
कौशिकादिमुनि सहित समाजू । ज्ञानअम्बुनिधिआपुनआजू ॥
शिशु सेवक आयसु अनुगामी । जानिमोहिंसिखदेइयस्वामी ॥
इहि समाज थल बूझब राउर । मन मलीन मैं बोलब बाउर ॥
छोटे बदन कहौं बड़ि बाता । छमबतातलखिबामविधाता ॥
आगम निगम प्रसिद्ध पुराना । सेवा धर्म्म कठिनजगजाना ॥
स्वामि मर्म स्वारथहि बिरोधू । बधिरअन्धप्रेमहि न प्रबोधू ॥
दो० राखि राम रुख धर्म्म ब्रत पराधीन मोहिं जान ।
सबके सम्मत सर्ब हित करिय प्रेम पहिचान ॥
भरत बचनसुनि देखि सुभाऊ । सहित समाज सराहत राऊ ॥
सुगम अगम मृदुमंजु कठोरा । अर्थअमितअतिआखरथोरा ॥
जो मुख मुकुरमुकुर निजपाणी । गहिनजायअसअद्भुत बाणी ॥
भूप भरत मुनि साधु समाजू । गेजहँ बिबुधकुमुदद्विजराजू ॥
सुनिसुधिशोचविकलसबलोगा । मनहुँमीनगणनवजलयोगा ॥
देव प्रथम कुलगुरुगति देखी । निरखिविदेह सनेह विशेखी ॥
रामभक्ति मय भरत निहारे । सुर स्वारथी हरषि हियहारे ॥
सब कहँ राम प्रेम मय पेखा । भये अलेख शोचबश लेखा ॥
दो० राम सनेह सकोच बश कह सशोच सुरराज ।
रचहुप्रपंचहि पंच मिलि नाहितभयउअकाज ॥

सुरन सुमिरि शारदा सराही। देवि देव शरणागत पाही॥
फेरिभरत मतिकरिनिज माया। पालविबुधकुलकरिछलछाया॥
बिबुध बिनयसुनि देविसयानी। बोली सुरस्वारथि जड़जानी॥
मोसन कहहु भरत मतिफेरू। लोचनसहस न सूझसुमेरू॥
विधि हरिहर माया बड़िभारी। सोनभरत मतिसकै निहारी॥
सोमति मोहिं कहत करुभोरी। चन्दिनिकरे कि चन्दकचोरी॥
भरत हृदय सियराम निवासू। तहँकितिमिरजहँतरणिप्रकासू॥
असकहिशारदगइविधिलोका। विबुधविकलनिशिमानहुँकोका॥

दो० सुर स्वारथी मलीन मन कीन्ह कुमंत्र कुठाट।
रचिप्रपंच मायाप्रबल भयभ्रम अरत उचाट॥

करिकुचाल शोचत सुर राजू। भरतहाथ सबकाज अकाजू॥
गये जनक रघुनाथ समीपा। सनमाने सब रघुकुल दीपा॥
समयसमाज धर्म्म अविरोधा। बोले तब रघुबंश पुरोधा॥
जनक भरत सम्बाद सुनाई। भरत कहावति कही सुहाई॥
तात राम जस आयसु देहू। सो सब करैं मोर मत येहू॥
सुनि रघुनाथ जोरि युगपाणी। बोलेसत्य सरल मृदु बाणी॥
विद्यमान आपुन मिथिलेशू। मोर कहा सबभाँति भदेशू॥
राउर राय रजायसु होई। राउरि शपथ सहीशिर सोई॥

दो० राम शपथसुनि मुनि जनक सकुचे सभासमेत।
सकल बिलोकहिं भरत मुख बनै न उत्तर देत॥

सभा सकुचवश भरत निहारी। राम बन्धु धरि धीरज भारी॥
कुसमय देखि सनेह सँभारा। बढ़तविन्ध्यजिमिघटजनिवारा॥
शोककनक लोचनमति छोनी। हरीविमलगुणगणजगयोनी॥
भरत विवेक बराह बिशाला। अनायास उघरे तेहिकाला॥
करिप्रणाम सबकहँ करजोरी। राम राउ गुरु साधु निहोरी॥
छमबआजुअति अनुचितमोरा। कहउँबदन मृदुबचनकठोरा॥
हिय सुमिरी शारदा सुहाई। मानस ते मुख पंकज आई॥

बिमल बिबेक धर्मनय शाली । भरत भारती मंजु मराली ॥
दो० निरखिबिबेकबिलोचनहिं शिथिलसनेहसमाज ।
करिप्रणाम बोलेभरत सुमिरि सीय रघुराज ॥
प्रभुपितुमातुसुहृद् गुरु स्वामी । पूज्य परमहित अन्तरयामी ॥
सरल सुसाहिब शील निधानू । प्रणतपाल सरवज्ञ सुजानू ॥
समरथ शरणागत हितकारी । गुणग्राहकअवगुणअघहारी ॥
स्वामिगुसाइंहि सदृश गुसांई । मोहिंसमान मैं स्वामिदोहाई ॥
प्रभु पितु बचन मोहबशपेली । आयउँ इहां समाज सकेली ॥
जगभल पोच ऊंच अरु नीचू । अमी अमरपद माहुर मीचू ॥
राम रजाइ मेटि मन माहीं । देखासुना कतहुँ कोउनाहीं ॥
सो मैं सबबिधि कीन्ह ढिठाई । प्रभु मानी सनेह सेवकाई ॥
दो० कृपा भलाई आपनी नाथकीन्ह भलमोर ।
दूषण भे भूषणसरिस सुयशचारु चहुँओर ॥
राउर रीति सुबाणि बड़ाई । जगतविदितनिगमागमगाई ।
कूर कुटिल खलकुमति कलंकी । नीचनिशील निरीशनिशंकी ॥
तेउसुनि शरण सामुहे आये । सकृत प्रणाम किये अपनाये ॥
देखि दोष कबहुँन उर आने । सुनिगुणसाधु समाजबखाने ॥
को साहब सेवकहि नेवाजी । आप समानसाज सबसाजी ॥
निजकरतूति न समुझियसपने । सेवकसकुच शोच उरअपने ॥
सो गुसाईं नहिं दूसर कोपी । भुजा उठाइ कहौं प्रणरोपी ॥
पशु नाचत शुक पाठ प्रवीना । गुणगति नटपाठक आधीना ॥
दो० सो सुधारि सनमानिजन किये साधु शिरमोर ।
कोकृपालु बिनु पालिहै बिरदावलि बरजोर ॥
शोक सनेह कि बाल सुभाये । आयसुलाइ रजायसु पाये ॥
तबहुँ कृपालु हेरि निज ओरा । सबहिंभांतिभलमानेहुं मोरा ॥
देखेउँ पायँ सुमंगल मूला । जानेउँस्वामिसहजअनुकूला ॥
बड़े समाज बिलोकेउँ भागू । बड़ी चूक साहिब अनुरागू ॥

कृपा अनुग्रह अंग अघाई । कीन्हकृपानिधिसबअधिकाई ॥
राखा मोर दुलार गुसांई । अपने शील सुभाव भलाई ॥
नाथ निपट में कीन्ह ढिठाई । स्वामिसमाजसकोच बिहाई ॥
अविनय विनययथारुचिबानी । क्षमिय देवअतिआरतजानी ॥
दो० सुहृदसुजानसुसाहिबहि बहुतकहब बड़िखोरि ।
आयसुदेइय देवअब समय सुधारिय मोरि ॥
प्रभुपद पद्म पराग दोहाई । सत्य सुकृतसुख सींव सुहाई ॥
सो करिकहौं हिये अपनेकी । रुचि जागतसोवतसपनेकी ॥
सहज सनेह स्वामि सेवकाई । स्वारथ छलफलचारिविहाई ॥
आज्ञा सम न सुसाहिबसेवा । सो प्रसाद जन पावै देवा ॥
असकहि प्रेम विवशभे भारी । पुलक शरीर बिलोचनबारी ॥
प्रभुपद कमल गहे अकुलाई । समय सनेह न सोकहिजाई ॥
कृपासिन्धु सनमानि सुबाणी । बैठाये समीप गहि पाणी ॥
भरतविनयसुनि देखिसुभाऊ । शिथिल सनेह सभा रघुराऊ ॥
छं० रघुराउशिथिलसनेह साधुसमाजमुनिमिथिलाधनी ।
मनमहँसराहत भरत भायप भक्तिकी महिमाघनी ॥
भरतहिंप्रशंसतविबुधबरसत सुमनमानसमलिनसे ।
तुलसीबिकलसबलोगसुनिसकुचेनिशागमनलिनसे ॥
सो० देखि दुखारी दीन दुहुँ समाज नर नारिसब ।
मघवा महा मलीन मुये मारि मंगल चहत ॥
कपट कुचालि सींव सुरराजू । परअकाज प्रियआपनकाजू ॥
काक समान पाक रिपु रीती । छलीमलीन न कतहुँप्रतीती ॥
प्रथमकुमति करिकपटसकेला । सो उचाट सबके शिरमेला ॥
सुर माया सब लोग बिमोहे । राम प्रेमअतिशय न बिछोहे ॥
भयउचाट सबमन थिरनाहीं । क्षणबनरुचिक्षणसदनसुहाहीं ॥
दुबिध मनोगति प्रजादुखारी । सरितसिंधुसंगम जिमिवारी ॥
दुचितकतहुँ परितोषन लहहीं । एक एकसन मर्म न कहहीं ॥

लखिहिय हँसिकहकृपानिधानू । सरिसश्वानमघवानिजवानू ॥
दो० भरतजनकमुनिगणसचिव साधुसचेत बिहाइ ।
लगी देवमाया सबहिं यथायोग जनपाइ ॥
कृपासिंधु लखि लोग दुखारे । निज सनेह सुरपतिछलमारे ॥
सभा राउगुरु महिसुर मंत्री । भरत भक्ति सबकी मतियंत्री ॥
रामहिं चितवत चित्र लिखेसे । सकुचत बोलतवचनसिखेसे ॥
भरतप्रीति नित बिनय बड़ाई । सुनतसुखदबरणतकठिनाई ॥
जासु बिलोकि भक्ति लवलेशू । प्रेममगनमुनिगणमिथिलेशू ॥
महिमा तासुकहैकिमि तुलसी ।भक्तिप्रभावसुमतिहियहुलसी॥
आपु छोट महिमा बड़ि जानी । कबिकुलकानिमानिसकुचानी॥
कहिनसकतगुणरुचिअधिकाई । मतिगति बालबचनकीनाई ॥
दो० भरतबिमलयशबिमलबिधु सुमतिचकोरकुमारि।
उदितबिमलजनहृदयनभ इकटकरहीनिहारि ॥
भरतसुभावन सुगम निगमहू । लघुमतिचापलताकविक्षमहू ॥
कहत सुनत सतिभाव भरतको । सीयराम पद होइ न रतको ॥
सुनतहिभरतहि प्रेमरामको । जेहिनसुगमतेहिसरिसबामको ॥
देखि दयाल दशा सबहीकी । राम सुजान जानिजनजीकी ॥
धर्म धुरीण धीर नय नागर । सत्य सनेह शील सुखसागर ॥
देशकाल लखिसमय समाजू । नीति प्रीति पालक रघुराजू ॥
बोले बचन बाणि सरवससे ।हितपरिणामसुनतशशिरससे ॥
तात भरत तुम धर्म धुरीणा । लोक वेदविधि परम प्रवीणा ॥
दो० कर्म बचन मानस बिमल तुमसमान तुमतात ।
गुरुसमाजलघुबंधुगुणकुसमयकिमिकहिजात ॥
जानहु तात तरणि कुलरीती । सत्यसिन्धु पितुकीरतिप्रीती ॥
समय समाजलाज गुरुजनकी । उदासीनहितअनहितमनकी॥
तुमहिंविदित सबहीकर मरमू । आपन मोर परमहित धरमू ॥
मोहिंसबभाँति भरोसतुम्हारा । तदपिकहौं अवसरअनुसारा॥

तात तात बिनु बात हमारी । केवल कुलगुरु कृपासम्हारी ॥
नतरु प्रजा पुरजन परिवारू । हमहिंसहित सबहोतदुखारू ॥
जो बिनुअबसर अथवदिनेशू । जग केहिकहौ न होइकलेशू ॥
तसउत्पात तात बिधिकीन्हा ।मुनिमिथिलेशराखिसबलीन्हा॥
दो० राज काज सबलाजपति धर्मधरणि धनधाम ।
गुरुप्रभावपालिहिसबहि भलहोइहिपरिणाम ॥
सहितसमाज तुम्हार हमारा । घर बन गुरुप्रसाद रखवारा ॥
मातु पिता गुरु स्वामि निदेशू ।सकल धर्म धरणी धर शेशू ॥
सो तुम करहु करावहु मोहू । तात तरणि कुलपालक होहू ॥
साधन एक सकल सिधि देनी । कीरति सुगति भूतिमयबेनी ॥
सो बिचारि सहि संकट भारी । करहु प्रजा परिवार सुखारी ॥
बांटिबिपतिसबही मिलिभाई ।तुमहिंअवधिभरिअतिकठिनाई॥
जानि तुमहिं मृदुकहौं कठोरा । कुसमयतातनअनुचितमोरा॥
होहिं कुठांव कुबन्धु सुहाये । आड़ियहाथअसिनिकेघाये ॥
दो० सेवक करपद नयन से मुख सो साहिब होइ ।
तुलसीप्रीतिकीरीतिसुनि सुकबिसराहहिं सोइ ॥
सभा सकलसुनि रघुबरबानी । प्रेम पयोधिअमियजनुसानी ॥
शिथिल समाज सनेहसमाधी । देखि दशा चुप शारदसाधी ॥
भरतहि भयउ परम संतोषू ।सनमुखस्वामिबिमुखदुखदोषू॥
मुख प्रसन्न मनमिटा बिषादू । भाजनु गूंगहि गिरा प्रसादू ॥
कीन्ह सप्रेम प्रणाम बहोरी । बोले पाणि पंकरुह जोरी ॥
नाथ भयो सुख साथ गयेको । लहेउँ लाभ जगजन्म भयेको ॥
अब कृपालु जसआयसु होई । करौं शीश धरि सादर सोई ॥
सो अवलम्ब देव मोहिं देई । अवधि पार पावउँ जेहि सेई ॥
दो० देव देव अभिषेक हित गुरुअनुशासन पाइ ।
आनेउँ सबतीरथसलिल तेहि कहँ काहरजाइ ॥
एक मनोरथ बड़ मन माहीं । सभयसकोच जातकहिनाहीं ॥

कहहु तातप्रभु आयसु पाई । बोले बाधि सनेह सुहाई ॥
चित्रकूटमुनि थलतीरथवन । खगमृगसरसरिनिर्भरगिरिगन ॥
प्रभुपदअंकित अवनिबिशेखी । आयसु होयतो आवों देखी ॥
अवशि अत्रिआयसु शिरधरहु । तातबिगतभय काननचरहू ॥
मुनिप्रसाद बन मंगल दाता । पावन परम सोहावनभ्राता ॥
ऋषिनायक जहँ आयसु देहीं । राखेहु तीरथ जलथल तेहीं ॥
सुनिप्रभुबचनभरत सुखपावा । मुनिपदकमलमुदितशिरनावा॥
दो० भरतराम सम्बादसुनि सकल सुमंगल मूल ।
सुर स्वारथी सराहिंकुल हर्षित बर्षहिं फूल ॥
धन्य भरत जय राम गुसांई । कहत देव हर्षत बरि आई ॥
मुनिमिथिलेश सभा सबकाहू । भरतबचनसुनिभयउउछाहू ॥
भरत राम गुण थाम सनेहू । पुलकि प्रशंसत राउ बिदेहू ॥
सेवक स्वामि सुभाव सुहावन । नेम प्रेम अतिपावन पावन ॥
मति अनुसार सराहन लागे । सचिवसभा सदसबअनुरागे ॥
सुनि सुनि राम भरत सम्बादू । दुहुँ समाज हियहर्ष बिषादू ॥
राम मातु दुख सुख समजानी । कहि गुणदोष प्रबोधी रानी ॥
एक कराहिं रघुबीर बड़ाई । एक सराहत भरत भलाई ॥
दो० अत्रि कहेउ तब भरत सन शैल समीप सुकूप ।
राखिय तीरथ तोय तहँ पावन अमल अनूप ॥
भरत अत्रि अनुशासन पाई । जलभाजन सब दियेचलाई ॥
सानुज आपु अत्रि मुनि साधू । सहित गये जहँ कूप अगाधू ॥
पावन पाथ पुण्य थल राखा । प्रमुदित प्रेमअत्रिअसभाखा ॥
तात अनादि सिद्धि थल येहू । लोपेउकाल बिदित नहिं केहू ॥
तब सेवकन्ह सरस थल देखा । कीन्ह सुजलहित कूपबिशेखा ॥
बिधिबश भयउ बिश्वउपकारू । सुगमअगमअतिधर्मबिचारू॥
भरत कूप अब कहिहहिं लोगा । अतिपावन तीरथ जलयोगा ॥
प्रेम सनेत निमज्जहिं प्राणी । होइहहिं बिमलकर्ममनबाणी ॥

दो० कहत कूप महिमा सकल गये जहां रघुराउ ।
अत्रि सुनायहु रघुबरहि तीरथ पुण्यप्रभाउ ॥
कहत धर्म इतिहास सप्रीती । भयउभोरनिशिसोसुखबीती ॥
नित्य निबाहि भरत दोउभाई । राम अत्रि गुरु आयसुपाई ॥
सहित समाज साज सबसादे । चले राम बन अटन पयादे ॥
कोमलचरण चलतबिनुपनहीं । भैमृदुभूमि सकुचिमनमनहीं ॥
कुश कंटक कांकरी कुराई । कटुक कठोर कुवस्तु दुराई ॥
महि मंजुल मृदु मारग कीन्हे । बहतसमीरत्रिबिधसुखलीन्हे ॥
सुमन बरषिसुर घनकरिछांहीं । बिटपफूलिफलदल मृदुलाहीं ॥
मृगबिलोकिखगबोलि सुबानी । सेवहिंसकल राम प्रियजानी ॥
दो० सुलभ सिद्धि सब प्राकृतहु रामकहत जमुहात ।
राम प्राणप्रिय भरत कहँ यह न होइ बड़िबात ॥
इहिबिधि भरत फिरतबनमाहीं । नेमप्रेमलखिमुनि सकुचाहीं ॥
पुण्यजलाशय भूमि बिभागा । खगमृगतरुतृणगिरिबनबागा ॥
चारु विचित्र पवित्र बिशेखी । बूझत भरत दिब्य सब देखी ॥
सुनिमनमुदितकहतऋषिराऊ । हेतुनाम गुण पुण्य प्रभाऊ ॥
कतहुँनिमज्जन कतहुँ प्रणामा । कतहुँबिलोकतबनअभिरामा ॥
कतहुँ बैठि मुनि आयसु पाई । सुमिरत सीयसहितदोउभाई ॥
देखि सुभाव सनेह सुसेवा । देहिं अशीश मुदित बनदेवा ॥
फिरहिं गये दिन पहर अढ़ाई । प्रभुपदकमलबिलोकहिंआई ॥
दो० देखे थल तीरथ सकल भरत पांच दिन मांझ ।
कहतसुनतहरिहरसुयश गयउदिवसभइसांझ ॥
भोर न्हाइ सब जुरा समाजू । भरत भूमिसुर तिरहुतिराजू ॥
भलदिन आजु जानिमनमाहीं । रामकृपालु कहत सकुचाहीं ॥
गुरुनृप भरतसभा अवलोकी । सकुचिरामफिरिअवनिबिलोकी ॥
शील सराहि सभा सब शोची । कहुँन रामसमस्वामिसकोची ॥
भरत सुजान राम रुख देखी । उठि सप्रेमधरिधीर बिशेखी ॥

करि दण्डवत कहत करजोरी । राखी नाथ सकल रुचिमोरी ॥
मोहिं लगि सबहिंसहेउसंतापू । बहुत भांति दुख पावा आपू ॥
अब गुसाइँ मोहिं देहु रजाई । सेवों अवधअवधिलगिजाई ॥

दो० जेहि उपाय पुनि पायँ जन देखै दीनदयाल ।
सोसिख देइय अवधलगि कोशलपाल कृपाल ॥

पुरजन परिजन प्रजा गुसांई । सबशुचिसरस सनेहसगाई ॥
राउर बदि भल भव दुखदाहू । प्रभु बिनुबादि परमपदलाहू ॥
स्वामि सुजान जानि सबहीकी । रुचिलालसारहनिजनजीकी ॥
प्रणत पाल पालहिं सबकाहू । देव दुहूँ दिशि ओर निबाहू ॥
असमोहिं सबबिधिभूरिभरोसो । कियेबिचार न शोचखरोसो ॥
आरति मोरि नाथ कर छोहू । दुहुंमिलिकीन्ह ढीठहठिमोहू ॥
यह बड़दोषदूरि करि स्वामी । तजिसकोचसिखइयअनुगामी ॥
भरत बिनयसुनिसबहिंप्रशंसा । चीर नीर बिवरणगति हंसा ॥

दो० दीनबन्धु सुनि बन्धुके बचन दीन छल हीन ।
देश काल अवसर सरिस बोले राम प्रवीन ॥

तात तुम्हारि मोरि परिजनकी । चिन्तागुरुहिंनृपहिंघरबनकी ॥
माथे पर गुरु मुनि मिथिलेशू । हमहिं तुमहिंसपनेहुँनकलेशू ॥
मोर तुम्हार परम पुरुषारथ । स्वारथ सुयश धर्म परमारथ ॥
पितु आयसु पालिय दुहुँ भाई । लोक वेद भल भूप भलाई ॥
गुरुपितुमातु स्वामि सिखपाले । चलतसुमगुपग परतनखाले ॥
असबिचारि सब शोच बिहाई । पालहुअवध अवधिभरिजाई ॥
देश कोश पुरजन परिवारू । गुरुपद रजहि लागछरभारू ॥
तुममुनिमातु सचिवसिखमानी । पालहु पुहुमि प्रजारजधानी ॥

दो० मुखिया मुख सो चाहिये खान पान को एक ।
पालै पोषै सकल अँग तुलसी सहित बिवेक ॥

राज धर्म्म सरबस इतनोई । जिमिमनमाहिं मनोरथ गोई ॥
बन्धु प्रबोध कीन्ह बहु भांती । बिनुअधार मनतोष न शांती ॥

भरतशील गुरु सचिवसमाजू । सकुच सनेहविवश रघुराजू ॥
प्रभु करि कृपा पांवरी दीन्हीं । सादर भरतशीशधरिलीन्हीं ॥
चरणपीठि करुणा निधानके । जनुयुग यामिकप्रजा प्रानके ॥
सम्पुट भरत सनेह रतन के । आखर युगजनुजीवजतनके ॥
कुल कपाट कर कुशलकरमके । विमल नयन सेवासुधरमके ॥
भरत मुदित अवलम्ब लहेते । असमुख जस सियराम रहेते ॥
दो० मांगेउ बिदा प्रणाम करि रामलिये उरलाय ।
लोग उचाटे अमरपति कुटिल कुअवसरपाय ॥
सोकुचालि सब कहँ भइनीकी । अवधिआशसबजीवन जीकी ॥
नतरु लषण सियराम वियोगा । हहरि मरतसबलोग कुरोगा ॥
राम कृपा अवरेव सुधारी । बिबुध धारभइगुणद गुहारी ॥
भेंटत भुज भरि भाइ भरतसो । राम प्रेम रसकहि नपरतसो ॥
तन मनवचनउमँगिअनुरागा । धीर धुरन्धर धीरज त्यागा ॥
बारिज लोचन मोचत बारी । देखि दशा सुरसभा दुखारी ॥
मुनिगण गुरुजनधीर जनकसे । ज्ञानअनल मनकसे कनकसे ॥
जे बिरंचि निर्लेप उपाये । पद्मपत्र जिमिजग जलजाये ॥
दो० तेउ बिलोकि रघुबर भरत प्रीति अनूप अपार ।
भयेमगन तन मन बचन सहितबिरागबिचार ॥
जहांजनक गुरु गतिमतिभोरी । प्राकृतिप्रीति कहतबड़खोरी ॥
बर्णत रघुबर भरत बियोगू । सुनिकठोर कबिजानिहिलोगू ॥
सो सकोच वश अकथसुबानी । समयसनेह सुमिरिसकुचानी ॥
भेंटि भरत रघुबर समुझाये । पुनि रिपुदमन हर्षिहियलाये ॥
सेवक सचिव भरत रुख पाई । निजनिजकाज लगे सबजाई ॥
सुनि दारुणदुख दुहूँ समाजा । लगे चलनके साजन साजा ॥
प्रभु पद पद्म बन्दि दोउ भाई । चले शीश धरि राम रजाई ॥
मुनि तापस बनदेव निहोरी । सबसनमानि बहोरि बहोरी ॥
दो० लषणहिं भेंटिप्रणामकरि शिरधरिसियपद धूरि ।

चले सप्रेम अशीष सुनि सकलसुमंगल मूरि ॥
सानुज राम नृपाहिं शिरनाई । कीन्हीबहुबिधि बिनयबड़ाई ॥
देव दयाबश बड़ दुखपायहु । सहितसमाजकानननहिंआयहु ॥
पुर पगु धारिय देइ अशीशा । कीन्हधीरधरि गमन महीशा ॥
मुनि महिदेव साधु सनमाने । बिदाकिये हरिहर समजाने ॥
सासु समीप गये दोउ भाई । फिरे बन्दिपद आशिषपाई ॥
कौशिक बामदेव जाबाली । परिजनपुरजनसचिवसुचाली ॥
यथा योग करिबिनय प्रणामा । बिदा किये सबसानुजरामा ॥
नारि पुरुष लघु मध्य बड़ेरे । सबसनमानि कृपानिधि फेरे ॥
दो० भरतमातुपद बन्दिदोउ शुचिसनेह मिलिभेटि ।
बिदाकीन्ह सजिपालकी सकुचि शोचसबमेटि ॥
परिजनमातुपितहिमिलिसीता । फिरी प्राणप्रिय प्रेमपुनीता ॥
करि प्रणाम भेंटीं सब सासू । प्रीतिकहतकबिहियनहुलासू ॥
सुनिशिषअभिमतआशिषपाई । रहीसीय दुहुँ प्रीति समाई ॥
रघुपति पटु पालकी मँगाई । करि प्रबोधसबमातु चढ़ाई ॥
बारबार हिलिमिलि दोउ भाई । सम सनेह जननी पहुँचाई ॥
साजि बाजि गज बाहन नाना । भूपभरत दलकीन्ह पयाना ॥
हृदय राम सिय लषण समेता । चलेजाहिं सबलोग अचेता ॥
बसह बाजिगज पशु हियहारे । चले जाहिं परबश मनमारे ॥
दो० गुरु गुरुतियपद बन्दिप्रभु सीतालषण समेत ।
फिरे हर्ष बिस्मय सहित आये पर्ण निकेत ॥
बिदा कीन्ह सनमानि निषादू । चलेउ हृदयबड़बिरहबिषादू ॥
कोल्ह किरात भिल्ल बनचारी । फेरे फिरे जोहारि जोहारी ॥
प्रभुसिय लषण बैठि बटछाहीं । प्रियपरिजनबियोगबिलखाहीं ॥
भरत सनेह सुभाव सुबानी । प्रियाअनुजसनकहतबखानी ॥
प्रीति प्रतीतिबचन मनकरणी । श्रीमुख राम प्रेमबश बरणी ॥
तेहिअवसरखगमृगजलमाना । चित्रकूट चर अचर मलीना ॥

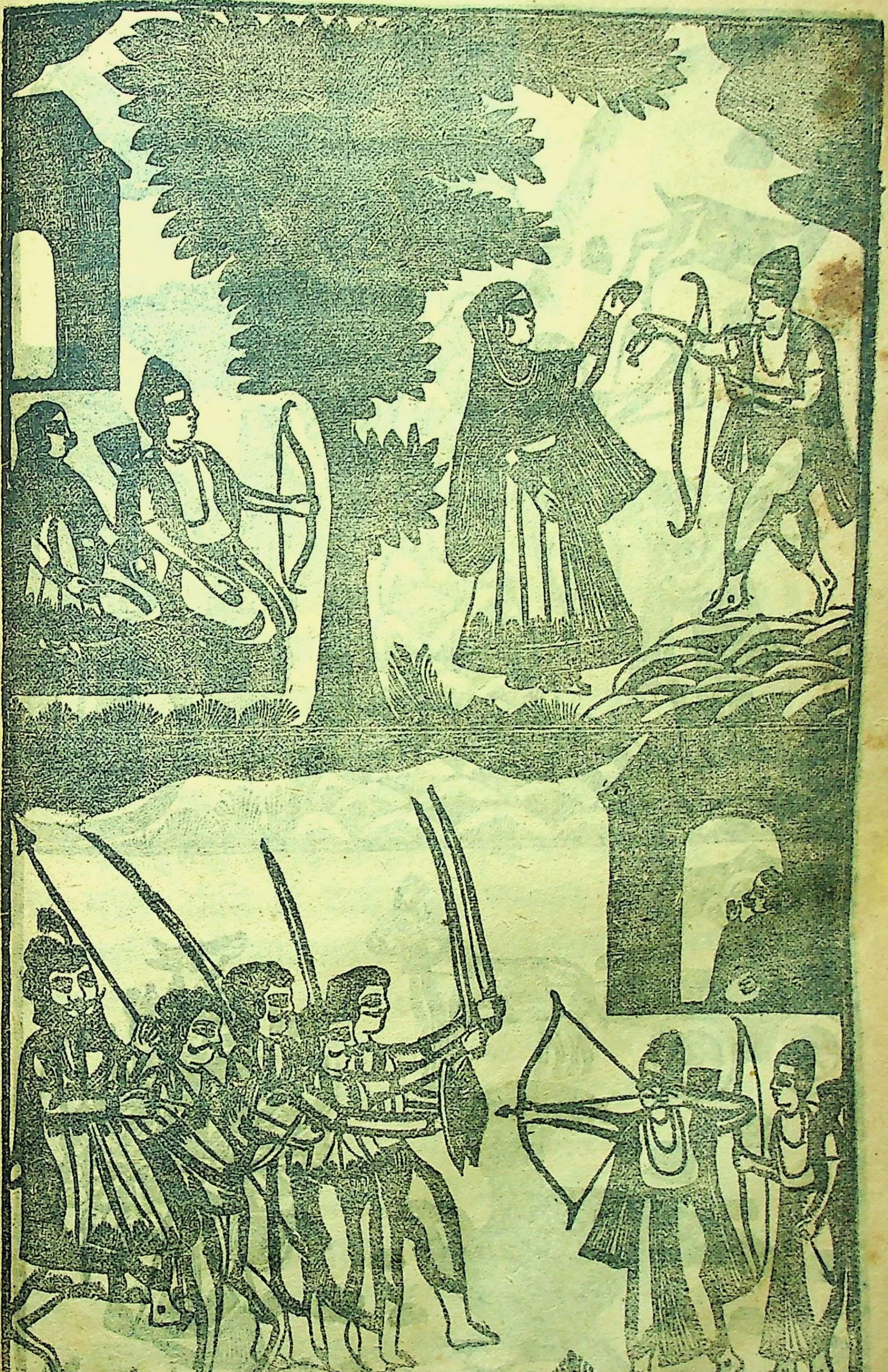
बिबुध बिलोकिदशारघुबरकी । बरषिसुमनकहिगतिघरघरकी॥
प्रभुप्रणाम करिदीन्ह भरोसो । चलेमुदितमनडर न खरोसो ॥
दो० सानुज सीय समेत प्रभु राजत पर्ण कुटीर ।
भक्ति ज्ञान बैराग्य जनु सोहत धरे शरीर ॥
मुनि महिसुर गुरुभरतभुआलू । राम बिरह सबसाज बिहालू ॥
प्रभु गुणग्राम गुणत मनमाहीं । सब चुपचाप चलेमगुजाहीं ॥
यमुना उतरि पार सब भयऊ । सो बासर बिनुभोजनगयऊ ॥
उतरि देवसरि दूसर बासू । राम सखा सबकीन्ह सुपासू ॥
सई उतरि गोमती नहाये । चौथेदिवस अवधपुर आये ॥
जनक रहे पुर बासर चारी । राजकाज सबसाज सँभारी ॥
सौंपिसचिवगुरु भरतहि राजू । तिरहुतचले साजिसबसाजू ॥
नगर नारिनर गुरु सिखमानी । बसे सुखेन राम रजधानी ॥
दो० राम दरश हित लोग सब करत नेमउपवास ।
तजितजिभूषणभोगसुखजियतअवधिकीआस॥
सचिव सुसेवक भरत प्रबोधे । निजनिजकाजपाइसिखसोधे ॥
पुनिसिखदीन्ह बोलिलघुभाई । सौंपी सकल मातु सेवकाई ॥
भूसुर बोलि भरत कर जोरे । करिप्रणाम बरबिनय निहोरे ॥
ऊँच नीच कारज भल पोचू । आयसु देबन करब सकोचू ॥
परिजन पुरजन प्रजा बुलाये । समाधानकरि सुबश बसाये ॥
सानुज गे गुरु गेह बहोरी । करिदण्डवतकहत करजोरी ॥
आयसु होय तौ रहौं सनेमा । बोले मुनितबपुलकि सप्रेमा ॥
समुझब कहब करब तुम सोई । धर्म्मसार जग होइहि जोई ॥
दो० मुनिसिखपाइअशीषबड़िगणकबोलिदिनसाधि।
सिंहासन प्रभु पादुका बैठारी निरुपाधि ॥
राममातु गुरु पद शिरनाई । प्रभु पदपीठि रजायसु पाई ॥
नन्दिग्राम करि पर्ण कुटीरा । कीन्हनिवास धर्म्मधर धीरा ॥
जटाजूट शिर मुनि पटधारी । महिखनिकुश साथरी सँवारी ॥

अशन बसन आसन व्रतनेमा । करतकठिनऋषिधर्म्मसप्रेमा॥
भूषण बसन भोग सुखभूरी । मनतन बचन तजे तृणतूरी ॥
अवधराज सुरराज सिहाहीं । दशरथधनलखिधनदलजाहीं॥
तेहिपुर बसत भरतबिनुरागा । चंचरीक जिमिचम्पकबागा ॥
रमा विलास राम अनुरागी । तजतभवनजिमिनरबड़भागी॥
दो० राम प्रेम भाजन भरत बड़ी न यह करतूति ।
चातक हंस सराहियत टेक विवेक विभूति ॥
देह दिनहिं दिन दूबरि होई । घटन तेज बलमुखछबिसोई ॥
नित नव राम प्रेम प्रण पीना । बढ़त धर्म्मदलमननमलीना ॥
जिमिजलनिघटतशरद्प्रकाशे । बिलसतबेत सुबनजबिकाशे ॥
शम दम संयम नेम उपासा ।नखतभरतहियबिमलअकासा॥
ध्रुव विश्वास अवधि राकासी । स्वामिसुरतिसुरबीथिबिकासी॥
राम प्रेमविधु अचलअदोखा । सहितसमानसोहनितचोखा ॥
भरत रहनि समुझनि करतूती । भक्तिविरतिगुणविमलविभूती॥
बरणतसकलसुकबि सकुचाहीं । शेष गणेश गिरा गम नाहीं ॥
दो० नित पूजत प्रभु पांवरी प्रीति न हृदय समाति ।
मांगि मांगि आयसु करत राजकाज बहुभांति ॥
पुलकगात हिय सियरघुबीरू । जीहनाम जपु लोचन नीरू ॥
लषण रामसिय काननबसहीं । भरतभवनबसितपतनुकसहीं॥
दुहुँदिशिसमुझिकहतसबलोगू । सबबिधि भरत सराहनयोगू॥
सुनि व्रत नेम साधु सकुचाहीं । देखिदशा मुनिराज लजाहीं ॥
परम पुनीत भरत आचरनू । मधुर मंजु मृदु मंगलकरनू ॥
हरणकठिन कलिकलुषकलेशू । महामोह निशिदलनादिनेशू ॥
पाप पुंज कुंजर मृगराजू । शमन सकल सन्तापसमाजू ॥
जन रंजन भंजन भव भारू । राम सनेह सुधाकर सारू ॥
छं० सियराम प्रेमपियूष पूरण होतजन्म न भरत को ।
मुनिमनअगमयमनियमशमदमविषमव्रतआचरतको ॥

दुखदाह दारिददम्भदूषण सुयश मिस अपहरतको ।
कलिकालतुलसीसेशठहि हठि रामसन्मुख करतको ॥
सो० भरत चरित करि नेम तुलसी जे सादर सुनहिं ।
सीय राम पदप्रेम अवशि होइभव रसविरति ॥

इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेविमल
विज्ञानवैराग्यसम्पादनोनामतुलसीकृत
अयोध्याकाण्डद्वितीयःसोपानः ॥ २ ॥

शुभम्





श्रीगणेशायनमः

अरण्यकाण्ड ॥

श्लोक ॥

मूलन्धर्मतरोर्विवेकजलधेःपूर्णेन्दुमानन्ददं वैराग्याम्बुजभा
स्करंत्वघहरंध्वान्तापहंतापहम् ॥ मोहाम्भोधरपुंजपाटनविधौखे
संभवंशंकरं वन्देब्रह्मकुलंकलंकशमनं श्रीरामभूपप्रियम् ॥ १ ॥
सान्द्रानन्दपयोदसौभगतनुम्पीताम्बरंसुन्दरं पाणौवाणशरास
नंकटिलसत्तूणीरभारंवरम् ॥ राजीवायतलोचनंधृतजटाजूटेनसं
शोभितं सीतालक्ष्मणसंयुतंपथिगतंरामाभिरामंभजे ॥ २ ॥

सो॰ उमा राम गुणगूढ़ पण्डित मुनि पावहिं विरति ।
पावहिंमोह बिमूढ़ जे हरि बिमुख न धर्म रति ॥

पूरब भरत प्रीति मैं गाई । मति अनुरूप अनूप सुहाई ॥
अबप्रभुचरितसुनो अतिपावन । करतजोबनसुरनरमुनिभावन॥
एकबार चुनि कुसुम सुहाये । निजकर भूषण राम बनाये ॥
सीतहिं पहिराये प्रभु सादर । बैठे फटिक शिला परमादर ॥
सुरपतिसुत धरि बायस बेखा । शठचाहत रघुपतिबलदेखा ॥
जिमि पिपीलिका सागर थाहा । महामन्द मति पावन चाहा ॥
सीता चरण चोंच हति भागा । मूढ़ मन्द मति कारण कागा ॥
चला रुधिर रघुनायक जाना । सींक धनुष शायक संधाना ॥

दो॰ अति कृपाल रघुनायक सदा दीन पर नेह ।
तासन आइ कीन्हछल मूरख अवगुण गेह ॥

बिनऽपराध प्रभु हतैं न काहू । अवसर परे ग्रसै शशिराहू ॥
जबप्रभुलीन्हधनुष सिकबाना । क्रोधजानिभा अनलसमाना ॥
प्रेरित अस्त्र ब्रह्म शर धावा । चलाभाजि बायस भयपावा ॥
धरि निजरूप गयउ पितुपाहीं । रामबिमुख राखा तिननाहीं ॥
भा निराश उपजी हिय त्रासा । यथाचक्र भय ऋषिदुर्बासा ॥
ब्रह्मधाम शिवपुर सबलोका । फिराश्रमितब्याकुलभयशोका ॥
काहू बैठन कहा न ओही । राखि को सकै रामकरद्रोही ॥
मातु मृत्यु पितु शमन समाना । सुधाहोइ बिष सुनुहरियाना ॥
मित्रकरै शत रिपुकै करणी । ताकहँ बिबुध नदी बैतरणी ॥
सब अग ताहि अनलतेताता । जोरघुबीर बिमुखसुनु भ्राता ॥

दो० जिमिजिमिभाजतशक्रसुत ब्याकुलअति दुखदीन ।
तिमि तिमि धावत रामशर पाछे परम प्रबीन ॥

बचाहिं उरग बरु ग्रसै खगेशा । रघुपतिशरछुटिबचनअँदेशा ॥
नारद देखा बिकल जयन्ता । लागिदया कोमलचितसन्ता ॥
दूरिहिते कहि प्रभु प्रभुताई । भजेजातबहुबिधि समुझाई ॥
पठवा तुरत रामपहँ ताही । कहसिपुकारिप्रणताहितपाही ॥
आतुर सभय गहेसि पद जाई । त्राहि त्राहि दयाल रघुराई ॥
अतुलितबलअतुलितप्रभुताई । मैंमतिमन्द जानिनहिं पाई ॥
निजकृतकर्मजनितफलपायउँ । अबप्रभुपाहिशरणतकिआयउँ ॥
सुनि कृपालु अतिआरत बानी । एक नयनकरि तजा भवानी ॥

सो० कीन्ह मोहबश द्रोह यद्यपि तेहिकर बध उचित ।
प्रभु छांड़ेउ करि छोह को कृपाल रघुबीर सम ॥

रघुपति चित्रकूट बसि नाना । चरितकरतश्रुतिसुधासमाना ॥
बहुरिराम असमन अनुमाना । होइहिभीरसबहिं मोहिंजाना ॥
सकलमुनिनसन बिदा कराई । सीता सहित चलेदोउ भाई ॥
अत्री के आश्रम प्रभु गयऊ । सुनतमहामुनि हर्षितभयऊ ॥
पुलकितगात अत्रि उठिधाये । देखिराम आतुर चलिआये ॥

करत दण्डवत मुनि उरलाये । प्रेमबारिदोउ जन अन्हवाये ॥
देखि राम छबि नयन जुड़ाने । सादरनिज आश्रमतबआने ॥
करिपूजा कहि बचन सुनाये । दिये मूलफल प्रभुमन भाये ॥
सो० प्रभु आसन आसीन भरि लोचन शोभा निरखि ।
मुनिवर परम प्रवीन जोरि पाणि अस्तुतिकरत ॥
छं० नमामि भक्त वत्सलं । कृपालुशील कोमलं ॥
भजामिते पदाम्बुजं । अकामिनां स्वधामदं ॥
निकाम श्याम सुन्दरं । भवाम्बुनाथ मन्दरं ॥
प्रफुल्ल कंज लोचनं । मदादिदोष मोचनं ॥
प्रलम्ब बाहु विक्रमं । प्रभो प्रमेय वैभवं ॥
निषंग चाप शायकं । धरं त्रिलोक नायकं ॥
दिनेश वंश मण्डनं । महेशचाप खण्डनं ॥
मुनीन्द्र सन्त रंजनं । सुरारि वृन्द भंजनं ॥
मनोज वैरि बन्दितं । अजादि देव सेवितं ॥
बिसुद्ध बोध बिग्रहं । समस्त दुःखतापहं ॥
नमामि इन्दिरापतिं । सुखाकरं सतांगतिं ॥
भजे सशक्ति सानुजं । शचीपति प्रियानुजं ॥
त्वदंघ्रि मूल ये नरा । भजन्तिहीन मत्सरा ॥
पतंति नो भवार्णवे । बितर्क बीचि संकुले ॥
बिविक्त वासनाः सदा । भजंति मुक्तिदं मुदा ॥
निरस्य इन्द्रियादिकं । प्रयान्तिते गतिस्वकं ॥
तमेक मद्भुतं प्रभुं । निरीह मीश्वरं बिभुं ॥
जगद्गुरुं च शाश्वतं । तुरीय मेव केवलं ॥
भजामि भाव बल्लभं । कुयोगिनां सुदुर्ल्लभं ॥
स्वभक्त कल्प पादपं । समस्त सेव्यमन्वहं ॥
अनूप रूप भूपतिं । नतोह मुर्विजापतिं ॥
प्रसीदमे नमामि ते । पदाब्जभक्ति देहिमे ॥

पठन्ति येस्तवं इदं। नरादरेण ते पदं ॥
ब्रजन्ति नात्र संशयं। त्वदीयभक्ति संयुतं ॥
दो० बिनती करि मुनि नाइ शिर कह करजोरि बहोरि।
चरण सरोरुह नाथ जनि कबहुँ तजै मति मोरि ॥
जन्म जन्म तवपद सुखकन्दा। बढ़ैप्रेम चकोर जिमिचन्दा ॥
देखि राममुनि विनय प्रणामा। विविधभांतिपायउ बिश्रामा ॥
अनसूया के पद गहि सीता। मिलीबहोरिसुशील बिनीता ॥
जोसियसकललोक सुखदाता। अखिललोकब्रह्माण्डकिमाता॥
ते पाई सिय मुनिवर भामिनि। सुखीभईकुमुदिनिज्योंयामिनि॥
ऋषिपतनीमनसुख अधिकाई। आशिष देइ निकट बैठाई ॥
दिव्य बसन भूषण पहिंराये। जे नित नूतन अमलसुहाये ॥
जाहिनिरखि दुख दूरिपराहीं। गरुड़जानिजिमिपन्नगजाहीं ॥
दो० ऐसे बसन बिचित्र सुठि दिये सीय कहँ आनि।
सनमानीप्रियबचनकहि प्रीति नजाइ बखानि ॥
कह ऋषिबधू सरल मृदुबानी। नारि धर्म्मकछुव्याजबखानी ॥
मात पिता भ्राता हितकारी। नितसुखप्रद सुनुराजकुमारी ॥
अमित दान भर्त्ता बैदेही। अधमसो नारि जोसेवनतेही ॥
धीरज धर्म मित्र अरु नारी। आपतकाल परखियहिचारी ॥
वृद्ध रोग बश जड़ धन हीना। अन्धबधिरक्रोधी अतिदीना ॥
ऐसेहु पतिकर किय अपमाना। नारि पावयमपुर दुखनाना ॥
एकै धर्म्म एक ब्रत नेमा। कायबचन मनपतिपदप्रेमा ॥
जगपतिब्रताचारिबिधि अहहीं। वेद पुराण सन्त असकहहीं ॥
दो० उत्तम मध्यम नीच लघु सकल कहौं समुझाय।
आगे सुनहिं तेभवतरहिं सुनहुसीय चितलाय ॥
उत्तम के अस बस मनमाहीं। सपनेहुँ आनपुरुष जगनाहीं ॥
मध्यम पर पति देखहिं कैसे। भ्राता पिता पुत्र निज जैसे ॥
धर्म बिचारिसमुझिकुल रहहीं। सोनिकृष्टतियश्रुतिअसकहहीं॥

बिनु अवसर भय ते रह जोई । जानेहु अधमनारि जगसोई ॥
पतिबंचक परपति रति करई । रौरव नरक कल्पशत परई ॥
क्षण सुखलागि जन्मशतकोटी । दुखनसमझतेहिसमकोखोटी ॥
बिनुश्रम नारि परमगतिलहई । पतिब्रत धर्मछांड़िछलगहई ॥
पतिप्रतिकूल जनमि जहँ जाई । बिधवा होइ पाइ तरुणाई ॥
सो० सहज अपावनिनारि पतिसेवतशुभगतिलहहिं ।
यशगावत श्रुतिचारि अजहुँ तुलसी हरिहिप्रिय ॥
सुनुसीता तव नाम सुमिरि नारि पतिब्रत करहिं ।
तोहिं प्राण प्रिय राम कहेउँ कथा संसार हित ॥
सुनि जानकी परम सुखपावा । सादरतासु चरण शिरनावा ॥
तबमुनिसन कह कृपानिधाना । आयसुहोइ जाउँ बन आना ॥
सन्तत मोपर कृपा करेहू । सेवकजानि तजेहु जनिनेहू ॥
धर्म धुरन्धर प्रभु की बानी । सुनिसप्रेम बोले मुनिज्ञानी ॥
जासुकृपा अजशिव सनकादी । चहत सकल परमारथवादी ॥
ते तुम राम अकाम पियारे । दीनबन्धु मृदु बचन उचारे ॥
अब जानी मैं श्री चतुराई । भजिय तुमहिंसब देवविहाई ॥
जेहिसमान अतिशयनहिंकोई । ताकरशीलकसन अस होई ॥
केहिबिधिकहौं जाहुअबस्वामी । कहहुनाथ तुम अन्तरयामी ॥
असकहिप्रभुबिलोकिमुनिधीरा । लोचनजलबहपुलक शरीरा ॥
छं० तन पुलकनिर्भरप्रेमपूरण नयनमुखपंकज दिये ।
मनज्ञानगुणगोतीत प्रभुमैं दीखजपतपका किये ॥
जप योग धर्म समूहते नरभक्ति अनुपम पावई ।
रघुबीर चरितपुनीतनिशिदिन दासतुलसीगावई ॥
दो० मुनिहुँकिअस्तुतिकीन्हप्रभु दीन्हसुभग बरदान ।
सुमनबृष्टि नभसंकुल जय जय कृपा निधान ॥
मुनिपदकमल नाइ करि शीशा । चले बनहिं सुरनरमुनिईशा ॥
आगे राम अनुज पुनि पाछे । मुनिवर बेषबने अतिआछे ॥

सरितावन गिरि अवघटघाटा । पति पहिंचानिदेहिं बरबाटा ॥
जहँ जहँ जाहिं देव रघुराया । करहिं मेघनभ तहँतहँ छाया ॥
आश्रम विपुल दीखबनमाहीं । देव सदनतेहि पटुतर नाहीं ॥
बहु तड़ाग सुन्दर अमराई । भांतिभांति सबमुनिनलगाई ॥
दिव्यविटप बनचहुंदिशिसोहैं । देखत सकल सुरनमनमोहैं ॥
तेहिदिनतहँप्रभुकीन्हनिवासा ।सकलमुनिनमिलिकीन्हसुपासा॥

दो० निजनिज आश्रमवेदिका तिहिपरतुलसिबिराज ।
अनुज जानकी सहित तहँ राजत मे रघुराज ॥
आन सुआश्रम मुदितमन पूजि पहुनई कीन्ह ।
कन्दमूलफल अमियसम आनि रामकहँ दीन्ह ॥

अनुजसीय सहभोजन कीन्हा । जोजिमिभावसुमगवरदीन्हा ॥
होत प्रभात मुनिन शिरनावा । आशिर्बाद सबहि सनपावा ॥
सुमिरिउमा सुर सिद्धगणेशा । पुनिप्रभुचलेसुनहु बिहगेशा ॥
बन अनेक सुन्दर गिरिनाना । लांघत चलेजाहिं भगवाना ॥
मिलाअसुर बिराधमगु जाता । गरजत घोरकठोर रिसाता ॥
रूप भयंकर मानहुँ काला । वेगवन्तधायउ जिमिब्याला ॥
गगन देव मुनि किन्नर नाना । तेहिक्षण हृदयहारिभयमाना ॥
तुरतहि सो सीतहि लै गयऊ । रामहृदयकछु बिस्मयभयऊ ॥
समुझा हृदय केकयी करणी । कहाअनुजसनबहुबिधिबरणी॥
बहुरि लषणरघुबरहि प्रबोधा । पांच बाण छांड़े करिक्रोधा ॥

छं० भयेक्रोधलषणसँधानिधनुशरमारितेहिब्याकुल किये ।
पुनिउठि निशाचरराखिसीतहिं शूललै धावतभये ॥
जनुकालदण्ड करालधावा बिकलसब खगमृगभये ।
धनुतानिश्रीरघुबंशमणिपुनिकाटितेहिरजसमाकिये॥

दो० बहुरि एकशर मारेउ परा धरणिधुनि माथ ।
उठा प्रबल पुनि गर्जेउ चला जहां रघुनाथ ॥

ऐसे कहत निशाचर धाया । अबनहिंबचहुतमहिंमैं खाया ॥

तासु तेज शत मरुत समाना । टूटहिं तरुबहु उड़हिं पषाना ॥
जीवजन्तु जहँलगि रहे जेते । व्याकुल भाजि चलेसब तेते ॥
आवप्रबलयहिविधि जनुभूधर । होइहिकाहकहहिंव्याकुलसुर ॥
उरग समान जोरि शरसाता । आवतही रघुबीर निपाता ॥
तुरतहि रुचिररूप तेहिपावा । देखि दुखी निजधामपठावा ॥
तासुअस्थिगाड़ेउ प्रभुधरणी । देवमुदितमनलखिप्रभुकरणी ॥
सीता आइ चरण लपटानी । अनुजसहिततबचलेभवानी ॥
उहां शक्र जहँ मुनि शरभङ्गा । आये सकल देव निजसङ्गा ॥
गये कहन प्रभुदेव सिखावन । दिशिबलभेदबसतजहँरावन ॥
दो० सुरपति संशय तम सम रघुपति तेजादिनेश ।
रावण जीतन निशिसम बीते छूटहिं कलेश ॥
सुनासीरप्रभु तिहिक्षण देखा । तेजनिधान शुभ्र अतिबेखा ॥
तुरग चारिबल मरुत समाना । रथरवि समनहिंजायबखाना ॥
क्षिति न परत अन्तरहित रहई । श्वेत छत्र चामर शिर ढरई ॥
अनुजहि प्रियहि कहासमुझाई । सुरपतिमहिमा गुणप्रभुताई ॥
जिहिकारण बासव तहँ आये । सो कछुबचन कहननहिंपाये ॥
बीचहिसुनि आइब प्रभु केरा । कहि सारथी तुरत रथफेरा ॥
दूरिहिते कहि प्रभुहि प्रणामा । हरषि सुरेश गयोनिजधामा ॥
प्रभु आये जहँ मुनि शरभङ्गा । सुन्दर अनुज जानकीसङ्गा ॥
दो० देखिराम मुख पंकज मुनिवर लोचन भृंग ।
सादर पान करतअति धन्य धन्य शरभंग ॥
कह मुनिसुन रघुबीर कृपाला । शङ्कर मानस राज मराला ॥
जात रहेउँ बिरंचिके धामा । सुनेउँ श्रवण बनआवतरामा ॥
चितवत पन्थ रहेउँ दिनराती । अबप्रभु देखिजुड़ानीछाती ॥
नाथ सकल साधन मैं हीना । कीन्ही कृपा जानिजन दीना ॥
सो कछु देव न मोर निहोरा । निजप्रणराखेउ जनमनचोरा ॥
तबलगिरहहु दीन हितलागी । जबलगिमिलौंतुम्हैंतनुत्यागी ॥

योग यज्ञ जप तप व्रत कीन्हा । प्रभुकहँदेइ भक्तिबर लीन्हा ॥
इहिविधि सररचिमुनिशरभङ्गा। बैठे हृदय छांड़ि सब सङ्गा ॥
दो० सीता अनुज समेत प्रभु नील जलद तनु श्याम ।
मम हिय बसहु निरन्तर सगुण रूप श्रीराम ॥
असकहि योगअग्नितनुजारा । राम कृपा बैकुण्ठ सिधारा ॥
ताते मुनि हरिलीन न भयऊ । प्रथमहिंभेद भक्तिबरलयऊ ॥
ऋषिनिकायमुनिवरगतिदेखी । सुखीभये निजहृदय विशेखी ॥
अस्तुतिकरहिंसकलमुनिबृन्दा । जयतिप्रणतहितकरुणाकन्दा॥
पुनि रघुनाथ चलेबन आगे । मुनिवरबृन्द पुलकिसँगलागे ॥
अस्थि समूह देखि रघुराया । पूंछामुनिनलागि अतिदाया ॥
जानतहहु का पूंछहु स्वामी । समदर्शी उर अन्तरयामी ॥
निशिचरनिकरसकलमुनिखाये । सुनिरघुनाथ नयनजलछाये ॥
दो० निशिचर हीन करौं महि भुज उठाय प्रण कीन्ह ।
सकल मुनिनके आश्रमन जाइजाइ सुखदीन्ह ॥
मुनिअगस्त्यकरशिष्यसुजाना । नाम सुतीक्षणरत भगवाना ॥
मनक्रम वचन रामपद सेवक । सपनेहुँ आनभरोस न देवक ॥
प्रभु आगमन श्रवणसुनिपावा । करत मनोरथ आतुरधावा ॥
हे बिधि दीनबन्धु रघुराया । मोसे शठपर करिहहिंदाया ॥
सहितअनुज मोहिंराम गुसाईं । मिलिहहिं निजसेवककी नाईं ॥
मोरे जिय भरोस दृढ़ नाहीं । भक्तिन विरति ज्ञानमनमाहीं ॥
नहिं सतसंग योगजप यागा । नहिंदृढ़चरणकमलअनुरागा ॥
एक बानि करुणानिधान की । सोप्रियजाकेगति न आनकी ॥
छं० सोउ प्रियअतिपातकी जिनकबहुँ प्रभुसुमिरणकस्यो ।
तेआजु मैं निज नयन देखौं पूरि पुलकितहियभस्यो ॥
जे पद सरोज अनेक मुनिकरि ध्यानकबहुँ न आवहीं ।
ते राम श्रीरघुबंशमणि प्रभु प्रेम ते सुख पावहीं ॥
दो० पन्नगारि सुनु प्रेम सम भजन न दूसरआन ।

यह बिचारि पुनिपुनिमुनी करत रामगुणगान ॥
होइहहिंसफलआजुममलोचन । देखि बदनपंकज भवमोचन ॥
निर्भर प्रेम मगन मुनि ज्ञानी । कहि न जाइ सोदशा भवानी ॥
दिशिअरुबिदिशिपंथनहिंसूझा। को मैं कहांचलों नहिं बूझा ॥
कबहुँक फिरिपाछे चलि जाई । कबहुँक नृत्य करै गुणगाई ॥
अबिरल प्रेम भक्ति मुनि पाई । प्रभु देखहिंतरु ओटलुकाई ॥
अतिशय प्रीति देखिरघुबीरा । प्रकटेहृदय हरण भवभीरा ॥
मुनि मगुमांझअचल होइबैसा । पुलकशरीर पनसफल जैसा ॥
तब रघुनाथ निकट चलिआये । देखिदशा निजजनमनभाये ॥
सो० राम सुसहज सुभाव सेवक सुख दारिद दमन ।
मुनिसनकहप्रभुआव उठउठद्विजममप्राणसम ॥
मुनिहिं रामबहु भांति जगावा । जागनध्यानजनितसुखपावा ॥
भूपरूप तब राम दुरावा । हृदय चतुर्भुजरूप दिखावा ॥
मुनि अकुलाइ उठा तब कैसे । बिकलहीनफणिमणि बिनुजैसे॥
आगे देखि राम तनु श्यामा । सीताअनुजसहितसुखधामा ॥
परेउलकुटइव चरणन लागी । प्रेममगन मुनिवर बड़भागी ॥
भुज बिशाल गहि लियेउठाई । प्रेम प्रीति राखेउ उरलाई ॥
मुनिहिंमिलतअससोहकृपाला । कनकतरुहि जनु भेंटतमाला ॥
रामबदन बिलोकि मुनिठाढ़ा । मानहुँचित्रमांझलिखिकाढ़ा ॥
दो० तबमुनि हृदय धीरधरि गहिपद बारहिंबार ।
निजआश्रमप्रभु आनिकरि पूजाबिबिधप्रकार ॥
कहमुनि प्रभुसुनबिनती मोरी । अस्तुतिकरौं कौनबिधितोरी ॥
महिमाअमित मोरिमति थोरी । रबि सन्मुख खद्योतअजोरी ॥
श्याम तामरस दाम शरीरं । जटामुकुट परिधनमुनिचीरं ॥
पाणिचाप शर कटि तूणीरं । नौमि निरंतर श्री रघुबीरं ॥
मोह बिपिन घनदहन कृशानू । सन्तसरोरुह कानन भानू ॥
निशिचर करि बरूथ मृगराजं । त्रातु सदा नो भवखग बाजं ॥

अरुण नयन राजीव सुवेशं । सीता नयन चकोर निशेशं ॥
हर हृद मानसराज मरालं । नौमि रामउर बाहु बिशालं ॥
संशय सर्प ग्रसन उरगादं । शमन सकल संताप बिषादं ॥
भय भंजन रंजन सुरयूथं । त्रातु सदा नो कृपा बरूथं ॥
निर्गुण सगुण बिषम समरूपं । ज्ञान गिरा गोतीत अनूपं ॥
अमल अखिल अनवद्यमपारं । नौमि राम भंजन महिभारं ॥
भक्त कल्पपादप आरामं । तर्जन क्रोध लोभ मद कामं ॥
अति नागर भवसागर सेतुं । त्रातु सदा दिनकर कुलकेतुं ॥
अतुलित भुजप्रताप बलधामं । कलिमलबिपुल बिभंजननामं ॥
धर्म्म बर्म्म नर्म्मद गुणग्रामं । संतत संतनोतु मम कामं ॥
यदपिबिरजब्यापक अबिनासी । सबके हृदय निरन्तर बासी ॥
तदपिअनुजसियसहितखरारी । बसहुमनसिममकाननचारी ॥
जे जानहिं ते जानहु स्वामी । सगुणअगुणउर अन्तरयामी ॥
जो कोशलपति राजिव नयना । करौसोराम हृदयमम अयना ॥

सो० मायावश जिमिजीव रहहिं सदा सन्तत मगन ।
तिमिलागहुमोहिंपीव करुणाकर सुन्दर सुखद ॥

अस अभिमानजाय जनिभोरे । मैं सेवक रघुपति पति मोरे ॥
रामभक्ति तजिचह कल्याना । सोनर अधमशृगालसमाना ॥
सुनिमुनिबचन राम मनभाये । बहुरिहर्षि मुनिवर उरलाये ॥
परमप्रसन्न जानि मुनिमोहीं । जो बरमांगु देउँ मैं तोहीं ॥
मुनिकह मैंबर कबहुँ न यांचा । समुझि न परै झूठका सांचा ॥
तुमहिं नीक लागै रघुराई । सो मोहिं देहु दास सुखदाई ॥
अबिरल भक्ति बिरतिबिज्ञाना। होहु सकलगुणज्ञाननिधाना ॥
प्रभु जो दीन्ह सोवरमैं पावा । अब सो देहुमोहिं जो भावा ॥

दो० अनुजजानकी सहित प्रभु चापबाण धरिराम ।
ममहिय गगन इन्दुइव बसहु सदा निष्काम ॥

एवमस्तु कहि रमा निवासा । हर्षि चले कुम्भजऋषिपासा ॥

मुनिप्रणामकरि युग करजोरी । सुनहुनायकछु विनती मोरी ॥
बहुत दिवस गुरु दरशन पाये । भयेमोहिं यहिआश्रम आये ॥
अब प्रभु सङ्ग जाउँ गुरुपाहीं । तुम कहँ नाथ निहोरा नाहीं ॥
चलेजात मग तव पद कंजा । देखिहौं जो विराधमदगंजा ॥
देखि कृपानिधि मुनि चतुराई । लिये सङ्ग बिहँसे दोउभाई ॥
पन्थ कहत निजभक्ति अनूपा । मुनि आश्रम पहुँचे सुरभूपा ॥
आश्रम देखि महाशुचि सुंदर । सरित सरोवर कानन भूधर ॥
जलचर थलचर जीव जहीं ते । बैर न करहिं प्रीति सबहीं ते ॥
दो० तरुबहुविधि विहंगमृग बोलत बिबिध प्रकार ।
बसहिंसिद्ध मुनितप करहिं महिमागुणआगार ॥
तुरत सुतीक्षण गुरुपहँ गयऊ । करिदण्डवतकहतअसभयऊ ॥
नाथ कोशलाधीश कुमारा । आये मिलन जगतआधारा ॥
राम अनुज समेत बैदेही । निशि दिनदेवजपतहहुजेही ॥
सुनत अगस्त्य तुरतउठिधाये । हरिबिलोकि लोचनजलछाये ॥
मुनि पद कमल परे दोउभाई । ऋषिअतिप्रीतिलिये उरलाई ॥
सादर कुशल पूछि मुनिज्ञानी । आसन पर बैठारे आनी ॥
पुनिकरि बहुप्रकार प्रभु पूजा । मोहिंसमभागवन्त नहिं दूजा ॥
जहँलगिरहे अपर मुनिवृन्दा । हर्षेसब विलोकि सुखकन्दा ॥
दो० मुनि समूह महँ बैठ प्रभु सन्मुख सब की ओर ।
शरद इन्दु जनु चितवत मानहुं निकर चकोर ॥
पाइसुथल जल हर्षित मीना । पारसपाइसुखी जिमि दीना ॥
प्रभुहिनिरखिसुखभाइहिभांती । चातकजिमिपाई जलस्वाती ॥
तब रघुबीर कहा मुनि पाहीं । तुमसनप्रभुदुराव कछुनाहीं ॥
तुमजानहु जेहिकारण आयउँ । ताते तात न कहिसमुभायउँ ॥
अबसो मन्त्र देहु प्रभु मोही । जेहिप्रकार मारौं मुनि द्रोही ॥
द्विज द्रोही न बचहिं मुनिराई । जिमिपंकजबन हिमऋतुपाई ॥
मुनि मुसकाने सुनि प्रभु बानी । पूछहु नाथ मोहिं का जानी ॥

तुम्हरे भजन प्रभाव अघारी । जानौंमहिमाकछुक तुम्हारी ॥
सो० भृकुटी निरखत नाथ रहत सदा पद कमल तर ।
जिन डारे निज हाथ विविध बिधाता सिद्धहर ॥
अति करालसबपर जगजाना । औरौ कहौं सुनियभगवाना ॥
डूमरि तरु बिशाल तव माया । फलब्रह्माण्ड अनेकनिकाया ॥
जीव चराचर जन्तु समाना । भीतरबसहिं न जानहिंआना ॥
ते फल भक्षक कठिन कराला । तव भय डरत सदासोकाला ॥
ते तुम सकल लोकपति साईं । पूछेहु मोहिं मनुजकी नाईं ॥
यह बर मांगों कृपानिकेता । बसहुहृदयसियअनुजसमेता ॥
अविरलभक्तिविरत सतसंगा । चरण सरोरुहप्रीति अभंगा ॥
यद्यपि ब्रह्मअखण्ड अनन्ता । अनुभवगम्यभजहिंजेहिसन्ता॥
अस तव रूप बखानौं जानौं । फिरिफिरिसगुणब्रह्मरतिमानौं॥
दो० जेहिजीवहुपर तव कृपा संतत रहत हुलास ।
तिनकी महिमा को कहै जे अनन्य प्रियदास ॥
सन्तत दासन देहु बड़ाई । ताते मोहिं पूछेहु रघुराई ॥
है प्रभु परम मनोहर ठाऊं । पावन पंचबटी तेहिनाऊं ॥
गोदावरी नदी तहँ बहई । चारिहुयुग प्रसिद्धसोअहई ॥
दण्डक बन पुनीत प्रभु करहू । उग्र शाप मुनिवर के हरहू ॥
बास करहु तहँ रघुकुलराया । कीजै सकलमुनिनपर दाया ॥
चले राम मुनि आयसु पाई । तुरतहि पंचबटी नियराई ॥
दिव्यलता द्रुम प्रभु मनभाये । निरखि रामते भयउ सुहाये ॥
लषणरामसिय चरण निहारी । काननअघगा भा सुखकारी ॥
दो० गृध्रराज सों भेंटभइ बहुबिधि प्रीति दृढ़ाय ।
गोदावरी समीप प्रभु रहे पर्ण गृह छाय ॥
जबते राम कीन्ह तहँ वासा । सुखीभये मुनि बीते त्रासा ॥
गिरि बन नदी तालछबि छाये । दिनदिनप्रतिअतिहोतसुहाये॥
खगमृगबन्द अनन्दितरहहीं । मधुपमधुरगुंजत छबि लहहीं ॥

सोवनवर्णन सकअहिराजा । जहां प्रकट रघुबीर बिराजा ॥
एक बार प्रभु सुख आसीना । लक्ष्मणवचनकहे छलहीना ॥
सुर नर मुनि सचराचर साईं । मैं पूछौं निज प्रभुकी नाईं ॥
मोहिं समुझाइकहौ सोइ देवा । सबतजिकरौं चरणरजसेवा ॥
कहहु ज्ञान बिराग अरुमाया । कहहुसोभक्तिकरहुजेहि दाया ॥
दो० ईश्वरजीवहि भेद प्रभु सकल कहहु समुझाइ ।
जाते होइ चरण रति शोक मोह भ्रम जाइ ॥
थोरे महँ सब कहौं बुझाई । सुनहुतातमतिमन चितलाई ॥
मैं अरु मोर तोर ते माया । जेहिबशकीन्हे जीवनिकाया ॥
गो गोचर जहँलगि मन जाई । सो सब माया जानेहु भाई ॥
तेहिकर भेद सुनहु तुम सोऊ । बिद्याअपर अविद्या दोऊ ॥
एक दुष्ट अतिशय दुख रूपा । जा बश जीव परा भव कूपा ॥
एक रचै जग गुण बश जाके । प्रभुप्रेरितनाहिं निजबलताके ॥
ज्ञान मान जहँ एकौ नाहीं । देखत ब्रह्मरूप सब माहीं ॥
कहियतात सो परम बिरागी । तृणसमसिद्धितीनिगुणत्यागी ॥
दो० माया ईशन आपु कहँ जान कहिय सो जीव ।
बन्ध मोक्ष प्रद सर्वपर माया प्रेरक सीव ॥
धर्म्म ते बिरति योग ते ज्ञाना । ज्ञान मोक्ष प्रदवेद बखाना ॥
जाते वेगि द्रवौं मैं भाई । सो मम भक्तिभक्त सुखदाई ॥
सो स्वतंत्र अवलंब न आना । जेहि आधीन ज्ञान बिज्ञाना ॥
भक्ति तात अनुपम सुख मूला । मिलहिंजोसन्तहोयअनुकूला ॥
भक्तिके साधन कहौं बखानी । सुगमपन्थमोहिं पावहिंप्रानी ॥
प्रथमहिंबिप्रचरण अतिप्रीती । निजनिजधर्मनिरतश्रुतिनीती ॥
इहिकरफलमन बिषय बिरागा । तबममचरणउपज अनुरागा ॥
श्रवणादिक नव भक्ति दृढ़ाहीं । ममलीलारति अतिमनमाहीं ॥
सन्त चरण पंकज अति प्रेमा । मनक्रमबचनभजनदृढ़ नेमा ॥
गुरु पितु मातु बन्धु पति देवा । सब मोहिंकहँ जानै दृढसेवा ॥

१८

मम गुण गावत पुलकशरीरा । गद्गद गिरा नयनबहनीरा ॥
काम आदि मद दम्भ न जाके । तात निरन्तर बश मैं ताके ॥
दो० बचन कर्ममन मोरिगति भजन करै निष्काम ।
तिनके हृदय कमल महँ करौं सदा बिश्राम ॥
भक्तियोगसुनि अतिसुख पावा । लक्ष्मणप्रभुचरणन्हशिरनावा ॥
नाथ सुने गत मम सन्देहा । भयउ ज्ञान उपजेउ नवनेहा ॥
अनुजबचनसुनि प्रभुमनभाये । हर्षि राम निज हृदयलगाये ॥
इहिविधि गये कछुकदिनबीती । कहत बिराग ज्ञानगुणनीती ॥
शूर्पणखा रावण की बहिनी । दुष्टहृदयदारुण जिमिअहिनी ॥
पञ्चबटी सो गइ यक बारा । देखिविकलभइ युगलकुमारा ॥
भ्राता पिता पुत्र उरगारी । पुरुष मनोहर निरखतनारी ॥
होइबिकलसकमननहिंरोकी । जिमिरबिमणिद्रवरबिहिंबिलोकी ॥
दो० अधम निशाचरि कुटिलअति चलीकरन उपहास ।
सुनु खगेश भावी प्रबल भा चह निशिचर नास ॥
रुचिर रूप धरि प्रभुपहँ आई । बोली बचन मधुर मुसुकाई ॥
तुमसम पुरुष न मोसम नारी । यहसँयोगविधिरचा बिचारी ॥
मम अनुरूप पुरुष जग नाहीं । देखेउँखोजि लोकतिहुँमाहीं ॥
ताते अब लगि रही कुमारी । मनमाना कछुतुमहिंनिहारी ॥
सीतहिं चितइ कही प्रभुबाता । अहैकुमार मोर लघु भ्राता ॥
गइ लक्ष्मण रिपुभगिनी जानी । प्रभु बिलोकिबोले मृदुबानी ॥
सुन्दरि सुनु मैं उनकर दासा । पराधीन नहिं तोर सुपासा ॥
प्रभु समरथ कोशलपुर राजा । जोकछुकरहिंउन्हैं सबछाजा ॥
दो० केहरिसम नहिंकरिवर लवाकि बाज समान ।
प्रभुसेवक इमि जानहु मानहु बचन प्रमान ॥
सेवकसुख चहमानभिखारी । व्यसनीधनशुभगतिव्यभिचारी ॥
लोभी यश चह चार गुमानी । नभदुहिदूधचहतकोउ प्रानी ॥
पुनिफिरि राम निकटसो आई । प्रभु लक्ष्मणपहँ बहुरिपठाई ॥

लक्ष्मण कहा तोहिं सो बरई । जो तृण तोरि लाजपरिहरई ॥
तब खिसिआनि रामपहँ गई । रूप भयंकर प्रगटत भई ॥
बिथुरे केश रदन बिकराला । भृकुटीकुटिलकरणलगिगाला ॥
सीतहि सभय देखि रघुराई । कहा अनुजसन सैन बुझाई ॥
अनुज राम मनकी गतिजानी । उठेरिसाइ सो सुनहुभवानी ॥
दो० लक्ष्मणअति लाघवतिहि नाककान बिनु कीन्ह ।
ताके कर रावण कहँ मनहुँ चुनौती दीन्ह ॥
नाक कान बिनु भइ बिकरारा । जनुस्रव शैल गेरु कै धारा ॥
खर दूषण पहँ गइ बिलखाता । धिकधिकतवपौरुषबलभ्राता ॥
तेइ पूंछा सब कहेसि बुझाई । यातुधान सुनि सैन बुलाई ॥
चौदह सहस सुभट सँग लीन्हे । जिनसपनेहुँ रणपीठनदीन्हे ॥
धाये निशिचर निकर बरूथा । जनु सपक्षकज्जलगिरियूथा ॥
नाना बाहन नाना कारा । नाना आयुध घोर अपारा ॥
श्यामघटा देखत नभ केरी । तहँ बासव धनु मनहुँउयेरी ॥
शूर्पणखहि आगे करिलीनी । अशुभरूप श्रुतिनासा हीनी ॥
दो० निजनिज बलसबमिलिकहहिं एकहिंएकसुनाइ ।
बाजन बाज जुझाऊ हर्ष न हृदय समाइ ॥
अशकुनअमित होहिंभयकारी । गनहिंनमृत्युबिबशभयभारी ॥
गर्जहिं तर्जहिं गगन उड़ाहीं । देखिकटकभट अतिहरषाहीं ॥
कोउकह जियत धरहुदोउभाई । धरिमारहु तियलेहु छुड़ाई ॥
कोउकह सुनौ सत्यहमकहहीं । काननफिरहिंबीरकोउअहहीं ॥
एकै कहा मष्ट है रहहू । खरके आगे असजनिकहहू ॥
यहिबिधिकहत बचनरणधीरा । आये सकल जहां रघुबीरा ॥
धूरि पूरि नभ मण्डल रहेऊ । रामबोलाइअनुजसन कहेऊ ॥
लै जानकिहिजाहु गिरिकन्दर । आवानिशिचरकटक भयंकर ॥
रहेहु सजग सुनि प्रभुकैबाणी । चलेसहित सियशरधनुपाणी ॥
देखिरामरिपुदल चलि आवा । बिहँसिकठिनकोदण्डचढावा ॥

छं० कोदण्डकठिन चढ़ाइप्रभुशिर जटा बांधत सोहज्यों ।
मरकतशयलपरलसतदामिनि कोटिसजगभुजंगज्यों ॥
कटिकसिनिषंगबिशालभुजगाहिचापबिशिखसुधारिकै ।
चितवत मनहुँ मृगराजप्रभु गजराजघटानिहारिकै ॥
सो० आयगये बगमेल धरहु धरहु धाये सुभट ।
यथा बिलोकि अकेल बालरबिहि घेरत दनुज॥
घेरिरहे निशिचर समुदाई । दण्डकखग मृगचले पराई ॥
प्रभु बिलोकि शरसकहिंनडारी । थकितभयेरजनीचर भारी ॥
सचिव बोलि बोले खरदूषण । यहकोउनृपबालकनरभूषण ॥
सुरनरनाग असुर मुनि जेते । देखे सुने हते हम केते ॥
हम भरिजन्म सुनहु सब भाई । देखी नहिं असि सुन्दरताई ॥
यद्यपिभगिनी कीन्ह कुरूपा । बधलायक नहिं पुरुषअनूपा ॥
देहु तुरत निज नारि दुराई । जीवत भवन जाहु दोउभाई ॥
मोरकहा तुम ताहि सुनावहु । तासुबचनसुनि आतुरआवहु ॥
दो० भये कालबश मूढ़ सब जानहिं नहिं रघुबीर ।
मशकफूंककिमिमेरुउड़ सुनहुगरुड़ मतिधीर ॥
दूतन कहा राम सन जाई । सुनत राम बोले मुसुकाई ॥
आजु भयो बड़भाग हमारा । तुम्हरेप्रभु असकीनबिचारा ॥
हम छत्री मृगया बन करहीं । तुमसेखलमृग खोजतफिरहीं ॥
रिपु बलवन्त देखि नहिं डरहीं । एकबार कालहुसन लरहीं ॥
यद्यपिमनुज दनुजकुलघालक । मुनिपालकखलशालकबालक॥
जो न होइबल घर फिरिजाहू । समरबिमुख मैं हतौं न काहू ॥
रण चढ़ि करिय कपट चतुराई । रिपुपर कृपा परम कदराई ॥
दूतन जाइ तुरत सब कहेऊ । सुनिखरदूषणउर अतिदहेऊ ॥
छं० उरदहेउकहेउ किधरहुधावहु बिकटभट रजनीचरा ।
शरचापतोमर शक्तिशूल कृपाण परिघ परशूधरा ॥
प्रभुकीन्ह धनुषटंकोर प्रथम कठोरघोर भयोमहा ।

भयेबधिरव्याकुलयातुधान नज्ञानतेहिअवसररहा ॥
दो० सावधान होइ धाये जानि सबल आराति ।
लागे बर्षन राम पर अस्त्र शस्त्र बहु भांति ॥
तिन्हके आयुध तृण सम करि काटे रघुबीर ।
तानिसरासन श्रवणलगि पुनिछांड़े निजतीर ॥
छं० तब चले बाण कराल । फुंकरत जनु बहुब्याल ॥
कोपेउसमरश्रीराम । चलेविशिखनिशितानिकाम ॥
अवलोकि खर तरतीर । मुरिचले निशिचरबीर ॥
यक एक कहँ न सँभार । कर तात मात पुकार ॥
कोउ कहै खरकहकीन्ह । जो युद्ध इनसन लीन्ह ॥
ये बाण अतिहिकराल । ग्रसेआइ मानहुँ काल ॥
भय क्रुद्ध तीनों भाइ । जो भागि रण ते जाइ ॥
तेहिबधबहुमनिजपानि। फिरेमरणमनमहँ ठानि ॥
दो० उमाएक निज प्रभुहिबश पुनि इन के बड़भाग ।
तरणचहहिं प्रभु शरलगे बिना योग जपयाग ॥
छं० आयुध अनेक प्रकार । सन्मुख ते करहिं प्रहार ॥
रिपु परम कोपे जानि । प्रभु धनुष शर संधानि ॥
छांड़े बिपुल नाराच । लगेकटनबिकटपिशाच ॥
उरशीशकर भुजचरन । जहँतहँ लगे महिपरन ॥
चिक्करत लागत बान । धरपरत कुधर समान ॥
भटकटत तनशतखंड । पुनि उठत करिपाखंड ॥
नभ उड़त बहुभुजमुंड । बिनु मौलि धावत रुंड ॥
खग कंक काकशृगाल । कटकटहिं कठिनकराल ॥
छं० कटकटहिंजम्बुक भूतप्रेत पिशाचखप्परसाजहीं ।
बैतालबीर कपाल ताल बजाइयोगिनि नाचहीं ॥
रघुबीरबाणप्रचण्डखण्डहिं भटनकेउरभुजशिरा ।
जहँतहँपराइंउठिलराहिंधरुधरुकरहिंसकलभयंकरा॥

अंत्रावलीगहिउड़हिं गृद्ध पिशाचकरगहिधावहीं ।
संग्राम पुरवासी मनहुँ बहु बाल गुड़ी उड़ावहीं ॥
मारे पछारे उर बिदारे बिपुल भट घुर्मित परे ।
अवलोकिनिजदलबिकलभटत्रिशिरादिखरदूषणफिरे ॥
शर शक्ति तोमर परशु शूल कृपाण एकहि बारहीं ।
करिकोप श्रीरघुबीरपर अगणित निशाचर डारहीं ॥
प्रभुनिमिषमहँ रिपुशर निवारि प्रचारिडारे शायका ।
दशदशबिशिखउरमांझमारेसकलनिशिचरनायका ॥
महिपरतउठिभटभिरतपुनि पुनिकरतमायाअतिघनी ।
सुरडरतचौदहसहस निशिचर एकश्रीरघुकुलमनी ॥
सुरमुनिसभयप्रभुदेखिमायानाथ अतिकौतुककस्यो ।
देखतपरस्पर रामकरि संग्राम रिपुदल लरिमस्यो ॥

दो० राम रामकरि तन तजहिं पावहिं पद निर्बान ।
करि उपाय रिपु मारेव छणमहँ कृपा निधान ॥
हर्षित बर्षहिं सुमनसुर बाजहिं गगन निशान ।
अस्तुतिकरिकरिसबचलेशोभितविविधबिमान॥

जब रघुनाथ समर रिपुजीते । सुर नरमुनि सबके दुखबीते ॥
तब लक्ष्मण सीतहि लैआये । प्रभु पद परत हर्षि उरलाये ॥
सीता निरखि श्यामम्रदुगाता । परमप्रेम लोचन न अघाता ॥
पंचवटी बसि श्री रघुनायक ।करतचरितसुरमुनिसुखदायक॥
धुआं देखि खर दूषण केरा । शूर्पणखा तब रावण प्रेरा ॥
बोली बचन क्रोध करिभारी । देश कोशकी सुरति बिसारी ॥
करासि पान सोवसि दिनराती । सुधिन तोहिंशिरपरआराती ॥
राजनीति बिनु धन बिनु धर्मा । हरिहि समर्पे बिनु सतकर्मा ॥
बिद्या बिनु बिवेक उपजाये । श्रम फल पढ़े किये अरुपाये ॥
संग ते यती कुमंत्र ते राजा । मनते ज्ञान ज्ञान ते लाजा ॥
प्रीति प्रणय बिनुमद ते गुनी । नाशहिं बेगि नीतिअससुनी ॥

सो० रिपु रुज पावक पाप प्रभुअहिगणियन छोटकरि ।
असकहि बिबिध बिलाप करि लागीरोदनकरन ॥
दो० सभा मांझ ब्याकुल परी बहुप्रकार करि रोइ ।
तोहिंजियतदशकन्धर मोरि कि असगतिहोइ ॥
सुनत सभासद उठअकुलाई । समुझाई गहि बांह बिठाई ॥
कह लंकेश कहसि निजबाता । केइ तव नासा कान निपाता ॥
अवध नृपति दशरथके जाये । पुरुष सिंह बनखेलन आये ॥
समुझिपरीमोहिं उनकीकरणी । रहित निशाचर करिहैं धरणी ॥
जिनकरभुजबल पाइदशानन । अभयभयेमुनिबिचरहिंकानन॥
देखत बालक काल समाना । परम धीर धन्वी गुण नाना ॥
अतुलितबलप्रताप दोउभ्राता । खलबधरतसुरमुनिसुखदाता ॥
शोभा धाम राम अस नामा । तिन्हके सँग इकनारिललामा ॥
सो० अतिसुकुमारिपियारि पटतरयोग न आहिकोउ ।
मैं मन दीख बिचारि जहँरहतेहि समआननहिं ॥
रूप राशि बिधि नारिसँवारी । रति शतकोटि तासुबलिहारी ॥
अजहुँ जाय देखवतुमजबहीं । होइहौबिकलतासुबशतबहीं ॥
जीवन मुक्ति लोकवश ताके । दशमुखसुनुसुन्दरिअसिजाके॥
तासु अनुज काटी श्रुति नासा । सुनितवभगिनीकरिपरिहासा॥
बिनऽपराध असहाल हमारी । अपराधी किमिबचाहिंसुरारी ॥
खर दूषण सुनि लाग गुहारा । क्षणमहँसकलकटकउनमारा ॥
खरदूषण त्रिशिरा कर घाता । सुनिदशशीशजरा सबगाता ॥
भयो शोचबश नहिं बिश्रामा । बीतहिं पलमानहुँ शतयामा ॥
दो० शूर्पणखहिं समुझाइकरि बलबोलेसि बहुभाँति ।
भवन गयउ अतिशोच बश नींदपरी नहिंराति ॥
सुर नर असुर नाग जगमाहीं । मोरे अनुचर सम कोउनाहीं ॥
खर दूषण मोसम बलवन्ता । तिन्हैंको मारै बिनु भगवन्ता ॥
सुर रञ्जन भञ्जन महि भारा । जो जगदीश लीन्हअवतारा ॥

तो मैं जाइ बैर हठ करिहौं । प्रभुशरते भवसागर तरिहौं ॥
होइ भजन नहिं तामस देहा । मन क्रम बचन मन्त्रदृढ़ एहा ॥
जो नर रूप भूप सुत कोऊ । हरिहौं नारि जीति रणदोऊ ॥
चला अकेल यानचढ़ि तहवां । बस मारीच सिन्धुतट जहवां ॥
रथ अनूप जोरे खर चारी । वेगवन्त इमि जिमिउरगारी ॥
छं० उरगारिसमअतिबेगबरणत जायनहिं उपमाकही ।
शिरछत्रशोभितश्यामघनजन चमरश्वेतविराजहीं ॥
इहिभाँति नांघत सरितशैल अनेक बापी सोहहीं ।
बनबागउपवनबाटिका शुचिनगरमुनिमनमोहहीं ॥
दो० बहुतड़ाग शुचि बिहँगमृग बोलत बिबिध प्रकार ।
इहिबिधि आयहु सिन्धुतट शतयोजन बिस्तार ॥
सुन्दरजीव विविध विधिजाती । करहिंकुलाहलदिनअरुराती ॥
कूदहिं ते गरजहिं घननाई । महाबली बलबरणि न जाई ॥
कनक बाल सुन्दर सुखदाई । बैठहिं सकलजन्तु तहँ आई ॥
तिहिपर दिब्यलता तरुलागे । जिन्हिदेखत मुनिमन अनुरागे ॥
गुहाविविधविधि रहहिं बनाई । बरणत शारद मन सकुचाई ॥
चाहिय जहां ऋषिनकर बासा । तहां निशाचरकरहिंनिवासा ॥
दशमुखदेखि सकल सकुचाने । जे जड़जीव सजीव पराने ॥
इहां राम जसि युक्ति बनाई । सुनहु उमा सो कथा सुहाई ॥
दो० लक्ष्मणगये बनहिं जब लेन मूलफल कन्द ।
जनकसुतासन बोले बिहँसि कृपासुख कन्द ॥
सुनहुप्रियाव्रत रुचिरसुशीला । मैं कछुकरब ललितनरलीला ॥
तुम पावकमहँ करहु निवासा । जौलगिकरौं निशाचरनासा ॥
जबहिं रामसब कहेउ बखानी । प्रभुपदधरिहिय अनलसमानी ॥
निजप्रतिबिम्बराखितहँसीता । तैसेइ शील स्वरूप बिनीता ॥
लक्ष्मणहू यह मर्म न जाना । जोकछुचरितरच्यो भगवाना ॥
दशमुख गयउ जहाँ मारीचा । नायमाथ स्वारथ रतनीचा ॥

नवनि नीचकी अति दुखदाई। जिमिअंकुशधनुउरगबिलाई॥
भयदायक खलकी प्रिय बानी। जिमिअकाशकेकुसुमभवानी॥
दो० करि पूजा मारीच तब सादर पूछी बात।
कवन हेतुमन व्यग्रअति अकसर आयउतात॥
दशमुख सकल कथातेहिआगे। कहीसहितअभिमानअभागे॥
होहु कपट मृग तुम छलकारी। जेहिबिधिहरिआनौंनृपनारी॥
तेहँ पुनि कहा सुनहुदशशीशा। ते नर रूप चराचर ईशा॥
तासों तात बैर नहिं कीजे। मारे मरिय जिआये जीजे॥
मुनि मख राखन गयउकुमारा। बिनुफरशररघुपतिमोहिंमारा॥
शतयोजन आयउँ छनमाहीं। तिनसन बैरकिये भलनाहीं॥
भइ मति कीट भृंग की नाई। जहँ तहँ मैं देखौं दोउभाई॥
जो नर तात तदपि अति शूरा। तिनहिं बिरोध न पाइहिपूरा॥
दो० जेइ ताड़का सुबाहु हति खण्डेउ हरको दण्ड।
खरदूषणत्रिशिराबधेउ मनुजकिअसबलबण्ड॥
रा असनाम सुनत दशकन्धर। रहतप्राणनहिंममउरअन्तर॥
जाहुभवनकुल कुशलबिचारी। सुनतहिशठदीन्हेसिबहुगारी॥
गुरुजिमि मूढ़ करसिममबोधा। कहुजगमोहिंसमानकोयोधा॥
तब मारीच हृदय अनुमाना। नवहिं बिरोधेनहिं कल्याना॥
शस्त्री मर्मी प्रभु शठ धनी। बैद्य बन्दि कवि मानसगुनी॥
उभय भांति देखा निज मरणा। तबताकेसिरघुनायकशरणा॥
उतरदेत मोहिंबधिहि अभागी। कसनमरौं रघुपतिशरलागी॥
अस जियजानि दशाननसंगा। चला राम पद प्रेम अभंगा॥
मन अति हर्ष जनाव न तेही। आजु देखिहौं परम सनेही॥
छं० निजपरमप्रीतमदेखिलोचन सुफलकरि सुखपाइहौं।
श्रीसहित अनुजसमेत कृपानिकेत पदमनलाइहौं॥
निर्वाणदायक क्रोधजाकर भक्त ऐसेहि बसकरी।
निजपाणिसरसन्धानिसोमोहिंबधहिंसुखसागरहरी॥

दो० मम पाछे धर धावत धरे शरासन बान।
फिरिफिरिप्रभुहिंबिलोकिहौंधन्यनमोसमआन॥
सीता लषण सहित रघुराई। जेहिबनबसहिंमुनिन्हसुखदाई॥
तेहिबन निकटदशानन गयऊ। तबमारीच कपटमृग भयऊ॥
अतिबिचित्र कछुबरणि न जाई। कनकदेह मणिरचितबनाई॥
सीता परम रुचिर मृग देखा। अंग अंग सु मनोहर वेखा॥
सुनहु देव रघुबीर कृपाला। इहिमृगकरअतिसुन्दरछाला॥
सत्यसिन्धु प्रभु बध करि एही। आनहु चर्म कहति बैदेही॥
तब रघुपति जाना सब कारन। उठे हर्षि सुरकाज सँवारन॥
मृगबिलोकिकटि परिकर बांधा। करतलचाप रुचिरशरसांधा॥
प्रभु लक्ष्मणहिकहा समुझाई। फिरतबिपिननिशिचरबहुभाई॥
सीता केरि करेहु रखवारी। बुधिबिवेकबलसमयबिचारी॥
दो० अस कहि चलेतहां प्रभु जहां कपट मृगनीच।
देव हर्ष विस्मय विवश चातक बर्षा बीच॥
प्रभुहिबिलोकिचला मृगभाजी। धाये राम शरासन साजी॥
निगमनेति शिवध्यान न पावा। माया मृग पाछे सो धावा॥
कबहुँ निकट पुनि दूरि पराई। कबहुँक प्रकटै कबहुँ छपाई॥
प्रकटत दुरत करत छल भूरी। इहिबिधि प्रभुहिगयोलै दूरी॥
तबतकि राम कठिन शर मारा। धरणिपरयोकरिघोरचिकारा॥
लक्ष्मणकर प्रथमहिं लै नामा। पाछे सुमिरेसि मनमहँरामा॥
प्राणतजत प्रकटेसि निजदेही। सुमिरेसि रामसहित बैदेही॥
अन्तर प्रेम तासु पहिचाना। मुनिदुर्लभगतिदीन्हसुजाना॥
दो० विपुल सुमन सुरबर्षहिं गावहिंप्रभुगुण गाथ।
निज पद दीन्हेअसुरकहँ दीनबन्धु रघुनाथ॥
खलबधि तुरत फिरे रघुबीरा। सोह चाप कर कटि तूणीरा॥
आरत गिरा सुनी जब सीता। कहलक्ष्मणसनपरमसभीता॥
जाहु बेगि संकट तव भ्राता। लक्ष्मणबिहँसिकहासुनुमाता॥

भृकुटि बिलास सृष्टिलयहोई । सपनेहुँ संकट परै कि सोई ॥
सौंपि गयेमोहिं रघुपति थाती । जोतजिजाउँ तोषनहिंछाती ॥
यहजियजानि सुनहुममभ्राता । पूछब कहब कवन मैं बाता ॥
मर्म बचन सीता जब बोली । हरिप्रेरितलक्ष्मणमतिडोली ॥
चहुँदिशि रेखा खींचि अहीशा । बार बार नाये पद शीशा ॥
वन दिशि देव सौंपिसबकाहू । चले जहां रावण शशि राहू ॥
चितवहिंलक्षणसियहिफिरिकैसे । तजतबच्छ निजमातहिजैसे ॥

दो० एक डरत डर रामके दूजे सीय अकेलि ।
लक्षण तेज तन हतभये जिमिडाढ़ी दवबेलि ॥

शून्य भवन दशकंधर देखा । आवानिकट यती के वेखा ॥
जाके डर सुर असुर डराहीं । निशिननींददिनअन्ननखाहीं ॥
सो दशशीश श्वान की नाई । इत उत चितै चलाभँडिहाई ॥
जिमि कुपन्थ पग देत खगेशा । रह न तेज बल बुधिलवलेशा ॥
करि अनेक विधि छलचतुराई । मांगेउभीख दशानन जाई ॥
अतिथिजानिसिय कंदमूलफल । देनलगी तेइँकीन्हबहुरिछल ॥
कह दशमुख सुन सुन्दरिबानी । बांधी भीख न लेउँ सयानी ॥
बिधिगति बाम काल कठिनाई । रेखलांघि सिय बाहर आई ॥

दो० विश्वभरनिअघदलदलनि करणिसकलसुरकाज ।
जाना नहिं दशशीश तेहि मूढ़ कपट के साज ॥

नाना बिधि कहि कथा सुहाई । राजनीति भय प्रीति देखाई ॥
कह सीता सुनु यती गुसाईं । बोलेसि बचन दुष्ट की नाईं ॥
तब रावण निज रूप दिखावा । भइ सभीत जबनामसुनावा ॥
कह सीता धरि धीरज गाढ़ा । आवत प्रभु रेखल रहुठाढ़ा ॥
जिमिहरिबधुहि क्षुद्रशशचाहा । भयेसिकालबशनिशिचरनाहा ॥
बायसकरचह खगपति समता । सिन्धुसमानहोइकिमिसरिता ॥
खरि कि होइ सुर धेनु समाना । जाहु भवन निजसुन अज्ञाना ॥
सुनत बचनदशशीश लजाना । मनमहँचरणबन्दिसुखमाना ॥

दो० क्रोधवन्त तब रावण लीन्हेसि रथ बैठाय।
चलेउ गगनपथ आतुर भयबश हांकि न जाय ॥
हा जगदीश देव रघुराया। केहि अपराध बिसारेहुदाया॥
आरत हरण शरण सुखदायक। हा रघुकुलसरोजदिननायक॥
हा लक्ष्मण तुम्हार नहिं दोषा। सोफल पायउँ कीन्हेउँ रोषा॥
कैकेयी मन जो कछु रहेऊ। सोबिधिआजुमोहिंदुखदयऊ॥
पंचबटी के खग मृग जाती। दुखी भये बनचर बहुभांती॥
विविध बिलाप करत बैदेही। भूरि कृपा प्रभु पूरि सनेही॥
बिपति मोरिको प्रभुहि सुनावा। पुरोडास चह रासभ खावा॥
सीताकर बिलाप सुनि भारी। भये चराचर जीव दुखारी॥
दो० बहुबिधि करतबिलापनभ लियेजात दशशीश।
डरत न खल बरपाइभल जो दीन्हो अजईश॥
गृध्रराज सुनि आरत बानी। रघुकुलतिलकनारिपहिचानी॥
अधम निशाचर लीन्हे जाई। जिमिमलेच्छबशकपिलागाई॥
अहह प्रथम बलममतनु नाहीं। तदपि जाइ देखौं बल ताहीं॥
सीता पुत्रि करसि जनि त्रासा। करिहौं यातुधान करनासा॥
धावा क्रोधवन्त खग कैसे। छूटै पबि पर्वत पहँ जैसे॥
रे रे दुष्ट ठाढ़ किन होहीं। निर्भयचलसिनजानेसिमोहीं॥
आवत दीख कृतांत समाना। फिरि दशकंधकरतअनुमाना॥
की मैनाक कि खगपति होई। ममबलजानिसहितपतिसोई॥
जाना जरठ जटायू येहा। ममकर तीरथ छांड़हि देहा॥
दो० मम भुजबल नहिं जानत आवत तपिन्हसहाइ।
समरचढ़े तौ इहिहतौं जियत न निजथलजाइ॥
सुनत गृध्र क्रोधातुर धावा। कहसुन रावण मोर सिखावा॥
तजि जानकी कुशल गृहजाहू। नाहित सत्यसुनहु बहुबाहू॥
राम रोष पावक अति घोरा। होइहिसकलशलभकुलतोरा॥
उतर न देत दशानन योधा। तबहिं गृध्र धावा करि क्रोधा॥

धरिकचविरथ कीन्ह महिगिरा । सीतहि राखि गृध्रपुनि फिरा ॥
दशमुख उठि कृतशर संधाना । गृध्र आइ काटेउ धनुबाना ॥
चोंचन मारि बिदारेसि देही । दण्ड एक भइ मूर्च्छा तेही ॥
दो० जेइ रावण निज बश किये मुनिगण सिद्धसुरेश ।
तेइ रावणसन समर अति धीर बीर गृध्रेश ॥
स्वस्थ भये सो पुनि उठिधावा । मारे गृध्र न सन्मुखआवा ॥
कीन्हेसि बहुजब युद्ध खगेशा । थकितभयोतब जरठगिधेशा ॥
तबसक्रोधनिशिचरखिसियाना। काढ़ेसिपरम कराल कृपाना ॥
काटेसि पंख परा खग धरणी । सुमिरि रामकी अद्भुतकरणी ॥
मनमहँ गृध्र परम सुखमाना । राम काज मम लाग्यो प्राना ॥
सीतहि यान चढ़ाय बहोरी । चला उताइल त्रास न थोरी ॥
करति बिलाप जातनभ सीता । ब्याध बिवशजनुमृगीसभीता ॥
गिरिपर बैठे कपिन निहारी । कहिहरिनाम दीन्हपट डारी ॥
यहि बिधि सीतहिसो लैगयऊ । बनअशोकमहँ राखतभयऊ ॥
दो० हारिपरा खल बहुतबिधि भयअरु प्रीति दिखाइ ।
तब अशोक पादप तरे राखेसि यतनकराइ ॥
उहां बिधाता मन अनुमाना । सुरपति बोलिमंत्र असठाना ॥
तात जनक तनया पहँ जाहू । सुधिनपावजिहिनिशिचरनाहू ॥
असकहिबिधिसुन्दरहबिआनी । सौंपि बहुरि बोले मृदुबानी ॥
इह भच्छण कृत क्षुधा न प्यासा । बर्ष सहसदश संशयनासा ॥
सो प्रसाद लै आयसु पाई । चले हृदय सुमिरत रघुराई ॥
कछु बासव माया निज गोई । रक्षक रहे गये तहँ सोई ॥
तदपि डरत सीता पहँ आयउ । करिप्रणामनिजनामसुनायउ ॥
निश्चय जान सुरेश सुजाना । पिताजनकदशरथसम माना ॥
करि परितोष दूरिकर शोका । हव्यखवाय गये निजलोका ॥
दो० जेहि बिधि कपट कुरंगसँग धाय चले श्रीराम ।
सो छबि सीता राखिउर रटतिरहति हरिनाम ॥

रघुपति अनुजहि आवतदेखी । मनबहुचिंता कीन्ह बिशेखी ॥
जनकसुता परिहरेउ अकेली । आयहुतात वचनमम पेली ॥
निशिचरनिकरफिरहिंवनमाहीं । मममनसीता आश्रम नाहीं ॥
अहह तातभल कीन्हेउ नाहीं । सिय विहीनममजीवन काहीं ॥
इहिते कवन बिपति बड़िभाई । खोयहु सीय काननहिंआई ॥
गहिपद कमलअनुज करजोरी । कहेउनाथकछु मोरि न खोरी ॥
अनुजसमेत गयउ प्रभुतहँवां । गोदावरि तटआश्रमजहँवां ॥
आश्रम देखि जानकी हीना । भये बिकलजस प्राकृतदीना ॥
दो० कानन रहेउ तड़ाग इव चकचकई सियराम ।
रावण निशि बिछुरन किये दुखबीते चहुँयाम ॥
परदुख हरण शोक दुख नाहीं । भाबिषाद तिनके मनमाहीं ॥
हा गुणखानि जानकी सीता । रूप शील व्रत नेम पुनीता ॥
लक्ष्मण समुझाये बहु भांती । पूंछत चले लता तरु पांती ॥
हे खगमृग हे मधुकर श्रेनी । तुम देखी सीता मृगनैनी ॥
खंजन शुक कपोत मृगमीना । मधुप निकरकोकिला प्रवीना ॥
कुन्दकली दाड़िम दामिनी । कमलशरदशशिअहिभामिनी ॥
बरुण पाश मनोज धनु हंसा । गजकेहरि नितसुनत प्रशंसा ॥
श्रीफल कमल कदलि हरषाहीं । नेकु न शंक सकुच मनमाहीं ॥
सुन जानकी तोहिं बिनआजू । हर्षे सकल पाइ जनु राजू ॥
किमिसहिजातअनखतोहिंपाहीं । प्रिया बेगिप्रकटतकस नाहीं ॥
इहिविधिबिलपतखोजतस्वामी । मनो महा बिरही अति कामी ॥
दो० फणिमणि हीनदीन जिमि मीन हीन जिमिबारि ।
तिमिब्याकुलभये लषणतहँ रघुबरदशा निहारि ॥
धरिउरधीर बुझावहिं रामहिं । तजहिंनशोकअधिकसुखधामहिं ॥
पूरण काम राम सुख राशी । मनुजचरितकरअजअविनाशी ॥
सरवर अमितनदी गिरिखोहा । बहुबिधिरामलषणतहँ जोहा ॥
शोचहदय कछुकहिनहिं आवा । दूटधनुष शरआगे पावा ॥

कहुं कहुं शोणित देखिय कैसे । आवण जल भा डाबर जैसे ॥
कहत राम लक्ष्मणहिं बुझाई । काहू कीन्ह युद्ध इहिठाई ॥
आगे परा गृध्रपति देखा । सुमिरत रामचरण की रेखा ॥
दो० कर सरोज शिर परसेउ कृपासिन्धु रघुबीर ।
निरखिरामछबिधाम मुख बिगतभई सबपीर ॥
तब कह गृध्र बचन धरिधीरा । सुनहु राम भञ्जन भवभीरा ॥
नाथ दशाननयहगतिकीन्ही । तेहिखलजनकसुताहरिलीन्ही ॥
लै दक्षिणदिशि गयउ गोसाईं । बिलपति अतिकुररीकीनाईं ॥
दरशलागि प्रभु राखेउँ प्राना । चलनचहतअबकृपानिधाना ॥
राम कहा तनु राखहु ताता । मुख मुसकाइ कहीतेइँ बाता ॥
जाकर नाम मरत मुख आवा । अधमौ मुक्तहोइँ श्रुतिगावा ॥
सो मम लोचन गोचर आगे । राखौंदेह नाथ केहि लागे ॥
जल भरि नयनकहा रघुराई । तात कर्म निजते गतिपाई ॥
परहित बश जिनके मनमाहीं । तिनकहँ जगदुर्लभकछुनाहीं ॥
तनु तजितात जाहु ममधामा । देउँ कहा तुम पूरण कामा ॥
दो० सीता हरण तात जनि कहेहु पिता सनजाइ ।
जो मैंरामतौ कुलसहित कहिहिदशाननआइ ॥
गृध्र देहतजि धरि हरिरूपा । भूषण बहु पट पीत अनूपा ॥
श्यामगात बिशाल भुजचारी । अस्तुतिकरतनयनभरिबारी ॥
छं० जयराम रूप अनूप निर्गुण सगुणगुण प्रेरकसही ।
दशशीशबाहुप्रचण्ड खण्डनचण्डशरमण्डनमही ॥
पाथोज गात सरोजमुख राजीव आयत लोचनं ।
नितनौमि रामकृपालु बाहुविशाल भवभयमोचनं ॥
बलमप्रमेयमनादिमजमव्यक्तमेकमगोचरं ।
गोबिन्द गोपरद्वन्द हर विज्ञानघन धरणीधरं ॥
जेराममंत्र जपन्तसन्त अनन्त जनमन रञ्जनं ।
नितनौमि रामअकामप्रिय कामादिखलदलगञ्जनं ॥

जेहिश्रुतिनिरंतरब्रह्मव्यापकविरजअजकहिगावहीं ।
करिज्ञानध्यान विरागयोग अनेकमुनिजेहिध्यावहीं ॥
सो प्रकट करुणाकन्द शोभावृन्द अगजगमोहई ।
मम हृदय पङ्कज भृङ्गअङ्गअनङ्ग बहुछबि सोहई ॥
जोअगमसुगमस्वभावनिर्मलअसमसमशीतलसदा।
पश्यन्ति यं योगी यतनकरि करत मनगोबशसदा ॥
सो राम रमानिवास सन्तत दासबश त्रिभुवनधनी ।
ममउर बसहु सो शमनसंसृति जासुकीरतिपावनी ॥
दो० अबिरल भक्तिमांगि बर गृध्र गयउ हरिधाम ।
तेहिकी क्रिया यथोचित निजकर कीन्ही राम ॥
कोमलचित अतिदीनदयाला । कारण बिनु रघुनाथ कृपाला ॥
गृध्रअधमखग आमिष भोगी । गतितेहिदीन्हजोयाचतयोगी॥
सुनहु उमा ते लोग अभागी । हरितजिहोहिंबिषयअनुरागी॥
पुनि सीतहि खोजत दोउभाई । चले बिलोकत बन बहुताई ॥
संकुल लता बिटप घनकानन । बहुखगमृगतहँगजपञ्चानन ॥
आवत पन्थ कबन्ध निपाता । तेइँ सब कही शापकी बाता ॥
दुर्वासा मोहिं दीन्हों शापा । प्रभुपद देखि मिटा सो पापा ॥
सुन गन्धर्ब कहौं मैं तोहीं । मोहिं न सुहाइब्रह्मकुलद्रोही ॥
दो० मन क्रम बचन कपट तजि जो कर भूसुर सेव ।
मोहिं समेत बिरञ्चि शिव बश ताके सबदेव ॥
शापत ताड़त परुष कहन्ता । बिप्रपूज्य असगावहिं सन्ता ॥
पूजिय बिप्र शील गुण हीना । नहिं न शूद्र गुणज्ञानप्रवीना ॥
कहिनिजधर्म्मताहि समुझावा । निजपदप्रीति देखिमनभावा ॥
रघुपति चरणकमल शिरनाई । गयउगगनआपनिगतिपाई ॥
ताहि देइ गति राम उदारा । शबरी के आश्रम पगु धारा ॥
शबरी दीख राम गृह आये । मुनिकेबचनसमुझिजियभाये॥
सरसिजलोचन बाहु बिशाला । जटामुकुट शिरउर बनमाला ॥

श्याम गोरसुन्दर दोउ भाई । शबरी परी चरण लपटाई ॥
प्रेम मगन मुखवचन न आवा । पुनिपुनिपदसरोजशिरनावा ॥
सादर जल ले चरण पखारे । पुनि सुन्दर आसन बैठारे ॥
दो० कन्दमूलफल सरसअति दिये रामकहँ आनि ।
प्रेम सहित प्रभु खायउ बारहिंबार बखानि ॥
पाणिजोरि आगे भइ ठाढ़ी । प्रभुहिबिलोकिप्रीतिअतिबाढ़ी ॥
केहिबिधिअस्तुतिकरौं तुम्हारी । अधमजातिमैंजड़मतिभारी ॥
अधम तेअधमअधमअतिनारी । तिनमहँमैं अतिमन्दगँवारी ॥
कह रघुपति सुनुभामिनि बाता । मानौं एक भक्तिकर नाता ॥
जाति पांति कुल धर्म बड़ाई । धनबलपरिजन गुणचतुराई ॥
भक्तिहीन नर सोहै कैसे । बिनुजलबारिद देखियजैसे ॥
नवधा भक्ति कहौं तोहि पाहीं । सावधान सुनुधरुमनमाहीं ॥
प्रथम भक्ति सन्तनकर संगा । दूसरि रत ममकथा प्रसंगा ॥
दो० गुरुपद पंकज सेवा तीसरि भक्ति अमान ।
चौथिभक्ति मम गुणगण करैकपट तजिगान ॥
मंत्रजाप मम दृढ़ बिश्वासा । पंचम भजन सो वेद प्रकासा ॥
षट दम शील विरत बहुकर्म्मा । निरत निरन्तरसज्जनधर्म्मा ॥
सतईं सब मोहिं मय जगदेखै । मोतेसन्त अधिक करिलेखै ॥
अठईं यथा लाभ संतोषा । सपनेहुँ नहिं देखै परदोषा ॥
नवमसरल सबसों छल हीना । मम भरोस हियहर्ष न दीना ॥
नवमहँ एको जिनके होई । नारिपुरुष सचराचर कोई ॥
सो अतिशयप्रिय भामिनिमोरे । सकलप्रकार भक्तिदृढ़ तोरे ॥
योगि बृन्द दुर्लभ गति जोई । तो कहँ आजु सुलभभइसोई ॥
मम दर्शन फल परम अनूपा । जीव पावनिजसहजस्वरूपा ॥
दो० सबप्रकार तवभाग बड़ ममचरणन्ह अनुराग ।
तव महिमाजेहिउरबासिहि तासुपरम बड़भाग ॥
मुनि शुभ बचन हर्ष कहँ पाई । पुनि बोले प्रभु गिरा सुहाई ॥

जनकसुताकै सुधिहै भामिनि । जानिहुतोकहुकरिवरगामिनि ॥
पम्पासरहि जाहु रघुराई । मुनिवर विपुल रहे जहँछाई ॥
ऋषि मतंग महिमा गुणभारी । जीव चराचर रहत सुखारी ॥
बैर न कर काहू सन कोई । जासन बैर प्रीति करु सोई ॥
शिखर सुहावन कानन फूले । खगमृग जीव जन्तु अनुकूले ॥
करहु सफलश्रम सबकर जाई । तहां होइ सुग्रीव मिताई ॥
सो सब कहिहि देव रघुबीरा । जानतहू पूँछत मतिधीरा ॥
बारबार प्रभुपद शिरनाई । प्रेम सहित सबकथा सुनाई ॥

छं० कहिकथासकल बिलोकिहरिमुख हृदयपदपंकजधरे ।
तजियोगपावक देह हरिपद लीनभइ जहँ नहिंफिरे ॥
नरविविधकर्म अधर्मबहुमत शोकप्रद सबत्यागहू ।
विश्वासकरि कह दासतुलसी रामपद अनुरागहू ॥

दो० जातिहीन अघ जन्ममय मुक्तकीन्ह अस नारि ।
महामन्द मनसुख चहसि ऐसे प्रभुहिबिसारि ॥

चले राम त्यागा बन सोऊ । अतुलितबल नर केहरिदोऊ ॥
बिरही इव प्रभु करत बिषादा । कहत कथा अनेक संवादा ॥
लक्ष्मण देखहु कानन शोभा । देखत केहिकरमननहिं छोभा ॥
नारिसहित सबखगमृग बन्दा । मानहुँ मोरिकरतहहिं निन्दा ॥
हमहिं देखि मृग निकर पराहीं । मृगी कहहिंतुमकहँभयनाहीं ॥
तुम आनन्द करहु मृग जाये । कंचनमृग खोजन ये आये ॥
संग लाइ करिणी करि लेहीं । मानहुँ मोहिं सिखावन देहीं ॥
शास्त्रसुचिन्तितपुनिपुनिदेखिय । भूपसुसेवितबशनहिं लेखिय ॥
राखिय नारि यदपि उरमाहीं । युवती शास्त्रनृपतिवशनाहीं ॥
देखहु तात बसन्त सुहावा । प्रियाहीनमोहिं भयउपजावा ॥

दो० बिरहबिकलबलहीनमोहिं जानेसिनिपट अकेल ।
सहितबिपिनमधुकरखगन्हसदनकीन्हबगमेल ॥
देखि गये भ्राता सहित तासु दूत निजबात ।

डेरेदीन्हेउ मनहुँ तिन्ह कटक हटकि नहिंजात ॥
विटपविशाल लता अरुझानी । विविधवितान दियेजनुतानी ॥
कदलि ताल बरध्वजा पताका । देखि न मोह धीर मनजाका ॥
विविध भाँति फूले तरुनाना । जनु बानैत बने बहु बाना ॥
कहुँकहुँ सुन्दर विटप सुहाये । जनुभटविलगविलगहोइछाये ॥
कूजत पिक मानहुँ गजमाते । ढेक महोख ऊंट वेषराते ॥
मोर चकोर कीर बर बाजी । पारावत मराल सब ताजी ॥
तीतर लावा पदचर यूथा । बरणि न जाइ मनोजबरूथा ॥
रथगिरि शिलादुन्दुभी झरना । चातक बन्दीगुण गणबरना ॥
मधुकर मुखर भेरि सहनाई । त्रिविध बयारि बसीठीआई ॥
चतुरङ्गिनी सेन सब लीन्हे । बिचरतसबहिं चुनौतीदीन्हे ॥
लक्ष्मण देखहु काम अनीका । रहहिंधीरतिन्हके जगलीका ॥
यहिके एक परम बलनारी । तेहिते उबर सुभटसोइ मारी ॥
दो० ताततीनि अतिप्रबलखल कामक्रोधअरुलोभ ।
मुनि बिज्ञान धाम मन करहिं निमिष महँ क्षोभ ॥
लोभ के इच्छा दम्भ बल काम के केवल नारि ।
क्रोधके परुष बचन बल मुनिवर कहहिं बिचारि ॥
गुणातीत सचराचर स्वामी । राम उमा सब अन्तरयामी ॥
कामिन के दीनता देखाई । धीरनके मन बिरति दृढ़ाई ॥
क्रोध मनोज लोभ मद माया । छूटहिं सकल राम की दाया ॥
सोनर इन्द्रजाल नहिं भूला । जापर होइ सोनटअनुकूला ॥
उमा कहौं मैं अनुभव अपना । हरिको भजनसत्यजगसपना ॥
पुनि प्रभु गये सरोवर तीरा । पम्पा नाम सुभग गम्भीरा ॥
सन्त हृदय जस निरमल बारी । बांधे घाट मनोहर चारी ॥
जहँतहँपियहिं विविधमृगनीरा । जनु उदार गृह याचकभीरा ॥
दो० पुरइनि सघन ओटजल बेगि न पाइय मर्म ।
माया छन्न न देखिये जैसे निर्गुण ब्रह्म ॥

सुखीमीन सब एक रस अति अगाध जलमाहिं ।
यथा धर्म्म शीलन्हके दिन सुख संयुत जाहिं ॥
बिकसे सरसिज नाना रङ्गा । मधुर सुखद गुंजतबहुभृङ्गा ॥
बोलत जल कुकुट कल हंसा । प्रभुबिलोकिजनुकरतप्रशंसा॥
चक्रवाक बक खग समुदाई । देखत बनै बरणि नहिं जाई ॥
सुन्दर खगगण गिरा सुहाई । जात पथिकजनु लेतबुलाई ॥
ताल समीप मुनिन्ह गृहछाये । चहुँदिशिकाननबिटपसुहाये ॥
चम्पक बकुल कदंब तमाला । पाटल पनस पलाशरसाला ॥
नवपल्लव कुसुमित तरु नाना । चंचरीक पटली कर गाना ॥
शीतल मन्द सुगन्ध सुभाऊ । सन्तत बहै मनोहर बाऊ ॥
कुहूकुहू कोकिल ध्वनि करहीं । सुनिरवसरसध्यानमुनिटरहीं ॥
दो० फूले फले बिटप सब रहे भूमि नियराइ ।
परउपकारीपुरुषजिमि नवहिं सुसम्पति पाइ ॥
देखि राम अति रुचिर तलावा । मज्जनकीन्ह परमसुखपावा ॥
देखी सुन्दर तरुवर छाया । बैठे अनुज सहित रघुराया ॥
तहँ पुनि सकलदेव मुनि आये । अस्तुतिकरिनिजधामसिधाये॥
बैठे परम प्रसन्न कृपाला । कहतअनुजसनकथारसाला॥
बिरहवन्त भगवन्तहि देखी । नारद मनभा शोच बिशेखी ॥
मोर शाप करि अंगीकारा । सहत राम नाना दुखभारा ॥
ऐसे प्रभुहि बिलोकौं जाई । पुनि न बनिहिअसअवसरआई॥
यह बिचार नारद कर बीना । गयेजहां प्रभुसुख आसीना॥
गावत रामचरित मृदु बानी । प्रेमसहितबहुभांति बखानी ॥
करत दण्डवत लिये उठाई । राखे बड़ी बार उर लाई ॥
स्वागत पूंछि निकट बैठारे । लक्ष्मणसादर चरण पखारे ॥
दो० नाना बिधि बिनती करी प्रभु प्रसन्न जियजानि ।
नारद बोले बचन तब जोरि सरोरुह पानि ॥
सुनहु उदार परम रघुनायक । सुन्दरअगमसुगमबरदायक ॥

देहु एक बर मांगौं स्वामी । यद्यपि जानहु अन्तरयामी ॥
जानहु मुनि तुम मोर सुभाऊ । जनसन कबहुँ कि करौं दुराऊ ॥
कवनबस्तुअसप्रियमोहिंलागी । जोमुनिवर न सकहुतुममांगी ॥
जनकहँ कछु अदेय नहिंमोरे । असबिश्वास तजहुजनिमोरे ॥
तब नारद बोले हरषाई । अस बर मांगौं करौं ढिठाई ॥
यद्यपि प्रभु के नाम अनेका । श्रुतिकह अधिकएकतेएका ॥
राम सकल नामन्ह ते अधिका । होउनाथअघखगगणबधिका॥

दो० राकारजनी भक्तितव रामनाम सोइ सोम ।
अपरनामउडुगणबिमल बसहुभक्त उरव्योम ॥
एवमस्तु मुनिसन कहेउ कृपासिन्धु रघुनाथ ।
तब नारद मनहर्ष अति प्रभुपद नायउ माथ ॥

अति प्रसन्न रघुनाथहिं जानी । पुनि नारद बोले मृदुबानी ॥
राम जबहिं प्रेरेहु निज माया । मोहेहु मोहिं सुनहु रघुराया ॥
तब बिवाह चाहौं मैं कीन्हा । प्रभु केहिकारणकरै न दीन्हा॥
सुनुमुनितोहिं कहौंसहरोसा । भजहिंजेमोहिंतजिसकलभरोसा॥
करौं सदा तिन्हकी रखवारी । जिमिबालकहिराखमहतारी ॥
गहिशिशुबच्छअनल अहिधाई । तहँ राखै जननी अरगाई ॥
प्रौढ़ भये तेहि सुत पर माता । प्रीतिकरै नहिं पाछिलबाता ॥
मोरे प्रौढ़ तनय सम ज्ञानी । बालक सुतसमदासअमानी ॥
जिनहिंमोरबल निजबलताहीं । दुहुँकहँ कामक्रोध रिपुआहीं ॥
यहबिचारिपण्डितमोहिंभजहीं । पायहुज्ञान भक्ति नहिंतजहीं ॥

दो० कामक्रोध लोभादि मद प्रबल मोहकी धारि ।
तिन्ह महँ अति दारुणदुखद मायारूपी नारि ॥

सुनमुनि कहपुराण श्रुतिसन्ता । मोहबिपिनकहँ नारिबसन्ता ॥
जप तप नेम जलाशय भारी । होइ ग्रीष्म शोषै सब नारी ॥
काम क्रोध मद मत्सर भेका । इनहिं हर्ष प्रद बरषा एका ॥
दुर्बासना कुमुद समुदाई । तिन्हकहँशरदसदासुखदाई॥

धर्म सकल सरसीरुह बृन्दा । होइहिंम तिन्हँ देतदुखमन्दा ॥
पुनि ममता जवास बहुताई । पलुहैनारि शिशिरऋतुपाई ॥
पाप उलूक निकर सुखकारी । नारिनिबिड़ रजनी अँधियारी ॥
बुधिबल शील सत्यसब मीना । बनसीसमत्रियकहहिंप्रबीना ॥
दो० अवगुण मूल शूलप्रद प्रमदा सब दुख खानि ।
ताते कीन्ह निवारण मुनि मैं यह जियजानि ॥
सुनि रघुपति के बचन सुहाये । मुनितनपुलकिनयनभरिआये ॥
कहहु कवन प्रभुके असरीती । सेवकपर ममता अतिप्रीती ॥
जेन भजहिंअसप्रभुभ्रमत्यागी । ज्ञानरंक मतिमन्द अभागी ॥
पुनि सादर बोले मुनि नारद । सुनहुराम बिज्ञान बिशारद ॥
सन्तन के लक्षण रघुबीरा । कहहुराम भञ्जन भवभीरा ॥
सुन मुनि सन्तनके गुणकहऊं । जेहि ते मैं उनके बश रहऊं ॥
षटबिकारतजिअनघअकामा । अचलअकिंचनशुचिसुखधामा ॥
अमित बोध परमारथ भोगी । सत्वसारकबि कोबिद योगी ॥
सावधान मदमान बिहीना । धीर भक्तगति परम प्रबीना ॥
दो० गुणागार संसारदुख रहित बिगत सन्देह ।
तजिममचरण सरोजप्रिय तिन्हकहँदेहनगेह ॥
निजगुणश्रवणसुनतसकुचाहीं । परगुण सुनतअधिकहर्षाहीं ॥
समशीतलनहिं त्यागहिंनीती । सरलसुभाव सबहिसनप्रीती ॥
जप तप ब्रत दम संयमनेमा । गुरु गोबिन्द बिप्रपद प्रेमा ॥
श्रद्धा क्षमा मइत्री दाया । मुदितामम पदप्रीतिअमाया ॥
बिरति बिबेक बिनय बिज्ञाना । बोध यथारथ वेद पुराना ॥
दम्भ मानमद करहिं न काऊ । भूलि न देहिं कुमारग पाऊ ॥
गावहिं सुनहिं सदा ममलीला । हेतु रहित परहितरतशीला ॥
सुनुमुनि साधुन के गुणजेते । कहिनसकहिंशारदश्रुतितेते ॥
छं० कहिसकन शारद शेषनारद सुनत पदपंकजगहे ।
असदीनबन्धुकृपालअपनेभक्तगुणनिजमुखकहे ॥

शिरनाय बारहिंबार चरणन्ह ब्रह्मपुर नारदगये ।
ते धन्यतुलसीदास आस विहाय जे हरिरँगरये॥

दो० रावणारि यश पावन गावहिं सुनहिं जे लोग ।
राम भक्ति दृढ़ पावहीं बिनु बिराग जप योग ॥
दीपशिखासम युवतिजन मनजनि होसिपतङ्ग ।
भजहिं रामतजिकाममद करहिंसदा सतसङ्ग ॥

इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेविमल
वैराग्यसम्पादनोनामतृतीयःसोपानः ॥

इति

श्रीगणेशायनमः ॥

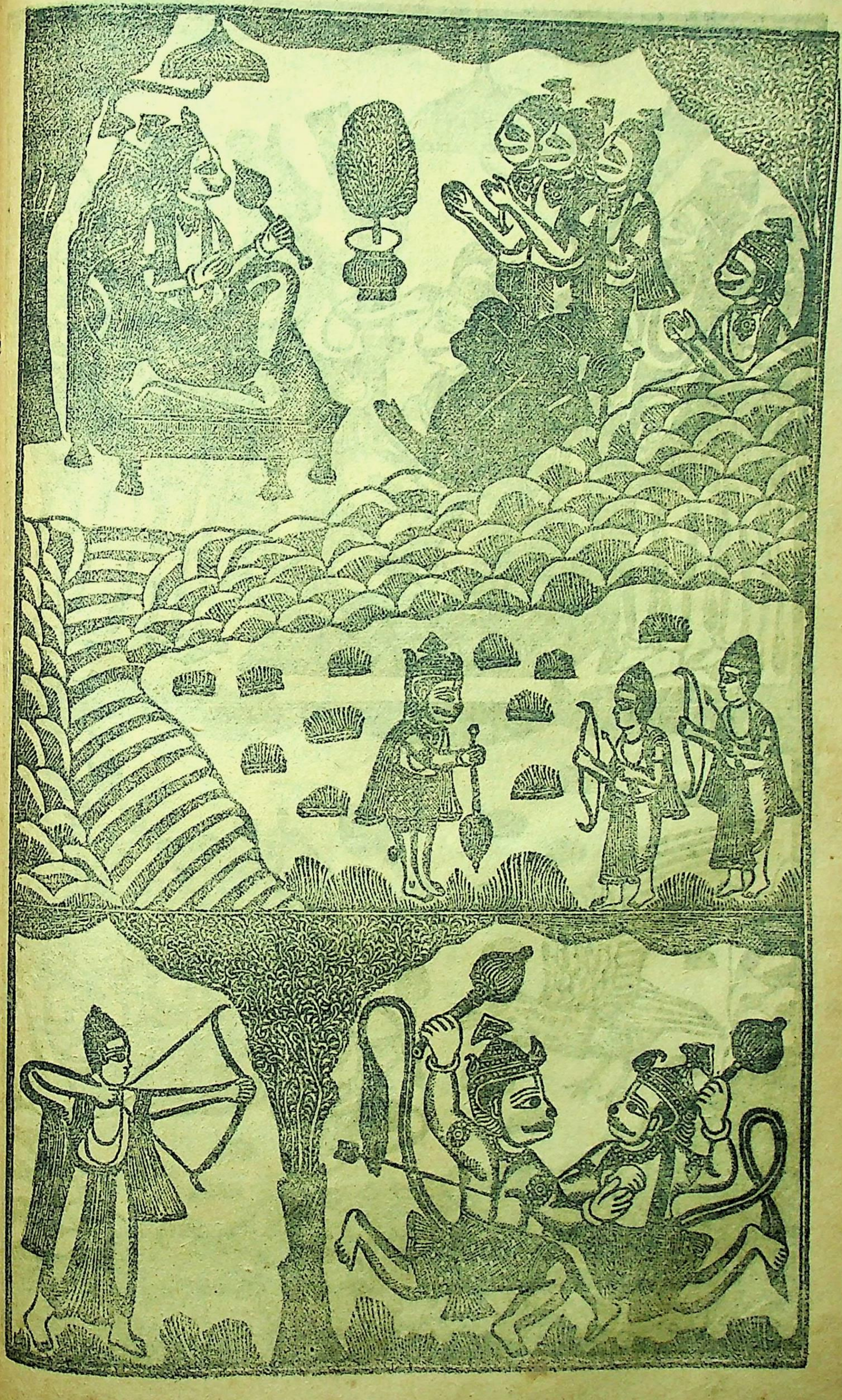
किष्किन्धाकाण्ड ॥

श्लोक ॥

कुन्देन्दीवरसुन्दरावतिबलौविज्ञानधामावुभौ शोभाढ्यौवर धन्विनौश्रुतिनुतौगोविप्रवृन्दप्रियौ ॥ मायामानुषरूपिणौरघुव रौसद्धर्मवन्तौहितौ सीतान्वेषणतत्परौपथिगतौभक्तिप्रदौतौहि नः १ ब्रह्माम्भोधिसमुद्भवंकलिमलप्रध्वंसनञ्चाव्ययं श्रीमच्छ म्भुमुखेन्दुसुन्दरवरेसंशोभितंसर्वदा ॥ संसारामयभेषजंसुमधु रंश्रीजानकीजीवनं धन्यास्तेकृतिनःपिबन्तिसततं श्रीरामनामा मृतम् २ ॥

सो० मुक्तिजन्म महिजानि ज्ञानखानि अघहानिकर ।
जहँबस शम्भु भवानि सो काशी सेइय कसन ॥
जरतसकलसुरवृन्द विषमगरल जेहिपानकिय ।
तेहि न भजसिमतिमन्द कोकृपालशङ्करसरिस॥

आगे चले बहुरि रघुराई । ऋष्यमूक पर्वत नियराई ॥
तहँरह सचिव सहित सुग्रीवा । आवतदेखि अतुलबलसींवा ॥
अतिसभीत कहसुनु हनुमाना । पुरुषयुगलबलरूप निधाना ॥
धरिवटु रूप देखु तैं जाई । कहेसु मोहिं जियसैनबुझाई ॥
पठवा बालि होइ मन मैला । भागौं तुरत तजौं यह शैला ॥
बिप्ररूप धरि कपितहँ गयऊ । माथनाय पूछत असभयऊ ॥
को तुमश्यामल गौर शरीरा । क्षत्रिय रूप फिरहु बनबीरा ॥





तब मैं निजमन कीन्हबिचारा । जाना असुर बन्धु कहँमारा ॥
बालिहतेसि मोहिंमारिहिआई । शिला द्वार दै चलेउँ पराई ॥
मंत्रिन पुर देखा बिनु साईं । दीन्हेउ राज मोहिंबरिआई ॥
बाली ताहि मारि गृह आवा । देखिमोहिं जिय भेद बढ़ावा ॥
रिपु समान मोहिंमारेसि भारी । हरिलीन्हेसि सर्वसअरुनारी ॥
ताके भय रघुबीर कृपाला । सकलभुवनमैंफिरेउँ बिहाला ॥
यहां शाप बश आवत नाहीं । तदपि सभीतरहौं मनमाहीं ॥
सुनि सेवक दुख दीनदयाला । फरकिउठे दोउभुजाबिशाला ॥
दो० सुनु सुग्रीव मैं मारिहौं बालिहि एकहि बाण ।
ब्रह्म रुद्र शरणागतहु गये न उबरहिं प्राण ॥
जे न मित्र दुख होहिं दुखारी । तिन्हैं बिलोकत पातकभारी ॥
निजदुखगिरिसमरजकरिजाना । मित्रकेदुख रज मेरुसमाना ॥
जिनकेअसमति सहज न आई । तेशठ हठकत करत मिताई ॥
कुपथ निवारि सुपन्थ चलावा । गुणप्रकटै अवगुणहिंदुरावा ॥
देत लेत मन शंक न धरहीं । बलअनुमान सदाहितकरहीं ॥
बिपति काल कर शतगुणनेहा । श्रुतिकहसत्य मित्रगुणएहा ॥
आगे कह मृदु बचन बनाई । पाछे अनहित मनकुटिलाई ॥
जाकर चित अहिगतिसमभाई । अस कुमित्र परिहरे भलाई ॥
दो० मित्र मित्रसों प्रीतिकरि हृदय आन मुख आन ।
जाके मन बच प्रेम नहिं दुरे दुराये जान ॥
सेवक शठ नृप कृपण कुनारी । कपटीमित्र शूल सम चारी ॥
सखा शोच त्यागहु बल मोरे । सब बिधि करब काज मैं तोरे ॥
कह सुग्रीव सुनौ रघुबीरा । बालिमहाबल अति रणधीरा ॥
दुन्दुभि अस्थिताल दिखराये । बिनु प्रयास रघुनाथ ढहाये ॥
देखि अमित बल बाढ़ी प्रीती । बालि बधनकर भइपरतीती ॥
बारहिं बार नाइ पद शीशा । प्रभुहि जानि मनहर्ष कपीशा ॥
उपजा ज्ञान बचन तब बोला । नाथकृपामन भयउ अडोला ॥

सुख सम्पति परिवार बड़ाई। सबपरिहरि करिहौं सेवकाई॥
ये सब राम भक्ति के बाधक। कहहिंसन्ततवपदअवराधक॥
शत्रु मित्र दुख सुख जगमाहीं। मायाकृत परमारथ नाहीं॥
बालि परमहित जासु प्रसादा। मिलेहुरामतुमशमन बिषादा॥
सपने जेहि सन होइ लराई। जागे समुझतमन सकुचाई॥
अब प्रभु कृपाकरहु इहिभाँती। सबतजिभजनकरौं दिनराती॥
सुनि बिराग संयुत कपिबाणी। बोले बिहँसि राम धनुपाणी॥
जो कछु कहेउ सत्य सब सोई। सखा बचनमम मृषा न होई॥
नटमरकट इव सबहिंनचावत। राम खगेश वेद असगावत॥
लै सुग्रीव संग रघुनाथा। चले चाप शायक गहिहाथा॥
तब रघुपति सुग्रीव पठावा। गर्जेसिजाइ निकट बलपावा॥
सुनत बालि क्रोधातुर धावा। गहिकरचरण नारिसमुझावा॥
सुनुपति जिनहिंमिलासुग्रीवा। ते दोउ बन्धु तेज बलसीवा॥
कोशलेश सुत लक्ष्मण रामा। कालहु जीति सकहिंसंग्रामा॥
सोइ रघुबीर हृदय महँ आनहु। छाँड़हु मोह कहाममानहु॥
दो० कहाबालि सुनु भीरु प्रिय समदरशी रघुनाथ।
जो कदापि मोहिंमारिहैं तौ पुनिहोब सनाथ॥
असकहिचला महा अभिमानी। तृण समान सुग्रीवहिंजानी॥
बालि देखि सुग्रीवहि ठाढ़ा। हृदयक्रोधपुनिबहुबिधिबाढ़ा॥
भिरेउ युगल बाली अतितर्जा। मुष्टिकमारि महाधुनि गर्जा॥
तब सुग्रीव बिकल होइ भागा। मुष्टिप्रहार बज्र सम लागा॥
मैं जो कहा रघुबीर कृपाला। बन्धु न होइ मोर यह काला॥
एकरूप तुम भ्राता दोऊ। तेहिभ्रमते नहिं मारेउँ सोऊ॥
कर परसा सुग्रीव शरीरा। तनुभा कुलिश गईसबपीरा॥
मेली कण्ठ सुमनकी माला। पठवा पुनिबल देइ बिशाला॥
पुनि नाना बिधि भई लराई। बिटप ओट देखहिं रघुराई॥
दो० बहुछल बल सुग्रीवकरि हृदयहारि भयमानि।

मारा बालिहि राम तब हिये मांझ शरतानि ॥
परा विकल महि शरके लागे । पुनि उठि बैठ देखिप्रभु आगे ॥
श्याम गात शिर जटा बनाये । अरुण नयनशर चापचढ़ाये ॥
पुनि पुनिचितैचरणचितदीन्हे । सफलजन्म माना प्रभुचीन्हे ॥
हृदय प्रीति मुखबचन कठोरा । बोला चितै रामकी ओरा ॥
धर्म हेतु अवतरेहु गुसाईं । मारेहु मोहिं व्याधकी नाईं ॥
मैं बैरी सुग्रीव पियारा । कारणकवन नाथमोहिं मारा ॥
अनुजबधू भगिनी सुतनारी । सुन शठ ये कन्यासमचारी ॥
इन्हें कुदृष्टि बिलोकै जोई । ताहिबधे कछु पाप न होई ॥
मूढ़ तोहिं अतिशयअभिमाना । नारिसिखावनकरेसि न काना ॥
ममभुजबलआश्रिततेहिजानी । माराचहसिअधमअभिमानी ॥
दो० सुनहु राम स्वामी सुभग चलन चातुरी मोरि ।
प्रभु अजहूं मैं पातकी अन्तकाल गति तोरि ॥
सुनत राम अति कोमल बाणी । बालिशीशपरसा निजपाणी ॥
अचल करौं तनु राखहु प्राना । बालिकहा सुनु कृपानिधाना ॥
जन्म जन्म मुनियतन कराहीं । अन्तराम कहिआवत नाहीं ॥
जासु नामबल शंकर काशी । देतसबहिसमगतिअविनाशी ॥
ममलोचनगोचर सोइ आवा । बहुरिकिअसप्रभुबनहिंबनावा ॥
छं० सोनयनगोचर जासुगुण नित नेति कहि श्रुतिगावहीं ।
जितिपवनमनगो निरसकरि मुनिध्यानकबहुँकपावहीं ॥
मोहिंजानि अतिअभिमानबश प्रभुकहेउ राखुशरीरहीं ।
अस कवन शठहठ काटिसुरतरु बारिकरहिं करीरहीं ॥
अब नाथकरि करुणा बिलोकहु देव यह वर माँगऊँ ।
जेहि योनिजन्मौं कर्म बश तहँ रामपद अनुरागऊँ ॥
यह तनय ममसम बिनयबल कल्याणपद प्रभुदीजिये ।
गहिबाँह सुरनरनाह अंगद दास आपन कीजिये ॥
दो० रामचरण दृढ़ प्रीति करि बालिकीन्ह तनुत्याग ।

सुमनमाल जिमि कण्ठते गिरत न जानै नाग ॥
राम बालि निज धाम पठावा । नगरलोगसब व्याकुलधावा ॥
नाना बिधि बिलाप करतारा । छूटे केश न देह सँभारा ॥
पुनि पुनि तासु शीराउरधरई । बदनबिलोकि हृदयमहँहतई ॥
मैं पति तुमहिं बहुतसमुझावा । कालबिवशपियमनाहिंनआवा॥
अंगद कहँ कछु कहन न पायहु । बीन्हहि सुरपुर आपपठायहु ॥
तारा बिकल देखि रघुराया । दीन्ह ज्ञानहरि लीन्हीमाया ॥
छिति जलपावक गगन समीरा । पंचरचितयह अधमशरीरा ॥
प्रकट सो तनु तव आगे सोवा । जीवनित्यतुम केहिलगिरोवा ॥
उपजा ज्ञान चरण तब लागी । लीन्हेसि परमभक्तिवरमाँगी ॥
उमा दारु योषित की नाईं । सबहिं नचावत राम गोसाईं ॥
तब सुग्रीवहिं आयसु दीन्हा । मृतककर्मबिधिवतसबकीन्हा ॥
राम कहा अनुजहि समुझाई । राज देहु सुग्रीवहि जाई ॥
रघुपति चरण नाइकरिमाथा । चले सकल प्रेरित रघुनाथा ॥
दो० लक्ष्मण तुरत बुलावा पुरजन बिप्र समाज ।
राज दीन्ह सुग्रीव कहँ अंगद कहँ युवराज ॥
उमा राम समहित जगमाहीं । सुत पितु मातु बन्धुकोउनाहीं ॥
सुरनर मुनि सबकी यह रीती । स्वारथ लागि करैं सबप्रीती ॥
बालि त्रास ब्याकुल दिनराती । तनु बिबरण चिंताजरुछाती ॥
सो सुग्रीव कीन्ह कपिराऊ । अति कोमल रघुबीर सुभाऊ ॥
ऐसे प्रभु कहँ जो परिहरहीं । काहेनबिपतिजाल नर परहीं ॥
पुनि सुग्रीवहिं लीन्ह बुलाई । बहु प्रकार नृपनीतिसिखाई ॥
कह प्रभु सुनु सुग्रीव हरीशा । पुर न जाउँ दशचारिबरीशा ॥
गत ग्रीषम बरषा ऋतु आई । रहिहौं निकट शैल परछाई ॥
अंगद सहित करहु तुम राजू । सन्तत हृदयराखि ममकाजू ॥
तब सुग्रीव भवन फिरि आये । राम प्रबर्षण गिरिपरछाये ॥
दो० प्रथमहिं देवन गिरि गुहा राखी रुचिर बनाइ ।

कठिन भूमि कोमल पदगामी । कवनहेतु बनबिचरहु स्वामी ॥
मृदुल मनोहर सुन्दर गाता । सहत दुसहबनआतपवाता ॥
के तुम तीन देव महँ कोऊ । नर नारायण के तुम दोऊ ॥
दो० जग कारण तारण भवहिं भंजन धरणी भार ।
के तुमअखिलभुवनपति लीन्हमनुजअवतार ॥
सुनि बोले रघुबंश कुमारा । विधिकरलिखा कोमेटनहारा ॥
कोशलेश दशरथ के जाये । हमपितुबचन मानिबनआये ॥
नाम राम लक्ष्मण दोउ भाई । संगनारि सुकुमारि सुहाई ॥
यहां हरी निशिचर बैदेही । खोजत बिप्र फिरहिं हमतेही ॥
आपन चरित कहा हम गाई । कहहु बिप्र निजकथाबुझाई ॥
प्रभु पहिंचानि परे गहिचरणा । सो सुखउमाजाइ नहिंबरणा ॥
पुलकिततनु मुखआवनबचना । देखत रुचिर बेष की रचना ॥
पुनि धीरजधरिअस्तुतिकीन्हा । हर्षि हृदयनिजनाथहिचीन्हा ॥
मैं अजान होइ पूंछा साईं । तुम कस पूंछहु नरकी नाईं ॥
तव माया बश फिरौं भुलाना । ताते प्रभुपद नहिंपहिंचाना ॥
दो० एक मन्द मैं मोह बश कीश हृदय अज्ञान ।
पुनि प्रभु मोहिं बिसारेहु दीनबन्धु भगवान ॥
यदपि नाथ अवगुण बहु मोरे । सेवक प्रभुहि परै जनु भोरे ॥
नाथ जीव तव माया मोहू । सो निस्तरै तुम्हारे छोहू ॥
तापर मैं रघुबीर दुहाई । जानौं नहिं कछुभजनउपाई ॥
सेवक सुत पितु मातु भरोसे । रहैं अशोच बने प्रभु पोसे ॥
असकहि चरणपरे अकुलाई । निजतनु प्रकटप्रीति उरछाई ॥
तब रघुपति उठाइ उरलावा । निजलोचनजलसींचिजुड़ावा ॥
सुनकपिजियजनिमानसिऊना । तैं ममप्रिय लक्ष्मणते दूना ॥
समदरशी मोहिं कहसबकोई । सेवक प्रिय अनन्यगतिसोई ॥
दो० सो अनन्य अस जाहिकै मति न टरै हनुमन्त ।
मैं सेवक सचराचर रूपराशि भगवन्त ॥

देखि पवनसुत पति अनुकूला । हृदय हर्ष बीते सब शूला ॥
नाथ शैल पर कपिपति रहई । सो सुग्रीव दास तव अहई ॥
तासन नाथ मयत्री कीजै । दीनजानि तेहि अभयकरीजै ॥
सो सीता कर खोज कराइहि । जहँतहँमरकट कोटिपठाइहि ॥
इहिविधि सकलकथासमुझाई । लिये दोउ जन पीठि चढ़ाई ॥
जब सुग्रीव राम कहँ देखा । अतिशयधन्यजन्मकरिलेखा ॥
सादर मिलेउ नाइ पदमाथा । भेंटे अनुज सहित रघुनाथा ॥
कपिके मन बिचार यह नीती । करिहहिं बिधि मोसनयेप्रीती ॥
दो० तब हनुमन्त उभयदिशि कहिसबकथा बुझाइ ।
पावक साखी देइकरि जोरी प्रीति दृढ़ाइ ॥
कीन्हप्रीति कछु बीच न राखा । लछमणरामचरितसबभाखा ॥
कह सुग्रीव नयन भरि बारी । मिलिहिनाथमिथिलेशकुमारी ॥
मंत्रिन सहित इहां इकबारा । बैठिरहउँ कछुकरत बिचारा ॥
गगन पन्थ देखी मैं जाता । परबशपरी बहुत बिलखाता ॥
राम राम हा राम पुकारी । ममदिशि देखि दीनपटडारी ॥
मांगा राम तुरत सो दीन्हा । पटउरलाइ शोचअति कीन्हा ॥
कह सुग्रीव सुनहु रघुबीरा । तजहु शोक मनआनहुधीरा ॥
सब प्रकार करिहौं सेवकाई । जेहिबिधिमिलहिंजानकीमाई ॥
दो० सखा बचन सुनि हरषे रघुपति करुणा सीव ।
कारण कवन बसहु बन मोसन कहु सुग्रीव ॥
नाथ बालि अरु मैं दोउ भाई । प्रीतिरही कछुबरणि न जाई ॥
मयसुत मायावी तेहि नाऊं । आवा सो प्रभु हमरे गाऊं ॥
अर्द्ध रात्रि पुर द्वार पुकारा । बालिहु रिपुबल सहै न पारा ॥
धावा बालि देखि सोइ भागा । मैं पुनिगयउँ बन्धुसँगलागा ॥
गिरिवरगुहा पैठि सो जाई । बालि मोहिं तबकहा बुझाई ॥
परखेउ मोहिं एक पखवारा । नहिं आवौं तो जानेहु मारा ॥
मास दिवस तहँ रहेउँखरारी । निसरी रुधिर धारतहँ भारी ॥

राम कृपानिधि कछुकदिन बासकरहिंगे आइ ॥
सुन्दरबन कुसुमित तरु शोभा । गुंजत चंचरीक मधु लोभा ॥
कन्द मूल फल अतिहि सुहाये । भये बहुत जबते प्रभुआये ॥
देखि मनोहर शैल अनूपा । रहेतहँ अनुजसहितसुरभूपा ॥
मंगल रूप भये बन तबते । कीन्हानिवासरमापति जबते ॥
मधुकर खग मृग तनुधरि देवा । करहिं सिद्धमुनिप्रभुकीसेवा ॥
फटिकशिला अतिशुभ्र सुहाई । सुखआसीन तहाँ दोउभाई ॥
कहत अनुजसन कथाअनेका । भक्तिबिरति नृपनीतिबिबेका ॥
वर्षाकाल मेघ नभ छाये । गर्जत लागत परम सुहाये ॥
दो० लक्ष्मण देखहु मोर गण नाचत बारिद पेखि ।
गृही बिरति रत हर्षयुत विष्णुभक्त कहँ देखि ॥
घन घमण्ड नभ गरजत घोरा । प्रिया हीन डरपत मनमोरा ॥
दामिनि दमकि रही घनमाहीं । खलकी प्रीति यथाथिरनाहीं ॥
बरषहिं जलद भूमि नियराये । यथा नवहिं बुध विद्यापाये ॥
बूंद अघात सहैं गिरि कैसे । खलके बचन सन्त सहैं जैसे ॥
क्षुद्र नदी भरि चलि उतराई । जस थोरे धन खल बौराई ॥
भूमि परत भा डाबर पानी । जिमि जीवहिं मायालपटानी ॥
सिमिटिसिमिटिजलभरेतलावा । जिमिसदगुणसज्जनपहँआवा ॥
सरिताजल जलनिधि महँजाई । होइअचल जिमिजनहरिपाई ॥
दो० हरित भूमि तृणसंकुल समुझिपरै नहिं पन्थ ।
जिमि पाखण्ड विवादते लुप्त भये सद ग्रन्थ ॥
दादुर धुनिचहुँ ओर सुहाये । वेद पढ़ैं जनु बटु समुदाये ॥
नव पल्लव भे विटप अनेका । साधुके मन जसहोइबिबेका ॥
अर्क जवास पात बिनुभयऊ । जिमिसुराज्यखलउद्यमगयऊ ॥
खोजत पन्थ मिलै नहिं धूरी । करैक्रोध जिमि धर्महिं दूरी ॥
ससि सम्पन्न सोह महिकैसी । उपकारीकी सम्पति जैसी ॥
निशि तमघन खद्योत बिराजा । जनुदम्भिनकर जुरासमाजा ॥

महावृष्टि चाले फूटि कियारी । जिमिस्वतन्त्रहोइबिगराहिंनारी ॥
कृषी निरावहिं चतुर किसाना । जिमिबुधतजहिंमोहमदमाना ॥
देखियत चक्रवाक खगनाहीं । कलिहिपाइ जिमिधर्मपराहीं ॥
ऊषर बरषै तृण नहिं जामा । सन्तहृदयजसउपज न कामा ॥
विविध जन्तुसंकुल महिभ्राजा । बढ़ै प्रजा जिमिपाइ सुराजा ॥
जहँतहँ पथिक रहे थकिनाना । जिमिइन्द्रियगणउपजतज्ञाना ॥

दो० कबहुँ प्रबल चल मारुत जहँ तहँ मेघ बिलाहिं ।
जिमि कपूत कुल ऊपजे सम्पति धर्म नशाहिं ॥
कबहुँ दिवसमहँ निबिड़तम कबहुँक प्रकटपतंग ।
उपजे बिनशे ज्ञान जिमि पाइ सुसंग कुसंग ॥

बरषा बिगत शरद ऋतुआई । देखहु लक्ष्मण परम सुहाई ॥
फूले कास सकल महिछाई । जनु बर्षा ऋतु प्रकट बुढ़ाई ॥
उदित अगस्त्य पन्थजलशोषा । जिमिलोभहि शोषैसन्तोषा ॥
सरितासरजल निर्मल सोहा । सन्तहृदयजस गतमदमोहा ॥
रस रस शोष सरित सरपानी । ममतात्यागकरहिंजिमिज्ञानी ॥
जानि शरद ऋतु खंजन आये । पाइसमयजिमिसुकृतसुहाये ॥
पंक न रेणु सोह अस धरणी । नीतिनिपुणनृपकीजसकरणी ॥
जलसंकोच बिकल भय मीना । बिबिधकुटुंबीजिमिधनहीना ॥
बिनुघन निर्मल सोहअकाशा । जिमिहरिजनपरिहरसबआशा ॥
कहुँ कहुँ वृष्टि शारदी थोरी । कोउइकपावभक्तिजिमिमोरी ॥

दो० चले हर्षतजिनगर नृप तापस बणिक भिखारि ।
जिमि हरिभक्ति पाइजन तजहिं आश्रमी चारि ॥

सुखी मीन जहँ नीर अगाधा । जिमिहरिशरण न एकौबाधा ॥
फूले कमल सोह सर कैसे । निर्गुण ब्रह्मसगुण भये जैसे ॥
गुंजत मधुकर निकर अनूपा । सुन्दर खग रव नानारूपा ॥
चक्रवाक मनदुख निशि पेखी । जिमिदुर्जन परसम्पतिदेखी ॥
चातक रटत तृषा अतिओही । जिमिसुखलहै न शंकरद्रोही ॥

शरदातप निशिशशिअपहरई । सन्तदरश जिमिपातकटरई ॥
देखहिं बिधु चकोरसमुदाई ।चितवहिंहरिजनहरिजिमिपाई॥
मशक दंश बीते हिम त्रासा । जिमिद्विजद्रोहकियेकुलनासा॥
दो० भूमि जीव संकुल रहे गये शरदऋतु पाइ ।
सतगुरुमिलेते जाहिंजिमि संशयभ्रमसमुदाइ ॥
वर्षागत निर्मल ऋतु आई । सुधि न तात सीताकी पाई ॥
एकबार कैसेउ सुधि पावों । कालहुजीतिनिमिषमहँल्यावों॥
कतहुँ रहै जो जीवति होई । तात यतन करि आनौं सोई ॥
सुग्रीवहु सुधि मोरि बिसारी । पावा राज कोश पुर नारी ॥
जेहि शायक मैं मारा बाली । तेहिशर हतौं मूढ़कहँ काली ॥
जासु कृपा छूटै मद मोहा । ताकहँ उमा कि सपनेहु कोहा ॥
जानहिं यह चरित्र मुनिज्ञानी । जिनरघुबीर चरणरतिमानी ॥
लक्ष्मण क्रोधवन्त प्रभु जाना । धनुष चढ़ाइ गहे कर बाना ॥
दो० तब अनुजहि समुझावा रघुपति करुणासीव ।
भय देखाय लै आवहु तात सखा सुग्रीव ॥
यहां पवनसुत हृदय बिचारा । रामकाज सुग्रीव बिसारा ॥
निकट जाइचरणनशिरनावा । चारिहुबिधितेहिकहिसमुझावा॥
सुनि सुग्रीव परम भय माना । बिषयमोर हरिलीन्हेउज्ञाना ॥
अब मारुत सुत दूत समूहा । पठवहु जहँ तहँ बानरयूहा ॥
कहहु पक्ष महँ आव न जोई । मोरे कर ताकर बध होई ॥
तब हनुमन्त बुलाये दूता । सबकर करि सनमान बहूता ॥
भय अरु प्रीति नीति दिखराई । चलेसकल चरणन शिरनाई ॥
तेहि अवसर लक्ष्मणपुर आये । क्रोधदेखि जहँ तहँ कपिधाये ॥
दो० धनुष चढ़ाइ कहा तब जारिकरौं पुर छार ।
व्याकुल नगर देखितब आवा बालिकुमार ॥
चरण नाइ शिरबिनती कीन्ही । लक्ष्मणअभयबाहँतेहिदीन्ही ॥
क्रोधवंत लक्ष्मण सुनि काना । कहकपीशअतिशयअकुलाना ॥

तुम हनुमन्त संग लै तारा । करि बिनती समुझाउ कुमारा ॥
तारा सहित जाइ हनुमाना । चरणबन्दिप्रभुसुयशबखाना ॥
करिबिनती मन्दिर लै आये । चरण पखारि पलँग बैठाये ॥
तब कपीश चरणन शिरनावा । गहिभुजलक्ष्मणकण्ठलगावा ॥
नाथ बिषय सम मद कछुनाहीं । मुनि मन मोह करै क्षणमाहीं ॥
सुनत बिनीतबचनसुखपावा । लक्ष्मणतेहिबहुबिधिसमुझावा ॥
पवन तनय सब कथा सुनाई । जेहिबिधि गये दूत समुदाई ॥

दो० हर्षिचले सुग्रीव तब अंगदादि कपिसाथ ।
राम अनुज आगे किये आये जहँ रघुनाथ ॥

नाय चरणशिर कह करजोरी । नाथ मोरिकछु नाहिन खोरी ॥
अतिशय प्रबल देव तव माया । छूटै तबहिं करहु जब दाया ॥
बिषयबिबशसुरनरमुनिस्वामी । मैंपामरपशु कपि अतिकामी ॥
नारि नयन शर जाहि न लागा । महाघोर निशि सोवत जागा ॥
लोभपाश जेहि गर न बँधाया । सोनर तुम समान रघुराया ॥
यह गुण साधन ते नहिं होई । तुम्हरी कृपा पाव कोइ कोई ॥
तब रघुपति बोले मुसकाई । तुमप्रियमोहिंभरतजिमिभाई ॥
अबसोइ यतन करहु मनलाई । जेहिबिधिसीताकी सुधिपाई ॥

दो० इहिबिधि होत बतकही आये बानरयूथ ।
नानाबरण अतुबल देखिय कीश बरूथ ॥

बानर कटक उमा मैं देखा । सो मूरख जो कियचहलेखा ॥
आय राम पद नावहिं माथा । निरखिबदनसबहोहिंसनाथा ॥
अस कपि एक न सेना माहीं । राम कुशल पूछी जेहि नाहीं ॥
यहनहिं कछु प्रभुकी अधिकाई । बिश्वरूप व्यापक रघुराई ॥
ठाढ़े जहँ तहँ आयसु पाई । कहि सुग्रीव सबहिं समुझाई ॥
राम काज अरु मोर निहोरा । बानरयूथ जाहु चहुँ ओरा ॥
जनकसुता कहँ खोजहु जाई । मास दिवसमहँ आयहु भाई ॥
अवधि मेटि जो बिनु सुधिपाये । अवशिमरिहिसोसमकरआये ॥

दो० वचन सुनत सब बानर जहँ तहँ चले तुरन्त ।
तब सुग्रीव बुलायउ अंगदादि हनुमन्त ॥
सुनहु नील अंगद हनुमाना । जामवन्त मतिधीर सुजाना ॥
सकलसुभटमिलिदछिण जाहू । सीतासुधि पूंछेहु सब काहू ॥
मन बच कर्मसोंयतनविचारेहु । रामचन्द्र कर काज सँवारेहु ॥
भानु पीठ सेइय उरआगी । स्वामीसेइय सब छलत्यागी ॥
तजि माया सेइय परलोका । मिटहिंसकलभवसंभवशोका ॥
देहधरे कर यह फल भाई । भजिय राम सबकाम बिहाई ॥
सोइ गुणज्ञ सोई बड़ भागी । जो रघुबीर चरण अनुरागी ॥
आयसु माँगि चरण शिरनाई । चले सकल सुमिरतरघुराई ॥
पाछे पवनतनय शिरनावा । जानिकाजप्रभु निकटबुलावा ॥
परसा शीश सरोरुह पानी । करमुद्रिका दीन्ह जनजानी ॥
बहुप्रकार सीतहिं समुझायहु । कहिबलवीर बेगितुम आयहु ॥
हनुमत जन्म सुफलकरि जाना । चले हृदय धरि कृपानिधाना ॥
यद्यपि प्रभु जानत सब बाता । राजनीति राखत सुरत्राता ॥
दो० चले सकल बन खोजत सरिता सर गिरि खोह ।
रामकाज लवलीन मन बिसरा तनुकर छोह ॥
कतहुँ होइ निशिचर सन भेंटा । प्राण लेहिं इक एक चपेटा ॥
बहुप्रकार गिरि कानन हेरहिं । कोउमुनिमिलैताहिसबघेरहिं ॥
लागितृषाअतिशय अकुलाने । मिलैनजल बन गहन भुलाने ॥
तब हनुमान कीन्ह अनुमाना । मरणचहतसबबिनुजलपाना ॥
चढ़िगिरिशिखरचहूंदिशिदेखा। भूमि बिबर इककौतुक पेखा ॥
चक्रवाक बक हंस उड़ाहीं । बहुतकखगप्रविशहिंतेहिमाहीं ॥
गिरिते उतरि पवनसुतआवा । सबकहँ लै सोबिबर दिखावा ॥
आगेकरि हनुमन्तहि लीन्हा । पैठे बिबर बिलम्ब न कीन्हा ॥
दो० दीखजाइ उपवन सुभग सर विकसे बहुकंज ।
मन्दिर एक रुचिर तहँ बैठि नारि तप पुंज ॥

दूरिहिते तेहि सब शिरनावा । पूंछेसि निज वृत्तांत सुनावा ॥
तब तेइ कहा करहुजलपाना । खाहु सरस सुन्दर फलनाना ॥
मज्जन कीन्ह मधुर फलखाये । तासुनिकटपुनिसबचलिआये॥
तेहि सब आपनि कथासुनाई । मैं अब जाँव जहां रघुराई ॥
मूंदहु नयन बिबर तजि जाहू । पैहहु सीतहि जनि कदराहू ॥
नयन मूंदि तब देखहिं बीरा । ठाढ़े सकल सिंधु के तीरा ॥
सो पुनि गई जहां रघुनाथा । जाइ कमलपदनायसिमाथा ॥
नानाभांति विनय तेइ कीन्ही । अनपावनी भक्तिप्रभु दीन्ही ॥
दो० बदरीबन कहँ सोगई प्रभु आज्ञा धरि शीश ।
उरधरि रामचरण युग जो वंदित अजईश ॥
इहां विचारहिं कपिमनमाहीं । बीती अवधिकाज कछु नाहीं ॥
सब मिलि कहहिं परस्परबाता । बिनुसुधिलिये करबकाभ्राता ॥
कह अंगद लोचन भरि बारी । दुहुं प्रकार भइ मृत्यु हमारी ॥
इहां न सुधि सीता कर पाई । वहां गये मारिहि कपिराई ॥
पिता बधेपर मारत मोही । राखा राम निहोरा वोही ॥
पुनि पुनि अंगद कह सब पाहीं । मरणभयो कछु संशय नाहीं ॥
अंगद वचन सुनत कपि वीरा । बोलि न सकहिंनयनबहनीरा ॥
क्षणइकशोक मगन ह्वै गये । पुनिअसवचनकहतसबभये ॥
हम सीताकी बिन सुधि लीने । फिरब न सुनुयुवराजप्रवीने ॥
असकहि लवण सिन्धुतटजाई । बैठे कपि सब दर्भ डसाई ॥
जामवन्त अंगद दुख देखी । कही कथा उपदेश विशेखी ॥
तात रामकहँ नरजनि जानहु । निर्गुणब्रह्मअजितअजमानहु॥
हमसब सेवक अति बड़भागी । सन्तत सगुणब्रह्मअनुरागी ॥
दो० निजइच्छा अवतरेउ प्रभु सुरद्विजगोमहिलागि ।
सगुणउपासकरहहिंसब मोक्षसकलसुखत्यागि ॥
इहिबिधिकहतकथा बहुभांती । गिरिकन्दरा सुना सम्पाती ॥
बाहर होइ देखे सब कीशा । मोहिं अहार दीन्ह जगदीशा ॥

आजु सबनकहँ भक्षण करऊँ । दिन बहुते अहार बिनुमरऊँ ॥
कबहुँनमिलिभरिउदर अहारा । आजुदीन्हविधि एकहिंबारा ॥
डरपे गृध्र वचन सुनि काना । अबभामरणसत्य हम जाना ॥
कपि सब उठे गृध्र कहँ देखी । जामवन्त मन शोच विशेखी ॥
कह विचारि अंगद मनमाहीं । धन्य जटायुसरिसकोउनाहीं ॥
राम काज कारण तनुत्यागी । हरिपुरगयउ परम बड़भागी ॥
जो रघुवीर चरण चितलावे । तिहिंसमधन्य न आनकहावे ॥
सुनिखग हर्ष शोकयुत बानी । आवानिकट कपिन भयमानी ॥
ताहि देखि सब चले पराई । ठाढ़ कीन्हतिन्हशपथदिवाई ॥
तिन्हें अभयकरि पूछेसि जाई । कथासकल तिनताहिसुनाई ॥
सुनिसम्पाति बन्धुकी करणी । रघुपतिमहिमाबहुविधिवरणी ॥

दो० म्वाहिं लैचलहु सिन्धुतट देउँ तिलांजलिताहि ।
वचन सहाय करब मैं पैहहु खोजहु जाहि ॥

अनुज क्रियाकरि सागरतीरा । कहनिजकथासुनहुकपिबीरा ॥
हम दोउ बन्धु प्रथम तरुणाई । गगनगये रविनिकट उड़ाई ॥
तेज न सहिसकसोफिरिआवा । मैं अभिमानी रविनियरावा ॥
जरे पंख रवि तेज अपारा । परेउँ भूमि करिघोरचिकारा ॥
मुनि इक नामचन्द्रमा ओही । लागी दयादेखिकर मोही ॥
बहुप्रकार तिन्ह ज्ञान सिखावा । देहजनित अभिमान छुड़ावा ॥
त्रेता ब्रह्म मनुज तनु धरिहैं । तासुनारिनिशिचरपतिहरिहैं ॥
तासु खोज पठवाहिं प्रभु दूता । तिन्हैं मिलेतुम होब पुनीता ॥
जमिहहिंपंखकरसिजनि चिंता । तिन्हें देखाइ देव तैं सीता ॥
यहकहिमुनिनिजआश्रमगयऊ । तिहिंक्षणहृदयज्ञानकछुभयऊ ॥
सदारामकर सुमिरण करऊँ । निशिदिनमगजोवतदिनभरऊँ ॥
मुनि की गिरा सत्यभइ आजू । सुनिममवचनकरहुप्रभुकाजू ॥
गिरि त्रिकूट ऊपर बस लंका । तहँरह रावणसहज अशंका ॥
तहां अशोक बाटिका अहई । सीय बैठि तहँ शोचति रहई ॥

दो० मैं देखौं तुम नाहिन गृध्रहि दृष्टि अपार ।
बूढ़भयोंनतु करतेउँ कछुक सहाय तुम्हार ॥
जो लांघै शत योजन सागर । करैसो रामकाजअतिआगर ॥
जो कोइ करे रामकर काजू । तेहिसमधन्यआननाहिंआजू ॥
मोहिं विलोकि धरहु मनधीरा । रामकृपा कसभयउ शरीरा ॥
पापिउ जाकर नाम सुमिरहीं । अतिअपार भवसागरतरहीं ॥
तासु दूत तुम तजि कदराई । राम हृदयधरि करहु उपाई ॥
असकहि उमागृध्र जब गयऊ । सबकेमनअतिविस्मयभयऊ ॥
निजनिज बल सबकाहूभाखा । पार जान कर संशय राखा ॥
जरठभयों अब कह ऋक्षेशा । नहिंतनुरहा प्रथम बललेशा ॥
जबहिं त्रिविक्रम भये खरारी । तब मैं तरुणरहा बलभारी ॥
दो० बलि बांधत प्रभु बाढ़ेउ सो तनु वरणि न जाइ ।
उभय घरी महँ दीन्ह मैं सात प्रदक्षिण धाइ ॥
अंगद कहा जाउँ मैं पारा । जिय संशयकछु फिरतीबारा ॥
जामवन्त कह तुम सब लायक । किमिपठवौं सबहीकरनायक ॥
कहा ऋक्षपति सुनु हनुमाना । का चुपसाधि रहा बलवाना ॥
पवनतनय बल पवन समाना । बुध विवेक विज्ञान निधाना ॥
कौनसोकाज कठिन जगमाहीं । जो नहिं तात होइ तुमपाहीं ॥
रामकाज लगि तव अवतारा । सुनिकपि भयउपर्व्वताकारा ॥
कनकवरणतन तेज विराजा । मानहुअपर गिरिन्हकरराजा ॥
सिंहनाद करि बारहिं बारा । लीलहिंलांघौं जलनिधिखारा ॥
सहित सहाय रावणहिं मारी । आनौं इहां त्रिकूट उपारी ॥
जामवन्त मैं पूंछौं तोहीं । उचित सिखावन दीजै मोहीं ॥
इतना करहु तात तुम जाई । सीतहिदेखि कहौ सुधिआई ॥
तबनिजभुजबल राजिवनयना । कौतुकलागि संगकपिसयना ॥
छं० कपिसेनसंगसँहारि निशिचर रामसीतहि आनिहैं ।
त्रयलोकपावन सुयशसुरमुनि नारदादि बखानिहैं ॥

जो सुनत गावत कहत समुझत परमपद नरपावहीं ।
रघुबीर पदपाथोज मधुकर दास तुलसी गावहीं ॥
दो० भव भेषज रघुनाथ यश सुनै जो नरअरु नारि ।
तिनकर सकल मनोरथ सिद्धि कराहिं त्रिपुरारि ॥
सो० नीलोत्पलतनश्याम काम कोटि शोभा अधिक ।
सुनियतासुगुणग्राम जासुनाम अघखग बधिक ॥

इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनोविमल
वैराग्यसम्पादनोनामचतुर्थः सोपानः ॥

इति

श्रीगणेशायनमः ॥

सुन्दर काण्ड ॥

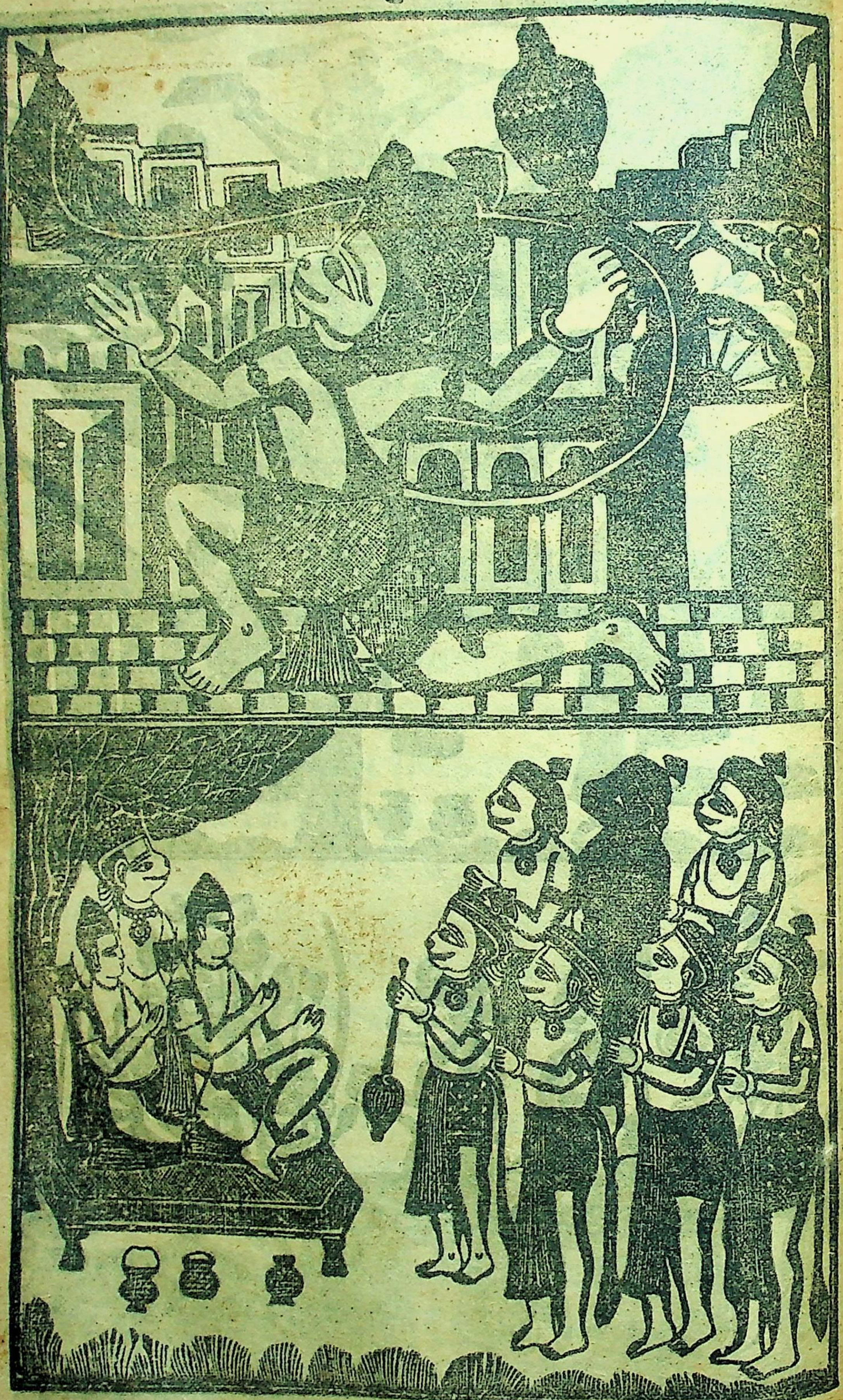
श्लोक ॥

शान्तंशाश्वतमप्रमेयमनघंनिर्वाणशान्तिप्रदम्। ब्रह्माशम्भु फणीन्द्रसेव्यमनिशंवेदान्तवेद्यंविभुम् ॥ रामाख्यंजगदीश्वरंसुर गुरुम्मायामनुष्यंहरिम् । वन्देऽहंकरुणाकरंरघुवरंभूपालचूडाम णिम् १ नान्यास्पृहारघुपतेहृदयेस्मदीयेसत्यंवदामिचभवानखि लान्तरात्मा ॥ भक्तिम्प्रयच्छरघुपुंगवनिर्भरांमेकामादिदोषरहितं कुरुमानसंच २ अतुलितबलधामंस्वर्णशैलाभदेहं दनुजवन कृशानुंज्ञानिनामग्रगण्यम् । सकलगुणनिधानंवानराणामधीशं रघुपतिवरदूतंवातजातन्नमामि ३ ॥

जामवन्त के बचन सुहाये । सुनिहनुमान हृदय अतिभाये ॥
तबलगि मोहिं परेखेहु भाई । सहि दुखकन्द मूल फलखाई ॥
जबलगि आवौं सीतहिं देखी । होइकाज मन हर्ष बिशेखी ॥
असकहिनाइ सबनिकहँमाथा । चले हर्षि हियधरि रघुनाथा ॥
सिन्धुतीर इक सुन्दर भूधर । कौतुक कूदि चढ़े तेहिऊपर ॥
बार बार रघुबीर सँभारी । तरकेउ पवनतनय बलभारी ॥
जेहिगिरिचरणदिये हनुमन्ता । सो चलिगयउपताल तुरंता ॥
जिमि अमोघ रघुपतिकेबाना । ताही भांति चला हनुमाना ॥
जलनिधि रघुपति दूतबिचारी । कह मैनाक होहु श्रमहारी ॥
सो० सिन्धुबचन सुनिकान तुरतउठे मैनाक तब ।
कपिकहँ कीन्ह प्रणाम बार बार कर जोरिकै ॥

रा० सु० चि० नं० ६





दो० हनूमान तेहि परसि करि पुनितेहि कीन्ह प्रणाम।
रामकाज कीन्हे बिना मोहिं कहां विश्राम॥
जात पवनसुत देवन देखा। जाना चह बलबुद्धिबिशेखा॥
सुरसा नाम अहिनकी माता। पठयउ आइ कही तेहिबाता॥
आजसुरन मोहिं दीन्ह अहारा। सुनि हँसिबोला पवनकुमारा॥
रामकाज करि फिरि मैं आवों। सीताकरसुधिप्रभुहि सुनावों॥
तब तुव बदन पैठिहौं आई। सत्यकहौं मोहिं जानदे माई॥
कवनिहुं यतन देहिनहिंजाना। ग्रससि न मोहिंकहाहनुमाना॥
योजनभरितेहि बदन पसारा। कपितनकीन्हदुगुण बिस्तारा॥
सोरह योजन मुखतेइ ठयऊ। तुरत पवनसुत बत्तिसभयऊ॥
जसजस सुरसा बदन बढ़ावा। तासु दुगुण कपिरूपदिखावा॥
शतयोजन तेहि आनन कीन्हा। अतिलघुरूप पवनसुतलीन्हा॥
बदन पैठि पुनि बाहर आवा। मांगी बिदा ताहि शिरनावा॥
मोहिं सुरन्हजेहि लागिपठावा। बुधि बल मर्म तोर मैं पावा॥
दो० रामकाज सब करिहहु तुम बल बुद्धि निधान।
आशिष दै सुरसा चली हर्षि चले हनुमान॥
निशिचर एक सिंधु महँ रहई। करिमाया नभके खग गहई॥
जीव जन्तु जे गगन उड़ाहीं। जलबिलोकितिनकीपरिछाहीं॥
गहै छांह सक सो न उड़ाई। इहिबिधि सदागगनचरखाई॥
सोइछल हनूमान सन कीन्हा। तासुकपट कपितुरतहिंचीन्हा॥
ताहि मारि मारुतसुत बीरा। बारिधिपार गयउ मतिधीरा॥
तहां जाइ देखी बन शोभा। गुंजत चंचरीक मधु लोभा॥
नाना तरु फल फूल सुहाये। खग मृग वृन्द देखिमनभाये॥
शैल बिशाल देखि इकआगे। तापर कूदि चढ़ेउ भयत्यागे॥
उमा न कछु कपिकीअधिकाई। प्रभु प्रताप जो कालहिखाई॥
गिरिपर चढ़ि लंका तेहिदेखी। कहिनजाइअतिदुर्ग बिशेखी॥
अतिउतंगजलनिधि चहुँपासा। कनक कोटकर परम प्रकासा॥

छं० कनककोट बिचित्र मणिकृत सुन्दराजित अतिघना ।
चौहट्ट हाट सुघट्टबीथी चारु पुर बहु बिधि बना ॥
गजबाजिखच्चर निकरपदचर रथबरूथनि को गनै ।
बहुरूपनिशिचरयूथअति बलसेन बरणतनहिं बनै ॥
बनबाग उपबन बाटिका सर कूप बापी सोहहीं ।
नरनाग सुर गन्धर्व कन्या रूप मुनिमन मोहहीं ॥
कहुँमल्ल देह बिशाल शैलसमान अतिबलगर्जहीं ।
नाना अखारन्ह भिरहिं बहुबिधि एकएकनतर्जहीं ॥
करिमत्तभटकोटिन्हबिकटतनु नगरचहुँदिशिरत्तहीं ।
कहुँमहिषमानुष धेनुखरअज खगनिशाचरभच्छहीं ॥
इहिलागि तुलसीदास इनकी कथा संक्षेपहि कही ।
रघुबीरशर तीरथ सरिततनु त्यागिगति पैहैं सही ॥

दो० पुर रखवारे देखि बहु कपिमन कीन्ह बिचार ।
अति लघुरूप धरौं निशि नगर करौं पैसार ॥

मशक समान रूप कपि धरी । लंका चले सुमिरि नरहरी ॥
नाम लंकिनी एक निशिचरी । सोकह चलेसि मोहिंनिन्दरी ॥
जानसि नाहिं मर्म शठ मोरा । मोर अहार जहांलगि चोरा ॥
मुष्टिक एक ताहि कपि हनी । रुधिर बमत धरणी ठनमनी ॥
पुनि सम्भारि उठी सो लंका । जोरिपाणिकर बिनयअशंका ॥
जब रावणहिं ब्रह्म बर दीन्हा । चलतबिरंचिकहामोहिंचीन्हा ॥
बिकलहोसि जब कपिकेमारे । तब जानसि निशिचरसंहारे ॥
तात मोर अति पुण्य बहूता । देखेउँ नयन रामकर दूता ॥

दो० तात स्वर्ग अपवर्ग सुख धरी तुला इकअंग ।
तुलै न ताहि सकल मिलि जोसुखलवसतसंग ॥

प्रविशिनगर कीजै सबकाजा । हृदय राखि कोशलपुर राजा ॥
गरल सुधा रिपुकरै मिताई । गोपद सिंधु अनलशितलाई ॥
गरुअ सुमेरु रेणु सम ताही । रामकृपाकरि चितवहिं जाही ॥

अति लघुरूपधरेउ हनुमाना । पैठा नगर सुमिरि भगवाना ॥
मन्दिरमन्दिरप्रतिकरि शोधा । देखे जहँ तहँ अगणितयोधा ॥
गयउ दशानन मन्दिर माहीं । अतिबिचित्रकहिजातसोनाहीं ॥
शयन किये देखा कपि तेही । मन्दिर महँ न दीख बैदेही ॥
भवनएक पुनि दीख सुहावा । हरिमन्दिर तहँ भिन्न बनावा ॥
राम नाम अंकित गृह सोहा । बरणि न जाइ देखिमनमोहा ॥
दो० राम नाम अंकित गृह शोभा बरणि न जाय ।
नव तुलसी के बृन्दबहु देखि हर्ष कपिराय ॥
लंकानिशिचर निकर निवासा । यहां कहां सज्जनकरबासा ॥
मनमहँ तर्क करन कपि लागे । ताही समय बिभीषण जागे ॥
राम राम तेहिसुमिरणकीन्हा । हृदयहर्ष कपिसज्जन चीन्हा ॥
इहिसन हठिकरिहौं पहिचानी । साधुते होइ न कारजहानी ॥
बिप्ररूपधरि बचन सुनावा । सुनतबिभीषणउठितहँआवा ॥
करि प्रणाम पूंछी कुशलाई । बिप्रकहहु निजकथा बुझाई ॥
की तुम हरि दासन महँ कोई । मोरे हृदय प्रीति अतिहोई ॥
की तुम दीनबन्धु अनुरागी । आयहु मोहिंकरन बड़भागी ॥
दो० तब हनुमन्त कही सब राम कथा निज नाम ।
सुनतयुगलतनपुलकअतिमगनसुमिरिगुणग्राम ॥
सुनहुपवनसुत रहनि हमारी । जिमिदशनन्हमहँजीभबिचारी ॥
तात कबहुँमोहिं जानिअनाथा । करिहहिंकृपा भानुकुलनाथा ॥
तामस तन कछु साधन नाहीं । प्रीति न पदसरोज मनमाहीं ॥
अब मोहिंभा भरोस हनुमन्ता । बिनुहरिकृपामिलहिंनाहिंसंता ॥
जो रघुबीर अनुग्रह कीन्हा । तौ तुममोहिंदरशहठि दीन्हा ॥
सुनहु बिभीषण प्रभु की रीती । करहिं सदा सेवक पर प्रीती ॥
कहहु कवन मैं परम कुलीना । कपिचंचलसबही विधिहीना ॥
प्रात लेइ जो नाम हमारा । तादिनताहि न मिलैअहारा ॥
दो० अस मैं अधम सखा सुनु मोहू पर रघुबीर ।

कीन्ही कृपा सुमिरि गुण भरे बिलोचन नीर ॥
जानतहूं अस स्वामि बिसारी । फिरते काहिनहोहिं दुखारी ॥
इहिविधि कहत रामगुणग्रामा । पावनश्रवण सुखद बिश्रामा ॥
पुनि सब कथा विभीषण कही । जेहिंविधिजनकसुताजहँरही ॥
तब हनुमन्त कहा सुनु भ्राता । देखा चहौं जानकी माता ॥
युक्ति विभीषण सकल सुनाई । चलेउ पवनसुत बिदाकराई ॥
धरि सोइरूप गयउपुनितहँवां । बन अशोक सीतारह जहँवां ॥
देखिमनहिंमन कीन्ह प्रणामा । बैठे बीति गई निशि यामा ॥
कृश तन शीशजटा इक बेणी । जपतिहृदयरघुपतिगुणश्रेणी ॥
दो० निज पद नयनदियेमन रामचरण महँ लीन ।
परम दुखीभा पवनसुत निरखिजानकी दीन ॥
तरु पल्लव महँ रहा लुकाई । करै बिचार करौं का भाई ॥
तेहि अवसर रावणतहँ आवा । संगनारि बहु किये बनावा ॥
बहुविधिखलसीतहिसमुझावा । सामदाम भयभेद दिखावा ॥
कहरावण सुनु सुमुखि सयानी । मन्दोदरी आदि सब रानी ॥
तव अनुचरी करौं पन मोरा । एक बार बिलोकु मम ओरा ॥
तृण धरि ओट कहति बैदेही । सुमिरिअवधपतिपरमसनेही ॥
सुन दशमुख खद्योत प्रकाशा । कबहुंकिनलिनीकरहिंबिकाशा ॥
असमनसमुझतकहतजानकी । खलसुधिनहिंरघुबीर बानकी ॥
शठ सूने हरि आनेसि मोहीं । अधमनिलज्जलाजनहिंतोहीं ॥
दो० आपुहि सुनि खद्योत सम रामहिं भानुसमान ।
परुषबचनसुनिकाढ़िअसिबोलाअतिरिसिआन ॥
सीता तैं मम कृत अपमाना । काटौं तव शिरकठिनकृपाना ॥
नाहित सपदि मानु मम बानी । सुमुखिहोत नतु जीवनहानी ॥
श्याम सरोज दाम समसुंदर । प्रभुभुजकरिकरसमदशकंधर ॥
सो भुजकंठ कि तवअसिघोरा । सुनुशठ असप्रमाणपनमोरा ॥
चन्द्रहास हरु मम परितापा । रघुपतिबिरहअनल संतापा ॥

शीतलनिशितव असिबरधारा । कहसीता हरुमम दुखभारा ॥
सुनत वचन पुनि मारन धावा । मयतनयाकहि नीतिबुझावा ॥
कहेसि सकल निशिचरीबुलाई । सीतहि त्रास दिखावहुजाई ॥
मासदिवस महँ कहा न माना । तौ मैं मारब कठिन कृपाना ॥
दो० भवन गयउ दशकन्धतब इहां निशाचरि वृन्द ।
सीतहि त्रास दिखावहीं धरहिं रूप बहु मन्द ॥
त्रिजटा नाम राक्षसी एका । रामचरणरत निपुण विवेका ॥
सबहिंबुलाइ सुनायसि सपना । सीतहिसेइ करोहित अपना ॥
सपने बानर लङ्का जारी । यातुधान सेना सब मारी ॥
खरआरूढ़ नगन दशशीशा । मुण्डितशिरखण्डितभुजबीशा ॥
इहिविधि सोदक्षिणदिशिजाई । लङ्का मनहु विभीषण पाई ॥
नगर फिरी रघुबीर दुहाई । तब प्रभुसीतहि बोलि पठाई ॥
यह सपना मैं कहौं बिचारी । होइहि सत्य गये दिन चारी ॥
तासु बचन सुनके सब डरीं । जनकसुताके चरणन परीं ॥
दो० जहँ तहँ गईं सकल मिलि सीताके मन शोच ।
मास दिवस बीते मोहिं मारिहि निशिचरपोच ॥
त्रिजटा सन बोलीं कर जोरी । मातु बिपति संगिनि तैं मोरी ॥
तजौं देह करु बेगि उपाई । दुसह बिरह अब सहानजाई ॥
आनि काठ रचि चिता बनाई । मातु अनल तुम देहु लगाई ॥
सत्य करहि ममप्रीति सयानी । सुनिसो श्रवणशूलसमबानी ॥
सुनतबचन पदगहिसमुझावा । प्रभुप्रतापबल सुयशसुनावा ॥
निशिनअनलमिलुराजकुमारी । असकहिसोनिजभवनसिधारी ॥
कहसीता विधिभा प्रतिकूला । मिलै न पावक मिटै न शूला ॥
देखियत प्रकट गगन अंगारा । अवनि न आवत एकौतारा ॥
पावकमयशशि स्रवतनआगी । मानहुँ मोहिं जानिहत भागी ॥
सुनहुविनयमम बिटपअशोका । सत्यनामकरु हरु ममशोका ॥
नूतनकिशलय अनल समाना । देहुअगिनि ममकरहुनिदाना ॥

देखि परम बिरहाकुल सीता। सोक्षणकपिहि कल्पसमबीता॥
सो० कपिकरि हृदय बिचार दीन्हमुद्रिका डारितब।
जनु अशोक अंगार दीन्हहर्ष उठिकर गहेउ॥
तब देखी मुद्रिका मनोहर। रामनामअङ्कित अतिसुन्दर॥
चकितचितै मुद्रिक पहिचानी। हर्ष बिषाद हृदय अकुलानी॥
जीति को सकै अजय रघुराई। मायाते अस रची न जाई॥
सीतामन बिचार कर नाना। मधुर बचन बोले हनुमाना॥
रामचन्द्र गुण बरणन लागे। सुनतहि सीताकर दुखभागे॥
लागी सुनै श्रवण मन लाई। आदिहिते सबकथा सुनाई॥
श्रवणामृत जिन कथा सुनाई। कहिसो प्रकट होत किनभाई॥
तबहनुमन्तनिकट चलिगयऊ। फिरबैठी मन बिस्मय भयऊ॥
राम दूत मैं मातु जानकी। सत्यशपथ करुणानिधानकी॥
यह मुद्रिका मातु मैं आनी। दीन्हराम तुमकहँ सहिदानी॥
नर बानरहि सङ्ग कहु कैसे। कही कथा सङ्गतिभइ जैसे॥
दो० कपिकर बचन सप्रेम सुनि उपजामन विश्वास।
जाना मनक्रम बचन यह कृपासिन्धु करदास॥
हरिजनजानिप्रीति अतिबाढ़ी। सजलनयनपुलकावलिठाढ़ी॥
बूड़त बिरह जलधि हनुमाना। भयहुतात मोकहँ जलयाना॥
अबकहुकुशलजाउँ बलिहारी। अनुजसहितसुखभवनखरारी॥
कोमल चित कृपालु रघुराई। कपि केहिहेतु धरी निठुराई॥
सहजबानिसेवक सुखदायक। कबहुँकमुहिंसुमिरतरघुनायक॥
कबहुँ नयन मम शीतल ताता। होइहहिनिरखिश्यामम्रदुगाता॥
बचन न आव नयनभरिबारी। अहोनाथमोहिंनिपट बिसारी॥
देखिबिरहव्याकुल अतिसीता। बोलेउकपिम्रदुबचन बिनीता॥
मातुकुशल प्रभु अनुजसमेता। तवदुखदुखीसो कृपानिकेता॥
जननी जनि मानहु मन ऊना। तुमते प्रेम रामकहँ दूना॥
दो० रघुपतिकर सन्देश अब सुनुजननी धरिधीर।

असकहि कपि गदगद भये भरे बिलोचन नीर ।
राम बियोग कहा सुन सीता । मोकहँसकलभयउ बिपरीता ॥
नूतनकिशलय मनहुँकृशानू । कालनिशासमनिशिशशिभानू॥
कुबलयबिपिन कुन्तबनसरिसा । बारिद तप्ततेलजनु बरिसा ॥
जेहि तरु रहों करत सो पीरा । उरगश्वाससमत्रिबिधसमीरा॥
कहेते नाहिं दुख घटि कछुहोई । काहिकहों यहजान न कोई ॥
तत्व प्रेमकर मम अरु तोरा । जानत प्रिया एकमन मोरा ॥
सो मन रहत सदातोहिं पाहीं । जानु प्रीतिबश इतनेमाहीं ॥
प्रभु सन्देश सुनत बैदेही । मगनप्रेमतनु सुधिनहिंतेही ॥
कहिकपि हृदय धीरधरु माता । सुमिरि रामसेवकसुखदाता ॥
उर आनहु रघुपति प्रभुताई । सुनिममबचनतजहुबिकलाई॥
दो० निशिचर निकर पतङ्गसम रघुपतिबाण कृशानु ।
जननि हृदय निज धीरधरु जरे निशाचर जानु ॥
जो रघुबीर होत सुधि पाई । करते नहिं बिलम्ब रघुराई ॥
रामबाण रवि उदय जानकी । तम बरूथ कहँयातुधानकी ॥
अबहिं मातु मैं जात लिवाई । प्रभु आयसु नहिंरामदुहाई ॥
कछुक दिवस जननी धरुधीरा । कपिन्ह सहित ऐहैंरघुबीरा ॥
निशिचर मारि तुमहिं लै जैहें । तिहुँपुर नारदादि यश गैहें ॥
हैं सुत कपि सब तुम्हैं समाना । यातुधानभट अतिबलवाना ॥
मोरे हृदय परम सन्देहा । सुनिकपिप्रकटकीन्हनिजदेहा॥
कनक भूधराकार शरीरा । समर भयङ्कर अतिरणधीरा ॥
सीता मन भरोस तब भयऊ । पुनिलघुरूपपवनसु तलयऊ ॥
दो० सुनुमाता शाखामृगहि नहिं बलबुद्धि बिशाल ।
प्रभु प्रतापते गरुडही खाइ परम लघु ब्याल ॥
मन सन्तोष सुनत कपि बानी । तनअतिपुलकनयनढरपानी ॥
भक्तिप्रताप तेज बल सानी । आशिषदीन्हरामप्रियजानी ॥
अजरअमरगुणनिधिसुत होहू । करहु सदा रघुनायक छोहू ॥

करहिंकृपाप्रभु असमुनिकाना । निर्भर प्रेम मगन हनुमाना ॥
बारबार नायउ पद शीशा । बोले वचन जोरिकर कीशा ॥
अब कृतकृत्य भयउँ मैं माता । आशिषतवअमोघबिख्याता॥
सुनियमातुमोहिं अतिशयभूखा । लागिदेखि सुन्दरफलरूखा ॥
सुनसुत करें बिपिन रखवारी । परम सुभट रजनीचरभारी ॥
तिनकर भयमाता मोहिं नाहीं । जोतुम सुखमानहुमनमाहीं ॥

दो० देखि बुद्धिबल निपुण कपि कहेउ जानकी जाहु ।
रघुपति चरण हृदयधरि तात मधुरफल खाहु ॥

चलानाइ शिर पैठेउ बागा । फलखाये तरु तोरन लागा ॥
रहे तहां बहु भट रखवारे । कछु मारे कछु जाइ पुकारे ॥
नाथ एक आवा कपिभारी । तेइ अशोकबाटिका उजारी ॥
खायेसिफल अरु बिटपउपारे । जहँ तहँपटकिपटकिभटमारे ॥
सुनि रावण पठये भटनाना । तिनहिं देखिगरजाहनुमाना ॥
सब रजनीचर कपि संहारे । गये पुकारत कछु अधमारे ॥
पुनिपठवा तेइ अक्षयकुमारा । चला संगलै सुभट अपारा ॥
आवतदेखि बिटप गहि तर्जा । ताहिनिपाति महाधुनिगर्जा ॥

दो० कछुमारेसि कछुमर्देसि कछुक मिलायसि धूरि ।
कछु पुनि जाइ पुकारे प्रभु मर्कट बल भूरि ॥

सुनि सुतबध लंकेश रिसाना । पठवा मेघनाद बलवाना ॥
मारेसिजनि सुतबांधेसि ताही । देखौं कीश कहांकर आही ॥
चलाइन्द्रजित अतुलितयोधा । बन्धुबधनसुनि उपजाक्रोधा ॥
कपि देखा दारुण भटआवा । कटकटाइ गरजा अरुधावा ॥
अति बिशाल तरु एकउपारा । बिरथ कीन्ह लंकेश कुमारा ॥
रहे महाभट ताके संगा । गहिगहिकपिमर्देसिनिजअंगा॥
तिन्हें निपाति ताहिसन बाजा । भिरेयुगल मानहुँ गजराजा ॥
मुष्टिक मारि चढ़ा तरु जाई । ताहि एक क्षण मूर्च्छा आई ॥
उठिबहोरि कीन्हेसि बहुमाया । जीतिन जाइ प्रभंजनजाया ॥

दो० ब्रह्म अस्त्र तेइ साधई कपिमन कीन्ह बिचार ।
जो न ब्रह्मशर मानऊं महिमा मिटै अपार ॥
ब्रह्म बाण ते कपि कहँ मारा । परतिहुं बार कटक संहारा ॥
तेइँ जानाकपि मूर्च्छित भयऊ । नागफांस बांधेसि लै गयऊ ॥
जासु नाम जपि सुनहु भवानी । भवबंधन काटहिं नरज्ञानी ॥
तासु दूत बंधन तर आवा । प्रभुकारजलगि आपुबँधावा ॥
कपि बंधनसुनिनिशिचर धाये । कौतुक लागि सभा लै आये ॥
दशमुख सभा दीख कपिजाई । कहिनजायकछुअतिप्रभुताई ॥
करजोरे सुरदिशप बिनीता । भृकुटिबिलोकहिंसकलसभीता॥
देखिप्रताप न कपिमनशंका । जिमिअहिगणमहँगरुड़अशंका॥
दो० कपिहिबिलोकि दशानन बिहँसि कहेसि दुर्बाद ।
सुतबध सुरति कीन्हपुनि उपजा हृदय बिषाद ॥
कह लंकेश कवन तैं कीशा । केहिकेबलघालेसि बनखीसा ॥
कीधौं श्रवणसुनेसि नहिंमोहीं । देखों अति अशंक शठतोहीं ॥
मारेसिनिशिचरकेहि अपराधा । कहुशठतोहिंनप्राणकी बाधा ॥
सुनुरावण ब्रह्माण्ड निकाया । पाइजासुबल बिरचितमाया ॥
जाके बल बिरंचि हरि ईशा । पालत हरतसृजतदशशीशा ॥
जा बल शीश धरे सहसानन । अंडकोश समेत गिरिकानन ॥
धरेजो बिबिध देह सुरत्राता । तुमसे शठनसिखावनदाता ॥
हर कोदण्ड कठिन जेइ भंजा । तोहिंसमेत नृपदलमदगंजा ॥
खरदूषण बिराध अरु बाली । बधेसकलअतुलितबलशाली ॥
दो० जाके बल लवलेश ते जितेउचराचर झारि ।
तासु दूतहौं जाहिकी हरि आनेहु प्रियनारि ॥
जानौं मैं तुम्हारि प्रभुताई । सहसबाहु सन परी लड़ाई ॥
समरबालिसनकरि यशपावा । सुनिकपिबचनबिहँसिबहलावा॥
खायउँ फल मोहिं लागीभूखा । कपि स्वभावते तोरेउँ रूखा ॥
सबके देह परम प्रिय स्वामी । मारहिं मोहिं कुमारग गामी ॥

जिन्ह मोहि मारा तेहिमैंमारा । तेहिपर बांधेउतनयतुम्हारा ॥
मोहिं न कछु बांधे कर लाजा । कीन्हचहौंनिजप्रभुकरकाजा ॥
बिनती करौं जोरि कर रावन । सुनहुमानतजिमोरसिखावन ॥
देखहु तुम निजहृदय बिचारी । भ्रमतजिभजहु भक्तभयहारी ॥
जाके डर अति काल डराई । जो सुर असुर चराचरखाई ॥
तासों बैर कबहुँ नहिं कीजै । मोरे कहे जानकी दीजै ॥
दो० प्रणतपाल रघुबंशमणि करुणा सिन्धु खरारि ।
गये शरण प्रभुराखिहैं तवअपराध बिसारि ॥
रामचरण पंकज उर धरहू । लंका अचलराज तुम करहू ॥
ऋषिपुलस्त्ययशबिमलमयंका । तेहिकुलमहँजनिहोसिकलंका ॥
राम नाम बिनु गिरा न सोहा । देखु बिचारि त्यागिमदमोहा ॥
बसन हीन नहिं सोह सुरारी । सब भूषण भूषित बरनारी ॥
राम बिमुख सम्पति प्रभुताई । गई रही पाई बिनु पाई ॥
सजल मूल जेहि सरितानाहीं । बरषिगयेपुनितबहिं सुखाहीं ॥
सुनु दशकण्ठ कहौं प्रण रोपी । राम बिमुख त्रातानहिंकोपी ॥
शंकर सहस बिष्णु अजतोही । सकहिं न राखिरामकरद्रोही ॥
दो० मोह मूल बहु शूलप्रद त्यागहु मति अभिमान ।
भजहु राम रघुनायकहि कृपासिन्धु भगवान ॥
यद्यपिकह कपिअतिहितबानी । भक्ति बिबेक धर्मनय सानी ॥
बोला बिहँसिअधमअभिमानी । मिलाहमहिंकपिगुरुबड़ज्ञानी ॥
मृत्यु निकट आई खल तोहीं । लागेसिअधमसिखावनमोहीं ॥
उलटा होइ कहा हनुमाना । मति भ्रमतोरिप्रकटमैंजाना ॥
सुनिकपिबचनबहुतरिसिआना । बेगि न हरहु मूढ़कर प्राना ॥
सुनत निशाचर मारन धाये । सचिवन्हसहितबिभीषणआये ॥
नाइ शीश करि बिनय बहूता । नीतिबिरोध न मारियदूता ॥
आन दण्ड कछु करिय गुसांई । सबही कहा मंत्र भल भाई ॥
सुनत बिहँसिबोला दशकन्धर । अंगभंग करि पठवहु बन्दर ॥

दो० कपिकर ममता पूंछपर सबहिं कहासमुझाइ ।
तेलबोरि पट बांधि पुनि पावक देहु लगाइ ॥
पूंछ हीन बन्दर जब जाइहि । तबशठनिजनाथहिलैआइहि ॥
जिन्हकी कीन्हेसिअमितबड़ाई । देखौं धौं तिन्हकी प्रभुताई ॥
बचनसुनत कपिमन मुसुकाना । भइ सहायशारद मैं जाना ॥
यातुधान सुनि रावण बचना । लागेरचन मूढ़ सोइ रचना ॥
रहा न नगर बसन घृततेला । बाढ़ी पूंछ कीन्ह कपिखेला ॥
कौतुक कहँ आये पुरबासी । मारहिं चरणकरहिं बहुहांसी ॥
बाजहिं ढोल देहिं सब तारी । नगर फेरि पुनि पूंछ प्रजारी ॥
पावक जरत दीख हनुमन्ता । भयउ परम लघुरूपतुरन्ता ॥
निबुक चढ़ेउ पुनिकनकअटारी । भई सभीत निशाचर नारी ॥
दो० हरि प्रेरित तेहि अवसर बहीं पवनउनचाश ।
अट्टहासकरि गरजा कपि बढ़िलाग अकाश ॥
देह बिशाल परम हरुआई । मन्दिरते मन्दिर चढ़िजाई ॥
जरा नगर भे लोग बिहाला । लपटझपट बहुकोटि कराला ॥
तात मातु सब करहिं पुकारा । इहिअवसरकोहमहिं उबारा ॥
हम जो कहा यहकपि नहिं होई । बानर रूप धरे सुर कोई ॥
साधु अवज्ञा कर फल ऐसा । जरै नगर अनाथ कर जैसा ॥
जारानगर निमिष इकमाहीं । एक विभीषणको गृह नाहीं ॥
जाकरभक्त अनलजेइ सिरिजा । जरानसोतेहिकारणगिरिजा ॥
उलटि पलटि लङ्का कपिजारी । कूदिपरा तब सिंधु मझारी ॥
दो० पूंछ बुझाइ खोयश्रम धरि लघु रूप बहोरि ।
जनकसुता के आगे ठाढ़ भयउ कर जोरि ॥
मातु मोहिं दीजे कछु चीन्हा । जैसे रघुनायकमोहिं दीन्हा ॥
चूड़ामणि उतारि तब दीन्हा । हर्ष समेत पवनसुत लीन्हा ॥
कहेहुतात अस मोर प्रणामा । सबप्रकार प्रभु पूरणकामा ॥
दीनदयाल बिरद सम्भारी । हरहु नाथ मम संकटभारी ॥

तात शक्रसुत कथा सुनायहु । बाणप्रतापप्रभुहिसमुझायहु॥
मासदिवसमहँनाथ न आवहिं । तौपुनिमोहिंजियतनहिंपावहिं॥
कहुकपि केहिबिधि राखौं प्राना । तुमहूँतात कहत अबजाना ॥
तुमहिंदेखि शीतल भइछाती । पुनिमोकहँसोइदिनसोइराती॥
दो० जनकसुतहिसमुझाइकरि बहुबिधि धीरजदीन्ह ।
चरणकमल शिरनाइकरि गमनरामपहँ कीन्ह ॥
चलत महाधुनि गरजेउ भारी । गर्भस्रवहिंसुनिनिशिचरनारी॥
लांघिसिंधु इहिपारहिं आवा । शब्दकिलकिलाकपिन्हसुनावा॥
हरषे सब बिलोकि हनुमाना । नूतनजन्म कपिन तबजाना ॥
मुख प्रसन्न तनु तेज बिराजा । कीन्हेसिरामचन्द्रकर काजा ॥
मिलेसकल अति भये सुखारी । तलफत मीन पाव जनुबारी ॥
चले हर्षि रघुनायक पासा । पूंछत कहत नवलइतिहासा ॥
तब मधुबन भीतर सब आये । अंगदसहितमधुरफल खाये ॥
रखवारे जब बरजन लागे । मुष्टि प्रहार करत सब भागे ॥
दो० जाइ पुकारे सकलते बन उजार युवराज ।
सुनिसुग्रीवहिं हर्षअति करिआये प्रभुकाज ॥
जो न होत सीता सुधि पाई । मधुबनके फल को सक खाई ॥
इहिबिधि मन बिचारकरराजा । आयगये कपिसहितसमाजा ॥
आइसबहिं नावा पद शीशा । मिलेसबन्हिअतिप्रेमकपीशा॥
पूंछेउ कुशल कुशल पद देखी । राम कृपा भा काजबिशेखी ॥
नाथ काज कीन्हेंउ हनुमाना । राखे सकलकपिन करप्राना ॥
सुनिसुग्रीव बहुरिउठि मिलेऊ । कपिनसहितरघुपतिपैचलेऊ॥
रामकपिन कहँ आवत देखा । किये काज उरहर्ष बिशेखा ॥
फटिक शिला बैठे दोउ भाई । परेसकल कपि चरणनजाई ॥
दो० प्रीति सहित भेंटे सकल रघुपति करुणा पुंज ।
पूछेउ कुशल नाथ अब कुशल देखिपदकंज ॥
जामवन्त कह सुनु रघुराया । जापर नाथ करहु तुमदाया ॥

ताहिसदाशुभ कुशल निरंतर । सुरनर मुनिप्रसन्नतेहिऊपर ॥
सो बिजयी विनयीगुणसागर । तासुसुयशतिहुँलोकउजागर ॥
प्रभुकी कृपा भयउ सब काजू । जन्महमारसुफल भा आजू ॥
नाथपवनसुत कीन्हजोकरणी । सो मुख लाखहुजाइ नबरणी ॥
पवन तनय के बचन सुहाये । जामवन्त रघुपतिहि सुनाये ॥
सुनि कृपालुउठि हृदयलगाये । जानिसुभटरघुपतिमनभाये ॥
कहहुतात केहि भाँति जानकी । रहतिकरति रक्षास्वप्रानकी ॥
दो० नामपाहरू दिवसनिशि ध्यान तुम्हार कपाट ।
लोचन निजपद यंत्रिका प्राणजाहिं केहिबाट ॥
चलती बार कह्यो म्वहिं टेरी । सुरति कराय शक्रसुत केरी ॥
चलत मोहिं चूड़ामणि दीन्ही । रघुपतिहृदयलाइतेहिलीन्ही ॥
नाथ युगल लोचन भरिबारी । बचनकह्योकछुजनककुमारी ॥
अनुजसमेत गहेहुप्रभु चरणा । दीनबन्धु प्रणतारतिहरणा ॥
मनक्रमबचनचरण अनुरागी । केहिअपराधनाथम्वहिंत्यागी॥
अवगुण एक मोर मैं जाना । बिछुरतप्राण न कीन्हपयाना ॥
नाथ सो नयननकर अपराधा । निसरतप्राणकरहिंहठिबाधा ॥
बिरह अनल तन तूलसमीरा । श्वास जरै क्षणमाहँ शरीरा ॥
नयनस्रवैंजल निजहितलागी । जरै न पाव देह बिरहागी ॥
सीताकी अति बिपति बिशाला । बिनाकहे भल दीनदयाला ॥
दो० निमिषनिमिषकरुणायतन जाहिंकल्पशतबीति ।
बेगिचलियप्रभुआनिये भुजबलखलदलजीति ॥
सुनि सीतादुखप्रभुसुखअयना । भरि आयेदोउराजिवनयना ॥
बचन काय मन ममगतिजाही ।सपन्यहुबिपतिकिचाहियताही॥
कहहनुमान बिपति प्रभुसोई । जबतकसुमिरणभजननहोई ॥
कितिक बात प्रभु यातुधानकी । रिपुहिजीतिआनिये जानकी ॥
सुनुकपितोहिं समान उपकारी । नहिंकोउसुरनरमुनितनुधारी ॥
प्रति उपकार करौं का तोरा । सनमुखहोइनसकतमनमोरा ॥

सुनुकपितोहिं उऋण मैं नाहीं । देखेउँ करिबिचार मनमाहीं ॥
पुनिपुनिकपिहिचितवसुरत्राता । लोचननीरपुलकिअतिगाता ॥
दो० सुनिप्रभुबचन बिलोकिमुख हृदयहर्ष हनुमन्त ।
॥ चरण परेउ परमाकुल त्राहि त्राहि भगवन्त ॥
बार बार प्रभु चहत उठावा । प्रेममगन तेहिउठतनभावा ॥
प्रभुपद पंकज कपिकर शीशा । सुमिरिसोदशामगनगौरीशा ॥
सावधान मन कर पुनि शंकर । लागेकहन कथाअतिसुन्दर ॥
कपि उठाय प्रभुहृदय लगावा । करगहि परमनिकट बैठावा ॥
कहु कपि रावण पालित लंका । केहिबिधिदहेउदुर्गअतिबंका ॥
प्रभु प्रसन्न जाना हनुमाना । बोलेबचनबिगतअभिमाना ॥
शाखामृग की अति मनुसाई । शाखा ते शाखा पर जाई ॥
लांघि सिन्धुहाटकपुरजारा । निशिचरगणबधिबिपिनउजारा ॥
सो सब तव प्रताप रघुराई । नाथ न कछुकमोरिप्रभुताई ॥
दो० ताकहँ प्रभुकछु अगमनहिं जापरतुम अनुकूल ।
॥ तव प्रताप बड़वानलहि जारि सकै खल तूल ॥
सुनतबचन प्रभुबहु सुखमाना । मनक्रमबचनदासनिजजाना ॥
मांगु बचन सुत बर अनुकूला । देउँ आजतुमकहँ सुखमूला ॥
नाथभक्तितवसब सुखदायिनि । देहुकृपाकरिशिवअनपायिनि ॥
सुनिप्रभुपरमसरल कपिबानी । एवमस्तु तब कहेउ भवानी ॥
उमाराम सुभाव जिन्हजाना । ताहिभजनतजिभावनआना ॥
यह संवाद जासु उर आवा । रघुपतिचरण भक्तितेइपावा ॥
सुनिप्रभुबचन कहैं कपिवृन्दा । जयजयजयकृपालुसुखकन्दा ॥
तबरघुपति कपिपतिहिबुलावा । कहाचलै कर करहु बनावा ॥
अब बिलम्ब केहिकारणकीजै । तुरतकपिनकहँ आयसुदीजै ॥
कौतुक देखि सुमन बहु बर्षे । नभ ते भवन चले सुरहर्षे ॥
दो० कपिपति बेगि बुलायउ आये यूथप यूथ ।
॥ नाना बरण अतुलबल बानरभालु बरूथ ॥

प्रभु पद पंकज नावहिं शीशा । गर्जहिं भालु महाबलकीशा ॥
देखी राम सकल कपि सैना । चितव कृपाकरि राजिवनैना ॥
राम कृपा बल पाइ कपिन्दा । भये पक्षयुत मनहुँ गिरिन्दा ॥
हरषि राम तब कीन्ह पयाना । शकुनभये सुन्दर शुभनाना ॥
जासु सकल मंगलमय रीती । तासुप्रयान शकुन यहनीती ॥
प्रभु प्रयान जाना बैदेही । फरके बाम अंग शुभ तेही ॥
जो जो शकुन जानकिहि होई । अशकुनभयउरावणहिंसोई ॥
चला कटक को बरणै पारा । गरजहिं बानर भालुअपारा ॥
नख आयुधगिरि पादप धारी । चले गगनमहि इच्छाचारी ॥
केहरि नाद भालु कपि करहीं । डगमगाहिंदिग्गजचिकरहीं ॥

छं० चिक्करहिंदिग्गजडोलमहिगिरिलोलसागर खरभरे ।
मनहरषदिनकरसोमसुरमुनि नागकिन्नरदुखटरे ॥
कटकटहिंमरकटबिकटभट बहुकोटिकोटिनधावहीं ।
जयरामप्रबलप्रताप कोशलनाथ गुणगणगावहीं ॥
सकसहिन भार अपार अहिपति बारबारबिमोहई ।
गहिदशनपुनिपुनिकमठपीठकठोरसोकिमिसोहई ॥
रघुबीररुचिरपयान प्रास्थित जानि परमसुहावनी ।
जनुकमठखप्परसर्पराजसोलिखतअविचलपावनी ॥

दो० इहिबिधि जाइ कृपानिधि उतरे सागर तीर ।
जहँ तहँ लागेखानफल भालुबिपुलकपिबीर ॥

उहां निशाचर रहहिं सशंका । जबतेजारि गयउ कपिलंका ॥
निजनिज गृह सबकरें बिचारा । नहिंनिशिचरकुलकेरउबारा ॥
जासु दूत बल बरणि न जाई । तेहिआये पुर कवनिभलाई ॥
अतिसभीतसुनि पुरजनबानी । मन्दोदरी हृदय अकुलानी ॥
रही जोरि कर पति पद लागी । बोलीबचन नीति रसपागी ॥
कन्त कर्ष हरिसन परिहरहू । मोरकहाअतिहितचितधरहू ॥
समुझत जासु दूत की करनी । स्रवहिंगर्भ रजनीचरघरनी ॥

तासु नारिनिजसचिव बुलाई। पठवहु कन्तजो चहहुभलाई॥
तवकुलकमलबिपिन दुखदाई। सीता शीत निशासम आई॥
सुनहु नाथ सीता बिनु दीन्हे। हितनतुम्हारशम्भुअजकीन्हे॥
दो० रामबाण अहिगणसरिस निकरनिशाचरभेक।
जबलगिग्रसतनतबहिंलगियतनकरहुतजिटेक॥
श्रवण सुनत शठताकीबानी। बिहँसाजगतविदितअभिमानी॥
सभय सुभाव नारि करसांचा। मंगल माहँ अमंगल रांचा॥
जो आवे मरकट कटकाई। जियहिंबिचारेनिशिचरखाई॥
कम्पहिं लोकप जाके त्रासा। तासुनारिभयकरि बड़िहासा॥
असकहिबिहँसि ताहिउरलाई। चलेउसभाममता अधिकाई॥
मन्दोदरी हृदय कर चीता। भयोकन्तपर बिधिबिपरीता॥
बैठेउ सभा खबरि अस पाई। सिन्धुपार सेना सब आई॥
बूझेसिसचिवउचितमत कहहू। ते सब हँसे मौन करि रहहू॥
जितेहु सुरासुर तबश्रम नाहीं। नर बानर केहि लेखे माहीं॥
दो० सचिववैद्यगुरुतीनिजो प्रियबोलहिं भयआश।
राज धर्म तन तीनकर होइ बेगही नाश॥
सोइ रावण कहँ बनी सहाई। अस्तुति कराहिं सुनाइसुनाई॥
अवसर जानि विभीषण आवा। भ्राताचरण शीश तेहिनावा॥
पुनिशिरनाइ बैठनिज आसन। बोलावचन पाइ अनुशासन॥
जो कृपाल पूंछेहु मोहिं बाता। मति अनुरूप कहउमें ताता॥
जो आपन चाहो कल्याना। सुयशसुमति शुभगतिसुखनाना॥
सो पर नारि लिलार गुसाईं। तजौ चौथि चन्दा की नाईं॥
चौदह भुवन एक पति होई। भूत द्रोह तिष्ठै नहिं सोई॥
गुण सागर नागर नर जोऊ। अलपलोभ भलकहै न कोऊ॥
दो० कामक्रोध मदलोभ सब नाथ नरक कर पन्थ।
सबपरिहरि रघुबीर पद भजहु कहहिंसद्ग्रन्थ॥
तात राम नहिं नर भूपाला। भुवनेश्वर कालहु के काला॥

ब्रह्म अनामय अज भगवंता । व्यापकअजितअनादिअनंता॥
गो द्विज धेनु देव हितकारी । कृपासिन्धु मानुष तनुधारी ॥
जन रंजन भंजन खल ब्राता । वेद धर्म रक्षक सुरत्राता ॥
ताहि बैर तजि नाइय माथा । प्रणतारति भंजन रघुनाथा ॥
देहु नाथ प्रभु कहँ वैदेही । भजहु रामबिनु कामसनेही ॥
शरण गये प्रभु ताहु न त्यागा । बिश्वद्रोहकृतअघजेहिलागा ॥
जासु नाम त्रयताप नशावन । सोइप्रभुप्रगटसमुझजियरावन॥
दो० बार बार पद लागौं बिनय करौं दशशीश ।
परिहरि मान मोह मद भजहुकोशलाधीश ॥
मुनिपुलस्त्यनिज शिष्यसन कहिपठईयहबात ।
तुरत सो मैंतुमसन कही पाय सुअवसरतात ॥
माल्यवंतअति सचिव सयाना । तासुवचनसुनिअतिसुखमाना॥
तातअनुज तवनीतिबिभूषण । सोइउरधरहुजोकहतबिभीषण॥
रिपु उतकर्ष कहत शठ दोऊ । दूरि न करहु यहां ते कोऊ ॥
माल्यवंत गृह गयउ बहोरी । कहेउ बिभीषणपुनि करजोरी ॥
सुमति कुमति सबके उर रहई । नाथपुराण निगमअसकहई ॥
जहांसुमति तहँ सम्पतिनाना । जहांकुमतितहँबिपतिनिदाना॥
तव उर कुमति बसी बिपरीती । हितअनहितमानतरिपुप्रीती ॥
कालरात्रि निशिचर कुलकेरी । तेहि सीतापर प्रीतिघनेरी ॥
दो० तात चरण गहिमांगौं राखहु मोर दुलार ।
सीता देहु राम कहँ अहित न होइतुम्हार ॥
बुध पुराण श्रुति सम्मतिबानी । कही बिभीषणनीतिबखानी ॥
सुनत दशानन उठा रिसाई । खलतोहिंमृत्युनिकटचलिआई ॥
जियसिसदा शठमोर जियावा । रिपुकरपक्ष सदातोहिंभावा ॥
कहसिनखलअसको जगमाहीं । भुजबलजेहि जीते हमनाहीं ॥
ममपुरबासि तपसी सन प्रीती । शठमिलुजाहिताहिकहुनीती ॥
असकहि कीन्हेसिचरणप्रहारा । अनुज गहे पद बारहिंबारा ॥

उमा सन्त की यही बड़ाई । मन्द करत जो करै भलाई ॥
तुम पितु सरिस भले मोहिं मारा । राम भजे हित होइ तुम्हारा ॥
सचिव संग लै नभ पथ गयऊ । सबहिं सुनाइ कहत अस भयऊ ॥
दो० राम सत्यसंकल्प प्रभु सभा काल बश तोरि ।
मैं रघुनायक शरण अब जाउँ देहु जनि खोरि ॥
अस कहि चला बिभीषण जबहीं । आयुहीन भे निशिचर तबहीं ॥
साधु अवज्ञा तुरत भवानी । कर कल्याण अखिल कर हानी ॥
रावण जबहिं बिभीषण त्यागा । भयो बिभव बिनु तबहिं अभागा ॥
चलेउ हर्षि रघुनायक पाहीं । करत मनोरथ बहु मन माहीं ॥
देखिहौं जाइ चरण जलजाता । अरुण मृदुल सेवक सुखदाता ॥
जे पद परसि तरी ऋषि नारी । दण्डक कानन पावन कारी ॥
जे पद जनकसुता उर लाये । कपट कुरंग संग धरि धाये ॥
हर उर सर सरोज पद जोई । अहो भाग्य मैं देखब सोई ॥
दो० जिन पायँन कर पादुका भरत रहे मन लाइ ।
ते पद आजु बिलोकिहौं इन नयनन अब जाइ ॥
यहि बिधि करत सप्रेम बिचारा । आयउ सपदि सिन्धु के पारा ॥
कपिन्ह बिभीषण आवत देखा । जानेउ कोउ रिपुदूत बिशेखा ॥
ताहि राखि कपिपति पहँ आये । समाचार सब जाइ सुनाये ॥
कह सुग्रीव सुनिय रघुराई । आवा मिलन दशानन भाई ॥
कह प्रभु सखा बूझिये काहा । कहा कपीश सुनहु नरनाहा ॥
जानि न जाइ निशाचर माया । कामरूप केहि कारण आया ॥
भेद हमार लेन शठ आवा । राखिय बांधि मोहिं अस भावा ॥
सखा नीति तुम नीक बिचारी । मम प्रण शरणागत भयहारी ॥
सुनि प्रभु वचन हर्ष हनुमाना । शरणागत वत्सल भगवाना ॥
दो० शरणागत कहँ जो तजहिं निज अनहित अनुमानि ।
ते नर पामर पापमय तिनहिं बिलोकत हानि ॥
कोटि विप्र बध लागहिं जाहू । आये शरण तजों नहिं ताहू ॥

सन्मुखहोइ जीव मोहिं जबहीं। जन्म कोटि अघनाशौंतबहीं॥
पापवन्तकर सहज सुभाऊ। भजनमोर तेहिभावनकाऊ॥
जो पै दुष्ट हृदय सो होई। मोरे सम्मुख आव कि सोई॥
निर्मल मनजन सो मोहिंपावा। मोहिंकपट छलछिद्रनभावा॥
भेद लेन पठवा दशशीशा। तबहुँनकछुभयहानि कपीशा॥
जग महँ सखा निशाचर जेते। लक्ष्मणहनहिंनिमिषमहँतेते॥
जो सभीत आवा शरणाई। रखिहौं ताहि प्राणकी नाई॥

दो० उभय भांति लै आवहु हँसिकह कृपानिधान।
जय कृपालु कहि कपिचले अंगदादिहनुमान॥

सादर तेहि आगे करि बानर। चले जहांरघुपति करुणाकर॥
दूरिहिते देखे दोउ भ्राता। नयनानन्द दान के दाता॥
बहुरि राम छबि धाम बिलोकी। रहासोठाढ़ एक पग रोकी॥
भुज प्रलम्ब कंजारुण लोचन। श्यामलगातप्रणतभयमोचन॥
सिंह कन्ध आयत उर सोहा। आनन अमितमदनछबिमोहा॥
नयननीर पुलकित अतिगाता। मनधरिधीर कही मृदुबाता॥
निशिचर बंश जन्मसुरत्राता। नाथ दशानन कर मैं भ्राता॥
सहज पाप प्रिय तामस देहा। यथाउलूकहिं तमपर नेहा॥

दो० श्रवण सुयश सुनि आयऊँ प्रभु भंजन भवभीर।
त्राहि त्राहि आरत हरण शरण सुखद रघुबीर॥

असकहि करत दण्डवत देखा। तुरत उठे प्रभु हर्ष विशेखा॥
दीनबचन सुनि प्रभुमनभावा। भुजबिशालगहिहृदयलगावा॥
अनुजसहित मिल ढिगबैठारी। बोले बचन भक्त हितकारी॥
कहु लंकेश सहित परिवारा। कुशल कुठाहरबासतुम्हारा॥
खल मण्डली बसहु दिनराती। सखाधर्म निबहै केहिभांती॥
मैं जानी तुम्हारि सब रीती। अतिशयनिपुणनभावअनीती॥
बरु भल बास नरक कर ताता। दुष्ट संग जनि देइ बिधाता॥
अब पद देखि कुशल रघुराया। जोतुमकीन्ह जानिजनदाया॥

दो० तबलगि कुशल न जीवकहँ सपनेहु मन विश्राम ।
जबलगि भजन न रामके शोक धाम तजिकाम ॥
तबलगि हृदय बसतखलनाना । लोभ मोह मत्सर मदमाना ॥
जबलगि उर न बसतरघुनाथा । धरेचाप शायककटि भाथा ॥
ममतातिमिर तरुण अँधियारी । राग द्वेष उलूक सुखकारी ॥
तब लगि बसत जीव उरमाहीं । जबलगिप्रभुप्रतापरबिनाहीं ॥
अब मैं कुशल मिटे भय भारे । देखि रामपद कमलतुम्हारे ॥
तुम कृपालु जापर अनुकूला । ताहिनव्यापत्रिबिधभयशूला ॥
मैं निशिचर अतिअधम सुभाऊ। शुभआचरणकीन्हनहिंकाऊ ॥
जो स्वरूपमुनिध्यान न पावा । सोप्रभुहर्षि हृदयमोहिंलावा ॥
दो० अहोभाग्य मम अमित अति रामकृपा सुखपुंज ।
देखेउँ नयन बिरंचि शिव सेव्य युगल पदकंज ॥
सुनहुसखा निजकहहुँ सुभाऊ । जानिभुशुण्डिशंभुगिरिजाऊ ॥
जो नर होइ चराचर द्रोही । आवैसभय शरण तकिमोही ॥
तजि मदमोह कपट छलनाना । करौं सखातेहि साधुसमाना ॥
जननी जनक बन्धु सुत दारा । तनधनभवन सुहृद परिवारा ॥
सबके ममता ताग बटोरी । ममपदमनहिं बांधिबटिडोरी ॥
समदरशी इच्छा कछु नाहीं । हर्ष शोक भयनहिं मनमाहीं ॥
अस सज्जन मम उरबस कैसे । लोभी हृदय बसत धनजैसे ॥
तुम सारिखे संत प्रिय मोरे । धरौं देह नहिं आन निहोरे ॥
दो० सगुण उपासक परमहित निरत नीतिदृढ़नेम ।
ते नर प्राणसमान मोहिं जिनके द्विजपद प्रेम ॥
सुनु लंकेश सकल गुण तोरे । ताते तुम अतिशयप्रियमोरे ॥
राम बचन सुनि बानर यूथा । सकलकहहिंजयकृपाबरूथा ॥
सुनत बिभीषण प्रभुकर बानी । नहिंअघातश्रवणामृतजानी ॥
पद अम्बुज गहि बारहिंबारा । हृदय समात न प्रेम अपारा ॥
सुनहु देव सचराचर स्वामी । प्रणतपाल उरअन्तरयामी ॥

उर कछु प्रथम बासना रहेऊ । प्रभुपदप्रीति सरितसोबहेऊ ॥
अब कृपालु निज भक्तिपावनी । देहु दयाकरि शम्भु भावनी ॥
एवमस्तु कहि प्रभु रणधीरा । मांगा तुरत सिन्धु करनीरा ॥
यदपि सखा तोहिं इच्छानाहीं । मम दर्शन अमोघजगमाहीं ॥
असकहिरामतिलक तेहिसारा । सुमनवृष्टिनभभयउ अपारा ॥
दो० रावण क्रोधानल सरिस श्वाससमीर प्रचण्ड ।
जरत बिभीषण राखेउ दीन्हेउ राज अखण्ड ॥
जोसम्पति शिवरावणहि दीन्ह दिये दशमाथ ।
सो सम्पदा बिभीषणहिं सकुचिदीन्हरघुनाथ ॥
अस प्रभुछांड़ि भजहिंजेआना । तेनर पशु बिनु पूंछ विषाना ॥
निजजनजानि ताहिअपनावा । प्रभुस्वभावकपिकुलमनभावा ॥
पुनि सर्बज्ञ सर्ब उर बासी । सर्ब रूप सबरहितउदासी ॥
बोले बचन नीति प्रतिपालक । कारणमनुजदनुजकुलघालक ॥
सुन कपीश लंकापति बीरा । केहिबिधिउतरियजलधिगँभीरा ॥
संकुल उरग मकर झषजाती । अति अगाधदुस्तरसबभांती ॥
कह लंकेशसुनहु रघुनायक । कोटिसिंधुशोषक तवशायक ॥
यद्यपि तदपि नीति असिगाई । बिनय करियसागरपहँजाई ॥
दो० प्रभुतुम्हार कुलगुरुजलधि कहहिंउपायबिचारि ।
बिनुप्रयास सागरतरहिं सकल भालुकपिधारि ॥
सखा कह्यो तुम नीक उपाई । करब दैव जो होइ सहाई ॥
मंत्र न यह लक्ष्मणमन भावा । रामबचनसुनिअतिदुखपावा ॥
नाथ दैव कर कवन भरोसा । शोषियसिन्धुकरियमनरोसा ॥
कादर मनकर एक अधारा । दैव दैव आलसी पुकारा ॥
सुनत बिहँसि बोले रघुबीरा । ऐसेइ करब धरहु मनधीरा ॥
असकहिप्रभुअनुजहिसमुझाई। सिन्धु समीप गये रघुराई ॥
प्रथम प्रणाम कीन्ह प्रभुजाई । बैठे तट पुनि दर्भ डसाई ॥
जबहिं बिभीषण प्रभुपहँ आये । पाछे रावण दूत पठाये ॥

दो० सकल चरित उन्ह देखेउ धरे कपट कपिदेह ।
प्रभुगुण हृदयसराहि अति शरणागतपरनेह ॥
प्रकट बखानत राम सुभाऊ । अतिसप्रेमगा बिसरि दुराऊ ॥
रिपुका दूत कपिन्ह जबजाना । ताहिबांधिकपिपातिपहँआना ॥
कह सुग्रीव सुनहु सब बनचर । अंगभंगकरिपठवहुनिशिचर ॥
सुनि सुग्रीव बचन कपि धाये । बांधि कटकचहुँपासफिराये ॥
बहु प्रकार मारन कपि लागे । दीन पुकारत तदपिन त्यागे ॥
जो हमार हर नासा काना । तेहि कोशलाधीशाकर आना ॥
सुनिलक्ष्मणतेहि निकटबुलाई । दयालागि हँसिदीन छुड़ाई ॥
रावण कर दीन्हेउ यह पाती । लक्ष्मणबचन बांचुकुलघाती ॥
दो० कहेउ मुखागर मूढ़ सन मम सन्देश उदार ।
सीता देहु मिलहु नतो आवा काल तुम्हार ॥
तुरतनाइ लक्ष्मण पद माथा । चलादूत बरणत गुणगाथा ॥
कहत राम यश लंका आवा । रावण चरण शीशतिन्हनावा ॥
बिहँसि दशाननपूंछेसिबाता । कहसिनशुकआपनिकुशलाता ॥
पुनि कहु कुशल विभीषणकेरी । जासु मृत्यु आई अति नेरी ॥
करत राज लंका शठ त्यागा । होइहि यवकर कीटअभागा ॥
पुनि कहु भालु कीशकटकाई । कठिनकालप्रेरितचलिआई ॥
तिन्हके जीवन कर रखवारा । भयउमृदुलचितसिन्धुबिचारा ॥
कहु तपसिनकर बात बहोरी । जिन्हकेहृदय त्रास बड़मोरी ॥
दो० भईभेंट की फिरगये श्रवण सुयश सुनि मोर ।
कहसिनरिपुदलतेजबल कसचकितचिततोर ॥
नाथ कृपाकरि पूंछेहु जैसे । मानहु बचन क्रोधतजितैसे ॥
मिलाजाइ जब अनुजतुम्हारा । जातहिरामातिलकतेहि सारा ॥
रावण दूत हमहिं सुनिकाना । कपिन बांधिदीन्हे दुखनाना ॥
श्रवणनासिका काटन लागे । राम शपथ दीन्ही तबत्यागे ॥
पूंछेहु नाथ कीश कटकाई । बदनकोटिशत बरणिनजाई ॥

नाना बरण भालु कपि धारी । बिकटानन बिशालभयकारी ॥
जेइ पुरदहेउवधेउ सुत तोरा । सकलकपिन्हमहँतेहिबलथोरा ॥
अमितनाम भटकठिनकराला । बिपुलबरणतनुतेज बिशाला ॥
दो० द्विविद मयन्द नील नल अंगदादिबिकटासि ।
दधिमुख केहरिकुमुद गव जामवन्तबलरासि ॥
ये कपि सब सुग्रीव समाना । इन्हसमकोटिगनै को आना ॥
रामकृपा अतुलितबलतिनहीं । तृणसमानत्रयलोकहिगिनहीं ॥
असमैं श्रवणसुना दशकन्धर । पद्म अठारह यूथप बन्दर ॥
नाथ कटक महँसो कपिनाहीं । जो न तुम्हें जीतहिरणमाहीं ॥
परम क्रोध मींजहिं सब हाथा । आयसु पै न देहिं रघुनाथा ॥
शोषहिंसिन्धुसरितझषब्याला । फारहिंनखधरिकुधरविशाला ॥
मर्दि गर्द मिलवहिं दशशीशा । ऐसे बचन कहहिंसबकीशा ॥
गर्जहिं तर्जहिं सहज अशंका । मानहुँग्रसनचहत अबलंका ॥
दो० सहजशूर कपि भालुसब पुनि शिरपर श्रीराम ।
रावण कोटिन कालकहँ जीतिसकहिं संग्राम ॥
राम तेज बल बुधि बिपुलाई । शेषसहस्रशत सकहिंनगाई ॥
सकशर एक शोषिशत सागर । तव भ्रातहिंपूंछेउ नयनागर ॥
तासु बचन सुनि सागर पाहीं । मांगत पन्थ कृपा मनमाहीं ॥
सुनत बचन बिहँसादशशीशा । जोअसिमतिसहायकृतकीशा ॥
सहज भीरुकरि बचन दृढ़ाई । सागर सन ठानी मचलाई ॥
मूढ़ मृषा का करसि बड़ाई । रिपु बल बुद्धि थाह मैं पाई ॥
सचिव सभीत बिभीषण जाके । बिजयबिभूतिकहांलगिताके ॥
सुनिखलवचनदूत रिसिबाढ़ी । समय बिचारिपात्रिकाकाढ़ी ॥
राम अनुज दीन्ही यह पाती । नाथ बँचाइ जुड़ावहु छाती ॥
बिहँसिबामकरलीन्हेसि रावन । सचिवबोलिशठलागबचावन ॥
दो० बातनमनहिं रिझावशठ जनिघालसि कुलखीश ।
राम बिरोधन उबरिहासि शरण बिष्णु अजईश ॥

होसि मान तजि अनुजइव प्रभुपद पंकज भृङ्ग ।
होहिरामशर अनलखल जनिकुल सहितपतङ्ग ॥
सुनत सभय मनमहँ मुसुकाई । कहत दशाननसबहिं सुनाई ॥
भूमि परा कर गहत अकासा । लघुतापसकरबाग बिलासा ॥
कह शुकनाथ सत्यसबबानी । समुझहु छांड़िप्रकृतिअभिमानी॥
सुनहुबचनममपरिहरि क्रोधा । नाथ रामसन तजहु बिरोधा ॥
अति कोमल रघुबीर सुभाऊ । यद्यपि अखिललोककरराऊ ॥
मिलतकृपा प्रभुतुमपर करिहैं । उर अपराध न एको धरिहैं ॥
जनकसुता रघुनाथहिं दीजै । इतना कहा मोर प्रभुकीजे ॥
जबतेइँ देन कहेउ बैदेही । चरण प्रहार कीन्ह शठतेही ॥
चरणनाइ शिर चलासोताहां । कृपासिंधु रघुनायक जाहां ॥
करि प्रणाम निजकथा सुनाई । रामकृपा आपनि गतिपाई ॥
ऋषि अगस्त्यकरशापभवानी । राक्षसभयउ रहा मुनिज्ञानी ॥
बन्दि राम पद बारहिंबारा ।पुनिनिजआश्रमकहँपगुधारा॥
दो॰ विनय नमानत जलधिजड़ गयेतीनिदिनबीति ।
बोले रामसकोप तब भय बिनु होय न प्रीति ॥
लक्ष्मण बाण शरासन आनू । शोषैबारिधि बिशिखकृशानू ॥
शठसन विनयकुटिलसनप्रीती । सहजकृपणसनसुन्दरनीती ॥
ममता रत सन ज्ञान कहानी । अतिलोभीसनबिरतिबखानी॥
क्रोधिहिसमकामिहि हरिकथा । ऊषर बीज बये फल यथा ॥
असकहि रघुपतिचापचढ़ावा । यहमत लक्ष्मणके मनभावा ॥
सन्धानेउप्रभु बिशिख कराला । उठीउदधिउर अन्तरज्वाला ॥
मकर उरगभ्ऱषगण अकुलाने । जरतजन्तुजलनिधिजबजाने॥
कनकथारभरि मणिगण नाना । विप्र रूप आये तजिमाना ॥
दो॰ काटे पै कदली फरै कोटि यतन करि सींच ।
विनय न मान खगेशसुन डाटेहि पै नवनीच ॥
सभय सिंधु गहि पद प्रभुकेरे । क्षमहु नाथसब अवगुणमेरे ॥

गगनसमीर अनलजलधरणी । इनकी नाथसहजजड़करणी ॥
तव प्रेरित माया उपजाये । सृष्टि हेतु सबग्रन्थन गाये ॥
प्रभुआयसुजेहिकहँजसअहही । सो तेहिभांतिरहे सुखलहही ॥
प्रभुभलकीन्हमोहिंसिखदीन्हीं । मर्य्यादासब तुम्हरी कीन्हीं ॥
ढोल गँवार शूद्र पशु नारी । ये सब ताड़नके अधिकारी ॥
प्रभु प्रताप मैं जाब सुखाई । उतरिहिकटक न मोरिबड़ाई ॥
प्रभु आज्ञा अपेल श्रुतिगाई । करहुबेगिजो तुमहिंसुहाई ॥

दो० सुनत बिनीतबचन अति कहकृपालुमुसकाइ ।
जेहिबिधिउतरेकपिकटकतातसोकरहुउपाइ ॥

नाथ नीलनल कपिदोउ भाई । लरिकाईं ऋषि आशिषपाई ॥
तिनके परस किये गिरि भारे । तरिहहिंजलधिप्रतापतुम्हारे ॥
मैं पुनि उर धरि प्रभु प्रभुताई । करिहौंबल अनुमान सहाई ॥
इहिबिधिनाथपयोधिबँधाइय । जिहिअससुयशलोकतिहुँगाइय ॥
इहिशर मम उत्तर तट बासी । हतहु नाथखलगणअघरासी ॥
सुनि कृपालु सागर मनपीरा । तुरतहिं हरी राम रणधीरा ॥
देखि राम बल अतुलित भारी । हर्षि पयोनिधि भयोसुखारी ॥
सकलचरितकहिप्रभुहिसुनावा । चरणबन्दि पाथोधिसिधावा ॥

छं० निजभवनगवनेउ सिन्धु श्रीरघुबीरहिय मतभायऊ ।
यहचरितकलिमलहरण जसमतिदास तुलसीगायऊ ॥
सुखभवनसंशयदमनशमन बिषादरघुपतिगुणगना ।
तजिआशसकलभरोसगावहिं सुनहिंसज्जनशुचिमना ॥

दो० सकल सुमंगल दायक रघुनायक गुणगान ।
सादरसुनहिं तेतरहिंभव सिंधु बिनाजलयान ॥

इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेविमल
वैराग्यसम्पादनोनामपंचमः सोपानः ॥

श्रीगणेशायनमः ॥

लङ्का काण्ड ॥

श्लोक ॥

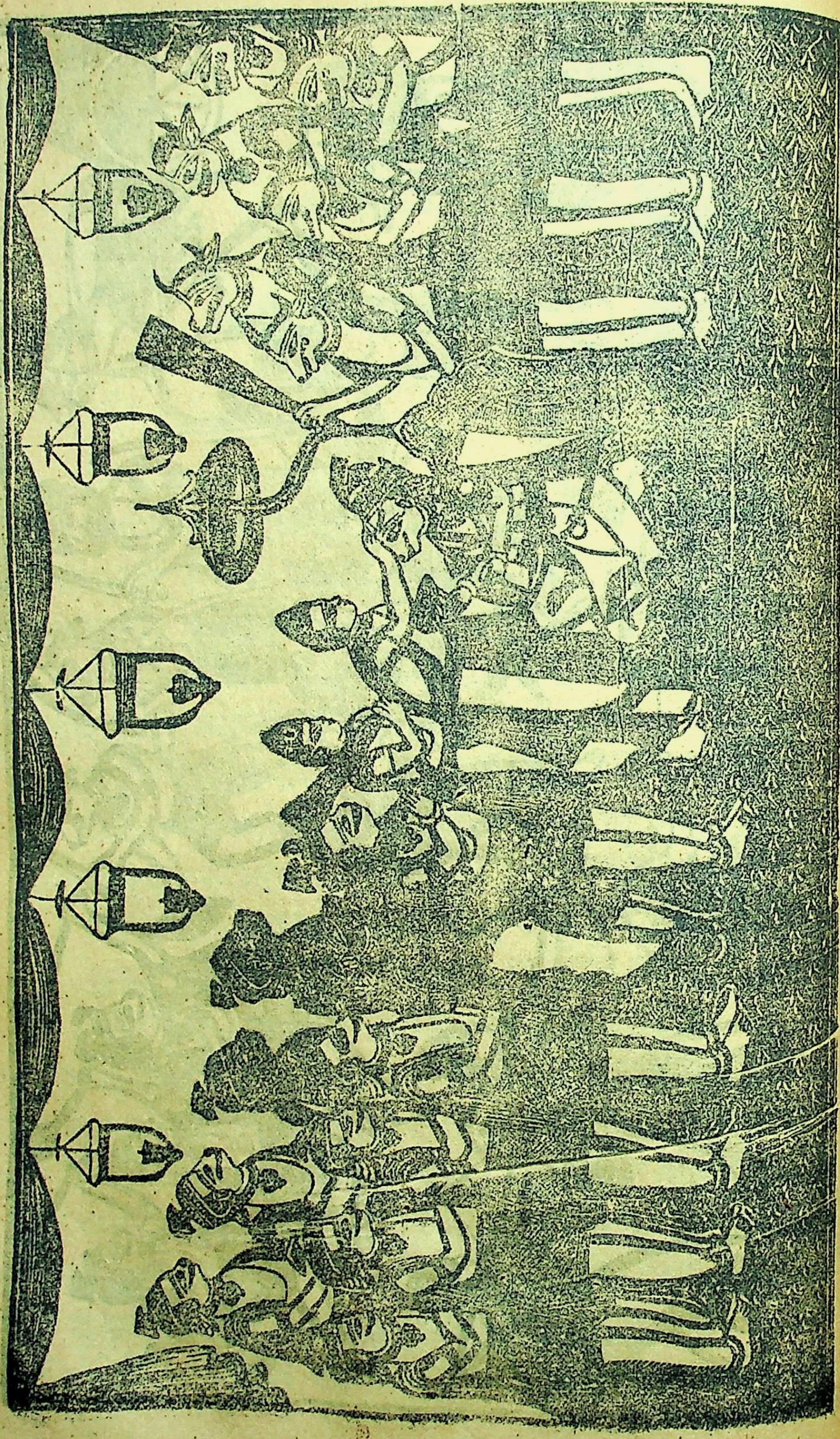
शंखद्धाभमतीवसुन्दरतनुंशार्दूलचर्माम्बरं कालव्यालकराल
भूषणधरंगंगाशशांकप्रियम् ॥ काशीशंकलिकल्मषौघशमनंक
ल्याणकल्पद्रुमं नौमीड्यंगिरिजापतिंगुणनिधिंश्रीशंकरंकामह
म् १ योददातिसतांशम्भुःकैवल्यमपिदुर्लभम् । खलानांदण्ड
कृद्योसौशंकरःशंतनोतुमे ॥ २ ॥

दो० लवनिमेष परमाणयुग बर्ष कलपशर चण्ड ।
भजसि न मनतेहिरामकहँ कालजासुकोदण्ड ॥

सो० सिंधुबचनसुनिराम सचिवबोलिप्रभुअसकहेउ ।
अबबिलम्बकेहिकाम रचहु सेतु उतरै कटक ॥
सुनहु भानुकुलकेतु जाम्बवन्त करजोरि कह ।
नाथ नाम तवसेतु नरचाढ़ि भवसागरतरहिं ॥

यहलघुजलधि तरतकतबारा । असंसुनिपुनिकहपवनकुमारा ।
प्रभु प्रताप बड़वानल भारी । शोषेउ प्रथमपयोनिधिबारी ॥
तव रिपुनारि रुदन जल धारा । भरचो बहोरिभयो तेहिखारा ॥
सुनि अस उक्ति पवनसुतकेरी । बिहँसे रघुपति कपितनहेरी ॥
जाम्बवन्त बोले दोउ भाई । नलनीलहिं सब कथासुनाई ॥
राम प्रताप सुमिरि उर माहीं । करहु सेतु प्रयास कछुनाहीं ॥
बोलि लिये कपिनिकर बहोरी । सकलसुनहु बिनतीइकमोरी ॥





रामचरण पंकज उर धरहू । कौतुक एक भालु कपिकरहू ॥
धावहु मर्कट बिकट बरूथा । आनहु बिटप गिरिनकेयूथा ॥
सुनि कपिभालु चलेकरि हूहा । जय रघुबीर प्रताप समूहा ॥
दो० अतिउतंग तरु शैलगण लीलहिं लेहिं उठाइ ।
आनिदेहिं नलनीलकहँ बिरचहिं सेतु बनाइ ॥
शैल बिशाल आनि कपिदेहीं । कन्दुकइव नलनीलसोलेहीं ॥
देखि सेतु अति सुन्दर रचना । बिहँसिकृपानिधिबोलेबचना ॥
परम रम्य सुन्दर यह धरणी । महिमाअमितजाइनाहिंबरणी॥
करिहौं इहां शम्भु थापना । मोरे हृदय परम कल्पना ॥
सुनि कपीश बहु दूत पठाये । मुनिवर निकर बोलिलैआये ॥
लिङ्ग थापि बिधिवतकरिपूजा । शिवसमानप्रियमोहिंन दूजा ॥
शिव द्रोही मम दास कहावै । सोनर स्वप्नेहुमोहिं न भावै ॥
शंकर बिमुख भक्ति चहमोरी । सो नर मूढ़ मन्दमति थोरी ॥
दो० शंकर प्रिय मम द्रोही शिव द्रोही मम दास ।
ते नर करहिं कल्पभर घोर नरक महँ वास ॥
जो रामेश्वर दर्शन करिहैं । सोतनतजिममधामसिधरिहैं॥
जो गंगाजल आनि चढ़ाइहि । सो सायुज्य मुक्तिनर पाइहि ॥
होइ अकामजोछलतजिसेइहि । भक्तिमोरितिहिशंकर देइहि ॥
ममकृत सेतु जु दर्शन करिहैं । सोबिनुश्रम भवसागरतरिहैं॥
राम बचन सबकेमन भाये ।मुनिवरनिजनिजआश्रमआये॥
गिरिजा रघुपतिकी यह रीती । सन्तत करहिंप्रणतपरप्रीती ॥
बांधेउ सेतु नील नल नागर । रामकृपा यश भयउ उजागर ॥
बूड़हिं आनहिं बोरहिंजेई । भये उपल बोहित सम तेई ॥
महिमायह न जलधिकीबरणी । पाहनगुणन कपिनकीकरणी ॥
दो० श्री रघुबीर प्रताप ते सिन्धु तरे पाषान ।
तेमतिमन्द जेरामतजि भजहिंजायप्रभुआन ॥
बांधि सेतु अति सुदृढ़ बनावा । देखि कृपानिधिके मनभावा ॥

चली सेन कछु बरणि न जाई । गरजहिं मरकटभट समुदाई ॥
सेतुबंध ढिग चढ़ि रघुराई । चितवकृपालुसिन्धु बहुताई ॥
देखन कहँ प्रभु करुणाकन्दा । प्रकटभये सबजलचरवृन्दा ॥
नाना मकर नक्र झष ब्याला । शतयोजनतन परमबिशाला ॥
ऐसे एक तिनहिं धरि खाहीं । एकन के डर एक पराहीं ॥
प्रभुहिबिलोकहिं टरहिं न टारे । मन हर्षित सब भये सुखारे ॥
तिनकी ओट न देखिय बारी । मगनभये हरिरूप निहारी ॥
चलाकटक कछु बरणि नजाई । कोकहिसककपिदलबिपुलाई ॥
दो० सेतुबन्ध भइभीर अति कपि नभ पन्थ उड़ाहिं ।
अपरजलचरनिउपरचढ़िबिनुश्रमपारहिजाहिं ॥
यह कौतुक बिलोकि दोउभाई । बिहँसि चले कृपालु रघुराई ॥
सेन सहित उतरे रघुबीरा । कहि न जात कछुयूथपभीरा ॥
सिन्धु पार प्रभु डेरा कीन्हा । सकलकपिनकहँआयसुदीन्हा ॥
खाहुजाइ फल मूल सुहाये । सुनत भालुकपिजहँतहँधाये ॥
सबतरुफलेराम हितलागी । ऋतुअनऋतुहिकालगतित्यागी ॥
खाहिंमधुरफलबिटपहिलावहिं । लंकासन्मुखशिखरचलावहिं ॥
जहँकहुँ फिरतनिशाचरपावहिं । घेरिसकलमिलिनाचनचावहिं ॥
दशनन काटि नासिका काना । कहिप्रभुसुयशदेहिंतबजाना ॥
जिनकर नासाकान निपाता । तिन रावणहिं कहीसबबाता ॥
सुनत श्रवण बारिधि बंधाना । दशमुखबोलिउठाअकुलाना ॥
दो० बांधेउजलनिधि नीरनिधि जलधिसिन्धुबारीश ।
सत्यतोयनिधि पंकनिधि उदधिपयोधि नदीश ॥
ब्याकुलता निजसमुझिबहोरी । बिहँसिचलागृहकरिमतिभोरी ॥
मन्दोदरी सुना प्रभु आये । कौतुकही पाथोधि बँधाये ॥
करगहिपतिहिभवननिजआनी । बोली परम मनोहर बानी ॥
चरण नाइ शिर अंचलरोपा । सुनहुवचनपियपरिहरिकोपा ॥
नाथ बैर कीजे ताहीसों । बुधिबलजीतिसकियजाहीसों ॥

तुमहिं रघुपतिहिं अंतर कैसा । खल खद्योत दिवाकर जैसा ॥
अतिबल मधुकैटभ जिनमारा । महाबीर दिति सुत संहारा ॥
जेहि बलिबांधिसहस्रभुजमारा । सोइअवतरेउहरणमहिभारा ॥
तासु बिरोध न कीजिय नाथा । कालकर्म गुणजिनके हाथा ॥
दो० रामहिं सौंपहु जानकी नाइ कमल पद माथ ।
सुतकहँ राज्य देइ बन जाइ भजहु रघुनाथ ॥
नाथ दीनदयालु रघुराई । बाघौ सन्मुख गये न खाई ॥
चाहिय करन सो सबकरिबीते । तुमसुर असुर चराचर जीते ॥
वेदकहहिं असनीति दशानन । चौथेपनहिं जाइ नृप कानन ॥
तासु भजन कीजियतहँ भर्त्ता । जो कर्त्ता पालक संहर्त्ता ॥
सोइ रघुबीर प्रणत अनुरागी । भजहु नाथ ममतामदत्यागी ॥
मुनिवर यतनकरहिं जेहिलागी । भूपराज्यतजि होहिं बिरागी ॥
सोइ कोशलाधीश रघुराया । आये करन तोहिं पर दाया ॥
जो पियमानहु मोर सिखावन । होइहिसुयश तिहूंपुरपावन ॥
दो० असकहिलोचन बारिभरि गहिपद कंपितगात ।
नाथ भजहु रघुनाथपद ममअहिवात न जात ॥
तब रावण मयसुता उठाई । कहैलाग खल निजप्रभुताई ॥
सुनु तैंप्रिया मृषा भय माना । जगयोधा को मोहिं समाना ॥
बरुण कुबेर पवन यमकाला । भुजबलजितेसकलदिगपाला ॥
देव दनुज नर सब बश मोरे । कौन हेतु भय उपजा तोरे ॥
नानाबिधि कहि तेहिसमुझाई । सभा बहोरि बैठ सो जाई ॥
मन्दोदरी हृदय अस जाना । कालविवशउपजाअभिमाना ॥
सभा जाइ मंत्रिनसों बूझा । करियकवनबिधिरिपुसनजूझा ॥
कहहिंसचिवसुनुनिशिचरनाहा । बार बार प्रभु पूंछहु काहा ॥
कहहु कवनभय करियबिचारा । नर कपि भालु अहारहमारा ॥
दो० बचन सबनिके श्रवणसुनि कहप्रहस्त करजोरि ।
नीतिबिरोध नकरियप्रभु मंत्रिनमति अतिथोरि ॥

कहहिं सचिवसब ठकुरसुहाती । नाथन भलहोइहियहिभांती ॥
बारिधिलांघि एककपि आवा । तासुचरित मनमहँसबगावा ॥
क्षुधा न रही तुमहिं सब काहू । जारतनगर कसनिधरिखाहू ॥
सुनत नीक आगे दुखपावा । सचिवनअसमतप्रभुहिसुनावा ॥
जो बारीश बँधायउ हेला । उतरे कपिदलसहितसुबेला ॥
सो मनु मनुज खाब हम भाई । बचनकहहु सब गालफुलाई ॥
सुनिममबचनताततिआदर । जनिमनगुनहुमोहिंकरिकादर ॥
प्रियबाणी जे सुनहिं जे कहहीं । ऐसेजग निकाय नर अहहीं ॥
बचन परम हित सुनत कठोरे । कहहिं सुनहिं तेनर प्रभुथोरे ॥
प्रथम बसीठ पठव सुननीती । सीतहि देइ करियपुनिप्रीती ॥

दो० नारि पाइ फिरि जाहिं जो तौ न बढ़ाइय रार ।
नाहिं तो सन्मुखसमरमहँ नाथकरियहठिमार ॥

यहमत जो मानहु प्रभु मोरा । उभयप्रकार सुयशजगतोरा ॥
सुतसन कह दशकन्ध रिसाई । असमततोहिंशठकोनसिखाई ॥
अबहीं ते उर संशय होई । बेणुबंश सुत भयसि घमोई ॥
सुनिपितुगिरापरुषअति घोरा । चलाभवन कहिबचनकठोरा ॥
हित मत तोहिंन लागतकैसे । काल विवश कहँ भेषजजैसे ॥
संध्या समय जानि दशशीशा । भवनचलानिरखतभुजबीशा ॥
लंका शिखर उपर आगारा । अतिबिचित्रतहँहोयअखारा ॥
बैठ जाय तेहि मन्दिर रावन । लागे किन्नर गन्धव गावन ॥
बाजै ताल पखावज बीणा । नृत्यकरहिं अप्सरा प्रबीणा ॥

दो० सुनासीर शत सरिस सो सन्तत करे बिलास ।
परमप्रबलरिपुशीशपर तदपि न कछु मनत्रास ॥

इहां सुबेल शैल रघुबीरा । उतरे सेनसहितअतिभीरा ॥
शैल शृङ्ग इक सुन्दर देखी । अतिउतंगसमसुभगविशेखी ॥
तहँ तरु किशलयसुमनसुहाये । लक्ष्मणरचिनिजहाथडसाये ॥
तापर रुचिर मृदुल मृगछाला । तेहिआसनआसीन कृपाला ॥

प्रभुकृत शीश कपीश उछंगा । बामदहिनदिशिचापनिषंगा ॥
दुहुं करकमल सुधारत बाना । कह लंकेश मंत्र लगिकाना ॥
बड़ भागी अंगद हनुमाना । चरणकमलचापतविधिनाना ॥
प्रभु पाछे लच्मण बीरासन । कटि निषंगकरबाणशरासन ॥

दो॰ इहि बिधि करुणाशीलगुण धाम राम आसीन ।
धन्यसो नर यहि ध्यानरत रहतसदा लवलीन ॥
पूरब दिशा बिलोकि प्रभु देखा उदित मयंक ।
कह्योसबहिंदेखहुशशिहिमृगपतिसरिसअशंक ॥

पूरबदिशि गिरिगुहा निवासी । परमप्रताप तेज बल रासी ॥
मत्त नाग तम कुम्भ बिदारी । शशि केहरी गगनबनचारी ॥
बिथुरे नभ मुक्ताहल तारा । निशि सुन्दरी केर शृंगारा ॥
कह प्रभु शशि महँ मेचकताई । कहहुकहानिजनिजमतिभाई ॥
कह सुग्रीव सुनहु रघुराया । शशिमहँप्रकट भूमिकीछाया ॥
मारेहु राहु शशिहि कहकोई । उर महँ परीश्यामता सोई ॥
कोउकहजबबिधिरतिमुखकीन्हा । सारभागशशिकरहरिलीन्हा ॥
छिद्र सो प्रकट इन्दुउरमाहीं । तेहिमगदेखियनभपरिछाहीं ॥
कह प्रभु गरल बन्धुशशिकेरा । अतिप्रीतमउरदीन्ह बसेरा ॥
बिष संयुतकर निकर पसारी । जारत बिरहवंत नर नारी ॥

दो॰ कहमारुतसुतसुनहु प्रभु शशितुम्हार प्रियदास ।
तव मूरति तेहि उरवसत सोइश्यामता भास ॥
पवनतनय के बचनसुनि बिहँसे राम सुजान ।
दक्षिण दिशा बिलोकि पुनि बोले कृपानिधान ॥

देखु बिभीषण दक्षिण आसा । घन घमण्डदामिनीबिलासा ॥
मधुर मधुर गर्जत घन घोरा । होइवृष्टि जनु उपल कठोरा ॥
कहत बिभीषण सुनहु कृपाला । होइ न तड़ितनबारिदमाला ॥
लंका शिखर उपर आगारा । तहँ दशकन्धर केर अखारा ॥
छत्र मेघ डम्बर शिरधारी । सोजनु जलदघटाअतिकारी ॥

मन्दोदरी श्रवण ताटंका । सोइप्रभु जनुदामिनीदमंका ॥
बाजहिं ताल मृदंग अनूपा । सोइ रवसरस सुनहुसुरभूपा ॥
प्रभुमुसकान देखिअभिमाना । चाप चढ़ाइ बाण सन्धाना ॥
दो० छत्र मुकुट ताटंक सब हते एकही बान ।
सबके देखत महिगिरे मर्म न काहू जान ॥
यह कौतुककरि रामशर प्रविश्यो आइनिषंग ।
रावणसभा सशंक सब देखि महारस भंग ।
कम्प न भूमि न मरुतविशेखा । अस्त्रशस्त्रकोउनयन न देखा ॥
शोचहिं सब निजहृदयबिचारी । अशकुनभयउभयंकर भारी ॥
रावण दीख सभा भय पाई । बिहँसिबचनकह युक्तिबनाई ॥
शिरौ गिरेसन्तत शुभजाही । मुकुटगिरे कसअशकुनताही ॥
शयन करहु निजनिजगृहजाई । गवनेभवन सकल शिरनाई ॥
मन्दोदरी शोच उरबसेऊ । जबते श्रवणफूलमहिखसेऊ ॥
सजल नयन कह युगकरजोरी । सुनहुप्राणपति विनतीमोरी ॥
राम विरोध कन्त परिहरहू । जानिमनुज जनिहठउरधरहू ॥
दो० बिश्व रूप रघुबंश मणि करहु बचन विश्वास ।
लोक कल्पना वेद कह अंग अंग प्रति जास ॥
पद पाताल शीश अज धामा । अपर लोक अंगनबिश्रामा ॥
भृकुटि विलास भयंकर काला । नयनदिवाकरकचघनमाला ॥
जासु घ्राण अश्विनीकुमारा ।निशिअरुदिवसनिमेषअपारा॥
श्रवण दिशा दश वेद बखानी ।मारुतश्वासनिगमनिजबानी॥
अधर लोभयम दशन कराला । माया हास बाहुदिगपाला ॥
आनन अनल अम्बुपतिजीहा । उतपतिपालनप्रलयसमीहा ॥
रोमावली अष्ट दश भारा । अस्थि शैलसरितानसजारा ॥
उदर उदधि अधगो कुयातना । जगमयप्रभुकीबहुतकल्पना ॥
दो० अहंकार शिव बुद्धिअज मनशशि चित्तमहान ।
मनुजवास चर अचरमय रूप राशि भगवान ।

असबिचारि सुनु प्राणपति प्रभु सन बैरबिहाइ।
प्रीति करहु रघुबीर पद मम अहिवात न जाइ॥
बिहँसा नारि बचन सुनि काना। अहो मोहमहिमा बलवाना॥
नारि स्वभाव सत्य कवि कहईं। अवगुण आठ सदा उररहईं॥
साहस अनृत चपलता माया। भय अबिवेक अशौच अदाया॥
रिपुकर रूप सकल तैं गावा। अतिबिशालभयमोहिंसुनावा॥
सो सब प्रिया सहज बश मोरे। समुझि परा प्रभाव अब तोरे॥
जानेउँ प्रिया तोरि चतुराई। यहि मिसकहेउ मोरिप्रभुताई॥
तव बतकहीगूढ़मृगलोचनि। समुझतसुखदसुनतभयमोचनि॥
मन्दोदरि मनमहँ यह ठयऊ। पियहिकालबशमातिभ्रमभयऊ॥
दो० बहुबिधि जल्पेसिसकल निशि प्रातभये दशकन्ध।
सहज अशंक सो लंकपति सभा गयो मद अन्ध॥
सो० फूलै फलै न बेत यदपि सुधा बर्षहिं जलद।
मूरुखहृदय न चेत जो गुरु मिलहिंबिरंचिसम॥

क्षेपक॥

दो० मंत्रिन सहित दशानन चढ़ेउ धवरहरजाय।
सारण कह तब राजसन देखहु कपि समुदाय॥
थे जो सिंहनाद किलकरहीं। सप्तताल उन्नत संचरहीं॥
सहस कोटिअतुलित बलवाना। इनके सँगबानर परिमाना॥
रण अजीत ये सहज अशंका। नाद सुने काँपै गढ़ लंका॥
नभ निरखहु इनके लंगूरे। जनु ऋतुपावसयुग धनुपूरे॥
बिशकर्मा के सुत गुणखानी। इन परसे पयशिल उतरानी॥
बसहिं ताम्रगिरि कन्दर माहीं। गोदावरी बिमल जल पाहीं॥
अतिबल आगे धावहिं बीरा। इन पर कृपाकरहिंरघुबीरा॥
करहिं यमहु कर संगरढीला। कज्जलबरण नामनलनीला॥
दो० पदुम अठारह कपि कटक चल इनकी भुजछाहँ।
निजकर सुरभि सुमन लै रघुपति पूजी बाहँ॥

यहजोआवत अचल समाना। चौदह ताड़ ऊंच परिमाना॥
बास पुलिन्दाके तट करई। अम्बुदनिकरनिरखिकरधरई॥
रक्तकमल दलसम सब देहा। जनु बिकसेउ संध्याकरमेहा॥
हतै मेदिनी पूंछ भवांई। लंका सौंह चितव जनु खाई॥
तारासुवन बालि को जायो। अतिजुझाररघुपतिमनभायो॥
हृदय गगन इहिके प्रभु भानू। पंचपदुम कपि निकरपयानू॥
करे बज्र बासव कर भंगा। उदयाचल कहँ लेइ उछंगा॥
परम चतुरसेनप इहि लागी। रघुपतिकृपा परमबड़भागी॥
दो० पांव धरा धरि चापै पन्नग होइ अकाज।
सेन अग्र सर देखहु यह अंगद युवराज॥
यह जो श्वेत बरण तनु रेखा। मनहुंरजतागिरिशृंगविशेखा॥
दीर्घकेश दारुण भुज दण्डा। चपलचलतबलबुद्धिप्रचण्डा॥
बास करै जलनिधि के तीरा। पान करै गोमती सुनीरा॥
नृप सुग्रीव केर अधिकारी। सबल ब्यूह यह रचैसँवारी॥
जनमत चन्द्रहियसन उड़ाना। इहिकर पुरुषारथ जगजाना॥
निरखिगगनराकाशशिसोहा। शिशुअजानतेहिलगिमनमोहा॥
धरणीधसकि धरनजब उड़ेऊ। सत्तरि योजनते पुनिफिरेऊ॥
दो० कोटि पंचशत मर्कट रहइँ सर्बदा साथ।
कालहुते रण लरिसकैं कुमुदनाम कपिनाथ॥
ये देखहु जे चहुं दिशिघुमड़े। मनहुं लंक सावन घनउमड़े॥
आगू पीछू दशादिशि धावहिं। शिलाशृङ्गतरु तोरतआवहिं॥
सहस नाग बलसबहिसमाना। सप्त पदुम इनकर परिमाना॥
काशी पुरी बास इन केरी। समर कतहुं जिनपीठिनफेरी॥
तीक्ष्ण दन्त नखायुध धारी। द्वन्द्व युद्ध ये जानहिं भारी॥
धूमकेतु यूथप इन केरा। लंका निकट कीन्ह जेहिडेरा॥
इहिकर ज्येठ बन्धु जमवन्ता। तेहिकेबलकर पावकोअन्ता॥
देव दनुज को जूझै ताही। धरा होइ कर कंदुक जाही॥

बसै अशंक नर्मदा तीरा । अग्निसमान अभेदशरीरा ॥
दो० सचिव सुकण्ठराज कर रघुवर कर प्रियदास ।
सोजड़मन्द जो याहिरण चहजीतन की आस ॥
अब देखहु यह यूथ अपारा । पीतवरण होइ गयउ पहारा ॥
बाल अरुण मरीचि जसफूटी । निशिचरनिकरतमीचहछूटी ॥
चौबिस अर्बुद इनकर यूहा । सहस बुन्द समकोटिसमूहा ॥
शिला शैल जे आगे परहीं । पांयन मर्दि गर्दसम करहीं ॥
कंचन गिरि कन्दर के बासी । इनकर यूथ नाथ अबिनासी ॥
अतिबल बासवकर हितकारी । सखा सुकंठ केर सुखकारी ॥
पान करै गंगा कर नीरा । पर्वत शृङ्ग समान शरीरा ॥
छिन छिन सिंहनाद जो होई । गर्जत आवतहै कपिसोई ॥
दो० यश तिहुँमंडलगलितगज बलकरनाहिनअन्त ।
यह कपि राजा केशरी सुवन जासु हनुमन्त ॥
उत्तर दिशि देखहु रजधानी । जनुदुकाललगिशलभउड़ानी॥
मरकट निकरविकल बलटूटे । आवत उदधि कूल जनु छूटे ॥
इहि दल यूथ नाथ जो अहई । अति बलवन्त राजसँगरहई ॥
कपिके रूप अनल अबिनासी । ये द्वौ पारिपात्रके बासी ॥
अतिसुन्दर अरु समर बिपच्छा । महाबली द्वौ गवय गवच्छा ॥
ये द्वौ गर्जत अति रणधीरा । पीवहिं तुंगभद्र कर नीरा ॥
सत्तरि सहस नागबल जाही । इन महँ एक कहौं मैं ताही ॥
अपर बली गँधमादन नामा । रणअजेय पुनिसबगुणधामा॥
दो० बासव बिबुध वृन्द महँ तेजन महँ जस भानु ।
पनसनाम यह बानर अतिबल नीतिनिधानु ॥
यह जो कुमुदपत्र सम देहा । जस कैलास शरद कर मेहा ॥
लोचन मधु पिंगल अतिलोने । काम रूप चितवत चहुंकोने ॥
लङ्का सौंह लँगूर फिराई । गर्जत प्रलय मेघकी नाई ॥
सुरपति साथ युद्धकहँ गयऊ । तबते काम रूप यह भयऊ ॥

मघवा इहि सन कीन्हमिताई । करै सदा यह देव सहाई ॥
सहसकोटि कपि इहिके संगा । राते पीत श्वेत बहु रंगा ॥
बचन मृषा ममप्रभु यह नाहीं । अपरबालि जानहु मनमाहीं ॥
दुरदुर शैल सदन इहिकेरा । मनबच कर्म्म रामकर चेरा ॥
॥ दो० गिरिवर लांघत आवत चलत उड़ावत रेणु ।
॥ तरणि तेज इन रूंधेउ तारातनय सुषेणु ॥
यहकपिलसतमनहुँ गिरिगेरू । दिनमुखछबिजसलहतसुमेरू ॥
सोइकपिप्रथमलंक जेहि जारी । प्रभुकेहिलगिआवतइहिबारी ॥
अंजनि गर्भ जन्मजब भयऊ । क्षुधितजननिसनआरतठयऊ ॥
तेहँकह सुपकअरुणफल खाहू । सुनतचितवइतउतचितचाहू ॥
बाल अरुणलखिगगनउड़ाना । ग्रसेसितरणिबासवतबजाना ॥
मारेउ बज्र चिबुक भइ टेढ़ी । कोपि पवन समीर समबेढ़ी ॥
देव बिकलहोइअस्तुतिकीन्हा । कुलिशहोउतनुअसबरदीन्हा ॥
बिद्या पढ़त भानुके पाहीं । उलटी गतिरबि आगे जाहीं ॥
बारिधि लांघेउ गोपद जैसे । यहिकपीश सन जूम्भब कैसे ॥
॥ दो० अंबक पीत बालरबि बदन तेज अति राज ।
॥ पवनतेवेग अधिकजनु अनलनितंबसुभ्राज ॥
अतसी कुसुम वरण तनुरेखा । पुरुष पुराण धरे नर बेखा ॥
मत्त गजेन्द्र शुण्ड भुजदण्डा । धनुषबाण असिधरेप्रचण्डा ॥
उर बिशाल अतिउन्नतकंधर । कम्बु कंठ रेखा प्रसन्न बर ॥
मुख छबिकी उपमा कबि जोहै । शशि सरोज समकहै न सोहै ॥
दशन पांति की कांति कहैको । ललकतमन पटतरियलहैको ॥
देखत अधरनकी अरुणाई । बिम्बाफल बन्धूक लजाई ॥
शुकतुंडहि नासिका लजावै । थके सुकबि नहिंपटतरआवै ॥
शीशजटाके मुकुट बनाये । भालबिशालतिलकअतिभाये ॥
दक्षिण दिशिलक्ष्मणबलबीरा । रामबाहुसम अति रणधीरा ॥
॥ दो० बाम भाग बिभीषण शिर अभिषेका राज ।

बीजमंत्र सब जानहिं अक्सर करहिं सुकाज ॥
अब देखहु यह सेन सुहाई । भादों मेघ घटा जनु छाई ॥
कन्या एक ब्रह्म उपजाई । नयन भूरि अरुरूपलुनाई ॥
बालभाव दिनकर बल दीन्हा । ऋतुजानीबासवरतिकीन्हा ॥
जातक जमल बीर द्वौ जाये । देव अंश बानर तनु पाये ॥
किष्किन्धापर इनकर थाना । देव सरिस मधुबन उद्याना ॥
ऋष्यमूक इनकर बिश्रामा । चातुर्मास बसे जहँ रामा ॥
बाली ज्येष्ठ राम रण मारा । यहिकहँराजतिलकअनुसारा ॥
तारा तासु भई पटरानी । जेहिकरसुतअंगदअतिज्ञानी ॥
सहस शंकुकर अरबुद एका । अरबुदसहसकिबिन्दुबिबेका ॥
सहसबिन्दुगणकन गणिमाना । महापद्म तेहिकर परिमाना ॥
ऐसे पद्म अठारह साजा । बिग्रह बढ़ेउ रामके काजा ॥
बीर बेष अरु नयन बिशाला । कम्बु कण्ठमोतिनकीमाला ॥

दो० हस्ती साठि सहस्र बल सदा धर्म्मकी सींव ।
श्वेत छत्र शिर शोभित यह राजा सुग्रीव ॥
इहिबिधि सकल दिखाये सारन कपिदलयूह ।
गनै न रावण कालवश अतिशय गर्व्वसमूह ॥

इति ॥

इहां प्रात जागे रघुराई । पूंछा मत सब सचिवबुलाई ॥
कहहु बेगि का करिय उपाई । जामवन्त कह पद शिर नाई ॥
सुनु सर्बज्ञ सकल उर बासी । सर्ब्बरूप सबरहित उदासी ॥
मंत्र कहउँ निजमतिअनुसारा । दूत पठाइय बालिकुमारा ॥
नीक मंत्र सबके मन माना । अंगदसन कह कृपानिधाना ॥
बालितनय बुधिबल गुणधामा । लंका जाहु तात मम कामा ॥
बहुत बुझाइ तुमहिं का कहऊं । परमचतुर मैं जानत अहऊं ॥
काज हमार तासु हित होई । रिपुसन करेहु बतकहीसोई ॥

सो० प्रभु आज्ञा धरिशीश चरण बन्दि अंगद कहेउ ।

सोइ गुणसागर ईश राम कृपा जापर कराहिं ॥
स्वयंसिद्ध सब काज नाथ मोहिं आदरदयउ ।
असबिचारि युवराज तनुपुलकितहर्षित भयउ ॥
बन्दिचरण उरधरि प्रभुताई । अंगदचल्यो सबहिंशिरनाई ॥
प्रभु प्रताप उर सहजअशंका । रण बांकुरा बालिसुत बंका ॥
पुर पैठत रावण कर बेटा । खेलतरहा सो होगइ भेटा ॥
बातहिं बात कर्ष बढ़ि आई । युगलअतुलबलपुनितरुणाई ॥
तेहि अंगद कहँ लात उठाई । गहि पद पटकेउ भूमिभ्रमाई ॥
निशिचरनिकर देखि भटभारी । जहँतहँचले न सकहिंपुकारी ॥
एक एकसन मर्म न कहहीं । समुझितासुबलचुपहोइरहहीं ॥
भयउ कोलाहलनगर मझारी । आवा कपि लंका जेहँ जारी ॥
अबधौं काह करिहि करतारा । अतिसभीतसबकरहिंविचारा ॥
बिनु पूंछे मगु देहिं बताई । जेहिबिलोकिसोइजाहिसुखाई ॥
दो० गयो सभा दरबार रिपु सुमिरि राम पद कंज ।
सिंह ठवनि इतउत चितै धीर बीर बल पुंज ॥
तुरत निशाचर एक पठावा । समाचार रावणहिं सुनावा ॥
सुनत बचन बोलेउदशशीशा । आनहु बोलिकहांकर कीशा ॥
आयसु पाइ दूत बहु धाये । कपि कुंजरहिं बोलिलै आये ॥
अंगद दीख दशानन बैसा । सहितप्राणकज्जलगिरिजैसा ॥
भुजा बिटपशिर शृङ्ग समाना । रोमावली लता तरु नाना ॥
मुख नासिका नयन अरुकाना । गिरि कन्दराखोह अनुमाना ॥
गयउ सभा मन नेकुनमुरा । बालितनय अतिबलबांकुरा ॥
उठी सभासब कपिकहँ देखी । रावणउर भा क्रोध बिशेखी ॥
दो० यथा मत्त गजयूथ महँ पंचानन चलि जाय ।
रामप्रताप सँभारिउर बैठसभहि शिरनाय ॥
कह दशकन्ध कवन तैं बन्दर । मैं रघुबीर दूत दशकन्धर ॥
मम जनकहितोहिंरही मिताई । तव हितकारण आयउँ भाई ॥

उत्तम कुल पुलस्त्य करनाती। शिव विरंचि पूजेहुबहुभांती॥
वर पायउ कीन्हेउसब काजा। जीतेहु लोकपाल सुरराजा॥
नृप अभिमान मोहबशाकिम्बा। हरि आनेहुसीता जगदम्बा॥
अब शुभकहा करहुतुम मोरा। सब अपराधक्षमहिंप्रभुतोरा॥
दशन गहहु तृण कंठ कुठारी। पुरजनसंग सहितनिजनारी॥
सादर जनकसुता करि आगे। इहिबिधिचलहुसकलभयत्यागे॥
दो० प्रणतपाल रघुबंशमणि त्राहित्राहि अबमोहिं।
सुनताहिं आरतबचन प्रभु अभयकराहिंगे तोहिं॥
रेकपि पोच बोलु संभारी। मूढ़ न जानसि मोहिं सुरारी॥
कहु निजनाम जनककर भाई। केहि नाते मानिये मिताई॥
अंगद नाम बालिकर बेटा। तोसों कबहुं भई होइ भेटा॥
अंगद बचनसुनत सकुचाना। रहा बालि बानर मैं जाना॥
अंगद तुही बालिकर बालक। उपजेउबंशअनलकुलघालक॥
गर्भ न गयउ बृथा तुम जाये। निजमुख तापस दूत कहाये॥
अबकहुकुशलबालिकहँ अहई। बिहँसिबचनअंगदअसकहई॥
दिन दशगये बालिपहँ जाई। पूंछेहु कुशल सखा उर लाई॥
राम बिरोध कुशल जस होई। सोसब तुमहिं सुनाइहिसोई॥
सुनु शठ भेद होइ मन ताके। श्री रघुबीर हृदय नहिं जाके॥
दो० हम कुलघालक सत्यतुम कुलपालक दशशीश।
अन्धउबधिर न कहहिंअसश्रवण नयनतवबीश॥
शिवबिरंचि सुर मुनि समुदाई। चाहत जासु चरण सेवकाई॥
तासु दूत होइ हमकुल बोरा। ऐसीमतिउर बिहरु न तोरा॥
सुनिकठोर बाणी कपि केरी। कहत दशानन नयन तरेरी॥
खलतवबचनकठिन मैं सहऊँ। नीति धर्म सबजानत अहऊँ॥
कह कपि धर्मशीलता तोरी। हमहुँ सुनीकृत परतियचोरी॥
देखेउ नयन दूत रखवारी। बूड़ि न मरेहु धर्म ब्रतधारी॥
नाककान बिनभगिनि निहारी। क्षमा कीन तुम धर्म बिचारी॥

धर्मशीलता तव जग जागी। पावा दरश हमहुँ बड़भागी॥
दो० जनिजल्पसि जड़जन्तु कपि शठबिलोकुममबाहु।
लोकपालबल बिपुलशशि ग्रसन हेतु जिमिराहु॥
पुनिनभसर ममकर निकर कर कमलनपर बास।
शोभित भयो मरालइव शम्भु सहित कैलास॥
तुम्हरे कटकमाहिंसुनु अंगद। मोसनभिरहिकवनयोधाबद॥
तवप्रभु नारिबिरह बलहीना। अनुजतासुदुखदुखितमलीना॥
तुम सुग्रीव कूलद्रुम दोऊ। बन्धु हमार भीरु अतिसोऊ॥
जामवन्त मंत्री अति बूढ़ा। सो किमिहोइ समर आरूढ़ा॥
शिल्पकर्म जानत नलनीला। हैकपि एक महाबलशीला॥
आवा प्रथम नगर जेहि जारा। सुनिहँसिबोलेउबालिकुमारा॥
सत्य वचनकहु निशिचरनाहा। सांचहु कीश कीन्हपुरदाहा॥
रावण नगर अल्प कपि दहई। कोअस झूंठ कहैको सुनई॥
जो अतिसुभट सराहेहु रावन। सो सुग्रीव केर लघुधावन॥
चलै बहुत सो बीर न होई। पठवा खबरिलेन हम सोई॥
दो० अवजाना पुरदहेउ कपि बिनु प्रभुआयसुपाइ।
गयउ न फिरिनिजनाथपहँ तेहिभयरहेउलुकाइ॥
सत्यकहसि दशकण्ठलैं मोहिं न सुनिकछुकोह।
कोउ न हमरे कटकअस तुमसनलरत जोसोह॥
प्रीति बिरोध समानसन करियनीति असआहि।
जो मृगपति बध मेढुकहि भलोकहै कोताहि॥
यद्यपि लघुता रामकहँ तोहिं बधे बड़ दोष।
तदपिकठिन दशकण्ठसुनु क्षत्रिजातिकररोष॥
हँसिबोलेउ दशमौलितब कपिकर बड़गुणएक।
जो प्रतिपालै तासु हित करै उपाय अनेक॥
धन्य कीश जोनिज प्रभुकाजा। जहँतहँनाचहिंपरिहरिलाजा॥
नाचि कूदि करिलोग रिझाई। पतिहित करतकर्म निपुणाई॥

अंगद स्वामि भक्त तव जाती । प्रभुगुणकसनकहसिइहिभाँती॥
मैं गुणगाहक परम सुजाना । तवकटुबचन करौं नहिंकाना ॥
कहकपि तव गुणगाहकताई । सत्य पवनसुतमोहिं सुनाई ॥
बन विध्वंसिसुतबधिपुरजारा । तदपिनतेइकृतकछुअपकारा॥
सोइबिचारि तव प्रकृति सुहाई । दशकन्धर मैं कीन्ह ढिठाई ॥
देखेउँआइ जो कछु कपि भाषा । तुम्हरे लाजन रोष न माषा ॥

दो० बक्र उक्ति धनु बचन शर हृदय दह्योरिपुकीश ।
प्रतिउत्तर सनसिनमनहुँ काटत भट दशशीश ॥

जो असमतिपितुखायहुकीशा ।कहिअसबचनहँसादशशीशा॥
पितहि खाइखातेउँ अब तोहीं । अबहींसमुझिपराकछुमोहीं ॥
बालि बिमलयशभाजन जानी । हतौंनतोहिंअधमअभिमानी॥
कहु रावण रावण जग केते । मैंनिज श्रवण सुने सुनतेते ॥
बलि जीतनधकगयउ पताला । राखा बांधिशिशुनहयशाला ॥
खेलहिं बालक मारहिं जाई । दयालागिबालिदीन्ह छुड़ाई ॥
एक बहोरि सहसभुज देखा । धाइधरा जनु जन्तु बिशेखा ॥
कौतुक लागि भवन लै आवा । सोपुलस्त्य मुनिजाइछुड़ावा ॥

दो० एक कहत मोहिंसकुचअति रहाबालिकीकांख ।
तिनमहँ रावण कवनतें सत्यकहहुतजिमाख ॥

सुन शठ सोइरावण बलशीला । हरगिरिजानुजासुभुजलीला॥
जानु उमापति जासु शुराई । पूजे जेहि शिर सुमन चढ़ाई ॥
शिरसरोजनिज करन्हउतारी । पूजे अमित बार त्रिपुरारी ॥
भुजबिक्रम जानहिं दिगपाला । शठअजहूँजिनके उरशाला ॥
जानहिं दिग्गज उरकठिनाई । जबजबभिरेउँजाइबरिआई ॥
जिनके दशन कराल न फूटे । उर लागतमूलक इव टूटे ॥
जासुचलत डोलतइमिधरणी ।चढ़तमत्तगजजिमिलघुतरणी॥
सोइरावण जगबिदितप्रतापी । सुनेन श्रवणअलीकप्रलापी ॥

दो० तेहिरावण कहँ लघु कहसि नरकरकरसि बखान ।

धर्मशीलता तव जग जागी। पावा दरश हमहुँ बड़भागी॥
दो० जनिजल्पसि जड़जन्तु कपि शठबिलोकुममबाहु।
लोकपालबल बिपुलशशि ग्रसन हेतु जिमिराहु॥
पुनिनभसर ममकर निकर कर कमलनपर बास।
शोभित भयो मरालइव शम्भु सहित कैलास॥
तुम्हरे कटकमाहिंसुनु अंगद। मोसनभिरहिकवनयोधाबद॥
तवप्रभु नारिबिरह बलहीना। अनुजतासुदुखदुखितमलीना॥
तुम सुग्रीव कूलद्रुम दोऊ। बन्धु हमार भीरु अतिसोऊ॥
जामवन्त मंत्री अति बूढ़ा। सो किमिहोइ समर आरूढ़ा॥
शिल्पकर्म जानत नलनीला। हैकपि एक महाबलशीला॥
आवा प्रथम नगर जेहि जारा। सुनिहँसिबोलेउबालिकुमारा॥
सत्य वचनकह निशिचरनाहा। सांचहु कीश कीन्हपुरदाहा॥
रावण नगर अल्प कपि दहई। कोअस झूंठ कहैको सुनई॥
जो अतिसुभट सराहेहु रावन। सो सुग्रीव केर लघुधावन॥
चलै बहुत सो बीर न होई। पठवा खबरिलेन हम सोई॥
दो० अवजाना पुरदहेउ कपि बिनु प्रभुआयसुपाइ।
गयउ न फिरिनिजनाथपहँ तेहिभयरहेउलुकाइ॥
सत्यकहसि दशकण्ठलै मोहिं न सुनिकछुकोह।
कोउ न हमरे कटकअस तुमसनलरत जोसोह॥
प्रीति बिरोधसमानसन करियनीति असआहि।
जो मृगपति बध मेढुकहि भलोकहै कोताहि॥
यद्यपि लघुता रामकहँ तोहिं बधे बड़ दोष।
तदपिकठिन दशकण्ठसुनु क्षत्रिजातिकररोष॥
हँसिबोलेउ दशमौलितब कपिकर बड़गुणएक।
जो प्रतिपालै तासु हित करै उपाय अनेक॥
धन्य कीश जोनिज प्रभुकाजा। जहँतहँनाचहिंपरिहरिलाजा॥
नाचि कूदि करिलोग रिझाई। पतिहित करतकर्म निपुणाई॥

अंगद स्वामि भक्त तव जाती। प्रभुगुणकसनकहसिइहिभाँती॥
मैं गुणगाहक परम सुजाना। तवकटुबचन करौं नहिंकाना॥
कहकपि तव गुणगाहकताई। सत्य पवनसुतमोहिं सुनाई॥
बन विध्वंसिसुतबधिपुरजारा। तदपिनतेइकृतकछुअपकारा॥
सोइबिचारि तव प्रकृति सुहाई। दशकन्धर मैं कीन्ह ढिठाई॥
देखेउँआइ जो कछु कपि भाषा। तुम्हरे लाजन रोष न माषा॥
दो० बक्र उक्ति धनु बचन शर हृदय दह्योरिपुकीश।
प्रति उत्तर सनसिनमनहुँ काटत भट दशशीश॥
जो असमतिपितुखायहुकीशा। कहिअसबचनहँसादशशीशा॥
पितहि खाइखातेउँ अब तोहीं। अबहींसमुझिपराकछुमोहीं॥
बालि बिमलयशभाजन जानी। हतौंनतोहिंअधमअभिमानी॥
कहु रावण रावण जग केते। मैंनिज श्रवण सुने सुनतेते॥
बलि जीतनथकगयउ पताला। राखा बांधिशिशुनहयशाला॥
खेलहिं बालक मारहिं जाई। दयालागिबलिदीन्ह छुड़ाई॥
एक बहोरि सहसभुज देखा। धाइधरा जनु जन्तु बिशेखा॥
कौतुक लागि भवन लै आवा। सोपुलस्त्य मुनिजाइछुड़ावा॥
दो० एक कहत मोहिंसकुचअति रहाबालिकीकांख।
तिनमहँ रावण कवनतैं सत्यकहहुतजिमाख॥
सुन शठ सोइरावण बलशीला। हरगिरिजानुजासुभुजलीला॥
जानु उमापति जासु शुराई। पूजे जेहि शिर सुमन चढ़ाई॥
शिरसरोजनिज करन्हउतारी। पूजे अमित बार त्रिपुरारी॥
भुजबिक्रम जानहिं दिगपाला। शठअजहूँजिनके उरशाला॥
जानहिं दिग्गज उरकठिनाई। जबजबभिरेउँजाइबरिआई॥
जिनके दशन कराल न फूटे। उर लागतमूलक इव टूटे॥
जासुचलत डोलतइमिधरणी। चढ़तमत्तगजजिमिलघुतरणी॥
सोइरावण जगबिदितप्रतापी। सुनेन श्रवणअलीकप्रलापी॥
दो० तेहिरावण कहँ लघु कहसि नरकरकरसि बखान।

रेकपिबर्बर खर्ब खल अब जाना तवज्ञान ।
सुनि अंगद सकोपकहबानी । बोलसँभारिअधमअभिमानी ॥
सहसबाहु भुजगहन अपारा । दहनअनल समजासुकुठारा ॥
जासु परशु सागर खरधारा । बूड़े नृप अगणित बहुबारा ॥
तासु गर्व जेहि देखत भागा । सो नर किमिदशकंठअभागा ॥
राम मनुज कसरे शठ बंगा । धन्वी काम नदी पुनिगंगा ॥
पशु सुरधेनु कल्पतरु रूखा । अन्नदान पुनि रस पीयूखा ॥
बैनतेय खग अहि सहसानन । चिन्तामणिकीउपलदशानन ॥
सुन मतिमन्द लोक बैकुण्ठा । लाभकिरघुपतिभक्तिअकुण्ठा॥
दो० सेनसहित तव मानमथि बनउजारि पुरजारि ।
कसरे शठ हनुमानकपि गयउजो तवसुतमारि ॥
सुन रावण परिहरि चतुराई । भजसि न कृपासिन्धु रघुराई ॥
जो खल भयसि रामकर द्रोही । ब्रह्म रुद्रसक राखि न तोही ॥
मूढ़मृषा जनि मारसि गाला । राम बैर होइहि असहाला ॥
तव शिरनिकर कपिनके आगे । परिहैं धरणि राम शरलागे ॥
ते तव शिर कन्दुकइव नाना । खेलहिं भालु कीश चौगाना ॥
जबहिंसमर कोपहिं रघुनायक । छूटहिंअतिकरालबहुशायक ॥
तबकिचलिहिअसगालतुम्हारा। अस बिचारिभजुरामउदारा ॥
सुनत बचन रावण फिर जरा । बरत अनलमहँजनुघृतपरा ॥
दो० कुम्भकर्ण सम बन्धु मम सुत प्रसिद्धशक्रारि ।
मोर पराक्रम सुनेसि नहिं जितेउँचराचरझारि ॥
शठ शाखामृग जोरि सहाई । बांधा सिन्धु इहै प्रभुताई ॥
लांघहिं खग अनेक बारीशा । शूर नहोहिं सुनहु जड़कीशा ॥
मम भुज सागर बल जल पूरा । जहँ बूड़े सुर नर बर शूरा ॥
बीस पयोधि अगाध अपारा । को असबीर जो पावहिपारा ॥
दिगपालन मैं नीर भरावा । भूपसुयशखल मोहिंसुनावा ॥
जो पै समर सुभट तव नाथा ।पुनिपुनिकहसिजासुगुणगाथा॥

तो बसीठ पठवा केहि काजा । रिपुसनप्रीतिकरतनहिंलाजा॥
हरगिरिमथन निरखिमम बाहू ।पुनिशठकपिनिजस्वामिसराहू॥
दो० शूर कवन रावण सरिस निजकर काटेशीश ।
हुतेउँ अनल महँवारबहु हर्षितसाखिगिरीश ॥
जरतबिलोकेउँ जबहिं कपाला । बिधिकेलिखेअंकनिजभाला ॥
नर के कर आपन बध बांची । हँसेउँजानिबिधिगिराअसांची॥
सो मनसमुझि त्रास नहिं मोरे । लिखाबिरंचिजरठ मतिभोरे ॥
आन बीर को शठ मम आगे ।पुनिपुनिकहसिलाजपरित्यागे॥
कह अंगद सलज्ज जगमाहीं । रावणतोहिंसमानकोउनाहीं ॥
लाजवन्त तव सहजसुभाऊ । निजगुणनिजमुखकहसिनकाऊ॥
शिर अरु शैल कथा चितरही । ताते बार बीस तैं कही ॥
सो भुजबल राखेउ उरघाली । जितेउनसहसबाहुबलिबाली॥
सुन मतिमन्द देह अब पूरा । काटे शीश न होइय शूरा ॥
बाजीगर कहँ कहिय न बीरा । काटै निजकर सकलशरीरा ॥
दो० जरहिं पतंग बिमोहवश भार बहहिं खर बृन्द ।
ते नहिं शूर कहावहीं समुझि देखु मति मन्द ॥
अबजनि बतबढ़ावखल करही । सुनममबचन मानपरिहरही ॥
दशमुख मैं न बसीठी आयउ । अस बिचारिरघुबीरपठायउ ॥
बार बार इमि कहेउ कृपाला । नहिंगजारियशबधे शृगाला ॥
मनमहँ समुझिबचन प्रभुकेरे । सहेउँ कठोर बचन शठतेरे ॥
नाहित करि मुख भंजन तोरा । लै जातेउँ सीतहि बरजोरा ॥
जानेउँ तव बल अधम सुरारी । सूने हरि आनी पर नारी ॥
तैं निशिचरपति गर्व बहूता । मैं रघुपतिसेवक कर दूता ॥
जोन राम अपमानहिं डरऊँ । तव देखतअस कौतुककरऊँ ॥
दो० तोहिंपटकि महि सेनहति चौपट करि तवगाउँ ।
मन्दोदरी समेत शठ जनकसुतहि लै जाउँ ॥
जो असकरउँ न तदपि बड़ाई । मुये बधे कछु नहिं मनुसाई ॥

कौल काम बश कृपण बिमूढ़ा । अतिदरिद्रअयशी अतिबूढ़ा॥
सदा रोगबश सन्तत क्रोधी । रामबिमुखश्रुतिसन्तबिरोधी ॥
तनुपोषक निन्दक अघखानी । अनजीवत सम चौदहप्रानी ॥
अस बिचारि खलबधौंनतोहीं । अबजनिरिसउपजावसिमोहीं॥
पुनिसकोपकह निशिचरनाथा । अधरदशनगहि मींजतहाथा॥
रेकपि पोच मरण अबचहसी । छोटेबदन बात बड़ि कहसी ॥
कटुजल्पसिजड़ कपिबलजाके । बुधिबल तेज प्रतापनताके ॥
दो० अगुणअमान बिचारितेहि दीन्हपिताबनबास ।
सोदुखअरुयुवतीबिरहपुनिनिशिदिनममत्रास ॥
जिनके बलको गर्व तोहिं ऐसे मनुज अनेक ।
खाहिंनिशाचरदिवसनिशिमूढ़समुझुतजिटेक ॥
जबतोहिं कीन्ह रामकी निन्दा । क्रोधवन्ततब भयउकपिन्दा ॥
हरि हरनिंदा सुनहिंजे काना । होय पाप गोघात समाना ॥
कट कटाइ कपि कुंजर भारी । दोउभुजदण्डतमकिमहिमारी॥
डोलत धरणि सभासद खसे । चलेभागि भय मारुत ग्रसे ॥
गिरत दशानन उठा सँभारी । भूतल परेउ मुकुट षटचारी ॥
कछु निजकरलै शिरन सँभारे । कछु अंगद प्रभु पास पवाँरे ॥
आवत मुकुट देखि कपि भागे । दिनहीं लूक परनबिधिलागे ॥
कै रावण करि कोप चलाये । कुलिशचारिआवतअतिधाये॥
कह प्रभु हँसिजनि हृदयडराहू । लूक न अशनिकेतु नहिंराहू ॥
ये किरीट दशकन्धर केरे । आवत बालि तनय के प्रेरे ॥
दो० कूदि गहे कर पवनसुत आनि धरे प्रभु पास ।
कौतुक देखहिंभालुकपि दिनकरसारिसप्रकास ॥
उहाँ कहत दशकन्ध रिसाई । धरि मारहु कपिभागिनजाई ॥
इहिबिधि बेगिसुभटसबधावहु । खाहुभालुकपि जहँतहँपावहु ॥
महि अकीशकरिफेरि दोहाई । जियतधरहुतपसी दोउभाई ॥
पुनि सकोप बोलेउ युवराजा । गालबजावत तोहिं नलाजा ॥

मरुगलकाटि निलजकुलघाती । बलबिलोकिबिहरतनहिंलाती ॥
रे तियचोर कुमारग गामी । खलमलराशिमन्दमतिकामी ॥
सन्निपात जल्पसि दुर्बादा । भयसिकालबशशठमनुजादा ॥
याको फल पावहुगे आगे । बानर भालु चपेटन लागे ॥
राम मनुज बोलत असबानी । गिरहिनतवरसनाअभिमानी ॥
गिरि हैं रसना संशय नाहीं । शिरन समेतसमर महिमाहीं ॥
सो० सो नर क्यों दशकन्ध बालि बधेउ जेहि एकशर ।
बीसहु लोचन अन्ध धिक तव जन्म कुजातिजड़ ॥
तव शोणित की प्यास तृषितराम शायक निकर ।
तजेउँतोहिंतेहित्रासकटुजलपसिनिशिचरअधम ॥
मैं तव दशन तोरिबे लायक । आयसु पै न दीन्हरघुनायक ॥
असरिसि होतदशौ मुख तोरों । लंका गहि समुद्रमहँ बोरों ॥
गूलर फल समान तव लंका । बसहिंमध्यजनुजन्तुअशंका ॥
मैं बानर फल खात न बारा । आयसुदीन्ह न राम उदारा ॥
युक्ति सुनत रावण मुसुकाई । मूढ़सिखेसिकहँअधिकझुठाई ॥
बालि कबहुँ असगालनमारा । मिलितपसिनतैंभयसिलबारा ॥
सांचेहु मैं लबार भुज बीहा । जो न उपारों तव दश जीहा ॥
राम प्रताप सुमिरि कपिकोपा । सभामांझ प्रणकरि पदरोपा ॥
जोममचरण सकहिशठटारी । फिरहिं राम सीता मैं हारी ॥
सुनहुसुभट सबकह दशशीशा । पदगहिधरणि पछारहुकीशा ॥
इन्द्रजीत आदिक बलवाना । हरषिउठे जहँ तहँ भटनाना ॥
झपटहिंकरिबल बिपुल उपाई । पद न टरै बैठहिं शिर नाई ॥
पुनिउठिझपटहिं सुर आराती । टरै न कीश चरण इहिभांती ॥
पुरुष कुयोगीजिमि उरगारी । मोहबिटपनहिंसकहिं उपारी ॥
दो० भूमिन छांड़ै कपि चरण देखत रिपुमद भाग ।
कोटिबिघ्नजिमिसन्तकहँ तदपिनीतिनहिंत्याग ॥
कपिबलदेखि सकल हियहारे । उठा आप कपिके परचारे ॥

गहत चरण कह बालिकुमारा । मम पद गहे न तोरउबारा ॥
गहसि न रामचरण शठजाई । सुनतफिरामनअतिसकुचाई ॥
भये तेज हत श्री सब गई । मध्यदिवसजिमिशशिसोहई ॥
सिंहासन बैठा शिर नाई । मानहु सम्पतिसकलगँवाई ॥
जगदाधार प्राणपति रामा । तासुबिमुखकिमिलहबिश्रामा ॥
उमा रामकर भृकुटि बिलासा । होइ विश्व पुनि पावै नासा ॥
तृणतेकुलिशकुलिशतृणकरहीं । तासुदूत पदकहुकिमिटरहीं ॥
पुनिकपिकही नीतिबिधिनाना । मानतनाहिं काल नियराना ॥
रिपुमदमथप्रभु सुयश सुनाये । असकहि चलेबालिनृपजाये ॥
अबहीं मुखका करौं बड़ाई । हतिहौं तोहिंखेलाइ खेलाई ॥
प्रथमहिं तासुतनय कपिमारा । सोसुनि रावण भयो दुखारा ॥
यातुधान अंगद बल देखी । भेब्याकुलअतिहृदयबिशेखी ॥

दो० रिपुबल धर्षि हर्षि हिय बालितनय बलपुंज ।
सजलनयन तन पुलकिमन गहेरामपद कंज ॥
सांझजानि दशकपठतब भवनगयोबिलखाइ ।
मन्दोदरी अनेकबिधि बहुरि कहा समुझाइ ॥

कन्तसमुझिमनतजहुकुमतिही । सोहनसमरतुमहिंरघुपतिही ॥
राम अनुज धनु रेख खँचाई । सोनहिंलांघेहु अस मनुसाई ॥
पिय तेहिते जीतब संग्रामा । जाके दूतन के अस कामा ॥
कौतुक सिंधु लांघि तव लंका । आयउ कपि केहरी अशंका ॥
रखवारे हति विपिन उजारा । देखततुमहिंअक्षयजिन्हमारा ॥
जारि नगर जेइ कीन्हेसिछारा । कहांरहाबल गर्व्व तुम्हारा ॥
अबपति मृषा गालजनिमारहु । मोरकहा कछुहृदय विचारहु ॥
पतिरघुपतिहिमनुजजनिजानहु । अगजगनाथअतुलबलमानहु ॥
बाण प्रताप जान मारीचा । तासुकहा नहिं मानेहुनीचा ॥
जनकसभाअगणित महिपाला । रहेउ तहांतुम गर्व बिशाला ॥
भंजि धनुष जानकी बिवाही । तब संग्राम जितेहुनहिंताही ॥

सुरपति सुत जाना बलथोरा । राखाजियत आंखिइक फोरा ॥
शूर्पणखा की गति तुम देखी । तदपिहृदयनहिं लाजविशेखी ॥
दो० बधि बिराध खरदूषणहिं लीला हतेउ कबन्ध ।
बालि एक शर मारेउ तेहि नर कह दशकन्ध ॥
जेहि जल नाथ बँधायो हेला । उतरेउकपिदल सहितसुबेला ॥
कारुणीक दिनकर कुलकेतू । दूत पठायउ तव हित हेतू ॥
सभा मांझ जेहँ तव बलमथा । करिबरूथ महँ मृगपतियथा ॥
अंगद हनुमत अनुचर जाके । रण बांकुरे बीर अति बांके ॥
तेहिकहँपियपुनिपुनिनरकहहू । मृषा मान ममता मद गहहू ॥
अहह कन्त कृत राम बिरोधा । काल बिबश मनहोइ न बोधा ॥
कालदण्ड गहि काहु न मारा । हरै धर्म बल बुद्धि बिचारा ॥
निकटकाल जेहि आवत साईं । तेहिभ्रमहोइ तुम्हारिहिनाईं ॥
दो० दुइसुत मारेउ दहेउ पुर अजहुँ पीय सिय देहु ।
कृपासिन्धु रघुबीर भजि नाथ बिमलयश लेहु ॥
नारिबचनसुनिबिशिखसमाना । सभागयो उठि होत बिहाना ॥
बैठा जाइ सिंहासन फूली । अतिअभिमानत्रास सबभूली ॥
इहां राम अंगदहि बुलावा । आइ चरण पंकज शिरनावा ॥
अति आदर समीप बैठारी । बोले बिहँसि कृपालु खरारी ॥
बालितनय अति कौतुकमोहीं । तात सत्य कहु पूँछौं तोहीं ॥
रावण यातुधान कुल टीका । भुजबलअतुलजासुजगलीका ॥
तासु मुकुट तुम चारि चलाये । कहहु तात कवनी विधिपाये ॥
कहा बालि सुत सुनहु खरारी । मुकुट न होइँ भूप गुणचारी ॥
साम दाम अरु दण्ड बिभेदा । नृप उर बसहिं नाथकहवेदा ॥
नीति धर्म्म के चरण सुहाये । असजियजानि नाथपहँआये ॥
दो० धर्म्महीन प्रभुपदबिमुख कालबिबश दशशीश ।
आये गुण तजि रावणहिं सुनहु कोशलाधीश ॥
परम चतुरता श्रवण सुनि बिहँसे राम उदार ।

समाचार तब सबकहे गढ़के बालि कुमार ॥
रिपुके समाचार जब पाये । राम सचिवतब निकटबुलाये ॥
लंका बंका चारि दुआरा । केहिबिधिलागियकरहुबिचारा ॥
तब कपीश ऋच्छेश बिभीषण । सुमिरिहृदयदिनकरकुलभूषण ॥
करिबिचार तिन मंत्र दृढ़ावा । चारिअनी कपिकटक बनावा ॥
यथा योग्य सेनापति कीन्हे । यूथपसकलबोलि तिन्हलीन्हे ॥
प्रभुप्रताप सबकहि समुझाये । सिंहनादकरि सब कपिधाये ॥
हर्षित रामचरण शिर नावें । गहिगिरिशिखरभालुकपिधावें ॥
गर्जहिं तर्जहिं भालु कपीशा । जय रघुबीर कोशलाधीशा ॥
जानत परम दुर्ग गढ़ लंका । प्रभुप्रताप कपिचले अशंका ॥
घटाटोप करि चहुँ दिशि घेरी । मुखहिंनिशान बजावहिंभेरी ॥
दो० जयति राम भ्राता सहित जय कपीश सुग्रीव ।
गर्जे केहरिनाद कपि भालु महाबल सींव ॥
लंका भयउ कोलाहल भारी । सुनेउदशानन अतिहिहँकारी ॥
देखहु बनरन्ह केरि ढिठाई । बिहँसि निशाचर सेनबुलाई ॥
आये कीश काल के प्रेरे । क्षुधावन्त रजनीचर मेरे ॥
असकहि अट्टहासशठ कीन्हा । गृह बैठे अहार बिधि दीन्हा ॥
सुभटसकल चारिहुदिशिजाहू । धरिधरि भालुकीश सबखाहू ॥
उमारावणहिं अस अभिमाना । जिमिटिटीन गण सूतउताना ॥
चले निशाचर आयसु मांगी । गहिकर भिन्दिपाल बरसांगी ॥
तोमर मुद्गर परिघ प्रचण्डा । शूलकृपाण परशु गिरिखण्डा ॥
जिमिअरुणोपलनिकरनिहारी । धाये खगशठ मांस अहारी ॥
चोंचभंग दुख तिनहिंनसूझा । तिमि धाये मनुजाद अबूझा ॥
दो० नानायुध शर चाप धरि यातुधान बल बीर ।
कोट कँगूरन चढ़ि गये कोटि कोटि रण धीर ॥
कोट कँगूरन सोहहिं कैसे । मेरु शृंग पर जनु घन जैसे ॥
बाजहिं ढोल निशान जुझाऊ । सुनिसुनिसुभटनके मनचाऊ ॥

बाजहिं भेरि नफीरि अपारा । सुनि कादर उरहोहिं दरारा ॥
देखि न जाइ कपिनके ठट्टा । अतिबिशालतनुभालुसुभट्टा ॥
धावहिं गनहिं न औघटघाटा । पर्बत फोरिकरहिं गहिबाटा ॥
कटकटाइ कोटिन भट गर्जहिं । दशननओठकाटिअतितर्जहिं ॥
उत रावण इत राम दोहाई । जयतिजयतिकहिपरी लराई ॥
निशिचर शिखरसमूहढहावहिं । कूदिधरहिंकपिफेरिचलावहिं ॥

छं० धरिकुधरखण्डप्रचण्ड मर्कट भालु गढ़परडारहीं ।
झपटैंचरणगहिपटकिमहिभजिचलतबहुरिप्रचारहीं ॥
अतितरलतरुणप्रतापतर्जहिं तमकिगढ़परचढ़िगये ।
कपिभालुचढ़ि मन्दिरनजहँतहँ रामयशगावतभये ॥

दो० एकएक गहि रजनिचर पुनि कपि चले पराइ ।
ऊपर आपुन तरअसुर गिरहिं धरणिपरआइ ॥

राम प्रताप प्रबल कपि यूथा । मर्दहिंनिशिचरनिकरबरूथा ॥
चढ़े दुर्ग पुनि जहँ तहँ बानर । जयरघुवीर प्रताप दिवाकर ॥
चले तमीचर निकर पराई । प्रबलपवनजिमिघनसमुदाई ॥
हाहाकार भयो पुर भारी । रोवहिं आरत बालक नारी ॥
सब मिलिदेहिं रावणहि गारी । राज्य करत जेहिमृत्युहँकारी ॥
निजदलबिचल सुनाजबकाना । फिरे सुभट लंकेश रिसाना ॥
जेहि रण बिमुख फिरा मैंजाना । तेहि मारिहौं कराल कृपाना ॥
सर्ब्बस खाइ भोग करिनाना । समर भूमि भा दुर्लभ प्राना ॥
उग्र बचन सुनि सकल डराने । फिरे क्रोधकरि सुभट लजाने ॥
सन्मुख मरण बीरकी शोभा । तबतिनतजा प्राणकरलोभा ॥

दो० बहु आयुध धरि सुभट सब भिरहिं प्रचारि प्रचारि ।
कीन्हे व्याकुल भालु कपि परिघप्रचण्डनि मारि ॥

भय आतुर कपि भागन लागे । यद्यपि उमा जीति हैं आगे ॥
कोउ कह कहँ अंगद हनुमन्ता । कहँनलनीलद्विबिदबलवन्ता ॥
निजदलबिचल सुनाहनुमाना । पश्चिम द्वार रहा बलवाना ॥

मेघनाद तहँ करै लराई । टूट न द्वार परम कठिनाई ॥
पवनतनय मनभा अतिक्रोधा । गर्जेउ प्रलयकाल समयोधा ॥
कूदि लंकगढ़ ऊपर आवा । गहिगिरि मेघनाद्पर धावा ॥
भंजेउ रथ सारथी निपाता । तासु हृदय महँ मारेउ लाता ॥
दूसर सूत विकल तेहि जाना । स्यन्दनघालि तुरतघरआना ॥
दो० अंगदसुनेउ कि पवनसुत गढ़पर गयउअकेल ।
समर बांकुरा बालिसुत तर्कि चलेउ करि खेल ॥
युद्ध बिरुद्ध क्रुद्ध दोउ बन्दर । रामप्रताप सुमिरिउरअन्तर ॥
रावण भवन चढ़े दोउ धाई । करहिं कोशलाधीश दुहाई ॥
कलशसहितसबभवनढहावहिं । देखिनिशाचरअतिभयपावहिं ॥
नारिवृन्द कर पीटहिं छाती । अबदोउकपि आयेउतपाती ॥
कपिलीलाकरि सबहिं डरावहिं । रामचन्द्रकर सुयशसुनावहिं ॥
पुनि करगहि कंचनके खम्भा । करनलगे उतपात अरम्भा ॥
कूदि परे रिपु कटक मँझारी । लागे मर्दन भुजबल भारी ॥
काहू लात चपेटन केहू । भजेहु न रामहिं सोफललेहू ॥
दो० एक एक सन मर्दिकरि तोरि चलावहिं मुण्ड ।
रावण आगे परहिं ते जनु फूटहिं दधिकुण्ड ॥
महा महा मुखिया जे पावहिं । तेपदगहि प्रभुपासचलावहिं ॥
कहहिं विभीषण तिनके नामा । देहिंरामतिनकहँ निजधामा ॥
खलमनुजाद जो आमिषभोगी । पावहिंगतिजो याचतयोगी ॥
उमाराम मृदुचित करुणाकर । बैरभावमोहिंसुमिरतनिशिचर ॥
देहिंपरमगति अस जियजानी । को कृपालु अस अहै भवानी ॥
जे असप्रभुनभजहिंभ्रमत्यागी । तेमतिमन्दसो परमअभागी ॥
अंगद अरु हनुमन्त प्रवेशा । कीन्ह दुर्ग असकह अवधेशा ॥
लंका महँ कपि सोहहिं कैसे । मथहिं सिन्धुदुइ मन्दर जैसे ॥
दो० भुजबलरिपुदलदलमलेउ देखि दिवसकरअन्त ।
कूदे युगल प्रयास बिनु आये जहँ भगवन्त ॥

प्रभुपद कमल शीश तिननाये । देखिसुभट रघुपति मनभाये ॥
राम कृपा करि युगल निहारे । भये बिगत श्रम परमसुखारे ॥
गये जानि अंगद हनुमाना । फिरे भालु मर्कट भट नाना ॥
यातुधान प्रदोष बल पाई । धाये करि दशशीश दुहाई ॥
निशिचर अनीदेखि कपिफिरे । कटकटाइ जहँ तहँ भटभिरे ॥
दोउदलभिरहिं प्रचारि प्रचारी । लरहिंसुभट नहिंमानहिं हारी ॥
बीर तमीचर सब अति कारे । नाना बरण बलीमुख भारे ॥
सबलयुगलदलसमअतियोधा । विविधप्रकारलरहिं करिक्रोधा ॥
प्राविट शरद पयोद घनेरे । लरत मनहुँ मारुत के प्रेरे ॥
अवनिअकम्पनअरुअतिकाया । विचलतसेन करी तिन माया ॥
भयउनिमिषमहँअतिअँधियारा । काहुन सूझै अपन परारा ॥
मारु खाहु सब करहिं पुकारा । वृष्टि होइ रुधिरोपल छारा ॥
दो० देखिनिबिड़तमदशहुदिशिकपिदलभयउखभार ।
एकहि एक न देखहीं जहँ तहँ करहिं पुकार ॥
सकल मर्म्म रघुनायक जाना । लिये बोलि अंगद हनुमाना ॥
समाचार सब कहि समुझाये । सुनत कोपि कपिकुंजरधाये ॥
पुनि कृपालु हँसि चापचढ़ावा । पावकशायक सपदिचलावा ॥
भयउ प्रकाश कतहुं तमनाहीं । ज्ञानउदय जिमिसंशयजाहीं ॥
भालु बली मुख पाइ प्रकासा । धाये कोपि बिगतश्रमत्रासा ॥
हनूमान अंगद रण गाजे । हांक सुनत रजनीचर भाजे ॥
भागतभट पटकहिंगहिधरणी । करहिं भालुकपिअद्भुतकरणी ॥
गहिपद डारहिं सागर माहीं । मकरउरगझषधरिधरिखाहीं ॥
दो० कछु घायल कछु रणपरे कछु गढ़ चले पराइ ।
गर्जे मर्कट भालुभट रिपुदल बल बिचलाइ ॥
निशा जानिकपि चारिउअनी । आये सब जहँ कोशल धनी ॥
राम कृपाकरि चितवा जबहीं । भये बिगतश्रम बानरतबहीं ॥
वहां दशानन सचिव हँकारे । सबसनकहेसि सुभटजेमारे ॥

आधा कटक कपिन संहारा । कहहु बेगि काकरिय बिचारा ॥
मालवन्त यक जरठ निशाचर । रावण मात पिता मंत्रीबर ॥
बोलाबचन नीति अति पावन । तातसुनहुकछुमोर सिखावन ॥
जबते तुम सीता हरि आनी । अशकुनहोहिं न जातबखानी ॥
वेद पुराण जासु यश गावा । तासु बिमुख सुखकाहुनपावा ॥

दो० हिरण्याक्ष भ्राता सहित मधुकैटभ बलवान ।
जेइमारेउ सोइ अवतरेउ कृपासिन्धु भगवान ॥
कालरूप खल बन दहन गुणागार घनबोध ।
ज्यहिसेवहिंशिवकमलभव त्यहिसनकौनबिरोध ॥

परिहरि बैर देहु बैदेही । भजहु कृपानिधि परमसनेही ॥
ताके बचन बाण सम लागे । करिया मुखकरि जाहु अभागे ॥
बूढ़ भयसि नत मरतेउँ तोहीं । अबजनिबदनदेखावसिमोहीं ॥
तेइ अपने मन असअनुमाना । बध्योचहतयहि कृपानिधाना ॥
सो उठि गयउ कहत दुर्बादा । तब सकोप बोलेउ घननादा ॥
कौतुक प्रात देखियहु मोरा । करिहौं बहुत कहत हौं थोरा ॥
सुनि सुत बचन भरोसाआवा । प्रीति समेत निकट बैठावा ॥
करत बिचार भयउ भिनुसारा । लगे भालुकपि चारिहु द्वारा ॥
कोपि कपिन दुर्गम गढ़ घेरा । नगर कोलाहल भयउ घनेरा ॥
बिबिधअस्त्रगहिनिशिचरधाये । गढ़ते पर्व्वत शिखर ढहाये ॥

छं० ढाहे महीधर शिखरकोटिन बिबिधबिधि गोलाचले ।
घहरात जिमिपविपात गर्जत प्रलयके जनुबादले ॥
मर्कटविकट भट जुटत कटत न लरततनजर्जरभये ।
गहिशैलतेगढ़परचलावहिं जहँसोतहँ निशिचरहये ॥

दो० मेघनाद सुनि श्रवणअस गढ़पुनि छेंकाआइ ।
उतरि दुर्ग ते बीरबर सन्मुख चला बजाइ ॥

कहँ कोशलाधीश दोउ भ्राता । धन्वी सकललोक बिख्याता ॥
कहँ नलनील द्विविद सुग्रीवा । कहँ हनुमतअंगद बलसीवा ॥

कहाँ बिभीषण भ्राता द्रोही । आजुशठहि हठिमारउँ ओही ॥
अस कहि कठिन बाण संधाने । अतिशयकोपिश्रवणलगिताने॥
शर समूह सो छांड़न लागा । जनु सपच्छ धावैं बहु नागा ॥
जहँ तहँ परत देखिअहिबानर ।सम्मुखहोइनसकततेहिअवसर॥
भागे भयब्याकुल कपिऋच्छा । बिसरी सबहि युद्धकी इच्छा ॥
सो कपिभालु न रण में देखा । कीन्हेसिजेहिनप्राणअवशेखा॥
दो० मारेसि दश दश बिशिखउर परे भूमिसब बीर ।
सिंहनाद करिगर्जे तब मेघनाद रणधीर ॥
देखि पवनसुत कटक बिहाला । क्रोधवन्त धावा जनु काला ॥
महा महीधर तमकि उपारा । अति रिस मेघनाद परडारा ॥
आवत देखि गयउ नभ सोई । रथ सारथी तुरँग सब खोई ॥
बार बार प्रचार हनुमाना । निकट न आव मरमसोजाना ॥
राम समीप गयो घननादा । नाना भांति कहत दुर्बादा ॥
अस्त्र शस्त्र बहु आयुध डारे । कौतुकही प्रभु काटि निवारे ॥
देखि प्रभाव मूढ़ खिसियाना । करैलाग माया बिधि नाना ॥
जिमि कोउकरैगरुड़ सनखेला । डरपावहिगहि स्वल्पसपेला ॥
दो० जासु प्रबल माया बिवश शिव बिरंचि बड़छोट ।
ताहि देखावै रजनिचर निज माया मति खोट ॥
नभ चढ़ि बरषै बिपुल अँगारा । महिते प्रगट होइजल धारा ॥
नाना भांति पिशाच पिशाची । मारुकाटु ध्वनि बोलहिंनाची ॥
कीन्हेसि बृष्टि रुधिरकचहाड़ा । बर्षै कबहुँ उपल बहु छाड़ा ॥
बर्षि धूरि कीन्हेसि अँधियारा । सूझ न आपन हाथ पसारा ॥
अकुलाने कपि माया देखे । सबकरमरण बना इहि लेखे ॥
कौतुक देखि राम मुसुकाने । भये सभीत सकलकपिजाने ॥
एकहि बाणकाटि सब माया । जिमिदिनकरहरतिमिरनिकाया॥
कृपादृष्टि कपि भालु बिलोके । भये प्रबलरण रहहिं न रोके ॥
दो० आयसु मांगी रामपहँ अंगदादि कपिसाथ ।

लक्ष्मण चले सकोप तब बाण शरासन हाथ ॥
जलजनयन उर बाहु बिशाला । हिमगिरिबरण कछुकइ कलाला॥
इहां दशानन सुभट पठाये । नाना अस्त्र शस्त्र गहि धाये ॥
भूधर बिटपायुध धरि भारी । धाये कपि जय राम पुकारी ॥
भिरे सकल जोरी सन जोरी । इतउत जय इच्छा नहिंथोरी ॥
मुठिकन लातन दांतनकाटहिं । कपिगिरिशिलामारिपुनिडाटहिं॥
मारु मारु धरु धरु धरु मारू । शीश तोरिगहि भुजा उपारू ॥
अस ध्वनि पूरिरही नवखण्डा । धावहिं जहँतहँ रुण्डप्रचण्डा ॥
देखहिं कौतुक नभ सुर बृन्दा । कबहुँक बिस्मयकबहुँअनन्दा ॥
दो० जमेउ गाढ़ भरि भरि रुधिर ऊपर धूरि उड़ाइ ।
जिमि अंगारन राशिपर मृतकछार रहिछाइ ॥
घायल बीर बिराजहिं कैसे । कुसुमित किंशुकके तरु जैसे ॥
लक्ष्मण मेघनाद दोउ योधा । भिरहिंपररुपरकरिअतिक्रोधा॥
एकहि एक सकैं नहिं जीती । निशिचर छलबलकरैअनीती ॥
क्रोधवन्त तब भयउ अनन्ता । भंजेउ रथ सारथी तुरन्ता ॥
नाना बिधि प्रहार करि शेषा । राक्षस भयउ प्राणअवशेषा ॥
रावणसुत निज मनअनुमाना । संकट भये हरिहिमम प्राना ॥
बीरघातिनी छांड़ेसि सांगी । तेजपुंज लक्ष्मणउर लागी ॥
मूर्च्छा भई शक्ति के लागे । तबचलिगयउनिकटभयत्यागे॥
दो० मेघनाद सम कोटि शत योधा रहे उठाय ।
जगदाधार अनन्त सो उठहिं न चलाखिसाय ॥
सुनु गिरिजा क्रोधानल जासू । जारै भुवन चारिदश आसू ॥
सक संग्राम जीतिको ताही । सेवहिं सुरनरअगजगजाही ॥
यह कौतुक जानहि जन सोई । जेहिपर कृपा रामकी होई ॥
सन्ध्या भई फिरी दोउ ऐनी । लगे सँभारन निजनिजसैनी ॥
ब्यापकब्रह्मअजित भुवनेश्वर । लक्ष्मणकहँ पूछा करुणाकर ॥
तौ लगि लै आये हनुमाना । अनुजदेखिप्रभुअतिदुखमाना॥

जामवन्त कह बैद्य सुषेना। लंकारह पठइय कोउ लेना॥
धरि लघुरूप गये हनुमन्ता। आनेउ भवन समेत तुरन्ता॥
दो० रघुपति चरण सरोज शिर नायउ आइ सुषेन।
कहा नाम गिरि औषधी जाहु पवनसुत लेन॥
राम चरण सरसिज उर राखी। चलेउप्रभंजनसुत बलभाखी॥
उहां दूत यक मरम जनावा। रावणकालनेमि गृहआवा॥
दशमुख कहा मरम तेहि सुना। पुनिपुनिकालनेमि शिरधुना॥
देखत तुमहिंनगर जेहिजारा। तासु पन्थ को रोकनिहारा॥
भजिरघुपतिहिकरहुहितअपना। तजौ नाथ अबमृषाकल्पना॥
नील कंज तन सुन्दरश्यामा। हृदयराखुलोचन अभिरामा॥
अहंकार ममता मद त्यागहु। महामोहनिशिसोवतजागहु॥
काल ब्याल कर भक्षक जोई। सपनेहु समर कि जीतै कोई॥
दो० सुनिदशकंध रिसान तब तेइमन कीन्ह बिचार।
रामदूतकर मरणभल यह खलनत मोहिंमार॥
असकहि चला रची मगमाया। सर मंदिर बर बाग बनाया॥
मारुतसुत देखा शुभआश्रम। मुनिहिंबूझिजलपियोंजायश्रम॥
राक्षस कपटवेष तहँ सोहा। मायापति दूतहि चहमोहा॥
तुरत पवनसुत नायउ माथा। लागा कहन रामगुण गाथा॥
होत महारण रावण रामहिं। जीतहिंराम न संशययामाहिं॥
इहां भये मैं देखौं भाई। ज्ञानदृष्टिबल मोहिंअधिकाई॥
मांगा जल तेइदीन्ह कमण्डल। कपिकहनहिंअघाउँथोरेजल॥
सर मज्जनकरि आतुरआवहु। दीक्षादेउँ ज्ञान जेहि पावहु॥
दो० सर पैठत कपिपद गहेउ मकरी अति अकुलान।
मकरी सो धरि दिब्यतन चली गगन चढ़ियान॥
कपि तव दरशभइउँ निष्पापा। मिटातात मुनिवरकरशापा॥
मुनि न होइ यहनिशिचर घोरा। मानहुसत्यबचन कपिमोरा॥
असकहिगई अप्सराजबहीं। निशिचरनिकटगयउकपितबहीं॥

कहकपि मुनि गुरुदछिनालेहु । पाछे हमहिं मंत्र तुम देहु ॥
शिर लंगूर लपेटिपछारा । निजतनप्रकटेसि मरतीबारा ॥
राम राम कहिछांड़ेसि प्राना । सुनि मनहर्षिचले हनुमाना ॥
देखा शैल न औषधि चीन्हा । सहसाकपिउपारिगिरिलीन्हा ॥
गहिगिरिनिशिनभधावतभयऊ । अवधपुरी ऊपर कपिगयऊ ॥
दो० देखाभरत बिशालअति निशिचरमन अनुमानि ।
बिनुफर शायक मारेउ चापश्रवणलगि तानि ॥
परेउमूर्च्छिमहि लागतशायक । सुमिरत रामराम रघुनायक ॥
सुनिप्रियबचन भरतउठिधाये । कपिसमीप अतिआतुर आये ॥
विकल बिलोकि कीशउरलावा । जागतनहिं बहुभांतिजगावा ॥
मुखमलीन मन भयउ दुखारी । कहतबचन भरिलोचनबारी ॥
जेहिविधिरामबिमुखमोहिंकीन्हा । तेहिपुनियहदारुणदुखदीन्हा ॥
जो मोरे मन बच अरु काया । प्रीतिरामपद कमल अमाया ॥
तौकपि होउ बिगतश्रमशूला । जोमोपर रघुपति अनुकूला ॥
बचन सुनत उठिबैठ कपीशा । कहिजयजयतिकोशलाधीशा ॥
सो० लीन्ह कपिहि उरलाइ पुलकगात लोचन सजल ।
प्रीतिन हृदयसमाइ सुमिरिराम रघुकुल तिलक ॥
तातकुशलकहु सुखनिधानकी । सहितअनुजअरुमातुजानकी ॥
कपि सब चरित सँक्षेपबखाने । भयेदुखितमन महँपछिताने ॥
अहह दैव मैं कत जग जायों । प्रभुके एकौ काज न आयों ॥
जानि कुअवसर मनधरि धीरा । पुनिकपिसनबोलेउ बलबीरा ॥
तात गहरु होइहै तुहि जाता । काज नशाइहि होतप्रभाता ॥
चढ़ मम शायक शैल समेता । पठवौंतोहिं जहँ कृपानिकेता ॥
सुनिकपिमनउपजा अभिमाना । मोरे भार चलहिकिमिबाना ॥
राम प्रताप बिचारि बहोरी । बन्दिचरण बोलेउ करजोरी ॥
तवप्रताप उर राखि गोसाईं । जैहौं नाथ बाण की नाईं ॥
हर्षि भरत तब आयसु दीन्हा । पदशिरनायगवनकपिकीन्हा ॥

दो० तव प्रताप उरराखि प्रभु जैहौं नाथ तुरन्त ।
असकहि आयसु पायपद बंदिचले हनुमन्त ॥
भरत बाहुबलशील गुण प्रभुपद प्रीतिअपार ।
जातसराहत मनहिंमन पुनिपुनि पवनकुमार ॥
उहां राम लक्ष्मणहिं निहारी । बोलेबचन मनुज अनुहारी ॥
अर्द्धरात्रि गइ कपि नहिंआवा । राम उठाइ अनुज उरलावा ॥
सकेहुन दुखितदेखिमोहिंकाऊ । बन्धु सदातवमृदुलसुभाऊ ॥
ममहित लागि तजे पितुमाता । सहेउबिपिनहिमआतपबाता ॥
सो अनुराग कहां अबभाई । उठहुबिलोकि मोरिबिकलाई ॥
जो जनत्यों बन बन्धु बिछोहू । पिताबचननहिं मनतेउँवोहू ॥
सुत बितनारि भवन परिवारा । होहिं जाहिं जगबारहिंबारा ॥
असबिचारि जियजागहुताता । मिलहि नजगतसहोदरभ्राता ॥
यथापंखबिनु खगपति दीना । मणिबिनुफणिकरिवरकरहीना ॥
असममजिवन बन्धुबिनुतोहीं । जो जड़ दैव जियावै मोहीं ॥
जैहौं अवध कवन मुहँ लाई । नारिहेतु प्रिय बन्धु गवाँई ॥
बरुअपयश सहतेउँजगमाहीं । नारिहानि बिशेष क्षतिनाहीं ॥
अबअवलोकि शोक यह तोरा । सहै कठोर निठुर उर मोरा ॥
निज जननी के एक कुमारा । तात तासु तुम प्राण अधारा ॥
सौंपेउ मोहिं तुमहिं गहिपानी । सबबिधिसुखदपरमहितजानी ॥
उतर ताहि देहौं का जाई । उठिकिनम्बहिं समुझावहुभाई ॥
बहुबिधिशोचतशोच बिमोचन । स्रवतसलिलराजिवदललोचन ॥
उमा अखण्ड राम रघुराई । नरगति भावकृपालु दिखाई ॥
सो० प्रभुबिलाप सुनिकान बिकलभये बानर निकर ।
आयगये हनुमान जिमि करुणामहँ बीररस ॥
हर्षि राम भेंटे हनुमाना । अतिकृतज्ञप्रभुपरम सुजाना ॥
तुरत बैद्य तब कीन उपाई । उठि बैठे लक्ष्मण हरषाई ॥
हृदय लाइ भेंटे प्रभु भ्राता । हर्षे सकल भालु कपिब्राता ॥

पुनि कपिबैद्य तहां पहुँचावा । जेहिबिधितबहिंताहिलैआवा॥
यहवृत्तान्त दशानन सुनेऊ । अतिबिषादपुनिपुनिशिरधुनेऊ॥
ब्याकुल कुम्भकर्ण पहँ गयऊ । करिबहुयतनजगावतभयऊ॥
जागा निशिचर देखिय कैसा । मानहुँ काल देह धरि बैसा॥
कुम्भकर्ण पूछा सुनु भाई । काहे तवमुख रहा सुखाई॥
कथाकही सबतेहि अभिमानी । जेहिप्रकार सीताहरि आनी॥
तात कपिन निशिचर संहारे । महामहा योधा सब मारे॥
दुर्मुख सुररिपु मनुजअहारी । भटअतिकाय अकंपनभारी॥
अपर महोदर आदिक बीरा । परे समरमहँ सब रणधीरा॥

दो० दशकन्धरके बचनसुनि कुम्भकर्ण बिलखान ।
जगदम्बा हरिआनिकै शठचाहसि कल्यान ॥

भल न कीन्हतैं निशिचरनाहा । अबमोहिंआनिजगायहुकाहा॥
अजहुँ तात त्यागहुअभिमाना । भजहु राम होइहि कल्याना॥
हैं दशशीश मनुज रघुनायक । जिनके हनूमान से पायक॥
अहह बन्धु तैं कीन्ह खुटाई । प्रथमहिंमोहिंनजगायहुआई॥
कीन्हेहु प्रभुबिरोध तेहिदेवक । शिव बिरंचि सुरजाके सेवक॥
नारदमुनिमोहिं ज्ञानजोकहेऊ । कहतेउँतोहिंसमयनहिंरहेऊ॥
अब भरिअंकभेंटु मोहिं भाई । लोचन सफल करौं मैं जाई॥
श्यामगात सरसीरुह लोचन । देखौं जाइ तापत्रय मोचन॥

दो० रामरूपगुण सुमिरिमन मगनभयो क्षणएक ।
रावणमाँगेउ कोटिघट मद अरु महिषअनेक ॥

महिष खाइकरि मदिरा पाना । गर्जेउ बज्रघात अनुमाना॥
कुम्भकर्ण दुर्म्मद रण रंगा । चला दुर्ग तजिसेन न संगा॥
देखिबिभीषण आगे आयउ । पुनिपदगहिनिजनामसुनायउ॥
अनुजउठाय हृदय तेहिलावा । रघुपतिभक्त जानि मनभावा॥
तात लात मोहिं रावण मारा । कहत परमहित मंत्रबिचारा॥
तेहिगलानिरघुपतिपहँ आयउँ । दीनजानि प्रभुके मनभायउँ॥

सुनसुत भयउ कालबशरावन । सोकिमि मानैपरम सिखावन ॥
धन्य धन्य तैं धन्य बिभीषण । भयउतातनिशिचरकुलभूषण ॥
बन्धु बंश तैं कीन्ह उजागर । भजहु राम शोभासुख सागर ॥
दो० मनक्रम बचन कपट तजि भजहुतात रघुबीर ।
जाहुन निजपरसूझ मोहिं भयउँकालबशबीर ॥
बन्धुबचनसुनि फिराबिभीषण । आयउजहँत्रैलोक्य बिभूषण ॥
नाथ भूधराकार शरीरा । कुम्भकर्ण आवत रणधीरा ॥
इतना कपिन सुना जब काना । किलकिलाइ धाये हनुमाना ॥
लिये उपारि बिटप अरु भूधर । कटकटाइ डारे तिहि ऊपर ॥
कोटिकोटि गिरि शिखरप्रहारा । करहिं भालुकपि एकहि बारा ॥
गिरे न मुरै टरै नहिं टारे । जिमि गज आकफलनकेमारे ॥
तब मारुतसुत मुष्टिक हनेऊ । परेउधरणिब्याकुलशिरधुनेऊ ॥
पुनि उठितेहँ मारेउ हनुमन्ता । घुर्मित घायल परेउ तुरन्ता ॥
पुनिनलनीलहिं आनिपछारेसि । जहँतहँ पटकि २ भटमारेसि ॥
चली बली मुख सेन पराई । अतिभयत्रसितनकोउसमुहाई ॥
दो० अंगदादि कपि मूर्च्छित करिसमेत सुग्रीव ।
कांखदाबिकपिराजकहँ चलाअमितबलसीव ॥
उमाकरत रघुपतिनरलीला । खेलगरुड़जिमिअहिगणमीला ॥
भृकुटिभृङ्ग जिहि कालहि खाई । ताहि कि ऐसी सोह लराई ॥
जग पावन कीरति बिस्तरहीं । गाइगाइनरभवनिधि तरहीं ॥
मूर्च्छा गइ मारुतसुत जागा । सुग्रीवहिं तब खोजन लागा ॥
कपिराजहु कर मूर्च्छा बीती । निबुकिगयउतेहिमृतकप्रतीती ॥
काटेसि दशन नासिका काना । गर्जिअकाशचलातेहिजाना ॥
गहेसिचरणधरि धरणिपछारा ।अतिलाघवपुनिउठितेहिमारा ॥
पुनि आयउ प्रभुपहँबलवाना ।जयतिजयतिजयकृपानिधाना ॥
नाक कान काटे तेहि जानी । फिराक्रोधकरि मानिगलानी ॥
सहजभीमपुनि बिनुश्रुति नासा । देखतकपिदलउपजा त्रासा ॥

दो० जयजयजय रघुबंशमणि धाये कपि करि हूह ।
एकहि बार जो तासु पर डारे गिरि तरु जूह ॥
कुम्भकर्ण रण रंग बिरोधा । सन्मुखचला कालजनु क्रोधा ॥
कोटिकोटिकपि धरिधरि खाई । जनुटीड़ी गिरिगुहा समाई ॥
कोटिनगहि शरीर महँ मर्दा । कोटिनमींजि मिलायसिगर्दा ॥
मुख नासिका श्रवणकी बाटा । निकसिपराहिं भालुकपिठाटा ॥
रण मदमत्त निशाचर दर्प्पा । मानहुँ बिश्वग्रसनकहँ अर्प्पा ॥
भिरेसुभट रण फिरहिं न फेरे । सूझ न नयन सुनहिं नहिंटेरे ॥
कुम्भकर्ण कपि फौज बिडारी । सुनि धाये रजनीचर भारी ॥
देखी राम बिकट कटकाई । रिपु अनीक नानाबिधि आई ॥
दो० सुनहुबिभीषण लषणसह सकलसँभारहु सैन ।
मैं देखौं खल बल दलहिं बोले राजिव नैन ॥
कर शारंग बिशिख कटिभाथा । मृगपति ठवनिचलेरघुनाथा ॥
प्रथम कीन्ह प्रभु धनु टंकोरा । रिपुदल बधिरभये सुनिशोरा ॥
धनु संधानि छांड़ शरलक्षा । कालसर्प्प जनुचले सपक्षा ॥
अतिबल चले निकर नाराचा । लगेकटनभटबिकटपिशाचा ॥
कटहिंचरण शिरउरभुजदण्डा । बहुतकबीर होहिंशतखण्डा ॥
घुर्मि घुर्मि घायल भटपरहीं । उठहिंसँभारिसुभटफिरिलरहीं ॥
लागतबाणजलद जिमिगाजैं । बहुतक देखिकठिनशरभाजैं ॥
रुण्ड प्रचण्डमुण्डबिनुधावहिं । धरुधरु मारुमारुगोहरावहिं ॥
दो० क्षणमहँ प्रभुके शायकनि काटे बिकटपिशाच ।
पुनि रघुपति के त्रोण महँ प्रबिशेआइनराच ॥
कुम्भकर्ण मन दीख बिचारी । क्षणमहँहते निशाचरभारी ॥
भयउ क्रोध दारुण बलबीरा । करिमृगनायक नादगँभीरा ॥
कोपि महीधर लिये उपारी । डारेसि जहँ मर्कट भटभारी ॥
आवत देखि शैल प्रभुभारे । शरनकाटि रज समकरिडारे ॥
पुनिधनुतानि कोपि रघुनायक । छांड़े अतिकरालबहुशायक ॥

तनमहँप्रविशिनिसरिशरजाहीं ।जिमिदामिनिघनमाहिंसमाहीं॥
शोणित स्रवत सोह तनकारे । जिमिकज्जलगिरि गेरुपनारे॥
बिकल बिलोकिभालुकपिधाये ।बिहँसाजबहिंनिकटचलिआये॥
दो० गर्जत धायउ बेगि अति कोटिकोटि गहि कीश ।
महि पटकै गजराज इव शपथ करै दशशीश॥
भागे भालु कपिन के यूथा । बृकबिलोकिजिमिमेषबरूथा॥
चले भालुकपि भाजि भवानी । बिकल पुकारत आरतबानी॥
यह निशिचरदुकालसमअहई । कपिकुलदेशपरन अबचहई॥
कृपा बारिधर राम खरारी । पाहि पाहि प्रणतारतहारी॥
करुणा बचन सुनत भगवाना । चले सुधारि शरासन बाना॥
राम सेन निज पाछे घाली । चले सकोप महाबलशाली॥
खैंचि धनुष शत शर संधाने । छूटे तीर शरीर समाने॥
लगत शर सँभारि सो फिरा । कुधर डगमगेउ डोली धरा॥
लीन्ह एक तेइँ शैल उपाटी । रघुकुलतिलकभुजासोइकाटी॥
धावा बाम बाहु गिरिधारी । प्रभुसोभुजा काटि महिडारी॥
काटे भुज सोहै खल कैसा । पक्ष हीन मन्दरगिरि जैसा॥
उग्रबिलोकनि प्रभुहि बिलोका । मानहुँ ग्रसन चहत त्रैलोका॥
दो० करि चिकार मुखघोर अति धावा बदन पसार ।
गगन सकल सुरत्रास अति हाहाकार पुकार॥
सभय देव करुणाकर जाने । श्रवण प्रयन्त शरासन ताने॥
बिशिखनिकरनिशिचरमुखभरेऊ । तदपिमहाबलभूमिनपरेऊ॥
शरन भरा मुख सन्मुख धावा । कालत्रोण जनुतनुधरि आवा॥
तब प्रभु कोपि तीब्रशर लीन्हा । धड़ते भिन्न तासु शिर कीन्हा॥
सोशिरपरा दशाननआगे । बिकलभयउजिमिफणिमणित्यागे॥
धरणि धसै धरधाव प्रचण्डा । तबप्रभुकाटिकीन्हयुगखण्डा॥
परे भूमि जिमि नभ ते भूधर । तरे दाबिकपि भालुनिशाचर॥
तासु तेज प्रभु बदन समाना । सुरमुनिसबहि अचम्भवमाना॥

नभ दुन्दुभी बजावहिं हर्षहिं । जयजयकहि प्रसूनसुरवर्षहिं॥
करिबिनती सुरसकल सिधाये । तबतेहिसमयदेवऋषि आये॥
गगनोपरि हरि गुणगण गाये । रुचिर बीररसप्रभु मनभाये ॥
बेग हतहु खल मुनि कहिगये । राम समर महँ शोभितभये ॥
छं० संग्रामभूमि बिराज रघुपति अतुलबल शोभाधनी ।
श्रमबिन्दुमुखराजीवलोचनरुचिरतनशोणितकनी ॥
भुजयुगलफेरतकरशरासन भालुकपिचहुँदिशिबने ।
कहदासतुलसीकहिनसकछबिशेषजेहिआननघने ॥
दो० निशिचरअधममलायतन ताहिदीन्हनिजधाम ।
गिरिजातेनर मन्दमति जे न भजहिं श्रीराम ॥
दिनके अन्त फिरीं दोउ अनी । समर भई सुभटनसनघनी ॥
रामकृपा बल कपि दल बाढ़ा । जिमितृणबढ़ै लगेअतिडाढ़ा॥
छीजहिंनिशिचरदिनअरुराती । निजमुखकहेसुकृतजेहिभाँती॥
बहु बिलाप दशकन्धर करई । पुनिपुनिबन्धुशीश उर धरई ॥
रोवहिं नारि हृदय हति पानी । तासु तेजबल बिपुलबखानी ॥
मेघनाद तेहि अवसर आवा । कहिबहुकथापितहिसमुझावा॥
देखहु कालिह मोरि मनुसाई । अबहिं बहुतका करौं बड़ाई ॥
इष्टदेव सन जो वर पायउँ । सो बरताततुमहिं सुनायउँ ॥
इहिविधि जल्पत भयोबिहाना । लगेभालुकपिचहुँदिशिनाना ॥
इत कपि भालु कालसमबीरा । उत रजनीचर अतिरणधीरा ॥
लरहिंसुभट निजनिज जयहेतू । बरणि न जाइ समर खगकेतू॥
दो० मेघनाद माया बिरचि रथचढ़ि गयउ अकास ।
गर्जेउप्रलयपयोदजिमि भाकपिदलअतित्रास ।
शक्ति शूल शर परिघ कृपाना । अस्त्रशस्त्र कुलिशायुध नाना ॥
डारे परशु प्रचण्ड पषाना । लागा वृष्टिकरै बहु बाना ॥
छ्वे दशहु दिशि शायक छाई । मानहुँ मघा मेघ भरिलाई ॥
धरुधरु मारु सुनाहिं कपिकाना । जो मारै तेहि कोउ न जाना ॥

गहिगिरितरु अकाशकपिधावें । देखहिंतेहिनदुखितफिरिआवें॥
अवघटघाट बाट गिरिकंदर । मायाबल कीन्हेसि शरपंजर ॥
मारुतसुत अंगद नल नीला । कीन्हेसिविकलसकलबलशीला॥
पुनि लक्ष्मण सुग्रीव बिभीषन । शरनमारिकीन्हेसिजर्जरतन ॥
पुनि रघुपतिसन जूझनलागा । छांड़तशरहोइलागहिं नागा ॥
व्याल फांस बश भये खरारी । स्वबशअनन्तएकअबिकारी ॥
नटइव चरितकरत विधिनाना । सदा स्वतंत्र राम भगवाना ॥
रण शोभा हित आपु बँधावा । देखि दशा देवन भयपावा ॥
दो० खगपति जाकर नामजपि नर काटहिं भवफांस ।
सो प्रभुआव कि बन्धतर व्यापकबिश्वनिवास ॥
चरित रामके सगुण भवानी । तर्कि न जाइँ बुद्धिबलबानी ॥
अस बिचारि जे परम बिरागी । रामहिंभजहिंतर्क सबत्यागी ॥
व्याकुलकटक कीन्ह घननादा । पुनिभा प्रकटकहत दुर्बादा ॥
जामवन्त कह खल रहु ठाढ़ा । सुनिकै ताहिक्रोधअतिबाढ़ा ॥
बूढ़ जानि शठ छांड़ेउँ तोहीं । लागेसि अधमप्रचारनमोहीं ॥
असकहि ताहित्रिशूलचलावा । जामवन्त सो करगहिधावा ॥
मारेउ मेघनाद की छाती । परा धरणिघुर्मित सुरघाती ॥
पुनि रिसाइगहिचरण फिरावा ।महिपछारिनिजबलहिदिखावा॥
बर प्रसाद सो मरहि न मारा । तब पदगहि लंका पर डारा ॥
इहां देवऋषि गरुड़ पठाये । रामसमीप सपदिचलिआये ॥
दो० पन्नगारि खायेसकल क्षणमहँ व्याल बरूथ ।
भई बिगत माया तुरत हर्षे बानर यूथ ॥
गहिगिरिपादप उपल बहु धाये कीशरिसाइ ।
चले तमीचरबिकल अति गढ़परचढ़े पराइ ॥
मेघनाद की मूर्च्छा जागी । पितहिंबिलोकिलाजअतिलागी॥
तुरत गयोसोगिरिवरकन्दर । करनअजयमखअसमनहठधरा॥
सो सुधिपाइ बिभीषण कहई । सुनुप्रभुसमाचार असअहई ॥

मेघनाद मख करै अपावन । खल मायावी देव सतावन ॥
सोप्रभु सिद्धि होइ जो पाइहि । नाथवेगिरिपु जीतिनजाइहि ॥
सुनिरघुपतिअतिशयसुखमाना। बोलिलिये अंगदहनुमाना ॥
लक्ष्मण संग जांहु सब भाई। यज्ञ बिध्वंसकरहु तुमजाई ॥
तुम लक्ष्मण रण मारेहु ओही । देखिसभयसुर बड़दुखमोही ॥
मारेहु तेहि बल बुद्धि उपाई । जेहिछीजै निशिचरसुनुभाई ॥
जामवन्त कपिराज बिभीषन । सेन समेत रहहु तीनों जन ॥
जब रघुबीरदीन्ह अनुशासन । कटिनिषंगकरबाण शरासन ॥
प्रभु प्रताप उरधरि रणधीरा । बोलेउ घनइवगिरा गँभीरा ॥
जो तेहिआजु बधे बिनुआवों । तौ रघुपतिसेवक न कहावों ॥
जो शत शंकर करहिं सहाई । तदपि हतौं रघुबीर दुहाई ॥

दो० बन्दि राम पद कमल युग चले तुरन्त अनन्त ।
अंगद नील मयन्द नल संग सुभट हनुमन्त ॥

जाइ कपिन देखा सो बैसा । आहुतिदेतरुधिर अरुभैंसा ॥
तब कीशन कृत यज्ञ बिध्वंसा । जब न उठै तबकरहिंप्रशंसा ॥
तदपि न उठै धरहिं कचजाई । लातनहतिहति चलहिंपराई ॥
लै त्रिशूल धावा कपि भागे । आवा राम अनुजके आगे ॥
आवत परम क्रोध करि मारा । गर्जि घोर रव बारहिं बारा ॥
कोपि मरुतसुत अंगद धाये । हतित्रिशूलउरधरणिगिराये ॥
प्रभुपर छांड़ेसि शूलप्रचण्डा । शरहतिकृतअनन्तयुगखण्डा॥
उठि बहोरि मारुत युवराजा । हतेउकोपितेहि घावनबाजा ॥
फिरे बीर रिपु मरै न मारा । पुनि धावाकरि घोरचिकारा ॥
धावत देखि क्रोध जनु काला । लक्ष्मणछांड़ेबिशिखकराला ॥
आवत देखि बज्र सम बाना । तुरतभयो खल अन्तर्द्धाना ॥
बिबिध बेषधरि करै लड़ाई । कबहुँकप्रकट कबहुँदुरिजाई ॥
तबत्रिशूलछांड़ेसि लक्ष्मणपर । काटिकीन्हशतखंडधरणिधर ॥
शिखर एक लै पुनि सो धावा । रामअनुज सो काटिखसावा ॥

दो० आयुध बिबिध प्रहारकिय रजसमकीन्हफणीश ।
हर्षि बिबश कपिरीछसब बिबिधसहितसुरईश ॥

बहुरि बिबिधशर छांड़नलागा । रणकारणछूटहिं जिमिनागा ॥
रामअनुज शर गरुड़ समाना । उमाग्रसत छूटहिं अभिमाना ॥
देखि अजयरिपु डरपेउ कीशा । परम क्रोध तबभये अहीशा ॥
देखिय जिमि रवितेज समाना । फुकरतमनहुँब्यालअनुमाना ॥
लक्ष्मण मन अस मंत्र दृढ़ावा । इहिपापिहि मैं बहुतखेलावा ॥
सुमिरि कोशलाधीश प्रतापा । शर संधानकीन्ह अतिदापा ॥
छांड़ा बाण तासु उर लागा । शीश भुजा काटे नृप नागा ॥
घन समान सो गर्जि अभागा । मरतीबार कपट सब त्यागा ॥

दो० रामअनुजकहि रामकहि असकहिछांड़ेसिप्रान ।
धन्य शक्रजित मातुतव कह अंगद हनुमान ॥

बिनु प्रयास हनुमान उठाये । लङ्का द्वार राखि पुनि आये ॥
तासु मरण सुनि सुरगन्धर्बा । चढ़ि बिमान आयेनभ सर्बा ॥
बरषि सुमन दुन्दुभी बजावहिं । श्रीरघुबीर बिमलयशगावहिं ॥
जय अनन्त जय जगदाधारा । तुम प्रभु सर्ब देव निस्तारा ॥
अस्तुतिकरि सुरसकलसिधाये । लक्ष्मण कृपासिन्धुपहँ आये ॥

क्षेपक ॥

प्रभुहि बिलोकि शीश पदनाये । उठि प्रभु अनुजहर्षिउरलाये ॥
कृपा दृष्टि करि अनुजहि हेरा । बिगतभयो श्रम जबकरफेरा ॥
बाण बेधि तनु देखियत कैसे । कनक तूण शर पूरित जैसे ॥
मुख प्रसन्नता देखि थके सब । रिपु बधकहा बिभीषणहूतब ॥
धारेउ शीश आन प्रभु आगे । बानर भालु बिलोकन लागे ॥
प्रभु कौतुकीनिरखिसोइशीशा । राखन कहेउ कोशलाधीशा ॥

दो० प्रभु आयसुसुनि कीशपति राखेउयतन कराय ।
कटकसहितरघुबंशमणिशोभितअतिदोउभाय ॥

कृपा दृष्टि सब कटक निहारे । भये श्रम रहित राम बैठारे ॥

सुनहुउमा इहिविधि रिपुमारे । सुर गँधर्व मुनि भये सुखारे ॥
अबसो सुनहु भुजा तेहिकेरी । खग जिमि गईलंक शरप्रेरी ॥
मेघनाद आंगन में परी । बाण बेधि शोणित सनभरी ॥
देखति तहां सुलोचनि कैसी । रतितेे छबिररूप गुण जैसी ॥
नागसुता दशकन्ध पतोहू । बासवरिपुतिय छबिमयजोहू ॥
हेम सिंहासन सोहत बाला । सेवत विद्याधरि त्रयकाला ॥
पूजत बिबिध बिनय करताही । सुख प्रमोदको सकलसराही ॥
तहँ पति भुजा परी इहिभांती । मनहुंसकलसुखतरुकीकांती ॥
दो० तबनिजदासिनदेखितहँ शोणिश्रवत भुजदण्ड ।
भयउ समर आश्चर्यमय मनहुंअखंडनखण्ड ॥
सुनकर सकल सखी मुखबैना । तजि सिंहासन उठी सुनैना ॥
प्रेम सुभाय धुकधुकी धरकी । सूचकअशुभदहिनभुजफरकी ॥
होत महारण रावण रामहिं । बीर धुरीण मोरपिय तामहिं ॥
सकलसुरासुरसकहिं न जूझी । विधि बामता परतनहिंबूझी ॥
इतना कहत गई चलि आपू । पतिभुजलखिकरिकोटिकलापू ॥
कंचन मणि गण भूषण सोई । महाबिटप सम आनन होई ॥
देखत मनहिं न आवत तेही । जासु प्रभाव सुनतकिनलेही ॥
नींद नारि भोजन परिहरही । बारह वर्ष तासु कर मरही ॥
दो० करि विचार सम टेक दै में पतिदेवत नारि ।
भुजलिखि मेटहुदुचितही सुनकरदीनपसारि ॥
लखिरुखतासु सखी उठिधाई । सो तेहि खोज खरीलैआई ॥
दीन हाथ मणिमय अँगनाई । लिखनलषणकीरतिरुचिराई ॥
नींद नारि भोजन शतकोटी । तजसतासुमहिमाअतिछोटी ॥
अक्षयअखंडअलखअविनासी । अतुलअमितघटघटकेबासी ॥
प्रकटहिं पालहिं पुनि संहरई । त्रिगुणरूप त्रयमूरति धरई ॥
जो कालहुकर काल भयंकर । बरणत शेष शारदा शंकर ॥
लीला तनु सुर सेवक हेतू । जासु नाम भवसागर सेतू ॥

मुनि मन पुण्डरीक जाके घर । बचन बिबेकबिचारबुद्धिवर ॥

दो० कोटिकल्प बरणत निगम अगमजासु गुणगाथ ।
तमशरीरजड़जीवबिनु किमिबरणतलिखिहाथ ॥

मन शिर गयो दरश रघुराई । तब प्रतीत लगि भुजा पठाई ॥
यहिबिधिलिखेउसकलभुजबाता । परीभूमितबअतिबिकलाता ॥
बांचिसकलभुजलिखितयथारथ । लक्ष्मण रामनामपरमारथ ॥
त्रियास्वभावतदपिबहुभांती । बिलखतसकलसखिनकरपांती ॥
गुणगण साहस शील नाहको । कहिरोवतबल बिपुलबांहको ॥
जेहि भुजबलसुरनाथ बिगोवा । सोभुजआजसमरमहि सोवा ॥
मणिगण भूषणवसनबिसारत । महिलोटतकरतलशिरमारत ॥
मगनबिपतिनिजतनुसुधिनाहीं । दारुणविपतिकहिनकेहिपाहीं ॥
छिनक प्रबोधसखीकोउकरहीं । बहुरि शोक दावानलजरहीं ॥
क्षणक्षण उठतपरत धरणीतल । पुनिपुनिसबसराहपतिकोबल ॥

दो० तिनमें सखी सयान इक कहिसमुझावतबैन ।
शोक छांड़ि पतिदेवता सुमति करौ मतिऐन ॥

सुनकर सहसानन जन जाता । सत्यकहततुम सखीसुमाता ॥
बिधि निर्मित दुख मोकहँलाहू । सुख परिपूर भवन सबकाहू ॥
बिजय रामलक्ष्मण कहँआवा । सुयशसकलमर्कटकुल पावा ॥
कुलकलंक बड़लहेउबिभीषन । कुलकुठारअससुनेउनदीखन ॥
छूटि वन्दि अस सुरगणकेरी । निज निजपुरन दुहाई फेरी ॥
मुनिपुलस्त्यकरभाकुलनाशा । अवरबिशशिसुखकराहिंप्रकाश ॥
तेजवन्त पावक परिहरि दुख । बहबसमीर आजु अपनेसुख ॥
सलिल गंग निर्मलजल आजू । सुबशबसहिं सुरनायकराजू ॥

दो० यम कुवेर दिगपाल सब प्रमुदित सुर नर नाग ।
खायअघाय बिहाय दुख पायसुयज्ञ बिभाग ॥

इतना कह मन्दिर महँ आई । देखत मणिगण धन बहुताई ॥
सुरपति भुवन सुपटतर नाहीं । जहँऋधिसिधितनुधरेकमाहीं ॥

देखत बिनय न मन अनुरागा । पतिपदप्रेम निपुणगणपागा ॥
देत दान मणि भूषण चीरा । धेनुबसन मन हाटक हीरा ॥
मणिमयशिविकारुचिर सुहाई । भुज बढ़ाइ पहिराइ बनाई ॥
आपन चढ़त भई पुनि आई । सुरदुर्लभ सुख सदनबिहाई ॥
बीतरागजिमितजतबिषयगन ।तेहितसभांतिदियोपतिपदमन॥
शुक सारिका सुलोचन ज्याये । कनक पिंजरन राखि पढ़ाये ॥
व्याकुलकह कहँजात सुनयना । सुनधीरज परिहरतसुबयना ॥
भये बिकलखगमृग यहिभांती । अपर दशा कैसे कहिजाती ॥
प्रजालोग गृहतजि सँग लागे । प्रेम उमँगि लोचनजलपागे ॥

दो० बाजन लगे निशान बहु ढोल दुन्दुभी भेरि ।
पुरजन परिजन संग सब चले पालकी घेरि ॥

देखि भीर दशकन्धर द्वारे । सजग भये सब बीरप्रचारे ॥
जानेउ कटक रिपुनकर आवा । अस्त्र शस्त्र करगहिकरधावा ॥
धनुचढ़ाइ कटि तरकस बाँधे । कोउअसिचर्मशरासन साधे ॥
तोमर परशुप्रचण्ड गदागहि । रोष न चोखेशूलशक्तिगहि ॥
मारुमारु धरु धरु कहिधाये । प्रकट दशाननबिजयसुनाये ॥
गर्जत तर्जत गिरा गँभीरा । समरभयंकर निशिचरबीरा ॥
निपटहिं निकट पालकी आई । चीन्ह सकलभटरहे लजाई ॥
देखि जुहारि नागपतिकन्या । सतीशिरोमणित्रिभुवनधन्या॥

दो० द्वारपाल दशकन्ध बहु खबर जनाई जाय ।
भयउ रजायसुबेगि तब बचनकहत बिलखाय ॥

तुमहिं अछत असदशाहमारी । सुखतजिभईशोकअधिकारी ॥
नम पथ है भुज ममगृहपरा । बाण बेधि शोणित तनुभरा ॥
देखि भुजा मनमें अति डरी । संशय जानि दीन्हकरखरी ॥
लिखी रामलक्ष्मण महिमाइन । क्रमक्रमसोंसबकथाकहीतिन॥
ठगिसी रही बांचि गुण गाथा । जरहुँ संग जो पाऊं माथा ॥
यह कबन्ध भुज ममगृहआई । शिरतहँ गयउ जहांरघुराई ॥

कहहुसोयतन मिलहिंमोहिंशीशा । तुम सामर्थ निशाचरईशा ॥
सुनत कुलिशसमगिरा बधूकी । जीवन आश दशानन मूकी ॥
तदपि धीरधरिकरसिप्रबोधा । कहुको मोहिंसमानजगयोधा ॥
दो० राम लषण सुग्रीव नल नील द्विविद हनुमन्त ।
साथ बिभीषण ऋषभकर आनबमारि तुरन्त ॥
अबलगि रहेउ भरोसा भारी । कुम्भकर्ण घननाद सुरारी ॥
सुनहुआजलगिकीन्ह न जूझा । इन सबकर पुरुषारथ बूझा ॥
मरेउ सो नर बानरके मारे । बातसुनत अतिलाज हमारे ॥
गिनती कौन बीरमें तिनकी । अतिदुरदशाकीन्हकपिजिनकी ॥
तजहु शोक कुल बधू पतोहू । उन समानजनिमानसिमोहू ॥
पुत्रि बिलम्ब करौ घटिचारी । देखहु मोर भयंकर मारी ॥
आनि शीश तव शत्रुन केरा । बिन प्रयास नहिंलावौं बेरा ॥
भोगत जंतु पराक्रम भोगा । नतुकिननिशिचरबनचरयोगा ॥
दो० मेरुउखारनहार जे धरा धरत कर बीच ।
तेभटखायेमशककशिशु कालकुटिलता नीच ॥
क्रोधावेश प्रगलभहि बोली । हृदयशोकतनुअचलनडोली ॥
समाधान नहिं मानत सोई । सुनि प्रलाप परितोष न होई ॥
नर बानर पुरुषारथ देखत । बड़ोप्रभाव छोट करिलेखत ॥
कूदि सिंधु कपि लंका जारी । लघुकर मानत ताहिसुरारी ॥
कुम्भकरण अतिकाय महोदर । ममपति गिरेउसमेतसहोदर ॥
ते रिपु चहत दशानन जीती । देखहु महामोह कर रीती ॥
उतर देउँ तौ पातक होई । कह बिबादकर सर्बस खोई ॥
फिरहिराज कछुमोहिं न काजू । बिनपियसकलनरककरसाजू ॥
दो० तुरतहि उठी सुलोचना गइ मयतनया पास ।
पदगहि रोवत सकलकह प्रकटशोकइतिहास ॥
आदिहि ते सब कथा बखानी । सुनिसुनि रोवत रावणरानी ॥
कहनिजपतिभुजलिखतबहोरी । रामलषण महिमा नहिंथोरी ॥

कह्यो बहोर दशकन्धर क्रोधा । मुये बिडंबन कीन्हेंसि बोधा ॥
सुनि निज पुत्रबधू की बानी । बोली दुखित मँदोदरिरानी ॥
कहत सो मानहु सत्य सयानी । सुनी जोनारदमुनिकी बानी ॥
पाछिल बात भई सब सांची । अनुभवकीन्ह न एकहुबांची ॥
देवि न होय मृषा ऋषिभाखत । अपने महामोह मन राखत ॥
अगली कथा समास समेता । सुनुपुत्री ऋषि बरणेउ जेता ॥
बैर भाव दशकन्धर जूझब । प्राणहुगये नीतिनहिं बूझब ॥
सिया शोक संकट से छूटहिं । बानर भालु राजघर लूटहिं ॥
सुर मन भूषण बसन बिमाना । भोगकरहिंबनचर कुलनाना ॥

दो० राज्य बिभीषण पाइ हैं अमर कल्प निरबाह ।
भावीबश दुखसुखजगत उपदेशिय कहुकाह ॥

मुनिवर बचन मोहिं परतीती । अनुभव दोउहार अरुजीती ॥
अब पुत्री परिहरि सब शोका । पतिसँग बेगिसाधपरलोका ॥
जाहु रामपहँ पतिशिर लागी । तजि संकोचआनाकिनमांगी ॥
आज न होइ लाज कर भूषण । समयहीनगुणगणियनदूषण ॥
है पुनि श्वशुर बिभीषण तोरा । बालितनय बालकसम मोरा ॥
एक नारि ब्रत रघुबर केरा । लषणसुयश तुमसुनेउघनेरा ॥
जाम्बवन्त मन्त्री सुग्रीवा । द्विविद मयंद महाबलसीवा ॥
जानहु ब्रह्मचर्य्य हनुमन्ता । शिवस्वरूपभवहरभगवन्ता ॥
सदा नीति रत राम नरेशा । तहांजात कहु कवनकलेशा ॥

दो० बिदित तोरपतिभुज लिखत लक्ष्मणरामप्रभाव ।
हमहूँऋषिभाषित कहेउ अबबिलम्बजनिलाव ॥

सुनत सासु मुखकर हितबानी । जाहुंसमपहँ असजियजानी ॥
बार बार बरणत सिर नाई । चली जहां लक्ष्मण रघुराई ॥
देखत कटक भालु कपि केरा । सिन्धु सुबेल महीधर घेरा ॥
उमगेउ मनो महोदधि दूसर । हरित पीत कपि धूमरभूसर ॥
व्योमलाल भाषत अनहेसी । मनहुं लेत बहुबादल घेरी ॥

गिरितरुधरभुज सहसभयंकर । जहँतहँप्रकटहोइजनुजलधर ॥
लक्ष्मण शेष सुअंक शीशधर । कटक जलधिसोवतराघववर ॥
अषवट जहँतहँ बैठिविभीखन । असमुकृती कहुँसुनैनदीखन ॥
दो० देखत डरत सुलोचना धीरज धरत बहोरि ।
महाराज रघुबीर कहँ बिनय सुनावो मोरि ॥
बानर सकल उठे अस बोली । अरिपुरते आवत इकडोली ॥
जानि परत रावण अब बूझा । भइ मति मेघनाद जबजूझा ॥
हठ तजि सीतहि दीन पठाई । तजहु शोच अब मिटीलराई ॥
जिहिलगिप्रकटकीन्हपुरआगी । बांधेउ सेतु हेतु जेहि लागी ॥
सोइ सीता अब बिनश्रमपाई । जानहु बिधिअनुकूलसहाई ॥
बिजय राम सुग्रीवहि आवा । सुयशबीर बानर कुल पावा ॥
बिरह राम लक्ष्मण कर छूटा । बिन कलेश लङ्कागढ़ टूटा ॥
युग युगकीरति चलब हमारी । कहँराक्षस कहँलघु बनचारी ॥
दो० इहिबिधिचारुबिचारकरि निश्चयकरिमनमाहिं ।
भयहुकाज रघुराजकर बात दूसरी नाहिं ॥
पैठत कटक अतिहि सकुचाई । अनबिनारि जनु परघरआई ॥
आगेहि जाइ देखि रघुबीरा । छबि श्यामलमय गौरशरीरा ॥
मरकतकनकछबिहिजनुनिंदत । धन्य सुजन महिमातेबिंदत ॥
मत्तगयन्द शुण्ड भुज दण्डा । धनुषबाणअसिधरियप्रचण्डा ॥
उर बिशाल अतिउन्नतकन्धर । कम्बु कण्ठ रेखा त्रय सुन्दर ॥
दशन पांतिकी कांति कहै को । लावतमन पटतरहि लहै को ॥
देखत अधरन की अरुणाई । बिम्बाफल बन्धूक लजाई ॥
शुक तुण्डक नासिका लजाई । थाकेउकबि पटतरहि न पाई ॥
दो० छबिमय गुणमय तेजमय राम उदधि अवगाह ।
जहांन पावत पार सुर किमि बरणै कबि थाह ॥
भृकुटी ललित कपोल सुहाये । शीश जटाकर मुकुट बनाये ॥
भालबिशाल तिलकयुत सोहै । ध्यानसमय मुनि मानसमोहै ॥

बलकल बसन तूण कटि बाँधे । करशर सुभगशरासनकाँधे ॥
बीरासन आसीन कृपाला । नव पल्लव प्रसून कर माला ॥
चरण सरोज बरणि नहिंजाई । जहँ मुनि मधुकररहे लुभाई ॥
प्रकट भई जिहि थलसे गंगा । श्रुतिपुराणकह कथा प्रसंगा ॥
नमत महेश बिरंचि जाहिको । लोचन गोचर होतकाहिको ॥
जन आरत भंजन जो कोई । भवसागर तारण के सोई ॥
दो० प्रणतपाल बिरदावली जिन चरणन की बान ।
शोक हरण संशय दलन करण सुमंगल खान ॥
कर जोरे अंगद हनुमाना । द्विविदमयंद कुमुदबलवाना ॥
जाम्बवन्त कपिपति बलशीला । ऋषभसुषेणसहितनलनीला ॥
महाबीर बानर सबराजत । लषणबिभीषणदोउदिशिभ्राजत ॥
मितभाषित प्रभु चरणसुसेवक । चितवतरुखरघुनन्दनदेवक ॥
सभामध्यसोहतअघमोचन । कीन्हेउसफलनिरखिनिजलोचन॥
करतदण्डवत शिरधरिधरणी । तिहिकाचरितबिभीषणबरणी॥
पुत्रबधू दशकन्धर केरी । बड़ि पतिव्रता जानिप्रभुहेरी ॥
मेघनाद की नारि सुशीला । असगतितवविरोधकरलीला ॥
करत प्रणाम प्रेम नहिं थोरे । करुणा बचनकहत करजोरे ॥
दो० मुये जानपति भुजाहिं तब लिख समुझाई मोहिं ।
महाराज रघुबंशमणि याचन आई तोहिं ॥
छं० परसे चरण कर प्रेम पूरण प्रणतपाल खरारिके ।
जिहिनमतशंकर शेषसुरमुनि धरणिभंजनभारके ॥
प्रभुजानसोबिनतीसुलोचनि करतकहिबिनतीघनी ।
जयशोकहरणकृपालुजयजयजयतिजयरघुकुलमनी ॥
प्रभुब्रह्मरूपस्वभावशीतल अतुलबलत्रिभुवनधनी ।
जयहरणधरणीभार बाहु विशाल खंडनखलअनी ॥
तव दीनबन्धु दयालु अपरमपार सबगुण आगरे ।
करुणानिधान सुजानशील सनेह रूप उजागरे ॥

षटअष्ट लोक जोरचत पालत प्रलय सो माया सुरी ।
केहिभांति बरणौंनाथ गुणगण नारिजड़मतिबावरी ॥
जेइ चरणईश महेश शारद श्रुति निरन्तरध्यावहीं ।
हूं भूरिभाग सरोज पद सोइ हर्षशिरसि लगावहीं ॥
छं० गहकर बानी शारँगपानी सबगुणखानी रामबली ।
सुरसुरभीरक्षक राक्षसभक्षक भक्तिहिरक्षकमानबली ॥
मैं रिपुसुतनारीजानअघारी अधिकारीनहिंदुखभारी ।
हरिबिरहदवारीअतिभयकारी सहबहुबारी दुखकारी ॥
तव शरणन आई जनसुखदाई रघुराईकरुणासागर ।
पतिमस्तकपाऊंजरिसँगजाऊं शिरपाऊंशोभाआगर ॥
पतिममतनत्यागीअतिबड़भागीअनुरागीजिनमुक्तिलही ।
ममताकिमितासूबरणूं आसू जासुअचलजगपतिरही ॥
थहिबिधिपदपंकजसेब्यरमाअजशिरनमिदोउकरजोरिरही ।
मुनिपंकजलोचनबचनसुलोचनिलोचनतेजलधारबही ॥
दो० असप्रभु दीनबन्धुहरि कारण रहित दयाल ।
तुलसिदासशठताहिभज छांड़कपट जंजाल ॥
तुम अन्तरयामी भगवाना । नहिंतवआदिमध्यअवसाना ॥
करुणा बचन सुनत रघुबीरा । पुलकरोमभयोशिथिलशरीरा ॥
देहुं जियाय तोर पति आजू । करहू लंक कलप शत राजू ॥
छांड़ि शोच अब मन हरषाहू । तुरत भवनअपने फिरजाहू ॥
मुनि अस सत्यसिंधुकर बानी । मनमें बनचरअतिभयमानी ॥
कहि न सकतकछुप्रभुरुखदेखी । कहा करब करतारबिशेखी ॥
सब देवन कर शोच न जाई । जो कर कृपा राम इहिज्याई ॥
दो० राजबिभीषणलंककर किहिबिधिकरिहहिं जाइ ।
समुझि बैर घननाद जब गहिहिशरासनधाइ ॥
सुखरुखदेखि कपिनभयमाना । प्रणतपाल भगवन्तसुजाना ॥
देखि बहुत रघुबर डर छोहू । बिनय करत दशकंधरतोहू ॥

तुम उदार सब देवे लायक । करुणामय देखे रघुनायक ॥
हमहुँ बिचारि दीख मनमाहीं । जीवन ते अस मरण सराहीं ॥
भुजबल जीति लोक बशकीन्हे । चौदह भुवनभोग करिलीन्हे ॥
रण तीरथ याचक बड़ चीन्हा । प्राणसुधनलक्ष्मणकरदीन्हा ॥
अब न उचितपतिदैउपहारा । तेहिपरअधिकसोदरशतुम्हारा ॥
हमहूँ जाइ मरब सतसाधी । मिलबतुमहिंजसमिलतसमाधी ॥
दो० निर्मल गति अवसर भयउ सुनहु सत्य रघुबीर ।
तुमहिं मिलत नहिंहोयभव यथासिंधु गतिनीर ॥
मनकी जाननहार सुजेवा । भवसागर तारहु यह खेवा ॥
लीन्हेउ राम कपीश बुलाई । मेघनाद शिर दीन्ह मँगाई ॥
पाय कृतारथ मानेउ आपू । पिया विरह संभव परितापू ॥
अंचल पोंछत मुखकी धूरी । कहि मम प्राण सजीवनमूरी ॥
देख सँदेह कहत सुग्रीवा । भुजगहिलिखतजीहबिनग्रीवा ॥
हँसिहहि बदन तोहिंहै सांची । नातर निशिचर मायायांची ॥
कितअसज्ञान मृतकभुजगावा । जो मुनिवर साधननहिंपावा ॥
प्रभु असकहेउहँसबयहशीशा । करतकुतर्क न उचितकपीशा ॥
दो० शिर सों कहतसुलोचना हँसहु बेगि ममनाथ ।
नातर सत्य न मानिहैं लिखा जो तुम्हरे हाथ ॥
क्षणकबिलम्बकीन्ह नहिंबोला । मृतकबदनमूंदत नहिंखोला ॥
पुनिपुनिकहत सो नागकुमारी । अमितभयउ रणमेंकरिमारी ॥
लगे लषण शर क्षोभ बढ़ावा । प्रभुसमीपकसमोहिं लजावा ॥
जो मन बचन करम यह देही । पति देवता न आन सनेही ॥
तौ प्रभु सभा बीच शिर बोलै । रहहिआयशयश सुयशअमोलै ॥
जो जानत तव यहगति साईं । बोलि पठावत पितहिसहाईं ॥
सुनितियबचनहँसेउतबशीशा । चौंके चकितभालु भटकीशा ॥
हँसेउ ठठाय बदनसब देखा । बिस्मयभयउसकलजिहिपेखा ॥
कुलिश समान सुनानहिं जाई । रहेउ सोबदनबहुरि अरगाई ॥

सकुच कपीशहि तोषेउ नारी । बड़ आश्चर्य्य भयोबनचारी ॥
पूछत कपिपति पद शिरनाई । कारण कवन हँसाशिरसाई ॥
प्रभुकह सुन सुग्रीव कपीशा । शीश हँसेकर सुनहु अदीशा ॥
मनक्रम बचनपतिहि सेवकाई । तियहिन इहिसमआनउपाई ॥
असजियजानि कराहिपतिसेवा । तिहिपर सानुकूल मुनि देवा ॥
यह सतवतिअहिराज कुमारी । तेहि सतते हँस शीशसुरारी ॥
सुनिप्रभुबचनकपिनसुखमाना । पुनिपुनि चरणगहे हनुमाना ॥
सुतुगिरिजाअसप्रभु प्रभुताई । केवल भक्तहिं देत बड़ाई ॥
जासु दृष्टि जगउपजत नाशा । असकौतुककर केतिकआशा ॥
दो० शीशपाइप्रभुचरणगहि बहुबिधि बिनय सुनाय ।
आजकोदिन रणपरिहरहु ममहितकोशलराय ॥
बहुरि बिभीषण पगन परी सो । रघुपतिचरणदियेमनपुनिसो ॥
तुम पितु सम दशकन्धरभाई । इहिकुलकी तोहिंलाजबड़ाई ॥
मुनि पुलस्त्य परिवारक दीपा । पायउ फल रघुबीर समीपा ॥
महा मोह बश अनभल माना । ज्ञानभयो तवगुणपहिंचाना ॥
युग युग करहु अकण्टकराजू । सहितसुकीरतिसुकृतसमाजू ॥
सुमिरततुमहिंसुजनगतिपावा । रघुपति चरितसंगकरगावा ॥
सुनत बिभीषण मनकरुणाभर । प्रकटनकहतसमयबिरहाकर ॥
काल कर्म्मगतिकह समुझाई । चली तुरत गुरु आयसुपाई ॥
दो० बाहरकरिकपि कटकते फिरेउ बिभीषण आप ।
बिसरेउ दशमुख बैरही हृदयअधिक सन्ताप ॥
शिर चढ़ाइ पालकी चढ़ी सो । रघुपति कृपा प्रभाव बढ़ीसो ॥
हृदय राखि मूरति घनश्यामा । रसना रटत निरन्तर नामा ॥
सरित सिन्धुसंगम जहँपावन । अससुधिपाय गयोतहँरावन ॥
संग मँदोदरि सब रनिवासू । मनोशोकरबि कीन्ह प्रकासू ॥
पाय रजायसु सेवक धाये । चन्दन अगर सुगँधबहुलाये ॥
रचिहु दारुण चिता बनाई । जनु सुरलोक निशेनी आई ॥

करिप्रणाम सब जन परितोषी। धीरजधरसितासु मतिपोषी॥
शिरभुजधरि बैठीकरि आसन। भइजनुयोगासिद्धिकरभाजन॥
दो० देख अनलज्वालावढ़ी लपट गगन लगिजाय।
॥ लखी न काहू जात तेहि सुरपुर पहुंचीआय॥
इति॥
सुत बध सुना दशाननजबहीं। संभ्रम मूर्छिपरामहितबहीं॥
दुखितभयउलोचनभरिआवा। जनुनिजमणिअहिराजगँवावा॥
हा सुत सन्तत आज्ञाकारी। करिबिलाप दशकन्ध पुकारी॥
शक्र आदि जीतेउ सब देवा। सुरमुनि बन्दि करायहुसेवा॥
दूसर रहा न भुजबल दापा। स्वर्गभूमि तल तपेउप्रतापा॥
इहि बिधिकर बिलाप लंकेशा। भयउ तेजहत सुन उरगेशा॥
मन्दोदरी रुदन करि भारी। उर ताड़ति बहुभांति पुकारी॥
नगर लोगसब ब्याकुलशोचा। सकलकहहिंदशकन्धरपोचा॥
दो० तब दशकन्ध अनेक बिधि समुझाई सबनारि।
॥ नश्वर रूप प्रपंच सब देखहु हृदय बिचारि॥
तिनहिं ज्ञान उपदेशेउ रावन। आपनमन्दकथा अतिपावन॥
पर उपदेश कुशल बहुतेरे। जे आचरहिं ते नर न घनेरे॥
तासुक्रियाकरि निशिचरनाहा। भयउशोचबशअतिउरदाहा॥
सचिवआइ सब लगेबुझावन। वादि बिषादकरियजनिरावन॥
सुतबितनारि त्रिबिध सुखकैसे। उपजहिं घटा जाहिंनभजैसे॥
तड़ित बिदितदेखियघनमाहीं। रहैन थिरतहँ तुरत छिपाहीं॥
यह जियजानिसुनहुदशभाला। बचहि नकोउजगआयेकाला॥
अब प्रभु यतन बिचारहुसोई। रिपुकरनाश जवनबिधिहोई॥
॥ क्षेपक॥
दो० लगेउ करन बिचारपुनि बहुप्रकार दशशीश।
॥ समुझिहृदयअहिरावणहि आयउजहांगिरीश॥
दशकन्धारि तब तहँनिशिबीती। सन्ध्या बन्दन कीन्हसप्रीती॥

लागेउ करन ध्यान दशशीशा । करिहर्षित संपुट भुजबीशा ॥
शंकर सेवक अति अनुरागी । सुन खगेश तेहिते बड़भागी ॥
मंत्राकर्षण जपि दशभाला । अहिरावणचित डोलपताला ॥
लगेउकरन सो मन अनुमाना । केहिकारणदशमुखअकुलाना॥
निश्चरनाह भुवन वश जाके । जीतन कहँ न वीरकोउताके ॥
मन क्रम बचनआन नहिंसेवी । धरेउ ध्यान उरकामददेवी ॥
चलेउ बहुरिआयउ सो तहँवां । शिवमंडप रावण रहजहँवां ॥
निशिचरपतिकहितेहिशिरनायउ।करगहिनिजआसनबैठायउ॥

दो० अहिरावण तबरावणहिं बूझीकुशल सप्रीति ।
प्रथमकही तेहिसबकथा जैसेभगिनिअनीति ॥

बध खरदूषण जिमि सुधिपाई । मृग मारीच कपट कृतगाई ॥
कहेसि बहुरि सीताकर हरणा । लंकदहन हनुमतकर बरणा ॥
सेतुबांधिजिमिप्रभुचलिआयउ । बालिकुमार बिवाद सुनायउ ॥
अनी अकम्पनअरु अतिकाया । परेसमरमहि सुनुअहिराया ॥
तातकुशल अबसबइ सिरानी । कटकनिशाचरसकलनशानी ॥
कुम्भकरण घननादहु मारे । राम लषण दुइमनुजाबिचारे ॥
आनेहु बोलि तोहिं निजपासा । कहहु सुयतनहोइ रिपुनासा ॥
सुनतशोचभा मनअहिरावन । बोला बचन सुहावन पावन ॥
सुनरावण जग नीति पियारी । करे अनीति होय भयभारी ॥
बिना बिचारि रारि तुम ठानी । कीन्ह सेन कुल सर्वस हानी ॥
मनुज प्रताप प्रभाव न जानेउ । सबतेबड़तेहिलघुकरिमानेउ ॥
यदपिन योग मोहिं अस बाता । तदपिहरहुँतवलगिदोउभ्राता॥
लै पताल देविहि बलि देहौं । यशपूरण निशिचरकुललेहौं ॥
लैजेहौं तुम जानेउ तबहीं । रविसमतेजहोइनिशिजबहीं ॥

दो० कहिअसबचन प्रबोधकरि शीषनाइ बलभाखि ।
आयउ रघुपतिकटकतब निजदेविहि उरराखि ॥

सुभ्मननिजकर अतिअँधियारी । मर्कटभट जागहिं तहँभारी ॥

कहहिंजयतिजयजयतिकृपाला।अतिहिअगमजहँनहिंगतिकाला॥
तहँ मारुतसुत रचेउ उपाई। करि लंगूर कोट कठिनाई॥
सो शोभा इहि भांति सुनाई। भुजगराज कुंडली लगाई॥
देखिय उन्नत शैल समाना। द्वार जहां तहँ मुख हनुमाना॥
देखि हृदय अहिरावण हारा।किमिरबिगृहकरातिमिरपसारा॥
एको युक्ति न मन ठहरानी। कपटवेष तेहि कीन्ह भवानी॥
वेष बिभीषण सब अनुहारी। पवनतनय पहँगा छलकारी॥

दो० सहज प्रतापी पवनसुत पुनिसुरपति पति दास।
तिनहिंनिदर चल रामपहँ मूढ़हृदयनहिं त्रास॥

मरम न जान प्रभंजन जाता। कीन्हेसिगमनबिभीषणभ्राता॥
ठाढ़होहु बोलेउ सुनु भ्राता। चलेउजहां कृपालु जनत्राता॥
मैं रघुपति सन आयसु पाई। संध्याकरन गयउँ सुनभाई॥
तेहिते तुरतचलेउँ प्रभु पाहीं। भइ बिलम्बजनिरामरिसाहीं॥
सत्यबचन कपिनिजमनमाना। सुनुखगेश भावी बलवाना॥
कपट चतुरगति जानि न जाई। परमन हरै हरहि धनभाई॥
आयसु पाइगयउ सो तहँवाँ। रहेफणीशअरुप्रभुदोउजहँवाँ॥
कपिपति जामवन्त नल नीला। बालीसुत सुखेन बलशीला॥

दो० द्विविद मयन्दरुकीशगण गय गवाक्ष कपिबीर।
सहित विभीषण अपर भट सोये सब रणधीर॥

तिनहिं मध्य रावण शशिराहू। एकसंग सोवत फणिनाहू॥
दक्षिण दिशि सोवत रघुनाथा। अनुजबामदिशितेहिपरहाथा॥
प्रभुकर करपर राजत कैसे। जातरूप पंकज फणि जैसे॥
कपि समूह जनु सागर चीरा। तहँ सोये मानहुं दोउबीरा॥
सुभगबाण धनु धरे बनाई। लक्ष्मणसह समीप रघुराई॥
अहिरावण मन कीन्हप्रणामा। देखि राम सुन्दरघनश्यामा॥
ब्रह्मादिक जेहि ध्यान न पावहिं। मुनिमहेश पूजा मनलावहिं॥
कराहिंबिबिधजपयोग बिरागी।जपहिंनिरन्तरनिशिदिनजागी॥

सो प्रभुतेहिं देखा भरि लोचन। कृपासिन्धु सेवकभयमोचन॥
बहुरि हृदय तेहिकीन्हबिचारा। करहुँ काज रावणअनुसारा॥
कछु निजमायाकृत गुण आई। कवनीभांति जाहिं दोउभाई॥
दो० मोहन ते मोहे सकल मंत्रन ते मुख मूंदि।
भयउ अदृश्यउठाइकरि प्रभुहि चलेउ लै कूदि॥
यहिबिधि गयउ दुहुँनलै सोई। नभमारग प्रकाशअति होई॥
सो प्रकाश जब रावण देखा। कियप्रमाणतेहिबचनबिशेखा॥
मनमहँ हर्ष करहि अति भारी। अहिरावण लैगा असुरारी॥
लै निज लोक गयउ पलमाहीं। भयउशोरतब कपिदलमाहीं॥
जागे बानर श्रीहत भारी। देखियजिमिसरिताबिनुबारी॥
पुनिदेखियजिमिनिशिबिनुइन्दू। भे बानरजिमिउडुबिनुचन्दू॥
रबिबिनु दिवस जीवबिनु देहा। जिमि देखियदीपकबिनुगेहा॥
एकहि एक लगे तब बूझन। कहां गये त्रैलोक्य बिभूषन॥
दो० शोधेउ सबमिलि कटकातिन नहिंपाये दोउबीर।
भेब्याकुलसब भालुकपि जिमिजलचरगतनीर॥
सकलकहहिंयहबिधिकहकीन्हा। रघुपतिबिरहप्राणकतलीन्हा॥
शोकग्रासित धरिसकहिंनधीरा। कहां राम लछमण दोउबीरा॥
करुणा कराहिं कपीश अपारा। बनीबात बिधि कहाबिगारा॥
कटकनिशाचर सकल सँहारी। रहा एक रिपु रावण भारी॥
सोउ न रहत राम शर लागे। भायउ हमसब परम अभागे॥
कबहुँजोदशशिरअरिरणजीताहिं। उत्तर कवनदेबहमसीताहिं॥
असकहि बिकल मूर्च्छिमहिपरे। लागतबज्र शैलजिमि गिरे॥
दशा बिभीषण कही न जाई। बिगतबत्स जनुधेनु लवाई॥
दो० सहित पवनसुत ऋक्षपति दुखमनभावड़िभांति।
खगपति सूझन कतहुँकछु तमअपार तिहिराति॥
पवनतनय पुनि कह सबपाहीं। बिस्मय एक होत मनमाहीं॥
कोउ इक आव बिभीषण वेखा। प्रभुके निकट जातहमदेखा॥

पूछत बचनकहेसि अतिनीका । कपटनजानिथनिशिचरजीका॥
बचन सुनत बोलेउ लंकेशा । अहिरावण लैगा अवधेशा ॥
पन्नग लोक निवासी सोई । मम तनुवेष अवरनाहिंकोई ॥
महाबली जानै सब माया । निश्चयतेहिदशशीशपठाया ॥
जेहि बल होइ तहां सो जाई । ताहि जीति आनै दोउ भाई ॥
कहेउ भालुपति सुनु हनुमाना । तवबलतात सकलजगजाना ॥
बेगि सो यतन बिचारहु ताता । कृपासिन्धु आनहुदोउभ्राता ॥
दो० बिलखिकहेउ कपिपति बहुरि सुनमारुतसुततात ।
बिनु रघुनायकजन्मधिग पलयुगसरिस बिहात ॥
यथा तृषित बिनु बारिद बारी । रबिबिनुजलजमीनाबिनुबारी ॥
भट अशस्त्र रणअनी अनाथा । बह्नि अनिंधन गातसमाथा ॥
दीप अवर्त्ति सकल यथाभंगी । तिमिहमसब देखियबजरंगी ॥
जिमि सीतासुधि भेषज आनी । तेहिप्रकार आनहुसुखदानी ॥
सुनत बचन मारुतसुतबोला । राखहुचितथिरकटकअडोला ॥
भुवनचारिदश तीनिहुँ लोका । आनहुँप्रभुबलप्रभुतजुशोका ॥
अब तुम सजग रहेउ सबभाई । लरेहुकालसन जो चढ़िआई ॥
असकहिसकृतचलेउ हनुमाना । गरजतप्रलयपयोधिसमाना ॥
चलत बाटइक तरुतर गयऊ । गीधिनिगीधकहतअसभयऊ॥
दो० नारि गर्भिणी गृध्रकर बोली पतिसन बैन ।
आनहु आमिष मनुज पिय खाउँहोइ जियचैन ॥
तासुबचनसुनि खगअसकह्यऊ । अहिरावण रामहिंलै गयऊ ॥
देइहिबलि देबिहि सो जाई । सो आमिष बड़भागन पाई ॥
कवनेउ यत्न देव मैं आनी । असकहिबिहगबामसनमानी ॥
जबहिं पवनसुत अससुधिपाई । चलेउ तहां सुमिरत रघुराई ॥
अभय प्लवंग पतालहि गयऊ । अहिरावणपुरप्रविशतभयऊ॥
द्वारपाल मकरध्वज कीशा । कपिसनडाटि कहतबहुरीशा ॥
निदरि जातमोहिंतोहिंडरनाहीं । दीपहि जिमिनपतंग डराहीं ॥

जानेसिमोहिंनमरुतसुतबालक। स्वामिभक्त भंजनमुखकालक॥
सो० सुनत बचन हनुमान बोलतभे बिस्मय बिबश।
अरे मूढ़ अज्ञान मोरे सुत सपनेहुं नहीं॥
कहत बचन शठ संयुत खोरी। कामबिबशकब भइमातिमोरी॥
मम सुत बनासिमूढ़ केहिकाजा। इतना कहत तोहिंनहिंलाजा॥
केहि प्रकार तुव ममसुतभयऊ। निजउत्पतिमोसनकिनकहऊ॥
सुनत कहहि मकरध्वजबचना। किहेउदाह रावणपुर रचना॥
जब आयउचलि उदधिसमीपा। बहेउस्वेदतब तनकपिदीपा॥
सो प्रस्वेद सागर महँ गयऊ। पियउमीन तेहिते मैं भयऊ॥
यहि प्रकार मैं तव सुत ताता। गोवहुँनहिं निजपितानमाता॥
अहिरावण सेवा मैं करहूं। रखहुँ द्वार न कबहूं टरहूं॥
दो० सत्य बचन हनुमानकहि पुनि पूंछी सबबात।
लावा लक्ष्मण रामकहँ काह करत सो तात॥
कहहु तात तेहि अरुथल नाऊं। जान चहौं मैं तव प्रभुठाऊं॥
यह वृतान्त अस जानहुताता। यह मैं श्रवण सुनेउँ कछुबाता॥
सीतापतिअरु फणिपति साथा। सो लै आयउ निशिचरनाथा॥
करत होम तेहि कारण आजू। देविहि बलि देई नृप राजू॥
जोकछुनिजश्रवणनसुनिपायउँ। तातसकलसोतुमहिंसुनायउँ॥
निज प्रभुकाजलागि दुखसहेऊं। तुमसन सत्यबचनमैं कहेऊं॥
जान कहहु तुम जान न देऊं। प्रभुआज्ञातजिअयशनलेऊं॥
सुनिअस पेलिचलेउ हनुमाना। भयउ क्रोध मकरध्वज जाना॥
दो० तेहिमुष्टिक कपिकहँ हनेउ पुनिमारेउ कपिताहि।
हनहिं परस्पर एकइक बलसमान घट नाहि॥
एकहिं एक सकहिं नहिं पारी। पिता पुत्र दोऊ भटभारी॥
सुतहिं लूमसन बांधि भवानी। चलेउबातसुतबिलँबनआनी॥
धरि लघुरूप होमगृह देखा। जीव सजीव परे नाहिं लेखा॥
तहँ देवी कर ममरूप रहई। शोणितघटबहुको कहिसकई॥

बिबिध भांति मेवा पकवाना । धरे आनि देबी अस्थाना ॥
मालिनि तहँ प्रसून लै आई । सुमनमध्य प्रबिशेउकपिराई ॥
सुमनहुँ ते करि अति हलुकाई । लेत पानि जेहि जानिनजाई ॥
जब देबिहि सो पुष्प चढ़ायउ । बिकटरूपतबकपिदिखरायउ ॥
दो॰ छुवत चरण देबी तुरत धरणी रही समाइ ।
मुखबगारि ठाढ़ेभये कपि छबिलखत डराइ ॥
देबी प्रकट समुझि खलझारी । करहिं बिचारहृदयअतिभारी ॥
कहहिं किदेबि प्रकट भइआजू । बड़भागी भा निशिचरराजू ॥
करि प्रणाम पुनि पूजा करहीं । जो चढ़ाव सोकपिमुखपरहीं ॥
जो जहँ रही बस्तु समुदाई । बची न कछु सकलकपिखाई ॥
कपि खिलारि कौतुक बिस्तारा । भाचहइ निशिचर कुलसंहारा ॥
अहिरावण उर भा सुख कैसे । चढ़े कांधपर बलिपशु जैसे ॥
जबहीं होम सिद्ध तेहि जाना । लक्ष्मणराम तुरत तहँआना ॥
ठाढ़ कीन्ह प्रभु कहँतहँआनी । निशिचरबहुआयुधधरिपानी ॥
कोऊ गदा कोऊ धनु बाणा । शक्तिशूल धरि कोऊ कृपाणा ॥
दो॰ तोमर मुद्गर परशु असि पाश परिघअरुवेत ।
शूल भुशुण्डी पटि परशु देखत बिसरत चेत ॥
माया बल ते सकल बिचक्षण । अतिबिकारमयमूढ़कुलक्षण ॥
यहिबिधि सकलबीर तहँरहहीं । अहिरावण आज्ञा दृढ़गहहीं ॥
आयसुपाइ खड्ग तिन्हकाढ़े । मारन कहँ प्रभु पर भे ठाढ़े ॥
कोउ कह राजनीति अनुसरहू । भरित्रियदण्डबिलँबअबकरहू ॥
पुनि असबचन मूढ़मतिकहहीं । सुमिरहुजोतुम्हरेहितुअहहीं ॥
नाहिंत काल आइ नियराना । निशास्वप्नसमदोउजनप्राना ॥
बोलहिं मूढ़ असम्भव बानी । सकुच लगै सो कहतभवानी ॥
दो॰ फणिपति चितवत रामतन राम चितव अहिराज ।
प्रभुकर कौतुक कहिय किमि सुनौ दशाखगराज ॥
बिहँसिकीन्हप्रभु हृदयबिचारा । जपै सकल जग नामहमारा ॥

जाना देवि रूप हनुमाना। बिहँसिकहातबरामसुजाना ॥
कालकौर तुम सुमिरहु रक्षक। भई तुम्हारि देवितुवभक्षक ॥
सुनत गिरा तिन मारन ठयऊ। घनसमान कपिगर्जतभयऊ ॥
निशिचरसकल त्रसितभेभारी। कहहिंवचनभयहृदयबिचारी॥
अहिरावण भलकीन्ह न काजू। आने कपट वेष सुर राजू ॥
तेहिते देवि क्रुद्ध कृत आजू। अबभा सबकरमरणसमाजू ॥
संभ्रमबश तब निशिचरभारी। बहुरिकीशगर्जेउअति भारी ॥

दो० प्रकट रूप करि पवन सुत अट्टहास गम्भीर।
अतिभयत्रासितरजनिचर सुनहुउमामतिधीर ॥

डगमगाननिशिचरअभिमानी। मारुतवेग यथा नदि पानी ॥
तेहिक्षण कपि लीन्हे दोउभाई। धुनततूल निशिचरसमुदाई ॥
बीनि कृपाण लीन्ह हनुमाना। काटतभुज शिर कृषीसमाना ॥
खण्डखण्ड तबखलदलकीन्हा। गहिपदडारिअनलमहँदीन्हा॥
करि लंगूर कोट कपिराई। तेहिमहँघिरिकोउभागिनजाई॥
इहि बिधि सबनिशिचरसंहारे। अहिरावणलखि बचनउचारे ॥
रेकपि ढीठ त्रास नाहिं तोहीं। अहिरावण तैं जान न मोहीं ॥
जम्बुमालि कहँ जिमि तैं मारा। अरुरावणसुत हतेउबिचारा ॥

दो० कालनेमि समनाहिं मैं करु कपिबचन प्रमान।
असकहिखड्ग प्रहारकिय कपितनुबज्रसमान ॥

लै असि ताहि पवनसुतमारा। काटि शीश पावकमहँ डारा ॥
आहुतिपूर्ण दीन्ह तब कीशा। लैपुनिचलेउलषणजगदीशा ॥
मकरध्वज प्रणाम तब कीन्हा। बन्धन छोरिराज तेहिदीन्हा ॥
इहांराज भोगहु तुम ताता। भजहुसदाममप्रभुदोउभ्राता॥
असकहिकपिनिजदलसोआवा। हर्षेउकटक सबनिसुखपावा ॥
मृतकशरीरप्राण जिमिआवहिं। मणिगणपाइफणीसुखपावहिं॥
बिछुरि अलभ्य मिलेजनुआई। तिमिहर्षे सब लखिदोउभाई ॥
मिलेउ कपीशचरण धरिमाथा। पुनिपदगहे निशाचर नाथा ॥

दो० जामवन्त अंगद सहित मिले भालु अरुकीश ।
सनमाने कहि बचनप्रिय लषण कोशलाधीश ॥
बहुरि सबहिं भेंटे हनुमाना । कहहिं तात तुम राखे प्राना ॥
देवन सुमन बृष्टि तब कीन्ही । प्रमुदित हृदय दुन्दुभीदीन्ही ॥
अनुज सहित हर्षित रघुबीरा । कहेउ बचनसुनुतनयसमीरा ॥
तव समाननहिं कोउहितकारी । सुरमुनि सिद्धमनुजतनुधारी ॥
यशतुम्हार त्रिभुवनमहँभयऊ ।सुनिप्रभुबचनचरणकपिनयऊ॥
नाथ कीन्ह सब मैं केहि लेखे । तरणी चलत अगमजलदेखे ॥
तैसे सब प्रताप तव नाथा ।सुनिअसमिलेकपिहिरघुनाथा॥
कटक सहित हर्षे दोउ भाई ।तेहिअवसरसुखकिमिकहिजाई॥
छं० कहिजाइसुखकिमितेहिसमयकरसुनहुगिरिजाचितधरे।
रघुबीर रुख अवलोकि हर्षित आरती सुरगण करे ॥
अति प्रेमसों मारुत सुवनयश गाइ बिबुधनअसकहा ।
नरनारि यह कीरति सुनतगावत लहतमंगल महा ॥
दो० करि बहुबिधि हरिआरती बाणी सत्य सुनाय ।
रामचरण अनुरागेउ अमर सुमन झरिलाय ॥
देवनिडर प्रभु गुणगणगावहिं। आरतहरकहँ बिनयसुनावहिं॥
बिबुधबिनयरघुपति सुनिकाना । कहप्रभुसत्यासिन्धु भगवाना ॥
चतुरानन वर दीन्ह अपेला । तेहि कारणयहबाढ्यो खेला ॥
नाहिंत लषण एक पल माहीं । राखत यातुधान कुल नाहीं ॥
अजहूँ होय रण कौतुक भारी । निरखहुतुमसबशोचबिसारी ॥
अब जो रहेउ निशाचर शेखा । भटमहँ जासु भुजाकर रेखा ॥
ते रण महि महँ हतहुँ प्रचारी । बिनुश्रमसबसों कहतखरारी ॥
शम्भुकृपा अब संशय नाहीं । सुनिसुर अति हर्षे मनमाहीं ॥
दो० सत्यवचन सुनिरामके आनन्दित सुर यूह ।
चले कहत जयजयति प्रभु बर्षे सुमनसमूह ॥
यह चरित्र शुचिसुभगसुहावा । खगपति रामकृपा मैं गावा ॥

अब हियहरषि सुनहु द्विजराई। मानसकहहुं सुमिरिरघुराई॥
याज्ञवल्क्य पदबंदि सप्रीती। भरद्वाज बोले शुचिनीती॥
यहचरित्र अति रुचिर सुहावा। सुनिमममनाथपरमसुखपावा॥
अहिरावण बधान्त भगवाना। चरितकियेसो कहहुबखाना॥
सुनिमुनिबिनय स्रूपचपुलकाई। बोले हृदयसुमिरि गिरिराई॥
प्रश्नतुम्हारतात अतिपावन।सहजसुभगसज्जनमनभावन॥
मानस हरि चरित्र सुठिनीका। सुनतकरतजोकोउमनफीका॥

दो० सोई जग बंचक सुनहु जेहि मानस न सुहाय।
भवसागरसहँ भ्रमतसो अमितकलपचलिजाय॥

मानस सुनत न मनहिं अघाहीं। तासमधन्यअवर कोउनाहीं॥
धन्यधन्यतुमसनकोउआना। ललितचरितअतिसुनहुसुजाना॥
रामलषण दल सहित बिराजे। जयतिरामकहिकपिगणगाजे॥
राम सेन सुखमा अधिकाई। निगमागम जानेउ बुधभाई॥
उहां दशानन सब सुधिपाई। दूत सँदेश दीन्ह सबजाई॥
अहिरावण कर बध सुनिकाना। भयउतेजहत अतिदुखमाना॥
बचनबज्र सम लागेउ ताही। संभ्रममूर्च्छिपरेउमहि माहीं॥
कटेपंख जिमि बिहग बिहाला। रंगचीरगत निशिहिमकाला॥
मुखसुखान लोचन जल बहई। बचनन आवशिरधुनिरहई॥

दो० मयतनया तब आइ पुनि बहुप्रकार समुझाइ।
मान न मूरुख कालबश परम क्रोध कहँ पाइ॥

नारिबचनसुनि तेहि रिसबाढ़ी। उठि बैठेउ धरि धीरजगाढ़ी॥
तेहि अवसर मंत्री यक आवा। करिआदर दशमुख बैठावा॥
सिन्धुरनाद नाम बलवाना। वृद्ध ज्ञानमय परम सुजाना॥
सदा बिभीषण कर सँग ठयऊ। कबहुंदशमुखसभा न गयऊ॥
आवा सो भल अवसर पाई। कहेसिनीति सबबाहिं बुझाई॥
ज्ञानकथा दशमुख न सुहानी। तबबहिराइ बातकह आनी॥
सिन्धुरनाद हृदय अस गुनेऊ। प्रभु दुहुँतागहदपट बुनेऊ॥

अब यहिकहौं सो सहजउपाई। जेहियहिमूल समूल नशाई॥
दो० यहबिचारि बोलेउ सचिव सुनहु दनुज कुलराउ।
धीरधरहु संशय विगत कहहुं सो करियउपाउ॥
अत्तादिकन सुतन बल दूना। कस सुरारिमन मानहु ऊना॥
सचिवबचनसुनिदशमुखकहई। अब हमरे कुलकोभटअहई॥
अपने मनमहँ करहु बिचारा। है नारांतक तनय तुम्हारा॥
मूल अभुक्त माहिं भा जोई। दियोबहाय मरानाहिं सोई॥
शम्भुप्रसाद ताहि कछु भयऊ। पुर बिहवाबल नृपतादयऊ॥
कोटि बहत्तर एक प्रभाऊ। राजा प्रजा भेद नहिं काऊ॥
दूत पठाइ बुलावहु ताही। जीतिहिसो रिपुरणके माही॥
दनुज अधीरा चतुरचरपठवो। धरहुधीरचित चिन्ताघटवो॥
दो० तासु मंत्र सुनि दशबदन हृदय प्रमोद अमान।
धूमकेतु कहँ बोलि ढिग समभायउ सनमान॥
धूमकेतु तुम परम सयाना। लै मम पाती करहु पयाना॥
बसत जहां नारान्तक राजा। तहां न तात अवरकरकाजा॥
अवसर पाइ हेतु समुभाई। सपदि ताहि लै आनौ भाई॥
आयसु पाइ चारतहँ गवना। यहसुनिबिहँसिकह्योअहिदवना॥
काकनाथ यह गाथ सुहाई। मोसन तातकहहु समुभाई॥
नारान्तक उतपत्ति यथा बिधि। पुरबिहवाबलगाकवनी सिधि॥
सुमिरि काकपति उरअवधेशा। मनप्रसन्न करकह काकेशा॥
अति सुन्दर शुचि यह संबादू। चितथिरकरि सुनियेउरगादू॥
दो० नख चौगुण बसु ऊनतहँ सप्त अकाशमिलाइ।
इतने निशिचर एक दिन भे रावण पुर आइ॥
पुर महँ उपजे खल इकसाथा। तबसुनिहरषानिशिचरनाथा॥
निज गुरुबोलिचरण शिरनाई। बूझामुदित सो कलशधराई॥
मृगुनन्दन तब तेहिसनकहेऊ। आजु बालसब मूलन भयऊ॥
सत्य कहत दशमुख तुम पाहीं। भये आजु जे तव पुरमाहीं॥

बेलुत सबनिजनिज पितुघाती । मुखदेखत सुनसुर आराती ॥
धराखे धन सहित बिनाशा । होइअवशिनहिंउबरनआशा॥
शुक्र वचन सुनि डरे निशाचर । कहकरिये अतिवाद परस्पर ॥
निश्चयकीन्हप्रसबशिशु आजू । सौंपियासिन्धुहिअवरनकाजू ॥
दो० सपदि करहु सबकाज यह लावहुबाल बटोरि ।
राखे होई हानि अति कह दशवदन बहोरि ॥
सेवक दशमुख आयसु पाई । धाये तुरत चरण शिरनाई ॥
रावण आयसु नगर पुकारी । सुनहुसकल पुरनरअरुनारी ॥
आजु अभुक्तमूल भये बालक । डारहुसागर सबकुलघालक ॥
बोरे सबनि बाल इकठाईं । भावीवश मधु माखी नाईं ॥
पाय अधार वृत्त बट बोरा । पावन लगे चीर चहुँ ओरा ॥
पीवत चीर अब्द भर साती । पुष्टभयेखल निशिचरजाती ॥
पुनि सब एक संग तहँ जाईं । सुरसरि संगम भा जेहिठाईं ॥
तहँशिवमन्दिरपरम सुहावा । सबनिबिलोकिमुदितशिरनावा ॥
छं० शिरनाइमुदित बिलोकि शिवमन्दिर सुहावनपावनं ।
कछुदिनरहेतहँ सकलपुनि उठिचलेसुनअहिदावनं ॥
रावणपुरी ते दिशाप्राची कोश सत रस चलिगये ।
बैठे जलधिमहँ पाइथलवर शम्भु चरणनचितदये ॥
दो० जानत नाहिं उत्पत्ति निज मनमहँ करतबिचार ।
गे तेहिढिग जाकर बिदित रविते छठवीं बार ॥
हरिअरिगुरुनिजशिष्यनचीन्हा। करतप्रणाम आशिषादीन्हा ॥
कहिनिजनाम सबनिसमुझावा । कुलगुरुजाना बिनयसुनावा ॥
निज उतपति बूझी शिरनाई । भृगुनन्दन सो सकलसुनाई ॥
सुनत अपन वृत्तान्त लजाने । लखिरुखभृगुनायकसनमाने ॥
करा प्रतोष मंत्र गुरु दीन्हा । शिक्षापाइगमन तिनकीन्हा ॥
ज्ञान लहेउ सब संशय त्यागी । भे बिरंचि पदसब अनुरागी ॥
निराहार बैठे इक आसन । बर्षसहस तपकिमउरगासन ॥

श्वासधार कृत वर्ष हजारा। रहे ऊर्ध्वमुख बिना अहारा॥
दो० एक पाद पुहमी दये अपर अंग अनयास।
सबलपुष्टतनमनहरष सपनेहुँ भूख न प्यास॥
तप अतिउग्र बिचार बिधाता। तिनढिगगवनेमुखमुसकाता॥
हंसारूढ़ कमण्डलु हाथे। श्वेतमुकुटशुचि चारिउमाथे॥
आनन चारि नयन बसुनीके। चारिउभालभस्म शुभटीके॥
उपसामयप्रभु सबजग अयना। भाष्यो दयासदनबरबयना॥
मांगहुबर जो सब मनभावा।सुनेउसबनिबिधिपदशिरनावा॥
नाथ चहत हम यह बरदाना। हमहिं न कोउजीतै मैदाना॥
एवमस्तु बिधिकहेउ बिचारी। आनपाणिनहिं मृत्युतुम्हारी॥
हरिसुतहै तुम्हार गुरु भाई। तेहिसनकिहेउनकबहुँ लराई॥
दो० जो तेहिसन करिहौ समर मरिहौ बचन प्रमान।
एकहि कह बरदान यह दै कह कृपानिधान॥
दियउ नरान्तक कहँ बरदाना। रहे अपर जे धरि उरध्याना॥
तिनसन बरम्बूहि बिधिकहेऊ। सुनतप्रमोद सबनिउरलहेऊ॥
सुनिबिधिगिरासबनिकहस्वामी। देहु एकबर अन्तरयामी॥
देवासुर संग्रामहिं माहा। जीतहिं हमयहबर सुरनाहा॥
असकहि रहे दनुज शिर नाई। तिनसनकहेउ बिरंचिबुझाई॥
तुम अजीत सबसनसबभांती। बानरभालु त्यागि दुइजाती॥
यहिबिधि सबकहँ दै बरदाना। ब्रह्मलोकगे ब्रह्म सुजाना॥
बिधिते लहिबर तिन सुखबाढ़ा। लागेकरन बहुरि तप गाढ़ा॥
दो० गिरा गिरीश समेत सब जपहिं निरन्तर नाम।
जोरियुगलकर एकपद निशिदिन आठौयाम॥
बिनु प्रयास ठाढ़े सब भाई। क्षुधा तृषा निद्रा बिसराई॥
गुण सहस्र संवत सब ऐसे। गयेबीति प्रथमहिं तप जैसे॥
सबनिशीशपुनि अवनीदीन्हा। उभयचरणऊरधकहँ कीन्हा॥
जोरे कर निरोध कर श्वासा। जपहिं मंत्र शंकरबर आसा॥

मुनिगण तिनकर साधनदेखी । मनमहँ मानतसकुचविशेखी ॥
हरिइच्छा बल हृदय बिचारी । निरखिचले मुनिजपतपुरारी ॥
अयुत अब्द बीते खग नायक । भेप्रसन्न शिवजनसुखदायक ॥
चढ़े बरद हिमसुता समेता । आये तिन तट कृपानिकेता ॥
दो० बोले तिनहिं प्रशंसि शिव मांगहुबर मनभाव ।
नारान्तक करि दण्डवत बोला सुन सुरराव ॥
मैं तप किहेउँ दरश तवलागी । नाथदीनजन चितअनुरागी ॥
अबमांगत आवतमोहिं लाजा । ठाढ़रहा कहिनिशिचरराजा ॥
मांगु सकुचतजिअसहरकह्यऊ । नारांतक तबमांगत भयऊ ॥
मोहिं बिभव असदेहु गोसांई । नृप प्रजा नहिं परहुँलखाई ॥
पुर अनयास बसहि ममनाथा । यहकहि रहाजोरि युगहाथा ॥
एवमस्तु कहि हर सुर ईशा । गमने भवन सहित बागीशा ॥
शिव प्रसाद नारांतक पावा । अंतरिक्ष पुर सपदि बसावा ॥
पुर बिहवाबल की रुचिराई । कहत कछू इकतुमसनगाई ॥
दो० ऋतु रवि दूनेकोटि सो भवन बसे इकठोर ।
जातरूपमयनगजटित अतिशोभितचहुँओर ॥
योजन दाई शत चकलाई । चौंसठ कोस उतंग सुहाई ॥
दुर्गम दुर्ग जलधि चहुँ फेरा । बिस्मयबिश्व कर्म्म मनघेरा ॥
चारि दुआर कुलिश पट रूरे । गढ़ भीतर चौहट निधिपूरे ॥
बणिक पदुमधनतुच्छ बखाना । बनउपबन सरितासरनाना ॥
बसत प्रजा पुर सघन अपारा । नारान्तक गढ़ मध्य सँभारा ॥
षोड़श कोस कोट चहुँ ओरा । मणिमाणिकलागे नहिंथोरा ॥
हय गय रथ खच्चर समुदाई । कहिनजाइखगमृग विपुलाई ॥
कोटि बहत्तर एकै साथा । विद्या पढ़न लगे खगनाथा ॥
दो० हरि प्रेरित तेहि कालमहँ दधिबल पहुँचा आइ ।
पुर बिहवाबल निरखिसो कछुदिन रहा लुभाइ ॥
मायांबश निशिचर सँगकीशा । बर्ष एक पद सुनहु मुनीशा ॥

गुरु इकबार कहेउ रिसियाई । हातिहासि तैं आपन गुरुभाई ॥
बिनुअघसुनिदधिबलगुरुशापा । बिदामांगि गवनाकरिदापा ॥
मारग मिले देव ऋषि तेही । गहे सुकण्ठ सुवन पगनेही ॥
लखि अशीश दै बूझा तेही । दधिबल कवन काजगेजेही ॥
तब नारान्तक पुर प्रभुताई । दधिबल नारदमुनिहिसुनाई ॥
सुनी निशाचर संपति भारी । रहे ब्रह्म सुत हृदय बिचारी ॥
क्षणक देवऋषिकीन्ह गुमाना । बार बार सुमिरे भगवाना ॥
दो० दधिबलते नारद कहेउ सुनहुतात चितलाइ ।
तनुधरिजेहिहरिभक्तिनाहिं जन्मबादिजगजाइ ॥
यह बिचारि भजु रामहिंताता । उपजेउसुनत ज्ञानमुनिबाता ॥
ऋषिपद परासि आशिषापाई । कपिपति सुत गमने हरषाई ॥
सपदिकीशतब पहुँचा जहँवां । पयनिधिमध्यरुचिरगिरितहँवां ॥
धवलागिरितेहि नाम सुहावा । सुभगदेखि कपिवरमनभावा ॥
गौरि गिरीश सुमिरि गणराई । कीन्ह निवास बैठ हरषाई ॥
नारद ताहि देइ उपदेशा । गये बिरंचिहिधाम खगेशा ॥
उत दशमुख सुत विद्या पाई । जहां तहांकी बिबिधलराई ॥
बिन्दुनाम इकनिशिचर आहा । सो खलरहाबितलथलमाहा ॥
सो० अति रणधीर जुझार चढ़े शक्रपर बल बिपुल ।
कीन्हेउ समर अपार अब्द एक श्रुतिसन्तकह ॥
सप्तकोटि निशिचर सँग ताके । असित मेरुसमखलभटवाके ॥
सुनासीर कोपेउ इकबारा । सब कहँ समर मध्य संहारा ॥
भाजि बिन्दु केवल गृहगयऊ । तासुनारि निश्चरसुखदयऊ ॥
सबनिशि भोगकरा खलपापी । उपजे बहु बालक परतापी ॥
सप्त कोटि सुत नाना नामा । ऊदर बक्र सकल बल धामा ॥
कोटि बहत्तर तनया जाके । लाजहिंमृगलोचनलखिताके ॥
तिनमहँ बिन्दुमतीइकसुन्दरि । नभचारिनिरतिरूपनिरन्तरि ॥
निरखिबिन्दुनिजमनअनुमाना । नहिंनारान्तकसमकोउआना ॥

दो० यह बिचारि चितबिन्दु तब नारान्तकहि बुलाइ ।
बिन्दुमती आदिक सुता सुन्दर साज सजाइ ॥
सकल सुता इक संग बिवाही । यथायोग्यजेहिकहँजसचाही ॥
नारान्तक सब सेन समेता । करिबिवाहफिरिगयउनिकेता ॥
पुर बिहवावल कीन्ह बसेरा । प्रजासहितसुखकरत घनेरा ॥
जो तियचाहिय बिबुध गृहभाई । सो भावीबश निशिचर पाई ॥
नारि पतिव्रत जेहि घरमाहीं । तेहिप्रतापनिज अमरडराहीं ॥
बिन्दुमती बिद्या सम ताता । बुधजनसभाचरितविख्याता ॥
नारान्तक उतपति मैं गावा । सुनखगेशपुनिचरितसुहावा ॥
पुनि पुनि हरिहरपद शिरनाई । गुरुसनसुनेउँसोकहेउँबुझाई ॥
दो० चारन दशमुख को तुरत मगचलि पहुँचोजाय ।
ग्रामान्तर योजन युगल ठाढ़ भयउ हरषाय ॥
तेहि मारुत दिशि काननभारी । पर्ण लेत देखेउ तहँ बारी ॥
सकुचि समीप जाइ भा ठाढ़ा । बूझेसिताहि धीरधरि गाढ़ा ॥
कवन रीति यहिपुरमहँ भाई । तरुपरचढ़त भूपसुत आई ॥
चारु बचनसुनि सो मुसुकाना । कवननग्रर तुमबसतअयाना ॥
नारान्तक नृपके यह बारी । तेहिकर सेवक मैं लघुचारी ॥
धूम्रकेतु तेहि उतर न दीन्हा । कछुडरिपुनिनिजमारगलीन्हा ॥
लिये कनक घट सुखमा पूरी । बारिलेन आईं तिय रूरी ॥
देखि भयउ तेहि संशय भारी । बूझा सत्य कहहु सुकुमारी ॥
दो० तुम्हरे पुरकह चेरिनहिं रानी कहहु स्वभाव ।
आइउ तुम जलभरन कहँ बोलेउत्याग डराव ॥
दूतबचन सुनि निशिचर चेरी । बोली हँसिकरि एकहि बेरी ॥
नारान्तक दासिन की दासी । हम ताकी दासी बिश्वासी ॥
सदा भरैं यह सागर पानी । इहँ आवहिं केहिकारणरानी ॥
कहिहउ और काहु अस बाता । पैहहु मार मुष्टिका लाता ॥
असकहि गमनी लै जलनारी । तिन सँग धूम्रकेतु मगधारी ॥

गढ़ भीतर कीन्हेसि पैसारी । निरखे बिपुल कूप सर बारी ॥
नाना गज रथ खच्चर घोरा । फिरत बिलोकतपुरचहुँओरा ॥
अन्तर गढ़ तेहि चारि दुवारा । तहां न चर पावहिं पैसारा ॥
छं० पावतनहीं पैसार परगति द्वारलगि फिरि आयऊ ।
यहिभांति रावणदूतघटिका युगल दिवसगँवायऊ ॥
मनमहँ बिसूरत ठाढ़ चौहट मध्यसो जब रहिगयो ।
निशिचरनिकंदनहोनलगिबिधिताहिइकअवसरदयो ॥
सो० गमनो भूपति द्वार नृत्य करन इक कौतुकी ।
लीन्हसाथतेहिधार गढ़इमिकीन्ह प्रवेश चर ॥
बैठेउ सभा नरान्तक जाई । कोटि बहत्तर संयुत भाई ॥
व्योम तीनिरस गुणबसु एका । अंकरीतिलिखिगुणी बिबेका ॥
बन्दीजन नट कौतुक करहीं । प्रतिदिनकबिकोविदउच्चरहीं॥
रावण दूत सभा सो देखी । मनमहँ चकृतभयो बिशेखी ॥
तब चारण मन असअनुमाना । कोटि बहत्तर रूप न आना ॥
भूषण बसन सुआसन जोहा । देखिसुखद चारण मनमोहा ॥
याम दिवसगत अवसर पावा । नारान्तक कहँ शीश नवावा ॥
दीन्ह पत्रिका पद शिर नाई । कुशल तासु बूझी हरषाई ॥
दो० नारान्तक निज कुशल कहि बूझादशमुखहेतु ।
समाचार गढ़ लंककर बरणेउ दूत सचेतु ॥
चर भाषित नारान्तक सुनेऊ । क्षणकमाहिंनिजकारणगुनेऊ॥
पुनिपत्री निशिचरपति बांची । मानी चार बात सब सांची ॥
उठेउ सभाते हृदय रिसाई । गानिजभवन शोच सरसाई ॥
बिन्दुमती कहँ बांचि सुनाई । पितुपर भीर पत्रिका आई ॥
समाचार सुनि कह तेइ नारी । तुम जनिकरहु रामसनरारी ॥
गहहु चरणपिय अकसर जाई । रसनसुफलकरिबिनयसुनाई ॥
मांगि भक्तिबर प्रेम दृढ़ाई । निर्भय राज करहु गृह जाई ॥
नारिबचनतेहिमनाहिं न भावा । तब उठिकोटद्वारचलआवा ॥

दो० कहत बजाव निशानघन सजहु सेनचतुरंग ।
जन्मभूमि जावा चहहुँ पितु चारन के संग ॥
आयसु दीन्ह नरान्तक राजा । लगे निशाचरसजनसमाजा ॥
अमित बाजि गज उष्ट्र नाना । रथ खच्चर खेचर बहु याना ॥
नाना अस्त्र शस्त्र गहि पानी । निशिचरअनी नजाइबखानी ॥
जे सब संयुत साज सजाई । बिबिध निशान हनेहरषाई ॥
कन्तजात निश्चय जियजानी । बिन्दुमतीनिजचितअनुमानी ॥
राम बिरोध न यहि कल्याना । महूं सङ्ग अब करहुँ पयाना ॥
भूषण वसन सुअंग बनाई । कन्तचरण गहिविनयसुनाई ॥
सासु ससुर दर्शन हित नाथा । हमहूं चलब प्राणपतिसाथा ॥
दो० दशमुखसुत सुनितियबचन हृदय परमसुखमानि ।
कहेउचलहुसब सखिनसह प्रमुदितछांड़िगलानि ॥
सुनि पति बचन नारिहरषानी । चली सङ्गलै सखी सयानी ॥
लै दल नारान्तक पगधारा । अमितसेनको कहिसकपारा ॥
बुधजन कहतसुनहु खगराजा । अयुत सतावनबाजन बाजा ॥
धूम्रकेतु कहँ ढिग सँग लीन्हे । अति आतुरगमनारिसकीन्हे ॥
चलत सगुनभलताहि न होई । गनइ नमृत्युबिवशशठसोई ॥
तासु पयान जानि दिगपाला । जियमहँसंशयकरत विशाला ॥
कोलकूर्म अहिपतिअतिडरहीं । पुनिपुनिरामचरणचितधरहीं ॥
समुझि रामवल संशय त्यागी । सुरबिदेश प्रभुपदअनुरागी ॥
दो० नारान्तक लंकातुरत दल समेत नियरान ।
दिगयोजन दल रहेउजब सुनुमुनीशसज्ञान ॥
इहां कृपालु रमेश खरारी । असितजलदसमसेननिहारी ॥
प्रभु सर्बज्ञ नीति हितसेतू । सचिवबोलिकह रघुकुलकेतू ॥
सखा बिलोकहु दक्षिण ओरा । गर्जतघन आवत नहिंथोरा ॥
उमा राम सब अन्तर्य्यामी । चरितहेतु बूझा असस्वामी ॥
रामबचनसुनि दशमुखभ्राता । कहइहँसिगहिप्रभुपदजलजाता॥

देवदेव नहिं दल जलबाहा । अहहिनरान्तकनिशिचरनाहा ॥
बिहवाबल पुर बसत गुसांई । पठवा तेहि दशकन्ध बुलाई ॥
आवत धूम्रकेतु चर सङ्गा । करत कुलाहल नाद उतङ्गा ॥
दो० तेहिसँग गुणी अनेकप्रभु गावत हनत निशान ।
सेनसंग चतुरङ्गखल डोलत बिबिध दिशान ॥
कहप्रभाव तेहिसुन भगवाना । बिहँसे प्रभुबलबुद्धि निधाना ॥
पाइ रामरुख पवन कुमारा । उठे हर्षि हिय गरजि प्रचारा ॥
सहितलषण प्रभुपद शिरनाई । धाये कहि जय जय रघुराई ॥
बातजात निशिचर समुदाई । देखि सपदि ढिग पहुँचेजाई ॥
कटकटाइ गरजे अति भारी । देखेउ इमि आवत बनचारी ॥
बूझेउ दूतहि निशिचरत्राता । यह आवत धावतको आता ॥
स्वर्ण शैल बिकरार शरीरा । गर्जत प्रलयजलद समबीरा ॥
तब नारान्तक सन कह दूता । यहै पवनसुत बली अकूता ॥
दो० सिन्धुलांघिलङ्कहिदहेसि पुनिहति अक्षकुमार ।
कालनेमि कहँ मारि मग लावा मेरु उपार ॥
पुनि अहिरावण सहपरिवारा । पैठि पताल सदल संहारा ॥
लै आवा तापस दोउ भाई । आवतअबतवढिग सोइभाई ॥
यहिकर भुजबल अहै अपारा । सुनिरिसानदशकण्ठकुमारा ॥
चाप चढ़ाइ सुधारेसि बाना । तजनन पाव गहेउहनुमाना ॥
सो शर धनुष तोरि कपिडारा । पुनि रिसाइ उर मुष्टिकमारा ॥
परा दशानन सुत महि कैसे । मिश्र रसातल गे गिरिजैसे ॥
पवनपूत बल लूम पसारा । कोटिन रथ गहि तापरडारा ॥
रथ सारथी चूर्ण सम भयऊ । बिधिबशतेहिकरप्राणनगयऊ ॥
दो० एकदण्ड अति बिकलखल रहभूतलधुनिमाथ ।
पुनिशठउठा सँभारितन धायउ धनुधरिहाथ ॥
छाड़िसिअगणित शायक कोपी । लगाइककीशकटकगा तोपी ॥
राम प्रताप प्रभंजन जाया । करगहिअरिशरतोरिबहाया ॥

देखि पवनसुत की प्रभुताई। बरषतसुमन बिबुधझरिलाई॥
जय जय पिंग अच्छसुर भाषा। सुनिदशकन्धतनयमनमाषा॥
नारान्तक अति हृदय रिसाई। कपितट पहुँचा आतुर धाई॥
कहकलकीश जो कछुबलधरहू। मोसन मल्ल युद्ध रण करहू॥
गावहिं बिबुध तोरिभुजजोरा। निजउरसहु इकमुष्टिक मोरा॥
लागत ठाढ़ रहै जो बानर। तौजानहुँ तवभुजबलआगर॥
सो० हरिसुनि ताकर बात रामदूत रिसिरौंकिउर।
अतिसकोप मुसक्यात रणकठाढ़सम्मुखरहेउ॥
तबतेहिं कपिकहँ मुष्टिकमारा। भयउतड़ितसमशब्दअपारा॥
टरा न तहँ ते पग हनुमाना। हृदयन निशिचरनेकुलजाना॥
दुइ मुष्टिक तेहि फेरि चलावा। तब मारुतसुत कोप बढ़ावा॥
किलकिलाय लंगूर लपेटा। डारि भूमि तिनदीन्ह चपेटा॥
बिकलताहिकरिकपिअतिगाजे। भे ब्याकुलनिशिचरबहुभाजे॥
कोटिन्हनिशिचरकपिकरगहहीं। रामदूत कर कौतुक अहहीं॥
मर्दि मर्दि बहु बारिधि डारे। देखि देव जयजयति पुकारे॥
एक दंड गत निशिचर जागा। बहुबिधिसमरकरनसो लागा॥
छं० लागेउकरनपुनिसमरबहुबिधि निजसुभटबहुफेरिकै।
खलकोटिकोटि प्रचंडशायक कपिहिरणमहँ घेरिकै॥
रणरंग रंजित बीर मारुत पूत पुनि पुनि गर्जही।
गहिगहि बिपुलदनुजहिंपछारत उरबिदारततर्जही॥
दो० सघनबाहिनी जलजवन जिमिकरिकृत उतपात।
रिपुनहनततिमिवायुसुतबिनुश्रमप्रमुदितगात॥
करत समर आयउ तेहिठामा। जहँ नित होतरहा संग्रामा॥
लरत अकेल तहां हनुमाना। धायउ बालितनयबलवाना॥
ता पाछे कपि चमू अपारा। चलेकहत जयकृपा अगारा॥
लीन्हे गिरिवर तरु पाषाना। जहँ तहँ करनलगे मैदाना॥
अंगद आइ पवनसुत पाहीं। कहिजयरघुबरसन द्विजनाहीं॥

दोऊ भट इक संग करि ठूहा। इतन लगे ओरसैन समूहा ॥
देखत भालु कीश कृत भारी। भागिचलेनिशिचर भयभारी ॥
देखिअनी निज त्रसित बहूता। भा अतिकुपितदशाननपूता ॥
छं० अतिकुपितभादशमुखसुवन निजभटनशपथदिवाइकै।
फेरेउ सबनि करि कोप बोला जात कहहुँ पराइकै ॥
बिधिदीन्हबिबिधअहारकापिदल खातकसनअघाइकै।
बिनुभालुकपि महिकरहुपुनि हठधरहुतापस धाइकै ॥
दो० सुनिनारान्तक सरुषबच रजनीचर समुदाय।
लागे लरन सकोप सब माया कपट कुभाय ॥
माया तिमिर पसार अपारा। अस्त्र शस्त्र बहुभांति प्रहारा ॥
शक्ति शूलबरबिशिख कराला। डारहिं रजतरु शैलविशाला ॥
गिरतअस्त्रकपिलागत शायक। उठहिंबहुरिकहिजयरघुनायक॥
निजदलबिकलबिलोकि खरारी। सत्यासिंधु इकशर संचारी ॥
रिपुशरकाटि तिमिर करि दूरी। प्रभुशरहते निशाचर भूरी ॥
हरि निषंग महँ पुनि सो तीरा। प्रविशेआइसुनहु मुनिधीरा ॥
निरखिप्रकाशभालुअरुकीशा।गहिगिरितरुकहिजयजगदीशा॥
निशिचर अनी मध्यगे जबहीं। दियेडारिगिरिरजतरु तबहीं ॥
दो० मरे तमीचर कोटि षट जानि निशा परिवेश।
दलयुत अंगद पवनसुत चले जहां अवधेश ॥
अंगद हनुमदादि कपि भालू। आये जहँ रघुबीर कृपालू ॥
प्रभुहि बिलोकि चरण शिरधरे। भेश्रमराहित सकल सुखभरे ॥
अतिआदरप्रभु कियसनमाना। सबकहँ बैठनकह भगवाना ॥
पुनि रजाइ लै थलनि सिधाये। छबिबारिधिप्रभुपदशिरनाये॥
अंगद हनुमत निकट निवासी। रामचरण सुखमा गुणरासी ॥
द्रोउभट करपरसत प्रभु पाऊ। देखिसुरनमनभा अतिचाऊ ॥
हमहुँ होत जग कीशस्वरूपा। पदगहि नित्त रहत नरभूपा ॥
हरिनसिहाहिंसुमनभरिलाये। निजनिजआश्रमअमरसिधाये॥

दो० बन्धु सचिव सेना सहित शोभित श्रीभगवान।
तुलसिदास ते धन्यनर जे यहि ध्यान लुभान॥
उत नारान्तक सेन समेता। गयउजहां दशकन्धनिकेता॥
सुतहि सुरारि मिला पुलकाई। कुशल बूझि बैठेउ हरषाई॥
देखि नरान्तक कै समुदाई। दशमुखशठ सबशोचदुराई॥
जेहिबिधि हरिलावा जगमाता। ताहिआदिकृतकृतबिख्याता॥
कुम्भकरण घननाद निपाता। कहिबिलखाअहिरावणघाता॥
पितु मनमलिन नरान्तक देखा। बोलाखल उर गर्ब विशेखा॥
तजहु सकल संशय बिबुधारी। करिहहुँप्रातसमर अतिभारी॥
चमूकीश बिनुक्षिति करिताता। धरिहौं तापस होत प्रभाता॥
छं० धरि आनि तापस भ्रातदोउ परभात बार न लाइहौं।
धरिधरिबिपुलकपिभालुदीन निशाचरनअघवाइहौं॥
भुजबलकहहुँनिजनाहिंबहुतकरिरिपुनप्रकटदिखाइहौं।
बिनुश्रमाहिं तातनको बयरलै तवचरण शिरनाइहौं॥
दो० सुनत बीसभुज सुत बचन बार बार उर लाइ।
लाग करावन नृत्यजड़ गुणी समूह बुलाइ॥
बिन्दुमती आदिक रनिवासू। सबचलिगईं मँदोदरि पासू॥
सासुहि मिलि बैठीं सब नारी। मयतनयाकरि आदर भारी॥
बूझि परस्पर रावण घरणी। प्रभुयशताहिसुनायउ बरणी॥
देइ पतोहुन बास सुहावन। आपुलगीसुमिरनजगपावन॥
शयनकरहुकहसुतहिनिशाचर। उठाआपुमतिमन्द अघाकर॥
गातेहि भवन कुटिल दशग्रीवा। जहँ मयतनयासदगुणसीवा॥
आयउ पिय मन्दोदरि जानी। पाइसुअवसर गहिपगपानी॥
पियसुनाय अतिकोमल बयना। लगीकहनजलभरियुगनयना॥
दो० नाथ निगम आगम बिबुध कहत प्रकट यहबात।
बुध जन सो जो आधहु राखै सरबस जात॥
तजहि न हठ शठ सरबसखोवै। यद्यपिअन्त शीश धुनिरोवै॥

सो बिचारि प्रभु परम सुजाना। मोरवचनसुनिकीजियकाना॥
अजहुँ करहु हठ दूरि गोसाँई। अनुजभाँतिमिलियेप्रभुजाई॥
प्रथमहिं सीतहि देहु पठाई। पुनितुम गवनहु पुत्रलवाई॥
प्रभु पद गहि मांगहु बर एहू। पदपंकजरति बिमल सनेहू॥
प्रियाबचन तेहिबिषसमलागा। सोगृहतजिगाअनतअभागा॥
निजनारीकहि कटुअभिमानी। कीन्हशयननिशिगइबड़जानी॥
सो रजनी गत भयउ प्रभाता। जागे रघुबर त्रय जगत्राता॥
दो० ऋक्षकीश जगदीश पद शीश नाइ रुख पाइ।
धरिगिरितरु धावतभये कहि जयजयरघुराइ॥
कपि घेरा गढ़ यह सुनिकाना। रावणसुतलखिनिपटरिसाना॥
साजिबिपुलदलहनत निशाना। गढ़ते चला निकर बलवाना॥
चारिद्वार करि कठिनलराई। विशिखबरषिकपिदलबिचलाई॥
निकरे निशिचर गढ़ ते कैसे। शलभ समूह शैल ते जैसे॥
मारुतसुत देखा कपि भाजे। कटकटाइ मति बिक्रमगाजे॥
कपि लँगूर चहुँ ओर भवाँई। रोकेखल निशिचर समुदाई॥
पटकतमहि निशिचरफलबेलू। केतिनदेतबिदिशिदिशिमेलू॥
इकदिशि इमिहरिकृत संग्रामा। दिगदूजी अंगद बलधामा॥
दो० निशिचर सेना उदधि सम मन्दर इव दोउ कीश।
मथत देखि जय रत्न लगि हँसे बिबुध सुर ईश॥
छं० इमिनिरखिपराक्रमकरतकीशाभाक्रोधपरमरजनीचरीश॥
करिप्रलयकन्दते घोरशोर। धरकुधर अस्त्र धाये कठोर॥
इकबारमारकरशरसमूह। कियबिकलअस्त्रहनिकीशजूह॥
कोउटेरतकपिपतिचितउचोट। कोउसुरतकरतनिजधामओट॥
बहुचलेकन्दरा शैलताक। कोउ दबकतइतउतपात भाक॥
कोउदेत दोहाई लषणराम। कोउकहत बिधाताभयोबाम॥
यहिबीचनरान्तककरप्रधान। तेहिधायगहेउयुवराजपान॥
बहुभटलपटाने अंग लंग। सब संग उठेउ अंगद उतंग॥

नमकीशकीन्ह कौतुकअभूत । रविमंडलपहुँचेउ बालिपूत ॥
अँगगारे जारे तपनि आँच । पुनिआयउ जहँ संग्रामराँच ॥
यहनिरखिअपरयूथपपिशाच । तुरआइगयउसेनासमाच ॥
लैविषमशूलमारोसिप्रचंड । उरलागिआनि अतिकठिनदंड ॥
महिपरेउ तनय तारातुरन्त । लखिदौरिपरेउहनुमन्तसन्त ॥
सोइशूलखैंचिमारेउप्रचंड । होइगिरेउयूथपतिसहसखंड ॥
सबचरितसुनेउरविकुलदिनेश । कहजाहुबेगिअहिराजशेश ॥
चले नाइमाथ शंकरमनाइ । धनुबाँधिबाँधिबिकराललाइ ॥
उरअंगदकरधरिसुमिरिराम । श्रमबिगतभयउबलअतुलधाम ॥
दो० बिगत भई मूर्च्छा तुरत बहुरि चलेउ युवराज ।
लक्ष्मणचाप टँकोरसुनि फिराकीश दलसाज ॥
सुनत टँकोरशरासन निशिचर । बधिरभयेनाहिं सुनतशब्दपर ॥
बर्षा बिशिख कीन्हअहिनाथा । काटे पाणि पायँ बहुमाथा ॥
उड़हिंअकाश शीश भुज कैसे । धुनकत तूल रोम गण जैसे ॥
रुण्ड अशीशफिरहिंरणधरणी । यथा अकाल चुधारतकरणी ॥
इतकपिभालु बिजयअभिलाखे । उतहि निशाचरजयहितराखे ॥
मारुतसुत अङ्गद बलबीरा । समर बांकुरे अतिरणधीरा ॥
सिंहनाद कीन्हा हरि दोऊ । भाजे कपि रण गाजे सोऊ ॥
दोउ दल युद्ध परस्पर करहीं । प्रमुदितभट कायरहियडरहीं ॥
छं० कायरडरहिं प्रमुदितसुभट सबलरत हारि न मानहीं ।
जहँतहँगिरैं पुनि उठिभिरैं दुहुँओर जयतिबखानहीं ॥
कौतुकबिलोकत बिबुधगण बिस्मय हरषउर आनहीं ।
रघुबीर सेनानिपर सुमन झरिलाय बिनती ठानहीं ॥
दो० अतिअद्भुतकरणी करहिं ऋचकीश बलभूरि ।
करपद बिनुकर रैनिचर तिनमुख डारहिं धूरि ॥
बहुतनिकेशिरतोरिचलावहिं । निजभुजबलरावणहिंजनावहिं ॥
गये याम युग दिवस भवानी । नारान्तक सबसेन सिरानी ॥

मरे निशाचर अमित निहारी । रावणसुवन कोप करिभारी ॥
रथ समेत ऊपर नभ जाई । भयउअदृश्य अस्त्रझरिलाई ॥
क्षणमहँ करि मूर्च्छितकपिसैना । पुनिशठगा जहँ राजिवनैना ॥
गरजा मनहुँ मेघ समुदाई । कहन लगा कटुबचनरिसाई ॥
होसिसजग निश्चर कुलद्रोही । बन्धुबैर लगि मारहुँ तोही ॥
प्रभुकहँ कटुककहतसुनिकाना । कोपेउ जामवन्त बलवाना ॥
दो० शूल एक तेहि छाँड़ेऊ सो कर गहि ऋक्षेश ।
धाय तासुउर मारेऊ भाषि जयति अवधेश ॥
लागतशूलसो मूर्च्छित भयऊ । जामवन्ततबकरगहि लयऊ ॥
बार अमित महिमाहँ पछारा । बाँधि गाड़ि बारू महँ डारा ॥
जागे सकल बलीमुख ऋच्छा । लगेकरनरणनिजनिजइच्छा ॥
जामवन्त यह हृदय बिचारा । मरै नहीं यहखल मम मारा ॥
बिधि इच्छा पुनि ताहिउखारी । मुष्टिचारि उरमाहिं प्रहारी ॥
गहि पद संचारा गढ़ माहा । सपदिपराजहँ निशिचरनाहा ॥
दशौ बदन हाहा करि धावा । नारान्तकहि हृदय तबलावा ॥
निरखि निशाचरगण समुदाई । गढ़ कहँगे सब सम्भ्रमधाई ॥
दो० कपिगणसमय प्रदोषलखि रामचरण धरिमाथ ।
ठाढ़भये सबतन चितय दया दृष्टि रघुनाथ ॥
बिनुश्रमकीन्हसबनिजगदीशा । गयेसुबास भालु अरुकीशा ॥
रुचिरासन आसीन रमेशा । ढिग बीरासन उरग नरेशा ॥
अङ्गद मारुतसुत प्रभुचरणा । लागपलोटन सुनहुअपरणा ॥
पुण्यपुंज अरु भाग्य निधाना । जिनपरनितप्रसन्नभगवाना ॥
वहाँ सुरारि सुतहिं पौढ़ाई । बिलखहिं तासुनारिसमुदाई ॥
होत प्रभात नरान्तक जागा । पितु बिलोकिलज्जारसपागा ॥
रथ चढ़ि तुरत इकाकी धावा । नभपथसमरपुहुमिमहँआवा ॥
कीशकटक यह मर्म न जाना । होइलोपकीन्हेसि झरिवाना ॥
दो० धावहिं ब्योमहि भालुकपि ताहि न हेरैं नैन ।

घायल छइ छइ गिराहिंमहि मापहिं आरतबैन ॥
बाण एक शत तड़ित समाना । छाँड़ेसि शठजहँ कृपानिधाना॥
लगत विपुल कीश मुरझाने । बहुतक कायर देखि पराने ॥
भागि सेतु ढिग एक अयाना । टेरे फिरहिं न सुन हरियाना ॥
मारुत सुत अंगद सुग्रीवा । कुमुदमयंद द्विविदबलसीवा ॥
ये सब बीर हांक दै धावहिं । नभपथताहिनखोजतपावहिं ॥
तब सब बीर एक मत ठाना । लैगिरितरु किय लङ्कपयाना ॥
दशमुख भवन तासु कंगूरा । बैठे कपि पसारि लंगूरा ॥
कर ते डारि देहिं पाषाना । बहुत दनुजभे चूर्ण समाना ॥

छं० भे चूर्ण निशिचर यूथ । गै निशिचरी भय गूथ ॥
सुखहीन आरत दीन्ह । भइभवन रावण लीन्ह ॥
सुनिबोलिभट दशभाल । कह खाहुकीश कराल ॥
करि यत्न भागें कीश । असकहेउबचदशशीश॥
ममलहहु आयसु छोर । सोइजानिहौं रिपुमोर ॥
सो शूर मो कहँ प्यार । जो खाय मर्कट धार ॥
जो जाय आयसु छोर । सोइ जानिहौं रिपुमोर ॥

दो० ऐतु ऐतु गुण रजनिचर एक एक भुजजोर ।
रावण पावन राखिशिर धाये करि रव घोर ॥

देखि लँगूर सकल हरषाने । मधुमाखी समसब लपटाने ॥
कपिउर सुमिरि रमेश प्रतापा । डारे सबनि पटकि करिदापा ॥
काचेघट सम दनुज बिदारी । जयतिराम जयलषणखरारी ॥
सुभट छुहनि पुनि फेरि लँगूरा । भूमि गिरावहिं कोटिकँगूरा ॥
अतिबिशालगहिकञ्चनखम्भा । जिमिप्रयासबिनुकरुआरम्भा॥
लै ढाहत अपक्क घट जूहा । कपितिमितोरतदनुजसमूहा ॥
पुनि बिचारकरि हरिभटधाये ।निशिचरनिकरमध्यचलिआये॥
करि कोटिन बिनु नासा काना । कर पद हीन कीन्ह रिपुनाना ॥

छं० रिपुकीन कर पद हीन अगणित दीनबचन पुकारहीं ।

गदतेनिकरनिशिचरअखिलखल बिपिनबाटसिधारहीं ॥
पीपर परणसम धरणिलंका कम्प षट कीशनि करा ।
तोरे कपाट निपाटि अरितिय केश खैंचत गहिकरा ॥
दो० भयउ कुलाहल लंकअति नारान्तकसुनिकान ।
नभतेस्यन्दनसहितशठ प्रकटिपरमरिसियान ॥
निरखिदशा निज नारिन केरी । कहन लाग कटु गिराघनेरी ॥
शठ आयउ संग्राम बिहाई । लरततियनसँग लाजनआई ॥
अबलनपै बल भट न कराहीं । छाँड़हु तियन लरहुममपाहीं ॥
सुनिमरकटनि भयउसुखभारी । तजी निशाचरि दीनपुकारी ॥
भाजिभवन भययुत गहिनारी । लीन्हकपिनकरशिलाउपारी ॥
शिलप्रहार हय स्यन्दन भंजा । आयुध तोरि सारथी गंजा ॥
धरि पछारि रावण दृग देखा । कौतुककीशन कीन्हबिशेखा ॥
लागे पदगहिं खलन फिरावन । नाचहिं गाइ रामयशपावन ॥
दो० तोरत तिनतन पटकि महि कहत जयतिरघुबीर ।
करत युद्ध गत याम युग कीश छहौ रणधीर ॥
अस्ताचल रवि कीन्ह प्रवेशा । बन्दे चरण जाइ अवधेशा ॥
श्याम सरोरुह प्रभुतनु देखी ।पदधरिशिरसुखलेहेउबिशेखी॥
राम सबनि सादर सनमाना । को दयालु रघुबीर समाना ॥
कहप्रभु होहुथलनि आसीना । आयसु पाइ भये श्रमहीना ॥
भये बिगत श्रम बानर भालू ।अनुजसहितमनमुदितकृपालू॥
सुनहु उमातानिशि रघुनायक । गावतजनगुणसबगुणदायक॥
यामतीनि यामिनि गतजबहीं । उतनारान्तक जागेउतबहीं ॥
शोचबिवश मींजत दोउ हाथा । लज्जितहृदयनिशाचरनाथा ॥
छं० लाजकै रथै सँभारि बाजिसाजि रुष्टपुष्ट ।
शंकछांड़ि अस्त्र मांड़ि गाढ़ बीर संग दुष्ट ॥
भेरि दुन्दुभी निशान गान काडकैत कर्त ।
वीरवीर अग्र गौन गाजि गाजि शब्दभर्त ॥

जीव आस त्रास मास बाजि मोह छण्ड छण्ड।
बङ्क शूर शङ्क दूर बीरता सपूर चण्ड॥
बाजि नाग शोर घोर पूरिगे दशौ दिशान।
धूरि पूरि मेघ श्रोध शोधना परो अपान॥
कूदि कूदि ब्योम पन्थ जाइ आइ जाइ भूमि।
अस्त्र शस्त्र काढ़ि काटि क्रुद्ध क्रुद्ध भूमि भूमि॥
दो० प्रलय मनहुं चाहतकरन अनी तमीचरचण्ड।
सुनु खगेशमर्कट बिकट जिमि धाये बरबण्ड॥
छं० निहारि हर्ष कीश ऋक्ष फूलि फूलि शैलभे।
बजाइ कटकटाइ हूह एक बारके अभे॥
उपारि भूधरा अपार बृक्ष अश्म शृंगहू।
मरे निशाचरानि रुण्ड झुण्ड शुण्ड भंगहू॥
रदी हरी मृगावती सवार उष्ट्र मण्डहू।
मनो बिचित्र बाहिनी दई मनोज खण्डहू॥
हलै धरा बलै बिचारि भार धारि को सकै।
सुनै पुकारि जयति राम शत्रु से नहीं धकै॥
लँगूर शूल से अकाश भीतउच्च औचव्यो।
गिरे पयोद पौन ते झपेट भेट ते कव्यो॥
सो० शब्दकरतअति घोर इमि पहुँच्यो दलभालुकपि।
आयुध झरि अति जोर परै लागि घनप्रलयसम॥
सजग होन कपि भालु न पाये। अतिशयनिकटतमीचरआये॥
असितनिशाचरअतिअँधियारी। तापर करैं शस्त्र कै मारी॥
सूझहिं कपिन न हाथ पसारे। जहँ तहँ एकनि एक पुकारे॥
सम्मुख कोउन करत लराई। कपिनमारि रणभूमिसोवाई॥
गे अनेक भाजि सिंधु समीपा। सेनबिकललखिरघुकुलदीपा॥
साजि शारंग तजा इक बाना। भाप्रकाशादिगतरणिसमाना॥
लखितमबिगतभालु कपिहरषे। कटकटाइ धाये रिपु घरषे॥

भिरे एक सन एक प्रचारी। लागे करन कठिन हठमारी॥
दो० शीशशिलातरु करन धरि कांचनभरिभरि धूरि।
गरजे भालु बली बदन धाय धाय नभ दूरि॥
डारहिंगिरितरुनिशिचरशीशा। दधिघटसमफोरहिंभटकीशा॥
चढ़हिं अनेक कन्ध पर जाई। काटहिं कानदशनि रजनाई॥
तोरहिं शूल चाप नाराचा। अरिदल अस्त्र न एकौ बाचा॥
शस्त्रहीन रिपु सेन पराई। देखि पवनसुत हँसेउ ठठाई॥
बैठि अवनि अति लूमलफाई। अति उतंग दीरघ चौड़ाई॥
तर्कित खसे निशाचर कैसे। पक्षहीन नभ ते खग जैसे॥
गिरतकीशगहिचरणफिरावहिं। पटकिभूमिगाड़हिंबिहसावहिं॥
तुम्बरिसमअगणितभुजतोरत। अगणितरुण्डसिंधुमहँबोरत॥
दो० कोटिबयालिस तमीचर नारान्तक कर घात।
रामकृपा बल हति खलनि कपिनबिताई रात॥
प्रभु तुणीरमहँ हरिशर जबहीं। प्रविशेकीन्ह उदयरबितबहीं॥
देखि कटकनिज परमबिशाला। नारान्तक भट कोटिकराला॥
करि बहुशपथ लिये सँग बीरा। बर्षत शक्ति उपलगण तीरा॥
शर अरुतम्भन बिपुल पनारे। भयेअचल कपिटरहिं न टारे॥
लै लै पाश निशाचर धाई। बांधत जिमिचुंगलिशुकपाई॥
ब्याधि पींजरा सम बहुजाना। भरेजान प्रतिअयुतप्रमाना॥
जे कपि लखैं बिपुल बल बंका। ते मुर्च्छित फेंकैं गढ़ लंका॥
रावण देखि तनय की करणी। बन्दीजनजिमिभुजबलबरणी॥
दो० हरि इच्छा जाने न कस सुतहिं सराहत मूढ़।
कालबिबशमतिसंभ्रमितसुनहुअरुषय बुधिगूढ़॥
अंगद हनूमान जब जागे। नारान्तक सनजूझन लागे॥
क्षण इक कीश न पायउलरई। पुनिशरहतिमूर्च्छाबशकरई॥
याम युगल तेहि कर बरदाना। राखेउतेहिकारण भगवाना॥
रिपुहि खेलावत रघुकुल केतू। पालकबुधि बानी श्रुतिसेतु॥

सो युग याम गये जब बीती। तब रघुबीर सजी जयरीती॥
हाँक देइ कपि भालु जगाये। भये बिगत मूर्च्छा सब धाये॥
हनूमान अंगद जब जागे। राम लषण चरणन अनुरागे॥
प्रभुपद शीश रहे धरि कीशा। तब हँसि बोले श्रीजगदीशा॥
सो० बिधि वाचा लखि आज तात तुमहिं मूर्च्छाभई।
पुनिकहिप्रभुरघुराजअबश्रमसपनेहुअनततनहिं॥
तुमहिं सुमिरि अंगद हनुमाना। जितिहैं जगत मनुजसंग्रामा॥
असबर जबहिं रमापति भाखा। सुनत गिरा हरषे मृगशाखा॥
कहेउ बहोरि वचन रघुबीरा। सुनुअंगद हनुमत रणधीरा॥
तात तुरततुम उभयसिधावहु। लंकगये कपितिन्हैं छुटावहु॥
सुनिदोउभटगहिशैल बिशाला। सुमिरिकोशलाधीश कृपाला॥
सपदि कीश गढ़पर चढ़िगये। देखि लंक महँ खरभरभये॥
सकल कपिनके मूर्च्छा बीती। तोरि पाश भजिरामसप्रीती॥
बायुसूनु युवराज निहारी। हरषे कहिजयजयति खरारी॥
दो० मेषबरूथहि पाइजिमि वृकगणकरहिंशृँगार।
तिमि मर्दहिंदनुजन सुभट कीशभालु बरियार॥
थाम एक बासर अवशेषा। कहअंगद कीशनतन देखा॥
चलियतात अब जहँ सुरभूपा। देखिय पद पाथोज अनूपा॥
अंगद बचन पवनसुत भाये। सपदिसहितदलप्रभुपहँआये॥
निशिचरकोटि नरान्तक सङ्गा। करतरहे बहुबिधि रणरङ्गा॥
मायाकरि निजगात बजावहिं। जहँतहँखलरावणयशगावहिं॥
अदितिनन्दलखितिनकरिमाया। सभयभये जाना रघुराया॥
दीननाथअनुजहिअनुशासन। उठेनमितगहिबिशिखशरासन॥
अहिपति कहेहु तिष्ठक्षणएका। तैं कीन्हें रण खेल अनेका॥
छं० तैंकीन्हखेल अनेकबिधि अबतिष्ठ खलरणभूथला।
इमिकहिअहीशचढ़ायधनुशर करननिशिचरदलमला॥
निजअनीनिरखि निदान हरिहरसुवनधावा रिसभरा॥

डारतअनेक नराचप्रभुपर शिला तरुवर भूधरा ॥
रघुबीरअनुजप्रवीणखलबल दलनश्रुतियशगावहीं ।
तरुउपलगिरिअरितीरउपरहि बाणलषणचलावहीं ॥
रिपु शस्त्र अस्त्र अनेकआयुध कनककरिकरिडारहीं ।
सुरगणप्रफुल्लितसुमनझरिकरिजयतिलषणपुकारहीं ॥

दो॰ मायापति के अनुज सन माया करत अयान ।
लगत न एकौजानिजिय तबखलनिकटतुलान ॥

हना लषण उरपवि समसायक । लगतगिरेरणमहिअहिनायक ॥
पुनि खल दलभाप्रबलअपारा । भक्षणलाग भालुकपि धारा ॥
चले पराय कीश भयभीता । अबनबचबकरिकालप्रतीता ॥
निशिचरधारि भालुकपि वेखा । लगे खानकपिन असदेखा ॥
कपिडर कीश भालुडर ऋक्षा । आपुआपुभयमिलनअनीक्षा ॥
कोउन काहु निकट नियराई । जो जेहिपावताहि तेहिखाई ॥
पुनि शठसाधि बिभीषण रूपा । गहिअंगद हनुमतकपिभूपा ॥
काहु न यह माया कछु जानी । कपट मिलापविभीषणठानी ॥

दो॰ तेहि अवसर जागे लषण देखे सेन बिनाश ।
अहिरावणछल पवनसुत समुझत उड़ाअकाश ॥

गरजेउ जाय भयङ्कर भारी ।फटेउहृदयसुनिनिशिचरझारी ॥
माया हत शर लषण पवारा । उघरे कपट कपाट अपारा ॥
नारान्तक के माया बीती । गयउयज्ञशाला अति प्रीती ॥
खोजिसि सकल समग्री ताकी ।कीन्हअरम्भबिजयनिजताकी ॥
यज्ञ आसुरी तेहिं तब ठाना । पशु समूह बलिकारणआना ॥
भये दिशासुख श्रमबश सैना । फिरेसुमिरि सबराजिबनैना ॥
तुरत अहीश राम पहँ आये । सहितअनीप्रभुपद शिरनाये ॥
कृपा अयन निरखे मृगशाखा । प्रभुश्रमछीनदीनअभिलाखा ॥

दो॰ टिकहुथलनिसबसनकहा सुखसागर रघुनाथ ।
पायसुआयसु भालुकपि चलेसुमिरि श्रीनाथ ॥

तब रघुराज अनुज उरलावा। निज आसन समीप बैठावा॥
मघवासुत सुत अरुहनुमाना। इनसम भाग्यवंत नहिंआना॥
अमलाम्बुजपद्गहि निजपानी। परशे सबनि सनेह भवानी॥
जामवन्त लंकेश हरीशा। प्रभुसमीपसबमुदितमुनीशा॥
अनुज सखा नारान्तककरणी। युद्धप्रबलता बहुविधिबरणी॥
शिवप्रताप तेहि अमितप्रतापा। मरण न दीन्हे बहुसन्तापा॥
सुने बचन रघुपति मुसकाने। अतिसनेहहरिचरित बखाने॥
सुनहु सकलहमशम्भु नआना। जिनहिं भेद ते बश अज्ञाना॥
दो० जेसुमिरहिं शिवसहउमा तेजानहु मम प्रीय।
शंकर भजहिंसोमोहिंभज मोहिंसोशंभुअतीय॥
चारि पदारथ करतल ताके। बसहिं महेश उमा उर जाके॥
जोमम प्रण शिव सदानिबाहा। सो जयदेव न संशय आहा॥
सुख कलत्र जय बिजय बिभूती। शंकर सुमिरत होइ अकूती॥
भक्ति मोरि शंकर आधीना। जलाधीनजिमि जीवनमीना॥
कह आश्चर्य नरान्तक येहा। मोपरगिरिपति परमसनेहा॥
सुमिरहु सदा विश्व इकसाथा। कपटत्यागि नावहु सबमाथा॥
होइहि बिजय धीरमन धरहू। बेगि उपाव पाव सुख करहू॥
शम्भु उपासन कर ममदासा। तात हृदयधरिदृढ़ बिश्वासा॥
दो० जोनर चाहत भक्ति मम सो छल कपटदुराइ।
शिवासमेतगिरीशपद निशिदिनरहु मनलाइ॥
मनक्रमबचन शम्भुपदआसा। करहिंताहिउर सबगुणबासा॥
निर्भय करि जो हर पद नेहू। ताउर रमा सहित ममगेहू॥
भवबारिधिलाँघहिं बिनखेवहिं। यहबिचारिबुधजनभवसेवहिं॥
भव भंजन यह हित उपदेशा। अनुजहिसखहिबुझावरमेशा॥
सुवबाणी सुनिअतिसुख पावा। अहिपतिरामचरणशिरनावा॥
अंगद हनूमान नलनीला। कपिपतिअरुऋक्षेशसुशीला॥
सहित बिभीषण राजन साता। सुनश्रीमुखहरयशबिख्याता॥

रामहिं शिवहिं एक जे जाने। भयतजि नाम जपत हरषाने॥

दो० कहत सुनत इतिहासशुचि निशिबीती युगयाम।
खगपति आरति देवऋषि जितशोभित श्रीराम॥

राम लषण सुखसींव बिराजे। मार अपार निहारत लाजे॥
निरखिमानि मुनिहृदयसनाथा। उठेहरषि प्रभु रघुकुलनाथा॥
शीशनाइ प्रभु आसन दीन्हा। आशिषपाइहरषिहितकीन्हा॥
मुनि नीके हरि रूप बिलोका। यथाइन्दुलखिसुखलहकोका॥
पुलकिगात तबकहऋषिराजा। सुनहुनाथ आयउँजेहिकाजा॥
चतुरानन पठवा मोहिंस्वामी। यदपिकृपानिधि अन्तरयामी॥
सदा अनाथ नाथ भगवाना। विभव बिरंचिकरियपरिमाना॥
जबलगिहोनप्रभात न पावहि। तबलगिहरिहरसुतलैआवहि॥

दो० जपत निरन्तर नाम तव सो जानहु भगवान।
बिधिबरहितइत आनियेतेहिकहँ कृपानिधान॥

नारान्तक बध है तेहि हाथा। दधिबलनाम भक्ततव नाथा॥
नाथबहुतयदि खलहिखिलावा। रणबिलोकि देवन दुखपावा॥
अब रघुबीर करहु सोइ बाता। बिनुप्रयासरिपुमरइ प्रभाता॥
तेइ सन तुमहिं न सोहलराई। दधिबलसनमुख करहुबुलाई॥
सबिनय नाइ शीश बरभाखी। गवनेमुनि प्रभुछबि उरराखी॥
नारदगये जबहिं बिधि लोका। बायुतनय तन रामबिलोका॥
तात तुरत तुम गवनहु तहवाँ। बारिधिमहँ धौरागिरि जहवाँ॥
तहँ दधिबल रह ध्यानलगाये। बहुतदिवस चलिगयेसुभाये॥

दो० अहै तपोबल तेजस्वी तात तासु ढिग जाइ।
मन प्रसन्न करि चतुरई आनहु बेगि बुलाइ॥

पवनकुमार पाइ अनुशासन। चले बन्दिपद हरषिउदासन॥
बेगवन्त धावा कपि कैसे। बर नराच दधिसुत से तैसे॥
लोकअर्द्धघटिका तेहि ठामा। पहुँचे बायुपुत्र बलधामा॥
देखि तरणि समतासु प्रकाशा। ठाढ़ भयउ कपिमन्दिरपासा॥

दण्ड युगलकपि अस्थितरहेऊ। हियमहँ रामराम असकहेऊ॥
उतरु न होई होत प्रभाता। इतइनकरचित हरिपदराता॥
बणइककपिमनकीन्ह बिचारा। प्रभुपहँ चलिये कवनप्रकारा॥
नो गृह सहित चलहुँ लै येही। नहिंअसआयसु भक्तसनेही॥
दो० बुधजन शीशशिरोरतन अतिलजात मुनिराउ।
ताहि जगावन हेत तब कीन्हे अमित उपाउ॥
अचलध्यानकपि तासु प्रमाना। तजिप्रवीणताभजिभगवाना॥
रामचरण चितकपि बर दयऊ। दण्डएक औरो चलिगयऊ॥
बिधि प्रेरितदधिबल लघुशंका। करन उठेउ देखा भट बंका॥
जय श्रीराम बायुसुत बोला।सुनिदधिबलनिजलोचनखोला॥
बूझिहरिहि कीशहि डरलाई। कही परस्पर दोउ कुशलाई॥
पुनि हनुमान कहेउ सुनुभ्राता। चलहुबिलोकनत्रिभुवनत्राता॥
सानुजनाथ सुखद पदकंजा। जिनमकरन्दशिलाअघगंजा॥
जेहि लगि तपकीन्हेउबहुकाला। सोतुमपर अनुकूल कृपाला॥
दो० धूरजटी हृद मानसर बसत हंस इव जोइ।
सादर तुम कहँ लेन लगि पठवामोहिं प्रभुसोइ॥
सुनिशुभ बचन सुकंठकुमारा। हरिपहँहरिसँगतुरतसिधारा॥
आये नाथ निकट मृग शाखा। देखे पद जे हर हिय राखा॥
रहेउ चरणगहि प्रीति समेता। दधिबलनिरखेउकृपानिकेता॥
सानुज हरषि मिले सुखपुंजा। तासुपाणिगहिनिजकरकंजा॥
बैठे ताहि निकट बैठावा। तेहिअवसर सुकंठ तहँआवा॥
निरखितनयकपिपति हरषाना। मिलतप्रेम नहिं जायबखाना॥
गइ मणि पन्नग जनु पुनिपाई। देही देह मीन जल जाई॥
सुख सुग्रीव लहेउ प्रभु भेटे। अवगुण तीनिताहि चरणमेटे॥
सो० दधिबल बालिकुमार मिले परस्पर हरषिहिय।
भयउआइ निनुसार न्हाइ सबनिप्रभुपदगहे॥
जहँतहँ समर करन बनचारी। चलेकहत जयलषणखरारी॥

इहां नरान्तक प्रात प्रबोधा । रथचढ़िचलेउ भयंकरयोधा ॥
निशिचर हठी सुभटसँग ताके । आयुधअखिल भयानकबाके ॥
महि संग्राम निशाचर ठाढ़े । असितमेघसमअतिरिसबाढ़े ॥
करिमाया तेहिगात छिपावा । भयउप्रकटतबप्रभुढिगआवा ॥
दधिबलउलखासखाचलिआयउ । भुजापसारि हरषिउठिधायउ ॥
नारान्तकहुँ दीख गुरुभाई । मुदितमिले उर उभयअघाई ॥
भेटि सप्रेम बूझि कुशलाता । निजनिजदशाकीन्हबिख्याता ॥

दो० हरिपतिपूतप्रवीणअति सुनितेहि मुखबिख्यात ।
लगे बुझावन मित्रकहँ सुनहु बीयपति बात ॥

धरा स्वभाव सत्यकपि कहहीं । फलपियूष बिषबेलिनलहहीं ॥
समुझहु तात बिचारि निदाना । किहेअनीति न जगकल्याना ॥
पितुचरित्र समुझहु मनमाहीं । रामबिरोध कलहुँ जयनाहीं ॥
तुम प्रवीण भा मति भ्रमकैसे । कूपधसत बिकबाट अनैसे ॥
तुमहुँकीन्ह दिन चारिलड़ाई । जानेउ भालुकीश बलभाई ॥
तजि कुमंत्र सम्भव अज्ञाना । कहहुपाहि रघुबर भगवाना ॥
सफलकरहु भवप्रभुपद परशी । करिहैंअभय तोहिंसमदरशी ॥
मानहु सीख मोरि सुखकारी । प्रणतपाल रघुबीर खरारी ॥

दो० शारंगी शर तरणिसम दशमुख बपुखगलेख ।
जरत राखुयह समयतुव करिविज्ञान बिशेख ॥

सुनत बचन गुरु भ्राता केरा । नारान्तक भा क्रोध घनेरा ॥
कहनलाग खल ताहि कुभाँती । सहजसभीत कीशदिनराती ॥
बालिहि हतेउ जौन तपधारी । भा अंगद तिनआज्ञाकारी ॥
दधिबल यह बानर कुलरीती । हमरेकरहिं न अरिसनप्रीती ॥
यहकहि प्रभु सन्मुख सोधावा । दधिबललूम लपेटिटिकावा ॥
नारान्तक कह रे शठ बानर । तव तन नहीं मोर डरकादर ॥
छाँड़हुँ मूढ़ समुझि गुरु भाई । कहि अस पेलि चला कठिनाई ॥
तव सुकंठसुत कोपित भयऊ । सपदि कूदिआगे गहिलयऊ ॥

दो० नारान्तक दधिबल भिरे निरखिमालु अरुकीश ।
लगे करनसँगनिशिचरनकहिजयश्रीजगदीश ॥
छं० कपिशूरसँहारे शिलनिगारि । बहुमर्दिकेसिकतापहारि ॥
भटबिहुबाबलबासी जितेक । कपिमारिगिरायेबचेन एक ॥
रह एकाकी मनुजाद बीर । किय हृदयुद्ध उरगादधीर ॥
दोउलरतलहैंछबिएकभाँति।गिरिकज्जलकंचनउभयगाति ॥
युगघटिकाऊपरएकयाम । दोउभिरेसमरबलयोगधाम ॥
पुनिभाअलच्छसो करतयुद्ध।बलवन्तउभयश्रमगतसक्रुद्ध॥
कहषटप्रकारश्रुतियुद्धरीति । सुखमानेउसुरदेखतसुप्रीति॥
लखिपुत्रइक्काकीपुलकितातोकहबालिअनुजअतिहर्षबात॥
दो० जाम्बवन्तसनवचनमृदु कहेउ सुकण्ठ पुकारि ।
कहहुतातदधिबलकबहिं दनुजहिडारिहिमारि ॥
समर करत लागी अति बारा । यह सुनिबोलेउ ऋक्षमुवारा॥
क्षणक हृदय धरुधीरकपीशा । दधिबलगुरुसनलहीअशीशा ॥
सो अवसर अबआनितुलाना । एकपलकमहँ मारिहिअयाना ॥
सुनिहरीश मनमहँ अतिहरषे । तबहींबिबुध सुमन बहु बरषे ॥
दधिबल धन्य भुजा बलतोरा । रण कौतूहल कीन्ह न थोरा ॥
हरिअस्तुतिसुनिहरिअरिकोपा।कपिहिसहितखलभयोअलोपा ॥
योजन अयुत अष्ट नभ जाई । दधिबलसुमिरि हृदयरघुराई ॥
गहि मनुजाद भूमि पर डारा । करि चिकार तेहिमरती बारा ॥
छं० मरती समयअतिशब्दकरि दशमुखतनयहरिहरिकही ॥
तजिअधमतनुधरिसुभगबपुद्विजनाथसुनिसोगतिलही॥
जेहिहेतुसुरमुनि सिद्ध नानाभांति जपतपमखकिये ।
श्रीरामकरुणासिन्धु सो फल सहजहीं दनुजैदिये ॥
दो० देखि तासुगति बिबुधगण अभयभये खगराइ ।
प्रमुदित बरषे पुहुपझरि रामचरण चितलाइ ॥
मरा नरान्तक दधिबल जानी । तोरितासुशिरगहिनिजपानी ॥

रुपउ तासु गहि लंक सचारी। आपु चले जहँ नाथखरारी॥
निशा प्रवेश भूत बैताला। चढ़िचढ़ि बाहन वेषकराला॥
जाइ समरमहिसुखद समेता। उदर अघाइ गये सुनिकेता॥
आयउ दधिबल प्रभुके पासा। देखि हरषिउठि रमानिवासा॥
सानुज राममिले अति प्रीती। परम प्रसाद नाथ नितरीती॥
बैठे रघुकुल मणि दोउ भाई। सखासुतहि निजढिग बैठाई॥
हनुमदादि मरकट प्रभु पाहीं। लाइमाथ प्रमुदित मनमाहीं॥
दो० राम रजायसु पाय पुनि होइ बिगतश्रमकीश।
तबदधिबलप्रभुचरणगहि आगेधरि अरिशीश॥
समुझिकौतुकी रिपुसुतशीशा। सुनहु सुकंठकहो जगदीशा॥
नारान्तक कर शीश धरावहु। यतन समेत नसेत चलावहु॥
नाथ रजाय पाइ कपि राई। राखेउ सो शिर यतनकराई॥
पुनिदधिबल हरिकीन्ह बड़ाई। श्रीपतिश्रीमुखबहुबिधिगाई॥
जासु बड़ाई किय बड़ ईशा। सखहिसराहत सोजगदीशा॥
दधिबलप्रभुअनुकूलबिलोकी। सफलजन्मलखिभयउबिशोकी॥
प्रेम बारि लोचन कर जोरी। बोलेउ गिरा भक्ति रसबोरी॥
जगदात्मा तुम्हार यह बाना। सन्तत करहुदीन मनमाना॥
दो० बनचर पांवर सहज जड़ बुद्धिबिषम अज्ञान।
बिरदस्वभाव कृपालुप्रभु सेवक सुयश बखान॥
तवयशबिमलबिदितअवधेशा। कहत न पार पाव श्रुतिशेशा॥
सो मैं प्रभु कहि सकहुं न कैसे। पर्णवणिकगजमणिगुणजैसे॥
अस कहि हर हरि पद लपटाने। देखिप्रेमकपि बिबुधसिहाने॥
अन अभिमान ताहिप्रभु जाना। दीनदयालु बहुरिसनमाना॥
मांगुवच्छ जोबर मन भावा। सुनिदधिबलकरिबिनयसुनावा॥
नाथ तुम्हार रूप गुण नामा। करहिनिरन्तर ममउरधामा॥
होम्वहिं प्रिय पदपंकज कैसे। कामिहिंबाम सूम धन जैसे॥
परमस्वतन्त्र कहुँ बर देहु। मन इच्छा कछु औरौ लेहु॥

सो० बिहवाबल पुर राज करहु तात तुम मुदितमन।
छांड़ि और सबकाज शिवा शम्भुपद भक्तिदृढ़ ॥
यहै काज शुभ संतत चहई। ज्वइ स्वइप्राणीममनरहई ॥
उमा राम कर यहै स्वभाऊ। जनपरप्रेम न कबहुं दुराऊ ॥
मोहिं निजरूप रमापति जानै। ताते बारम्बार बखानै ॥
जानेउ श्रीरघुबरस्वभावजिन। सबतजिप्रेमभक्तिमांगीतिन ॥
राम भक्ति बारीश जासु उर। महिमातासुकहतश्रुतिबुधबर॥
सर सरितासब सुखद सुहाये। सहजहिआवत बिनहिंबुलाये॥
ताहि शुद्ध शिषदे रघुनाथा। पुनिप्रभुकीन्हतिलकनिजहाथा ॥
शारंगी रुख सबही पावा। अंगदादि ताकहँ शिर नावा ॥
दो० पाइ भक्तिबर राजबर प्रभु चरणनशिरनाइ।
दधिबलपठयउतुरतहठ सुनहुऋषयशुभभाइ ॥
तन मन रामचरण अनुरागे। दधिबल राजकरतभयत्यागे ॥
सेन सहित श्रीराजिवनयना। राजतदेखिबिबुधचितचयना ॥
हनत दुन्दुभी बिबिध प्रकारा। पुहुपमाल भरिकरतअपारा ॥
करि अस्तुति बरबिनयपुकारे। अदितिसूनुनिजगेह सिधारे ॥
उतहि जहां बैठा दशभाला। बिनुशिरबपुसोपरा बिशाला ॥
देखि बिकल आपै उठिधावा। पहिंचानततेहिअतिदुखपावा॥
हा नारांतक कहि खल परा। महा खँभार लंक गढ़ भरा ॥
मयतनया आदिक निशिचरीं। शोक समाज बिषादहिंभरीं ॥
दो० बिन्दुमती आदिकसकल नारांतककी नारि।
ब्याकुलमहिलोटहिंपरी निजनिजदशाबिसारि ॥
करिविलापजिमिनिशिचरनारी। सोनजातकहिसुननभयारी ॥
शोक जलधि लंकालघु तरणी। चढ़ीसकलनिशिचरकीघरणी॥
बूड़त जानि न कतहुं निबाहा। कहत मँदोदरितबसबपाहा ॥
बिन्दुमती कर गहि बैठाई। नाग सुता कै कथा सुनाई ॥
सुनत सुनयनाकी शुचिकरणी। धारि धीर नारांतक घरणी ॥

सबनिबुझाय सासु पगलागी। तजिधनधामस्वामिअनुरागी ॥
मातुकरहु सो यतन उताइल। मिलहुंजाइजेहिपदनिजराउल ॥
सुन सुलबधू न आन उपाऊ। जाउ जहां राजत रघुराऊ ॥
दो० जेहिबिधिगईसुलोचना तेहिगतितुमभयत्यागि।
निरखहु रघुपतिपदकमललावहुपतिशिरमांगि ॥
सासुबचनसुनिजानिप्रभाता।उठिनिशिचरतियपुलकितगाता॥
जातरूप मय यान मँगाई। निजकरगहिपतिदेह चढ़ाई ॥
चली अकेलि यानचढ़ि जबहीं। तासु सवति इकआईतबहीं ॥
नाम चित्ररेखा अस तासू। गुणगणसुभग बसैतनजासू ॥
सो करि विनय चढ़ी तेहिसंगा। कीन्ह पयान रँगी शतरंगा ॥
रथ अकेल आवत कपि देखा। कायर डरपे हृदय विशेखा ॥
आवत मानिसबल रिपु कोऊ। नलअरुनील सुभटबरदोऊ ॥
आये धाय सपदि तब आगे। युगलनारितननिरखनलागे ॥
दो० समुझिबूझि वृत्तान्त दोउ फिरि आये प्रभुपास।
बन्दि कंजपद उभय कह सुनिये रमानिवास ॥
नाथ नरान्तक की दोउ नारी। आवत शरणप्रणतभयहारी ॥
सुनि रघुवीर हृदय मुसकाने। उतहि टिकावहुसखासयाने ॥
सुनि प्रभुबचनबहुरि सो धाये। कटकबिगतरथ दूरिटिकाये ॥
बिन्दुमती चितरेखा दूनो। बिनयहमारि कीशअससूनो ॥
कहहु जाइ तुम प्रभुहि बुझाई। जेहिकारण हम दरशनपाई ॥
हम अबला कपि बिनवैं तोहीं। बूझिनाथ सन कहबै मोहीं ॥
नारि विनयसुनि कपिदोउभले। नीति बिचारि रामपहँ चले ॥
विनती नारि जाय नल बरणी। सुनिबिहँसिप्रभुतिनकैकरणी ॥
दो० परम मृदुल रघुनाथ चित कहत सन्त बुधवेद।
ताकहँ देत न दरश प्रभु सुनुखगेश सो भेद ॥
प्रेम परीक्षा हित रघुनायक। कौतुककरतसमरसुखदायक ॥
नाथ सखा सन बहुरि बुझाई। पुनिनलनारिन पासपठाई ॥

कहकपि सुनहु नरान्तक नारी । दरशन तुमहिं न देतखरारी ॥
तुम गृह जाहु बचन मम मानी । बोली सोतिय बचनसयानी ॥
हम अबलादरशन हित आईं । नयनसफलबिनुकिमिगृहजाईं ॥
यहिबिधिकरत बिनयदोउनारी । कीशन कटक कीन पैसारी ॥
आवत निकट जानि रिपुरवनी । यद्यपिपतिब्रतहैं सुखभवनी ॥
तदपि नाथ तेहि दरशन देहीं । जाइ निकट बिनती कीतेहीं ॥
दो० प्रभु सीतापतिजगतपति सुरनरपति रघुनाथ ।
देउदरश करुणायतन दीनबन्धु श्रुतिमाथ ॥
बोले राम न सो तिय बोली । बिमलज्ञानपतिब्रतअनुडोली ॥
नाथ सत्य यह नीति बखानै । पुरुषनपरतिय सपनेहुंजानै ॥
प्राकृत पुरुषन की यह रीती । जिनके हृदय कपटपरप्रीती ॥
समदरशी कछुदोष न स्वामी । सोबिचारु प्रभुअन्तर्य्यामी ॥
आरतबन्धु बिलम्ब न कीजे । करुणाकर बरदरशन दीजे ॥
नहिं बोले प्रभु पुनिसो कहई । तवयशअसश्रुतिगावतअहई ॥
गौतम नारि राम तुम तारी । अधमजातिभिलनीनिस्तारी ॥
सुनि मम हृदय परी परतीती । अबप्रभुकसदेखियबिपरीती ॥
दो० तारितारि अधमनिअमित बारबार श्रमजान ।
ताते करत अनाकनी मोरि ओर भगवान ॥
प्रभु मुसकाहिं न उत्तर देहीं । ताकर प्रेम परीक्षा लेहीं ॥
बिकल भयउ नारान्तक बाला । बारबारकरि बिनयबिशाला ॥
धर्म्म धुरंधर प्रभु अवतारा । केवल पतिब्रतधर्म्म हमारा ॥
जो हम सत्यसत्य तुम स्वामी । द्रवहु बेगि उर अन्तर्य्यामी ॥
यथाकरत कत प्रभुश्रुतिभाषा । पूजतनाथ न ममअभिलाषा ॥
लीन भयउपति प्राणराम महँ । अर्द्धभाग हमकहहुजाइँकहँ ॥
बृन्दा चरित नाथ सुधि करहू । बिनय हमारिबेगि उरधरहू ॥
बिनय प्रीति सत धर्म जनाई । परी प्रेमबश महि अकुलाई ॥
दो० पाहिपाहि रघुबंशमणि हतहु न बिरद प्रतीति ।

प्रीतम प्रीति न नरकडर तुमकहँ नाथ अनीति ॥
सती निराश बिनय सुनिबानी। पुलके दीनदयालु भवानी ॥
दुहुन लीन निज कटक बुलाई। परीं युगल प्रभुपदतरआई ॥
तिन्हें उठाय राम बैठावा। जगदीश्वरमृदुबचनसुनावा ॥
बिन्दुमती तैं परम सयानी। पतिपदरतिदृढ़हृदयसमानी ॥
बहुत करहुं का तव गुणगाना। मांगु बेगि बर जोमनमाना ॥
सुनत बचन लोचन जलबाढ़ीं। जोरि युगलकर दोऊ ठाढ़ीं ॥
प्रभु तव दानि वेद तरवरसे। पदजलजात देखिसुरसरिसे ॥
परम पवित्र भई हम दोऊ। हमसमधन्य नारिनाहिंकोऊ ॥
छं० कोधन्यहमसमनारि जगमहँ सुनहुश्रीरघुनायकं।
देदरशकीन्हीपतितपावन नाथ सुरअरिघायकं ॥
कृपासागर यश उजागर देहु बर सुर भावरं।
जेहिमिलैंपतिकहँजाइबिनुश्रमबढ़ैतवयशश्रीधरं॥
सो० यह कहि बिन्दुकुमारि सहितसौतिप्रभुपदपरी।
तिन्हैंउठाइ खरारि जगत्राता इमिकहत पुनि ॥
धरहु धीर तुमजनि अब डरहू। निजपतिलेहुभवनसुखकरहू ॥
कहेउ देव हमकहँ यह नीका। हमहूँ कहतअबभावतजीका ॥
गिरिजासहितगिरीश बिरागी। नाथतुम्हार दरशअनुरागी ॥
नारदादि सनकादिक जेते। जपतपकरहिंबिबिधबिधितेते॥
तेउ न कबहुँ हमारी नाई। देखहिंपद जलजातअघाई ॥
हरि दरशन लवलेश प्रमाना। जगके सबसुखनाहिंसमाना ॥
अमिय अघाइ गरलको खाई। बिनय हमारि यहै सुरसांई ॥
देहु कन्त शिर सपदि मँगाई। दया शील सागर रघुराई ॥
दो० नारान्तक कर शीश तव दीन्ह मँगाइ रमेश।
पाइस्वामिशिर मुदितह्वै बोलींदोउ उरगेश ॥
नाथ बिनय हम औरो करहीं। दाहबिनाहमकेहिबिधिजरहीं ॥
सुख सागर सुनिबचनप्रमाना। हनुमत अंगदादि मदनाना ॥

कह प्रभु सखा लंकमहँ धावहु । चन्दन अगर भारबहुलावहु ॥
पाइ राम अनुशासन धाये । लंका गढ़ गृहगृह सचुपाये ॥
कपिन शोधि चन्दनबहुभारा । लाये जहँ श्रीनाथ उदारा ॥
कह रघुबीर सुनहु लंकेशा । तात यहै बड़ हित उपदेशा ॥
बिन्दुमती जहँ चाहत ठाऊ । दाहभार सँग तुम तहँजाऊ ॥
दशकन्धर कर बैर बिहाई । चिताचारु शुचि देहुबनाई ॥
दो० रघुबर आज्ञा धारि शिर उठे दशानन भाइ ।
अयुतभार चन्दनअगर तेहिसँग चलेलिवाइ ॥
जहां जरी मघवाजित नारी । तेही गहर सुचिता सँवारी ॥
उहवां अपर सौति मनु नारी । बिन्दुमती मनभाव पियारी ॥
मूर्च्छित परीं प्रथम सुधिनाहीं । चलींसुनतगतिदुखमनमाहीं ॥
चलींचतुर्दश निशिचरि कैसे । निरखिदवास मृगीगणजैसे ॥
हा हा बिन्दुमती पति प्यारी । कहांगई तुव हमहिं बिसारी ॥
पहुँचीं सह बिलाप तहँ सोऊ । हरषीं हृदय बिलोकत दोऊ ॥
षोड़श निशिचरि भईं सभागी । मनबचक्रमपतिपदअनुरागी ॥
सकलअन्हाय मृतकअन्हवाई । सुमिरत हृदय रामगतिदाई ॥
दो० उत दशकन्धर जगेउशठ सुनेउ श्रवण सबहेतु ।
संग मँदोदरि आदि तिय गवना ले खगकेतु ॥
बाजत ढोल कपिन सुनिकाना । अपनेमनतिनअसअनुमाना ॥
आव सुद्धहित उतकोउ बीरा । हमकहँ ठाढ़करत यहतीरा ॥
कीशअयुत तबप्रभु पहँ आये । पूरण प्रेम चरण शिरनाये ॥
नाथ उतहि दशकन्धर जाता । कीश एककहसुनु जनत्राता ॥
प्रभुकहकुमुद तुरिततुमधावहु । बेगिबिभीषण कहँ लैआवहु ॥
राम रजायसु शिरधरि धाये । सपदिबिभीषण पहँसो आये ॥
तात तुमहिं रघुराज बुलावा । सुनत लंकपति आतुरआवा ॥
हेतु पतोहुन कहि समुझावा । कुमुदसहितरघुपतिपहँआवा ॥
दो० मोहनिशा तहँ तरुणरबि तिनचरणनशिरनाइ ।

भागवंत रावण अनुज बैठेउ प्रभुरुख पाइ ॥
दशमुखतियन सहितगातहवां । बिन्दुमती चित्तरेखा जहवां ॥
देखत अति बिलखा बिबुधारी । करुणाकरतनिशाचरिभ्भारी ॥
सासु ससुर कहँ देखि दुखारी । ज्ञान नवीन नरांतक नारी ॥
कहिशुचिगाथसबन समुझाई । स्वामिसमेत चितापरआई ॥
यथा योग्य बैठीं सब तैसे । पतिगृह रहतरहीं नितजैसे ॥
अग्नि दीन्ह ज्वालाअतिधाई । पहुँचीं सुरपुर सबतियजाई ॥
देखि दशा तिनकी सुरखनी । तिनाहिंसराहिभवनानिजगवनी ॥
रावण सहित युवति निजगेहा । गयउ भरो सासति संदेहा ॥
छं० संदेह सासत भरेउ रावण सहितदारानि गृहगयो ।
इमिमयसुतादिकनिशिचरिनिलखिबिकलबलमूर्च्छितभयो ॥
दशमाथगतिदेखतबिपुलबिलखैंनिशाचरनिशिचरी ।
सन्ताप शोक बिलापभयभ्रम कटक लंकामहँपरी ॥
दो० राम बिरोधिहिं जस उचित तसदिन पहुँचाआइ ।
सो बिचारकरि लंकगढ़ उतरी बिपति बजाइ ॥
इहां देव देवायसु जाना । बरआसनशोभित भगवाना ॥
यथा योग्य बैठे मृगशाखा । सबकीन्हेप्रभुपदअभिलखा ॥
रिपु बध भरेउ हर्ष सबके मन । पुनिपुनिहेरतसुभगश्यामतन ॥
तिनकीरुचिलखि दीनदयाला । शिवयशगावहु कहाकृपाला ॥
भरद्वाज प्रभु आज्ञा पाई । गावहिं कपिकलकंठ लजाई ॥
डमरु भृङ्ग शृङ्गी कर तारी । घ्राण पाणि मुखते बनचारी ॥
गोंडर तन्तु बेणु मंजीरा । शंख मृदंग नाद गम्भीरा ॥
नृत्यत कीश भाव दिखरावत । शिवासहितशिवकीरतिगावत ॥
छं० शिव शिवाकीरति बिमल गावतभालुबानरसुखभरे ।
अहिनाथयुतरघुनाथछबिनिरखतसकलचितपदधरे ॥
प्रभुदेखिकौतुकअनुजसहितसखनबखानतश्रीमुखम् ।
तुलसीपगेजहिध्यान जेजन पाइहें नितयश सुखम् ॥

सो० गत रजनी युग याम तब कौशल करुणा अयन ।
करिपूरण मनकाम सबनि कहेउ राजहुथलन ॥
बैठे निज निज थल रणधीरा । अनुजसहित राजतरघुबीरा ॥
सुखमा सीव सेन युत राजै । जयजयधुनिकपिभालुसमाजै॥
उमा चरित यहरुचिर सुहावा । नाथकृपा मैं तुमहिं सुनावा ॥
अपर चरित गिरिराजकुमारी । सुनहुकहततवप्रीति निहारी ॥
उहां मध्यनिशिरावणजागा । कोउकोउसचिवसिखावनलागा ॥
उग्र सिखावन कहिबुध बाके । थके न कछु मन भावै ताके ॥
रावण मन औरै कछु लसई । मेटिकोसकैजो बिधिउरबसई ॥
प्रभु बिरोधकरि चह कल्याना । मोह बिवश सोशठअज्ञाना ॥

इति ॥

बचन सुनत तेइकछुसुखमाना । कालविवश जसतीरथज्ञाना ॥
इहिविधि जलपतभाभिनुसारा । लगे भालुकपि चारिहुँद्वारा ॥
सुभट बुलाय दशानन बोला । रणसन्मुख जाकर मनडोला ॥
सो अबहीं बरु जाहु पराई । रण सन्मुख भागे न भलाई ॥
निजभुजबल मैं बैर बढ़ावा । देहौंउतर जो रिपुचढ़िआवा ॥
असकहि मरुत बेगरथसाजा । बाजहिं सकल जुझाऊबाजा ॥
चले बीरसब अतुलित बली । जनुकज्जलगिरि आंधीचली ॥
अशकुनअमितहोहिंतेहिकाला। गनै न भुजबलगर्ब बिशाला ॥
छं० अतिगर्बगनत न शकुनअशकुन श्रवहिंआयुधहाथते ।
भट गिरहिं रथते बाजि गज चिक्करत भाजतसाथते ॥
गोमायुगृद्ध शृगाल खर रव श्वान बोलहिं अतिघने ।
जनु कालदूत उलूक बोलहिं सकल परम भयावने ॥
दो० ताहि कि सम्पति शकुनशुभ सपनेहुमनबिश्राम ।
भूत द्रोह रत मोह बश राम बिमुख रतकाम ॥
चली निशाचर अनी अपारा । चतुरंगिणी चमू बहु भारा ॥
बिबिध भांति बाहन रथयाना । बिपुलबरणपताकध्वजनाना ॥

चले मत्त गज यूथ घनेरे । मनहुँ जलद मारुतके प्रेरे ॥
बरण बरण बर दैत्य निकाया । समर शूर जानहिं बहुमाया ॥
अति बिचित्र बाहिनी बिराजी । बीरबसन्त सेन जनु साजी ॥
चलतकटक दिगसिन्धुरडगहीं । क्षुभितपयोधिकुधरडगमगहीं ॥
उठी रेणु रबि गयउ छिपाई । पवन थकितबसुधाअकुलाई ॥
पणव निशान घोररव बाजहिं । महाप्रलयके जनुघनगाजहिं ॥
भेरि नफीरि बाजु सहनाई । मारू राग शूर सुखदाई ॥
केहरि नाद बीर सब करहीं । निजनिजबलपौरुषअनुसरहीं ॥
कहै दशानन सुनहु सुभट्टा । मर्दहु भालु कपिनकर ठट्टा ॥
हौं मारिहौं भूप दोउ भाई । असकहिसन्मुखफौजचलाई ॥
यहसुधि सकलकपिनजबपाई । धाये करि रघुबीर दुहाई ॥

छं० धाये बिशाल कराल मर्कट भालु काल समान ते ।
मानहुँ सपक्ष उड़ाहिं भूधर बृन्द नाना बान ते ॥
नखदशनशैलनकरनद्रुमगहिसबलशंकनमानहीं ।
जयरामरावणमत्तगज मृगराज सुयशसुनावहीं ॥

दो० दुहुँदिशिजयजयकारकरि निजनिज जोरीजानि ।
भिरे बीर इत रघुपतिहि उत रावणहिं बखानि ॥

रावण रथी बिरथ रघुबीरा । देखिबिभीषण भयउअधीरा ॥
अधिक प्रीति उर भा संदेहा । बन्दिचरणकहसहितसनेहा ॥
नाथ न रथ नाहीं पद त्राना । केहि बिधिजीतबरिपुबलवाना ॥
सुनहु सखा कह कृपानिधाना । जेहिजयहोइसोस्यन्दनआना ॥
शौरज धर्म जाहि रथ चाका । सत्य शीलदृढ़ ध्वजापताका ॥
बल बिवेक दम परहित घोरे । क्षमा दया समता रजुजोरे ॥
ईश भजन सारथी सुजाना । बिरतिचर्म्म सन्तोष कृपाना ॥
दान परशुबुधि शक्तिप्रचण्डा । बर बिज्ञान कठिन कोदण्डा ॥
संयम नियम शिलीमुखनाना । अमलअचलमनत्रोणसमाना ॥
कवच अभेद बिप्र पद पूजा । इहिसमबिजय उपाय न दूजा ॥

सखाधर्म्ममय अस रथ जाके । जीतनकहँनकतहुं रिपुताके ॥
दो० महाघोर संसार रिपु जीति सकै को वीर ।
जाकेअस रथ होइ दृढ़ सुनहु सखा मतिधीर ॥
सुनत बिभीषण प्रभुबचन हर्षि गहे पदकंज ।
इहिविधिमोहिं उपदेशकिय रामकृपासुखपुंज ॥
उत प्रचार दशकंधर इत अंगद हनुमान ।
लड़तनिशाचरभालुकपिकरिनिजनिजप्रभुआन॥
सुर ब्रह्मादि सिद्ध मुनि नाना । देखहिं रण नभचढ़े बिमाना ॥
मैं हूं उमा रहेउँ तेहिसंगा । देखत राम चरित रणरंगा ॥
सुभट समर रस दुहुंदिशिमाते । कपिजयशील रामबलताते ॥
एक एकसन भिरहिं प्रचारहिं । एक एक मर्दहिं महिपारहिं ॥
मारहिं काटहिं धरणिपछारहिं । शीशतोरिगहिभुजाउपारहिं ॥
उदरबिदारहिं भुजाउपारहिं । गहिपदअवनिपटकिभटडारहिं॥
निशिचर भटमहिगाड़हिंभालू । ऊपर डारिदेहिं बहुबालू ॥
बीरबली मुख युद्ध बिरुद्धा । देखिय बिपुलकालजनुक्रुद्धा ॥
छं० क्रुद्धेकृतान्त समानकपितनु स्रवतशोणितराजहीं ।
मर्दहिं निशाचरकटकभटबलवंतजिमि घनगाजहीं ॥
मारहिं चपेटन काटि दांतन डारि लातनमींजहीं ।
चिक्करहिंमर्कटभालुछलबलकरहिं जेहिखलछीजहीं ॥
धरिगालफारहिं उरबिदारहिं गलअँतावरिमेलहीं ।
प्रहलादपतिजनुबिबिध तनुधरिसमरअंगनखेलहीं ॥
धरुमारु काटिपछारुघोर गिरागगनमहिभरिरही ।
जयरामजोतृणतेकुलिशकरु कुलिशतेकरुतृणसही ॥
दो० निजदलबिचल बिलोकितब बीसभुजादशचाप ।
चला दशानन कोपकरि फिरहु फिरहु करिदाप ॥
धावा परम क्रोध दशकन्धर । सन्मुखचले हूहकरि बन्दर ॥
गहिकर पादप उपल पहारा । डारहिं तेहिपरपकहि बारा ॥

लागहिं शैल बज्र तनु तासू । खण्डखण्डहोइ फूटहिंआसू ॥
चला न अचल रहा रथ रोपी । रणदुर्मद रावणअति कोपी ॥
इतउतझपटिदपटि कपियोधा । मरदैलाग भयो अति क्रोधा ॥
चले पराय भालु कपि नाना । त्राहि त्राहि अंगद हनुमाना ॥
पाहि पाहि रघुबीर गुसाईं । यहखल आव कालकी नाईं ॥
तेहि देखे कपि सकल पराने । दशहु चाप शायक सन्धाने ॥

छं० संधानिधनुशरनिकरछांड़ेसि उरगाजिमि उड़िलागहीं ।
रहपूरिशरधरणी गगनदिशि बिदिशिकहँकपिभाजहीं ॥
भाअतिकोलाहल बिकलदल कपिभालु बोलहिंआतुरे ।
रघुबीर करुणासिन्धु आरत बन्धु जन रक्षा करे ॥

दो० बिचलत देखा कपिकटक कटिनिषंग धनुहाथ ।
लक्ष्मण चले सकोप तब नाइ रामपद माथ ॥

रे खल का मारसि कपि भालू । मोहिं बिलोकु तोर मैं कालू ॥
खोजत रहेउँ तोहिं सुतघाती । आज निपाति जुड़ावों छाती ॥
कहि अस छांड़ेसि बाणप्रचंडा । लक्ष्मणकियेतुरत शतखंडा ॥
कोटिन आयुध रावण डारे । तिलप्रमाणप्रभुकाटिनिवारे ॥
पुनि निज बाणनकीन्ह प्रहारा । स्यन्दनभंजि सारथी मारा ॥
शतशत शर मारे दशभाला । गिरिशृंगनजनुप्रविशहिंब्याला ॥
पुनि शत शर मारे उरमाहीं । परेउअवनितनुसुधिकछुनाहीं ॥
उठा प्रबल पुनि मूर्च्छा जागी । छांड़ेसि ब्रह्मदत्त जो सांगी ॥

छं० जो ब्रह्मदत्त प्रचण्ड शक्ति अनन्त उर लागी सही ।
परेउबिकलबीरउठावदशमुख अतुलबलमहिमारही ॥
ब्रह्माण्ड भुवनबिराज जाके एकशिर जिमिरजकनी ।
तेहि चह उठावन मूढ़रावन जाननहिं त्रिभुवनधनी ॥

दो० देखत धावा पवनसुत बोलत बचन कठोर ।
आवत तेहि उरमहँ हनेउ मुष्टि प्रहार प्रघोर ॥

जानु टेकि कपि भूमि न परेऊ । उठासँभारि बहुरिसिभरेऊ ॥

मुष्टिक एक ताहि कपि मारा । परेउशैल जिमिबज्रप्रहारा ॥
मूर्च्छा गई बहुरि सो जागा । कपिबलबिपुलसराहनलागा ॥
धृक धृक धृक बलपौरुषमोही । जो तैं जियतउठा सुरद्रोही ॥
असकहिकपिलक्ष्मणकहँलावा । देखि दशानन बिस्मयपावा ॥
कहरघुबीरसमुझि जियभ्राता । तुम कृतांत भक्षक सुरत्राता ॥
सुनत बचन उठि बैठ कृपाला । गगनगई सो शक्तिकराला ॥
पुनि कोदण्ड बाण गहि धाये । रिपुसन्मुखअतिआतुरआये ॥
छं० आतुरबहोरिबिभंजिस्यन्दनमारि तेहिब्याकुलकियो ।
गिरेउधरणिदशकन्धराबिकलतनुबाणशतबेधोहियो ॥
सारथी रथ घालि दूसर ताहि लंका लै गयो ।
रघुबीर बन्धुप्रताप पुञ्ज बहोरि प्रभु चरणननयो ॥
दो० उहां दशानन बहुरि उठि करनलाग कछु यज्ञ ।
जयचाहतरघुपतिबिमुख शठहठबश अतिअज्ञ ॥
इहां बिभीषण सब सुधि पाई । सपदिजायरघुपतिहिसुनाई ॥
नाथ करै रावण इक यागा । सिद्धभयेनहिंमरिहिअभागा ॥
पठवहु नाथ बेगि भट बन्दर । करहिंबिध्वंसआवदशकन्धर ॥
प्रात होत प्रभु सुभट पठाये । हनुमदादि अंगद सब धाये ॥
कौतुक कूदि चढ़े कपि लङ्का । पैठे रावण भवन अशङ्का ॥
जबहीं यज्ञ करत तेहि देखा । सकलकपिनभाक्रोधविशेखा ॥
रणते भागि निलज गृहआवा । इहांआइ बकध्यान लगावा ॥
असकहि अंगद मारेउ लाता । चितवनशठस्वारथमतराता ॥
छं० नहिंचितवजबकपिकोपितब गहिदशनलातनमारहीं ।
धरि केश नारि निकारिबाहर जबसोदीन पुकारहीं ॥
तबउठा कोपि कृतांतसम गहि चरण बानर डारहीं ।
इहिभांति यज्ञ विध्वंसकरि कपिनेकु मनहिंनहारहीं ॥
दो० मखबिध्वंसकरि कपि सकल आये रघुपति पास ।
चलेउदशानन क्रोधकरि छांडी जियकी आस ॥

चलतहोहिं तोहेअशुभ भयंकर । बैठहिंगृध्रउड़ाहिं शिरनपर ॥
भयउ काल बश कहा न माना । कहेसिबजावहुयुद्ध निशाना ॥
चली तमीचर अनी अपारा । बहुगजरथ पदचरअसवारा ॥
प्रभु सन्मुख खल धावहिं कैसे । शलभसमूह अनलकहँजैसे ॥
इहां देव सब बिनती कीन्ही । दारुणबिपतिहमहिंइनदीन्ही ॥
अबजनि नाथ खेलावहु एही । अतिशय दुखितहोतिबैदेही ॥
देव बचन सुनि प्रभु मुसकाना । उठि रघुबीर सुधारेउ बाना ॥
जटाजूट बांधी दृढ़ माथे । सोहत सुमनबीचबिचगाथे ॥
अरुणनयनबारिद तनुश्यामा । अखिललोकलोचनअभिरामा ॥
कटितट परिकर कसे निषंगा । करकोदण्ड कठिन शारंगा ॥

छं० शारंगकर सुन्दर निषंग शिलीमुखाकर कटि कस्यो ।
भुज दण्डपीन मनोहरायत उर धरासुर पद लस्यो ॥
कह दासतुलसी जबहिं प्रभुशर चापकरफेरनलगे ।
ब्रह्मांडदिग्गजकमठअहिमहि सिन्धु भूधरडगमगे ॥

दो० हर्षे देव बिलोकि छबि बरषहिं सुमन अपार ।
जयजय प्रभु गुणज्ञानबल धामहरणमहिभार ॥

इहिके बीच निशाचर अनी । कसमसाति आई अतिघनी ॥
देखिचले सनमुख कपि भट्टा । प्रलयकाल के जिमिघनघट्टा ॥
शक्ति शूल तलवारि चमकहिं । जनुदशदिशिदामिनीदमकहिं ॥
गजरथ तुरग चिकार कठोरा । गर्जत मनहुँ बलाहक घोरा ॥
कपि लंगूर बिपुल नभछाये । मनहुँ इन्द्रधनु उगेउसुहाये ॥
उठी रेणु मानहु जल धारा । बाण बुन्दभइ बृष्टि अपारा ॥
दुहुँदिशि पर्वत करत प्रहारा । बज्रपात जनु बारहिं बारा ॥
रघुपति कोपि बाण झरिलाई । घायलभे निशिचर समुदाई ॥
लागत बाण बीर चिक्करहीं । घुर्मिघुर्मिअगणितमहिपरहीं ॥
स्रवहिंशैल जनु निर्झर बारी । शोणितसरि कादरभयभारी ॥

छं० कादर भयंकर रुधिरसरिता बाढ़ि परम सुहावनी ।

दोउ कूलदल रथ रेतचक्र अवर्त्त बहति भयावनी ॥
जलजन्तु गजपदचर तुरगरथ बिबिधबाहन कोगने ।
शर शक्ति तोमर परशुचाप तरंग चर्म कमठघने ॥
दो० बीर परे जनु तीर तरु मज्जा बह्ह जनुफेन ।
कादरदेखत डरहिं जिय सुभटनके मनचैन ॥
मज्जहिं भूत पिशाच बैताला । केलिकरहिं योगिनी कराला ॥
काक कन्धधरि भुजा उड़ाहीं । एकते एक छीनि धरिखाहीं ॥
एक कहहिं ऐसिउ बहुताई । शठ तुम्हार दारिद्र न जाई ॥
कहरत भट घायल तट गिरे । जहँ तहँ मनहुँ अर्द्धजल परे ॥
खैंचहिं आंत गृध्र तट भये । जनु बनशी खेलत चितदये ॥
बहुभट बहे चढ़े खग जाहीं । जिमिनावरिखेलहिंजलमाहीं ॥
योगिनिभरिभरिखप्परसांचहिं।भूतपिशाचबिबिधबिधिनाचहिं॥
भटकपाल करताल बजावहिं । चामुण्डा नानाविधिगावहिं ॥
जम्बुक निकर तहां कटकटहीं । खाहिंअघाहिंदुआहिंदपटहीं ॥
कोटिनरुण्डमुण्डबिनु डोलहिं । शीशपरेमहिजयजयबोलहिं ॥
छं० बोलहिंजोजयजयरुण्डमुण्ड प्रचण्डशिरबिनुधावहीं ।
परिणामयुद्ध अगुह्यबोलहिं सुभट सुरपुर पावहीं ॥
निशिचरबरूथनि मर्दिगर्जहिं भालुकपि दर्पितभये ।
संग्रामअंगन सुभटसोहहिं राम शर निकरनहये ॥
दो० हृदय बिचारेसि दशबदन भा निशिचर संहार ।
मैं अकेल कपि भालु बहु माया करौं अपार ॥
देवन प्रभुहि पयादेहि देखा । उरउपजाअतिछोभबिशेखा ॥
सुरपति निजरथ तुरत पठावा । हर्षसहित मातलि लै आवा ॥
तेज पुंज रथ दिब्य अनूपा । बिहँसि चढ़े कोशलपुरभूपा ॥
चंचल तुरग मनोहर चारी । अजरअमरमनसागतिकारी ॥
रथारूढ़ रघुनाथहिं देखी । धाये कपि बलपाइ बिशेखी ॥
सही न जाय कपिन की मारी । तब रावण माया बिस्तारी ॥

सो माया रघुवीरहिं बांची । सब काहू मानी कर सांची ॥
देखी कपिन निशाचर अनी । बहुअङ्गदकपि लक्ष्मणधनी ॥
छं० बहुबालिसुत लक्ष्मणकपीश बिलोकि मर्कट अपडरे ।
जनुचित्रलिखितसमेतलक्ष्मणजहँसोतहँचितवतखरे ॥
निजसेनचकितबिलोकि हँसिधनुतानिशरकोशलधनी ।
माया हरीहरि निमिषमहँ हर्षीसकल मर्कट अनी ॥
दो० बहुरि राम सब तन चितय बोले बचनगँभीर ।
द्वन्द युद्ध देखहु सकल श्रमितभये अति बीर ॥
असकहि रथ रघुनाथ चलावा । बिप्र चरण पङ्कजशिरनावा ॥
तब लङ्केश क्रोधकरि धावा । गर्जितर्जिप्रभु सन्मुखआवा ॥
जीतेहु जो भट संयुग माहीं । सुनतापस मैं तिनसमनाहीं ॥
रावण नाम जगत यश जाना । लोकप जेहिके बन्दी खाना ॥
खरदूषण बिराध तुम मारा । हतेउब्याधइवबालिबिचारा ॥
निशिचर सुभट सकल संहारे । कुम्भकरण घननादहिमारे ॥
आजु बैर सब लेउँ निवाही । जो रणभूमिभागिनाहिंजाही ॥
आजु करौं खल काल हवाले । परेउ कठिन रावण के पाले ॥
सुनि दुर्वचन काल बश जाना । कहेउबिहँसितबकृपानिधाना ॥
सत्य सत्य तव सब प्रभुताई । जनिजल्पासि देखबमनुसाई ॥
छं० जनिजल्पनाकरिसुयशनाशहि नीतिसुनिशठकरुक्षमा ।
संसारमहँ पूरुष त्रिबिध पाटल रसाल पनस समा ॥
इक सुमनप्रद इक सुमनफल इकफलै केवल लागहीं ।
इककहहिं करतन करहिं कहहीं करहिंयकनाहिंबागहीं ॥
दो० राम बचन सुनि बिहँसिकह मोहिंसिखावहुज्ञान ।
वैरकरत तब नहिं डरेहु अब लागत प्रियप्रान ॥
कहि दुर्वचन क्रोधि दशकन्धर । कुलिशसमानलागछांड़नशर॥
नानाकार शिलीमुखधाये । दिशिअरुबिदिशिगगनमहँछाये ॥
अनल बाण छांड़े रघुबीरा । क्षणमहँ जरे निशाचर तीरा ॥

छाँड़ेसि तीव्र शक्ति खिसियाई । बाणसंग प्रभु फेरि पठाई ॥
कोटिन चक्र त्रिशूल पवांरे । तृणसमान प्रभुकाटिनिवारे ॥
निफल होइँ रावण शर कैसे । खलके सकल मनोरथ जैसे ॥
तब शतबाण सारथिहि मारेसि । परे भूमि जयराम पुकारेसि ॥
राम कृपा करि सूत उठावा । तब प्रभु परमक्रोधकरपावा ॥
छं० भयेक्रुद्धयुद्ध बिरुद्ध रघुपति त्रोणशायक कसमसे ।
कोदण्डधुनिसुनिचण्डअतिमनुजादभयमारुतग्रसे ॥
मन्दोदरी उर कम्प कम्पत कमठ भूधर अतित्रसे ।
चिक्करहिं दिग्गजदशनगहिमहिदेखिकौतुकसुरहँसे ॥
दो० तान्यो चाप जो श्रवणलगि छांड़े बिशिख कराल ।
राम बाण नभ मग चले लहलहात जनु ब्याल ॥
चले बाण सपक्ष जनु उरगा । प्रथमहिं हते सारथी तुरगा ॥
रथ विभंजि हति केतु पताका । गर्जाअति अन्तरबलथाका ॥
तुरतआनिरथचढ़िखिसियाना । छांड़ेसिअस्त्रशस्त्रबिधिनाना ॥
बिफल होइँ सब उद्यम ताके । जिमिपरद्रोह निरतमनसाके ॥
तब रावण दश शूल चलाये । बाजिचारि महिमारिगिराये ॥
तुरत उठाय कोपि रघुनायक । छांड़े अतिकराल बहुशायक ॥
रावण शिर सरोज बनचारी । चलेरघुनाथ शिलीमुखधारी ॥
दस दश बाण भाल दश मारे । निसरिगयेचल रुधिरपनारे ॥
श्रवत रुधिर धावा बलवाना । प्रभुपुनि कृतधनुशरसंधाना ॥
तीस तीर रघुबीर पवांरे । भुजन समेत शीश महिपारे ॥
काटतही पुनि भये नवीने । राम बहोरि भुजा शिरछीने ॥
काटित झटित पुनि नूतन भये । प्रभु बहु बार बाहुशिर हये ॥
पुनिपुनिप्रभुकाटहिं भुजशीशा । अतिकौतुकी कोशलाधीशा ॥
रहे छाइ नभ शिर अरु बाहू । मानहुँअमित केतु अरुराहू ॥
छं० जनु राहुकेतु अनेक नभपथ श्रवत शोणितधावहीं ।
रघुबीर तीर प्रचण्ड लागहिं भूमिगिरन न पावहीं ॥

इक एक शर शिर निकरछेदे नभउड़त इमिसोहईं ।
ननुकोपिदिनकर करनिकर जहँतहँबिधुन्तुदपोहईं ॥
दो० जिमिजिमिप्रभुहततासुशिर तिमितिमिहोहिंअपार ।
सेवत बिषय बिवर्द्ध जिमि तिमि नित नूतनमार ॥
दशमुख दीख शिरनकी बाढ़ी । बिसरा मरण भई रिसगाढ़ी ॥
गरजेउ मूढ़ महा अभिमानी । धायउ दशहु शरासनतानी ॥
समर भूमि दशकन्धर कोपा । बर्षिबाण रघुपति रथतोपा ॥
दण्ड एक रथ देखि न परेऊ । जनुनिहारमहँ दिनकरदुरेऊ ॥
हाहाकार सुरन सब कीन्हा । तबप्रभुकोपिधनुषकरलीन्हा ॥
शर निवारि रिपुके शिर काटे । तेदिशिबिदिशिगगनमहिपाटे॥
काटेशिर नभमारग धावहिं । जयजयधुनिकहिभयउपजावहिं॥
कहँ लक्ष्मण हनुमन्त कपीशा । कहँ रघुबीर कोशलाधीशा ॥
छं० कहँ रामकहि शिरनिकरधावहिं देखिमर्कट भजिचले ।
सन्धानिशर रघुबंशमणि तबशरन शिर बेधेभले ॥
शिरमालिकागहिकालिका तहँ बृन्दबृन्दनिसोंमिलीं ।
करिरुधिर सरमज्जन मनहुँ संग्रामवट पूजनचलीं ॥
दो० पुनि रावण अति कोपकरि छांड़ी शक्ति प्रचण्ड ।
सन्मुख चली बिभीषणहिं मनहुँ कालको दण्ड ॥
आवत देखि शक्ति अतिभारी । प्रणतारत हरबिरदसँभारी ॥
तुरत बिभीषण पाछे मेला । सन्मुखराम सहेउ सो शेला ॥
लगी शक्ति मूर्च्छा कछु भई । प्रभुकृतखेलसुरन बिकलई ॥
देखि बिभीषणप्रभु श्रमपायउ । गहिकरगदा क्रोधकरिधायउ ॥
रे अभाग्य शठ मन्द कुबुद्धे । तैं सुरनर मुनि नाग बिरुद्धे ॥
सादर शिवकहँ शीश चढ़ाये । एक एक के कोटिन पाये ॥
तेहिकारणखल अबलगिबांचा । अबतवकाल शीशपरनाचा ॥
राम बिमुखशठचहसिसम्पदा । असकहिहनेसिमांझउरगदा ॥
छं० उरमांझ गदाप्रहारघोर कठोर लागत महिपरयो ।

दशवदनशोणितश्रवतपुनिसंभारिधायोरिसमख्यो ॥
दोउभिरेअतिबलमल्लयुद्ध बिलोकिएकहिइकहनै ।
रघुबीर बलगर्वित विभीषण मालनहिंताकहँगनै ॥
दो० उमा बिभीषण रावणहिं सन्मुखचितव कि काउ ।
भिरत सो कालसमान अब श्रीरघुबीर प्रभाउ ॥
देखा अमित बिभीषण भारी । धावा हनूमान गिरिधारी ॥
रथ तुरंग सारथी निपाता । हृदय मांझ मारेउ तेहिलाता ॥
ठाढ़ रहा अतिकम्पित गाता । गयउ बिभीषणजहँजनत्राता ॥
पुनिरावण तेहि हतेउ प्रचारी । चलागगन कपिपूंछ पसारी ॥
गहेसिपूंछकपिसहित उड़ाना । पुनिनभभिर्योप्रबलहनुमाना ॥
लरतअकाश युगल समयोधा । हनत एक एकहि करिक्रोधा ॥
शोभितनभ छलबलबहुकरहीं । कज्जलगिरिसुमेरु जनुलरहीं ॥
बुधिबल निशिचर परैनपारा । तबमारुतसुत प्रभुहिसंभारा ॥
छं० संभारि श्रीरघुबीरधीर प्रचारिकपि रावणहन्यो ।
महिपरतपुनिउठिलरतदेवन युगलकहँजयजयभन्यो ॥
हनुमंत संकट देखिमर्कट भालु क्रोधातुर चले ।
रणमत्तरावणसकल सुभट प्रचंड भुजबल दलिमले ॥
दो० राम प्रचारे कीशसब धाये कीश प्रचण्ड ।
कपिदलबिपुलबिलोकितेइँकीन्हप्रकटपाखण्ड ॥
अन्तर्द्धान भयो क्षण एका । पुनि प्रकटेसिखलरूपअनेका ॥
रघुबर कटक भालु कपिजेते । जहँ तहँ प्रकटदशानन तेते ॥
देखे कपिन अमित दशशीशा । भागेभालु बिकल भटकीशा ॥
चले बलीमुख धरहिं न धीरा । त्राहित्राहि लक्ष्मण रघुबीरा ॥
दशदिशि कोटिनधावहिं रावन । गर्जहिंघोर कठोर भयावन ॥
डरे सकल सुर चले पराई । जयकी आशतजहुरे भाई ॥
सब सुर जिते एक दशकंधर । अबबहुभये तकहु गिरिकंदर ॥
रहे बिरंचि शंभु मुनि ज्ञानी । जिननिजप्रभुकीमहिमाजानी ॥

छं० जानहिं प्रताप ते रहे निर्भयकपिन रिपु मान्योफुरे ।
चलेबिकलमर्कटभालुसकल कृपालुपाहि भयातुरे ॥
हनुमंत अंगद नीलनलबलवंत अति रणबांकुरे ।
मर्दहिं दशानन कोटिकोटिन्ह कपट भटके अंकुरे ॥

दो० सुर बानर देखे बिकल हँसे कोशलाधीश ।
साजिशरासननिमिषमहँ हरेसकलदशशीश ॥

प्रभुक्षणमहँ मायासब काटी ।जिमिरविउदयजाहितमफाटी ॥
रावण एक देखि सुर हर्षे । बिपुलसुमन पुनिप्रभुपरबर्षे ॥
भुज उठाय रघुपति कपि फेरे । फिरे एक एकनि के टेरे ॥
प्रभुबल पाइ भालु कपि धाये । तरलतमकि संयुगमहि आये ॥
करत प्रशंसा सुर तेइ देखे । भयउ एक मैं इनके लेखे ॥
शठहु सदातुम मोर मरायल असकहिगगनपंथकहँधायल ॥
हाहाकार करत सुर भागे । शठहु जाहु कहँ मोरे आगे ॥
देखि विकल सुर अंगद धावा । कूदिचरण गहि भूमिगिरावा ॥

छं० गहिभूमिपाख्योलातमाख्योबालिसुतप्रभुपहँगयो ।
संभारिउठि दशकण्ठघोर कठोरकरिगर्जतभयो ॥
करिदाप धनुषचढ़ाइ दशसन्धानिशर बहुबर्षई ।
कियसकलभटघायलबियाकुलदेखिनिजबलहर्षई ॥

दो० तब रघुपति लंकेशके शीशभुजा शरचाप ।
काटेभये नवीन पुनि जिमि तीरथ के पाप ॥

शिर भुज बाढ़ि देखि रिपुकेरी । भालु कपिन रिसभईघनेरी ॥
मरत न मूढ़ कटे भुज शीशा । धाये कोपि भालु अरुकीशा ॥
बालितनय मारुत नल नीला । द्विविद मयन्दमहाबलशीला ॥
विटप महीधरकरहिं प्रहारा । सोइगिरितरुगहिकपिनसोमारा ॥
एकन नखगहि बपुष बिदारी । भागिचलहिं यकलातनमारी ॥
तबनलनील शिरनचढ़िगयऊ । नखनललाट बिरदारतभयऊ ॥
रुधिरबिलोकि सकोप सुरारी । तिनहिंधरनकहं भुजापसारी ॥

गहे न जाहिंशिरनिपरफिरहीं । जनुयुगमधुपकमलवनचरहीं ॥
कोपि कूदि दोउ धरेसि बहोरी । महिपटकेसिगाहिभुजामरोरी ॥
पुनिसकोपि दशधनुकर लीन्हा । शरनिमारिघायलकपिकीन्हा ॥
हनुमदादि मूर्च्छित सबबन्दर । पाय प्रदोष हर्ष दशकन्धर ॥
मूर्च्छितदेखि सकल कपिबीरा । जाम्बवन्त धावा रणधीरा ॥
संग भालु भूधर तरु भारी । मारन लगे प्रचारि प्रचारी ॥
भयो क्रोध रावण बलवाना । गहिपद महिपटके भटनाना ॥
देखि भालुपतिनिजदलघाता । कोपि मांझउर मारेसिलाता ॥

छं० उरलात घात प्रचण्ड लागत बिकलरथते महिगिरा ।
गहिभालुबीसहुकरनिमानहुंकमलनिशिबसमधुकरा ॥
मूर्च्छितबिलोकि बहोरिपदहतिभालुपतिप्रभुपहँगयो ।
निशिजानिस्यन्दनघालितेहि तबसूतयत्नकरतभयो ॥

दो० मूर्च्छागइ कपि भालु तब सब आये प्रभु पास ।
सकल निशाचर रावणहिं घेरिरहे अति त्रास ॥

तेहि निशिमहँ सीता पहँ जाई । त्रिजटाकहि सबकथाबुझाई ॥
शिर भुज बाढ़िसुनत रिपुकेरी । सीता उर भै त्रास घनेरी ॥
मुख मलीन उपजी मन चिंता । त्रिजटासन बोली तब सीता ॥
होइहिकहाकहसिकिनमाता । केहिबिधिमरिहिबिश्वदुखदाता ॥
रघुपति शर शिरकटे न मरई । बिधिबिपरीतचरितसबकरई ॥
मोर अभाग्य जिआवत ओही । जेहिहौं हरिपदकमलबिछोही ॥
जेइ कृतकनककपट मृग झूठा । अजहुंसोदैव मोहिं पररूठा ॥
जेहिंबिधिमोहिंदुखदुसहसहावा। लक्ष्मणकहँ कटुबचनकहावा ॥
रघुपतिबिरह बिषमशर भारी । तकितकि बारबारमोहिंमारी ॥
ऐसेहु दुख जो राखु मम प्राना । सोबिधिताहिजिआवनआना ॥
बहुबिधि करत बिलापजानकी । करिकरिसुरतिकृपानिधानकी ॥
कह त्रिजटा सुन राजकुमारी । उरशरलागत मरिहिसुरारी ॥
ताते प्रभु उर हतहिं न तेही । इहिके हृदय बसत बैदेही ॥

छं० इहिके हृदयबस जानकी मम जानकी उर बासहै।
मम उदर भुवन अनेक लागतबाण सबको नासहै॥
असमुनतहर्षविषादउर अतिदेखिपुनि त्रिजटाकहा।
अबमरिहिरिपु इहिभांति सुन्दरितजहु तुम संशयमहा॥
दो० काटत शिर होइहहि बिकल छूटिजाइ तव ध्यान।
तब रावणके हृदय शर मारहिं राम सुजान॥
असकहि बहु प्रकार समुझाई। पुनित्रिजटानिजभवनसिधाई॥
राम सुभाव सुमिरि बैदेही। उपजीबिरहव्यथा अतितेही॥
निशिहिशशिहिनिन्दतबहुभांती। युगसमभई बिहातिनराती॥
करत बिलाप मनहिं मन भारी। राम बिरह जानकी दुखारी॥
जब अति भयो बिरह उरदाहू। फरकेउ बामनयन अरुबाहू॥
शकुन बिचारि धरी उर धीरा। अबमिलिहहिं कृपालुरघुबीरा॥
इहां अर्द्ध निशि रावण जागा। निजसारथिसनखीझनलागा॥
शठ रणभूमि छुड़ायसि मोहीं। धृकधृकअधममन्दमतितोहीं॥
तेइपदगहि बहुबिधिसमुझावा। भोरभये रथचढ़ि पुनिआवा॥
सुनि आगमन दशानन केरा। कपिदल खरभरभयउघनेरा॥
जहँ तहँ भूधर बिटप उपारी। धाये कटकटाइ भट भारी॥
छं० धाये जो मर्कट बिकट भालु कराल कर भूधरधरा।
अतिकोपि करहिंप्रहार मारतभजिचलेरजनीचरा॥
बिचलाइदलबलवन्तकीशनि घेरिपुनिरावणलियो।
दशदिशिचपेटन्हमारिनखनबिदारितेहिव्याकुलकियो॥
दो० देखि महामरकट प्रबल रावण कीन्ह बिचार।
अन्तरहितहोइ निमिषमहँ कृतमाया बिस्तार॥
छं० जबकीन्हतेइँ पाखण्ड। भये प्रकटजन्तु प्रचण्ड॥
बैताल भूत पिशाच। कर धरे धनुष नराच॥
योगिनि गहे करवाल। इकहाथ मनुजकपाल॥
करिसद्यशोणित पान। नाचहिंकरहिंगुणगान॥

धरुमारु बोलहिं घोर । रहिपूरिधुनिचहुंओर ॥
मुखबाय धावहिं श्वान । तब लगे कीश परान ॥
जहँ जाहिं मर्कट भागि । तहँबरतदेखहिं आगि ॥
भयविकल बानर भालु । पुनि लाग बर्षन बालु ॥
जहँतहँथकितकरिकीश । गर्जेउबहुरिदशशीश ॥
लक्ष्मण कपीश समेत । भयेसकलबीरअचेत ॥
हा राम हा रघुनाथ । कहिसुभटमींजहिंहाथ ॥
इहिबिधिसकलबलतोरि । तेहिकीनकपट बहोरि ॥
प्रकटे बिपुल हनुमान । धाये गहे पाषान ॥
तिन राम घेरे जाइ । चहुंदिशिबरूथबनाइ ॥
मारहु धरहु जनिजाइ । कटकटाहिं पूंछ उठाइ ॥
दशदिशिलंगूर बिराज । तेहि मध्यकोशलराज ॥

छं० तेहिमध्यकोशलराज सुन्दरश्यामतनशोभासही ।
जनुइन्द्रधनुष अनेककियबरबारितुंगतमालही ॥
प्रभुदेखिहर्षबिषादउरसुरवदतिजयजयजयकरी ।
रघुबीरएकहितीरकोपित निमिषमहँ मायाहरी ॥
मायाबिगतकपिभालुहर्षे बिटपगिरिगहिसबफिरे ।
शरनिकरछांड़े रामरावण बाहुशिर पुनिपुनिहरे ॥
श्रीरामरावणसमरचरितअनेककल्पजो गावहीं ।
शतशेषशारदनिगमकबितेउतदपिपारनपावहीं ॥

दो० कहे तासु गुणगण कछुक जड़मति तुलसीदास ।
निजपौरुषअनुसारजिमि मशकउड़ाहिं आकास ॥
काटि शीश भुज बार बहु मरै न भट लंकेश ।
प्रभु क्रीड़त मुनि सिद्धसुर ब्याकुलदेखि कलेश ॥

काटत बढ़हिं शीश समुदाई । जिमिप्रतिलाभलोभअधिकाई ॥
मरै न रिपु श्रमभयउ बिशेखा । राम बिभीषण तन तबदेखा ॥
उमा काल सम जाकी इच्छा । सो प्रभु जनकी लेतपरिच्छा ॥

सुनु सर्बज्ञ चराचर नायक । प्रणतपालसुरमुनिसुखदायक ॥
नाभी कुण्ड सुधा बस वाके । नाथ जियत रावणबलताके ॥
सुनत बिभीषण बचनकृपाला । हर्षि गहे प्रभु बाण कराला ॥
अशकुन होन लगे बिधिनाना । रोवहिं बहुशृगाल खरश्वाना ॥
बोलहिं खग अति आरत हेतू । प्रकट भये जहँ तहँ नभकेतू ॥
दशदिशि दाहहोन तब लागा । भये पर्व बिनु रबि उपरागा ॥
मन्दोदरि उर कम्पित भारी । प्रतिमास्रवहिंनयनबहुबारी ॥

छं० प्रतिमास्रवहिंपबिपातनभ अति बातबहडोलत मही ।
बर्षहिंबलाहकरुधिरकचरज अशुभअतिसककोकही ॥
उतपातअमितबिलोकिनभसुर बिकलबोलहिंजयजये ।
सुर सभय जानि कृपालु रघुपति चापशरजोरतभये ॥

दो० आकर्षेउ धनु श्रवण लगि छांड़े शर यकतीश ।
रघुनायक शायक चले मानहुं काल फणीश ॥

शायक एक नाभि सर शोषा । अपरलगे शिरभुजकरिरोषा ॥
लै शिर बाहु चले नाराचा । शिरभुजहीनरुण्डमहिनाचा ॥
धरणि धसै धर धावप्रचण्डा । तबशरहतिप्रभुकृतयुगखण्डा ॥
गर्जेउ मरत घोर रव भारी । कहां राम रण हतौं प्रचारी ॥
डोली भूमि गिरत दशकन्धर । क्षुभितसिन्धुसहदिग्गजभूधर ॥
परेउ भूमि युग खण्ड बढ़ाई । चापि भालु मर्कट समुदाई ॥
मन्दोदरि आगे भुज शीशा । धरिशिर चले जहांजगदीशा ॥
प्रविशे सब निषङ्ग महँ जाई । देखि सुरन दुन्दुभी बजाई ॥
तासु तेज समान प्रभु आनन । हर्षे देव शम्भु चतुरानन ॥
जय धुनि पूरि रही नवखण्डा । जयरघुबीर प्रबल भुजदण्डा ॥
बर्षहिं सुमन देव मुनि बन्दा । जयकृपालुजयजयतिमुकुन्दा ॥

छं० जयकृपाकन्दमुकुन्दहरि मर्दननिशाचरमदप्रभो ।
खलदलविदारणपरमकारण कारुणीकसदाबिभो ॥
सुर सिद्ध मुनि गन्धर्बहर्षे बाज दुन्दुभिगहगही ।

संग्राम अंगन राम अंग अनंग बहु शोभा लही ॥
शिरजटामुकुटप्रसूनबिचबिच अतिमनोहरराजहीं ।
जनुनीलगिरिपरतड़ितपटलसमेतउडुगणभ्राजहीं ॥
भुजदण्डफेरतशरशरासन रुधिरकणतनअतिबने ।
जनुरायमुनिय तमालतरुवर बैठिबहुसुख आपने ॥
दो० कृपादृष्टि करि वृष्टिप्रभु अभय किये सुरवृन्द ।
हर्षे बानर भालु कपि जय सुखधाम मुकुन्द ॥
पतिशिरदीखजबहिं मन्दोदरि । मूर्च्छितबिकलखसीधरणीपरि ॥
युवति वृन्द रोवत उठि धाईं । तेहि उठाय रावणपहँ ल्याईं ॥
पतिगतिदेखिसोकरति पुकारा । छूटे केश न देह सँभारा ॥
उर ताड़ना करै विधि नाना । रोदन करै प्रताप बखाना ॥
तवबल नाथ डोलनित धरणी । तेजहीन पावक शशितरणी ॥
शेष कमठसहिसकहिं न भारा । सो तनु आजु परा महिझारा ।
वरुण कुबेर सुरेश समीरा । रणसम्मुख धरुकाहु न धीरा ॥
भुजबल जीति कालयमसाईं । आजुसोपरेउ अनाथकिनाईं ॥
जगतबिदिततुम्हारि प्रभुताई । सुतपरिजनबल बरणिनजाई ॥
राम बिमुख असहाल तुम्हारा । रहा न कुलकोउ रोवनिहारा ॥
तववश बिधिप्रपंच सबनाथा । सबदिगपतितोहिंनावहिंमाथा ॥
अब तवशिरभुजजम्बुकखाहीं । रामबिमुखयहअनुचितनाहीं ॥
कालबिवशपति कहा न माना । अगजगनाथमनुजकरिजाना ॥
छं० जानेउमनुजकर दनुजकानन दहनपावक हरिस्वयं ।
जिहिनवतशिवब्रह्मादिसुरपियभजेहुनाकरुणामयं ॥
आजन्मते परद्रोहरति पापौघमय तवतनअयं ।
तुमहूं दियोनिजधामराम नमामि ब्रह्मनिरामयं ॥
दो० अहह नाथ रघुनाथसम कृपासिन्धु को आन ।
मुनिदुर्लभजो परमगति तुमहिं दीन्ह भगवान ॥
मन्दोदरी बचन सुनि काना । सुरमुनिसिद्धसबहिंसुखमाना ॥

अज महेश नारद सनकादी । जे मुनिवर परमारथ बादी ॥
भरिलोचन रघुपतिहि निहारी । प्रेम मगन सब भये सुखारी ॥
रोदन करत बिलोकेउ नारी । गये बिभीषण मनदुखभारी ॥
बन्धु दशा देखत दुख भयऊ । तबप्रभुअनुजहिआयसुदयऊ॥
लक्ष्मणतेहिबहुबिधिसमुझाये । सहितबिभीषणप्रभुपहँ आये॥
कृपा दृष्टि प्रभु ताहि बिलोका । करहुक्रियापरिहरिसबशोका ॥
कीन्ह क्रिया प्रभुआयसुमानी । विधिवत देशकालगतिजानी ॥
दो० मयतनयादिक नारि सब देइँ तिलांजलि ताहि ।
भवन गईं रघुबीरगुण गण बरणति मनमाहि ॥
आइ बिभीषण पुनि शिरनावा । कृपासिन्धुतबअनुजबुलावा ॥
तुम कपीश अंगद नलनीला । जाम्बवन्त मारुतसुतशीला ॥
सबमिलि जाहु बिभीषणसाथा । सारेहुतिलककहेउ रघुनाथा ॥
पिता बचन मैं नगर न जाऊं । आपुसरिसकपिअनुजपठाऊं॥
तुरतचलेकपि सुनिप्रभुबचना । कीन्हीजाइ तिलककी रचना ॥
सादर सिंहासन बैठारी । तिलककीन्हअस्तुतिअनुसारी॥
जोरि पाणि सबही शिरनाये । सहितबिभीषणप्रभुपहँआये ॥
तब रघुबीर बोलि कपिलीन्हे । कहिप्रियबचनसुखीसबकीन्हे॥
छं० कीन्हेसुखी सबकहि सुबाणी बलतुम्हारे रिपुहयो ।
पायो बिभीषण राजतिहुँपुर यशतुम्हारो नितनयो ॥
मोहिंसहितशुभकीरतितुम्हारी परमप्रीतिजोगाइहैं ।
संसार सिन्धु अपार पार प्रयास बिनु तरिजाइहैं ॥
दो० सुनत रामके बचन मृदु नहिं अघात कपि पुंज ।
बारहिं बार बिलोकि मुख गहे सकल पद कंज ॥
तब प्रभु बोलि लिये हनुमाना । लंका जाहु कहेउ भगवाना ॥
समाचार जानकिहि सुनावहु । तासुकुशललैतुमचलिआवहु ॥
तब हनुमान नगर महँ आये । सुनिनिशिचरीनिशाचरधाये ॥
पूजा बहु प्रकार तिनकीन्ही । जनकसुतादिखायपुनिदीन्ही ॥

दूरिहिते प्रणाम कपि कीन्हा । रघुपति दूत जानकी चीन्हा ॥
कहहु तात प्रभु कृपा निकेता । कुशलअनुज प्रभुसेनसमेता ॥
सबबिधि कुशलकोशलाधीशा । मातु समरजीत्योदशशीशा ॥
अविचल राज बिभीषणपावा । सुनिकपिबचन हर्षउरछावा ॥
छं० अतिहर्षमनतनपुलकलोचन सजलपुनिपुनिकहरमा ।
कादेउँतोहिंत्रैलोक्यमहँ कपिकिमपिनहिंबाणी समा ॥
सुनमातु मैं पायउँअखिलजगराज आजु न संशयं ।
रणजीति रिपुदल बन्धुयुत पश्यामिराम नमामियं ॥
दो० सुनसुत सदगुण सकलतव हृदय बसैं हनुमन्त ।
सानुकूल रघुबंशमणि रहहिं समेत अनन्त ॥
अबसोइयतन करहु तुमताता । देखौं नयन श्याम मृदुगाता ॥
तब हनुमन्त राम पहँ आये । जनकसुता करकुशलसुनाये ॥
सुनि बाणी पतंगकुल भूषण । बोलिलियेकपिराजबिभीषण ॥
मारुतसुत के संग सिधावहु । सादर जनकसुता लै आवहु ॥
तुरतहि सकल गयेजहँ सीता । सेवहिं सबनिशिचरी बिनीता ॥
बेगिबिभीषण तिनहिं सिखावा । सादर तिनसीतहिंअन्हवावा ॥
दिव्य बसन भूषण पहिराये । शिविकारुचिरसाजिपुनिलाये ॥
तेहि पर हर्षि चढ़ी बैदेही । सुमिरि राम सुखधामसनेही ॥
बेतपाणि रक्षक चहुँ पासा । चलेसकल मनपरमहुलासा ॥
देखन भालु कीश बहु धाये । रक्षक कोटि निवारण आये ॥
कह रघुबीर कहा मम मानहु । सीतहिसखापयादेहि आनहु ॥
देखहिं कपि जननी की नाईं । बिहँसि कहा रघुबीर गुसाईं ॥
सुनिप्रभुबचन भालुकपि हरषे । नभते सुरन सुमनबहु बरषे ॥
सीतहि प्रथम अग्निमहँराखी । प्रकटकीन्हचह अन्तरसाखी ॥
दो० तेहि कारणकरुणा अयन कहे कछुक दुर्बाद ।
सुनत यातुधानी सकल लागीं करन बिषाद ॥
प्रभुके बचन शीश धरि सीता । बोली मनक्रम बचन पुनीता ॥

लक्ष्मण होहु धर्म के नेगी। पावक प्रकट करहु तुम बेगी॥
सुनि लक्ष्मण सीता की बानी। बिरह बिबेक धर्मरति सानी॥
लोचन सजल जोरिकर दोऊ। प्रभुसनकछुकहिसकतनओऊ॥
देखि राम रुख लक्ष्मण धाये। पावक प्रकट काठ बहुलाये॥
प्रबल अनल बिलोकि बैदेही। हृदय हर्ष कछु भयनहिं तेही॥
जो मनक्रम बच ममउर माहीं। तजि रघुबीर आनगतिनाहीं॥
तौ कृशानु सबकी गति जाना। मोकहँ होहु श्रीखण्डसमाना॥

छं॰ श्रीखंडसमपावकप्रकटकिय सुमिरिप्रभुतेहिमहँचली।
जयकोशलेश महेशबन्दित चरणरजअति निर्मली॥
प्रतिबिम्ब अवलोकित कलंक प्रचण्डपावकमहँ जरे।
प्रभुचरित काहुनलखेउसुरमुनि सिद्धसबदेखहिं खरे॥
तबअनलभूसुर रूपकरगहि सत्यश्रीश्रुति बिदितसो।
जिमि क्षीरसागर इन्दिरा रामहिंसमर्पी आनिसो॥
सोइरामवामबिभागराजित रुचिर अतिशोभाभली।
नवनील नीरज निकट मानहुँ कनक पंकजकी कली॥

दो॰ हर्षि सुमन बर्षहिं बिबुध बाजहिं गगन निशान।
गावहिं किन्नर अप्सरा नाचहिं चढ़ी बिमान॥
श्रीजानकी समेत प्रभु शोभा अमित अपार।
देखि भालुकपि हरषेउ जयरघुपति सुखसार॥

तब रघुपति अनुशासन पाई। मातलिचले चरण शिरनाई॥
आये देव सदा स्वारथी। बचनकहहिं जनु परमारथी॥
दीनबन्धु दयालु रघुराया। देव कीन्ह देवन पर दाया॥
बिश्वद्रोहरतखल अतिकामी। निजअघगयउ कुमारगगामी॥
तुम सर्वज्ञ ब्रह्म अबिनासी। सदाएकरस सहज उदासी॥
अकलअगुणअनवद्यअनामय। अजितअमोघएककरुणामय॥
मीन कमठ शूकर नरहरी। बामन परशुराम बपुधरी॥
जब जब नाथ सुरन दुखपावा। नाना तनुधरि तुमहिंनशावा॥

रावण पापमूल सुरद्रोही । कामक्रोधमदरति अतिक्रोही ॥
सो कृपालु तवधाम सिधावा । यह हमरेमन अचरजआवा ॥
हम देवता परम अधिकारी । स्वारथरति तवभक्तिबिसारी ॥
भव प्रवाह सन्तत हमपरे । अब प्रभुपाहि शरण अनुसरे ॥
दो० करिबिनती सुर सिद्ध सब रहे जहँतहँ करजोरि ।
अतिशय प्रेमसरोजविधि अस्तुति करत बहोरि ॥
छं० जयरामसदासुखधामहरे । रघुनायकशायक चापधरे ॥
भववारणदारुणसिंहप्रभो । गुणसागरनागर नाथबिभो ॥
तनकामअनेकअनूपछबी । गुणगावत सिद्धमुनींद्रकबी ॥
यशपावनरावणनागमहा । खगनाथयथा करिकोपगहा ॥
जनरंजनभंजनशोकभयं । गतक्रोहसदा प्रभुबोधमयं ॥
अवतार उदारअपारगुनं । महिभार बिभंजन ज्ञानघनं ॥
अजब्यापकमेकमनादिसदा । करुणाकररामनमामिमुदा ॥
रघुवंशबिभूषण दूषणहा । कृतभूप बिभीषणदीन रहा ॥
गुणज्ञाननिधानअमानअजं । नितरामनमामिबिभुंबिरजं ॥
भुजदण्डप्रचण्डप्रतापबलं । खलबृन्दनिकन्दमहाकुशलं ॥
बिनुकारणदीनदयालुहितं । छबिधामनमामिरमासहितं ॥
भवतारणकारण काजपरं । मनसम्भवदारुण दोषहरं ॥
शरचाप मनोहर तूणधरं । जलजारुणलोचन भूपबरं ॥
सुखमन्दिरसुन्दरश्रीरमनं । मदमारमुधा ममताशमनं ॥
अनवद्यअखंडअगोचरगो । सबरूपसदा सबहोइनसो ॥
इतिवेदवदन्तिनदन्तकथा । रबिआतपभिन्ननभिन्नयथा ॥
कृतकृत्यबिभो सबवानरये । निरखन्ततवानन सादरये ॥
धृकजीवन देवशरीर हरे । तवभक्तिबिना भवभूलिपरे ॥
अब दीनदयालुकृपाकरिये । मतिमोरिबिभेद करीहरिये ॥
जिहितेबिपरीतकृपाकरिये । दुखमें सुखमानसुखीचरिये ॥
खलखण्डनमण्डनरम्यक्षमा । पदपंकजसेवितशम्भुउमा ॥

नृपनायक दे बरदानमिदं । चरणाम्बुज प्रेमसदाशुभदं ॥
दो० विनयकीन्ह बहुभांति विधि प्रेम प्रफुल्लितगात ।
बदन बिलोकत रामकर लोचन नाहिं अघात ॥
तिहि अवसरदशरथतहँआये । तनयबिलोकि नयनजलछाये ॥
सहितअनुजप्रणामप्रभुकीन्हा । आशिर्बाद पिता तब दीन्हा ॥
तात सकल तव पुण्य प्रभाऊ । जीतेउँअजयनिशाचर राऊ ॥
सुनिसुतबचनप्रीतिअतिबाढ़ी । नयन सलिलरोमावलिठाढ़ी ॥
रघुपति प्रथम प्रेम अनुमाना । चितैपितहि दीन्हेउदृढ़ज्ञाना ॥
ताते उमा मोक्ष नहिं पावा । दशरथ भेदभक्ति मन लावा ॥
सगुण उपासक मोक्ष न लेहीं । तिनकहँ रामभक्ति निजदेहीं ॥
बारबार करि प्रभुहिं प्रणामा । दशरथ हर्षिगये निजधामा ॥
दो० अनुज जानकी सहितप्रभु कुशल कोशलाधीश ।
छबि बिलोकिमनहर्षिअति अस्तुतिकर सुरईश ॥
छं० जय राम शोभाधाम । दायक प्रणत बिश्राम ॥
धृततूणबर शर चाप । भुजदण्ड प्रबल प्रताप ॥
जय दूषणारि खरारि । मर्दन निशाचर झारि ॥
यह दुष्ट मारेउ नाथ । भे देव सकल सनाथ ॥
जयहरण धरणी भार । महिमा उदार अपार ॥
जय रावणारि कृपाल । किय यातुधान बिहाल ॥
लंकेश अति बलगर्ब । किय बश्य सुर गन्धर्ब ॥
मुनिसिद्धनर खगनाग । हठिपन्थ सबके लाग ॥
परद्रोहरत अतिदुष्ट । पायो सो फल पापिष्ट ॥
अब सुनहुदीनदयाल । राजीव नयन बिशाल ॥
मोहिंरहाअतिअभिमान । नहिंकोउ मोहिंसमान ॥
अब देखि प्रभुपदकंज । गतमानप्रद दुखपुंज ॥
कोउ ब्रह्मनिर्गुणध्याव । अव्यक्तजिहि श्रुतिगाव ॥
मोहिं भाव कोशल भूप । श्रीराम सगुण स्वरूप ॥

वैदेहि अनुज समेत । ममहृदयकरहु निकेत ।
मोहिं जानिये निजदास । दे भक्ति रमा निवास ॥
छं० देभक्तिरमा निवासत्रास हरण शरण सुखदायकं ।
सुखधाम रामनमामिकाम अनेकछबिरघुनायकं ॥
सुरवृन्दरंजनद्वन्द्वभंजनमनुजतनुअतुलितबलं ।
ब्रह्मादि शंकरसेब्य रामनमामि करुणा कोमलं ॥
दो० अबकरि कृपा बिलोकि मोहिं आयसुदेहुकृपाल ।
कहा करौं सुनि प्रियबचन बोले दीनदयाल ॥
सुनु सुरपति कपिभालुहमारे । परे भूमि निशिचरन्हजोमारे ॥
ममहित लागि तजे इन प्राना । सकल जियाउसुरेशसुजाना ॥
सुनु खगेश प्रभुकी यह बानी । अतिअगाधजानाहिंमुनिज्ञानी ॥
प्रभुचह त्रिभुवन मारिजिवाई । केवल शक्रहि दीन्हि बड़ाई ॥
सुधा बरषि कपिभालु जिवाये । हरषि उठे सब प्रभुपहँआये ॥
सुधा वृष्टि भइ दुहुँदल ऊपर । जियेभालुकपिनहिंरजनीचर ॥
रामाकार भये तिनके मन । गये ब्रह्मपद तजिशरीररन ॥
सुरअंशिकसबकपिअरुऋच्छा । जियेसकल रघुपतिकीइच्छा ॥
राम सरिसको दीन हितकारी । कीन्हें मुक्त निशाचर भारी ॥
खलमल धाम कामरत रावन । गतिपाई जो मुनिवर पावन ॥
दो० सुमनबरषिसबसुरचले चढ़िचढ़ि रुचिरबिमान ।
देखि सुअवसर रामपहँ आये शम्भु सुजान ॥
परमप्रीति करजोरियुग नयननलिन भरिबारि ।
पुलकिततनगद्गदगिरा विनयकरत त्रिपुरारि ॥
छं० मामभिरक्षयरघुकुलनायक । धृतबरचापरुचिरकरशायक ॥
मोह महाघन पटल प्रभंजन । संशय बिपिनअनलसुररंजन ॥
अगुण सगुणगुण मंदिरसुंदर । भ्रमतमप्रबलप्रतापदिवाकर ॥
काम क्रोधमद गज पंचानन । बसहुनिरन्तरजनमन कानन ॥
विषय मनोरथ पुंज कंज बन । प्रबल तुषार उदारपार मन ॥

भवबारिधि मन्दर पर मन्दर । कारय तारय संश्रित दुस्तर ॥
श्याम गात राजीवबिलोचन । दीनबन्धु प्रणतारतमोचन ॥
अनुज जानकी सहित निरंतर । बसहुराम नृप ममउरअन्तर ॥
मुनिरंजन महिमण्डलमण्डन । तुलसिदासप्रभु त्रासबिखंडन॥
दो० नाथ जबहिं कोशलपुर होइहि तिलक तुम्हार ।
तबआउबहम सुनहु प्रभु देखन चरित उदार ॥
करि बिनती जब शम्भुसिधाये । तबप्रभु निकट बिभीषणआये॥
नाय चरण शिरकह मृदुबाणी । बिनयसुनियममशारँगपाणी ॥
सकुल सदल प्रभु रावण मारा । पावनयश त्रिभुवनबिस्तारा ॥
दीन मलीन हीन मति जाती । मोपर कृपा कीन्ह बहुभांती ॥
अबजन गृह पुनीत प्रभुकीजै । मज्जनकरियसकलश्रमछीजै ॥
देश कोश मन्दिर सम्पदा । देहु कृपालु कपिन कहँ मुदा ॥
सबबिधिनाथमोहिंअपनाइय । पुनिमोहिंसहितअवधपुरजाइय॥
सुनत वचन मृदु दीनदयाला । सजलभये हरिनयनाबिशाला ॥
दो० तोर कोश गृह मोरसब सत्यबचन सुनुतात ।
दशाभरतकीसुमिरिमोहिं पलककल्पसमजात ॥
तापस वेष शरीर कृश जपैं निरन्तर मोहिं ।
देखौं बेगि सो यतन करु सखा निहोरौंतोहिं ॥
जो जैहौं बीते अवधि जियत न पाऊं बीर ।
प्रीतिभरतकीसमुझिप्रभु पुनिपुनिपुलकशरीर ॥
सुनत बिभीषण बचन रामके । हर्षि गहे पद कृपाधामके ॥
बानर भालु सकल हर्षाने । प्रभुपदगहिगुणबिमलबखाने॥
बहुरिबिभीषण भवन सिधाये । मणिगणबसन बिमानभराये ॥
लै पुष्पक प्रभु आगे राखा । हँसिकैकृपासिन्धु असभाखा ॥
चढ़ि बिमानसुनुसखाबिभीषण । गगनजाइ बर्षहु पटभूषण ॥
नभ पर जाइ बिभीषणतबहीं । बर्षि दिये पटभूषण सबहीं ॥
जो जेहि मन भावै सो लेहीं । मणिमुख मेलिडारिकपि देहीं ॥

हँसत रामसिय अनुज समेता । परम कौतुकी कृपानिकेता ॥
दो० ध्यान न पावहिं जासुमुनि नेति नेति कहवेद ।
कृपासिंधुसोइ कपिनसों करत अनेक विनोद ॥
उमा योग जप दान तप नानाव्रत मख नेम ।
रामकृपा नहिं करहिं तस जस निष्केवल प्रेम ॥
भालु कपिन पट भूषण पाये । पहिरिपहिरिरघुपतिपहँआये ॥
नाना जिनिसि देखिप्रभुकीशा । पुनिपुनिहँसत कोशलाधीशा ॥
चितै सबनिपर कीन्ही दाया । बोले मधुर बचन रघुराया ॥
तुम्हरे बल मैं रावण मारा । तिलकबिभीषणकहँपुनिसारा॥
निजनिजगृहअबतुम सबजाहू।सुमिरचहुमोहिंडरचहुजनिकाहू॥
बचन सुनत प्रेमाकुल बानर । जोरिपाणि बोले सबसादर ॥
प्रभु जो कहहु तुमहिंसबसोहा । हमरे हिय उपजै सुनिमोहा ॥
दीन जानि कपि किये सनाथा । तुम त्रैलोक्य ईश रघुनाथा ॥
सुनिप्रभुबचन लाजहममरहीं ।मशककबहुँखगपतिहितकरहीं॥
देखि रामरुख बानर ऋच्छा । प्रेममगन नहिंगृहकी इच्छा ॥
दो० प्रभु प्रेरित कपि भालुसब रामरूप उर राखि ।
हर्ष बिषाद समेत सब चले विनय बहुभाखि ॥
जामवन्त कपिराज नल अंगदादि हनुमान ।
सहित बिभीषण अपर जे यूथप अतिबलवान ॥
कहिनसकहिंकछुप्रेमवश भरिभरिलोचनबारि ।
सनमुख चितवहिंरामतन नयननिमेष निवारि॥
अतिशय प्रीति देखि रघुराई । लीन्हें सकल विमान चढ़ाई ॥
मन महँ बिप्र चरण शिरनावा । उत्तरदिशिहि बिमानचलावा॥
चलत बिमान कोलाहल होई । जय रघुवीर कहै सब कोई ॥
सिंहासन अति उच्च मनोहर । सिय समेत बैठे प्रभुतापर ॥
राजत राम सहित भामिनी । मेरुशृंग जनु घन दामिनी ॥
रुचिरबिमान चलाअतिआतुर । कीन्हीं सुमन वृष्टि हर्षेसुर ॥

परमसुखदचलि त्रिबिधबयारी । सागर सुरसरि निर्मलबारी ॥
शकुन होहिं सुन्दर चहुँपासा । मन प्रसन्न निर्मल आकासा ॥
कह रघुबीर देखु रण सीता । लक्ष्मण हत्यो इहां इंद्रजीता ॥
अंगद हनूमान के मारे । रणमहँ परे निशाचर भारे ॥
कुम्भकर्ण रावण दोउ भाई । इहां हतेउँ सुरमुनि दुखदाई ॥
दो० सुन्दरि सेतु देखु यह थापेउँ शिव सुखधाम ।
सीता सहित कृपायतन शम्भुहि कीन प्रणाम ॥
जहँ जहँ कृपासिन्धुबन कीन्ह बास बिश्राम ।
सकल देखाये जानकिहि कहिकहि सबकेनाम ॥
सपदि विमान तहां चलिआवा । दण्डकबनजहँ परमसुहावा ॥
कुम्भजादि मुनिनायक नाना । गये राम सबके अस्थाना ॥
सकल मुनिनसों पाइअशीशा । आये चित्रकूट जगदीशा ॥
तहँ करि ऋषिनकेर सन्तोखा । चला बिमान तहांते चोखा ॥
बहुरि राम जानकी दिखाई । यमुनाकलिमलहरणि सुहाई ॥
पुनि देखी सुरसरी पुनीता । राम कहा प्रणामकरुसीता ॥
तीरथपति पुनि दीख प्रयागा । देखत जाहि पापसबभागा ॥
देखि राम पावनि पुनि बेनी । हरणशोक सुरलोक निशेनी ॥
देखी अवधपुरी अति पावनि । त्रिबिधतापभवदापनशावनि ॥
दो० तबरघुनन्दनसियसहित अवधहिकीन्हप्रणाम ।
सजलबिलोचनपुलकतन पुनि पुनि हर्षितराम ॥
बहुरि त्रिवेणी आय प्रभु हर्षित मज्जन कीन्ह ।
कपिनसमेत महीसुरन्ह दानविविधविधिदीन्ह ॥
प्रभु हनुमन्तहि कहा बुझाई । धरिद्विजरूप अवधपुरजाई ॥
भरतहि कुशलहमारि सुनावहु । समाचारलै पुनिचलिआवहु ॥
तुरत पवनसुत गवनत भयऊ । तबप्रभु भरद्वाज पहँ गयऊ ॥
नाना बिधि पूजा मुनिकीन्ही । अस्तुतिकरिपुनिआशिषदीन्ही ॥
मुनिपद बन्दि युगल करजोरी । चढ़िविमानप्रभु चलेबहोरी ॥

इहां निषाद सुना प्रभु आये । नाव नाव करि लोग बुलाये ॥
सुरसरि लांघि थानजबआवा । उतरातहँ प्रभुआयसु पावा ॥
तब सीता पूजी सुरसरी । बहुप्रकार करिचरणन परी ॥
दीन्ह असीष मुदित मनगंगा । सुंदरितवअहिवात अभंगा ॥
सुनतहि गुह धावा प्रेमाकुल । आवानिकटपरमसुखसंकुल ॥
प्रभुहिबिलोकि सहित बैदेही । परेउअवनितनुसुधिनहिंतेही ॥
परम प्रीति बिलोकि रघुराई । हर्षि उठाइ लीन्ह उरलाई ॥
छं० लिय हृदयलाइकृपानिधान सुजान राम रमापती ।
बैठारि परम समीपपूछी कुशलसो करि बीनती ॥
अब कुशलपदपंकजबिलोकि बिरंचिशंकरसेब्यजे ।
सुखधाम पूरणकाम राम नमामिराम नमामिते ॥
सबभांतिअधमनिषादसो हरिभरतज्योंउरलाइये ।
मतिमंदतुलसीदाससो प्रभु मोहबशबिसराइये ॥
यहरावणारि चरित्रपावन रामपदरतिप्रद सदा ।
कामादिहरबिज्ञानकर सुर सिद्धमुनिगावहिंमुदा ॥
दो० समर बिजय रघुनाथके सुनहिं जे संतसुजान ।
बिजय बिबेकबिभूतिनित तिनहिंदेहिं भगवान ॥
यह कलिकाल मलायतन मनकरि देखु बिचार ।
श्रीरघुनायक नामतजि नहिं कछु आनअधार ॥

इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेबिमलबैराग्य
सम्पादनोनामषष्ठःसोपानः ॥ ६ ॥

श्रीगणेशायनमः ॥

उत्तरकाण्ड ॥

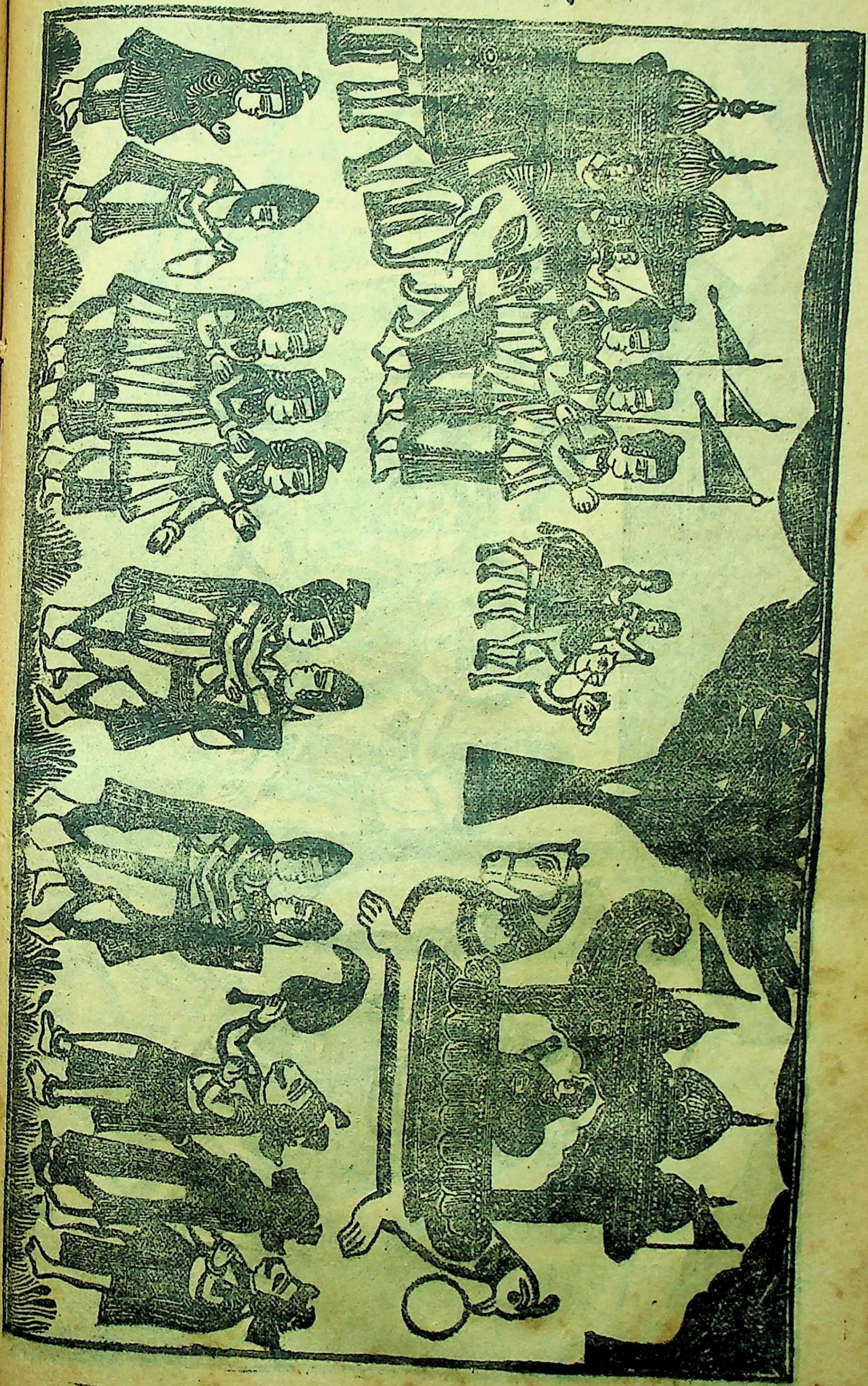
श्लोक ॥

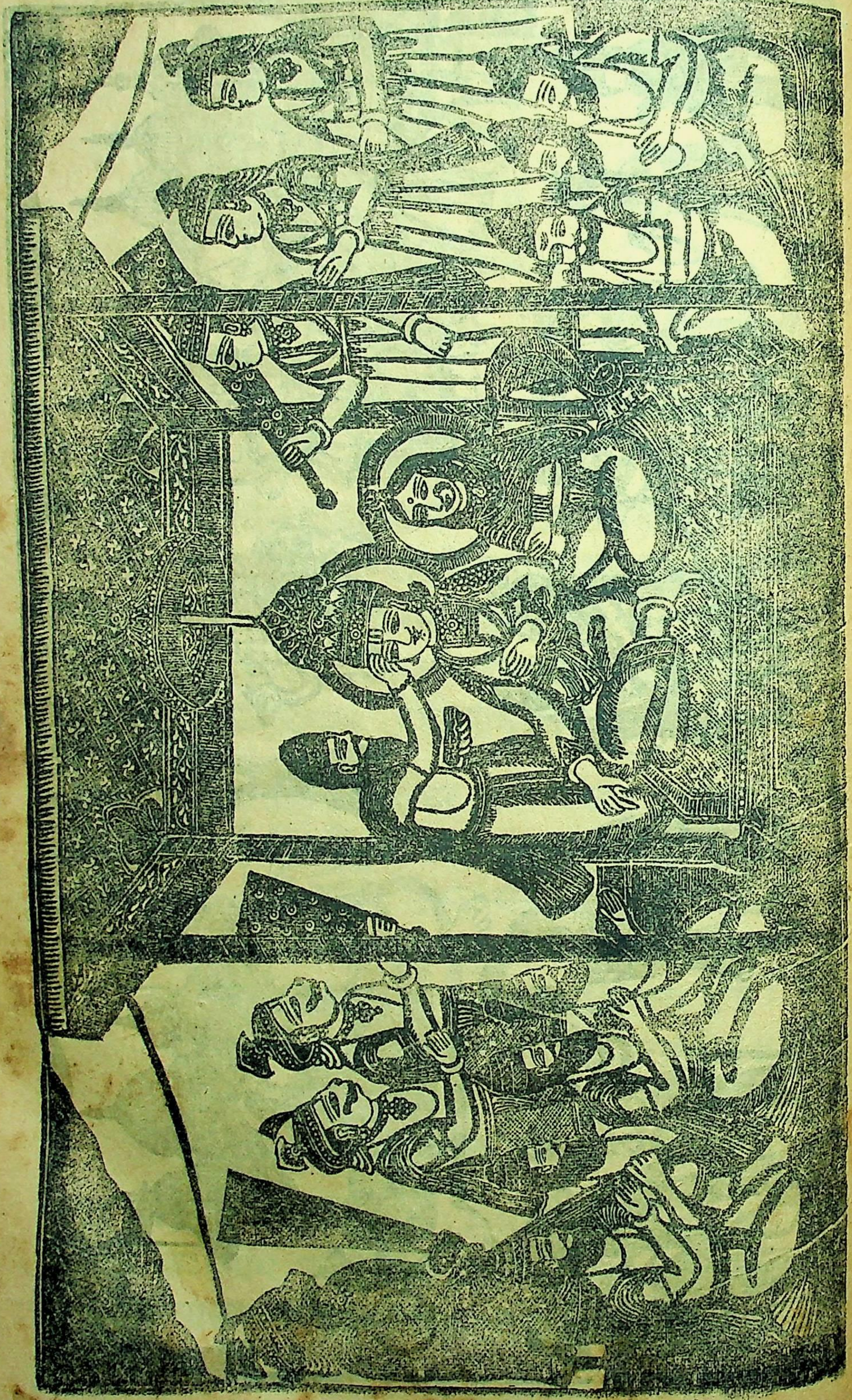
केकीकण्ठाभनीलं सुरवरविलसद्विप्रपादाब्जचिह्नं शोभा
ढ्यंपीतवस्त्रंसरसिजनयनं सर्वदासुप्रसन्नम् ॥ पाणौनाराचचा
पंकपिनिकरयुतंबंधुनासेव्यमानं नौमीड्यंजानकीशं रघुवरम
निशंपुष्पकारूढ़रामम् १ कोशलेन्द्रपदकंजमंजुलौपद्मयोनिशि
तिकंठवन्दितौ ॥ जानकीकरसरोजलालितौ चिंतकस्यमनभृङ्ग
संगिनौ २कुन्दइन्दुदरगौरसुन्दरंअम्बिकापतिमभीष्टसिद्धिदम् ॥
कारुणीककलकंजलोचनं नौमिशंकरमनंगमोचनम् ३ ॥

दो० रहा एक दिन अवधिकर अति आरत पुरलोग ।
जहँ तहँ शोचहिं नारिनर कृशतनु रामबियोग ॥
शकुन होहिं सुन्दर सकल मन प्रसन्न सबकेर ।
प्रभु आगमन जनाव जनु नगर रम्य चहुँफेर ॥
कौशल्यादिक मातु सब मन अनंद अस होइ ।
आये प्रभुसिय अनुजयुत कहनचहतअसकोइ ॥
भरत नयन भुज दक्षिण फरकहिं बारहिंबार ।
जानिशकुन मन हर्ष अति लागे करन बिचार ॥

रहा एक दिन अवधि अधारा । समुझतमनदुखभयउअपारा ॥
कारण कवननाथ नहिं आये ।जानिकुटिलप्रभुमोहिंबिसराये ॥
अहह धन्यलक्ष्मण बड़भागी । राम पदारबिन्द अनुरागी ॥

बा० उ० चि० नं० १२





कपटीकुटिलनाथ मोहिं चीन्हा । ताते नाथ संग नहिं लीन्हा ॥
जो करणी समुझैं प्रभु मोरी । नहिं निस्तार कल्पशतकोरी ॥
जनअवगुणप्रभुमान न काऊ । दीनबन्धुअतिमृदुलसुभाऊ ॥
मोरे जिय भरोस दृढ़ सोई । मिलिहहिंरामशकुनशुभहोई ॥
बीते अवधि रहे जो प्राना । अधमकवनजगमोहिंसमाना ॥
दो० राम बिरह सागर महँ भरत मगन मन होत ।
बिप्ररूपधरि पवनसुत आइगये जिमि पोत ॥
बैठे देखि कुशासन जटा मुकुट कृशगात ।
रामराम रघुपतिजपत स्रवतनयन जलजात ॥
देखत हनूमान अति हर्षे । पुलकगात लोचनजल बर्षे ॥
मनमहँ बहुतभांति सुखमानी । बोले श्रवण सुधासमबानी ॥
जासु बिरह शोचहु दिनराती । रटहु निरन्तरगुणगणपाती ॥
रघुकुल तिलकसुजनसुखदाता । आये कुशल देवमुनित्राता ॥
रिपुरणजीति सुयशसुरगावत । सीताअनुजसहितप्रभुआवत ॥
सुनत बचन बिसरे सब दूखा । तृषावन्त जनु पाय पियूखा ॥
को तुम तात कहांते आये । मोहिंपरमप्रिय बचनसुनाये ॥
मारुतसुत मैं कपि हनुमाना । नाममोर सुनु कृपानिधाना ॥
दीनबन्धु रघुपति कर किंकर । सुनत भरत भैंटे उठि सादर ॥
मिलत प्रेमनहिं हृदयसमाता । नयनस्रवतजलपुलकितगाता ॥
कपि तवदरश सकलदुखबीते । मिले आजु मोहिंरामसप्रीते ॥
बारबार पूछी कुशलाता । तोकहँ काह देउँ सुनु भ्राता ॥
यहि संदेश सरिस जगमाहीं । करि बिचार देखाकछुनाहीं ॥
नाहिंन उऋण तात मैं तोहीं । अब प्रभुचरित सुनावहुमोहीं ॥
तब हनुमान नाइ पद माथा । कहेसिसकलरघुपतिगुणगाथा ॥
कहुकपि कबहुं कृपालु गुसाईं । सुमिरतमोहिं दासकी नाईं ॥
छं० निजदासज्यों रघुबंश भूषण कबहुं मम सुमिरणकरयो ।
सुनिभरतबचनबिनीतअति कपिपुलकतनुचरणनपरयो ॥

रघुबीरनिजमुखजासुगुणगण कहतअगजगनाथजो।
काहे न होहुबिनीत परम पुनीत सद्गुणसिन्धुसो॥
दो० रामप्राण प्रिय नाथ तुम सत्यबचन मम तात।
पुनिपुनि मिलत भरतसन प्रेम न हृदयसमात॥
सो० भरत चरण शिरनाइ तुरत गये कपि रामपहँ।
कही कुशल सब जाइ हर्षिचले प्रभुयान चढ़ि॥
हर्षि भरत कोशलपुर आये। समाचार सबगुरुहिं सुनाये॥
पुनि मन्दिर महँ बात जनाई। आवत नगर कुशल रघुराई॥
सुनत सकल जननी उठिधाईं। कहिप्रभुकुशलभरतसमुझाई॥
समाचार पुरवासिन पाये। नरअरु नारि हर्षिउठिधाये॥
दधि दूर्बा रोचन फलफूला। नव तुलसीदल मंगलमूला॥
भरिभरि थारहेमबर भामिनि। गावतचलीं सिंधुरगामिनि॥
जो जैसहिं तैसहिंउठिधावहिं। बालवृद्धकोउसंग न लावहिं॥
एक एक सन पूँछहिं धाई। तुम देखे दयालु रघुराई॥
अवधपुरी प्रभु आवत जानी। भई सकल शोभा की खानी॥
भा सरयू अति निर्मल नीरा। बहै सुहावनि त्रिबिधसमीरा॥
दो० हर्षित गुरु पुरजन अनुज भूसुर वृन्द समेत।
चले भरत अति प्रेममन सन्मुख कृपानिकेत॥
बहुतकचढ़ीं अटारिन्ह निरखहिंगगनबिमान।
देखि मधुर स्वर हर्षित करहिं सुमंगल गान॥
राका शशि रघुपति पुरी सिंधु देखि हर्षान।
बढ़े कोलाहल करत जनु नारितरंग समान॥
रबिकुलकमल दिवाकरआवत। नगरमनोहर कपिनदेखावत॥
सुनु कपीश अंगद लंकेशा। पावनि पुरी रुचिर यहदेशा॥
यद्यपि सब बैकुण्ठ बखाना। वेद पुराण बिदित जगजाना॥
अवधसरिसप्रिय मोहिंनसोऊ। यह प्रसंग जानै कोउ कोऊ॥
जन्मभूमि ममपुरी सुहावनि। उत्तर दिशि सरयू बहपावनि॥

जो मज्जाहिं सो बिनहिंप्रयासा । ममसमीप नरपावहिं बासा ॥
अतिप्रिय मोहिं इहांके बासी । ममधामदा पुरी सुखरासी ॥
हर्षे कपि सुनि प्रभु की बानी । धन्य अवध जेहि रामबखानी ॥

दो० आवत देखे लोग सब कृपासिन्धु भगवान ।
नगर निकट प्रभु आयउ उतरा भूमि बिमान ॥
बहुरि कहेउ प्रभु पुष्पकहि तुम कुवेर पहँजाहु ।
प्रेरितराम चलेउ सो हर्ष बिरह अतिताहु ॥

आये भरत संग सब लोगा । कृशतनु श्रीरघुवीर बियोगा ॥
बामदेव बशिष्ठ मुनिनायक । देखा प्रभुमहिधरिधनुशायक ॥
धाइ धरे गुरुचरण सरोरुह । अनुजसहितअतिपुलकतनोरुह ॥
भेंटे कुशल पूंछि मुनिराया । हमरे कुशल तुम्हारिहिदाया ॥
सकल द्विजनकहँ नायउ माथा । धर्म धुरन्धर रघुकुलनाथा ॥
गहेभरतपुनि प्रभुपदपंकज । नवहिंजिनहिंशंकरसुरमुनिअज ॥
परे भूमि नहिं उठत उठाये । बलकरि कृपासिंधु उरलाये ॥
श्यामलगात रोम भये ठाढ़े । नवराजीव नयन जल बाढ़े ॥

छं० राजीव लोचन स्रवतजल तनु ललित पुलकावलिबनी ।
अतिप्रेम हृदयलगाइ अनुजहि मिले प्रभु त्रिभुवनधनी ॥
प्रभु मिलत अनुजहि सोह मोपहँ जात नहिंउपमाकही ।
जनु प्रेमअरु शृंगार तनुधरि मिलत बर सुखमा लही ॥
पूंछत कृपानिधि कुशल भरतहिं बचन बेगि न आवई ।
सुनि शिवा सो सुख बचन मन ते भिन्न जान न पावई ॥
अब कुशल कोशलनाथ आरत जानिजन दरशन दियो ।
बूड़तबिरहबारिधि कृपानिधि काढ़िमोहिंकरगहि लियो ॥

दो० पुनिप्रभु हर्षित शत्रुहन भेंटे हृदय लगाइ ।
लक्ष्मण भेंटे भरत पुनि प्रेम न हृदयसमाइ ॥

भरत अनुज लक्ष्मण तब भेंटे । दुसह बिरहसम्भव दुख मेटे ॥
सीता चरण भरत शिर नावा । अनुज समेत परमसुखपावा ॥

प्रभु बिलोकि हरषे पुरबासी । जनितबियोगबिपतिसबनासी ॥
प्रेमातुर सब लोग निहारी । कौतुक कीन्ह कृपालु खरारी ॥
अमित रूप प्रकटे तेहि काला । यथायोग्यमिलिसबहिंकृपाला ॥
कृपादृष्टि सब लोग बिलोकी । कियेसकल नरनारि बिशोकी ॥
क्षणमहँ सबहिं मिले भगवाना । उमा मर्म यह काहु न जाना ॥
यहिबिधिसबहिंसुखीकरिरामा । आगे चले शील गुणधामा ॥
कौशल्यादि मातु सब धाईं । निरखि बच्छ जनु धेनुलवाईं ॥
छं० जनु धेनुबालक बच्छतजि गृह चरन बन परबश गईं ।
दिन अन्त पुररुख स्रवतथन हुंकार करि धावत भईं ॥
अति प्रेम प्रभु सब मातु भेंटे बचन मृदु बहुबिधिकहे ।
गइबिषमबिपतिबियोग भवतिन्ह हर्षसुख अगणितलहे ॥
दो० भेंटेउ तनय सुमित्रा रामचरण रति जानि ।
रामहिं मिलत केकयी हृदय बहुत सकुचानि ॥
लक्ष्मण सब मातन मिले हर्षे आशिष पाइ ।
केकयिकहँ पुनिपुनिमिले मनकर क्षोभ न जाइ ॥
सासुन सबहिं मिली बैदेही । चरणन लागि हर्ष अतितेही ॥
देहिं अशीष पूंछि कुशलाता । होइ अचलतुम्हार अहिवाता ॥
सब रघुपतिपदकमल बिलोकी । मंगलजानि नयन जलरोकी ॥
कनक थार आरती उतारहिं । बारबार प्रभु गात निहारहिं ॥
नानाभांति निछावरि करहीं । परमानन्द हर्ष उर भरहीं ॥
कौशल्या पुनि पुनि रघुबीरहिं । चितवहिंकृपासिन्धुरणधीरहिं ॥
हृदय बिचारति बारहिं बारा । कवन भांति लंकापति मारा ॥
अति सुकुमार युगल ममबारे । निशिचर सुभटमहाबलभारे ॥
दो० लक्ष्मण अरु सीतासहित प्रभुहिबिलोकहिंमात ।
परमानन्द मगन मन पुनि पुनि पुलकितगात ॥
लंकापति कपीश नल नीला । जामवन्त अंगद शुभशीला ॥
हनुमदादि सब बानर बीरा । धरे मनोहर मनुज शरीरा ॥

भरत सनेह शील व्रत नेमा। सादरसबबरणहिं अतिप्रेमा॥
देखि नगरबासिन की रीती। सकलसराहहिं प्रभुपदप्रीती॥
पुनि रघुपतिनिज सखाबुलाये। मुनिपदलागहुसबहिंसिखाये॥
गुरु वशिष्ठ कुलपूज्य हमारे। इनकी कृपा दनुज रण मारे॥
ये सब सखा सुनियमुनि मेरे। भये समर सागर कहँ बेरे॥
मम हित लागि जन्मइनहारे। भरतहुतेमोहिंअधिकपियारे॥
सुनिप्रभु बचनमगन सबभये। निमिषनिमिषउपजतसुखनये॥

दो० कौशल्याके चरणन पुनि तिन्ह नायउ माथ।
आशिष दीन्हहर्षिहिय तुमप्रियजिमिरघुनाथ॥
सुमनवृष्टि नभसंकुल भवन चले सुखकन्द।
चढ़े अटारिन देखहीं नगर नारि नर वृन्द॥

कंचन कलश बिचित्र सवाँरे। सबनिधरेसजिनिजनिजद्वारे॥
बन्दनवार पताका केतू। सबनि बनाये मंगल हेतू॥
बीथिन सकलसुगन्ध सिंचाये। गजमणिरचि बहुचौकपुराये॥
नाना भांति सुमंगल साजे। हर्ष निशान नगर बहुबाजे॥
जहँतहँ नारि निछावरि करहीं। देहिं अशीष हर्ष उर भरहीं॥
कंचन थार आरती नाना। युवतीसाजिकरहिंकलगाना॥
कराहिं आरती आरत हरकी। रघुकुलकमलबिपिनदिनकरकी॥
पुर शोभा सम्पति कल्याना। निगम शेष शारदा बखाना॥
तेऊ चरित देखि ठगि रहहीं। उमातासुगुणनरकिमिकहहीं॥

दो० नारि कुमुदिनी अवधसर रघुपति बिरहदिनेश।
अस्त भये बिकसित भईं निरखि राम राकेश॥
होहिंशकुनशुभबिबिधबिधिबाजहिंगगननिशान।
पुर नरनारि सनाथ करि भवन चले भगवान॥

प्रभु जाना केकयी लजानी। प्रथम तासु गृह गये भवानी॥
ताहिप्रबोधि बहुत सुखदीन्हा।तबनिजभवनगवनप्रभुकीन्हा॥
कृपासिन्धु जब मन्दिर गयऊ। पुरनरनारि सुखीसब भयऊ॥

गुरु वशिष्ठ द्विजलिये बुलाई । आजुसुघरी सुदिन सुखदाई ॥
सबद्विजदेहु हर्षि अनुशासन । रामचन्द्र बैठहिं सिंहासन ॥
मुनि वशिष्ठ के बचन सुहाये । सुनतसकल बिप्रनमनभाये ॥
कहहिं बचनमृदु बिप्र अनेका । जगअभिरामरामअभिषेका ॥
अबमुनिवर बिलम्ब नहिंकीजे । महाराज कहँ तिलककरीजे ॥
दो० तबमुनि कहेउ सुमन्त्रसन तुरत चले शिरनाइ ।
रथ अनेक गज बाजि बहु सकल सवाँरे जाइ ॥
जहँ तहँ धावन पठे पुनि मङ्गल द्रव्य मँगाइ ।
हर्ष समेत वशिष्ठ पद पुनि शिर नायउ आइ ॥
अवधपुरी अतिरुचिर बनाई । देवन सुमन वृष्टि झरिलाई ॥
राम कहा सेवकन बुलाई । प्रथमसखनअन्हवावहुजाई ॥
सुनतबचन जन जहँतहँ धाये । सुग्रीवादि तुरत अन्हवाये ॥
पुनि करुणानिधि भरतहँकारे । निज कर जटा रामनिरवारे ॥
अन्हवाये पुनि तीनिहु भाई । भक्त बछल कृपालु रघुराई ॥
भरत भाग्य प्रभु कोमलताई । शेष कोटिशतसकहिं न गाई ॥
पुनि निज जटा राम निरवाये । मुनि अनुशासनपाइअन्हाये ॥
करि मज्जन भूषण प्रभु साजे । अंग अनंग कोटिछबि लाजे ॥
दो० सासुन सादर जानकिहिं मज्जन तुरत कराइ ।
दिव्यवसनबर भूषणनि अँग अँग सजेबनाइ ॥
राम बाम दिशि शोभित रमा रूप गुणखानि ।
देखि सासुसब हर्षित जन्मसुफल निजजानि ॥
सुनु खगेश तेहि अवसर ब्रह्मा शिवमुनिवृन्द ।
चढ़ि बिमान आयेसकल सुर देखन सुखकन्द ॥
प्रभु बिलोकिमुनिमनअनुरागा । तुरत दिव्य सिंहासन मांगा ॥
रविसम तेज बरणिनहिं जाई । बैठे राम द्विजन शिर नाई ॥
जनकसुता समेत रघुराई । देखि प्रहर्षे मुनि समुदाई ॥
वेद मंत्र द्विजवर उच्चारे । नभसुरमुनिजयजयतिपुकारे ॥

प्रथम तिलक बशिष्ठमुनिकीन्हा। पुनिसबबिप्रनआयसुदीन्हा॥
सुत बिलोकि हर्षित महतारी। बार बार आरती उतारी॥
बिप्रनदान बिबिध बिधिदीन्हें। याचकसकल अयाचककीन्हें॥
सिंहासन पर त्रिभुवन साईं। देखि सुरन दुन्दुभी बजाईं॥
छं० नभ दुन्दुभी बाजहिं बिपुल गन्धर्ब किन्नरगावहीं।
नाचहिं अप्सरा बृन्द परमानन्द सुरमुनि पावहीं॥
भरतादि अनुज बिभीषणांगद हनुमदादि समेत जे।
गहे छत्र चामरब्यजन धनुअसिचर्मशक्ति बिराजते॥
सियसहितदिनकर बंशभूषण कामबहु छबि सोहहीं।
नव अम्बुधर बरगात अम्बर पीत मुनिमन मोहहीं॥
मुकुटांगदादि बिचित्रभूषण अंग अंगन प्रति सजे।
अंभोज नयन बिशाल उरभुज धन्यनर निरखंत जे॥
दो० यह शोभा समाज सुख कहत न बनै खगेश।
बरणै शारद शेष श्रुति सो रस जानु महेश॥
भिन्न भिन्न अस्तुतिकरि गे सुर निज निजधाम।
बन्दी बेष बेद धरि आये जहँ श्री राम॥
प्रभु सर्बज्ञ कीन्ह अति आदर कृपानिधान।
लखा न काहू मर्म कछु लगे करन गुणगान॥
छं० जय सगुण निर्गुणरूप राम अनूपभूप शिरोमने।
दशकन्धरादिप्रचण्डनिशिचरप्रबलखलभुजबलहने॥
अवतारनर संसारभार बिभंजि दारुण दुख दहे।
जय प्रणतपाल दयालप्रभु संयुक्त शक्ति नमामहे॥
तवबिषम मायाबश सुरासुरनाग नर अग जग हरे।
भवपंथभ्रमितअमितदिवसनिशिकालकर्मगुणनभरे॥
जेहि नाथकरि करुणा बिलोकहु त्रिबिधदुखतेनिर्बहे।
भव खेद छेदन दक्ष हम कहँ रक्ष राम नमामहे॥
जे ज्ञानमान बिमत्ततव भवहरणि भक्ति न आदरी।

ते पाइ सुर दुर्लभ पदादपि परत हम देखत हरी ॥
बिश्वास करि सब आश परिहरि दासतवजे है रहे ।
जपिनामतव बिनश्रमतराहिं भवनाथ रामनमामहे ॥
जे चरण शिवअज पूज्यरज शुभपरसिमुनिपत्नीतरी ।
नख निर्गता सुरबन्दिता त्रैलोक्य पावनि सुरसरी ॥
ध्वजकुलिशअंकुशकंजयुत पद फिरतकंटक जिनलहे ।
पदकंज द्वंद मुकुन्द राम रमेश नित्य भजामहे ॥
अब्यक्त मूलमनादि तरुत्वच चारि निगमागम भने ।
षट कन्ध शाखा पंच बिंश अनेक पर्ण सुमन घने ॥
फलयुगलबिधिकटुमधुरबेलि अकेलिजेहिआश्रितरहे ।
पल्लवित फूलत नवल नित संसार बिटप नमामहे ॥
जे ब्रह्म अज अद्वैत अनुभव गम्य मनपर ध्यावहीं ।
ते कहहुजानहु नाथ हमतव सगुणयश नितगावहीं ॥
करुणायतन प्रभुसद्गुणाकर देव यहबर मांगहीं ।
मन कर्मबचनबिकारतजि तवचरण हमअनुरागहीं ॥

दो० सबके देखत बेदनहु बिनती कीन्ह उदार ।
अन्तर्द्धान भये तब गये ब्रह्म आगार ॥
बैनतेय सुनु शंभुतब आये जहँ रघुबीर ।
बिनयकरत गद्गदगिरा पूरितपुलकशरीर ॥

छं० जयरामरमारमणंशमनं । भवतापभयाकुलपाहिजनं ॥
अवधेशसुरेशरमेशबिभो।शरणागतमांगतपाहिप्रभो॥
दशशीशबिनाशनबीसभुजा।कृतदूरिमहामहिभूरिरुजा
रजनीचर वृन्दपतंगरहे। शरपावक तेज प्रचण्डदहे ॥
महिमण्डलमण्डनचारुतरं।धृतशायकचापनिषंगवरं॥
मदमोहमहाममतारजनी ।तमपुंजदिवाकरतेजअनी ॥
मनुजादकिरातनिपातकिये ।मृगलोगकुभोगशरेनहिये॥
हितनाथअनाथनिपाहिहरे।बिषयाबनपामरभूलिपरे॥

बहुरोग बियोगन लोगहये । भवदंघ्रि निरादर के फलये ॥
भवसिन्धु अगाधपरे नरते । पदपंकज प्रेम न जे करते ॥
अतिदीनमलीनदुखीनितही । जिनकेपदपंकज प्रीतिनहीं ॥
अवलम्बभवन्तकथा जिनके । भवभीतिकदापिनहींतिनके ॥
नहिंरागनरोष न मान मदा । तिनकेसम बैभववा बिपदा ॥
मुनित्यागतयोग भरोससदा । इहि ते तवसेवकहोत मुदा ॥
करिप्रेम निरन्तर नेम लिये । पदपंकज सेवत शुद्ध हिये ॥
सममान निरादर आदरही । सोइसन्तसुखीविचरन्तमही॥
मुनि मानस पंकज भृङ्ग भजे । रघुबीर महारणधीरअजे ॥
तवनाम जपामिनमामि हरी । भवरोग महामद मानअरी ॥
गुण शीलकृपा परमायतनं । प्रणमामि निरंतर श्रीरमनं ॥
रघुनन्दनिकन्दन द्वन्दघनं । महिपाल बिलोकियदीनजनं॥
दो० बार बार बर मांगौं हर्षि देहु श्रीरंग ।
पद सरोज अनपावनी भक्ति सदा सत संग ॥
बरणिउमापति रामगुण हर्षिगये कैलास ।
तबप्रभु कपिनदिवाये सबबिधिसुखप्रदबास ॥
सुनखगपतियहकथा सुहावनि । त्रिबिधतापभवदोषनशावनि॥
महाराजकर शुभ अभिषेका । सुनतलहहिंनरविरतिबिबेका॥
जेसकामनर सुनहिं जे गावहिं ।सुखसम्पतिनानाबिधिपावहिं॥
सुर दुर्लभ सुखकरि जगमाहीं । अन्तकाल रघुपतिपुर जाहीं ॥
सुनहिं विमुक्तविरतअरुबिषई ।लहहिंभक्तिसुखसम्पतिनितई॥
खगपति रामकथा मैं बरणी ।सुमतिबिलासत्रासदुखहरणी॥
विरति बिबेक भक्ति दृढ़करणी । मोहनदी कहँ सुन्दर तरणी ॥
नित नव मंगल कोशल पुरी । हर्षित रहहिं लोग सबकुरी ॥
नित नव प्रीति रामपद पंकज । सेवतजेहिशंकरसुरमुनिअज॥
मंगन बहु प्रकार पहिराये । द्विजन दान नानाबिधि पाये ॥
दो० परमानन्द मगन कपि सबकहँ प्रभुपद प्रीति ।

जात न जानेउ दिवसनिशि गये मासषटबीति ॥
बिसरे गृह सपने सुधि नाहीं । जिमिपरद्रोह सन्तमनमाहीं ॥
तब रघुपति सब सखाबुलाये । आइसबहिं सादर शिरनाये ॥
प्रेम समेत निकट बैठारे । भक्तसुखद मृदुबचन उचारे ॥
तुम अतिकीन्ह मोरि सेवकाई । मुखपर केहिबिधिकरौंबड़ाई ॥
तातेमोहिं तुम अतिप्रियलागे । ममहितलागिभवनसुखत्यागे ॥
अनुज राज सम्पति बैदेही । देह गेह परिवार सनेही ॥
सबमोहिंप्रियनहिंतुमहिंसमाना॥ मृषा न कहौं मोर यहबाना ॥
सब कहँ प्रिय सेवक यह नीती । मोरे अधिक दासपर प्रीती ॥
दो० अबगृहजाहु सखासब भजहु मोहिं दृढ़ नेम ।
सदा सर्वगत सर्वहित जानि करेहु अतिप्रेम ॥
सुनि प्रभु बचन मगनसबभये । को हम कहां बिसरितनुगये ॥
इकटक रहे जोरि कर आगे । कहिनसकतकछुअतिअनुरागे ॥
परम प्रीति तिनकर प्रभु देखी । कहाबिबिधबिधिज्ञानाबिशेखी ॥
प्रभुसन्मुखकछु कहै न पारहिं । पुनिपुनिचरणसरोजनिहारहिं ॥
तब प्रभु भूषणबसन बनाये । नाना रंग अनूप सुहाये ॥
सुग्रीवहि प्रथमहिं पहिराये । भरत बसन निजहाथबनाये ॥
प्रभु प्रेरित लक्ष्मण पहिराये । लङ्कापति रघुपति मनभाये ॥
अंगद बैठि रहे नहिं डोले । प्रीति जानिप्रभुताहि न बोले ॥
दो० जामवन्त नीलादि सब पहिराये रघुनाथ ।
हियधरि राम स्वरूपसब चले नाय पद माथ ॥
तबअंगदउठि नाइ शिर सजलनयनकरजोरि ।
अतिबिनीत बोलेबचन मनहुँ प्रेमरस बोरि ॥
सुन सर्वज्ञ कृपासुखसिन्धो । दीन दयाकर आरतबन्धो ॥
मरती बार नाथ मोहिं बाली । गयो तुम्हारे पगतरघाली ॥
अशरणशरण बिरदसम्भारी । मोहिंजनितजहुभक्तभयहारी ॥
मोरे प्रभु तुम गुरु पितु माता । जाउँ कहांतजिपदजलजाता ॥

तुमहिं विचारि कहहु नरनाहा । प्रभुतजिभवनकाजममकाहा ॥
बालक अबुध ज्ञान बलहीना । राखहुशरणजानि जनदीना ॥
नीच टहल गृहकी सब करिहौं । पदबिलोकिभवसागरतरिहौं ॥
अस कहि चरण परे प्रभुपाहीं । अबजनि नाथकहहुगृहजाहीं ॥
दो० अंगद वचन बिनीत सुनि रघुपति करुणासीव ।
प्रभु उठाय उर लायऊ सजल नयन राजीव ॥
निजउरमाला बसनमणि बालितनय पहिराय ।
बिदा किये भगवान तब बहु प्रकार समुझाय ॥
भरत अनुज सौमित्रि समेता । पठवन चले भक्त कृतचेता ॥
अंगद हृदय प्रेम नहिं थोरा । फिरिफिरिचितवतप्रभुकीओरा ॥
बार बार करि दण्डप्रणामा । मनअसरहनकहहिंमोहिंरामा ॥
रामबिलोकनिबोलनिचलनी।सुमिरिसुमिरिशोचतहँसिमिलनी॥
प्रभु रुखदेखिबिनय बहुभाखी । चले हृदय पदपंकज राखी ॥
अति आदर सब कपि पहुँचाये । भाइनसहित रामफिरिआये ॥
तब सुग्रीव चरण गहि नाना । भांतिबिनयकीन्ही हनुमाना ॥
दिन दशकरि रघुपति पदसेवा । तब फिरिचरण देखिहौंदेवा ॥
पुण्य पुंज तुम पवनकुमारा । सेवहु जाइ कृपा आगारा ॥
असकहि कपिपति चले तुरंता । अंगद कहेउ सुनहुहनुमंता ॥
दो० करेहु दण्डवत प्रभु सन तुमहिं कहौं करजोरि ।
बार बार रघुनायकहिं सुरति करायहु मोरि ॥
असकहि चलेउ बालिसुत फिरिआये हनुमंत ।
तासु प्रीति प्रभुसन कही मगनभये भगवंत ॥
कुलिशहुचाहकठोर अति कोमल कुसुमहुचाहि ।
चितखगेशरघुनाथ अस समुझिपरै कहुकाहि ॥
पुनि कृपालु लिये बोलिनिषादा । दीन्हेउ भूषण वसन प्रसादा ॥
जाहु भवन मम सुमिरणकरहू । मनक्रमबचनधर्म अनुसरहू ॥
तुम मम सखा भरतसम भ्राता । सदा रहहु पुर आवतजाता ॥

बचन सुनत उपजा सुखभारी । परेउचरण लोचन भरिबारी ॥
चरणकमल उरधरिगृह आवा । प्रभुप्रभावपरिजनहिंसुनावा ॥
रघुपति चरित देखि पुरबासी । पुनिपुनिकहहिंधन्यसुखरासी ॥
राम राज बैठे त्रय लोका । हर्षितभयउगयउसब शोका ॥
बैर न कर काहू सन कोई । राम प्रताप विषमता खोई ॥

दो० वर्णाश्रम निज निज धरम निरतवेद पथलोग ।
चलहिं सदापावहिंसुखहिं नहिंभयशोकनरोग ॥

दैहिक दैविक भौतिक तापा । रामराज नहिंकाहुहिं ब्यापा ॥
सबनर करहिं परस्पर प्रीती । चलहिंसुधर्मनिरतश्रुतिनीती ॥
चारिउ चरण धर्म जग माहीं । पूरिरहा सपनेहुँ अघनाहीं ॥
राम भक्ति रत नर अरु नारी । सकलपरमगतिकेअधिकारी ॥
अल्पमृत्यु नहिंकवनिउँ पीरा । सब सुन्दरसबनिरुजशरीरा ॥
नहिंदरिद्र कोउ दुखी न दीना । नहिंकोउअबुधनलक्षणहीना ॥
सब निर्दम्भ धर्मरति धरणी । नरअरुनारिचतुरशुभकरणी ॥
सब गुणज्ञ सब पण्डितज्ञानी । सबकृतज्ञ नहिं कपटसयानी ॥

दो० रामराज्य बिहगेश सुनु सचराचर जगमाहिं ।
काल कर्म स्वभावगुण कृतदुखकाहुहि नाहिं ॥

भूमि सप्त सागर मेखला । एकभूप रघुपति कोशला ॥
भुवन अनेक रोम प्रति जासू । यहप्रभुता कछुबहुत न तासू ॥
सो महिमा समुझत प्रभुकेरी । यह बर्णत हीनता घनेरी ॥
सोउमहिमाखगेशजिनजानी । फिरियहचरिततिनहुँरतिमानी ॥
सोउ जानेकर फल यह लीला । कहहिंमहामुनिसुमतिसुशीला ॥
राम राज्यकर सुख सम्पदा । बरणिनसकहिंफणीशशारदा ॥
सब उदार सब पर उपकारी । द्विजसेवक सबनर अरुनारी ॥
एक नारि ब्रत रत नर भारी । ते मनवच क्रम पति हितकारी ॥

दो० दण्डयतिनकर भेद जहँ नर्तक नृत्य समाज ।
जीतहिं मनहिं सुनिय अस रामचन्द्र के राज ॥

फूलहिं फलहिं सदातरुकानन । रहहिं एकसँगगज पंचानन ॥
खग मृग बैर सहज बिसराई । सबनि परस्पर प्रीति बढ़ाई ॥
कूजहिं खग मृग नाना बृन्दा । अभयचरहिंवनकरहिंअनन्दा ॥
शीतल सुरभि पवनबह मन्दा । गुंजतअलिलेचलुमकरन्दा ॥
लता बिटप मांगे द्रुम द्रवहीं । मनभावते धेनु पय स्रवहीं ॥
ससि सम्पन्न सदारह धरणी । त्रेता भै सतयुगकी करणी ॥
प्रकटे गिरि नाना मणि खानी । जगदातमा भूप पहिंचानी ॥
सरिता सकल बहैं बर बारी । शीतलअमलस्वादसुखकारी ॥
सागर निज मर्य्यादा रहहीं । डारहिं रत्नतटनि नरलहहीं ॥
सरसिजसंकुल सकलतड़ागा । अतिप्रसन्नदशदिशाविभागा ॥

दो० बिधु महिपूर मयूखन रवि तप तेज न काज ।
मांगे बारिद देहिं जल रामचन्द्रके राज ॥

कोटिन बाजिमेध प्रभु कीन्हें । अमितदान बिप्रन कहँदीन्हें ॥
श्रुतिपथ पालक धर्म धुरन्धर । गुणातीत अरु भोगपुरन्दर ॥
पति अनुकूल सदा रह सीता । शोभाखानि सुशीलबिनीता ॥
जानति कृपासिन्धु प्रभुताई । सेवति चरणकमलमनलाई ॥
यद्यपि गृह सेवक सेवकिनी । सब प्रकार सेवाबिधि गुनी ॥
निजकरगृह परिचर्य्या करहीं । रामचन्द्र आयसु अनुसरहीं ॥
जेहिबिधिकृपासिंधुसुखमानहिं । सोइसियसेवाबिधिउरआमहिं ॥
कौशल्यादि सासु गृह माहीं । सेवहिं सबै मान मद नाहीं ॥
उमा रमा ब्रह्माणि बन्दिता । जगदम्बासन्ततअनिन्दिता ॥

दो० जाकी कृपाकटाक्षसुर चाहत चितवनि सोइ ।
राम पदारबिन्दरत रहति स्वभावहिं जोइ ॥

सेवहिं सानुकूल सब भाई । रामचरण रति प्रीति सुहाई ॥
प्रभुपदकमल बिलोकत रहहीं । कबहुंकृपालुहमहिंकछुकहहीं ॥
राम कराहिं भ्रातन पर प्रीती । नानाभांति सिखावहिं नीती ॥
हर्षित रहहिं नगरके लोगा । करहिं सकलसुरदुर्लभभोगा ॥

अहनिशिविधिहिमनावतरहहीं। श्रीरघुवीर चरणरतिचहहीं॥
दुइ सुत सुन्दर सीता जाये। लवकुश वेद पुराणन गाये॥
दोउविजयीविनयी अतिसुन्दर। हरिप्रतिबिंबमनहुंगुणमंदिर॥
दुइ दुइ सुत सब भ्रातन केरे। भये रूप गुण शील घनेरे॥
दो० ज्ञानगिरा गोतीत अज मायागुण गोपार।
सोइ सच्चिदानन्द घन करत चरित्र अपार॥
प्रातकाल सरयू करि मज्जन। बैठहिंसभासंग द्विजसज्जन॥
वेद पुराण बशिष्ठ बखानहिं। सुनहिंरामयद्यपिसबजानाहिं॥
अनुजन संयुत भोजन करहीं। देखिसकलजननीसुखभरहीं॥
भरत शत्रुहन दोनों भाई। सहित पवनसुतउपवनजाईं॥
पूछहिं बैठि रामगुण गाहा। कहहनुमानसुमतिअवगाहा॥
सुनतविमलगुणअतिसुखपावहिं।बहुरिबहुरिकरिबिनयसुनावहिं॥
सबके गृह गृह होयँ पुराना। रामचरित सुन्दरविधिनाना॥
नरअरुनारिरामगुणगानहिं। करहिंदिवसनिशिजातनजानहिं॥
दो० अवधपुरीवासिन्हकर सुख सम्पदा समाज।
सहसशेषनहिंकहिसकहिं जहँनृपरामबिराज॥
नारदादि सनकादि मुनीशा। दर्शन लागि कोशलाधीशा॥
दिनप्रतिसकलअयोध्याआवहिं। देखिनगरबिरागबिसरावहिं॥
रत्नजटित मणिकनक अटारी। नाना रंग रुचिरगच ढारी॥
पुर चहुंपास कोट अति सुंदर। रचे कँगूरा रंग रंग बर॥
नव गृह सुन्दर निकर बनाई। मनहुं घेरि अमरावतिआई॥
महि बहुरूप रुचिरगच कांचा। जोबिलोकिमुनिवरमनराचा॥
धवलधामऊपरनभचुम्बतकलशमनहुंशशिरविद्युतिनिन्दत॥
बहुमणिरचित झरोखन भ्राजें। गृहगृहप्रतिमणिदीपबिराजें॥
छं० मणिदीपराजहिं भवन भ्राजहिंदेहरी विद्रुम रची।
सुंदरमनोहरमंदिरायत अजिरअति फटिकनखची॥
मणिखंभभीतिबिरंचिबिरचितकनकमणिमरकतखचे।

प्रतिद्वारद्वार कपाटपुरटबनाय बहु बज्रनखचे ॥
दो० चारु चित्रशाला अमित गृह गृह रचे बनाइ ।
राम धाम जो निरखत मुनि मन लेत चुराइ ॥
सुमन बाटिका सबहिं लगाई । बिबिधभांतिकरियतनबनाई ॥
लता ललित बहुभांति सुहाई । फूलहिंसदा बसन्त कि नाई ॥
गुञ्जत मधुकर मुखर मनोहर । मारुतत्रिबिधसदाबह सुंदर ॥
नाना खग बालकन जिआये । बोलत मधुर उड़ात सुहाये ॥
मोर हंस सारस पारावत । भवननपरशोभाअतिपावत ॥
जहँ तहँ देखहिं निजपरिछाहीं । बहुबिधिकूजहिं नृत्यकराहीं ॥
शुक सारिका पढ़ावहिं बालक । कहहुरामरघुपतिजनपालक ॥
राजद्वार सबही बिधि चारू । बीथी चौहट रुचिर बजारू ॥
छं० बाजार रुचिर न बनै बर्णत वस्तु बिनु गथ पाइये ।
जहँ भूपरमानिवास तहँकी सम्पदा किमिगाइये ॥
बैठे बजाज सराफ बणिक अनेक मनहुँ कुबेर ते ।
सबसुखीसबसुचरित्र सुन्दरनर सुबाशिशुजरठते ॥
दो० उत्तर दिशि सरयू बहै निर्म्मल जल गम्भीर ।
बांधे घाट मनोहर स्वल्प पंक नहिं तीर ॥
दूर फराक रुचिर सो घाटा । जहँजलपियहिंबाजिगजठाटा ॥
पनिघट परम मनोहर नाना । तहाँ नपुरुषकरहिं अस्नाना ॥
राजघाट सबही बिधि सुन्दर । मज्जहिंतहांबरणचारिउनर ॥
तीर तीर देवन कर मन्दिर । चहुँदिशितेहिकेउपवनसुन्दर ॥
कहुँ कहुँ सरिता तीर निवासी । बसहिंज्ञानरतमुनि संन्यासी ॥
जहँ तहँ तुलसी वृन्द सुहाये । बहुप्रकार सबमुनिनलगाये ॥
पुर शोभा कछु बरणि न जाई । बाहर नगर परम रुचिराई ॥
देखत पुरी अखिल अघभागा । बन उपबनबापिका तड़ागा ॥
छं० बापी तड़ाग अनूप कूप मनोहरायत सोहईं ।
सोपानसुन्दरनीर निरमल देखिसुरमुनिमोहईं ॥

बहु रङ्ग कंज अनेक खग कूजहिं मधुप गुञ्जारहीं ।
आरामरम्यपिकादि खगरव मनहुं पथिकहँकारहीं॥
दो० रमानाथ जहँ राजा सो पुर बरणि न जाइ ।
अणिमादिकसुखसम्पदा रहीं अवधपुरछाइ ॥
जहँतहँ नर रघुपतिगुणगावहिं । बैठि परस्परइहै सिखावहिं ॥
भजहुप्रणत प्रतिपालकरामहिं । शोभाशीलरूप गुणधामहिं ॥
जलजबिलोचनश्यामलगातहिं । पलकनयनइव सेवकत्रातहिं ॥
धृतशर रुचिर चाप तूणीरहिं । सन्तकंजबनरबिरणधीरहिं ॥
कालकराल ब्याल खगराजहिं । नमतरामअकाममताजहिं ॥
लोभमोहमृगयूथ किरातहि । मनसिजकरिहरिजनसुखदातहि॥
संशयशोक निविड़तमभानुहिं ।दनुजगहनघनदहनकृशानुहिं ॥
जनकसुता समेत रघुबीरहिं । कसनभजहुभंजनभवभीरहिं ॥
बहुबासना मशकहिमराशिहिं ।सदाएकरसअजअविनाशिहिं॥
मुनिरंजन भंजन महि भारहि । तुलसिदासकेप्रभुहि उदारहि॥
दो० इहिबिधि नगर नारिनर करहिं रामगुण गान ।
सानुकूल सन्तत रहत सबपर कृपानिधान ॥
जबते राम प्रताप खगेशा । उदितभयेअतिप्रबलदिनेशा॥
पूरि प्रकाश रह्यो तिहुँ लोका । बहुतनसुखबहुतनमनशोका॥
जिनहिंशोक तेहिकहौं बखानी । प्रथमअविद्यानिशासिरानी ॥
अघ उलूक जहँ तहाँ लुकाने । काम क्रोध कैरव सकुचाने ॥
बिबिधकर्मगुण काल सुभाऊ । ये चकोरसुख लहहिंनकाऊ ॥
मत्सर मान मोह मद चोरा । इनकहँसुखनहिंकवनिहुँओरा॥
धर्म तड़ाग ज्ञान विज्ञाना । ये पंकज बिकसे बिधिनाना ॥
सुख सन्तोष बिराग बिबेका । बिगत शोक ये कोक अनेका॥
दो० यहप्रताप रबिजासुउर जब प्रभुकरहिं प्रकाश ।
पाछिल बाढ़हिं प्रथम जे कहे ते पावहिं नाश ॥
भ्रातन सहित राम इक बारा । संग परमप्रिय पवनकुमारा ॥

सुन्दर उपवन देखन गयऊ। सबतरुकुसुमितपल्लवनयऊ॥
जानि समयसनकादिक आये। तेजपुंज गुण शील सुहाये॥
ब्रह्मानन्द सदा लव लीना। देखत बालक बहु कालीना॥
धरे देह जनु चारिउ वेदा। समदरशीमुनिबिगताबिभेदा॥
आशावसनब्यसननहिंतिनहीं। रघुपतिचरितहोइतहँसुनहीं॥
तहाँ रहे सनकादि भवानी। जहँघटसम्भवमुनिवरज्ञानी॥
रामकथामुनि बहुबिधि बरणी। ज्ञानयोगपावकजिमिअरणी॥
दो० देखि राममुनि आवत हर्षि दण्डवत कीन्ह।
स्वागत पूंछि पीतपट प्रभु बैठन कहँ दीन्ह॥
कीन्ह दण्डवत तीनिउँ भाई।सहितपवनसुतसुखअधिकाई॥
मुनिरघुपतिछबिअतुलबिलोकी। भये मगनमनसकत न रोकी॥
श्यामलगात सरोरुह लोचन। सुन्दरता मन्दर भवमोचन॥
इकटकरहे निमेष न लावहिं। प्रभु करजोरे शीश नवावहिं॥
तिनकी दशा देखि रघुबीरा। स्रवतनयनजल पुलकशरीरा॥
कर गहि प्रभु मुनिवर बैठारे। परम मनोहर बचन उचारे॥
आजु धन्य मैं सुनहु मुनीशा। तुम्हरेदरश जाहिंअघखीशा॥
बड़े भाग्य पाइय सतसंगा। बिनहिंप्रयासहोहिं भवभंगा॥
दो० सन्त संग अपबर्ग कर कामी भवकर पंथ।
कहहिंसन्त कबि कोबिद श्रुतिपुराणसदग्रंथ॥
सुनि प्रभुबचनहर्षि मुनिचारी। पुलकगातअस्तुति अनुसारी॥
जय भगवन्त अनन्त अनामय। अनघअनेकएक करुणामय॥
अजनिर्गुणजयजयगुणसागर। सुखनिधानतिहुँलोकउजागर॥
जय इन्दिरारमण जय भूधर। अनुपमयशअनादिशोभाकर॥
ज्ञाननिधान अमान मानप्रद। पावनसुयश पुराण वेद वद॥
तज्ञ कृतज्ञ अज्ञता भंजन। नाम अनेक अनाम निरंजन॥
सर्व सर्वगत सर्वउरालय। बसहुसदाहमकहँ प्रतिपालय॥
द्वन्द बिपति भवफंद बिभंजन। हृदबसुराम काममद गंजन॥

दो॰ परमानन्द कृपायतन तुम परिपूरण काम ।
प्रेम भक्ति अनपावनी देहु हमहिं श्रीराम ॥
देहुभक्ति रघुपति अनपावनि । त्रिविधतापभवदापनशावनि ॥
प्रणतकाम सुरधेनु कल्पतरु । होइ प्रसन्न प्रभुदीजैयहवरु ॥
भववारिधि कुम्भज रघुनायक । सेवकसुलभसकलसुखदायक ॥
मनसम्भव दारुणदुख दारय । दीनबन्धु समता बिस्तारय ॥
आश त्रास ईर्षादि निवारक । बिनयबिवेकबिरातिबिस्तारक ॥
भूपमौलिमणि मण्डन धरणी । देहुभक्ति संसृति सरितरणी ॥
मुनिमन मानसहंस निरन्तर । चरणकमलबन्दितअजशङ्कर ॥
रघुकुल केतु सेतु श्रुतिरक्षक । कालकर्म स्वभाव गुण भक्षक ॥
तारण तरण हरण सबदूषण । तुलसिदासप्रभुत्रिभुवनभूषण ॥
दो॰ बार बार अस्तुतिकरि प्रेम सहित शिरनाइ ।
ब्रह्म भवनसनकादि गे अतिअभीष्ट बरपाइ ॥
सनकादिकबिधिलोक सिधाये । भ्रातन रामचरण शिरनाये ॥
पूंछत प्रभुहिंसकल सकुचाहीं । चितवहिं सब मारुतसुतपाहीं ॥
सुनाचहहिंप्रभु मुखकी बानी । जोसुनिहोय सकल भ्रमहानी ॥
अन्तर्यामी प्रभु सब जाना । पूँछत कहहु कहा हनुमाना ॥
जोरिपाणि तब कहहनुमन्ता । सुनिये दीनबन्धु भगवन्ता ॥
नाथ भरत कछु पूँछनचहहीं । प्रश्न करतमनसकुचतअहहीं ॥
तुम जानहु कपि मोरसुभाऊ । भरतहिं मोहिं न कछु दुराऊ ॥
सुनिप्रभुबचनभरतगहिचरणा । सुनियनाथप्रणतारतिहरणा ॥
दो॰ नाथ न मोहिंसन्देह कछु सपनेहुँ शोक न मोह ।
केवल कृपा तुम्हारि प्रभु चिदानन्द सन्दोह ॥
करौं कृपानिधि एक ढिठाई । मैं सेवक तुम जन सुखदाई ॥
सन्तन की महिमा रघुराई । बहुबिधि वेद पुराणन गाई ॥
श्रीमुख पुनि तुमकीन्हबड़ाई । तिनपरप्रभुहिंप्रीतिअधिकाई ॥
सुनाचहौं प्रभुतिनकरलक्षण । कृपासिन्धु गुणज्ञानबिचक्षण ॥

सन्त असन्त भेद बिलगाई । प्रणतपालमोहिंकहियबुझाई ॥
सन्तनके लक्षण सुनु भ्राता । अगणितश्रुतिपुराणविख्याता ॥
संत असंतनकी अस करणी । जिमिकुठारचन्दनआचरणी ॥
काटे परसु मलय सुनु भाई । निज गुणदेइसुगन्ध बसाई ॥
दो० ताते सुर शीशन चढ़त जग बल्लभ श्रीखण्ड ।
अनल दाहि पीटतघनहिं परसु बदनयहदण्ड ॥
बिषयअलम्पट शीलगुणाकर । पर दुखदुखसुखसुखदेखेपर ॥
समअभूत रिपुबिमद बिरागी । लोभामर्ष हर्ष भय त्यागी ॥
कोमल चित दीननपर दाया । मन बचक्रममममभक्तिअमाया ॥
सबहिं मानप्रद आपु अमानी । भरत प्राणसम ममतेप्रानी ॥
बिगतकाम ममनाम परायन । शान्तबिरक्तबिदितमुदितायन ॥
शीतलता सरलता मयत्री । द्विजपद प्रेम धर्मजनयत्री ॥
यह सबलक्षणबसहिंजासुउर । जानेउ तात संत संततफुर ॥
शमदमनियमनीतिनहिंडोलहिं । परुषबचनकबहूं नहिंबोलहिं ॥
दो० निन्दा अस्तुतिउभय सम ममता मम पदकंज ।
ते सज्जन मम प्राणप्रिय गुण मन्दिर सुखपुंज ॥
सुनहु असन्तन केर सुभाऊ । भूलेहुसंगति करियन काऊ ॥
तिनकर संग सदा दुखदाई । जिमिकपिलहिं घालैहरहाई ॥
खलनहृदय अतिताप बिशेखी । जरहिंसदा परसम्पतिदेखी ॥
जहँ कहुं निन्दा सुनहिं पराई । हर्षहिं मनहुँ परी निधिपाई ॥
कामक्रोध मद लोभ परायन । निर्दयकपटी कुटिलमलायन ॥
बैर अकारण सब काहूसों । जोकरुहितअनहित ताहूसों ॥
झूठै लेना झूठै देना । झूठै भोजन झूठ चबेना ॥
बोलहिंमधुरबचन जिमिमोरा । खाहिं महाअहि हृदयकठोरा ॥
दो० परद्रोही पर दार रत पर धन पर अपबाद ।
तेनर पामर पापमय देह धरे मनुजाद ॥
लोभै ओढ़न लोभै डासन । शिश्नोदर परयमपुर त्रासन ॥

काहूकी जो सुनहिं बड़ाई । श्वास लेहिं जनु जूड़ी आई ॥
जब काहूकी देखहिं बिपती । सुखी होहिंमानहुँजगनृपती ॥
स्वारथ रत परिवार बिरोधी । लम्पटकामलोभ अतिक्रोधी ॥
मातपितागुरु विप्र न मानहिं । आपुगये अरुघालहिंआनहिं ॥
करहिं मोह बश द्रोह परावा । सतसंगतिहरिभक्ति न भावा ॥
अवगुणसिन्धु मन्दमतिकामी । वेद बिदूषक परधन स्वामी ॥
बिप्र द्रोह पर द्रोह बिशेषी । दम्भ कपट जियधरे सुवेषी ॥

दो० ऐसे अधम मनुजखल कृतयुग त्रेता नाहिं ।
द्वापर कछुक बृन्द बहु होइहैं कलियुग माहिं ॥

परहित सरिस धर्म नहिं भाई । परपीड़ासम नहिं अधमाई ॥
निर्णय सकल पुराण वेदकर । कहेउँतातजानहिं कोविदनर ॥
नर शरीर धरि जो पर पीरा । करहिं ते सहहिंमहाभवभीरा ॥
करहिं मोहवश नर अघनाना । स्वारथरत परलोक नशाना ॥
काल रूप मैं तिनकर ताता । शुभअरुअशुभकर्मफलदाता ॥
अस बिचारि जो परमसयाने । भजहिंमोहिं संसृतदुखजाने ॥
त्यागहिंकर्म शुभाशुभदायक । भजैंमोहिं सुरनरमुनिनायक ॥
सन्त असन्तन के गुण भाखे । तेनपरहिंभवजिन लखिराखे ॥

दो० सुनहु तात माया कृत गुण अरु दोष अनेक ।
गुणयहउभय न देखिये देखिय सो अविवेक ॥

श्रीमुख बचन सुनतसबभाई । हर्ष प्रेम नहिं हृदय समाई ॥
करहिंबिनयअति बारहिं बारा । हनूमान हिय हर्ष अपारा ॥
पुनि रघुपति निजमन्दिर गये । इहिबिधिचरितकरतनितनये ॥
बार बार नारद मुनि आवहिं । चरित पुनीत रामकरगावहिं ॥
नितनवचरितदेखि मुनिजाहीं । ब्रह्मलोक सबकथा कहाहीं ॥
सुनिविरंचिअतिशयसुखमानहिं।पुनिपुनितातकरहुगुणगानहिं॥
सनकादिक नारदहिंसराहहिं । यद्यपि ब्रह्मनिरतमुनिआहहिं ॥
सुनिगुणगानसमाधिबिसारी । सादरसुनहिं परम अधिकारी ॥

दो० जीवन मुक्त ब्रह्म पर चरित सुनहिं तजि ध्यान ।
जेहरि कथा न कराहिं रति तिनके हृदय पषान ॥
एक बार रघुनाथ बुलाये । गुरुद्विज पुरवासी सब आये ॥
बैठे गुरु द्विजवर मुनि सज्जन । बोले बचन भक्त भयभंजन ॥
सुनहु सकल पुरजन ममबानी । कहौं न कछु ममताउर आनी ॥
नहिं अनीतिनहिं कछुप्रभुताई । सुनौ करहु जोतुमहिंसुहाई ॥
सोइ सेवक प्रीतम मम सोई । मम अनुशासन मानै जोई ॥
जो अनीति कछु भाषौं भाई । तौमोहिंबरजेहु भय बिसराई ॥
बड़े भाग्य मानुष तन पावा । सुर दुर्लभ सद्ग्रन्थन गावा ॥
साधन धाम मोक्ष कर द्वारा । पाइ न जेहिंपरलोक सवाँरा ॥
दो० सो परन्तु दुख पावई शिर धुनि धुनि पछिताइ ।
कालहि कर्म्महि ईश्वरहि मिथ्या दोष लगाइ ॥
इहितनु कर फल बिषयनभाई । स्वर्गहु स्वल्पअन्तदुखदाई ॥
नर तनु पाइ बिषय मन देही । पलटि सुधाते शठबिषलेही ॥
ताहि कबहुँ भल कहै न कोई । गुंजा गहै परसमणि खोई ॥
आकर चारि लाख चौरासी । योनिभ्रमतयहजिवअबिनासी ॥
फिरत सदा माया के प्रेरे । काल कर्म स्वभाव गुणघेरे ॥
कबहुँक करि करुणा नर देही । देत ईश बिनु हेतु सनेही ॥
नर तनु भव बारिधि कहँबेरे । सम्मुख मरुत अनुग्रहमेरे ॥
कर्णधार सदगुरु दृढ़ नावा । दुर्लभसाज सुलभकरिपावा ॥
दो० जोनतरै भवसागरहि नर समाज अस पाइ ।
सोकृतनिन्दकमन्दमति आतमहनगति जाइ ॥
जो परलोक इहां सुख चहहू । सुनिममबचनहृदयदृढ़गहहू ॥
सुलभ सुखद यह मारग भाई । भक्तिमोरि पुराण श्रुतिगाई ॥
ज्ञान अगम प्रत्यूह अनेका । साधन कठिननमनमहँटेका ॥
करत कष्ट बहु पावत कोई । भक्तिहीन प्रिय मोहिंनसोई ॥
भक्तिस्वतंत्र सकलसुखखानी । बिनसतसंगनपावहिं प्रानी ॥

पुण्यपुंज बिनु मिलहिं न संता । सतसंगति संसृतिकर अंता ॥
पुण्य एक जगमें नाहिं दूजा । मनक्रमबचन बिप्रपदपूजा ॥
सानुकूल तिहिपर सब देवा । जोतजि कपटकरै द्विजसेवा ॥
दो॰ औरौ एक गुप्त मत सबहिं कहौं कर जोरि ।
शंकरभजन बिना नर भक्ति न पावै मोरि ॥
कहहु भक्ति पथकवनप्रयासा । योगन मखजपतपउपवासा ॥
सरल सुभाव न मन कुटिलाई । यथा लाभ सन्तोष सदाई ॥
मोरदास कहाइ नर आसा । करैतौ कहहुकहा बिस्वासा ॥
बहुत कहौं का कथा बढ़ाई । इहि आचरण बश्य मैं भाई ॥
बैर न बिग्रह आश न त्रासा । सुखमयताहिसदासबआसा ॥
अनारम्भ अनिकेत अमानी । अनघ अरोष दक्ष बिज्ञानी ॥
प्रीति सदा सज्जन संसर्गा । तृणसमबिषयस्वर्गअपवर्गा ॥
भक्ति पक्षता नहिं शठ ताई । दुष्ट कर्म सब दूरि बिहाई ॥
दो॰ मम गुण ग्राम नाम रत गत ममता मद मोह ।
ताकर सुख सोइ जाने परमानँद सन्दोह ॥
सुनत सुधासम बचन रामके । सबन्हिगहे पद कृपाधामके ॥
जननि जनकगुरु बन्धुहमारे । कृपानिधान प्राण ते प्यारे ॥
तन धन धाम राम हितकारी । सबबिधितुमप्रणतारतिहारी ॥
असिसिखतुमबिनुदेइ न कोऊ । मातापिता स्वारथरत ओऊ ॥
हेतु रहित सबबिधि उपकारी । तुम तुम्हारसेवक असुरारी ॥
स्वारथमीत सकल जगमाहीं । सपनेहुँकोउ परमारथ नाहीं ॥
सबके बचन प्रेमरस साने । सुनि रघुनाथ हृदय हर्षाने ॥
निज निज गृहगे आयसु पाई । बर्णत प्रभुकी गिरा सुहाई ॥
दो॰ उमा अवध बासी नर नारि कृतारथ रूप ।
ब्रह्म सच्चिदानन्द घन रघुनायक जहँ भूप ॥
एक बार बशिष्ठ मुनि आये । जहाँ राम सुख धाम सुहाये ॥
अति आदर रघुनायककीन्हा । पदपखारिचरणोदक लीन्हा ॥

रामसुनहु मुनि कह करजोरी । कृपासिन्धु बिनती इकमोरीं ॥
देखि देखि आचरण तुम्हारा । होत मोह ममहृदय अपारा ॥
महिमा अमित बेदनहिंजाना । मैं केहिभांति कहौं भगवाना ॥
उपरोहिती कर्म अति मन्दा । बेद पुराण स्मृति करनिन्दा ॥
जब न लेउँ तबहींबिधि मोहीं । कहा लाभ आगे सुततोहीं ॥
परमातमा ब्रह्म नर रूपा । होइहैं रघुकुल भूषण भूपा ॥

दो० तब मैं हृदय बिचार किय योग यज्ञ जप दान ।
जेहि नितकरियसोपाइये धर्म न इहसमआन ॥

जप तप नियम योग ब्रतधर्मा । श्रुतिसम्भव नानाविधिकर्मा ॥
ज्ञान दया दम तीरथ मज्जन । जहँलगिधर्मकहैंश्रुतिसज्जन ॥
आगम निगम पुराण अनेका । पढ़े सुने कर फल प्रभु एका ॥
तव पद पंकज प्रीति निरंतर । सब साधनकर फलयहसुंदर ॥
छूटै मल कि मलहि के धोये । घृतकिपावकोउ बारि बिलोये ॥
प्रेम भक्ति जल बिनु रघुराई । अभ्यन्तरमल कबहुँ न जाई ॥
सोइ सर्वज्ञ तज्ञ सोइ पंडित । सोइगुणज्ञ विज्ञान अखंडित ॥
दक्ष सकल लक्षण युत सोई । जाके पद सरोज रति होई ॥

दो० नाथ एकबर मांगौं मोहिं कृपाकरि देहु ।
जन्म जन्म प्रभुपद कमल कबहुँघटैजनिनेहु ॥

असकहि मुनिवशिष्ठ गृहआये । कृपासिन्धुके मन अतिभाये ॥
हनूमान भरतादिक भ्राता । संग लिये सेवक सुखदाता ॥
पुनिकृपालु पुर बाहर गयऊ । गजरथ तुरगमँगावतभयऊ ॥
देखि कृपाकरिसकल सराहे । दियेउचित जिनजिनजोचाहे ॥
हरणसकल श्रम प्रभुश्रमपाई । गये जहाँ शीतल अमराई ॥
भरत दीन्ह निज बसनडसाई । बैठे प्रभु सेवहिं सब भाई ॥
मारुतसुत मारुत तब करई । पुलकिगातलोचन जलभरई ॥
हनूमान समको बड़ भागी । नहिंकोउरामचरणअनुरागी ॥
गिरिजा जासु प्रीति सेवकाई । बारबार प्रभु निज मुखगाई ॥

दो० तेहि अवसर मुनि नारद आये करतलबीन ।
गावन लागे रामगुण कीरति सदा नवीन ॥
मामवलोकय पंकज लोचन । कृपाबिलोकनिशोचबिमोचन ॥
नील तामरसश्याम कामअरि । हृदय कंजमकरंद मधुप हरि ॥
यातुधान बरूथ बल गंजन । मुनिसज्जन रंजनअघभंजन ॥
भूसुर नवशशि बृन्दबलाहक । अशरणशरणदीनजनगाहक ॥
भुजबलविपुलभारमहिखण्डित । खरदूषणबिराधबधपण्डित ॥
रावणारि सुखरूप भूपबर । जयदशरथकुलकुमुदसुधाकर ॥
सुयशपुराणबिदितनिगमागम । गावतसुरमुनिसन्त समागम ॥
कारुणीक बाली मद खंडन । सबबिधिकुशलकोशलामंडन ॥
कलिमलमथननाम ममताहन । तुलसिदासप्रभुपाहिप्रणतजन ॥
दो० प्रेमसहित मुनिनारद बरणि राम गुणग्राम ।
शोभासिंधु हृदयधरि गये जहाँ विधिधाम ॥
गिरिजासुनहु बिशद यह कथा । मैं सबकही मोरिमति यथा ॥
राम चरित शत कोटि अपारा । श्रुति शारदा न बरणैं पारा ॥
राम अनन्त अनन्तगुणानी । जन्मकर्म अगणित नामानी ॥
जलसीकर महिरजगणिजाहीं । रघुपतिचरितनबरणिसिराहीं ॥
बिमलकथायहहरिपददायिनि । भक्तिहोइसुनिअतिअनपायिनि ॥
उमा कहेउँ सो कथा सुहाई । जोभुशुण्डिखगपतिहिसुनाई ॥
कछुक रामगुण कहेउँ बखानी । अबकाकहौं सोकहहुभवानी ॥
सुनि शुभकथा उमा हरषानी । बोली अतिविनीत मृदुबानी ॥
धन्य धन्य मैं धन्य पुरारी । सुनेउँ रामगुण भवभयहारी ॥
दो० तुम्हरी कृपाकृपायतन अब कृतकृत्य न मोह ।
जानेउँ राम प्रभाव प्रभु चिदानन्द सन्दोह ॥
नाथ तवानन शशि स्रवत कथासुधा रघुबीर ।
श्रवणपुटनिमनपानकिय नहिंअघातमति धीर ॥
रामचरित जे सुनत अघाहीं । रस बिशेषजाना तिननाहीं ॥

जीवन मुक्त महामुनि जेऊ । हरिगुणसुनतअघात नतेऊ ॥
भवसागर चह पार जो पावा । राम कथा ता कहँ दृढ़नावा ॥
विषयिनकहँपुनिहरि गुणग्रामा । श्रवणसुखदअरुमनाबिश्रामा ॥
श्रवणवन्त अस को जग माहीं । जाहि न रघुपतिकथासुहाहीं ॥
ते जड़ जीव निजातमघाती । जिनहिंनरघुपतिकथासुहाती ॥
हरि चरित्र मानस तुम गावा । सुनिमैं नाथ परमसुखपावा ॥
तुम जोकही यह कथा सुहाई । काकभुशुण्डिगरुड़प्रतिगाई ॥

दो० बिरत ज्ञान बिज्ञान दृढ़ रामचरण अति नेह ।
बायसतनु रघुपति भगति मोहिं परम संदेह ॥

नर सहस्र महँ सुनहु पुरारी । कोउ इकहोइ धर्म ब्रतधारी ॥
धर्मशील कोटिन महँ कोई । बिषयबिमुख बिराग रतहोई ॥
कोटि बिरक्त मध्य श्रुतिकहई । सम्यकज्ञानसुकृतकोउलहई ॥
ज्ञानवन्त कोटिन महँ कोई । जीवनमुक्त सुकृत कोइ होई ॥
तिनसहस्रनमहँ सबसुखखानी । दुर्लभ ब्रह्म निरत बिज्ञानी ॥
धर्मशील बिरक्त अरु ज्ञानी । जीवनमुक्त ब्रह्म पर प्रानी ॥
सबते सो दुर्लभ सुरराया । रामभक्तिरत गत मदमाया ॥
सो हरिभक्ति काककिमि पाई । बिश्वनाथमोहिं कहहुबुझाई ॥

दो० राम परायण ज्ञानरत गुणागार मतिधीर ।
नाथ कहहु केहि कारण पायउ काक शरीर ॥

यह प्रभु चरित पवित्र सुहावा । कहहुकृपालु काककिमिपावा ॥
तुम केहि भांति सुना मदनारी । कहहुमोहिं यह कौतुकभारी ॥
गरुड़ महाज्ञानी गुणरासी । हरिसेवकअतिनिकटनिवासी ॥
सो केहि हेतु काक सन जाई । सुनीकथा मुनिनिकरबिहाई ॥
कहहुकवनिबिधि भा संवादा । दोउ हरिभक्तकाक उरगादा ॥
गौरिगिरा सुनि सरल सुहाई । बोले शिव सादर सुखपाई ॥
धन्यसती पावनि मति तोरी । रघुपतिचरणप्रीतिनहिंथोरी ॥
सुनहु परमपुनीत इतिहासा । जोसुनिहोइसकलभ्रमनासा ॥

उपजहिं रामचरणबिस्वासा । भवनिधितरुनरविनहिंप्रयासा ॥

दो० ऐसिय प्रश्न बिहंगपति कीन्हकाक सन जाइ ।
सोसब सादर कहतहौं सुनहु उमा चितलाइ ॥

मैंजिमि कथासुनी भयमोचनि । सोप्रसंगसुनुसुमुखिसुलोचनि ॥
प्रथम दच्छ गृह तव अवतारा । सती नाम तब रहा तुम्हारा ॥
दच्छ यज्ञ तव भा अपमाना । तुमअतिक्रोधतजातहँप्राना ॥
मम अनुचरन कीन्हमख भंगा । जानहु तुमसोसकलप्रसंगा ॥
तब अतिशोच भयउ मनमोरे । दुखितभयउँबियोगप्रियतोरे ॥
सुन्दर गिरिबन सरिततड़ागा । कौतुक देखतफिरौं बिभागा ॥
गिरिसुमेरु उत्तर दिशि दूरी । नील शैल इक सुन्दर भूरी ॥
तासु कनकमय शिखर सुहाये । चारि चारु मोरे मनभाये ॥
तेहिपर इकइक बिटपबिशाला । बट पीपर पाकरी रसाला ॥
शैलोपरि सुन्दर सर सोहा । मणि सोपान देखिमनमोहा ॥

दो० शीतलअमल मधुरजल जलजबिपुल बहुरङ्ग ।
कूजत कलरव हंसगण गुंजत नाना भृङ्ग ॥

तेहिगिरि रुचिर बसैखगसोई । तासुनाश कल्पांत न होई ॥
मायाकृत गुण दोष अनेका । मोहमनोज आदि अविवेका ॥
रहेउव्यापिसमस्त जगमाहीं । तेहिगिरिनिकटकबहुँनहिंजाहीं ॥
तहँबसिहरिहिभजै जिमिकागा । सोसुनु उमासहितअनुरागा ॥
पीपर तरु तर ध्यान सोधरई । जाप योग पाकर तर करई ॥
आंब छांह करि मानस पूजा । तजिहरिभजनकाजनहिंदूजा ॥
बट तर कह हरि कथा प्रसंगा । आवहिं सुनन अनेकबिहंगा ॥
राम चरित बिचित्र बिधिनाना । प्रेमसहित करुसादरगाना ॥
सुनहिंसकलमतिबिमलमराला । बसहिंनिरन्तरजोजेहिकाला ॥
जब मैं जाइ सो कौतुक देखा । उर उपजा आनन्द बिशेखा ॥

दो० तबकछुकाल मरालतनु धरितहँ कीन्ह निवास ।
सादर सुनि रघुपति चरित पुनिआयउँकैलास ॥

गिरिजाकहेउँसोसबइतिहासा। मैंजेहिसमयगयउँ खगपासा॥
अब सो कथा सुनहु जेहिहेतू। गयउ काकपहँ खगकुलकेतू॥
जब रघुनाथ कीन्ह रणक्रीड़ा। समुझतचरितहोतमोहिंब्रीड़ा॥
इन्द्रजीत कर आपु बँधावा। तब नारदमुनिगरुड़पठावा॥
बंधन काटि गयउ उरगादा। उपजा हृदयप्रचण्डबिषादा॥
प्रभु बन्धन समुझत बहुभांती। करत बिचार उरगआराती॥
व्यापक ब्रह्म बिरज बागीशा। माया मोह पार परमीशा॥
सो अवतार सुनेउँ जग माहीं। देखा सो प्रभाव कछुनाहीं॥

दो० भव बन्धन से छूटहीं नर जपि जाकर नाम।
सर्व निशाचर बांधेउ नागफांस सोइ राम॥

नाना भांति मनहिं समुझावा। प्रकट न ज्ञानहृदयभ्रमछावा॥
खेद खिन्न मन तर्क बढ़ाई। भयउ मोह बश तुम्हरीनाई॥
व्याकुल गयउ देवऋषि पाहीं। कहेसिजोसंशयनिजमनमाहीं॥
सुनिनारदहिलागि अतिदाया। सुनुखगप्रबल रामकी माया॥
जो ज्ञानिनकर चितअपहरई। बरिआईं बिमोह बश करई॥
जेहि बहुबार नचावा मोहीं। सो व्यापेउ बिहंगपति तोहीं॥
महा मोह उपजा मन तोरे। मिटहि न वेगि कहेखगमोरे॥
चतुरानन पहँ जाहु खगेशा। सोइकरहु जो देहिं उपदेशा॥

दो० असकहि चले देवऋषि करतराम गुण गान।
हरिमायाबल बरणत पुनि पुनि परम सुजान॥

तबखगपति बिरंचि पहँगयऊ। निजसन्देह सुनावत भयऊ॥
सुनि बिरंचि रामहिं शिरनावा। समुझि प्रतापप्रेम उरछावा॥
मनमहँ करहिं बिचार बिधाता। मायाबश कबिकोबिदज्ञाता॥
हरि माया कर अमितप्रभावा। बिपुलबार जो मोहिंनचावा॥
अगजगमयजगममउपजाया। नहिंआश्चर्य मोह खगराया॥
पुनिबोले बिधि गिरा सुहाई। जानु महेश राम प्रभुताई॥
बैनतेय शंकर पहँ जाहू। तात अनत पूँछहु जनिकाहू॥

तहां होंइ तव संशय हानी । चलउबिहगपतिसुनिविधिबानी॥
दो० परमातुर बिहंगपति तब आयउ ममपास ।
जात रहेउँकुबेरगृह उमा रहिउ कैलास ॥
तेइ मम पद सादर शिरनावा । पुनि आपन संदेह सुनावा ॥
सुनि ताकरि पुनीत मृदुबानी । प्रेमसहित मैं कहेउँ भवानी ॥
मिलेउगरुड़ मारगमहँ मोहीं । कवनिभांति समुझावोंतोहीं ॥
जबकछुकाल करिय सतसंगा । तब यह होइ मोहभ्रमभंगा ॥
सुनिय तहाँ हरि कथा सुहाई । नाना भाँति मुनिन जो गाई ॥
जेहिमहँ आदिमध्य अवसाना । प्रभुप्रतिपाद्यराम भगवाना ॥
नित हरि कथा होइ जहँ भाई । पठवौं तोहिं सुनहु तहँजाई ॥
जाइहि सुनत सकल सन्देहा । होइहि राम चरण दृढ़ नेहा ॥
दो० बिनुसतसंग न हरिकथा तेहिबिनुमोह न भाग ।
मोह गये बिनु राम पद होइ न दृढ़ अनुराग ॥
मिलहिंनरघुपतिबिनुअनुरागा । कियेयोग जप ज्ञान बिरागा ॥
उत्तर दिशि सुन्दर गिरिनीला । तहँ रहकाकभुशुण्डिसुशीला ॥
राम भक्ति पथ परम प्रवीना । ज्ञानी गुणगृह बहुकालीना ॥
राम कथा सोइ कहै निरन्तर । सादरसुनहिं बिबिधबिहंगबर ॥
जाइ सुनहु तहँ हरिगुण भूरी । होइहि मोहजनित दुखदूरी ॥
मैं जब सब तेहि कहा बुझाई । चले हर्षि ममपद शिरनाई ॥
ताते उमा न मैं समुझावा । रघुपति कृपा मर्म सबपावा ॥
होइहि कीन्हकबहुँ अभिमाना । सो खोवै चह कृपानिधाना ॥
कछु तेहिते पुनि मैं नहिंराखा । खग जानै खगहीकी भाखा ॥
प्रभु माया बलवंत भवानी । जाहिनमोह कवन असज्ञानी ॥
दो० ज्ञानी भक्तशिरोमणि त्रिभुवनपति करजान ।
ताहि मोह माया प्रबल पामर करहिं गुमान ॥
शिव बिरंचि कहँ मोहई को है बपुरा आन ।
असजियजानिभजहिंमुनि मायापतिभगवान ॥

गयउगरुड़ जहँबसैभुशुण्डी । मतिअकुण्ठहरिभक्तिअखण्डी॥
देखि शैल प्रसन्न मन भयऊ । मायामोह शोक भ्रम गयऊ ॥
करि तड़ाग मज्जन जलपाना । बटतर गयउ हृदय हर्षाना ॥
वृन्द वृन्द विहंग तहँ आये । सुनै राम के चरित सुहाये ॥
कथाअरम्भ करै सो चाहा । ताही समय गयउखगनाहा ॥
आवत देखि सकल खगराजा । हर्षेउ बायस सकलसमाजा ॥
अतिआदरखगपतिकर कीन्हा । स्वागतपूछि सुआसनदीन्हा ॥
करि पूजा समेत अनुरागा । मधुरबचन बोले तब कागा ॥
दो० नाथ कृतारथ भयउँ मैं तव दर्शन खगराज ।
आयसुहोइसोकरौंअब प्रभु आयहु केहिकाज ॥
सदा कृतारथ रूप तुम कह मृदुबचनखगेश ।
जाकी अस्तुति सादर निजमुख कीन्ह महेश ॥
सुनहु तात जेहिकारणआयउँ । सोसब भयउ दर्श तवपायउँ ॥
देखि परम पावन तवआश्रम । गयउ मोह संशय नानाभ्रम ॥
अब श्रीरामकथा अतिपावनि । सदासुखद दुखपुंजनशावनि ॥
सादर तात सुनावहु मोहीं । बारबार बिनवौं प्रभु तोहीं ॥
सुनत गरुड़की गिरा बिनीता । सरल सप्रेम सुखदसुपुनीता ॥
भयउ तात मन परमउछाहा । कहैलग रघुपति गुणगाहा ॥
प्रथमहिंअतिअनुराग भवानी । रामचरितसबकहेसिबखानी ॥
पुनि नारदकर मोह अपारा । कहेसिबहुरि रावणअवतारा ॥
प्रभु अवतार कथापुनिगाई । पुनिशिशुचरितकहेसिमनलाई ॥
दो० बालचरितकहि बिबिधबिधि मनमहँपरमउछाह ।
ऋषिआगमन कहेसि पुनि श्रीरघुबीर बिबाह ॥
बहुरि राम अभिषेक प्रसंगा । पुनिनृप मरण राजरसभंगा ॥
पुरबासिन कर बिरह बिषादा । कहेसिराम लक्ष्मण संबादा ॥
बिपिन गवन केवट अनुरागा । सुरसरिउतरिनिवासप्रयागा ॥
बाल्मीकि प्रभुमिलन बखाना । चित्रकूटजिमिबस भगवाना ॥

सचिवागमन नगर नृपमरणा । भरतागमन प्रेमअतिबरणा ॥
करि नृपक्रिया संग पुरबासी । भरतगये जहँप्रभु सुखरासी ॥
पुनिरघुपति बहुबिधिसमुझाये । लै पादुका अवध फिरिआये ॥
भरतरहनि सुरपतिसुतकरणी । प्रभुअरुअत्रिभेंट पुनिबरणी ॥

दो॰ कहि बिराध बध जाहिबिधि देहतजी शरभंग ।
बरणि सुतीक्षण प्रेमपुनि प्रभुअगस्त्यसतसंग ॥

कहि दण्डक बन पावनताई । गृद्ध मइत्री पुनि तेहिं गाई ॥
पुनि प्रभु पंचवटी कृत बासा । भंजेउ सकलमुनिनकर त्रासा ॥
पुनि लक्ष्मण उपदेश अनूपा । शूर्पणखाजिमिकीन्हकुरूपा ॥
खरदूषण बध बहुरि बखाना । जिमिसबमर्म दशाननजाना ॥
दशकन्धर मारीच बतकही । जेहिबिधिभई सकलतेइँकही ॥
पुनि माया सीता कर हरणा । श्रीरघुबीर बिरहकछु बरणा ॥
पुनिप्रभुगृद्धक्रियाजिमिकीन्हीं । बधकबंधशबरिहिंगतिदीन्हीं ॥
बहुरि बिरह बरणत रघुबीरा । जेहिबिधि गयउसरोबरतीरा ॥

दो॰ प्रभु नारद संबाद कहि मारुत मिलनप्रसंग ।
पुनि सुग्रीव मिताई बालि प्राणकर भंग ॥
कपिहि तिलककरि प्रभु कृत शैलप्रवर्षणबास ।
बरणत बर्षा शरद ऋतु राम रोष कपित्रास ॥

जेहिबिधि कपिपतिकीशपठाये । सीताखोजसकलदिशिधाये ॥
बिवर प्रवेश कीन्ह जेहि भांती । कपिनबहोरि मिलासम्पाती ॥
सुनि सब कथा समीर कुमारा । लांघत भयउपयोधिअपारा ॥
लंका कपिप्रवेश जिमिकीन्हा । पुनिसीतहिंधीरजजिमिदीन्हा ॥
बन उजारि रावणहिं प्रबोधी । पुरदहिलांघेउ बहुरिपयोधी ॥
आये कपि सब जहँ रघुराई । बैदेही की कुशल सुनाई ॥
सेन समेत यथा रघुबीरा । उतरेजाइ बारिनिधि तीरा ॥
मिलाबिभीषण जेहिबिधिआई । सागर निग्रह कथा सुनाई ॥

दो॰ सेतुबांधि कपिसेन जिमि उतरे सागर पार ।

गयौ बसीठी बीरबर जेहि बिधि बालिकुमार ॥
निशिचर कीशलड़ाई बरणेसि बिबिध प्रकार ।
कुम्भकर्ण घननाद कर बल पौरुष संहार ॥
निशिचरनिकरमरणबिधिनाना । रघुपतिरावण समरबखाना ॥
रावण बध मन्दोदरि शोका । राज्य बिभीषण देव अशोका ॥
सीता रघुपति मिलन बहोरी । सुरन्हकीन्हअस्तुतिकरजोरी ॥
पुनि पुष्पकचढ़ि सीयसमेता । अवध चले प्रभुकृपानिकेता ॥
जेहिबिधि रामनगर नियराये । बायस बिशदचरितसबगाये ॥
कहेसि बहोरि राम अभिषेका । पुर बर्णन नृप नीतिअनेका ॥
कथा समस्त भुशुण्डि बखानी । जो मैं तुमसन कही भवानी ॥
सुनि शुभरामकथा खगनाहा । बिगतमोह मन परमउछाहा ॥
सो० भयउमोर सन्देह सुनेउँ सकलरघुपति चरित ।
भयउ रामपद नेह तवप्रसाद बायस तिलक ॥
मोहिंभयउ अतिमोह प्रभुबंधनरणमहँ निरखि ।
चिदानन्द सन्दोह राम बिकल कारण कवन ॥
देखिचरितअति नरअनुहारी । भयउ हृदयमम संशयभारी ॥
सोइभ्रम अबमैं हितकरि माना । कीन्ह अनुग्रह कृपानिधाना ॥
जो अति आतप व्याकुलहोई । तरु छाया सुख जानै सोई ॥
जो नहिंहोतमोह अतिमोही । मिलितेउँतातकवनिबिधितोही ॥
सुनितेउँ किमिहरिकथासुहाई । अतिबिचित्रबहुबिधितुमगाई ॥
निगमागम पुराण मत एहा । कहहिं सिद्धमुनिनहिंसन्देहा ॥
सन्त बिशुद्ध मिलहिंपुनितेही । चितवहिं रामकृपा करिजेही ॥
राम कृपा तव दरशन भयऊ । तव प्रसाद ममसंशयगयऊ ॥
दो० सुनि बिहंगपति बाणी सहितबिनय अनुराग ।
पुलकगात लोचन सजल मनहर्षे अतिभाग ॥
श्रोतासुमतिसुशीलअति कथारसिकहरिदास ।
पाइ उमायह गोप्यमत सज्जनकरहिं प्रकास ॥

बोलेउ कागभुशुण्डि बहोरी । नभगनाथ पर प्रीति न थोरी ॥
सब बिधि नाथ पूज्य तुम मेरे । कृपा पात्र रघुनायक केरे ॥
तुमहिं न संशय मोह न माया । मोपर नाथ कीन्ह तुम दाया ॥
पठै मोह मिसु खगपति तोहीं । रघुपति दीन्ह बड़ाई मोहीं ॥
तुम निज मोह कहा खगसाईं । सोनहिं कछुआश्चर्य गुसाईं ॥
नारद शिव बिरंचि सनकादी । जो मुनिनायक आतम बादी ॥
मोह न अंध कीन्ह केहिकेही । को जग काम न चावन जेही ॥
तृष्णा केहि न कीन्ह बौराहा । केहिके हृदय क्रोधनहिं दाहा ॥

॥ दो० ज्ञानी तापस शूर कवि कोबिद गुण आगार ।
केहिकै लोभ बिडंबना कीन्ह न यहि संसार ॥
श्रीमदवक्र न कीन्हकेहि प्रभुताबधिर न काहि ।
मृगनयनी के नयनशर को असलागु न जाहि ॥

गुण कृत सन्निपात नहिं केही । को न मानमद व्यापेउ जेही ॥
यौवनज्वर केहिनहिंबलकावा । ममताकेहिकर यशननशावा ॥
मत्सर काहि कलंक न लावा । काहि न शोक समीरडोलावा ॥
चिन्तासांपिनि काहि न खाया । कोजगजाहि न व्यापी माया ॥
कीट मनोरथ दारु शरीरा । जेहि न लागघुनको असधीरा ॥
सुत बित नारि ईषणा तीनी । केहिकीमतिइन्हकृतनमलीनी ॥
यह सब मायाकृत परिवारा । प्रबल अमित को बरणै पारा ॥
शिव चतुरानन देखि डराहीं । अपर जीव केहि लेखे माहीं ॥

दो० व्यापि रह्यो संसार महँ माया कटक प्रचण्ड ।
सेनापति कामादि भट दम्भ कपट पाखण्ड ॥
सो दासी रघुबीर की समुझै मिथ्या सोपि ।
छुटै न रामकृपा बिनु नाथ कहौं प्रणरोपि ॥

सो माया सब जगहि नचावा । जासुचरितलखि काहुनपावा ॥
सो प्रभु भ्रूबिलास खगराजा । नाचनटीइव सहित समाजा ॥
व्यापक ब्रह्म अखंड अनन्ता । अखिलअमोघ एकभगवन्ता ॥

सोइ सच्चिदानन्द घनश्यामा । अज विज्ञानरूप गुणधामा ॥
अगुण अदम्भ गिरा गोतीता । समदर्शी अनवद्य अजीता ॥
निर्गुण निराकार निर्मोहा । नित्य निरंजन सुखसंदोहा ॥
प्रकृतिपार प्रभु सब उरबासी । ब्रह्मनिरीह बिरजअबिनासी ॥
इहां मोहकर कारण नाहीं । रबि सम्मुखतमकबहुंनजाहीं ॥

दो० भक्त हेतु भगवान प्रभु राम धरेउ तनु भूप ।
किये चरित पावनपरम प्राकृतिनर अनुरूप ॥
यथा अनेक भेष धरि नृत्य करै नट कोइ ।
जोइ जोइ भाव दिखावै आपुन होइ न सोइ ॥

अस रघुकुल लीला उरगारी । दनुज बिमोहनजनसुखकारी ॥
जे मतिमलिन बिषयबशकामी । प्रभुपरमोहधरहिंइमिस्वामी ॥
नयन दोष जा कहँ जब होई । पीत बरणशशिकहँकहसोई ॥
जब जेहिदिग्भ्रम होइखगेशा । सोकहपश्चिमउगेउ दिनेशा ॥
नौकारूढ़ चलत जग देखा । अचलमोहबशआपुहि लेखा ॥
बालकभ्रमहिंन भ्रमहिंगृहादी । कहहिं परस्पर मिथ्याबादी ॥
हरि बिषयिक असमोहबिहंगा । सपनेहुँनहिं अज्ञान प्रसंगा ॥
माया बश मतिमन्द अभागी । हृदयजमनिकाबहुबिधिलागी ॥
ते शठ हठ बश संशय करहीं । निज अज्ञान राम परधरहीं ॥

दो० काम क्रोध मद लोभ रत गृहासक्त दुखरूप ।
ते किमि जानहिं रघुपतिहि मूढ़परे तम कूप ॥
निर्गुणरूप सुलभ अति सगुण न जानै कोइ ।
सुगमअगमनानाचरित सुनिमुनिमनभ्रमहोइ ॥

सुनु खगपति रघुपति प्रभुताई । कहौं यथामति कथासुहाई ॥
ज्यहिबिधिमोहभयउ प्रभुमोहीं । सो सबचरित सुनावोंतोहीं ॥
राम कृपा भाजन तुम ताता । हरिगुणप्रीतिमोहिंसुखदाता ॥
ताते नहिं कछुतुमहिं दुरावों । परम रहस्य मनोहरगावों ॥
सुनहु रामकर सहज सुभाऊ । जन अभिमान न राखैंकाऊ ॥

संसृति मूल शूलप्रद नाना । सकल शोकदायकअभिमाना ॥
ताते कराहिं कृपानिधि दूरी । सेवक पर ममता अतिभूरी ॥
जिमिशिशुतनव्रणहोहिगुसाईं । मातु चिराव कठिनकीनाईं ॥
दो० यदपि प्रथम दुखपावै रोवै बाल अधीर ।
व्याधि नाश हित जननी गनै न सो शिशुपीर ॥
तिमिरघुपतिनिजदासकरहरहिंमानहितलागि ।
तुलसिदासऐसेप्रभुहिं कसनभजहुभ्रमत्यागि ॥
राम कृपा आपनि जड़ताई । कहौं खगेश सुनहु मनलाई ॥
जब जब राम मनुजतनु धरहीं । भक्त हेतु लीला बहुकरहीं ॥
तब तब अवधपुरी मैं जाऊं । शिशुलीला बिलोकि हर्षाऊं ॥
जन्म महोत्सव देखौं जाई । बर्ष पांच तहँ रहौं लुभाई ॥
इष्टदेव मम बालक रामा । शोभा बपुष कोटिशतकामा ॥
निजप्रभु बदन निहारि निहारी । लोचन सुफल करौंउरगारी ॥
लघुबायस बपु धरि हरि संगा । देखौं बालचरित बहु रंगा ॥
दो० लरिकाईं जहँ जहँ फिरहिं तहँ तहँ संगउड़ाउँ ।
जूठन परै अजिर महँ सो उठाय पुनि खाउँ ॥
एकबार अतिशयप्रबल चरितकीन्हरघुबीर ।
सुमिरतप्रभु लीलासोई पुलकितभयउशरीर ॥
कहै भुशुंडि सुनहु खगनायक । रामचरित सेवकसुखदायक ॥
नृप मन्दिर सुन्दर सब भांती । खचितकनकमणिनानाजाती ॥
बरणि न जाय रुचिर अँगनाई । जहँखेलहिं नित चारोभाई ॥
बाल बिनोद करत रघुराई । बिचरतअजिरजननिसुखदाई ॥
मरकत मृदुल कलेवर श्यामा । अंगअंगप्रतिछबि बहुकामा ॥
नवराजीव अरुण मृदु चरणा । पदपंकजनखशशिद्युतिहरणा ॥
ललितअंगकुलिशादिकधारी । नूपुरचारु मधुर रवकारी ॥
चारपुरट मणि रचित बनाई । कटिकिंकिणिकलमुखरसुहाई ॥
दो० रेखा त्रय सुन्दर उदर नाभि रुचिर गंभीर ।

डर आयत भ्राजत विविध बाल बिभूषणचीर ॥
अरुणपाणिनख करजमनोहर । बाहु बिशाल बिभूषणसोहर ॥
कन्ध बाल केहरि दरग्रीवां । चारुचिबुकआननछबिसीवां ॥
कलबल बचन अधर अरुणारे । दुइदुइ दशन विशदबरबारे ॥
ललित कपोल मनोहरनासा । सकलसुखदशशिकरसमहासा ॥
नील कंज लोचन भवमोचन । भ्राजतभाल तिलकगोरोचन ॥
बिकटभृकुटिसम श्रवण सुहाये । कुंचित कच मेचकछबिछाये ॥
पीत झीन झींगुलि तनसोही । किलकनिचितवनिभावतमोही ॥
रूपराशि नृप अजिर बिहारी । नाचहिं निजप्रतिबिंबनिहारी ॥
मोसनकरहिंबिबिधबिधिक्रीड़ा । बरणत चरितहोत मनब्रीड़ा ॥
किलकतमोहिंधरनजबधावहिं । चलौंभाजितब पूपदेखावहिं ॥

दो० आवत निकट हँसहिंप्रभु भाजत रुदन कराहिं ।
जाउँ समीप गहनपद फिरिफिरि चितैपराहिं ॥
प्राकृत शिशुइव लीला देखि भयउ मोहिंमोह ।
कवन चरित्र करत प्रभु चिदानन्द सन्दोह ॥

इतना मन आनत खगराया । रघुपति प्रेरित ब्यापी माया ॥
सो माया न दुखद मोहिंकाहीं । आन जीवइव संसृति नाहीं ॥
नाथ इहांकछु कारण आना । सुनहु सोसावधान हरियाना ॥
ज्ञान अखण्ड एक सीताबर । माया बश्य जीवसचराचर ॥
जो सबके रह ज्ञान एक रस । ईश्वरजीवहि भेदकहहुकस ॥
माया बश्य जीव अभिमानी । ईश बश्य माया गुण खानी ॥
परवश जीवस्वबश भगवन्ता । जीव अनेक एक श्रीकन्ता ॥
द्विबिधा भेद अपी कृत माया । बिनु हरिजाइ न कोटिउपाया ॥

दो० रामचन्द्रके भजन बिनु जो चह पद निर्बाण ।
ज्ञानवन्त अपिसोपिनर पशुबिनुपुच्छ बिषाण ॥
राकापति षोड़शउगहिं तारागण समुदाय ।
सकलगिरिन दवलाइये रबिबिनुराति न जाय ॥

ऐसे बिनु हरिभजन खगेशा । मिटै न जीवनकेर कलेशा ॥
हरिसेवकहिं न ब्याप अविद्या । प्रभु प्रेरित तेहि ब्यापैविद्या ॥
ताते नाश न होइ दासकर । भेद भक्ति बाढ़ै बिहंगबर ॥
भ्रममय चकित राममोहिंदेखा । बिहँसेसो सुनुचरितबिशेखा ॥
तेहि कौतुक कर मर्म न काहू । जाना अनुज न मातापिताहू ॥
जानु पाणि धाये मोहिं धरना । श्यामलगातअरुणमृदुचरना ॥
तब मैं भागि चलेउँ उरगारी । रामगहन कहँ भुजापसारी ॥
जिमिजिमिदूरिउड़ाउँ अकासा । तिमितिमिभुजदेखौंनिजपासा ॥

दो० ब्रह्मलोक लौं गयउँ मैं चितवत पाछे उड़ात ।
युग अंगुलकर बीचरह रामभुजहि मोहिंतात ॥
सप्तावरण भेदकरि जहँलगि रहिगतिमोरि ।
गयों तहांप्रभु भुज निरखि ब्याकुलभयोंबहोरि ॥

मूंदेउँ नयन त्रषित जब भयऊं । पुनिचितवतकोशलपुरगयऊँ ॥
मोहिं बिलोकि राम मुसकाहीं । बिहँसत तुरतगयउँमुखमाहीं ॥
उदर मांझ सुन अंडजराया । देखेउँ बहु ब्रह्मांड निकाया ॥
अतिबिचित्र तहँ लोकअनेका । रचना अमित एक ते एका ॥
कोटिन चतुरानन गौरीशा । अगणितउडुगणरबिरजनीशा ॥
अगणित लोकपाल यमकाला । अगणितभूधरभूमि बिशाला ॥
सागर सरिता बिपिन अपारा । नानाभांति सृष्टि बिस्तारा ॥
सुरमुनि सिद्ध नागनर किन्नर । चारिप्रकार जीव सचराचर ॥

दो० जो नहिं देखा नहिं सुना जो मनमहँ न समाइ ।
अस अद्भुत तहँ देखेउँ बरणिकवन बिधिजाइ ॥
एक एक ब्रह्मांड महँ रहेउँ बर्ष शत एक ।
यहि बिधिमैं देखत फिरेउँ अण्डकटाह अनेक ॥

लोक लोकप्रति भिन्नबिधाता । भिन्नबिष्णुशिवमनुदिशित्राता ॥
नरगन्धर्ब्ब भूत बैताला । किन्नरनिशिचरपशुखगब्याला ॥
देव दनुज गण नाना जाती । सकल जीवतहँ आनहिंभांती ॥

महिसरिसागरसरगिरि नाना । सब प्रपंचतहँ आनाहिंआना ॥
अंडकोश प्रति प्रतिनिज रूपा । देखेउँ जिनिस अनेकअनूपा ॥
अवधपुरी प्रति भुवन निहारी । सरयू भिन्न भिन्न नरनारी ॥
दशरथ कौशल्यादिक माता । विविधरूपभरतादिकभ्राता ॥
प्रति ब्रह्माण्ड राम अवतारा । देखेउँ बाल बिनोद अपारा ॥
दो० भिन्न भिन्न सब देखेउँ अति बिचित्रहरियान ।
अगणित देखत फिरेउँ मैं राम न देखा आन ॥
सोइ शिशु पन सोइ शोभा सोइकृपालुरघुबीर ।
भुवन भुवन देखत फिरेउँ प्रेरित मोह समीर ॥
भ्रमत मोहिं ब्रह्माण्ड अनेका । बीते मनहुं कल्प शत एका ॥
फिरतफिरतनिजआश्रमआयउँ । तहँपुनिरहिकछुकालगँवायउँ ॥
निजप्रभुजन्मअवधसुनिपायउँ । निर्भर प्रेमहर्षि उठिधायउँ ॥
देखेउँ जन्म महोत्सव जाई । जेहिविधि प्रथमकहामैंगाई ॥
राम उदर देखेउँ जग नाना । देखत बनै न जात बखाना ॥
तहँपुनि देखेउँ राम सुजाना । मायापति कृपालु भगवाना ॥
करौं बिचार बहोरि बहोरी । मोहकलितव्यापितमतिभोरी ॥
उभय घरी महँमैं सब देखा । भयउँभ्रमितमनमोहविशेखा ॥
दो० देखि कृपालु बिकल मोहिं बिहँसे तब रघुबीर ।
बिहँसतही मुख बाहर आयउँ सुन मतिधीर ॥
सोइ लरिकाईं मोहिंसन लगे करन पुनिराम ।
कोटि भांति समुझायौं मन न लहै बिश्राम ॥
देखि चरित यह सो प्रभुताई । समझत देह दशा बिसराई ॥
धरणिपरेउँ मुखआव न बाता । त्राहित्राहि आरतजन त्राता ॥
प्रेमाकुल प्रभु मोहिं बिलोकी । निजमाया प्रभुता तबरोकी ॥
करसरोज प्रभुममशिर धरेऊ । दीनदयालु दुसहदुखहरेऊ ॥
कीन्हराममोहिं बिगतबिमोहा । सेवक सुखद कृपासन्दोहा ॥
प्रभुता प्रथम बिचारि बिचारी । मनमहँ होइहर्ष अतिभारी ॥

भक्त बछलता प्रभुके देखी । उपजा ममउर हर्ष बिशेखी ॥
सजल नयनपुलकित करजोरी । कीन्हींबहुबिधि बिनयबहोरी ॥

दो० सुनि सप्रेम मम बाणी देखि दीन निज दास ।
बचन सुखद गम्भीर मृदु बोले रमानिवास ॥
काकभुशुण्डी मांगुबर अतिप्रसन्न मोहिंजानि ।
अणिमादिकसिधिअपरनिधिमोक्षसकलसुखखानि ॥

ज्ञान विवेक बिरति बिज्ञाना । मुनिदुर्लभगतिजो जगजाना ॥
आजु देउँ सब संशय नाहीं । मांगुजोतोहिं भावमनमाहीं ॥
सुनिप्रभुबचनबहुतअनुरागेउँ । मनअनुमानकरन तबलागेउँ ॥
प्रभुकह देन सकल सुख सही । भक्ति आपनी देन न कही ॥
भक्तिहीन गुणसुख सब ऐसे । लवणबिना बहुव्यंजन जैसे ॥
भक्तिहीन सुख कवने काजा । असबिचारिबोलेउँ खगराजा ॥
जो प्रभु होइ प्रसन्न बर देहू । मोपर करहु कृपा अरु नेहू ॥
मन भावत बर मांगौं स्वामी । तुम उदार उर अन्तरयामी ॥

दो० अविरल भक्ति बिशुद्धतव श्रुति पुराण जोगाव ।
जेहि खोजत योगीशमुनि प्रभुप्रताप कोउपाव ॥
भक्त कल्पतरु प्रणतहित कृपासिन्धु सुखधाम ।
सोइ निजभक्ति मोहिंप्रभु देहु दयाकरिराम ॥

एवमस्तु कहि रघुकुलनायक । बोले बचन परमसुखदायक ॥
सुनु बायस तैं परम सयाना । काहेनमांगसि असबरदाना ॥
सब सुखखानिभक्ति तैं मांगी ।नहिंकोउतोहिंसमानबड़भागी॥
जो मुनि कोटियत्न नहिंलहहीं । जेजपयोग अनलतन दहहीं ॥
रीझेउँ तोरि देखि चतुराई । मांगेउभक्ति मोहिं अतिभाई ॥
सुनु बिहंग प्रसाद अब मोरे । सबशुभगुण बसिहैं उरतोरे ॥
भक्तिज्ञान बिज्ञान बिरागा । जो सबचरितरहस्य बिभागा ॥
जानब तैं सबहीकर भेदा । ममप्रसादनहिंसाधन खेदा ॥

दो० मायासम्भव सकलभ्रम अबनाहिं ब्यापिहितोहिं ।

जानेसि ब्रह्म अनादि अज अगुण गुणाकरमोहिं ॥
मोहिंभक्त प्रिय सन्तत अस बिचारि सुनुकाग ।
कायबचन मन ममचरण करहु अचल अनुराग ॥
अबसुनु परमविमल ममबानी । सत्यसुगमनिगमादिबखानी ॥
निज सिद्धान्त सुनावों तोहीं । सुनुमनधरिसबतजिभजुमोहीं ॥
मम माया संभव संसारा । जीव चराचर बिबिधप्रकारा ॥
सबममप्रिय सबमम उपजाये । सबतेअधिकमनुजमोहिंभाये ॥
तेहिमहँद्विजद्विजमहँश्रुतिधारी । तिनमहँनिगमधर्मअनुसारी ॥
तिनमहँ प्रियबिरक्तमुनिज्ञानी । ज्ञानिहुँते अतिप्रियबिज्ञानी ॥
तेहितेपुनिमोहिंप्रियनिजदासा । जेहिगतिमोरिनदूसरिआसा ॥
पुनिपुनि सत्यकहौं तोहिंपाहीं । मोहिंसेवकसमप्रियकोउनाहीं ॥
भक्तिहीन बिरंचि किन होई । सब जीवन महँ अप्रियसोई ॥
भक्तिवन्त अति नीचौ प्राणी । मोहिंपरमप्रियसुनु ममबाणी ॥
दो० श्रुति सुशील सेवकसुमति कहुप्रियकाहि न लाग ।
श्रुतिपुराण कह नीति अस सावधानसुनुकाग ॥
एक पिताके बिपुल कुमारा । होइँपृथकगुण शीलअचारा ॥
कोउपण्डित कोउतापसज्ञाता । कोउधनवन्त शूरकोउदाता ॥
कोउ सर्बज्ञ धर्मरत कोई । सबपरपितहिं प्रीतिसमहोई ॥
कोउ पितुभक्तबचन मनकर्मा । सपनेहुं जान न दूसर धर्म्मा ॥
सो प्रियसुत पितुप्राणसमाना । यद्यपि सो सबभांतिअयाना ॥
इहि बिधि जीव चराचर जेते । त्रिजग देवनर असुरसमेते ॥
अखिल बिश्वयहममउपजाया । सबपर मोरिबराबरि दाया ॥
तिनमहँ जोपरिहरि सबमाया । भजहिंमोहिंमनबचअरुकाया ॥
दो० पुरुष नपुंसक नारि वा जीव चराचर कोइ ।
सर्बभाव भजुकपट तजि मोहिं परमप्रियसोइ ॥
सो० सत्यकहौं खगतोहिं शुचि सेवक मम प्राणप्रिय ।
अस बिचारिभजुमोहिं परिहरिआशभरोससब ॥

कबहुँकाल नहिं ब्यापै तोहीं । सुमिरेसुभजेसु निरंतरमोहीं ॥
प्रभुबचनामृतसुनि न अघाऊं । तनपुलकित मनअतिहर्षाऊं ॥
सो सुख जानैं मनअरु काना । नहिंरसना प्रतिजाइबखाना ॥
प्रभु शोभा सुख जानत नयना । कहिकिमिसकैंतिन्हैंनहिंवयना ॥
बहुबिधिरास मोहिं सिख देई । लगेकरन शिशुकौतुक तेई ॥
सजल नयनकछुमुखकरिरूखा । चितै मातुतन लागी भूखा ॥
देखि मातु आतुर उठि धाई । कहि मृदुबचन लियेउरलाई ॥
गोदराखि कराव पयपाना । रघुपति चरित ललितकरिगाना ॥

सो० जेहिसुखलागिपुरारि अशिववेषकृत शिवसुखद ।
अवधपुरी नरनारि तेहि सुखमहँ संतत मगन ॥
सोई सुख लवलेश जिनबारक सपनेहुँ लहेउ ।
ते नहिंगनहिंखगेश ब्रह्मसुखहिं सज्जनसुमति ॥

मैं पुनि रह्यों अवध कछुकाला । देख्यों बाल बिनोदरसाला ॥
राम प्रसाद भक्ति बर पायउँ । प्रभुपदबन्दिनिजाश्रमआयउँ ॥
तबते मोहिं न ब्यापी माया । जबते रघुनायक अपनाया ॥
यह सब गुप्त चरित मैं गावा । हरिमायाजिमिमोहिंनचावा ॥
निज अनुभव अबकहौंखगेशा । बिनुहरिभजननजाहिंकलेशा ॥
राम कृपा बिनु सुनु खगराई । जानि न जाइ रामप्रभुताई ॥
जाने बिनु न होइ परतीती । बिनुपरतीति होइनहिंप्रीती ॥
प्रीति बिना नहिं भक्ति दृढ़ाई । जिमिखगेशजलकीचिकनाई ॥

सो० बिनुगुरु होइ कि ज्ञान ज्ञानकि होइ बिरागबिनु ।
गावहिं बेदपुरान सुखकिलहहि बिनुहरिभगति ॥
कोउ बिश्राम कि पाव तात सहज सन्तोष बिनु ।
चलै कि जल बिनुनाव कोटियतन पचिपचिमरै ॥

बिनु सन्तोष न काम नशाहीं । कामअछतसुख सपनेहुँनाहीं ॥
रामभजन बिनु मिटहिंनकामा । थलबिहीनतरुकबहुँकिजामा ॥
बिना ज्ञानकी समता आवै । कोउअवकाशकिनभबिनुपावै ॥

श्रद्धा बिना धर्म नाहिं होई। बिनु महिगन्ध कि पावैकोई॥
बिनुतप तेज कि करु बिस्तारा। जलबिनुरस कि होइसंसारा॥
शीलकि मिलुबिनुबुधसेवकाई। जिमिबिनुतेज न रूपगुसाईं॥
निज सुखबिनुमनहोइ कि थीरा। परसकिहोइ बिहीनसमीरा॥
कवनिउँसिद्धिकिबिनुबिश्वासा। बिनुहरिभजननभवभयनासा॥

दो० बिनुबिश्वास भक्तिनहिं तेहिबिनु द्रवहिंनराम।
रामकृपा बिनु सपनेहुं मन कि लहै बिश्राम॥

सो० असबिचारिमतिधीर तजिकुतर्कसंशयसकल।
भजहु राम रघुधीर करुणाकर सुन्दर सुखद॥

निजमति सरिस नाथ मैं गाई। प्रभु प्रताप महिमाखगराई॥
कह्यों न कछु करियुक्तिबिशेखी। यहसबमैं निजनयननदेखी॥
महिमा नाम रूप गुणगाथा। सकलअमितअनन्तरघुनाथा॥
निज२मतिमुनिहरिगुणगावहिं। निगमशेषशिवपार नपावहिं॥
तुम्हैं आदिखग मशकप्रयन्ता। नभउड़ाहिंनहिंपावहिंअन्ता॥
तिमिरघुपति महिमाअवगाहा। तात कबहुँकोउपावकिथाहा॥
रामकाम शतकोटि सुभगतन। दुर्गा कोटिअमितअरिमर्द्दन॥
शक्रकोटिशतसरिस बिलासा। नभशतकोटिअमितअवकासा॥

दो० मरुतकोटिशतविपुलबल रविशतकोटिप्रकास।
शशिशतकोटिसुशीतल शमनसकलभवत्रास।
कालकोटिशत सरिस अति दुस्तरदुर्गदुरन्त।
धूमकेतु शत कोटिसम दुराधर्ष भगवन्त॥

प्रभु अगाध शतकोटि पताला। शमनकोटिशतसरिसकराला॥
तीरथअमित कोटि शतपावन। नामअखिलअघपुंजनशावन॥
हिमगिरिकोटि अचलरघुबीरा। सिन्धुकोटिशतसरिसगँभीरा॥
कामधेनु शतकोटि समाना। सकल कामदायक भगवाना॥
शारदकोटि अमित चतुराई। बिधिशतकोटिअमितनिपुणाई॥
बिष्णु कोटि शत पालन कर्त्ता। रुद्र कोटि शत सम संहर्त्ता॥

धनद कोटि शत सम धनवाना । माया कोटि प्रपंच निधाना ॥
धरा धरण शतकोटि अहीशा ।निरवधिनिरुपमप्रभुजगदीशा॥
छं० निरवधिनिरूपमरामसमनाहिं आन निगमागमकहैं ।
जिमिकोटिशतखद्योतरबिकहँकहतअतिलघुतालहैं॥
इहिभांतिनिज २मतिबिलासमुनीशहरिहिबखानहीं ।
प्रभुभावगाहकअतिकृपालु सप्रेमसुनिसुखपावहीं ॥
दो० रामअमित गुणसागर थाह कि पावै कोइ ।
सन्तनसन जसकछुसुनेउँ तुमहिंसुनायउँ सोइ ॥
सो० भावबश्यभगवान सुखनिधान करुणा भवन ।
तजिममतामदमान भजियराम सीता रमण ॥
सुनि भुशुण्डिके बचन सुहाये । हर्षित खगपति पंखफुलाये ॥
नयन नीर मन अति हर्षाना । श्रीरघुपति प्रतापउरआना ॥
पाछिलमोह समुझिपछिताना । ब्रह्मअनादि मनुजकरिजाना॥
पुनि पुनि काग चरणशिरनावा । जानिरामसम प्रेम बढ़ावा ॥
गुरु बिनु भव निधितरै न कोई । जो बिरंचि शंकरसम होई ॥
संशय सर्प ग्रसेउ मोहिं ताता । दुखदल हरिकुतर्कबहुब्राता ॥
तवस्वरूप गारुड़ि रघुनायक । मोहिंजियायहुजनसुखदायक॥
तव प्रसाद मम मोह नशाना । राम रहस्य अनूपम जाना ॥
दो० ताहि प्रशंसेउ बिबिधबिधि शीशनाइकरजोरि ।
बचन सप्रेम बिनीत मृदु बोलेउगरुड़ बहोरि ॥
प्रभु अपने अबिबेक ते पूंछौं स्वामी तोहिं ।
कृपासिंधु सादर कहहु जानिदास निजमोहिं ॥
तुम सर्वज्ञ तज्ञ तम पारा । सुमतिसुशीलसरलआचारा॥
ज्ञान बिरति बिज्ञान निबासा । रघुनायकके प्रियतुमदासा ॥
कारण कवन देह यह पाई । तातसकलमोहिं कहहुबुझाई॥
राम चरित सर सुन्दर स्वामी । पायहु कहां कहहु नभगामी ॥
नाथ सुना मैं अस शिवपाहीं । महाप्रलयमहँ नाशतबनाहीं ॥

मृषा बचन नहिं शंकर कहहीं । सो मेरेमन संशय अहहीं ॥
अग जग जीव नाग नर देवा । नाथसकलजग कालकलेवा ॥
अंड कटाह अमित लयकारी । काल महा दुरतिक्रम मारी ॥
सो० तुमहिं न व्यापैकाल अतिकराल कारण कवन ।
सो मोहिं कहहुकृपाल ज्ञानप्रभाव कियोगबल ॥
दो० प्रभुतव आश्रम आयउँ मोर मोह भ्रमभाग ।
कारणकवनसोनाथअब कहहु सहितअनुराग ॥
गरुड़ गिरासुनि हर्षेउ कागा । बोलेउबचनसहित अनुरागा ॥
धन्य धन्य तव मति उरगारी । प्रश्नतुम्हारिमोहिंअतिप्यारी ॥
सुनि तव प्रश्न सप्रेम सुहाई । बहुतजन्मकीसुधिमोहिंआई ॥
सब निज कथा कहौं मैं गाई । तात सुनहु सादर मनलाई ॥
जप तप मखशमदमव्रतदाना । बिरति विवेकयोग बिज्ञाना ॥
सबकर फल रघुपति पदप्रेमा । तेइ बिनुकोइ न पावैक्षेमा ॥
इहि तन राम भक्ति मैं पाई । ताते मोहिं ममता अधिकाई ॥
सो० पन्नगारिअसिनीति श्रुति सम्मत सज्जनकहहिं ।
अतिनीचहुसनप्रीति करियजानिनिजपरमहित ॥
पाट कीट ते होइ ताते पाटम्बर रुचिर ।
कृमि पालै सब कोइ परमअपावन प्राणसम ॥
स्वारथ सर्ब्ब जीव कहँ येहा । मनक्रमबचन रामपद नेहा ॥
सोइ पावन सोइ सुभगशरीरा । जो तनु पाइ भजियरघुबीरा ॥
राम बिमुखलहि बिधिसमदेही । कविकोबिद न प्रशंसहिंतेही ॥
राम भक्ति यहि तनमहँ जामी । ताते मोहिं परमप्रियस्वामी ॥
तजौं न तन निजइच्छामरणा । तनुबिनुवेदभजननहिंबरणा ॥
प्रथममोह मोहिं बहुतबिगोवा । रामबिमुखसुखकबहुँनसोवा ॥
नाना जन्म कर्म्म पुनि नाना । किये योग जपतपमखदाना ॥
कवन योनि जन्मेहुँ जहँनाहीं । मैंखगेश भ्रमिभ्रमिजगमाहीं ॥
देखेहुँ सबकरि कर्म्म गुसाईं । सुखी न भयउँअबहिंकीनाईं ॥

सुधि मोहिं नाथ जन्म बहुकेरी । शिवप्रसादमति मोहनघेरी ॥

दो० प्रथमजन्मके चरित सब कहौं सुनहु बिहगेश ।
सुनि प्रभु पद रति ऊपजै जाते मिटै कलेश ॥
पूरब कल्पते एक प्रभु कलियुग मलकर मूल ।
नरअरु नारि अधर्मरत सकलनिगमप्रतिकूल ॥

तेहि कलियुग कोशलपुर जाई । जन्मत भयउँ शूद्रतनु पाई ॥
शिवसेवक मनक्रम अरु बानी । आनदेवनिन्दक अभिमानी ॥
धन मदमत्त परम बाचाला । उग्रबुद्धि उरदम्भ बिशाला ॥
यदपि रहेउँ रघुपति रजधानी । तदपिनहीं महिमाकछुजानी ॥
अब जाना मैं अवध प्रभावा । निगमागम पुराणअसगावा ॥
कवनेहुं जन्म अवध बसजोई । रामपरायण सो फुर होई ॥
अवधप्रभाव जान तब प्राणी । जबउरबसहिं रामधनुपाणी ॥
सो कलिकाल कठिन उरगारी । पापपरायण सब नर नारी ॥

दो० कलिमल ग्रसेउ धर्म सब गुप्त भये सदग्रन्थ ।
दम्भिननिजमतिकलिपकर प्रकटकीन्हबहुपन्थ ॥
भये लोग सब मोहबश लोभग्रसे शुभकर्म ।
सुनुहरियान ज्ञाननिधि कहौं कछुक कलिधर्म ॥

बर्ण धर्म नहिं आश्रम चारी । श्रुतिबिरोध रत सबनरनारी ॥
द्विजश्रुतिबंचकभूपप्रजासन । कोउनहिंमानुनिगमअनुशासन ॥
मारग सोइजाकहँ जो भावा । पण्डितसोइ जोगालबजावा ॥
मिथ्या रम्भ दम्भ रत जोई । ताकहँ सन्त कहैं सब कोई ॥
सोइ सयान जो परधन हारी । जोकरुदम्भ सोबड़आचारी ॥
जो कछु झूंठ मसखरी जाना । कलियुगसोइगुणवन्तबखाना ॥
निराचार जो श्रुतिपथ त्यागी । कलियुगसोइ ज्ञानी बैरागी ॥
जाके नख अरु जटा बिशाला । सोइतापसप्रसिद्धकलिकाला ॥

दो० अशुभ वेष भूषण धरैं भक्ष्याभक्ष्य जे खाहिं ।
ते योगी ते सिद्धनर पूज्य ते कलियुग माहिं ॥

सो० जे अपकारी चार तिनकर गौरव मान्यता ।
मन क्रम बचन लवार तेवक्ता कलिकालमहँ ॥
नारि बिवश नरसकल गुसाईं । नाचहिं नट मर्कट की नाईं ॥
शूद्र द्विजहिं उपदेशहिं ज्ञाना । मेलि जनेऊ लेहिं कुदाना ॥
सब नर काम लोभरत क्रोधी । देव बिप्र गुरु सन्त बिरोधी ॥
गुणमन्दिर सुन्दरपतित्यागी । भजहिं नारिपरपुरुषअभागी ॥
सौभागिनी बिभूषण हीना । बिधवन कहँ शृंगार नवीना ॥
गुरुशिष अंध बधिरकरलेखा । एकनसुनी एक नाहिं देखा ॥
हरै शिष्यधन शोक न हरई । सो गुरु घोरनरक महँ परई ॥
मात पिता बालकन बुलावहिं । उदरभरै सोइकर्म सिखावहिं ॥
दो० ब्रह्मज्ञान बिनु नारिनर कहहिं न दूसरिबात ।
कौड़ी कारण मोह बश करहिं बिप्र गुरुघात ॥
बादशूद्रकह द्विजनसन हम तुमते कछु घाटि ।
जानैब्रह्म सो बिप्रवर आंखि दिखावहिं डाटि ॥
परतिय लम्पट कपट सयाने । मोह द्रोह ममता लपटाने ॥
तेइ अभेद बादी ज्ञानी नर । देखा मैं चरित्र कलियुगकर ॥
आपुगये अरुआनहिं घालहिं । जेकोउश्रुतिमारगप्रतिपालहिं ॥
कल्पकल्प भरि इकइक नरका । परहिंजेदूषहिंश्रुतिकरितरका ॥
जे बर्णाधम तेलि कुम्हारा । श्वपचकिरातकोल्हकलवारा ॥
नारिमुई गृह सम्पति नासी । मूड़ मुड़ाय भये संन्यासी ॥
ते बिप्रन सन पांव पुजावहिं । उभयलोकनिजहाथनशावहिं ॥
बिप्र निरक्षर लोलुप कामी । निराचार शठ बृषलीस्वामी ॥
शूद्र करहिं जप तप ब्रत दाना । बैठि बरासन कहहिं पुराना ॥
सब नर कल्पितकरहिं अचारा । जाइ न बरणिअनीतिअपारा ॥
दो० भये बर्णसंकर कलिहि भिन्न सेतु सब लोग ।
करहिं पाप दुखपावहीं भयरुज शोक बियोग ॥
श्रुतिसम्मत हरिभक्ति पथ संयुत ज्ञान बिबेक ।

ते न चलहिं नर मोह बस कल्पहिं पंथ अनेक ॥

छं० बहुधामसँवारहिंयोगियती । विषयाहरिलीन्हगईबिरती ॥
तपसीधनवन्त दरिद्रगृही । कलिकौतुकतातनजातकही॥
कुलवंतिनिकारहिंनारिसती। गृहआनहिंचेरिहिंचोरगती॥
सुतमानहिंमातपितातबलौं । अबलाननदीखनहींजबलौं॥
ससुरारिपियारिलगीजबतें । रिपुरूप कुटुम्बभये तबतें ॥
नृपपाप परायण धर्मनहीं ।करुदण्डबिदण्डप्रजानितहीं॥
धनवंतकुलीनमलीनअपी । द्विजचिह्नजनेउ उघारतपी ॥
नहिंमानपुराणहिंवेदहिंजो । हरिसेवकसंतसही कलिसो ॥
कबिबृन्दउदारधुनीनसुनी । गुणदूषकव्रातनकोपिगुनी ॥
कलिबारहिबार दुकालपरैं । बिनअन्नदुखी बहुलोगमरैं ॥

दो० सुनु खगेश कलिकपटहठ दम्भद्वेषपाखण्ड ।
काम क्रोध लोभादि मद व्यापिरहे ब्रह्मण्ड ॥
तामस धर्म करहिं नर जप तप मखव्रतदान ।
देव न बरषै धरणि पर बये न जामहिंधान ॥

छं० अबलाकचभूषणभूरिछुधा। धनहीन दुखीममताबहुधा ॥
सुख चाहहिंमूढ़नधर्मरता । मतिथोरिकठोरिनकोमलता॥
नरपीड़ितरोगन भोगकहीं । अभिमानविरोधअकारणहीं॥
लघुजीवन संवतपंचदशा । कल्पांतननाश गुमानअशा ॥
कलिकालबेहालकियेमनुजा।नहिंमानतकोउअनुजातनुजा ॥
नहिंतोषबिचारनशीतलता। सबजातिकुजातिभयेमँगता॥
इरषापरुषा छललोलुपता । भरिपूरिरहीसमता बिगता ॥
सबलोगवियोगबिशोकहये। वर्णाश्रम धर्म अचारगये ॥
दमदानदयानहिंजानपनी । जड़ता परिपंचकतातघनी ॥

दो० सुनुव्यालारि करालकलि मलअवगुण आगार ।
गुणहुबहुत कलिकालकर बिनुप्रयास निस्तार ॥
कृतयुग त्रेता द्वापरहु पूजामख अरुयोग ।

जो गति होइ सो कलिहरि नामते पावहिंलोग ॥
कृतयुग सब योगी बिज्ञानी । करिहरिध्यान तरहिंभवप्रानी ॥
त्रेता बिबिध यज्ञ नर करहीं । प्रभुहि समर्पि कर्मभवतरहीं ॥
द्वापरकरि रघुपति पदपूजा । नरभवतरहिं उपाय न दूजा ॥
कलिकेवल हरिगुण गणगाहा । गावत नर पावहिं भवथाहा ॥
कलियुग योग यज्ञ नहिंज्ञाना । एक अधार रामगुण गाना ॥
सब भरोसतजि जो भजरामहिं । प्रेम समेत गावगुण ग्रामहिं ॥
सो भवतरु कछु संशयनाहीं । नाम प्रताप प्रकट कलिमाहीं ॥
कलिकर एक पुनीत प्रतापा । मानस पुण्य होइ नहिंपापा ॥

दो० कलियुग समयुगआननहिं जोनरकरु बिश्वास ।
गाइरामगुणगणबिमल भवतरुबिनहिंप्रयास ॥
प्रकट चारिपद धर्म के कलि महँ एकप्रधान ।
येन केन बिधि दीन्हें दान करै कल्यान ॥

कृतयुग धर्म होहिं सब केरे । हृदय राम माया के प्रेरे ॥
शुद्ध सत्व समता बिज्ञाना । कृत प्रभावप्रसन्न मनजाना ॥
सत्व बहुत कछु रजरति कर्मा । सबबिधि शुभ त्रेताकर धर्मा ॥
बहुरज सत्वस्वल्प कछुतामस । द्वापर धर्म हर्ष भयमानस ॥
तामस बहुत रजोगुण थोरा । कलिप्रभाव बिरोध चहुँओरा ॥
बुध युग धर्म जानि मनमाहीं । तजि अधर्म रत धर्म कराहीं ॥
कालकर्म नहिं ब्यापहिं ताही । रघुपतिचरणप्रीतिअतिजाही ॥
नटकृत कपट बिकट खगराया । नटसेवकहिं न ब्यापै माया ॥

दो० हरिमायाकृत दोषगुण बिनुहरिभजन न जाहिं ।
भजियराम सबकामतजि असबिचारिमनमाहिं ॥
तेहि कलिकालबर्षबहु बसेउँ अवध बिहगेश ।
परेउ दुकाल बिपत्तिबस तबमैं गयउँ बिदेश ॥

गयउँ उजैन सुनहु उरगारी । दीन मलीन दरिद्र दुखारी ॥
गये काल कछु सम्पति पाई । तहँ पुनि करौं शम्भु सेवकाई ॥

बिप्र एक बैदिक शिव पूजा । करै सदा तेहि काज न दूजा ॥
परमसाधु परमारथ बिन्दक । शंभुउपासकनहिंहरिनिन्दक ॥
सेवों मैं तेहि कपट समेता । द्विजदयालुअतिनीतिनिकेता ॥
बाहिर नम्र देखि मोहिं साईं । बिप्र पढ़ाव पुत्र की नाईं ॥
शम्भुमंत्रमोहिं द्विजबरदीन्हा ।शुभउपदेशबिबिधबिधिकीन्हा ॥
जपौंमंत्र शिव मंदिर जाई । हृदयदम्भअहमितिअधिकाई ॥

दो० मैं खलमल संकुलमति नीच जातिबश मोह ।
द्विजहरिजन देखत जरौं करौं बिष्णुकरद्रोह ॥

सो० गुरुनितमोहिंप्रबोध दुखित देखि आचरणमम ।
मोहिं उपजै अतिक्रोध दम्भिहिनीतिकिभावई ॥

एकबार गुरु लीन्ह बुलाई । मोहिं नीति बहुभांति सिखाई ॥
शिव सेवाकर फल सुतसोई । अबिरल भक्ति रामपदहोई ॥
रामहिं भजहिं तातशिवधाता । नरपामरकर केतिक बाता ॥
जासुचरणशिवअज अनुरागी । तासुद्रोहसुखचहसि अभागी ॥
हरकहँ हरिसेवक गुरु कहेऊ । सुनिखगनाथहृदयममदहेऊ ॥
अधम जाति मैं विद्या पाये । भयउँयथा अहिदूध पियाये ॥
मानी कुटिल कुभाग्य कुजाती । गुरुसन द्रोह करौं दिनराती ॥
अतिदयालुगुरु स्वल्पनक्रोधा । पुनिपुनिमोहिंसिखावसुबोधा ॥
ज्यहिते नीच बड़ाई पावा । सोप्रथमहिंहठि ताहिनशावा ॥
धूम अनल सम्भव सुनभाई । तेहि बुझाव घनपदवी पाई ॥
रज मगुपरी निरादर रहई । सबकरपद प्रहार नितसहई ॥
मरुत उड़ाइ प्रथम तेहिभरई । पुनिनृप नयनकिरीटन्हपरई ॥
सुनखगपतिअससमुझिप्रसंगा। बुधनकरहिं अधमनकरसंगा ॥
कबिकोबिद गावहिं असनीती । खलसनकलहनभलसनप्रीती ॥
उदासीन बरु रहिय गुसाईं । खलपरिहरिय श्वानकीनाईं ॥
मैं खल हृदय कपट कुटिलाई । गुरु हित कहैं न मोहिं सोहाई ॥

दो० एकबार हरमन्दिर जपतरहेउँ शिवनाम ।

गुरुआये अभिमानतें उठिनहिं कीन्ह प्रणाम ॥
सोदयालुनहिंकेहेउकछु उर न रोष लवलेश ।
अतिअघगुरु अपमानता सहिनहिंसकेमहेश ॥
मन्दिर मांझ भई नभ बानी । रेहतभाग्यअधमअभिमानी ॥
यद्यपि तवगुरु स्वल्प न क्रोधा । अतिकृपालुचितसम्यकबोधा ॥
तदपि शाप देहौं शठ तोहीं । नीति बिरोधसुहात न मोहीं ॥
जो नहिं करौं दण्डशठ तोरा । भ्रष्ट होइ श्रुतिमारगमोरा ॥
जे शठ गुरुसन ईर्षा करहीं । रौरव नरक कल्पशत परहीं ॥
त्रिजगयोनिपुनिधरहिं शरीरा । अयुतजन्मभरि पावहिंपीरा ॥
बैठि रहेसि अजगरइवपापी । होसिसर्पखलमलमतिव्यापी ॥
महा बिटप कोटर महँ जाई । रहुरे अधम अधोगतिपाई ॥
दो० हाहाकार कीन्हगुरु सुनि दारुण शिवशाप ।
कंपित मोहिंबिलोकिअति उरउपजापरिताप ॥
करिदण्डवत सप्रेमगुरु शिवसम्मुखकरजोरि ।
बिनयकरतगद्गदगिरा समुझिघोरगतिमोरि ॥
छं० नमामीशमीशाननिर्बाणरूपं बिभुंव्यापकंब्रह्मवेदस्वरूपं ।
अजंनिर्गुणंनिर्बिकल्पंनिरीहंचिदाकाशमाकाशवासंभजेहं ॥
निराकारमोंकारमूलंतुरीयं गिराज्ञानगोतीतमीशंगिरीशं ।
करालंमहाकालकालं कृपालं गुणागारसंसारपारंनतोहं ॥
तुषाराद्रिसंकाश गौरंगँभीरं मनोभूतकोटिप्रभासीशरीरं ।
स्फुरन्मौलिकल्लोलिनीचारुगंगालसद्भालबालेंदुकंठेभुजंगा ॥
चलत्कुंडलं शुभ्रनेत्रंविशालं प्रसन्नाननंनीलकंठंदयालं ।
मृगाधीशचर्माम्बरंमुण्डमालंप्रियंशंकरंसर्वनाथंभजामि ॥
प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भंपरेशं अखंडंअजंभानुकोटिप्रकाशं ।
त्रयीशूलनिर्मूलनंशूलपाणिं भजेहंभवानीपतिंभावगम्यं ॥
कलातीतकल्याणकल्पांतकारीसदासज्जनानन्ददातापुरारी ।
चिदानन्दसंदोहमोहापहारी प्रसीदप्रसीदप्रभोमन्मथारी ॥

नयावत्उमानाथपादारविन्दं भजंतीहलोकेपरेवानराणाम् ।
नतावत्सुखंशांतिसंतापनाशं प्रसीदप्रभोसर्वभूताधिवासं ॥
नजानामियोगंजपंनैवपूजां नतोहंसदा सर्वदाशम्भुतुभ्यं ।
जराजन्मदुःखौघतातप्यमानंप्रभोपाहिशापान्नमामीशशंभो ॥
श्लो० रुद्राष्टक मिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतुष्टये ।
येपठंतिनराभक्त्या तेषांशम्भुः प्रसीदति ॥
दो० सुनि बिनती सर्वज्ञशिव देखि बिप्र अनुरागु ।
पुनि मन्दिर नभबाणिभइ हेद्विजवरबरमांगु ॥
जो प्रसन्न प्रभु मोहिंपर नाथ दीन पर नेहु ।
निजपद भक्ति देहु प्रभु पुनि दूसर बर देहु ॥
तव माया बश जीव जड़ सन्तत फिरैभुलान ।
तेहिपरक्रोधनकरियप्रभु कृपासिन्धु भगवान ॥
शंकर दीनदयालु अब यहि पर होहु कृपाल ।
शापानुग्रह होइ जेहि नाथ थोरही काल ॥
इहिकर होइ परम कल्याना । सोइ करहु अबकृपानिधाना ॥
बिप्र गिरा सुनि परहितसानी । एवमस्तु इतिभइ नभबानी ॥
यदपि कीन्ह यह दारुणपापा । मैं पुनि दीन क्रोधकरिशापा ॥
तदपि तुम्हारि साधुता देखी । करिहौं इहिपर कृपाबिशेखी ॥
क्षमाशील जे पर उपकारी । ते द्विजप्रियमोहिंयथाखरारी ॥
मोर शाप द्विज मृषा न होई । जन्म सहस्र पावयह सोई ॥
जन्मतमरत दुसह दुख होई । इहिकहँस्वल्पनव्यापिहिसोई ॥
कौनिहुँजन्ममिटिहिनाहिं ज्ञाना । सुनहु शूद्र ममबचनप्रमाना ॥
रघुपति पुरी जन्म तवभयऊ । पुनि तैं ममसेवा मनदयऊ ॥
पुरी प्रभाव अनुग्रह मोरे । रामभक्ति उपजहि उर तोरे ॥
सुन मन वचन सत्य अबभाई । हरितोषकव्रत द्विजसेवकाई ॥
अबजनिकरसि विप्रअपमाना । जानसि ब्रह्म अनन्तसमाना ॥
इन्द्रकुलिशमम शूल बिशाला । कालदण्ड हरिचक्र कराला ॥

जो इनकर मारा नहिं मरई। विप्ररोष पावक सो जरई ॥
अस बिबेक राखेहु मनमाहीं। तुमकहँ जग दुर्लभ कछुनाहीं ॥
औरो एक आशिषा मोरी। अब्याहत गति होइहितोरी ॥

दो० सुनिशिव बचन सप्रेम गुरु एवमस्तु इतिभाखि।
मोहिं प्रबोधि गयउगृह शंभुचरण उरराखि ॥
प्रेरितकाल बिंध्यगिरि जाय भयउँ मैं ब्याल।
बिनु प्रयास सो तनु तजेउँ नाथ थोरहीकाल ॥
जो तनुधरौं सो तजौंपुनि अनायास हरियान।
जिमि नूतन पट पहिरिकै नरपरिहरै पुरान ॥
शिवराखेउश्रुति नीतिबिधि मैं नहिंपाव कलेश।
इहिबिधिधरेउँबिबिधतनु ज्ञान न गयउ खगेश ॥

त्रिजगयोनि जो जो तनुधरेऊं। तहँ तहँ रामभक्ति अनुसरेऊं ॥
एकशूल मोहिं बिसरु न काऊ। गुरुकर कोमल शीलसुभाऊ ॥
चरमदेह द्विजकर मैं पाई। सुर दुर्लभ पुराणश्रुति गाई ॥
खेलौं तहां बालकन मीला। करौं सकल रघुनायकलीला ॥
प्रौढ़ भये मोहिं पिता पढ़ावा। समुझौंसुनौं गुनौं नहिंभावा ॥
मनते सकल बासना भागी। केवल रामचरण लयलागी ॥
कहु खगेश असकवनअभागी। खरी सेव सुरधेनुहिं त्यागी ॥
प्रेम मगन मोहिं कछु न सुहाई। हारेउ पिता पढ़ाय पढ़ाई ॥
भयउ कालबश जब पितुमाता। मैं बनगयउँ भजनजनत्राता ॥
जहँ जहँबिपिन मुनीश्वरपावौं। आश्रम जाइजाइ शिरनावौं ॥
पूंछौं तिनहिं रामगुण गाहा। कहौं सुनौं हर्षित खगनाहा ॥
सुनत फिरौं हरिगुण अनुवादा। अव्याहतगति शंभु प्रसादा ॥
छूटी त्रिबिध ईषणा गाढ़ी। एक लालसा उरअति बाढ़ी ॥
रामचरण पंकज जब देखौं। तबनिजजन्म सुफलकरिलेखौं ॥
जेहि पूंछौं सो मुनि असकहई। ईश्वर सर्बभूत मय अहई ॥
निर्गुण मत नहिं मोहिं सुहाई। सगुणब्रह्म रतिउरअधिकाई ॥

दो॰ गुरुके बचन सुरतिकरि रामचरण मनलाग।
रघुपति यशगावतफिरौं क्षणक्षणनव अनुराग॥
मेरुशिखर बट छाया मुनि लोमश आसीन।
देखि चरण शिरनायउँ बचन कहेउँ अतिदीन।
सुनि ममबचन बिनीत मृदु मुनिकृपालुखगराज।
मोहिंसादरबूझतभयउ द्विजआयउकेहिकाज॥
तब मैं कहेउँ कृपानिधि तुमसर्बज्ञ सुजान।
सगुणब्रह्म अवराधना मोहिं कहहु भगवान॥

तब मुनीश रघुपति गुणगाथा। कहेउ कछुकसादरखगनाथा॥
ब्रह्मज्ञान रत मुनि बिज्ञानी। मोहिं परम अधिकारीजानी॥
लगे करन ब्रह्म उपदेशा। अज अद्वैत अगुणहृदयेशा॥
अकल अनीह अनाम अरूपा। अनुभवगम्य अखंड अनूपा॥
मन गोतीत अमल अबिनाशी। निर्बिकार निरवधिसुखराशी॥
सो तैं ताहि तोहिं नहिं भेदा। बारिबीचि इव गावहिं बेदा॥
बिबिधभांतिमोहिंमुनिसमुझावा। निर्गुणमतममहृदयनआवा॥
पुनि मैं कहेउँ नाइ पद शीशा। सगुण उपासनकहहुमुनीशा॥
राम भक्ति जल ममम‍न मीना। किमिबिलगाइमुनीशप्रबीना॥
सोइ उपदेश कहहु करिदाया। निज नयनन देखौं रघुराया॥
भरिलोचन बिलोकि अवधेशा। तब सुनिहौं निर्गुण उपदेशा॥
पुनि मुनिकह हरिकथाअनूपा। खंडिसगुणमतअगुणनिरूपा॥
तब मैं निर्गुण मत करि दूरी। सगुण निरूपौं करिहठभूरी॥
उत्तर प्रत्युत्तर मैं दीन्हा। मुनिउरभयउक्रोधकरचीन्हा॥
सुनु प्रभु बहुत अवज्ञा किये। उपजक्रोध ज्ञानिहुँ के हिये॥
अति संघर्षण करै जो कोई। अनल प्रगट चन्दनते होई॥

दो॰ बारहिंबार सकोपिमुनि करहिं निरूपण ज्ञान।
मैं अपनेमन बैठितब करौं बिबिध अनुमान॥
क्रोध कि द्वैतक बुद्धि बिनु द्वैत कि बिनुअज्ञान।

माया बश परिछिन्न जड़ जीव कि ईश समान ॥
कबहुँक दुख सबकर हितताके । तेहिकिदरिद्रपरसमणिजाके ॥
कामी पुनि कि रहै निकलंका । परद्रोही कि होइ निःशंका ॥
बंशकिरह द्विज अनहितकीन्हे । कर्मकिहोहिं स्वरूपहिचीन्हे ॥
काहुसुमति कि खलसँग जामी । शुभगतिपावकिपरतियगामी ॥
राज कि रहैनीति बिनु जाने । अघ कि रहैहरिचरितबखाने ॥
भव कि परहिं परमारथबिंदक । सुखीकिहोहिं कबहुँपरनिंदक ॥
पावन यश कि पुण्यबिनु होई । बिनुअघ अयश कि पावैकोई ॥
लाभ कि कछुहरिभक्ति समाना । जेहिगावहिं श्रुतिसंत पुराना ॥
हानि किजग इहिसम कछुभाई । भजिय न रामहिं नरतनुपाई ॥
अघकिबिना तामस कछुआना । धर्मकिदया सरिस हरियाना ॥
इहिबिधिअमितयुक्तिमनगुनेऊं । मुनिउपदेश न सादरसुनेऊं ॥
पुनि पुनि सगुण पक्ष मैं रोपा । तब मुनि बोलेबचन सकोपा ॥
मूढ़ परम सिखदेउँ न मानसि । उत्तर प्रत्युत्तर बहु आनसि ॥
सत्य बचन बिश्वास न करही । बायस इव सबहीसन डरही ॥
शठ सपक्ष तव हृदयबिशाला । सपदि होहु पक्षी चण्डाला ॥
लीन्ह शाप मैं शीश चढ़ाई । नहिं कछुभय न दीनताआई ॥

दो॰ तुरत भयउँ मैं कागतब पुनिमुनिपदशिरनाइ ।
सुमिरिराम रघुबंशमणि हर्षित चलेउँ उड़ाइ ॥
उमा जो रामचरणरत बिगत काममदक्रोध ।
निजप्रभुमयदेखहिंजगत कासनकरहिंबिरोध ॥

सुनुखगेशनहिं कछुऋषिदूषण । उरप्रेरक रघुबंश बिभूषण ॥
कृपासिंधु मुनिमति करिभोरी । लीन्ही प्रेम परीक्षा मोरी ॥
मनक्रमबचन मोहिं जनजाना । मुनिमति पुनि फेरीभगवाना ॥
ऋषि मम सहज शीलतादेखी । रामचरण बिश्वास बिशेखी ॥
अतिबिस्मय पुनिपुनिपछिताई । सादरमुनिमोहिं लीन्हबुलाई ॥
ममपरितोषबिबिधबिधिकीन्हा । हर्षित राममंत्रमोहिं दीन्हा ॥

बालक रूप रामकर ध्याना । कहेउमोहिं मुनिकृपानिधाना ॥
सुन्दर सुखद मोहिं अतिभावा । जो प्रथमहिं मैं तुमहिंसुनावा ॥
मुनिमोहिंकछुक कालतहँराखा । राम चरित मानससबभाखा ॥
सादर मोहिं यह कथा सुनाई । पुनि बोलेमुनि गिरा सुहाई ॥
राम चरित सर गुप्त सुहावा । शम्भु प्रसाद तात मैं पावा ॥
तोहिं निजभक्त रामकरजानी । ताते मैं सब कहेउँ बखानी ॥
राम भक्ति जिनके उर नाहीं । कबहुं न तातकहियतेहिपाहीं ॥
मुनिमोहिंबिबिधभांतिसमुझावा । मैंसप्रेम मुनिपद शिरनावा ॥
निजकर कमलपरसिममशीशा । हर्षितआशिषदीन्ह मुनीशा ॥
रामभक्ति अबिरल उर तोरे । बसिहिसदा प्रसादअबमोरे ॥

दो० सदाराम प्रिय होवतुम शुभगुण भवनअमान ।
काम रूप इच्छा मरण ज्ञान बिराग निधान ॥
जेहिआश्रमतुमबसबपुनि सुमिरतश्रीभगवन्त ।
ब्यापिहि तहँ न अविद्या योजन एक पर्यन्त ॥

काल कर्म गुणदोष सुभाऊ । कछुदुखतुमहिंनब्यापिहिकाऊ ॥
रामरहस्य ललित बिधिनाना । गुप्तप्रकट इतिहास पुराना ॥
बिनुश्रम तुमसब जानब सोऊ । नितनव प्रेम रामपद होऊ ॥
जो इच्छा करिहौ मनमाहीं । हरिप्रसाद कछु दुर्लभनाहीं ॥
सुनिमुनिआशिषसुनुमतिधीरा । ब्रह्मगिराभइ गगन गँभीरा ॥
एवमस्तु तव बच मुनिज्ञानी । यह ममभक्त कर्म मनबानी ॥
सुनि नभ गिरा हर्षमनभयऊ । प्रेम मगन मनसंशयगयऊ ॥
करि बिनती मुनि आयसु पाई । पदसरोज पुनिपुनिशिरनाई ॥
हर्ष सहित इहिआश्रमआयउँ । प्रभुप्रसाद दुर्लभबर पायउँ ॥
इहांबसत मोहिं सुन खगईशा । बीते कल्प सात अरु बीशा ॥
करौंसदा रघुपति गुणगाना । सादरसुनहिं बिहंग सुजाना ॥
जब जब अवधपुरी रघुबीरा । धरहिंभक्तहित मनुजशरीरा ॥
तबतब जाइ अवधपुर रहऊं । शिशुलीलाबिलोकिसुखलहऊं ॥

पुनि उर राखि राम शिशुरूपा । इहिआश्रम आवौंखगभूपा ॥
कथा सकल मैं तुमहिं सुनाई । कागदेह जेहि कारण पाई ॥
कहेउँ तात सब प्रश्न तुम्हारी । राम भक्तिमहिमा अतिभारी ॥

दो० ताते यहतन मोहिं प्रिय भयउ रामपदनेह ।
निजप्रभुदरशन पायऊँ गयउ सकल संदेह ॥
भक्तिपक्ष हठ करि रहेउँ दीन्ह महाऋषिशाप ।
मुनिदुर्लभ वर पायऊँ देखहु भजन प्रताप ॥

जे अस भक्ति जानि परिहरहीं । केवल ज्ञान हेतु श्रम करहीं ॥
तेजड़ कामधेनु गृह त्यागी । खोजतआकफिरहिंपयलागी ॥
सुनु खगेश हरिभक्ति बिहाई । जो सुखचाहहिं आन उपाई ॥
ते शठ महासिन्धु बिनुतरणी । पैरिपार चाहत जड़ करणी ॥
सुनि भुशुण्डिके बचन भवानी । बोलेउ गरुड़ हर्षि मृदुबानी ॥
तव प्रसाद प्रभु मम उरमाहीं । संशय शोकमोह भ्रम नाहीं ॥
सुनेउँ पुनीत राम गुणग्रामा । तुम्हरीकृपा लहेउँ विश्रामा ॥
एक बात प्रभु पूंछौं तोहीं । कहहुबुभाइ कृपानिधि मोहीं ॥
कहहिं सन्त मुनि वेद पुराना । नहिं कछुदुर्लभ ज्ञान समाना ॥
सो सुनि तुमसनकहेउँगोसाईं । नहिंआदरेउ भक्तिकी नाईं ॥
ज्ञानहिं भक्तिहि अन्तर केता । सकलकहहुप्रभुकृपानिकेता ॥
सुनि उरगारि वचनसुखमाना । सादरबोलेउ काग सुजाना ॥
ज्ञानहिं भक्तिहि नहिं कछुभेदा । उभयहरहिंभवसम्भवखेदा ॥
नाथ मुनीशकहहिं कछुअन्तर । सावधानहोइसुनहुबिहगवर ॥
ज्ञान बिराग योग बिज्ञाना । ये सब पुरुषसुनहु हरियाना ॥
पुरुषप्रताप प्रबल सबभांती । अबलाअबलसहजजड़जाती ॥

दो० पुरुष त्यागिसक नारिकहँ जो बिरक्त मतिधीर ।
नहिंतो कामी बिषय बश बिमुखजोपदरघुबीर ॥

सो० सोमुनिज्ञाननिधान मृगनसनी बिधुमुखनिरखि ।
बिकलहोहिं हरियान नारिबिरचि मायाप्रकट ॥

यहां न पक्षपात कछुराखौं। बेद पुराण सन्त मतभाखौं॥
मोह न नारि नारि के रूपा। पन्नगारि यह नीतिअनूपा॥
माया भक्ति सुनहु प्रभु दोऊ। नारि बर्ग जानै सब कोऊ॥
पुनि रघुबीरहिं भक्ति पियारी। माया खलु नर्त्तकी बिचारी॥
भक्तिहि सानुकूल रघुराया। तातेतेहि डरपति अतिमाया॥
रामभक्ति निरुपम निरुपाधी। बसै जासुउर सदा अबाधी॥
तेहि बिलोकि माया सकुचाई। करिनसकैकछुनिज प्रभुताई॥
अस बिचारि जो मुनिबिज्ञानी। यांचहिंभक्तिसकलगुणखानी॥

दो० यह रहस्य रघुनाथकर बेगि न जानै कोइ।
जाने ते रघुपतिकृपा सपनेहुँ मोह न होइ॥
अवरौ ज्ञान भक्ति कर भेद सुनहु परवीण।
जो सुनिहोय रामपद प्रीति सदा अवछीण॥

सुनहु तात यह अकथ कहानी।समुझतबनै न जात बखानी॥
ईश्वर अंश जीव अबिनाशी। जोतनुअमलसहजसुखराशी॥
सो माया बश भयउ गुसाईं। बँध्यो कीर मरकट की नाईं॥
जड़ चेतनहिं ग्रन्थि परिगई। यदपि मृषा छूटत कठिनई॥
तब ते जीव भयो संसारी। ग्रन्थि न छूटनहोइ सुखारी॥
श्रुति पुराण बहु कहें उपाई। छूटनअधिकअधिकअरुझाई॥
जीव हृदय तम मोह बिशेखी। ग्रन्थि छुटै किमिपरै न देखी॥
अस संयोग ईश जब करई। तबहुँकदाचितसो निरुअरई॥
सात्विक श्रद्धा धेनु सुहाई। जो हरिकृपा हृदय बसआई॥
जप तप संयम नियमअपारा। जो श्रुतिकहै सुधर्म अचारा॥
ये तृण हरित चरै जब गाई। भाव बत्स शिशुपाइ पन्हाई॥
नोइनि वृत्ति पात्र बिश्वासा। निर्मलमनअहीर निज दासा॥
परम धर्म्म मय पयदुहि माई। अवटैअनल अकाम बनाई॥
तोष मरुत तब क्षमा जुड़ावै। धृति सम जावन देइजमावै॥
मुदिता मथै बिचार मथानी। दम अधार रजु सत्यसुबानी॥

तब मथि काढ़ि लेइ नवनीता। बिमल बिरागसुभगसुपुनीता॥
दो० योगअग्निकर प्रकट तब कर्म शुभाशुभ लाइ।
बुद्धि सिरावै ज्ञानघृत ममतामल जरिजाइ॥
तब विज्ञाननिरूपिणी बुद्धि बिशद घृतपाइ।
चित्त दियाभरिधरै दृढ़ समता दिअटि बनाइ॥
तीनि अवस्था तीनिगुण तेहि कपास ते काढ़ि।
तूल तुरीय सवांरिपुनि बाती करै सुगाढ़ि॥
सो० यहि बिधि लेसै दीप तेजराशि विज्ञानमय।
जातहिंतासुसमीप जरहिं मदादिकशलभसब॥
सोहमस्मि इति वृत्तिअखंडा। दीपशिखा सोइ परमप्रचंडा॥
आतम अनुभवसुखसुप्रकाशा। तब भवमूल भेदभ्रम नाशा॥
प्रबल अबिद्याकर परिवारा। मोह आदि तब मिटै अपारा॥
तब सोइ बुद्धि पाइ उजियारा। उरगृह बैठि ग्रंथि निरवारा॥
छोरन ग्रन्थि पाव जो सोई। तब यहजीव कृतारथ होई॥
छोरतग्रन्थि जानि खगराया। बिघ्न अनेक करै तब माया॥
ऋद्धि सिद्धि प्रेरै बहु भाई। बुद्धिहि लोभ दिखावै जाई॥
कलबल छलकरि जाइसमीपा। अंचल बात बुझावै दीपा॥
होइ बुद्धि जो परम सयानी। तिनतन चितवनअनहितजानी॥
जो तेहि बिघ्न बुद्धि नहिंबाधी। तो बहोरिसुर करहिं उपाधी॥
इन्द्रिय द्वार झरोखा नाना। तहँ तहँ सुर बैठे करिथाना॥
आवत देखहिं विषय बयारी। ते हठि देहिं कपाट उघारी॥
जब सो प्रभंजन उर गृहजाई। तबहिं दीप बिज्ञान बुझाई॥
ग्रन्थि न छूटि मिटासो प्रकाशा। बुद्धिबिकल भइबिषयबताशा॥
इन्द्रिय सुरन न ज्ञान सुहाई। विषय भोगपर प्रीति सदाई॥
बिषय समीर बुद्धिकृत भोरी। तेहिबिधि दीपको बारबहोरी॥
दो० तब फिरिजीव बिबिध बिधि पावै संसृतिक्लेश।
हरिमाया अतिदुस्तर तरि न जाइ बिहगेश॥

कहत कठिन समुझतकठिन साधन कठिन विवेक ।
होइ घुणाक्षर न्याय जो पुनि प्रत्यूह अनेक ॥
ज्ञान कि पन्थ कृपाणके धारा । परत खगेश न लागै बारा ॥
जो निर्विघ्न पन्थ निर्वहई । सो कैवल्य परमपद लहई ॥
अति दुर्लभ कैवल्य परमपद । सन्तपुराणनिगम आगमबद ॥
रामभक्ति सो मुक्ति गुसांई । अनइच्छित आवै बरिआई ॥
जिमिथलबिनुजलरहिनसकाई । कोटिभांति कोउ करै उपाई ॥
तथा मोक्षसुख सुन खगराई । रहि न सकै हरिभक्ति बिहाई ॥
अस बिचारि हरिभक्त सयाने । मुक्ति निरादर भक्ति लुभाने ॥
भक्ति करत बिनुयतन प्रयासा । संसृतिमूल अबिद्या नासा ॥
भोजन करिय तृप्ति हितलागी । जिमिसो अन्नपचेउजठरागी ॥
असहरिभक्ति सुगमसुखदाई । कोअसमूढ़ न जाहि सुहाई ॥
दो० सेवक सेव्यप्रभावबिनु भव न तरिय उरगारि ।
भजहुराम पदपंकज असासिद्धांत बिचारि ॥
जो चेतनकहँ जड़ करै जड़हिकरै चैतन्य ।
अस समर्थ रघुनाथ कहँ भजहिं जीव ते धन्य ॥
कहेउँ ज्ञान सिद्धांत बुझाई । सुनहु भक्तिमणिकी प्रभुताई ॥
रामभक्ति चिन्तामणि सुन्दर । बसै गरुड़ जाके उरअन्तर ॥
परम प्रकाश रूप दिन राती । नहिंकछुचहियदियाघृतबाती ॥
मोह दरिद्र निकट नहिंआवहि । लोभबातनहिंताहि बुझावहि ॥
प्रबल अविद्यातम मिटिजाई । हारतसकल शलभ समुदाई ॥
खलकामादि निकट नहिंजाहीं । बसैभक्तिमणि जेहिउरमाहीं ॥
गरल सुधासम अरिहितहोई । तेहिमणि बिनुसुखपाव न कोई ॥
व्यापहिं मानस रोग न भारी । जेहिके बश सबजीव दुखारी ॥
रामभक्ति मणि उरबस जाके । दुख लवलेश न सपनेहुँताके ॥
चतुर शिरोमणि ते जगमाहीं । जेमणिलागि सुयतन कराहीं ॥
सो मणियदपि प्रकटजग अहई । रामकृपाबिनु कोउ न लहई ॥

सुगम उपाइ पाइबे केरे । नर हत भाग्य देत भट भेरे ॥
पावन पर्बत बेद पुराना । राम कथा रुचिराकर नाना ॥
मर्मी सज्जन सुमति कुदारी । ज्ञान बिराग नयन उरगारी ॥
भावसहित जो खोदै प्रानी । पावभक्तिमणिसबसुखखानी ॥
मोरेमन प्रभु अस बिश्वासा । रामते अधिक रामकरदासा ॥
राम सिन्धु घन सज्जन धीरा । चन्दनतरुहरि सन्तसमीरा ॥
सबकर फल हरिभक्ति सुहाई । सो बिनु सन्त न काहू पाई ॥
असबिचारि जो करु सतसंगा । रामभक्तितेहिसुलभ बिहंगा ॥

दो० ब्रह्म पयोनिधि मन्दर ज्ञान सन्तसुर आहि ।
कथा सुधामथि काढ़हीं भक्ति मधुरता जाहि ॥
बिरतिचर्म असिज्ञानमद लोभमोह रिपुमारि ।
जयपाई सोइ हरिभगति देखखगेश बिचारि ॥

पुनि सप्रेम बोलेउ खगराऊ । जो कृपालमोहिं ऊपर भाऊ ॥
नाथ मोहिं निज सेवक जानी । अष्ट प्रश्न ममकहहुबखानी ॥
प्रथमहिं कहहु नाथ मतिधीरा । सबते दुर्लभ कवन शरीरा ॥
बड़दुख कवन कवनसुखभारी । सो संक्षेपहि कहहु बिचारी ॥
सन्त असन्त मर्मतुम जानहु । तिनकरसहजसुभावबखानहु ॥
कवनपुण्यश्रुतिबिदितबिशाला । कहहुकवनअघपरमकराला ॥
मानस रोग कहहु सब गाई । तुम सर्वज्ञ कृपा अधिकाई ॥
तात सुनहुसादर अति प्रीती । मैं संक्षेप कहौं यह नीती ॥
नर समान नहिं कवनिहुँ देही । जीव चराचर याचत जेही ॥
नरक स्वर्ग अपवर्ग नसेनी । ज्ञान बिराग भक्तिसुखदेनी ॥
सोतनुधरिहरिभजहिं नजे नर । होयँ बिषयरत मन्दमन्दतर ॥
कंचन कांच बदलि शठ लेहीं । करते डारिपरस मणि देहीं ॥
नहिं दरिद्र समदुखजगमाहीं । सन्तमिलनसमसुखकछुनाहीं ॥
पर उपकार बचन मन काया । सन्त सहजसुभाव खगराया ॥
संतसहहिंदुख परहित लागी । परदुख हेतु असन्तअभागी ॥

सुरजातरुसमसन्तकृपाला। परहितसहनितबिपति बिशाला॥
सन इवखल परबंधन करहीं। खालकढ़ाइ बिपतिसहिमरहीं॥
खलबिनु स्वारथ परउपकारी। अहि मूषकइव सुनुउरगारी॥
परसम्पदाबिनाशिनशाहीं। जिमिकृषिहतिहिमउपलबिलाहीं॥
दुष्ट उदय जग आरतिहेतू। यथा प्रसिद्ध अधमग्रह केतू॥
सन्त उदय सन्तत सुखकारी। विश्वसुखदजिमिइन्दुतमारी॥
परम धर्म श्रुतिविदितअहिंसा। परनिंदा सम अघ न गरिसा॥
हरिगुरु निन्दक दादुर होई। जन्म सहस्र पावतन सोई॥
द्विजनिंदकबहुनरक भोगकरि। जग जन्मैं बायस शरीरधरि॥
सुर श्रुतिनिंदक जो अभिमानी। रौरव नरक परहिं ते प्रानी॥
होहिं उलूक सन्त निन्दारत। मोहनिशा प्रियज्ञानभानुगत॥
सबकी निन्दा जे जड़ करहीं। ते चमगादुर होइ अवतरहीं॥
सुनहु तात अब मानस रोगा। जेहिते दुखपावहिं सब लोगा॥
मोह सकल व्याधिन करमूला। तेहिते पुनि उपजहिंबहुशूला॥
काम बात कफ लोभ अपारा। क्रोधपित्त नित छाती जारा॥
प्रीति करहिं जो तीनों भाई। उपजै सन्निपात दुखदाई॥
बिषय मनोरथ दुर्गम नाना। ते सब शूल नामको जाना॥
ममता दद्रु कण्डु इरषाई। कुष्ठ दुष्ट तामस कुटिलाई॥
अहंकार जो दुखद डहरुआ। दम्भकपटमद माननहरुआ॥
तृष्णा उदरवृद्धि अतिभारी। त्रिबिध ईषणातरुणतिजारी॥
युगबिधिज्वर मत्सर अविवेका। कहँलगिकहौं कुरोगअनेका॥

दो॰ एक व्याधिते नर मरहिं ये असाध्य बहुव्याधि।
सन्ततपीड़हिंजीवकहँ सो किमिलहहिंसमाधि॥
नेम धर्म आचार तप ज्ञान यज्ञ जपदान।
भेषज पुनिकोटिन करहिं रुजनजाहिंहरियान॥

यहिविधिसकल जीवजगरोगी। शोक हर्ष भयप्रीति बियोगी॥
मानस रोग कछुक मैं गाये। हैं सबकेलखि बिरलनिपाये॥

जाने ते छीजहिं कछु पापी । नाश न पावहिंजनपरितापी ॥
विषय कुपन्थ पाइ अंकुरे । मुनिन्ह हृदयका नर बापुरे ॥
रामकृपा नाशहिं सब रोगा । जो इहिभाँति बने संयोगा ॥
सद्गुरु बैद्य बचन बिश्वासा । संयम यह न विषयकीआसा ॥
रघुपति भक्ति सजीवन मूरी । अनूपान श्रद्धामति रूरी ॥
इहि बिधि भले कुरोगनशाहीं । नाहिंतोयतनकोटिनाहिं जाहीं ॥
जानिय तब वहबिरुजगोसांई । जब उरबल बिरागअधिकाई ॥
सुमति छुधाबाढ़ै नित नई । बिषयआश दुर्बलता गई ॥
बिमलज्ञानजल पाइ अन्हाई । तब रहुरामभक्ति उर छाई ॥
शिवअजशुकसनकादिकनारद । जोमुनिब्रह्मबिचार बिशारद ॥
सबकर मत खगनायक येहा । करियराम पद पंकज नेहा ॥
श्रुति पुराण सद्ग्रंथ कहाहीं । रघुपतिभक्ति बिनासुखनाहीं ॥
कमठ पीठ जामहिं बरु बारा । बंध्यासुतबरु काहुहि मारा ॥
फूलहिं नभबरु बहुबिधि फूला । जीवनलहसुखप्रभुप्रातिकूला ॥
तृषा जाइ बरु मृग जल पाना । बरुजामहिंशशशीशविषाना ॥
अन्धकार बरु रबिहि नशावै । राम बिमुखसुख जीवनपावै ॥
हिमते प्रकट अनल बरुहोई । बिमुख रामसुखपाव न कोई ॥

दो० बारिमथे बरुहोइ घृत सिकता ते बरु तेल ।
बिनुहरिभजननभवतरिय यह सिद्धांतअपेल ॥
मशकहिकरहिंबिरंचिप्रभु अजहिंमशकतेहीन ।
अस बिचारि तजिसंशय रामहिं भजहिंप्रवीन ॥

कहेउँ नाथ हरि चरित अनूपा । व्याससमासस्वमतिअनुरूपा ॥
श्रुति सिद्धांत इहै उरगारी । राम भजियसबकाम बिसारी ॥
प्रभु रघुपति तजिसेइयकाही । मोसे शठ परममता जाही ॥
तुम बिज्ञान रूप नहिं मोहा । कीन्हनाथ मोपर अतिछोहा ॥
पूछेउ रामकथा अति पावनि । शुकसनकादिशम्भुमनभावनि ॥
सत संगति दुर्लभ संसारा । निमिष दण्ड भरि एकोबारा

देखु गरुड़ निजहृदय बिचारी । मैं रघुबीर चरण अधिकारी ॥
शकुनाधमसबभांतिअपावन । प्रभुमोहिंकीन्हबिदितजगपावन॥

दो० आजु धन्य मैं धन्यअति यद्यपि सब बिधिहीन ।
निजजन जानि राम मोहिं संग समागमदीन ॥
नाथ यथामति भाषेउँ राखेउँ कछु नहिं गोय ।
चरितसिंधु रघुनाथकर थाह कि पावै कोय ॥

सुमिरिरामके गुण गणनाना । पुनि पुनिहर्षभुशुण्डिसुजाना॥
महिमा निगम नेति कहि गाई । अतुलितबल प्रतापप्रभुताई ॥
शिवअज पूज्य चरण रघुराई । मोपरकृपा परम मृदुलाई ॥
अस सुभाव कहुँ सुनौं न देखौं । केहि खगेशरघुपतिसमलेखौं॥
साधक सिद्ध बिमुक्त उदासी । कबिकोबिद बिरक्त संन्यासी ॥
योगीसुर अरु तापस ज्ञानी । धर्म निरत पण्डित बिज्ञानी ॥
तरहिं न बिनु सेये ममस्वामी । रामनमामि नमामि नमामी ॥
शरणगये मोसेउ अघराशी । होहिंशुद्ध नमामि अविनाशी ॥

दो० जासु नाम भव भेषज हरण घोर त्रय शूल ।
सोकृपाल मोहिं तोहिंपर सदारहहिं अनुकूल ॥
सुनिभुशुण्डि के बचनबर देखि रामपद नेह ।
बोले गरुड़ सप्रेम अति बिगत मोह सन्देह ॥

मैं कृत कृत्य भयउँ तव बानी । सुनिरघुबीर भक्ति रससानी ॥
राम चरण नूतन रति भई । माया जनित बिपति सबगई ॥
मोह जलधिबोहित तुमभयऊ । मोकहँनाथ बिबिधसुखदयऊ ॥
मो सन होइ न प्रत्युपकारा । बन्दौं तव पद बारहिं बारा ॥
पूरण काम राम अनुरागी । तुमसमतात न कोउबड़भागी ॥
संत बिटप सरिता गिरिधरणी । परहित हेतु इन्हनकी करणी ॥
सन्त हृदय नवनीत समाना । कहा कबिनपै कहिनहिंजाना ॥
निज परिताप द्रवै नवनीता । परदुखद्रवहि सुसन्त पुनीता ॥
जीवन जन्म सुफलमम भयऊ । तव प्रसाद सबसंशयगयऊ ॥

जानेहु मोहिं सदा निजकिंकर । पुनिपुनिउमाकहैंसुबिहंगवर ॥
दो० तासुचरण शिरनाइकरि प्रेमसहित मतिधीर ।
गरुड़ गयो बैकुंठतब हृदय राखि रघुबीर ॥
गिरिजासंत समागम सम न लाभ कछु आन ।
बिनु हरिकृपा होइ नहिं गावहिं बेद पुरान ॥
कहेउँ परम पुनीत इतिहासा । सुनतश्रवणछूटहिंभवपासा ॥
प्रणत कल्पतरु करुणा पुंजा । उपजै प्रीति राम पद कंजा ॥
मनवच कर्म जनित अघजाई । सुनैजो कथा श्रवणमनलाई ॥
तीर्थ अटन साधन समुदाई । योग बिराग ज्ञान निपुणाई ॥
नाना कर्म धर्म ब्रत दाना । संयमनियम यज्ञ जप नाना ॥
भूत दया द्विज गुरु सेवकाई । विद्या विनय विवेक बड़ाई ॥
जहँ लगि साधन वेद बखानी । सबकरफलहरिभक्ति भवानी ॥
सोइ रघुनाथ भक्ति श्रुतिगाई । राम कृपा काहू यक पाई ॥
दो० मुनिदुर्लभहरिभक्तिनर पावहिं बिनहिं प्रयास ।
जे यह कथा निरंतर सुनहिं मानि बिश्वास ॥
सोइ सर्वज्ञ गुणी सब ज्ञाता । सोइमहिमंडन पण्डितदाता ॥
धर्म परायण सोइ कुल त्राता । रामचरण जाकर मन राता ॥
नीतिनिपुण सोइपरम सयाना । श्रुति सिद्धांत नीकतेइजाना ॥
सोइकबिकोबिद सोइरणधीरा । जोछल छाँड़ि भजै रघुबीरा ॥
धन्य नारि पतिब्रत अनुसरी । धन्य सो देश जहांसुरसरी ॥
धन्य सो भूप नीति जो करई । धन्यसोद्विज निजधर्मनटरई ॥
सो धनधन्यप्रथम गति जाकी । धन्यपुण्यरतमति सोइपाकी ॥
धन्य घरी सोइ जब सतसंगा । धन्यजन्मद्विजभक्ति अभंगा ॥
दो० सो कुल धन्य उमा सुन जगत पूज्य सुपुनीत ।
श्रीरघुबीर परायण जेहि नर उपज बिनीत ॥
मति अनुरूप कथा मैं भाखी । यद्यपिप्रथम गुप्त करि राखी ॥
तब मनप्रीति देखि अधिकाई । तब मैं रघुपति कथा सुनाई ॥

यहनाहिंकहियशठहिंहठशीलहिं। जोमनलाइनसुनहरिलीलहिं ॥
कहियनलोभिहिंक्रोधिहिंकामिहिं। जोनभजैसचराचरस्वामिहिं ॥
द्विजद्रोहिहिं न सुनाइय कबहूँ । सुरपतिसरिसहोइ नृपजबहूँ ॥
राम कथा केते अधिकारी । जिनकेसतसंगतिअतिप्यारी॥
गुरु पद प्रीति नीतिरत जोई । द्विज सेवक अधिकारी सोई ॥
ताकहँ यह बिशेष सुखदाई । जाहि परम प्रिय श्रीरघुराई ॥
॥ दो० राम चरण रति जो चहै अथवा पद निर्बान ।
॥ भाव सहित सो यह कथा करै श्रवण पुटपान ॥
राम कथा गिरिजा मैं बरणी । कलिमलशमनमनोमलहरणी॥
संसृत रोग सजीवनि मूरी । राम कथा गावहिं श्रुतिभूरी ॥
इहि महँरुचिर सप्त सोपाना । रघुपति भक्ति केर पथनाना ॥
अति हरिकृपा जाहिपर होई । पांवदेइ यहि मारग सोई ॥
मन कामना सिद्ध नर पावै । जो यहकथा कपट तजिगावै ॥
कहहिंसुनहिं अनुमोदन करहीं । ते गोपदइव भवनिधि तरहीं ॥
सुनि सबकथा हृदय अतिभाई । गिरिजा बोली गिरा सुहाई ॥
नाथ कृपा मम गत संदेहा । राम चरण उपजा नव नेहा ॥
दो० मैं कृत कृत्य भयउँ अब तव प्रसाद बिहगेश ।
उपजी राम भक्ति दृढ़ बीते सकल कलेश ॥
यह शुभ शंभु उमा संवादा । सुखदसदाअरुशमनबिषादा॥
भव भंजन गंजन सन्देहा । जन रंजन सज्जन प्रिययेहा॥
राम उपासक जे जगमाहीं । इहसमप्रियतिनकहँकछुनाहीं॥
रघुपति कृपा यथा मति गावा । मैं यह पावन चरित सुहावा ॥
इहिकलिकाल न साधन दूजा । योग यज्ञ जप तप व्रतपूजा ॥
रामहिंसुमिरिय गाइय रामहिं । सन्ततसुनियरामगुणग्रामहिं ॥
जासु पतित पावन बड़बाना । गावहिंकबिश्रुतिसन्तपुराना ॥
ताहि भजियतजिमनकुटिलाई । रामभजे केहिगति नहिंपाई ॥
छं० पाईनगति केहिपतितपावन रामभजसुन शठमना ।

गणिकाअजामिलव्याधगृध्रगजादिखलतारेघना ॥
आभीरयमनकिरातखलश्वपचादिअतिअघरूपजे ।
कहि नाम बारेक तेपि पावन होत राम नमामिते ॥
रघुबंश भूषण चरित यह नरकहहिंसुनहिंजेगावहीं ।
कलिमलमनोमलधोइबिनुश्रमरामधामसिधावहीं ॥
शतपंच चौपाई मनोहर जानि जे नर उर धरैं ।
दारुण अबिद्यापंचजनित बिकार श्रीरघुपति हरैं ॥
सुन्दरसुजान कृपानिधान अनाथ परकरप्रीतिजो ।
सो एकराम अकामहित निर्बाण पदसम आनको ॥
जाकी कृपा लवलेश तें मतिमंद तुलसीदासहूँ ।
पायो परम बिश्राम राम समान प्रभु नाहीं कहूँ ॥
दो० मो सम दीन न दीनहित तुम समान रघुबीर ।
अस बिचारिरघुबंशमणि हरहु बिषम भवपीर ॥
कामिहिंनारिपियारिजिमिलोभिहिंप्रियजिमिदाम ।
ऐसे होइ के लागहु तुलसी के मन राम ॥

इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेविमलवैराग्य सम्पादनोनामसप्तमस्सोपानः ॥

इति ॥

अथ आरतीश्रीरामायणजीकी ॥

आरति श्रीरामायण जीकी । कीरतिकलितललितसियपीकी ॥
टेक॥गावतब्रह्मादिकमुनिनारद । बालमीकिबिज्ञानबिशारद ॥
शुकसनकादि शेष अरु शारद । वरणिपवनसुतकीरतिनीकी १
संतत गावत शम्भु भवानी । औघट संभवमुनिवर ज्ञानी ॥
व्यास आदि कबिपुंग बखानी । कागभुशुण्डिगरुड़केहियकी २
चारिउ बेद पुराण अष्टदश । छइवशास्त्रसबग्रन्थनिकोरस॥
तन मन धन संतन को सर्बस । सार अंश सम्मत सबहीकी३
कलिमलहरणि बिषयरसफीकी । सुभग शृँगार मुक्तियुवतीकी॥
हरणि रोग भव भूरि अमीकी । तातमातसब बिधितुलसीकी४

श्लोक ॥

यः पृथ्वीभरवारणायदिविजैः संप्रार्थितश्चिन्मयः ।
संजातः पृथिवीतले रविकुले मायामनुष्योऽव्ययः ॥
निश्चक्रं हतराक्षसः पुनरगाद्ब्रह्मत्वमाद्यं स्थिराम् ।
कीर्त्तिम्पापहरां विधायजगतां तंजानकीशम्भजे १ ॥
यत्पूर्वं प्रभुणा कृतं सुकबिना श्रीशम्भुना दुर्गमम् ।
श्रीमद्रामपदाब्जभक्तिमनिशं प्राप्नोतु रामायणम् ॥
मत्वा तद्रघुनाथनामनिरतं स्वान्तस्तमः शांतये ।
भाषाबद्धमिदं चकार तुलसीदासस्तथा मानसम् २ ॥
पुण्यम्पापहरं सदासुखकरं विज्ञानभक्तिप्रदम् ।
मायामोहभवापहं सुविमलं प्रेमाम्बुपूरं शुभम् ॥
श्रीमद्रामचरित्रमानसमिदं भक्त्यावगाहंति ये ।
ते संसारपतंगघोरकिरणैर्दह्यन्ति नोमानवाः ३ ॥

रा० आठवांकांड चि० नं० १५





रामायणआठवाँकाण्ड ॥

रामाश्वमेध ।

सोरठा ॥ बन्दौंचरणपुनीत गुणअतिपालनगजवदन । जेपूजतकरिप्रीत होतपरमक
ल्याणमय ॥ बन्दौंगुरुपदरेनु मनरंजनअंजनदृगन । मुदमंगलसुखदेनु सूझिपरैरघुवरच-
रित ॥ बन्दौंतनयसमीर ज्ञानखानरघुनाथप्रिय । जासुहृदयरघुबीर बसहिंसदाशरचाप
धर ॥ बन्दौंअजसनकादि सनकसनातनजयविजय । ऋषिपरमारथवादि जेनितगावहिं
रामयश ॥ बन्दौंसिन्धुसुजान शैलसुतापदमुखसहित । सकलसुमंगलखान नन्दीपतिगि
रिजारमण ॥ चौ० ॥ बन्दौंरघुवरपदजलजाता । आरतिहरणपरमसुखदाता ॥ पुनिल
क्ष्मणयुगचरणनमामी । बीरधुरीणरामअनुगामी ॥ बन्दौंचरणभरतदृढभाई । शीलसने
हज्ञानअधिकाई ॥ बन्दौंतीरथराजप्रयागा । मज्जनतेकोटिनअघभागा ॥ बन्दौंसाधुसन्त
जगजेते । करौंप्रणामनायशिरतेते ॥ गिरासूकशारदश्रुतिशेशा । सुरमुनिनारदसनकपेशा ॥
महिपातालअकाशसमेता । भूधरविटपपयोनिधिसेता ॥ बन्दौंकरजोरेसबकाहू । दनुजम
एडलीरविशशिराहू ॥ यहवरदेउधरौंपदमाथा । बरणौंयशनिर्मलरघुनाथा ॥ दो० ॥
श्रोतावक्तायुगौंयुग जेप्रवीणगुणखान । कृपाकरहुसेवकसमुझि तजिइरषाअभिमान ॥
चौ० ॥ आगरजेतेजीवजहाना । बरणौंसबहिंजोरियुगपाना ॥ रघुवरचरितचहूंदिशिपा
वन । सुखदभवनशुभमोरसुहावन ॥ स्वइरघुवीरअनूपमगाथा । कहिहौंगुरुपदरजधरिमा
था ॥ जोशिवमुदितउमासनभाषी । सुनतकथारुचिअतिअभिलाषी ॥ बोलींसरलसुधा
समबानी । पारवतीगिरिराजभवानी ॥ लवकुशजन्मयथाश्रुतिगाई । नाथकृपाकरिकहौ
बुझाई ॥ सुनतवचनगिरिजात्रिपुरारी । प्रभुपदप्रीतिजानिअधिकारी ॥ धन्यधन्यहिमव
न्तकुमारी । तुमससनहिंकोउजगहितकारी ॥ जगहितप्रश्नतुम्हारभवानी । कहौंसुनहुनि
श्चयजियआनी ॥ दो० ॥ सुखसागरपावनपरम रघुवरचरितअनूप । वरणसरस्वतिन
यशिर बरणौंमतिअनुरूप ॥ चौ० ॥ करौंललितशुभचरितअरम्भा । ज्योंहिमुनिमिटैंह
मददम्भा ॥ एकसमयशंकरअविनाशी । सुखमासदनज्ञानगुणराशी ॥ योगासनबैका
मदसोहै । देखिस्वरूपचराचरमोहै ॥ जगजननीतहँशैलकुमारी । छिनछिनध्यानआयसु
अनुसारी ॥ जोअनुशासनशंकरगावैं । करतसोकाजअबारनलावैं ॥ नितनम्हरिचरित
अनूपे । प्रथमहिंशम्भुवचनकहमीठे ॥ गदगदकंठहोहिंकेशा । कृपानिधानम्भुदृढनेमा ॥
दशाबिलोकिमुदितगिरिजाई । बाढीप्रीतिचरणपदनाई ॥ प्रथमहिंअवचरितसुनावा ।
सियवनगमनसुनतदुखपावा ॥ दो० ॥ नयननीरभरविकलतनु कमातकरजोरि । बो
लींसन्मुखप्राणपति बचनअमीरसबोरि ॥ चौ० ॥ नाथचरितपसिन्धुअपारा । को अस

मूढ़जुचाहैपारा ॥ प्रथमजोकहसियविपिननिकारी । सुनिसन्देहभयोउरभारी ॥ क्यहि कारणप्रभुदीनसनेही । दीन्ह्योबासविपिनवैदेही ॥ काअपराधजानकीकीन्हा । कृपासिन्धुजेहिलगिवनदीन्हा ॥ भयोशोचप्रभुशोचनिवेरी । कहौबुझायजानिम्बहिंचेरी ॥ यात्रतनभविधिविष्णुपुरारी । प्रथमलीकजगअवनिकुमारी ॥ जासुदृष्टिउपजैंगुणखानी । कोटिनरमाउमाब्रह्मानी ॥ इन्द्रवधूसुरमुनिऋषिनारी । सदाजासुरुखरहैंनिहारी ॥ त्यागनविपिनयोगनहिंसीता । महादेवकहविधिविपरीता ॥ दो० ॥ विपिनबासखुनिविकलभइँ गिरिनन्दिनीखगेश । प्रभुइतिहासअनूपतबकह्योबुझायमहेश ॥ चौ० ॥ असकछुदशाविलोकि भवानी । बोलेहरप्रियकोमलबानी ॥ अतिअपारप्रियगतिजगदीशा । कोजानैकहअसगौरीशा ॥ धरिउरधीरभरमसबखोई । सुनहुकथातुमपूछ्योजोई ॥ पितावचनसुनिरघुकुलकेतू । गमनेवनसियअनुजसमेतू ॥ मिलहिंविपिनऋषिकुटीअनेका । सुन्दरविमलएकतेएका ॥ करतमुनिनमगदण्डप्रणामा । जाहिंचलेप्रभुछविअभिरामा ॥ देखिप्रीतिऋषिमुनिवरनारी । प्रेमविवशभइँजनककुमारी ॥ असअभिलाषसियाउरआनी । ऋषिनवधूसनबोलींबानी ॥ करिपूरणपितुबचनप्रमाना । आवहिंकुशलअवधभगवाना ॥ दो० ॥ तबमैं आउबअवधसे पुजिहौंसबकेपांय । पहिरावौंभूषणबसन भोजनविविधकराय ॥ चौ० ॥ असलालसासियामनमाहीं । प्रभुसनकहतसुनीशलजाहीं ॥ प्रभुसियहृदयमनोरथजाना । बोलेबिहँसिरामभगवाना ॥ जोरुचिप्रियतुम्हरेउरहोई । मांगहुबेगिदेउँवरसोई ॥ मोमनकीरुचिजानहुस्वामी । घटघटकेतुमअन्तरयामी ॥ तदपिनाथऐसोबरपावौं । बहुरिनाथयहिकाननआवौं ॥ एवमस्तुकहरघुकुलराया । दीनसुभगवरसियमनभाया ॥ अवधचलबजबअवधिसिराई । तुम्हैंविपिनसँगलषणपठाई ॥ विधिवतपूज्योसुरमुनिपाऊ । रहैनफिरकछुमनपछिताऊ ॥ जबलगसाधकस्योवनबासू । ह्वैहैसबविधितुम्हैंसुपासू ॥ दो० ॥ सुनिप्रभुवचनविनीतअति जनकसुताखगनाथ । चरणसरोरुहनाथनिजमुदितनवायोमाथ ॥ चौ० ॥ असकहिविपिनचलेरघुबीरा । सीतासहितअनुजरणधीरा ॥ वनबसिचरितकीन्हभगवाना । सोखगेशनहिंजायबखाना ॥ सोकिसकैंअबकहिबागीशा । शारदकोटिनकोटिअहीशा ॥ कौनलेखतहँचेरेदासू । प्रभुपदप्रीतिनदृढ़विश्वासू ॥ बीतेअवधिअवधप्रभुआये । सुनहुउमासोचरितसुहाये ॥ आयसुप्रायकैकयीमाता । बैठेराज्यरामसुत्राता ॥ पुरजनआयभेंटधरिआगे । बोलेबचनप्रेमरसपागे ॥ नाथआजबाड़ेभाग्यहमारी । चरणकमलरजनयननिहारी ॥ सुरनरअसुरनागमुनिदेवा । मिलिमिलिगयेनजान्योभेवा ॥ छन्द ॥ [illegible]भेवकोऊजानमिलिप्रभुदेवमुनिहरषितचले । तबआयब्रह्माकीनअस्तुतिजोरियुगपानीभले ॥ [illegible] अबनाथचलियेलोकनिजबहुभांतिनरलीलाकरी । मुनिदेवतनकीबन्दिछोरी [illegible]रसबवसुधाहरी ॥ सो० ॥ सुनिचतुराननबैन प्रेमलपेटेरसभरे । बिहँसेराजिवनैन उतरदी[illegible]हकउजाननहिं ॥ [illegible] ॥ रहेउमाहमहूंवहांदेखासकलसमाज । प्रजासुखीअघलेशनहिंरामचन्द्रकेराज ॥ चौ० ॥ दूतचारिप्रभुलीनबुलाई । बोलेवचनमधुरजलशाई ॥ देशकोशपुरकुशलभलाई । निशिदिनमोहिंसुनावहुआई ॥ आयसुपायदूत

हरषाने । निजनिजकारजगयेसयाने ॥ दिनप्रतिखबरिअवधपहुँचावैं । रामचरणपंकजशिर नावैं ॥ बीतेदिवसकछूयहिभांती । परमअनन्दअवधदिनराती ॥ एकसमयदशरथकुलनायक । सुन्दरबदनश्यामसुखदायक ॥ राजसभाशोभितरघुराजा । अनुजसहितपुरलोगसमाजा ॥ राजनीतिमुनिराजसुनावैं । मुनिप्रभुअनुजसहितसुखपावैं ॥ औरविविधइतिहासपुराना । कहैंबशिष्ठसुनैंभगवाना ॥ दो० ॥ त्यहिअवसरयकदूततहँ खबरिसुनायोआय । कछूमकटकछुराखिउर देखिसभासकुचाय ॥ चौ० ॥ दूतदशाचकितप्रभुजाना । कम्पितगातअधरकुम्हिलाना ॥ पूंछानिकटबुलायसभीती । कहहुयथारथनीतिअनीती ॥ लाग्योकहनदूतशिरनाई । सकलचरितरघुबरहिसुनाई ॥ नाथएकरजकीरिसिआई । पतिगृहतजिकहुँरैनिगवांई ॥ भोरभयेप्रातहिउठिआई । देखतक्रोधरजकउरछाई ॥ मार्योबहुविधिकहिकटुबानी । रेत्रियनिलजकलहकीखानी ॥ रामसमानसोहिंतैंजाने । रावणहरीनारिगृहआने ॥ उनसमसैंनहिंसुनुअपकारी । जोराखौंतहिंविनाविचारी ॥ वेसमरथकोशलपुरराऊ । भयबशकहतनअवधसभाऊ ॥ दो० ॥ जिनसबभाइनकेकहे जोराखौंमैंतोहिं । तुरतउठावैंजातिते जातिकबीलामोहिं ॥ चौ० ॥ दूतबचनअटपटसुनिकाना । सकलसभासुनिअतिदुखमाना ॥ नीचजातिनहिंकीनविचारा । जोअसअनुचितबैनउचारा ॥ भयउशोचवशअवधसमाजू । विधिअबकीनचहतकाआजू ॥ जानारामसभाभयपाई । बोलेमधुरवचनहरषाई ॥ बीतीनिशायामयुगभाई । शयनकरहुनिजनिजगृहजाई ॥ आयसुपायचरणशिरनाई । गयेभवनसबकरतबड़ाई ॥ गुरुपदरेणुशीशधरिरामा । भाइनसहितगयेनिजधामा ॥ अनुजसमेतकीन्हज्यवनारा । पगधारेमन्दिरस्वबलारा ॥ ज्यहिमन्दिरसोवहिंरघुराई । रचनातासुबरणिनहिंजाई ॥ छन्द ॥ नहिंबनैबरणतधामशोभाचहूंदिशिसुवरणमई । वागीशशारदखोजिउपमाथकितकैबौरीभई ॥ मणिहेममुकतालसितबहुविधिजगमगतदेखतबनी । मतिशेशनिगमपुराणसकुचतकौनाविधिचेरेभनी ॥ दो० ॥ ज्यहिमन्दिरस्वबलारप्रभु विविधविचित्रवितान । लखिरचनाविधिचारमुख हृदयबहुतसकुचान ॥ चौ० ॥ पुनिसबभाइनआज्ञादीन्हा । निजनिजमहलशयनसबकीन्हा ॥ सोयरामपरयङ्कसुहाई । पौढींसियारजायसुपाई ॥ अतिसियदेखिप्रसन्नकृपाला । बोलींमञ्जुलगिरारसाला ॥ नाथविपिनमहँजोबरदीन्हा । अवशिस्वामिसोचाहौंकीन्हा ॥ आयसुहोयजाउँबनस्वामी । सुनहुविनयमम्अन्तर्यामी ॥ सुनिप्रभुसीलावचनमनोहर । सजहुसाजहँसिकह्योविहगवर ॥ भोरहोतभियकरहुपयाना । जायहुविपिनवचनपरमाना ॥ बोलतहँसतनयनअलसाने । सोवनहेतुपीतपटताने ॥ रामसियासोवतयकसाथा । लखिशोभारतिकामलजाता ॥ छन्द ॥ रतिकामहोहिंसनाथशोभादेखिसीतारामकी । बरणतपरस्परछविसुहावनरामसुखमाधामकी ॥ भयेभोरप्रथमविदेहतनयासखीसँगमहलनगई । गहिचरणकौशल्यासुमित्राकेकयीआशिषलई ॥ बहुभांतिसासुनदीन्हआशिषचूमिवदननिहारहीं । चेरेतकलरनिन्दासदशरथहेममणिगणवारहीं ॥ दो० ॥ होतप्रातरघुकुलतिलक करिसरयूअस्नान । तबहिंनहायबशिष्ठपहँ आयेकृपानिधान ॥ चौ० ॥ गुरुपूजाकरिविविधप्रकारा । आयेगृहअवधेशकुमारा ॥

सबमातनपदनायोमाथा । आशिषपायहरषिरघुनाथा ॥ भरतलषणरिपुसूदनबीरा । आये
जहँराजितरघुबीरा ॥ कीन्हप्रणामजोरियुगपानी । दीनअशीषरामसुखमानी ॥ बहुरि आ
यमातनशिरनावा । आशिषपायपरमसुखपावा ॥ पुनिसीतापदनायोशीशा । लह्योपरम
सुखपायअशीशा ॥ भोजनकीन्हसंगसबभाई । बैठेप्रभुसिंहासनजाई ॥ पुरबासीसबआय
जुहारी । आदरसहितरामबैठारी ॥ आयेतबबशिष्ठमुनिज्ञानी । करिदण्डवतमुनिहिंसनमा
नी ॥ दो० ॥ लगेकहनमुनिराजतबराजनीतिकुलरीति । सुनहिंरामभाइनसहितअतिआ
नन्दसप्रीति ॥ चौ० ॥ सन्ध्याजानिउठेभगवाना । सरयूजायकीन्हअस्नाना ॥ करिनितक
र्मभवनप्रभुआये । भरतकोतबबोलिपठाये ॥ आयभरतप्रभुपदशिरनाई । बैठेरामरजाय
सुपाई ॥ बोलेरामचन्द्रयुगपावन । सुधासरिसमृदुबचनसुहावन ॥ तासकहौं तुमसनयह
बानी । सियबनगमनप्रातमैंठानी ॥ सकहुतोतातपठैवनआवहु । भेदनयहतुमसियहि
सुनावहु ॥ दूतबचनसुनिकैनिजकाना । तातेअसप्रणअबमैंठाना ॥ सुनिप्रभुबचनभरत
रणधीरा । भयोबिकललोचनबहनीरा ॥ हृदयशोचमुखआवनबानी । समयदेखिकहुक
ह्योभवानी ॥ दो० ॥ धरिधीरजबोलेभरत सुनहुभानुकुलचन्द । अतिउचरनाहिंदैसबतौवि
नयकरौंरघुनन्द ॥ चौ० ॥ सियकोकह्योदोषप्रभुलाई । जोयहप्रणकरिमोहिंसुनाई ॥
आयमुनाथकरौंशिरराखी । फिरनअबधआबौंअसभाखी ॥ कहकरजोरिशपथ प्रभुतोरी ॥
मैंनाहिंआउबअबधबहोरी ॥ सुनिलघुभ्रातबचनरघुराई । सियपदप्रीतिबहुतहढपाई ॥
कहिबहुचरितअनुजसमुझाई । बहुरिरामरिपुदमनबुलाई ॥ आयशत्रुहनवैठि निहोरी ।
दण्डप्रणामकीन्हकरजोरी ॥ आशिषदीन्हनिकटबैठारा । अतिसुन्दरमृदुबचनसुनावा ॥
सुनशत्रुहनकीन्हप्रणयेही । आवहुछोड़िबिपिनबैदेही ॥ इतनाकरहुतातहरषाई । साजिबि
मानसियहिलैजाई ॥ छन्द ॥ रथसाजिसियहिचढ़ायप्रातहिकाननमलैजाइये । जहँसघन
बनतहँराखिसीतहितातफिरिपुरआइये ॥ यहिभांतिकहकरुणाअयनरिपुदवनसुनिठगिसेरहे ।
कहिदासचेरेप्रेमबशगहिचरणमृदुबानीकहे ॥ असकवनचूकविचारिप्रभुजोजानकीकोपरिहरी ।
यहसमयनाहिंसियबसहिंबनइतनोकछोमेरोकरी ॥ बरसहिंजोबालकअवधमेंतबनाथआयसु
शिरधरौं । कछुकालबीतेउचितअसरघुबंशमणिबिनतीकरौं ॥ सो० ॥ यदपिकहीअतिनी
तिरिपुसूदनभारतअनुज । बोलेबचनसप्रीतिविहँसिरामरघुकुलतिलक ॥ चौ० ॥ नाहिंत्या
गौंजोजनककुमारी । लेहुँअयशशिरपातकभारी ॥ होयपापफलकहैनकोई । करहुउपायतात
अबसोई ॥ जेहिनहोयपाछेपछितावा । असबिचारमोरेमनआवा ॥ रघुबंशिनकेकुलचलि
आई । प्राणजायँबरुबचननजाई ॥ भोरहोतसियसंगजिवाई । त्यागिविपिनमाआवोभाई ॥
प्रभुरुखलखिशोचेरिपुदमनू । जानासत्यविपिनसियगमनू ॥ अतिब्याकुललनकीसुधिन हीं ।
परेतुरितमूर्च्छितक्षितिमाहीं ॥ देखिअनुजगतिश्रीरघुराई । सियविछोहदुखउरअधिकाई ॥
कहप्रियबचनरामरणधीरा । समुझायोरिपुसूदनबीरा ॥ दो० ॥ आयसुदीन्हीजाहुगृह
चलेचरणशिरनाय । पठयदूतलिषबोलितबलक्ष्मणकहँरघुराय ॥ चौ० ॥ लक्ष्मणआय
चरणशिरनाई । दीन्हअशीषमुदितरघुराई ॥ अतिबिनीतबोलेमृदुबानी । प्रभुआगेअबसुन

डुमबानी ॥ आयसुहोयनाथसोकरहूं । बारबारपदपङ्कजधरहूं ॥ कौनसोकाजजाहिलगि
स्वामी । कीनशोचउरअन्तर्यामी ॥ जोसेवककाहिरजायसुहोई । पदशिरनायकरौंमसुसोई ॥
जोनकरौंआयसुरघुनाथा । तौनधरौंधनुशायकहाथा ॥ जबलगजीवरहैतनस्वामी । तबलग
मोहिंजान्योअनुगामी ॥ सेवकधर्मस्वामिसेवकाई । करियसदातनमनचितलाई ॥ जोप्रभु
कहौंकपटछलराखी । ईशसजायदेहिंशिवसाखी ॥ दो० ॥ अनुजवचनसुन्दरसलिल विगत
मैहमदमान । सुनिहरषेरघुकुलकमलबोलेवचनप्रमान ॥ चौ० ॥ तुमसबलायकशीलनिधाना ।
वीररधुरीणाततमैंजाना ॥ कसननीतिराखौतुमभाई । दीनसबैविधिईशबड़ाई ॥ असमग
कीन्हसुनौमैंताता । गवनहिंवनसियहोतप्रभाता ॥ विपिनत्यागिमिथिलेशकुमारी । आ
बहुतातजाउँबलिहारी ॥ सुनतवचनरघुवंशखरारी । लक्ष्मणउरअसमंजसभारी ॥ भई
दशालक्ष्मणकीकैसी । पक्षविहीनविहँगगतिजैसी ॥ जोसियकोआबौंवनत्यागी । मोहिं
समानकोअधमअभागी ॥ जोनरामआयसुअनुसरहूं । कोटिनजन्मअयशशिरधरहूं ॥
दोउभांतिदारुणदुखव्यापा । बरणैकोउरलषणकलापा ॥ दो० ॥ पुनिधरिधीरज
लक्ष्मणहाथजोरिशिरनाय । बोलेसन्मुखअवधपति गिराविनीतसुहाय ॥ यदपिनाथअ
नुचितमहात्यागनजनककुमारि । तदपिनाथआयसुकरबसेवकधर्मविचारि ॥ चौ० ॥ उठे
त्वरिततजिसकलगलाना । कह्योसारथीसाजविमाना ॥ सियपहँगयेविकलअतिभारी ।
दोउकरजोरिविनयअनुसारी ॥ मातुविपिनकरसाजहुसाजा । आयसुमोहिंदीन्हरघुरा
जा ॥ चलहुविपिनआवहुँपहुँचाई । सेवकउचितस्वामिसेवकाई ॥ सियसमुझ्योनहिंदेवर
बानी । सुनतवचनअतिशयहरषानी ॥ बहुभोजनपकवानमिठाई । भूषणवसनलिनायनजाई ॥
होतप्रातसियरथबैठाई । लक्ष्मणचलेरामशिरनाई ॥ चलतसियाअशकुनभयेभारी । तद
पिलख्योनहिंजनककुमारी ॥ हांक्योरथलक्ष्मणबलवाना । पवनथकितअतिवेगउड़ाना ॥
दो० ॥ उतरिनदीतमसात्वरितदीखगोमतीआय । नित्यक्रियाकरिसियसहितपहुँचेसुर
सरिजाय ॥ चौ० ॥ रथतेउतरिकीन्हपरणामा । सियसमेतलक्ष्मणबलधामा ॥ भोर
होतउतरेसुरसरी । सघनविपिनकीमारगधरी ॥ देखिविपिनघनअतिअँधियारी । केहरि
नादकरैंजहँभारी ॥ देखिविटपवटछांहघनेरो । सियलक्ष्मणतहँलीन्हबसेरो ॥ बिन
भोजनसोवासरखोई । बटतरदोउमूरतिरहेसोई ॥ निशाविगतसोवतिसियजागी । देखिवि
पमवनअतिभयलागी ॥ सहमसहितलक्ष्मणसोंबोली । पीपरपातसरिसतनडोली ॥ यह
वननहिंजहँमुनितपकरहीं । खगमृगमुदितनैरतनिफिरहीं ॥ यहवनतातभयंकरभारी । डर
पतउरवनघनहिंनिहारी ॥ दो० ॥ मैंजान्योंरघुनाथमोहिं परमपातकीजान । गवाहिंनिकारयो
देशतेदशरथकुलकेभान ॥ चौ० ॥ तातेयहवननाथपठाई । जहँमोहिंबाघसिंहधरिखाई ॥ तुम
हिंनदोषतातकछुलागी । मैंपापिनिसबभांतिअभागी ॥ असकहिपुनिविलापकरिसीता ॥
देखिविपिनभइअधिकसभीता ॥ हारघुनाथकीननहिंनीका । तज्योमोहिंदशरथकुलटीका ॥
नाथसमुझिदेखौमनमाहीं । तुमबिनप्राणरहैंघटनाहीं ॥ तुमसबलायकत्रिभुवनईशा । काह
विचारितज्योजगदीशा ॥ देखिसियागतिलक्ष्मणयोधा । विधिगतिवामसमुझिपरबोधा ॥

धरोधीरकहलषणसुबानी । पोंछ्योनयननीरनिजपानी ॥ लखतबहुतविकलविनुवारी । मूर्च्छ्योकण्ठविदेहकुमारी । लायहाथमुखसियजलमांगी । देखिलषणडरदायालागी ॥ धरोधीरजललावोंमाता । असकहिबचनचलेसुरज्ञाता ॥ दो० ॥ देखीलक्ष्मणसियागति बिनजलत्यागतप्राण । चलेलेनजलविकलअति योजनएकप्रमाण ॥ चौ० ॥ करुणाकरत विविधवैदेही । सोदुखवरणिजायअबकेही ॥ परीमुरछिव्याकुलक्षितिमाहीं । देखिदशावन चरअकुलाहीं ॥ रघुबरविरहशूलउरव्यापी । दारुणविपतिअधिकतनकांपी ॥ दुखितश्र मितगइसोयभवानी । लक्ष्मणतबजलघटभरिआनी ॥ लखिमुर्छितक्षितिअवनिकुमारी । भेल क्ष्मणदुखकेअधिकारी ॥ भसमहोनहितरच्योउपाई । नभबानीत्यहिसमयसुनाई ॥ गमनहु लषणअवधकीघाहीं । जियैबालकछुसंशयनाहीं ॥ सुनिनभगिरालषणबलधारी । चढि बटडारबांधिघटवारी ॥ धरिधीरजउरअनुजखरारी । जोततुरितरथअवधसिधारी ॥ दो० ॥ पनहींमनपदवन्दिसियबहुविधिकीन्हनिहोर । मनमलीनतनक्षीणअतिहांक्योरथपुरओर ॥ चौ० ॥ त्यागिसियावनसघनअनेरी । लक्ष्मणअवधचलेरथफेरी ॥ सियाविरहअतिदीनदु खारी । भयसभीतप्रियबन्धुखरारी ॥ चौथेदिवसअवधमेंआई । रघुनायकपदशीशनवाई ॥ पूछारामसियाकुशलाई । तजिक्यहिवनसियआयहुभाई ॥ ब्रह्मावर्त्तसघनवनभारी । आ योंत्यागिविदेहकुमारी ॥ नाथविरहगइमुरछिभवानी । तबमैंचल्योंप्रभुशारँगपानी ॥ सुनि रघुवीरहृदयदुखपावा । पुनिनिजराज्यकाजचितलावा ॥ सुनियहचारितसकलपुरवासी । शोचमवशहारिलेतउसासी ॥ एककहैंनाहिंविधिभलकीन्हा । जोअसविपतिजानकिहिदीन्हा ॥ छंद ॥ असविपतिदीनजोजानकीबिनकाजरघुवरपरिहरी । जगसकलअपयशमोटबांधिबना यशिरअपनेधरी ॥ असकहैंपुरनरनारिमिलिदशपांचउरशोचहिंसही । गुरुसचिवकोउन बुझायरामहिंउचितकीबातैंकही ॥ सो० ॥ विधिअसकरतबकीन्ह हरयोबुद्धिपुरलोगसव । कोउनमंत्रअसदीन्ह समयनहींसियवसहिंवन ॥ चेरेपुरनरनारिशोचहिंव्याकुलजहँतुहँ । यथामीनबिनवारितलफैंदोषलगायविधि ॥ चौ० ॥ कौशल्यादिमातुउरशोचू । किमि कहिसकौंकहैंविधिपोचू ॥ भयोदेशपुरशोकनिवासू । कहैंदीनप्रभुसियवनबासू ॥ यहइति हासअनूपमगाई । आगेकहौंसुनोखगराई ॥ जबलक्ष्मणआयेपहुँचाई । सभयविपिनप्रभु आयसुपाई ॥ परयोबुन्दजलघटमुखमाहीं । जागीसियकहुंकोऊनाहीं ॥ अतिव्याकुल करिरोदनभारी । हालक्ष्मणतुमसमहितकारी ॥ क्यहिअपराधमोहिंतुमत्यागे । गयोअवध लखिसोवतभागे ॥ तुमहिंदेखिकछुधीरजरह्यऊ । तुमबिनअधिकमोहिंदुखभयऊ ॥ अब क्यहिभांतिधरौंउरधीरा । देखिविपिनअतिगहनगँभीरा ॥ दो० ॥ यहिप्रकारअबजानकी शीशधुनहिविलखाय । समयविषादनजातकहिकाहूतेखगराय ॥ चौ० ॥ गमनविपिनतबमुनिख गपाला । बायससोंबोलेत्यहिकाला ॥ पूछौंनाथचरणशिरनाई । यहकौतुकप्रभुमोहिंसुना ई ॥ मायाकृतअवतारभवानी । नेतिनेतिकहिनिगमबखानी ॥ जासुदृष्टिजगयावतमाया । होहिंनाथपरिपूरणकाया ॥ शारदशेषदेवमुनिवृन्दा । सेवहिंचरणत्यागिछलछन्दा ॥ सोकिविदेहसुतावनयोगू । सुनिकौतुकविस्मितभयेलोगू ॥ कहहुबुझायसोबायसनाथा ।

कवसियत्यागकीन्हरघुनाथा ॥ सुनिखगेशकेवचनअनूपा । साधुसाधुकहवायसभूपा ॥ प्रश्नतुम्हारनाथभ्वाँहिभाई । चाहहुसुननरामप्रभुताई ॥ सो० ॥ कहावचनअसकाग खग आगेकरजोरिकर । चरितसुनावनलाग ज्यहिकारणप्रभुत्यागिसिय ॥ चौ० ॥ सियहिजो त्यागकीन्हरघुबीरा । सुनहुसोभेवगरुड़मतिधीरा ॥ जवप्रभुजीतिसमरदशशीशा । अवध चलनचाह्योजगदीशा ॥ देवसवैतेहिअवसरआई । विनयविनयनिजलोकसिधाई ॥ ताहि समयदशरथनृपआये । रामहिंदेखिनयनजलछाये ॥ पितहिप्रणामकीन्हरघुराई । सीता अनुजसहितखगराई ॥ असअभिलाषनरेशखगेशा । मोहिंलैचलैंअवधअवधेशा ॥ पितहि प्रेमवशलख्योकृपाला । समुझायोकहिवचनरसाला ॥ वर्षसहस्रराबप्रभुताई । रह्योसो भोगकरवमैंजाई ॥ असकहिरामपितहिशिरनावा । दीन्हज्ञाननिजधामपठावा ॥ दो० ॥ सुनिअसवचनविनीतबहुभयोज्ञानखगराय । प्रभुमूरतिउरराखिनृपगेसुरपुरहरषाय ॥ पिता राज्यकेभोगहितअसकौतुकप्रभुकीन । रहैंसियाकछुदिनअनततयहिकारणवनदीन ॥ सो० ॥ गयोशोचखगनाथ सुनिप्रभुचरितपुनीतमुख । परसिचरणपरमाथ नाथकृतारथकीन्हमोहिं ॥ दो० ॥ पाछिलकथापुनीतअतिसुनहुखगेशसुजान । ज्यहिप्रकाररोदनकरैंसीताजगतभवान ॥ चौ० ॥ महाविलापकरतिवैदेही । शोकविकलतनुसुधिनहिंतेही ॥ भेखगमृगवनजीवदुखारी । देखिजानकीचकितनिहारी ॥ स्रवतनयनजलदुखअधिकारी । बोलेवचनसमयअनुहारी ॥ तजहुशोचसुनुराजकुमारी । विधिकेअङ्कसकैकोटारी ॥ वनदेवतधरिधरिमुनिनारी । समुझावैंमृदुबैनउचारी ॥ अवधतेसरिसजानुवनमाता । होइहैंसबविधिमंगलदाता ॥ काहूदोषनलाइयरानी । जगजननीतुमपातुभवानी ॥ करिप्रबोधमुखधोयसयानी । कन्दमूललाईमधुजानी ॥ धरिआगेसियपुनिसमुझाई । हाथजोरिकरिविनयखवाई ॥ छन्द ॥ करजोरिविनयखवायसीतहिविदाहैगृहकोगई । लखिविषमवनभारीभयंकरजानकीविस्मितभई ॥ त्यहिसमयमुनिवरबालमीकिसमेतचेलनवनगये । सुनिरुदनअवलासघनवनशिष सहिततहँआवतभये ॥ सो० ॥ देखानिपटमलीन बैठीतहँरोदनकरै । मुनिवरपरमप्रवीन निकटजायपूंछीकथा ॥ चौ० ॥ देखिऋषयबोलींतबसीता । बानीमञ्जुलमधुरपुनीता ॥ श्वशुरचक्रवैदशरथराऊ । जनकपिताजगविदितप्रभाऊ ॥ पतिरघुनाथलोकतिहुंस्वामी । कहौंकहांलगअन्तर्य्यामी ॥ ऋषिपँचवटिपुरलोकविचारी । तज्योमोहिंरघुनाथखरारी ॥ लक्ष्मणवनपहुंचायबहोरी । गयेअवधकहँजनककिशोरी ॥ बालमीकिसियकोपहिचानी । धीरजदीनपुराणबखानी ॥ पुत्रीधीरधरोउरमाहीं । भयोवामविधिकछुनवसाहीं ॥ करिप्रबोध बहुकथासुनाई । चलेसंगआसनहिंलिवाई ॥ सुन्दरसदनवासलैदीन्ही । सेवाबहुप्रकारमुनि कीन्ही ॥ दो० ॥ यहिमिसिबीतेकालबहु बिपतिविषादबिहाय । युगलतनयतबप्रकटभे सुदिनसुऔसरपाय ॥ चौ० ॥ बालमीकिमुनिगन्तविचारी । शुभनक्षत्रलखिभ्येसुखारी ॥ बोललईमहिसुरहरषाई । दीनदानसन्मानबड़ाई ॥ सियउरहर्षभयोज्यहिभांती । शारदहूतेनहिं कहिजाती ॥ जसदुखसहीलहीसुखभारी । बदनसुभगदोउसुवननिहारी ॥ त्यहिअवसरमुनिकुटीसुहाई । ऋद्धिसिद्धिसुखसम्पतिछाई ॥ जोज्यहिभावदीनतेहिसोई । उत्सवपरमजानजिन

जोई ॥ कीन्हवेदलौकिकसबरीती । बालमीकिमुनिवरअतिप्रीती ॥ नामकरणउत्पत्तिउछा
हू । कीन्हमुदितविधिवेदनिबाहू ॥ दो० ॥ भेसयानविद्यासकल बालमीकिमुनिदीन्ह ।
चारवेदषटशास्त्रको कौतुकहीपढ़िलीन्ह ॥ चौ० ॥ बालचरितसुन्दरदोउभ्रातू । हरषि
निरखिसुखपावैमातू ॥ विद्याधनुषबाणमुनिदीन्ही । दोऊअनुजमुदितसिखिलीन्ही ॥
बीतेजबैवर्षदशचारी । भयेकुशरयुगलबलधारी ॥ मुनिबालकसँगखेलतफिरहीं ।
निपटअशंकनशालहुडरहीं ॥ फिरहिंविपिनकरिवीरभृँगारा । बधैंमृगादोउराजकुमारा ॥
अतुलितबलप्रतापदोउभाई । सुठिसुकुमारबरणिनाहिंजाई ॥ दिनप्रतिकरहिंअहेरबराहू ।
फिरहिंविपिनलखिडरहिंनकाहू ॥ निशिदिनसुखदमातुउरमाहीं । सपनेहुअवधसुरतित्यहि
नाहीं ॥ हेतप्रातनितदोऊभइया । करहिंप्रणामसुदितमनमइया ॥ दो० ॥ मुदितअशीष
हिंमातुतब जोरीसुभगनिहारि । बारबारचूंबतिवदन जायजायबलिहारि ॥ चौ० ॥ लवकुश
जन्मउछाहभवानी । कह्योंयथामतिवेदबखानी ॥ अबजोकहौंसुनोमनलाई । रामचरित
सुन्दरसुखदाई ॥ जबतेप्रभुसियविपिननिकारी । तबतेनिशिदिनरहतदुखारी ॥ एकबारसोव
तरघुवीरा । देखास्वप्नरामरणधीरा ॥ लंकापतिसजिनिजकटकाई । घेरयोअवधनिशानबजा
ई ॥ कीनमहारणप्रभुकेसाथा । हैव्याकुलजागेरघुनाथा ॥ कछुनदीखतहँकृपानिधाना ।
कीनजायसरयूअस्नाना ॥ नित्यक्रियाकरिगुरुपहँआई । गहिपदअम्बुजस्वप्नसुनाई ॥ स्व
प्नेवजसमोहिंसुनाई । करोउपायवेगिमुनिराई ॥ दो० ॥ कह्योविचारिमुनीशतबवचनमधुर
त्यहिकाल । ब्रह्मबीजराक्षसभयोबीसभुजादशभाल ॥ चौ० ॥ करहुयज्ञअश्वमेधसुहावन । स
दासुखौंयुगपावनपावन ॥ जानिशिरोमणिसखअतिभारी । करहिंअवशिनृपप्रभुदनुजारी ॥ बि
नकीन्हेमखदीनदयाला । होयनक्षमितअसुरदशभाला ॥ तबप्रभुकहासुनियमुनिनायक । करि
यअरम्भयज्ञसुखदायक ॥ तबमुनिनाथकह्योसमुझाई । श्यामकरणहयअमरमँगाई ॥ हेमपत्र
नृपनीतिलिखाई । बांधिशीशपरवाजिफिराई ॥ चारलौहिणीदलसँगदीजै । सयनापतिरिपु
सूदनकीजै ॥ जोनृपबांधैअश्वतुम्हारा । करहिंयुद्धत्यहिसंगअपारा ॥ ताहिजीतिमखवाजिमँ
गाई । चहूँदिशायहिभांतिफिराई ॥ दो० ॥ सबभूपनमदमानमथि कुशलसोयहवरवाज । रिपु
सूदनआवहिंअवध यज्ञसिद्धरघुराज ॥ चौ० ॥ सुनिमुनीशकेवचनसप्रेमा । भरवाहितरामकीन्ह
दृढ़नेमा ॥ वेगितुरँगसुरनाथमँगाई । पूजाकीन्हवेदजसगाई ॥ हेमपत्रबांध्योहयशीशा । बांचत
त्यहिकोपैंअवनीशा ॥ यूथपरिपुसूदनकोकीन्हा । कहिप्रभुपुनिअसआयसुदीन्हा ॥ तात
तुरंगकरवररखवारी । सजगरहवधनुबाणसुधारी ॥ जोभूपतितजिइरषामोहा । मिलैआय
त्यहिकीन्ह्योछोहा ॥ अभयकरबत्यहिसभयनिहारी । करबवचनपरमानहमारी ॥ जोनृपहठ
वशबांधतुरंगा । प्रबलयुद्धकीन्ह्योत्यहिसंगा ॥ समरभूमिरणसेजसुवाई । तुरँगछुड़ायचलब
हरषाई ॥ दो० ॥ ताहिजीतिमखवाजिलै सजगकरबसबकाज । फिरयोअवधकहँप्राणप्रिय
असकहिकोशलराज ॥ चौ० ॥ सुनिआयसुसाहबसियरौनू । पदशिरनायचलोरिपुदौनू ॥ क
रिआगेमखहयमुनिनाथा । भोरेसुभटकीन्हत्यहिसाथा ॥ मुनिपदवन्दिचलेरणधीरा । कर
कमलनसोहतधनुतीरा ॥ शत्रुदवनपुरबाहरजाई । वेगिसारथीबोलिपठाई ॥ तुरितसारथी

स्यन्दनआना । चढ़योविमाननीरखलखाना ॥ वीरधुरीणभरतलघुभाई । सुमिरिगजानन सैनचलाई ॥ सैनअमितकोगनैमुनीशा । सकुचैंशारदगिराफणीशा ॥ चारचौहिणीसैन भवानी । बड़ेबड़ेयोधाअभिमानी ॥ आगेचञ्चलचपलतुरंगू । पाछेसुभटजाहिंत्यहिसंगू ॥ दो० ॥ त्यहिपाछेसेनासुभट भरतअनुजरणधीर । धरवीरासनजातमग सुमिरतसियरघुवीर ॥ सांझसमयसबभीरभट साजिसाजिसीपाह । निजनिजवारीदेखिहयचलैंभोरउठिराह ॥ चौ० ॥ गिरासूकफणसबसकुचाई । जोअबकहैंप्रतापबड़ाई । फूटेमेरुसेहहैंजाहीं ॥ टूटेविटपपरे महिमाहीं ॥ रजसोंपूरिगयेनदनारे । कूपतड़ागभूरभयसारे ॥ जहँजहँआययज्ञकरबाजू । मिल हिंभूपतहँसहितसमाजू ॥ जहँजेभूपतिकीन्हलड़ाई । मारयोताहिभरतलघुभाई ॥ ताहिसँ हारिबाजिअगुआई । उत्सवकाहिंकछुशर्मनपाई ॥ करहिंयुद्धनाहिंकालहुडरहीं । नृपमानी जीततरणफिरहीं ॥ कहौंकहांलगतेजबखाना । रिपुसूदनारिपुसूदनजाना ॥ उदयअस्तम हिमण्डलमाहीं । रिपुसूदनसमानभटनाहीं ॥ छन्द ॥ रिपुदवनसमजगकोउनभटजो आयअबसम्मुखलड़े । सुरअसुरजेतेनागनरभयमानपदनाहिंरणखड़े ॥ चहुँओरअश्वफि रायसैनसमेतरिपुसूदनबली । यमुनाउतरिसुरसरीमज्जयोपारउतरिसैनाचली ॥ सो० ॥ चल्योतुरगत्यहिकाल बालमीकिआश्रमगयो । लखिवनबागरसाल हरितदूबलाग्योचरन ॥ दो० ॥ रहेतहांरखवारलव देखिअश्वमियलाग । उठअकेलबांध्योतुरग जानिचरतमुनिबाग ॥ चौ० ॥ बांधितुरङ्गपत्रलवबांचा । करौंयुद्धनृपसोंमनरांचा ॥ जबलगजीवरहैतनुमाहीं । तब लगअश्वदेवनृपनाहीं ॥ त्यहिअवसरभटभीरसमूहा । आयेहयहेरतबहुजूहा ॥ देखिअश्वसकुचे मनमाहीं । बालकबधवउचितकछुनाहीं ॥ डाटिकुँवरहयलेहुछुड़ाई । रिपुसूदनपहँगवनोभा ई ॥ सुनिअसवचनहँसेलवबीरा । करकमलनफेरतधनुतीरा ॥ सुभटजबैहयछोरनलागे । लखिलवतुरतवीररसपागे ॥ बोलेवचनक्रोधमनहिंथोरी । हटोसुभटकोउतुरगनछोरी ॥ जोइठवशहयछोरनजाई । मारौंताहिमुनीशदुहाई ॥ दो० ॥ जोछोरैयहिकालहयबधौंताहि त्यहिकाल । तजौंनहयकोटिनकरौंबिनायुद्धमहिपाल ॥ चौ० ॥सुनिलववचनसुभटसबमाखे । क्रो धसँभारिवचनअसभाखे ॥ बालकसमुझिनकीन्हलड़ाई । इन्तोबातनबहुतखिझाई ॥ अ बनहिंदोषलड़ाईकीजै । तुरगसमेतजीतिरणलीजै ॥ असकहिघेरिलियोलवबीरा । मारैंअ स्त्रशस्त्रपरतीरा ॥ लवबिलोकियोधानियराने । धनुषचढ़ायबाणसन्धाने ॥ एकनिमिषमहँ सबभटमारे । बचेतेभागेजायपुकारे ॥ नाथएकबालकमुनिवेखा । वीरश्रृंगारकियेतनुदेखा ॥ बयकिशोरकरणीकठिनाई । अतिसुन्दरनखशिखसुघराई ॥ तिनबांध्योहयकोअतिगाढा ॥ कालसमानआपतहँठाढ़ा ॥ दो० ॥ तिनबांध्योयहयज्ञहयबहुउपायहमकीन्ह । युद्धकीन्हमा रेसुभटहठबशअश्वनदीन्ह ॥ चौ० ॥ जेभटरहेअश्वरखवारे । तिनहिंतुरितरणखेतसँहारे ॥ असपौरुषअबहींतेपाई । समययुवाभटजियतनजाई ॥ अतिसुकुमारमहारणधीरा । फिरत अकेलहाथधनुतीरा ॥ सुनिरिपुदवनअचम्भवमाना । चलेवहांजहँलववलवाना ॥ सैनसंग घेरयोवनबागू । बढ़ेआपकीन्हेरथआगू ॥ देखाजायबागमुनिराई । बोलेसरुखभरतलघुभा ई ॥ काअनीतिहयकीन्हतुम्हारा । राख्योबांधिमुनीशकुमारा ॥ तुमहिंत्रासनहिंबांधतला

न्यो । कसपितुमातुअबहिंतेत्याग्यो ॥ सोहततुमहिंनअसकठिनाई । वयकिशोरमृदुगातसुहा
ई ॥ दो० ॥ मुनिवरवेषअनूपअतिधरेबाणधनुहाथ । करतअनीतिफिरौविपिनखेलतबाल
नसाथ ॥ चौ० ॥ तुमहिंनअसिहठसोहतभइया । तजिहयजाहुजहांपितुमइया ॥ निजकुल
पुनिकुठारजनिहोहू । देखिस्वरूपशोचअतिमोहू ॥ सुनिलवरिपुसूदनमृदुबानी । दीनउतर
हँसिसुनहुभवानी ॥ हमरेकुलयुगयुगचलिआई । हठनजायवरुसरबसजाई ॥ जोभयमानतु
रगनृपदेहीं । अपनेजियतअयशशिरलेहीं ॥ हमहिंसौंपिमुनिवरयहवागा । आपगयेकहुंऋ
षिमुनियागा ॥ खगमृगजेवनचरहैंनागू । मोसनचरननपावैंबागू ॥ सकुचतपवननिरखिअ
मराई । सुरनरअसुरकौनप्रभुताई ॥ सोतुम्हारहयनिजघरिआई । कीन्हनिपातबागमुनिरा
ई ॥ सो० ॥ बांचिपत्रहयभाल बागविध्वंसतदेखिशठ । निजपौरुषमहिपाल बांध्योंतुरगनदे
वैंअब ॥ चौ० ॥ सुनिरिपुसूदननिरभयबानी । जान्योहृदयमहाअभिमानी ॥ बिनसंग्राम
अश्वनहिंदेई । करिसंग्रामअयशकोलेई ॥ जोमारैंम्वहिंनिपटहँसाई । मैंमारौंतौकौनबड़ाई ॥
यहिमारेभलकहेनकोई । होयपापनहिंसिंधुसमोई ॥ जोतजिहयकोशलपुरजाऊं । कौनवदन
रघुवरहिदिखाऊं ॥ जोसकोपखोलौंवरबाजू । सम्मुखमरैंसमरकरआजू ॥ करतविचारशत्रु
हनयोधा । कौनिउँभांतिनहोयप्रबोधा ॥ विकलविलोकिरामलघुभाई । गगनगिरात्यहिस
मयसुहाई ॥ येनतनयमुनिऋषयदुलारे । महावलीरणटरैंनटारे ॥ दो० ॥ जनिभरमोरिपु
दवनतुम येनतनयमुनिराज । क्षत्रियकुलवाणीसुभटसबराजनकेराज ॥ चौ० ॥ यतनहजार
कोटिविधिकरहू । रणसम्मुखलोहाकिनधरहू ॥ मिलैनहयकिनकरहुउपाधी । असकहिग
गनगिराचुपसाधी ॥ सुनतभरतसालुजनभवानी । चकितरहोनहिंजातवखानी ॥ करिनि
श्चयतबउठेरिसाई ॥ सबयोधनसोंकह्योसुनाई ॥ हमअपनीदिशिबहुतकचाई । माननकुँवर
कालनियराई ॥ अबनदोषनिगमागमगाई । जोजसकरैसोतसफलपाई ॥ धरोजियतबहुदेहु
कलेशू । अबनछोटबड़करोअँदेशू ॥ जोनहाथलागैरिपुभारी । समरकठिनकरिडारौंमारी ॥
असकहिनिजधनुबाणउठाई । लवसम्मुखबोलेमुसकाई ॥ दो० ॥ मैंअपनीदिशिविनयकि
यतुममानीनहिंएक । पावहुआजसजायभलजसकीन्हेंहठटेक ॥ चौ० ॥ चापचढ़ायश्रवणल
गिताना । छांड़योअतिकरालबहुबाना ॥ ब्वइशरारिपुलवसम्मुखआई । खइलवपासनरेश
पठाई ॥ निफलगयेरिपुसूदनबाना । देखिप्रतापशोचउरआना ॥ तबलवललकारयो
रिपुवीरा । युद्धकरहुजनिहोहुअधीरा ॥ रागचढ़ायनागसन्धाना । छांड़योशरबहुउरग
समाना ॥ अर्द्धनिमिषलवबाणप्रहारी । दुइक्षौहिणीअनीरिपुमारी ॥ पुनिलवरिपुसूदन
पहँजाई । बोलेकोपिवचनयुनिराई ॥ सजगहोहुयहिसमयभुवाला । असकहिछांड़योबा
णकराला ॥ रिपुसूदनलखभटरणधीरा । लड़ैंपरस्परद्वउवरवीरा ॥ छन्द ॥ द्वउवीरल
रैंमचारिअतुलितविविधविधिललकारहीं । बहुतीरअस्त्रकृपालशूलसकोपऊपरडारहीं ॥
रणगूढ़लखिभारतअनुजहौविकललवसम्मुखगही । अबसजगहोहुसँभारशरणआशुत्वहिंमारौं
सही ॥ सो० ॥ कहावचनअसकोपि रिपुसूदनरणधीरभट । लीन्हशरनतेलोपि महिसुवा
यदीन्योलषहि ॥ चौ० ॥ रिपुसूदनअतिशयजवकोपे । मारिशरननखशिखतेचोपे ॥

अतिसुकुमारभयोगलजाई । परयोवीररणमेंमुरझाई ॥ यथावारिबिनमीनबिशोकी । तथा
बिकलरणलवहिबिलोकी ॥ परमबिकलशोचतमनमाहीं । रिपुसूदनआयेलवपाहीं ॥ दे
खानिपटकुसाजकुमारा । शोभाअमितनजायनिहारा ॥ भरतअनुजपुनिसैनसँभारी । बा
जिचढायअवधपगधारी ॥ रहेजेलवसँगतनयमुनीशा । धायेग्रामसुनतसबशीशा ॥ सियस
नकह्योसकलउतपातू । भेज्यहिबिबिखलनभाणनिपातू ॥ रथचढायलवकोयुवराजू ॥ गव
न्यहुभवनसहितमखबाजू ॥ सो० ॥ सुनतशिशुनकेबैन व्यकुलभूतलमैंपरी । भरेनीरदोउ
नैन शीशधुनहिकरुणाकरहि ॥ चौ० ॥ त्यहिअवसरकुशवनतेआये । मातुचरणसादराशि
रनाये ॥ देखानिपटबिकलमहतारी । यथामीनव्याकुलदिनवारी ॥ जसमणिहीनभुजग
अकुलाई । तसगतिजनकसुतागिरिजाई ॥ दशादेखिजननीदुखपावा । बोलेवाणीसरल
स्वभावा ॥ क्यहिकारणयहगतिमहतारी । वेगिकहौत्यहिंआनिहमारी ॥ सुनिसुतवचन
कछुकधरिधीरा । लागीकहननैनबहनीरा ॥ आदिअन्तसबकथासुनाई । भूतलपरीवहुत
मुरझाई ॥ सुनतभयोरिसकुशउरभारी । कसिनिषंगधनुबाणसिधारी ॥ जोबिनबधेअनु
जकोद्रोही । आवौंभवनसप्तमोहितोही ॥ दो० ॥ मातुसप्तकरितुरितकुश संगलीनमुनिबा
ल । चलेकोपकीन्हेंमहा जहांभीरमहिपाल ॥ चौ० ॥ मुनिवरबागगयेकुशवीरा । देख्यो
जातभूपरणधीरा ॥ आगेजायसैनसबघेरचो । कहिकटुवचननरेशहिफेरचो ॥ कोतुमकौन
देशकेराजा । साजिसैनआयेक्यहिकाजा ॥ ढीठिसुकुमारमोरलघुभाई । करिमुरछितत्य
हिचल्योपराई ॥ तुमहिंनत्रासमाणनिजकेरी । भीरसंगवनफिरौअहेरी ॥ जसकीन्ह्योतस
पैहौआजू । जायहुकुशलसहितमखबाजू ॥ असमुनिरिपुसूदनरथफेरचो । कुशसन्मुखत्य
हिअवसरहेरचो ॥ लवसोंसुरसदेखिसुघराई । बोलेभरतअनुजमुसकाई ॥ छोटबदनकी
न्ह्योंरिसभारी । क्षमाकरहुअपराधहमारी ॥ दो० ॥ तुम्हरेअनुजहिबिबिधबिधि उचित
सिखावनदीन । कालबिबशतमक्योसुभट वचनश्रवणनहिंकीन ॥ चौ० ॥ चापचढायबि
शिखशरमारे । दुइचौहिणीकटकसंहारे ॥ मोसनआययुद्धपुनिकीन्ह्यो । यदपिसिखावन
दैरहुदीन्ह्यो ॥ कुलअनुहरतभयोरिसमोरे । सत्यकहौंलिखिकागदकोरे ॥ ज्यहिंरिसजा
यतुम्हारीआजू । करहुनबिलमसँवारहुकाजू ॥ सुनिकुशरिपुसूदनकीबाता । अनुजबिलो
किजरेसबगाता ॥ बन्धुशोकत्यहिसमयबिसारी । कीन्ह्योसिंहनादअतिभारी ॥ बोलेअ
तिसकोपकुशजबहीं । डगमगभयोलोकतिहुंतबहीं ॥ सुनतदशौदिकपालसकाने । क्षुभ्यो
सिन्धुजलचरअकुलाने ॥ डव्योधराकुर्मकांप्योव्यालू । भयोशोरडरप्योसुरपालू ॥
छन्द ॥ सुरपालकरूपेकौनबिधि त्यहिबिष्णुशिवशंकाभई । असकौनवीरसकोपअतिधनुबा
णकरकमलनलई ॥ रणअजिरअनुपमचापकुशबलधामजनफेरनलगे । सुरअसुरकिन्नरना
गनरडरमानत्यहिअवसरभगे ॥ सो० ॥ सुरनधरचोनहिंधीर क्रोधकृतान्तनिहारिकुश ।
भागेसबभटभीर रहेएकरिपुदवनरथ ॥ दो० ॥ कौनबड़ाईकुशहियह मातुसियापितुराम ।
कोअससमरथवीरजगजीतिसकैसंग्राम ॥ चौ० ॥ कुशरिपुदवनसमरगिरिजाई । महाअग
मनहिंबरणिसिराई ॥ कोटिनबाणशत्रुहनमारे । कुशधरबरडकाटिमहिडारे ॥ भेबाणन

तेहिंननिषंगा । टूटेचापअमितबहुरंगा ॥ मींजतहाथअधररदचाबू । पिसरयोवीरअवधकोे
जाबू ॥ रहेसुभटजहँलगरणखेतू । मारयोत्यहिरिपुदवनसमेतू ॥ बहुरिवाजिबांध्योतरु
जाई । व्याकुलगयोजहांलघुभाई ॥ लीनउठायगोदबैठाई । देखिदशादारुणदुखपाई ॥
रोदनकरतमोहउरव्यापा । वरणौकोजसहृदयकलापा ॥ समुझिसमुझिसानुजकीकरणी ।
अबलाइवमारतशिरधरणी ॥ दो० ॥ क्षणक्षणव्याकुलदेखिगतिवरणतशीलसकोच ।
महिलोटतकरुणाकरतकहतविधातापोच ॥ चौ० ॥ सियासुवनरोदनसुनिभारी । वनवा
सीसबभयेदुखारी ॥ मर्कटयोदेखसवनववआई । कहिइतिहासकुशहिसमुझाई ॥ धरोधीर
दुखअनुजबिसारी । जियैबन्धुआशीषहमारी ॥ सुनतदेखिवलगिरासुहाई । उठिबैठेतब
लवगिरिजाई ॥ मिलेपरस्परदोउभैया । हर्षितभयोजहांरहिमैया ॥ हाथसोंहाथजोरिदो
उभाई । गयेभवनआनँदअधिकाई ॥ देखतमातुत्वरितउठिधाई । लीनसुवनदोउकंठलगा
ई ॥ मिलिदुउकुँवरगोदमेंलीन्हीं । याचकबोलिनिछावरकीन्हीं ॥ शुचिभोजनपकवाननमि
ठाई । हर्षसहितदोउतनयजिमाई ॥ दो० ॥ हैभसत्रमनहर्षिअति देखिसुरसउयवनार । ला
गेभोजनकरनतवप्रमुदितदोउसुकुमार ॥ कहिसियतवबलिजाउँ मैं हेसुतशोभागेह । भयोउप
द्रवबागमुनिमोमनअतिसन्देह ॥ चौ० ॥ ममसन्देहनिवारहुताता । कहोभयोज्यहिविधिउ
तपाता ॥ मातुबचनसुनिलवअतिपावन । प्रथमहिंतेसबलगेसुनावन ॥ ज्यहिविधिआय
सुभटकटकाई । घेरयोविपिनचहूंदिशिआई ॥ एकतुरंगतेहिसंगपराई । आयचरयोमुनिव
रअमराई ॥ हेमपत्रहयशीशविलोकी । बांचिताहिरिसगयोनरोकी ॥ बांध्योंतुरगमातुवरि
आई । तासुखोजसैनाबहुआई ॥ वासोंकीनयुद्धअतिभारी । करिसंग्रामसुभटसबमारी ॥
त्यहिपाछेसैनापतिआयो । खर्हिलवुदेखिबहुतसमुझायो ॥ कीन्होकठिनपरनमहिपाला ।
मुरछितकियोमोहिंत्यहिकाला ॥ दो० ॥ असकहिपुनिचुपसाधिलव चरणकमलशिरनाय ।
शयनकीनपर्य्यङ्कपर बोलेकुशमुनिराय ॥ चौ० ॥ त्यहिअवसरमैंवनतेआयों । तवगतिदे
खिबहुतदुखपायों ॥ तुमसोंपूंछिसक्योंनहिंमाता । मुनिबालकनकहीसबबाता ॥ त्वरि
तलीनधनुबाणउठाई । गयोंबागजहँभटसमुदाई ॥ नाहिंतहँसुभटनदीखनरेशू । नाहिंल
वसानुजभयोअँदेशू ॥ गयोंदूरिकछुविपिनमँझाई । देख्योंचलीजातकटकाई ॥ फेरयोंक
हिकटुवचनसरोखा । सुनतवचनआयेअतिचोखा ॥ रथशोभितत्वइराजकुमारा । करिसं
ग्रामअनुजजिनमारा ॥ देखिमोहिंलवकेअनुहारी । रह्योचकितबहुबारनिहारी ॥ पुनिलव
कोरथऊपरदेखी । भयोनरेशहिशोचविशेखी ॥ दो० ॥ करिप्रतीततबहृदयनिजजानिमोहिं
लवभ्रात । रथहांक्योआयोनिकट कह्योवचनअसप्रात ॥ चौ० ॥ रेबालकत्वहिंत्रासनआ
ई । जोअबम्वहिंकटुबैनसुनाई ॥ वयकिशोरसुन्दरतनुगोरा । कहसिवचनजनुमाहुरघोरा ॥
लघुविचारिमैंबहुतसँभारी । सहोंकुँवरकटुबैनतुम्हारी ॥ जसतुवबन्धुप्राणहठदीन्ही । तस
तोहूंखलचाहसकीन्ही ॥ हैहौक्षणमहँकालहवाले । अबलगपरयोनकाहूपाले ॥ जाहुकुश
लतजिमोहतरंगा । हठवशहोहुनदीपपतंगा ॥ आयसुदीननमैंकटकाई । लागिदयाबालकसु
घराई ॥ सोतुमबहुतप्रचारयोमोहीं । औरपराक्रमविदितनतोहीं ॥ सबँरहुजोकोइहोयसहा

ई ।कहौंस्वयवनकरौंबड़ाई ॥ दो० ॥ सुनिनरेशकेवचनमृदुमातुहँस्यौंत्यहिकाल । हँसत
विलोक्योमोहिंजनबोल्योवचनकराल ॥ चौ० ॥ यहलङ्कावधकालनिदाना । मारोधेरि
नपावैंजाना ॥ सुनिआयसुमहिपालसकोही । मारनलगेसुभटसबमोही ॥ मैंअकेलसेननृप
भारी । विकलभयौंत्यहिक्षणमहतारी ॥ बाणनमारिछेदतनदीन्ही । चहुंदिशिआयघेरि
मोहिंलीन्ही ॥ मैंदेख्यौंतबनयनउघारी । लीन्ह्यौंघेरिसुभटबलधारी ॥ धरिधीरजमुनि
सुमिरिमतापू । छांड़्यौंबाणखैंचितबचापू ॥ मार्योंनृपहिंसहितकटकाई । बहुरिवाजिबांध्यों
तरुजाई ॥ वाजिबांधिसानुजपहँआयौं । देखिदशादारुणदुखपायौं ॥ सोवतमहिशरसेज
निहारी । शिरधुनिरोदनकीनपुकारी ॥ दो० ॥ त्यहिअवसरवनदेवतामममविलापसुनिका
न । आयेधीरजदीनम्वहिंकथाअनेकबखान ॥ चौ० ॥ धरोधीरसुनिवचनहमारी । जाहु
वेगिजहँमातुतुम्हारी ॥ जियैबन्धुलघुमैंवरदीन्हा । असकहिगमनभवननिजकीन्हा ॥ सुन
तगिरावनदेवतमाता । तजिमुरछाजाग्योलवभ्राता ॥ मिलतप्रेमनहिंहृदयसमाता । देखिअ
नुजभयेशीतलगाता ॥ देखाजायबहुरिरणखेतू । परयोनलखिकोउवीरसचेतू ॥ मुनिवरसु
तनसोंयहसमुझाई । रह्योसजगहयभागिनजाई ॥ जागमुनीशतुरगमहिपाला । जुगवतरह्यो
सजगसबकाला ॥ सकलअनुग्रहमातुतुम्हारी । आयकुशलपदकञ्जनिहारी ॥ मुनिसुतवचन
अशीषतमाता । गईनिशावड़िसोवहुताता ॥ दो० ॥ लागेसोवनमुदितमनआयसुजन
नीपाय । जागेहोतप्रभातपुनिवन्दिचरणशिरनाय ॥ चौ० ॥ करिअस्नानगंगदोउभाई ।
आयमुदितमातहिशिरनाई ॥ भोजनकरहिंसंगसकथारी । लैआज्ञावनओरसिधारी ॥ वधै
पुनीतवराहकुरंगू । आवहिंभवनभ्रातद्वौसंगू ॥ यहइतिहासअनूठखगेशू । पारवतीसनवह्यो
महेशू ॥ सोइजाबालिपरागनहाई । भरद्वाजमुनिवरप्रतिगाई ॥ अतिविचित्रमहिमाभगवाना ।
आगमनिगमपुराणबखाना ॥ जबरिपुदवनसहितसबवीरा । परेमुरछिरणमहँरणधीरा ॥
भागेसुभटकछुकविनमारे । तेकौशलपुरजायपुकारे ॥ दो० ॥ गयेसुभटतेअवधपुर अतिव्या
कुलतनछीन । जायपुकारेसुनिप्रभू वचनसहोहैदीन ॥ चौ० ॥ रहारामउरशोचअपारा । न
हिंआयेप्रियप्राणअधारा ॥ मखशालाजहँऋषयसमाजू । ऋषिनमध्यरघुवीरविराजू ॥ चा
रिउषट्दशअाठपुराना । मुनिवक्ताश्रोताभगवाना ॥ चहुंदिशिविप्रवेदध्वनिकरहीं । मागध
सुयशवंशउच्चरहीं ॥ बन्दीगणयाचकगुणगायक । अस्तुतिकरतठाढ़रघुनायक ॥ चतुरानन
पंचाननदेवा । चलेयानचढ़िप्रभुकीसेवा ॥ इन्द्रसमाजदेवमुनिवृन्दा । आयेजुरिजहँरघुकुल
चन्दा ॥ मुदितअशीषजोरिकरदेहीं । वदनविलोकिपरमसुखलेहीं ॥ निजनिजथलबैठेसब
जाई । शक्तिसमेतमहाछविछाई ॥ दो० ॥ भरतलषणदशरथसचिवअनुजनसुवनसमेत । जो
रिपाणिठादेसकलसन्मुखकृपानिकेत ॥ चौ० ॥ प्रभुरुखनिरखिकाजअनुसरहीं । सन्मुखते
भूलयोनहिंटरहीं ॥ तौनीसमयसुभटतहँजाई । रिपुसूदनकीखबरिसुनाई ॥ सुनतकृपानिधि
अचरजमाना । विधिगतिप्रबलहृदयअनुमाना ॥ सुभटबुलायअवधपतिबूझे । कहुकेहिदेश
शत्रुहनजूझे ॥ नायशीशपदवचनबहोरी । लाग्योकहनदोउकरजोरी ॥ देशदेशसबतुरगफि
राई । कोउनभयोसन्मुखरघुराई ॥ आगेहैपूजाहयकरहीं । रिपुसूदनकेसन्मुखधरहीं ॥ करहिं

अभयत्यहिअगलगाई । साधुस्वभावभरतलघुभाई ॥ कोउनसुभटसन्मुखरणकीना । पि
लेआयनवपरमअधीना ॥ छन्द ॥ सबमिलेपरमअधीनजहँजहँवाजिरिपुसूदनगयो । हिय
हरितिनीनलविकरजोरिशिरनावत भयो ॥ यहिभांतिअस्तुतिकरहिंपूजहिंअश्वभटरिपु
सूदनको । राखेंसुबन्धुमँगायआगेचलेंतदगहिमगलको ॥ सो० ॥ यहिप्रकारसबदेश फिरिआ
योरिपुदमनभट । चलेअश्वअवधेशसंगअनीचतुरंगिनी ॥ दो० ॥ फिरयोतुरगजबअश्व
कहँआयोगंगातीर । सुभटद्रोहिणीचारिदलत्यहिपाछेरघुवीर ॥ चौ० ॥ महासघनवनत
हँरघुराई । दिवसहुजहँनिसरातिसुहाई ॥ गयोतुरगत्यहिवनरघुराई । पहुंचोजहँमुनिवरआश्र
माई ॥ मुनिवरआश्रमपरैजवलागा । बांध्योहयरखवारनआगा ॥ सजगभयेहयपायअनेरा ।
घेरेठाढ़चहूंदिशिहेरा ॥ सुभटविकलनहिंदेख्योराजू । कहैंसहमिबड़भयोअकाजू ॥ खोजत
फिरैंअन्तनहिंपावैं । हेरिहेरिचहुंदिशिफिरिआवैं ॥ घँसेमहावनतबअकुलाई । लख्योअश्व
मुनिवरफुलवाई ॥ जावतहांहयछोरनलागे । रखवारेभटदेखतभागे ॥ तेहिमाएककुँवररतन
गोरा । रोंक्योभटकहिवचनकठोरा ॥ दो० ॥ वयकिशोरनखशिखसुघरसुखमाशीलनिधा
न । हटकेभटसबकालत्यहिकरतलफेरतबान ॥ चौ० ॥ शोभासुखशतकोटिदिनेशा । काक
पक्षधारेमुनिवेशा ॥ सौसौकोटिकामरतिवारी । अंगअंगजैयेबलिहारी ॥ मुनिवरवेषकुमार
नरेशा । प्रभुअनुहारिविशेषसुरेशा ॥ सुनिभटवचनरमापतिदेवा । कहासयनकोउलखैनभे
वा ॥ पुनिकरजोरिकहनसोलागा । टुकरहेभटगयेनवागा ॥ माखेवचनसुनतसबवीरा ।
सजगभयेगहिमहिधनुतीरा ॥ कोउकहमारहुलेहुछुड़ाई । कोउकहजियतधरहुयहिभाई ॥
अस अभिलाषसुभटउरमाहीं ॥ चरितरामखगभूझिनजाहीं ॥ रिसवशएकबाणतिनमारा ।
परेसुरविरणसुभटअपारा ॥ दो० ॥ द्वितियबाणछांड़योजवैभागेभटरणधीर । जायपुका
रेतेसमयजहँरिपुसूदनवीर ॥ चौ० ॥ पहुंचोरथसन्मुखजबआई । देखिकुमारपरमसुखदाई ॥
अतिशोभारवकामलजौनू । शिथिलगातमनभोरपुटौनू ॥ हृदयसराहतकुँवरलुनाई । बोले
रिपुसूदनमुसकाई ॥ कीतुमवेषमुनीशकपेशा । कीत्वमीकुलतनयनरेशा ॥ वनमालछापागु
चितीका । देखिसरूपलागअतिनीका ॥ प्रेमफांसलीन्हेवनफिरहू । मोहताजिवभयशंकनकर
हू ॥ सोछलवलहमसोंअवकीना । कीनबाजिअपनेआधीना ॥ छांड़हुतुरगछोड़िलरिकाई ।
अवहींतेनाहिंसोहलड़ाई ॥ दो० ॥ सुनिरिपुसूदनकेवचनतिनहँसिउत्तरदीन्ह । मृदुलमनो
हरवयनकहिअश्वहिचाहहुलीन्ह ॥ चौ० ॥ करहुकोटिहयहेतुउपाई । नहिंपावहुविनकियेलड़ा
ई ॥ छलतजिसकलकुटिलताकाजू । सन्मुखसमरकरहुजोराजू ॥ जाकोअश्वदेइकरतारा ।
लेसोआजुमहीकुमारा ॥ होतपरस्परवादविवादू । बढ़योअधिकदुहुंदिशिसंवादू ॥ तब
रिपुनारचारिरघुराई । विनसंग्रामअश्वनहिंपाई ॥ बोलिसुभटसबआज्ञादीही । आपन
मन ... करलीन्ही ॥ लाग्योहोनसमररघुनाथा । चलेबाणदौदिशियकसाथा ॥ देखिपरा
क्रमतासुअपारा । मनरिपुसूदनकीन्हविचारा ॥ अवरणमयन्तशरासनताना । मारयोकुमारता
सुउरवाना ॥ दो० ॥ लागतशरमुरछितभयोउठ्योसँभारिवहोरि । सैनसहितरिपुसूदनहिं
बाणनडारयोफोरि ॥ चौ० ॥ मारिसुभटसबघररणदुबाई । परेसकलशरसेजबिछाई ॥ जहँ

लगभटरिपुसूदनसाथा । पलमहँसबमारेरघुनाथा ॥ कीन्हविकलरिपुघनअतिकोपे । शरनमारि
लीन्होरथतोपे ॥ तबरिपुसूदनअतिशयकरपे । धनुषचढ़ायबाणबहुबरपे ॥ सुरथितकीन्हकठि
नशरमारी । बाजिसहिततबअवनिसिधारी ॥ योजनएकनिकसिरथआवा । पाछेकुँवरऔरयक
धावा ॥ ललकारयोतिनहाथउठाई । फिरहुसुभटकहँजाहुपराई ॥ सरुषवचनसुनिभटसकु
चाने । फिरेत्वरितरिपुदमनरिसाने ॥ कटकसहितआयेअतिदोखा । जहांवीरबहठाढ़सरो
खा ॥ दो० ॥ तानिशरासनकानलगतकरिसलिसारेबान । भयोनशंकातासुउरवीरवीरबल
वान ॥ चौ० ॥ भयोपरस्परबचनसकोषा । दुहुँदिशितमकिउठेद्वौघोषा । इतउतचलेउर
गसमबाना । समरहोनलाग्योभगवाना ॥ रिपुसूदनसुरपतिसमबांके । कुसुमसमानलगैंश
रताके ॥ बहुछलबलकरहारयोवीरा । तबतिनहत्योमांझउरतीरा ॥ लागतशरमुरछितम
हिगिरेऊ । कहुंनिषङ्गकहुंशारँगपरेऊ ॥ गिनेसुभटबाचेबिनमारे । आयेभागितेअबधवि
चारे ॥ जसआयसुप्रभुराउरहोई करहिंवेगिरघुनायकसोई ॥ सहीवचनसुनिसुभटसया
ने । रघुकुलतिलकरामपहिचाने ॥ सबसमाजसबकेसुनआनी । बड़अचरजहिरदयअनुमा
नी ॥ दो० ॥ कृपासिन्धुअशशोचवशभरतहितुरतबुलाय । तातजाबजहँभयोरणदेखहुअ
नुजहिजाय ॥ चौ० ॥तुरगसमेतजीतिरिपुआनो । इतनाकहाताततुममानो ॥ कोअसवीरकीन्ह
रणभारी । मारयोरिपुसूदनहिंमचारी ॥ सुनतशोचउरभयोअपारा । कसवेगिनरिपुसूदन
मारा ॥ कोअधीनहैदेहिंतुरंगा । कियोनतातसमरतिनसंगा ॥ जोबलकरिपौरुषदिखरा
वहिं । सन्मुखतातुम्हारेआवहिं ॥ करिसंग्रामजीतिरणमाहीं । हयसमेतआनोम्वहिंपा
हीं ॥ सुनिमृदुगिराभरतशिरनावा ॥ तुरतसमरकरसाजमँगावा ॥ गजरथसाथिसारथी
लावा । ध्वजपताकवहुतुबनसुहावा ॥ सो० ॥ नायरामपदशीश भरतगमनकीन्हेतुरत ।
कहभुशुण्डिखगईश संगचमोहिणीचारिदल ॥ चौ० ॥ भेसवारगजवदनमनाई । कोकहिस
कैभरतप्रभुताई ॥ संगभूरिभटवरणिनजाई । देखतबनैसुनहुगिरिजाई ॥ पवनसरिसरथ
वेगिचलाई । भयोजहांरणपहुंचेजाई ॥ देखाभटघायलरणखेतू । परेसकलरिपुदमनसमे
तू ॥ अनुजविलोकिवहुतदुखमाना । धरिधीरजबोलेबलवाना ॥ खोजकरहुवैरीवनमाहीं ।
सुनतमोहिंकहुंभाजिनजाहीं ॥ भरतवचनसुनिसुभटसमूहा । खोजनचलेसमिटिकरिहूहा ॥
त्यहिअवसरमुनिबालकवृन्दा ॥गेदेखनमुनिबागअनन्दा ॥ तहँअवलोकिप्रबलकटकाई । चले
भागिटेरतदोउभाई ॥ दो० ॥ जायपुकारेसुवनसबरहेजहांदोउभ्रात । लीन्हेअतिभटभू
पकोउघेरिलीन्हबनपात ॥ चौ० ॥ सुनिकुशलवसेनासबआई । तुरतउठेदोउभटहर्षाई ॥
कसिपटपीततुवनकटिलाई । लीनशरासनहाथउठाई ॥ सियपदवन्दिसुमिरिमुनिराई ।
सिंहउमनिगवनेदोउभाई ॥ जिमिकेहरिनगनागसमाजू । लवहिंदेखिजिमिझपटैबाजू ॥
तसदोउवीरसुनतकटकाई । गयेनागमनविलमनलाई ॥ देखातुरगनागमुनिराऊ ॥ ठाढ़भये
तहँनहिंभयकाऊ ॥ हेरतविपिनसुभटतहँआई । दीखतुरगदोउवीरसुहाई ॥ शोभादेखि
सुभटअनुरागे । भरिभरिनयननिहारनलागे ॥ करहिंपरस्परसकलबड़ाई । धनिविधिज्य
हिअसरूपबनाई ॥ दो० ॥ असशोभानहिंदीखकहुं जहँलगिविधिव्यवहार । सुन्दरतातिहुं

लोकसबइन्हैंदीनिकरतार ॥ चौ० ॥ रूपसराहिसराहिभवानी । बोलेसुभटसभयअनुमानी ॥
तुमबालकमुनितपअधिकारी । यहअनुचितबनुबाणसवाँरी ॥ सरवरितुमराजनकरकरहू । वश
अज्ञानतूणशरधरहू ॥ बाढ़योगर्वबाँधिवनुभाथा । फिरौनिशंककुवँरदोउसाथा ॥ कहतबहुरि
असनीतिबखानी । कीजैवैरआपसमजानी ॥ कहँवेअवधईशसुखरासी । कहँतुमबालकमुनिबन
बासी ॥ भलनकीनहयकोअपनाई । जीत्योसमरभरतलघुभाई ॥ त्यहिसमाननहिंभारतजानो ।
बीरधुरीणसत्यकरिमानो ॥ बिनश्रमतोहिंमारिरणमाहीं । छोरितुरंगअवधलैजाहीं ॥ दो० ॥
एकवीरपुनिभक्तदृढ़शोभाशीलनदीश । बहुरिअनुजरघुवंशमणिजिनमारयोदशशीश ॥ चौ० ॥
मानोजोसिखकुँवरहमारी । सबविधिहैतुम्हरीहितकारी ॥ तुरगसमेतचलोहरषाई । मिलो
सोकहैंअनुजरघुराई ॥ शारदकोटिकोटिअहिराई । महिमाभरतकहतसकुचाई ॥ अतिकोमल
चितभरतनरेशू । करैंक्षमालखिकुँवरवेषू ॥ रिपुसूदनकोवैरबिसारी । फिरैंअवधलैवा
जिसुखारी ॥ कीन्हेंसमरपारनहिंपाऊ । घरबैठेआवैसोगाऊ ॥ भरतसमानवीरजगमाहीं ।
नहिंदेखाकहुंसुनियतनाहीं ॥ सन्मुखजासुकालशिरनाई । ताहिसमरजीतबतुमभाई ॥ त्यागहु
हठइरषाअभिमाना । भरतधर्मधुरभटबलवाना ॥ दो० ॥ तासोंजीतबसमरतुमसजिभूषणसंग्राम ।
अबलगसूझनदुखसुखबोलतबाणीबाम ॥ चौ० ॥ औरवचनतुमसुनोहमारे । सजगहोहुसुनुऋषय
कुमारे ॥ हयहिंभरतआयसुअसदीन्हा । खोजिचोरहयचाहियलीन्हा ॥ जहांमिलैंधरिबांधौआजू ।
यतनसमेतसवाँरोकाजू ॥ कीनचहैंनिजईशरजाई । खाईजासुतासुयशगाई ॥ वयकिशोरमृदुमंजुलगा
ता । देखितुम्हैंनहिंकियउतपाता ॥ कीननकानजोहमसिखदीन्हीं । अबपैहौभलआपनकीन्हीं ॥
असकहिसुभटसरुषह्वैआये । लैकृपाणतबसन्मुखधाये ॥ कुशलवदेखिसुभटरिपुभारी । गदाशूल
तोमरकरधारी ॥ पाछेराखिलवहिकुशबीरा । चापचढ़ायसँयुतकरितीरा ॥ छन्द ॥ गहितीरसंयु
तचापखींचिविलोकिरिपुसेनामहा । छोड़्योकठिननाराचहँसिमानोप्रबलमारुतबहा ॥ लवनि
मेषप्रमाणमेंसबवीररणघायलभये । कहदासचेरेबहुरिकुशलवबागमुनिनायकगये ॥ दो० ॥ ब
चेसुभटदुइचारजेतेभागेगौंपाय । गयेपुकारतभरतजहँव्याकुलवचनसुनाय ॥ चौ० ॥ नाथसुभटजे
आयसुपाई । खोजनलागेहयवनजाई ॥ मिलानचोरनघोड़मुनीशा । फिरेसुभटव्याकुलजगदीशा ॥
मध्यविपिनयकमुनिअमराई । बांधातुरगदीखतहँजाई ॥ बालकदुइतहँकृपानिधाना ॥ खड़ेसजगश
रसाजिकमाना ॥ जानिचोरहयभटकहबानी । रेरेशठतुवआयुनुलानी ॥ तिननकीनकछुहृदयअँदेशा ।
निपटनिरंकुशतनयऋषेशा ॥ सबप्रकारहारयोसमुझाई । तदपिनत्यागकीनलड़काई ॥ भयेक्रो
धवशसुभटगोसाईं । सन्मुखयुद्धकीनबरिआई ॥ क्षणमेंसबयोधासंहारे । तेजपुंजदोउऋषयकुमा
रे ॥ छन्द ॥ दोउतेजपुंजकुमारऋषिसुखधामशोभाकोकहै । मृदुगातसुन्दरवयकिशोरअनंगलखि
सकुचैंसभै ॥ शिरजटामूंजजनेवकुंडलकानअद्भुतसोहई । असकौनजीवसचेतजगमेंजोनदेखतमोह
ई ॥ धनुबाणसुन्दरमानकुलकांरसुवनअतिशोभितभले । अबनाथदेखिविचित्रशोभासकुचनिज
लोकहिचले ॥ दो० ॥ सकलसुभटरणखेतमेंपरेसुरछितजिमान । खड़ेसुभटदोउसमरमेंहृदय
नकछुअभिमान ॥ चौ० ॥ भरतसुन्योसेनासबजूझे । करिविषादयोधनसोंबूझे ॥ चढिरथतुरत
अवारनलाई । चलेतहांजहँमुनिअमराई ॥ सुमिरतप्रभुपदबारहिबारा । करतविविधविधिपंच

विचारा ॥ पहुंचेजहांभयोसंग्रामा । भरतधर्मधुरबुधिबलधामा ॥ विपिनगंभीरमहाअंधि
यारी । भूमिशयनसबसैननिहारी ॥ बड़ेबड़ेमुखियासेनापति । सुरदुर्लभपावनजिनकीगति ॥
सकैनरणसरबरकरिसोऊ । अतिबलवानऋष्यसुतदोऊ ॥ जानिनजायचरितकरतारा । गूढ़अ
सूक्ष्मअबूझअपारा ॥ बोलतरणपणपरतनआगे । धीरजहूकेधीरजभागे ॥ सो० ॥ धीरजधरेहुमु
नीशसहितकष्टकआगूगयो । देख्योसुवनमुनीश घेरेअश्वहिठाढसब ॥ चौ० ॥ त्यागिबागरथबा
जिगावा । सुमिरिरामशिवउमामनावा ॥ चढ़योअश्वधरिधीरजगाढ़े । गयेजहांमुनिशिशुसबठा
ढे ॥ आवतदेखितुरगअसवारा । भगेसकलऋषीशकुमारा ॥ कुशलवपांवनपाछेडारा । खड़े
बन्धुदोउकरैंविचारा ॥ मारेजोभटप्रथमरणमाहीं । तासुसहायऔरकोउआहीं ॥ जोनृपयहकर
जोरसुरीती । मांगेअश्वदेहिंसुननीती ॥ जोकछुबलप्रभावदिखरावैं । तोसजायअपनीयहपावैं ॥
असकहिवीरदोउबलधामा । खड़ेबागछविकोटिनकामा ॥ तबलगजायभरतनियराने । पाखिसरो
जबाणधनुताने ॥ दो० ॥ ताजनमारेअश्वकेपराचिउठाजिमिआग । खाईनांघतबागकोनहींबार
कछुलाग ॥ चौ० ॥ मध्यबागलखिअश्वसवारा । बढ़िआगेतबकुशललकारा ॥ अबसेजोप
गआगेधरहू । यमपुरगमनसहितहयकरहू ॥ जबसरोषबोलेकुशवीरा । रोंक्योबागभरतरणधी
रा ॥ सावधानहैभरतभवानी । बोलेअतिकठोरकटुबानी ॥ रेहयचोरकुपथमनराता । जसमु
खअहैकहसिकिनबाता ॥ छोटेबदनकहसिकटुबानी । क्यहिबलविपिनफिरसिअभिमानी ॥
गुणअवगुणतुबकरौंनकाना । जसबैरीतसबालकजाना ॥ वचनकहतनहिंशंकातोहीं । कहै
कठोरवचनबहुमोहीं ॥ सोसुनिमोहिंक्रोधनहिंसपने । जाहुकुमारकुशलघरअपने ॥ दो० ॥ अ
बलौंक्रोधनकीनमैं सुनोवीरबलवान । केहरिकेरस्वभावनहिंबधिशृगालखरश्वान ॥ चौ० ॥ अस
कहिभरतमौनह्वैरहे । कुशमुसुकायबहुरिकुछकहे ॥ सोसुनिभरतअधिकरिसमानी । बधौंनतोहिं
सुवनमुनिजानी ॥ ममतामोहतुरगतजिभागो । अतिसुकुमारवीररसत्यागो ॥ शिशुविचारिमैंबहु
तसंभारा । निपटकालवशभयसिकुमारा ॥ तोहिंनिपातमखतुरगसमेता । जाउँअवधजहँकृपानिके
ता ॥ यद्यपिअसविचारमनमोरे । करौंनसांचविलोकततोरे ॥ कुशलवहँसेसुनतरिपुबानी । मिला
नरेशहमैंयहज्ञानी ॥ जोउपदेशनगुरुनबतावा । सोहमआजुभूपसनपावा ॥ वैरबिसारिलीनहय
चाहा । सोगतियहांअगमनरनाहा ॥ दो० ॥ आनोबोलिसहायकिमि विधिहरिहरअमरेश । जब
लगतनपरशीशहै मिलैनअश्वनरेश ॥ चौ० ॥ असकहिसजगभयेदोउभइया । सुमिरिमुनीपदपं
कजमइया ॥ चापचढ़ायहाथमेंकीन्हा । भाथाबांधिविषमशरलीन्हा ॥ पाछेतुरगराखिभेठाढ़े ।
महाबलीहथियारनगाढ़े ॥ युद्धविरुद्धदेखिदोउवीरा । सहमेंभरतभूपरणधीरा ॥ लगेविचारकर
नअवनीशा । येनसुवनऋषिराजमुनीशा ॥ अवशिराजवंशीहैंदोऊ । असशोभानहिंजगमेंकोऊ ।
मुनिवरवेषबसैंवनमाहीं । छविनिधानलखिकामलजाहीं ॥ रिपुसूदनमदभंजनहारा । नहिंकोउवी
रसकलसंसारा ॥ तेजपुंजअतिशयदिखराई । मनहुंसंगसैनासमुदाई ॥ सो० ॥ विनकीन्हेसं
ग्राम हाथनलागैतुरगमख । असविचारिबलधाम कोपिलीनधनुबाणकर ॥ चौ० ॥ भुजाउठायपु
कारेयोधा । आयेजहँतहँसैनसक्रोधा ॥ कुशविलोकिरिपुसैनसमूहा । आयेचहुंदिशियूथनजू
हा ॥ लवहिसौंपिसुरघाभटभारी । सन्मुखराजनआपसिधारी ॥ कुशअरुभरतदोऊबलधामा ।

लड़ैंभवारिभूमिसंग्रामा ॥ दुहुंदिशिचलैंबाणअसितीछे । भूल्योकोउपगधरैनपीछे ॥ शरनभ
येतनझांझरदोऊ । तदपिनहटैंबीररणकोऊ ॥ धनुषबाणडारयोयकसाथा । भिरेदोऊकृपा
णलैहाथा ॥ सुनहुखगेशकाकपतिकहहीं । दोउअपायबलशरतररहहीं ॥ जूझेसुभटरहेजेसंगा ।
परेभूमिरणशोणितअंगा ॥ छन्द ॥ परेभूमिशोणितअंगभटबहुरुधिरकेनारेबहे ॥ डरपेसुरासुर
देखिरणनयेभागिनहिंकोउथिररहे ॥ बहुगृध्रखालमृगालकेहरिमुदितभोजनपायकै । बैताल
भूतपिशाचयोगिनिपियैंरुधिरअघायकै ॥ कटकटहिंएकहिएकवीरकठोरभयदिखरावहीं ॥
नाचैंबजावैंतालगतिरणरागसुन्दरगावहीं ॥ संग्राममहिदोउवीरकोपेसमकिधनुशायकगहा । भये
विकलजीवसचेतसबनाहिंधीरत्यहिऔसररहा ॥ सो० ॥ समरभरतकुशवीरदेखासुनानअसकहूं ।
भरद्वाजमुनिधीरसुनोकह्योजाबालिअस ॥ चौ० ॥ बहांसुभटसबलवसंहारे । बहेअनेकरुधिरनद
नारे ॥ तबलवअनुजओरत्यहिकाला । देललकारलड़ैमहिपाला ॥ बड़ीभीरकुशऊपरजाना ।
शरसन्धानचल्योबलवाना ॥ दूरहिसेबोलेलववीरा । आयेपुनिजहँकुशरणधीरा ॥ दीखअनुजक
हँपाछेठाढ़ा । लागेलड़ैअधिकबलबाढ़ा ॥ बाणप्रहारभूपरथतोपी । समरअजरदोउअतिशयको
पी ॥ उमाभरतसमवीरनकोऊ । सकैनआजजीतरणसोऊ ॥ जबहिंकोपिकुशखाँड़योबाना । चु
भ्योभरततनव्यालसमाना ॥ लागतबाणभयोउरपीरा । परेमुरछिस्यन्दनवरवीरा ॥ दो० ॥ देखि
दशाभागेसुभटबचेजेजीवतखेत । जायपुकारेतेसभीजहँभ्रुलषणसमेत ॥ चौ० ॥ शोणितअंगत्रा
सउरभारी । जायअवधपुरकीन्हपुकारी ॥ मुरछितभरतसचिवमुनिकाना ॥ भयोविकलनहिंजायब
खाना ॥ पुनिधरिधीरतुरितचलिआयो । भरतदशारघुबरहिसुनायो ॥ सकलसमाजसहितरघुराई ।
सचिववचनसुनिरहेअरगाई ॥ विकलभईसुनिसुनिसबमाता । कहाविरंचिकीन्हउतपाता ॥ पुर
वासीसबअतिअकुलाने । सुनेहुजोजहांतहांबिलखाने ॥ पुरजनशोचशोचबशजानी । गुरुवशि
ष्ठबोलेमृदुबानी ॥ तुमसर्बज्ञईशरघुराया । तुमहिंनसपर्योव्यापीमाया ॥ धरहुधीरअसकह्योमुनी
शा । कीजेकाजयज्ञअवधेशा ॥ सो० ॥ सुनहुमुनीशसुजानधरोधीरकरुणाअयन । विधिगतिल
खिबलवानसमुझिबुलायेअनुजलघु ॥ चौ० ॥ लक्ष्मणकहँप्रभुतुरितबुलाई । हृदयलगायनिकट
बैठाई ॥ बोलेसरलमनोहरबानी । दीनदयालसुनहुमुनिज्ञानी ॥ साजिसैनयहिऔसरजाई । दे
खोकहँजूझेदोउभाई ॥ रिपुसूदनभारतरिपुघाई । हतरणखेतअश्वमखलाई ॥ जोनिजजान्योकु
वँरऋषीशा । कियोनरणतिनसंगफणीशा ॥ जोत्तत्रीकरवेषछिपाये । फिरैंवनमुनिवेषबनाये ॥
करबसमरनहिंकरबअदारी । आनयहुवेगतुरमबलिहारी । सुनिलक्ष्मणआयसुअवधेशा । चले
नायपदपंकजशीशा ॥ लीनसैनचतुरंगभवानी । जेसपनेहुंरणहारिनमानी ॥ दो० ॥ पहिरांत्रवि
घसनाहसबशूलशक्तिलैहाथ । सन्मुखश्रीरघुनाथकेसादरनावहिंमाथ ॥ चौ० ॥ तबलक्ष्मणबो
लेकरजोरी । बाणीमधुरसुधारसबोरी ॥ जोकरिकपटभूपसुतकोऊ । करहिंठभीवनमेंबसिदोऊ ॥
तोवधकरवनवेषविचारौं । तुरगसमेतनिकेतसिधारौं ॥ जोमुनीशसुतआहैंदोऊ । तोजसआयसुसा
हबहोऊ ॥ तसमैंकरौंजायबनमाहीं । अनुचितकहिनसकौंप्रभुपाहीं ॥ सुनिरघुनाथविनयलघुभ्राता ।
बोलेविहँसिमधुरमृदुबाता ॥ सुनोवाततुमपरमविवेकी । कसनकहोपरमारथटेकी ॥ सोईकरबामिलै
जेहिकाजू । आनभांतिसबहोयअकाजू ॥ गहिपदकंजमंजुरघुराई । लक्ष्मणचल्योसभाशिरनाई ॥

दो० ॥ सुमिरिशिवाशिवचरणोरथ सन्मुखसैनचलाय। बारंबारसँभारिउर पदपंकजरघुराय ॥
चौ० ॥ चलीकटकलक्ष्मणसँगनाहू। सैनाप्रबलत्रासनहिंकाहू ॥ वीरनभारकमठकूकाँपू ॥
मेरुकूरमेहयगजटापू ॥ करहिंकोलाहलभटमगजाता। आगेयानरायसमुभ्राता ॥ निकटविपिनरि
पुआयेजबहीं। बोलेवचनलषणअसतबहीं ॥ हैसबमौनफिरहुबननाई। लेहुखोजहयरिपुदोउभा
ई ॥ देख्योजहांनबोल्योभाई। शब्दआयमोहिंकहोसुनाई ॥ तबमैंविपिनघेरिचहुँओरा। सहजै
बांधिलेउँहयचोरा ॥ असकहिकीन्हबिदासबबीरा। बीरधुरीणलषणरणधीरा ॥ सुभटजबहिंबन
पैठनलागे। कसमसातपगपरैनआगे ॥ छन्द ॥ पगपरैनआगेसुभटकेलखिसघनबनभारीमहा।
यकएकबीरधुरीणसमरथधीरनहिंकोउरहा ॥ निजनाथकाजविचारिजियपरतेजवनपैठीसही। ते
हिसमयसैनाबिकलतानहिंजातकछुमोसोंकही ॥ सो० ॥ जानिरामकोकाज तापरआयसुलक्षम
ण। खोजनलागेबाज जहँतहँबनमेंपैठिसब ॥ दो० ॥ सकलविपिनयकओरतेचलेसुभटहुघिलेत।
कहूंनपायोअन्तहय दोउकुँवरसमेत ॥ चौ० ॥ हेरतविपिनफिरतकटकाई। कहूंखोजमखबाजिनपा
ई ॥ ठाढ़परस्परसबपछिताहीं। रामरामकहिकहँअबजाहीं ॥ जोबिनखोजतुरंगहमजाई। कौन
बदनलक्ष्मणहिंदिखाई ॥ नहिंसुधिभोजनअरुजलपाना। फिरहिंविपिनसबव्यथाअपाना ॥ ते
हिमाएकसुभटबिलगाई। मगोजहांबनटेकसुहाई ॥ तहांदेखिसुन्दरमुनिनागा। तरुरसालबरपल्ल
बलागा ॥ सुरपतिबागनपटतरआवा। तुरगसमेतचोरइयपावा ॥ चल्योतुरतलक्ष्मणकेपासा। जा
निविपिनहयचोरनिवासा ॥ मिलेसकलभटसुभटनिहारी। पूंछनलागेखबरिसुखारी ॥ दो० ॥
मुदितभयेसुधिपायहय सहितचोरबनमाँझ। सीघ्रचलेलक्ष्मणजहांगयेदिवसभैसाँझ ॥ चौ० ॥
लक्ष्मणआयचरणशिरनाई। सुधिमखबाजिकहोहरषाई ॥ महाटेकबननाथसुहाई। भानुप्रतापन
सपनेहुजाई ॥ देखातहँयकमुनिफुलबारी। बाजिसहितदोउचोरनिहारी ॥ पत्थनगजरथहयरच
शेखा। पातपातसबबनहमदेखा ॥ सत्यवचनसुनिसुभटअनन्ता। संगकहोभटबोलितुरन्ता ॥
निजस्यन्दनसाइनीपुकारी। चढ़ेतुरगलक्ष्मणबलधारी ॥ चतुरंगिणीकीनीसमुदाई। कछुआगे
कछुपाछेजाई ॥ करिआगेसोसुभटभवानी। जिनवनशोधिअश्वसुधिआनी ॥ कसमसातभटमारग
जाहीं। भ्रमवशचौंकदेखिपरछाहीं ॥ छन्द ॥ चौंकैसुभटबनपातखड़कतपाँवनहिंआगेपरैं। जेपाय
अघजीवनविपिनछिनचलैंछिनफनफनकरैं ॥ अकुलायभटपछितायतहँबाँदेवइछमनावहीं। घेरे
लषणसैनासहितपुरचलैंतहँफिरआवहीं ॥ सो० ॥ भयवशभेसबबीर देखिविपिनदारुणोहिये।
लक्ष्मणसेरणधीर कांक्षोआनिशिनाइये ॥ दो० ॥ शारदूलकेनादसुनि जहँतहँसुभटडेराहिं। मार
गमेंकसमसभई बिनाजीवसबजाहिं ॥ चौ० ॥ खड़खड़ाहिंशूकरसुनिचालू। पिहँकैंगजटहुकैंकपि
भालू ॥ केहरिनादचहूंदिशिहोई। महासघनबनआयनजोई ॥ कांपेउरलक्ष्मणरणधीरा। अमि
तशत्रुजसहोयअधीरा ॥ सम्मिततजीवीरताभारी। जनुठगजीहलीन्हिज्योंमारी ॥ रहानतेजनदर्प
रकाशा। तजीसबनजीवनकीआशा ॥ घेरिलीनचारोदिशिवागा। वादविनोदहोनपुनिलागा ॥
लवकोराखिअश्वरखवारी। कुशसन्मुखहैनृपललकारी ॥ कोतुमकहोकहांतेआवो। बाहर
रहोनबागमँझावो ॥ दो० ॥ असकहिचापचढ़ायकुश बोलेवचनसकोपि। कसीचारिबदितुरग
सेभेवाडेपदरोपि ॥ चौ० ॥ ललकारेबाजैअसवारा। कोतुमयहांकहांपगधारा ॥ बैरिजानितातें

कटकाई। अतिनिशंकआवैफुलआई ॥ देखिभीरसेनासँगभारी ॥ मैंजानाकहुँअन्तसिधारी ॥ सो
अरुझेतुमहमसनआई। कहांकुशलनृपकहोसुनाई ॥ फरकरहोजनिपैठोबागा । हमहिंतुमहिंअब
लागीलागा ॥ असमुनिलषणरांकिहयराखा । योधनसोंअपनेअसभाखा ॥ रहोठाढजहँतहँसब
बीरा। रिपुबलखिजनिहोहुअधीरा ॥ जोआपुहिहयदेहिंमँगाई। तौनउचितसँगकरियलड़ाई ॥
जोरछुबलपौरुषलखिपाई । तोबांधोहयलेहुछड़ाई ॥दो०॥ रामअनुजबाणीविमल सुनिहरषे
सबबीर। सजेसमरहथियारभट खड़ेबागकेतीर॥ चौ० ॥ कहोलषणसुनिऋषयकुमारा। कसबां
ध्योतुमअश्वहमारा ॥ तुरगबांधिकरिपौरुषभारी। भारतरिपुसूदनरणमारी ॥ कौनमोहवाजैपर
तोहीं। मूरखकटुकवचनकहेमोहीं ॥मैंपुनिनीतिसमुझिमनमाहीं । अबलगक्रोधकीनउरनाहीं ॥
अबहूंकुशलतुरगमोहिंदीजै ॥मुदितपयानभवननिजकीजै ॥ देखिवेषमुनिवरदोउवीर। राख्यो
सौंकिसुभटरणधीरा ॥ सोतुमनहिंमुनिबालकदोऊ॥ शोभाअमितभूपसुतकोऊ॥ तुमसननिडर
कहांमुनिजाये। असरणतेजकहांउनपाये ॥ कछुअपराधकीन्हतुमभारी। सोविचारिपितुदीननि
कारी ॥ दो० ॥ धनुषबाणबँधोफिरौऋषिमुनिवेषबनाय । करहुविपिनबसिदिवसनिशिमोह
त्रिवशअन्याय ॥चौ० ॥ अमियवचनलषणकछुभाषे । सोसुनिअधिककुवँरदोउमाषे ॥ भेसरो
षदोउबन्धुविशेखी। बोलेवचनभूपदिशिदेखी ॥ कहतबचनलघुशोभानाहीं । देखोनृपविचा
रिमनमाहीं ॥सोनहिंशोचहमैंकछुराजा। जोतुमकहहुतुमहिंसमछाजा ॥ करहुविलँबकसरचहु
उपाई। मारिहमैंहयलेहुछड़ाई ॥ जगअसबीरकहांसुनुराजा । हमकोजीतिजायलैबाजा ॥ब्रह्म
विष्णुशंकरसेमाढ़े।सोसन्मुखरणहोहिंनठाढ़े।तहँकौनपुरुषारथआना । जाहुकुशलभूपतिबल
वाना ॥जोपैमरणसमरजियठानी । होहुसजगनृपसुनिममबानी॥सो०॥असकहिदोउरणधीर
धनुषचढ़ायसिधारिशर । जहांअनुजरघुवीरपहुँचेसन्मुखजायतब ॥ चौ० ॥ लक्ष्मणदेखिसरुष
दोउवीरा। चापबाणकटिकसेतुणीरा ॥ कालसमानठाढ़दोउआगे। मानोंजीवचहतलैभागे ॥
यद्यपिअनन्तमहाभटमानी । तदपिनधीरजरहाभवानी ॥ कछुधीरजधरिआपसँभारी । बोलेवच
नसमयअनुहारी ॥ इयहिंतुमहिंकतसोहलड़ाई। अबहुँकुशलहयदेहुमँगाई ॥ सुनतवचनतमकेउ
दोउभाई। रेमहीपत्वहिंलजनआई ॥जबलगजीनरहैघटमाहीं।तबलगअश्वदेबनृपनाहीं॥हाथ
जोरिपदप्राणनिकारी। सन्मुखविनतीकरहुहमारी ॥ जोकदापिहमरेजियआवै । तोकहुँतुरगभूप
तैंपावै॥दो०॥ऐसेअनुचितवचनबहुकहाजबैदोउवीर। भयोक्रोधसुनिलषणके बोलेगिरागँभी
र॥चौ०॥रेबालकहुअबूझअयाना। लखिस्वरूपमुखवचनसयाना॥मैंतबहिंमुनिवरतनयविचा
री। मबलगनहुतैक्रोधसँभारी॥ अबनतजोंशठतोहिंयहिकाला । मारिभूमिरणकरौंनिहाला ॥
शपथमोहिंकोशलपुरभूपा। अजितअनामयअगुणअरूपा ॥देखततोहिंलेउँमखघोरा। जाउँअवध
शत्रुसुनुप्रणमोरा।।हमक्षत्रीक्षत्रीसनलड़हीं। द्विजमुनिवरऋषितापसडरहीं ॥ सोतुमनहिंमुनिबा
लकदोऊ! रूपाछिपायभूपकुलकोऊ ॥इतनाकहतलषणरणधीरा। सजगभयेहगपुलकशरीरा॥
मुखअनुहारदेखिअवधीशा। लागेकरनविचारफणीशा ॥दो०॥ कहांतनयअसदीठमुनिरहैठाढ़
शरजोर। कायारघुवरवदनकीदेखकहतमनमोर ॥ चौ० ॥ यदिबनबसतबहूंवैदेही । सुवनमाता
पवनीयंतेही ॥ असकहिमधुआयसुअनुमाना। सुभटबुलायकओलरबाना। लियतधरछुदूनांकरँ

जाई । बाँधिकुवँरहय लेहुछुड़ाई॥ असमुनितुभटचलेत्यहिओरा । करिमृगनादमहाअतिघोरा॥
लीनघेरिचहुँदिशिमुनिबागू । अतिसभीतपगपरैनआगू॥ कुशविलोकिसेनारिपुआई । बिहँसिश
रासनतुरतचढ़ाई ॥ शतशतबाणजोरियकसाथा । मारयोसुभटनउरभुजमाथा ॥ लवनिभ्रमाण
सुभटसबछीजे । देखिदशालक्ष्मणतबखीजे ॥ तुरगत्यागिउतरेरणधीरा । लीनसकोपहाथध
नुतीरा॥ दो० अतिसकोपकहिवचनकटु छांडेबिशिखप्रचण्ड । कुशबलवंतसोबाणनृप काटिकी
न्हशतखण्ड ॥ चौ० ॥ लक्ष्मणदेखिभतापसकाने । आपतेसरिसबीरदोउजाने॥ दूसरबाणको
पिपुनिमारा । लवकुशविहँसिकाटिमहिडारा ॥ होहिंनिफलइमिबाणभवानी । जिमिनास्तिककी
कीहितहानी ॥ कुशविलोकिभूपतिरिसिआना । आपनधनुपश्रवणलागिताना॥ नृपऊपरबरषा
शरकीन्ही । समरसिखावनबहुबिधिदीन्ही॥ उतलवसुभटजेभूपतिसंगा । मारिशरनकियेशोणि
तअंगा॥ कहुंभुजमुण्डकहूं अधरुण्डा । धरणिगिरहिंधुनिहोयप्रचण्डा॥ बहुतगिरैंबहुउठैंसँभारी ।
चिघरैंबीरनादकरिभारी ॥ बनगिरिखोहनदीनदनारे । शोणितलेपूरणभयेसारे॥ छन्द ॥ सारे
नदीनदनारकन्दरखोहशोणितसोंभरे । कहुंकतहुं भारनभारसूकैसुभटसबघायलपरे॥ अधिकार
आमिषरुधिरलखिबनजीवसबआयेतहां॥ भरिउदरखायअधायमनँतहँफिरैघरजाकरजहां॥सो०॥
लवनिएकपरमानसकलवीरमहिमेंपरयो । चलेजहांमियमानकुशरणधीरबड़ोअनुज॥चौ०॥ल
वतहँआयअनुजपदबन्दे । मिलिसप्रेमदोउबन्धुअनन्दे ॥ शोभितधनुषबाणयुगहाथा । घेरयोआ
यअनुजरघुनाथा ॥ मारयोबाणबज्रहैलागे । उचकिउचकिघोड़ेरथभागे ॥ घायलभेघोड़ेरथटू
टे । मातलिमरेपताकाटूटे ॥ विरथभयेलक्ष्मणखगराई । बूझिनजायरामप्रभुताई ॥ कहँलक्ष्म
णकहँबेदोउबीरा । कहँअगस्त्यकहँसिन्धुगँभीरा ॥ प्रभुसमरत्थतिहूंयशगावा । असकहियाज्ञव
ल्क्यशिरनावा ॥ तबसन्मुखह्वैकुशललकारा । उठहुसँभरिमहिपालकुमारा ॥ दूसररथमाँगौयुव
राजा । साजहुसबभूषणरणसाजा ॥छन्द॥ संग्रामसाजिबनायभूपतिसजगह्वैअबआइये । जाको
विधातातुरगदेसोआजरणकरपाइये॥यहिभांतिवारहिंबारजबललकारकुशबानीकहे । सकुचेल
षणलखिरिपुबलीकरिचिन्तवनठाढ़ेरहे ॥ सो० ॥ रहानधीरखगेशबीरधुरीणअनन्तअस । कौ
तुकरधारमेशकहाकागजानैकवन ॥ चौ० ॥ असकहिकुशलक्ष्मणअनुमाना । बिनमारेमारातेहि
जाना ॥ कछुकसुभटमारेलवबाचे । फिरेतेकालशीशजेहिनाचे॥ कुशसन्मुखआयेनियराई । मा
रिशरनतेहिधरणिसुवाई ॥ गिरिजासनअसकह्योमहेशू । दुश्चौहिणीसुभटसँगशेशू ॥ तेलक्ष्मण
सारथीसमेता । अबलगबाचिरहेरणखेता ॥ तबसारथीअपररथआनी । बहुरिचढ़ेरथलषणभ
वानी॥ सोअबहोनचहतबिनमाना । जबकोपैंदोउभटबलवाना॥ प्रभुकारजलखिजोतनुजाई । सब
प्रकारमोहिंनेकभलाई ॥ असउरमंत्रदृढ़दायभवानी । लषणचलेशरशारँगतानी ॥ दो० ॥ जबैल
षणचढ़िअपररथगयेजहांदोउबीर । उत्तरप्रतिउत्तरभयोबोलेदोउरणधीर ॥ चौ० ॥ मारुपरस्प
रहोयभवानी । दोउरणधीरवीरअभिमानी ॥ बाणचलेदुहुँदिशिअतितीछे । छेदिअंगनिकसेह्वै
पीछे॥ पहरदुइकयहिभांतिभवानी । दोउवीरनरणशंकरठानी ॥ दोउघायलतनशोणितअंगा ।
रुधिरप्रवाहबहैसबअंगा ॥ कुशजान्योभूपतिरणकोपा । मारिशरनतेहिक्षणरथतोपा॥ जोइजोइ
शरलक्ष्मणबलवाना । घावकरतकुशअंगसमाना ॥ सोइसोइबाणकाटिपटपोंछा । बहुतगहिर

बहुलागेओझा ॥ यदपिघावकुशअंभरदेहा । तदपिनकुशमनकछुसन्देहा ॥ खींचिशरासनशर
सन्धाना । बोलेगरजिमहाबलवाना ॥ दो० ॥ सजगहोहुमहिपालअबबहुतमचारेमोहिं । शपथ
मोहिंमुनिपदकमलआजुनयाँरणतोहिं॥ चौ० ॥ असकहिछांड़ेविशिखकराला । लागेतनलक्ष्मण
हैकाला॥लागत्राणहृदयअतिकारी । जूझेरणलक्ष्मणबलधारी॥मुरछित्रिलोकिभूपरणधीरा ।
निकटगयेकुशलवदोउबीरा ॥ देखानिपटकुसाजमहीपा । अन्तःकरणबुझानीदीपा ॥ तबदोउ
बन्धुपूजिरणखम्बा । कीनगमनगृहजहँसियअम्बा ॥ देखाजायऋषयफुलवारी । पातपातचहुँ
ओरनिहारी ॥ बाँधादेखतहांमखघोड़ा । भवनचलेहियहर्षनथोड़ा ॥ आयमातुपदवन्दिसुखा
री । पायअशीशभयोसुखभारी ॥ घायलसुवनविलोकिभवानी । जनकसुतातबरोदनठानी ॥
छन्द ॥ जबरोदनठानीसियाभवानीविकलभयेवनजीवमुनी । धरिविप्रस्वरूपामहाअनूपा
आयेसबवनदेवतनी ॥ धीरजधरअम्बाहेजगदम्बासुखीरहैंदोउपुत्रसही । बहुविधिसमुझा
ईकथासुनाईगयेभवनअसबातकही ॥ सो० ॥ प्रसनदेवनिजमानअमितदेखासियतनयकुल ।
करतबचनपरमानसदासर्वअतिसुखीतुम ॥ चौ० ॥ इतनाकहिवनदेवसिधाई । भैसियशुद्धसुव
नउरलाई ॥ चूमिचाटिअतिआदरहेतू । पूँछनलागिकथारणखेतू ॥ जोइजोइसियपूँछाइतिहा
सू । सोइसोइकह्योनहर्षहिरासू ॥ देखिचुधितसियदोऊबारे । दीनमलीननजाहिंनिहारे ॥
सूखेवदनक्लाटमुखलागी । कांपतदेहभूखकीआगी ॥ तुरतउठीलीन्हेकरथारी । धरिपकवान
लायमहतारी । लागेजेवनदोऊभैया । मुदितपियारकरैसियमैया ॥ सुखीभयेकरिभोजन
नाना । नींदविवशकछुदृगअलसाना ॥ सूतेपलँगतुरितदोउभाई । भईसुखीसियशोचविहाई ॥
दो० ॥ यामएकनिशिरहीजब तबैउठेदोउभ्रात । गावैंयशरघुनाथशुचि जोमनशब्दसुहात ॥
सो० ॥ सुनिमुनिशुभइतिहास गूढ़महायहचरितवर । शम्भुउमाकैलास कहाकागसनविहँग
तव ॥ चौ० ॥ आगेचरितसुनोगिरिजाई । अतिअगूढ़नहिंगायसिराई ॥ यज्ञसभा
बैठेरघुराई । भीरबड़ीऋषिमुनिसमुदाई ॥ राजनीतिअरुवेदपुराना । कहहिंवशिष्ठकरैंसब
काना ॥ सुन्दरजपकरभागसँवारैं । पढ़िपढ़िमंत्रअनलमहँडारैं ॥ तहँप्रभुकहअसवचनसप्री
ती । आयनलषणबहुतदिनबीती ॥ तेहिअवसरनभतेभैबानी । जूझेरणलक्ष्मणहमजानी ॥
योधासंगबचेनहिंकोऊ । मुरछिपरेमारेउनदोऊ ॥ एकनबचेसुभटसमुदाई । जोयहखबरअ
वपहुँचाई ॥ अजरअमररणवेदोउबारे । सुभटनातिहुंपुरजीतनहारे ॥ सो० ॥ वाणीसुन
नअकाश त्राहित्राहिकहिलोगसब । शोचेप्रभुसुखराश उमादशासुनअनुजलघु ॥ चौ० ॥
गुरुसमीपजोरेदोउहाथा । बोलेमधुरबचनरघुनाथा ॥ नाथकहियजसहोयउपाई । करौंसोई
परमानरजाई ॥ शोचविकललखिकोशलराया । मुनिनायकविधिवतसमुझाया ॥ नहिंवि
षादकरऔसरआजू । धीरजधरहुभूपशिरताजू ॥ सैनसँवारिगमनवनकीजै । कहँजूझेभाइ
नसुधिलीजै ॥ लखिआयसुमुनिवररघुराई । सचिवसुमन्तसमीपबुलाई । मखआरम्भपूजह
यछांड़े । कीनसुभटतेहिसँगअतिगाढ़े ॥ सोहयअबलगफिरयोनताता । खेतरहेसँगतीनिहुँ
भ्राता ॥ जाउँतहांगुरुआयसुदीना । साजहुसैनसचिवपरबीना ॥ दो० ॥ लवनिएकपरमान
मोहिं बीतैकल्पसमान । करियबिलम्बनतातकछु कीजैवचनप्रमान ॥ चौ० ॥ सुनतसचिवरघुना

थसुबानी । गहिपदविविधभांतिसनमानी ॥ आयसुनाथशीशपरलीन्हा । उचितविनयचा
हौंकछुकीन्हा ॥ जोआयसुपावौंरघुराई । तौकछुकहौंचरणशिरनाई ॥ सचिवविनयसुनिरघु
कुलकेता । बोलेवचनविवेकसमेता ॥ कहहुतातजोमनअनुमाना । जानौंतुमकहँतातसमाना ॥
सुनिमृदुगूढगिराभगवाना । सचिवसुमन्तचरणलपटाना ॥ नाथभयोममउरदुखभारी ।
सेवकआछतआपुसिधारी ॥ आयसुहोयजाउँरघुनाथा । जूझेअनुजजहांहयसाथा ॥ जस
आज्ञादेइयमोहिंस्वामी । सोईकरबचरणअनुगामी ॥ सो० ॥ सचिववचनसुनिराम बारबार
आदरकिह्यो । तुमसबपूरणकाम रहहुअवधअसरामकहि ॥ चौ० ॥ मैंअबजाउँवहांसुनुताता ।
देखौंजायदशासबभ्राता ॥ कोअसवीरभयोजगभारी । जोरणखेतअनुजसबमारी ॥ देखहुँवो
नद्वीपसोंआयो । जोवनमेंअसरारिमचायो ॥ जोमुनितनयतोकीनकुचाली । जोपैभूपतोमणम
तिपाली ॥ देखिसचिवरुखदीनदयाला । तुरतगयोजहँहयगजशाला ॥ साजहुतुरगमतँगअति
भारी । रथसुखपालविमानसवारी ॥ फिरेदूतकोशलपुरखोरी । भेभटसजगहरषनहिंथोरी ॥
साजिसमरहथियारभवानी । भेयकठौरनजायबखानी ॥ दो० ॥ तबसुमन्तपदकमलप्रभु गहे
जोरियुगपानि । भईतयारीसैनप्रभु असकहिविविधबखानि ॥ चौ० ॥ नित्यक्रियाकरितबरघु
राई । पूजिमहेशमुदितशिरनाई ॥ गजरथचढिरघुनाथमुनीशा । बोलिसुमन्तकह्योअवधेशा ॥
राखबरुखमुनिनायककेरी । जोमुनिकहैंसोकरबनबेरी ॥ करिआगेसबसुभटभवानी । हांक्यो
रथमातुलरुखजानी ॥ चलेसाथअंगदहनुवीरा । जामवन्तयोधारणधीरा ॥ चलतराम
बहुशकुनसुहाई । कोकहिसकैवीरसमुदाई ॥ आश्रमबालमीकिनियराई । देखिटेढवनसु
भटडेराई ॥ धायखातजिमिकालकराला । ठहुँकैकेहरिविविधविशाला ॥ देखिविपिननहिं
धीरजहोई । यहवनकहोजायकिमिकोई ॥ सो० ॥ लखिवनमहागँभीर परैनआगेपाउँकोउ ।
कृपासिन्धुरघुवीर बोलिसुभटअसवचनकह ॥ चौ० ॥ धीरजधरिबैठोवनमाहीं । वनचरलो
गनकोउसमुहाहीं ॥ खोजहुतुरगडरहुजनिकाहू । भयतजिसकलविपिनमहँजाहू ॥ पावो
खोजजहांमखबाजू । आनहुवेगिनहोयअकाजू ॥ सुनिआयसुजहँतहँकटकाई । कीनप्रवेश
तुरितवनजाई ॥ खोजनलागेतुरगमुनीशा । योधामहँभटसँगअवधेशा ॥ नदीखोहगिरि
कन्दरभारी । पातपातबनसकलनिहारी ॥ पगपगशोधतसुभटसयाने । जाहिंचलेवनसघन
समाने ॥ फिरहिंसुभटवनमेंसबधावा । खोजतुरगकाहूनहिंपावा ॥ सुनिमुनिवरव्याकुल
कटकाई । देख्योफिरतएकअमराई ॥ दो० ॥ तहांवाजिमखदेखतिन खड़ेसुवनदुइचार ।
बोलेसुभटविनीततब मुनिबालकननिहार ॥ सो० ॥ सुनहुतनयमुनिराय सुन्दरवाजिअनूप
अति । कहिनरेशसोंजाय लीनेहुमांगितुरंगयह ॥ चौ० ॥ सुनियहवचनतुरगरखवारे । उठे
सकोपिनयनअरुणारे । बोलेउचितसुनोयहभीरा । तुमकेहिहेतुफिरोवनवीरा ॥ निजभुज
बलहमलीनतुरंगा । मारेअमितअनीचतुरंगा । सोतुमकहतकिगायबजाई ॥ कोउनरेशहि
लीनरिझाई ॥ असससन्देहतोलेहुलड़ाई । ईशदेयसोलेयबड़ाई । बचनपरस्परसुन
सुनगाढे । रहेदोउकुँवरउभाकहुँठाढे ॥ धायेसाजिशरासनबाना । परमधीरदोऊबल
वाना ॥ भीरदेखिमुनिवरफुलवाई । आयेसीघतहांदोउभाई ॥ रखवारेनकीसंकट

देखी । उठेतमकिदोउकुवँरविशेखी ॥ छन्द ॥ भाक्रोधदोउरणधीरमुनिवरचापशर करसोहई । नखशिखअनेकमयंकशोभाकामरतिलखिमोहई ॥ बोलेसकोपविलोकियो धातुरतसम्मुखजायकै । असकौनकीन्हअनीतिमूढहुबागघेरेहुआयकै ॥ तजिबागजाहुपरा यजहँतहँजोभलाअपनाचहहु । नहिंहोहुसकलपतंगदीपकजोइहांठाढेरहहु ॥ असकहि बहुरिकुशधनुचढायेविषमशरजोरतभये । सिमटेसुभटलखिअतुलबलमुनिबागभजिबाहरग ये ॥ सो० ॥ त्यागिसुभटमुनिबाग खडेभयेमैदानलखि । बचनबाणसमलाग कछुकगये निजनाथपहँ ॥ चौ० ॥ नायशीशप्रभुचरणभवानी । कथासकलमखअश्वबखानी ॥ नाथविपिनमहँबागमुनीशा । बांधातुरगतहांजगदीशा ॥ सुवनघनेकऋषिमुनिवरदेवा । हा थोंहायकरैंहयसेवा ॥ घेराबागजहांमखघोरा । रखवारनतबकीन्होंशोरा ॥ त्यहिअवसरदु इकुवँरअनोखे । शोरसुनतकतहूंअतिचोखे ॥ रूपराशिसुठिअंगसुहाई । विधिअसछबिनहिं सकैबनाई ॥ उपमानहिंत्रिभुवनमाकोऊ । जससुन्दरमुनिबालकदोऊ ॥ करशरविषमतूणि कटिबाँधे । मैनचापशोभितअतिकांधे ॥ देखतछोटमहाबलधामा । जीतिसकैकोकरिसं ग्रामा ॥ दो० ॥ वयकिशोरसुखमासदन कोटिकामछबिलाज । सिंहनादलौंशब्दकर आप तहांमखबाज ॥ चौ० ॥ ताकेभयसबसुभटडराई । भेबाहरतजिमुनिफुलवाई ॥ समिटठाढ भेलखिमैदानू । भयोक्रोधजनुप्रबलकृशानू ॥ होनचहतसंग्रामअपारा । प्रभुआयसुजसहोय तुम्हारा ॥ बोलेतबकृपालुरघुराई । मिलैतुरगसोकरहुउपाई ॥ इतनाकहिकटिकस्योनिषंगा । लीन्होहाथकठिनशारंगा ॥ शीशनायमहिदेवमुनेशा । चढेतुरगतिहुँलोकनरेशा ॥ विपिन प्रवेशकीनसियरवनू । साथऋषभअंगदसुतपवनू ॥ मुरछितवीरपरेरणमाहीं । पगभरपन्थ मिलैकहुँनाहीं ॥ भरतलषणरिपुदमनसमेतू । सुभटसहितरणपरेअचेतू ॥ सो० ॥ उमासु नोचितलाययाज्ञवल्क्ययहशुभचरित । भरद्वाजमतिगायबायसनाथखगेशते ॥ चौ० ॥ सुनि रघुवरइतिहासअनूपा । सुनहुसुताहेमंचलभूपा ॥ हरनशोकसंशयतमभारी । अरुचित चावबढावनहारी ॥ व्यापकब्रह्मचराचरस्वामी । सुरनरअसुरजासुअनुगामी ॥ अविगत अविनाशीनिष्कामा । स्वइममइष्टउमासियरामा ॥ असकहिकामधेनुशिरनावा । देखि दशागिरिजासुखपावा ॥ लागेबहुरिकहनवृषकेतू । ज्यहिविधिरामगयेरणखेतू ॥ दशा अनुजअवलोकिभवानी । लखिरघुवीरअचम्भवमानी ॥ बोलीबोलसमीरकुमारा । वि धिगतितातनजायविचारा ॥ कहँरिपुदमनसुभटरणधीरा । कहँवेमुनिकिशोरदोउवीरा ॥ सो० ॥ वयकिशोरदोउबार कहँरिपुसूदनअजरभट । अचरजपवनकुमार कहँकवनबूझैकवन ॥ दो० ॥ उमाकरतनरयोंचरितधरेमनुष्यकृपाल । निरखिदशारिपुदमनभटभयोसफलत्याहि काल ॥ चौ० ॥ आगेचलेरामरणधीरा । मुरछितविपिनदेखिसबवीरा ॥ कोउकहरैंकोउ मागैंवारी । कोउघुमरैंकोउउठैंसँभारी ॥ धरुधरुमारुपुकारैंकोऊ । कोउउसकैंमूँदेदृगदोऊ ॥ देखाजायभरतगतिआगे । परेमुरछिरथपरशरलागे ॥ भरेअनन्तशरचापनिषंगा । बाणनते बेधेसबअंगा ॥ वीरधुरीणभरतजगलीका । साधुसभासुरमुनिमहँटीका ॥ तेअसगतिकरसु बनमुनीशा । सोवतसमरभूमिधरिशीशा ॥ देखीकसवेऋषयकुमारे । जोअगणितसेनारण

मारे ॥ लखिकरतूतितासुमनशोचू । कहततातउरहोतसँकोचू ॥ सो० ॥ कहांभरतरणधीर
कहँवेयुगलकिशोरमुनि । समुझततनयसमीर ज्ञानिहुहोतविमोहवश ॥ चौ० ॥ असकहि
रामचलेमुनिराया । जाकोसपन्यहुमोहनमाया ॥ नरअनुहारचरितकरसोई । पोषणभरण
विश्वकरजोई ॥ चलातुरगआयोमुनितहँवां । मुराछितलषणपरेरणजहँवां ॥ जबरघुकुल
मणिअनुजनिहारी । नयनस्रवतजलरामखरारी ॥ सुभटसमेतसमरमहँसोई । शरनपूरतन
जायनजोई ॥ जेअनन्तघननादहिमारी । तेदोउमुनिबालकनसँहारी ॥ असअनरथविधि
कहँनहिंशोभा । चरितविलोकिमोरमनक्षोभा ॥ कहतवचनभरभरजलनयना । सुनहुमुनी
शरामसुखअयना ॥ सो० ॥ यथामीनजलहीन परेजालतलफैपरी । लक्ष्मणतथामलीन
यदपिउभागादेसुभट ॥ दो० ॥ देखिविपिनसंग्राममहि शीलसिन्धुसुखधाम । बड़ेबड़ेमुखि
यासुभट जूझेकरिसंग्राम ॥ चौ० ॥ ऐसेवचनकहतरघुवीरा । जायँचलेवनघनहिंगँभीरा ॥
चौंकततुरगनिरखिगजअरणी । महाविकटपगधरतनधरणी ॥ सुनिमुनिरोदनखेतअपारा ।
रहैठिठुकिहयटरैनटारा ॥ पिछरतलौटहिडहरनिहारी । यदपिताड़नादेहिंखरारी ॥ बहत
रुधिरधावनतेकैसे । घनमेंप्रभाभानुकीजैसे ॥ गेरुपनारनीलगिरिजैसे । त्यहिमेंउदयधनुष
छवितैसे ॥ बहेअमितशोणितकेनारे । कोलकरारनजाहिंनिहारे ॥ कोलकरावरलोथन
केरी । ऊँचकरारमतंगजहेरी ॥ बिनपगअश्वभयेतहँकैसे । मकग्राहजलनदमेंजैसे ॥ छन्द ॥
बहेचर्म्मकच्छसमानशोणितधारसैंकविकोगिनै । गजशुण्डमुण्डौसूससमउतरानचहुदेखत
बनै ॥ करडारिसाँगनिषंगशायकविपिनगतिउनकीभई । बहुमुण्डतोमरविरनकरनहिंजा
तचेरेसोंकही ॥ भटसुभटमनहुँजहाजसुन्दरकहनकोसबखलभले । बहुजिन्सभूतपिशाच
योगिनिबैठित्यहिपारैचले ॥ विकरालबदनपसारिआमिषखानकोगरजाहिंतहां । खरगृध्र
श्वानशृगालगालबजायकहजेतेजहां ॥ नहिंवरणिजातजमातमोपैविविधगहिउररोंकहूं ।
प्रभुचरितसिन्धुअपारखगमैंपारकौनीविधिलहूं ॥ सो० ॥ सुनुखगेशकहकाग रामचरितसं
शयहरण । जाहिनीकनहिंलाग त्यहिसमानकोअधमनर ॥ दो० ॥ असकहिपुनिदोउनाय
शिर प्रभुपदवारंवार । फिरभुशुण्डिलागेकहन प्रभुइतिहासउदार ॥ चौ० ॥ जबप्रभुजाव
बागनियराने । भूपकोउलवआवतजाने ॥ तुरितउठायलीनधनुबाना । रोंकेराहबोलिवल
वाना ॥ भूपभलाजोआपनचहहू । तोआगेअबपांवनधरहू ॥ असकहिचापचढ़ायभवानी ।
चलेतुरितलवशरसन्धानी ॥ सुनिलववचनउमारघुराई । रहेमौनकछुकहतनआई ॥ निर
खिस्वरूपथकितभेलोचन । कृपासिन्धुप्रणतारतमोचन ॥ घनिविरंचिजिनरूपसवांरी ।
असशोभानहिंकतहुँनिहारी ॥ त्यहिअवसरकुशवनतेआये । विपिनभीरसुनिआतुरधाये ॥
देखिभीरभूपतिकटकाई । धरिउरधीरचलेहरषाई ॥ दो० ॥ पहुँचेकुशवरबण्डतहँ जहांठाढ
लववीर । होतबतकहीभूपसन लियेसजगधनुतीर ॥ चौ० ॥ जबलवअनुजहिआवतजाना । भे
बलअधिकसुताहिमवाना ॥ दोउभ्रातामुनिवरफुलवारी । सजगभयेधनुबाणसिधारी ॥
शोभादेखिकामरतिलाजै । कोटिमयंकवदनछविछाजै ॥ दुसरौकुवँरनिलोकिकृपाला ।
भयेमुदितकहिवचनरसाला ॥ जनुविधिसबआपनिचतुराई । इन्हैंसवांरिविश्वदिखराई ॥

शोभासिन्धुमनोहरजोरी । अतिसुकुमारत्रैसगुठिथोरी ॥ लखिनखशिखशोभादोउवीरा । मोहेप्रेमविवशरघुवीरा ॥ त्यहिअवसरप्रभुगतिखगराई । शारदशेषसकैंनहिंगाई ॥ महिमा कहतथकेश्रुतिचारी । तहांकौनमर्यादहमारी ॥ छन्द ॥ मर्यादकौनहमारतहँजहँ भेदवेदन पावई । शेषकितनिगमपुराणकहिकहि अपरगतिकोगावई ॥ ब्रह्माण्डमतिविधिविष्णुहर जोरचैऔरसँहारई । स्वइरामपूरणकामखगदोउवीरचकितनिहारई ॥ सो० ॥ जानि सुवनबलवान वयकिशोरकरणीकठिन । विहँसिकह्योभगवान काकेतुमबालकदोऊ ॥ कहो मातुपितुनाम क्यहिकारणवनमेंबसहु । कौनतुरगसोंकाम बांधिजाहिजूझतफिरो ॥ यदपि कीनलड़काय तदपिसिखावनदेहुमैं । अबहूंदेहुमँगाय तुरगपायहमजाहिंफिर ॥ सुनिकु शलवदोउभाय वाणीराजनमधुरसम । बोलेतबमुसुकाय कहाकामपितुमातुसन ॥ चौ० ॥ जाहिविरंचिदेयहयआजू । सोकरिसमरजायलैराजू ॥ जबअसवचनकहादोउवीरा । हृद यविचारकीनरघुवीरा ॥ मुनिवरतनयकहांअसहोई । जोअसनीतिराखउरसोई ॥ येकोउ भूपसुवनबलधारी । जासुतेजनहिंजायनिहारी ॥ असमुनिप्रभुबोलेखगराई । हमअपनेदि शिकहिसमुझाई ॥ जोनिजकीन्हचहहुसंग्रामा । तौरणकरहुआयबलधामा ॥ भूपवचनसु निदोऊवीरा । आयेजहँकृपालुरणधीरा ॥ सुभटबुलायकह्योरघुनाथा । युद्धकरोसम्मुख दोउसाथा ॥ दुइदुइवीरकटकतेजाहू । समरकरहुजनिडरकदराहू ॥ दो० ॥ सुनुखगेशरघु नाथजब वचनकह्योभटबोल । तमकेदोउबलवानतब क्रोधदेखिमहिडोल ॥ चौ० ॥ तबलवकुश निजहृदयविचारी । समरकरीतजिमुनिफुलवारी ॥ त्यहिमुनिबागखीसनाहिंहोई । कीजैकाज उचितअबसोई ॥ मुनिबालकनकह्योसमुझाई । रहहुसजगदेखतअमराई ॥ तुमकहँनाहिंकौ नौडरभाई । मैंदेखौंभूपतिकटकाई ॥ असकहिधनुषबाणकरलीन्हा । सम्मुखभूपगमनतब कीन्हा ॥ दुहुँदिशितेभेक्रोधअपारा । लागेलड़ैसुभटबरियारा ॥ बहुछलबलपौरुषभटक रहीं । समरअजिरमुरछितह्वैपरहीं ॥ यहिप्रकारमुनिहोयलड़ाई । रथशोभितदेखैरघुराई ॥ जेभटहोइँकटकतेन्यारे । तेनफिरैंलैप्राणविचारे ॥ दो० ॥ याविधिजूझेसुभटसब करिपौरु षखगनाथ । गिनेसुभटबाचेकछू भरद्वाजप्रभुसाथ ॥ चौ० ॥ असकौतुकलखिरामसुजाना । लागेकहनबोलिहनुमाना ॥ कुवँरदोउअतिशयबलधारी । छिनमेंसकलसुभटरणमारी ॥ मनकछुहरषविषादनआने । खड़ेसहजदोउवीरसयाने ॥ देखतलघुदोउकालसमाना । जा यनसकाहिंनिकटबलवाना ॥ मैंसबविधिअनरथकैखेतू । असउतपातभयोज्यहिहेतू ॥ भरतह यकारणतीनोंभाई । सुभटसहितजूझेवनआई ॥ सेनापतिकोशलपुरजेते । प्राणतजेयहि काननतेते ॥ जाउँअवधफिरितोबड़लाजू ॥ आयबनासबअमरणसमाजू ॥ कहतवचनलोच नजलढरके । कुसमयदेखिताहिप्रभुहरके ॥ दो० ॥ ऐसीविधिबिलखायमन कीन्हशोच रघुवीर । सुनसमीरसुतकपिपति भरेनयनपुटनीर ॥ चौ० ॥ लवकुशदेखिभूपभयमानी । जायनिकटबोलेअसबानी ॥ सुनहुनरेशविलम्बकसकरहू । कीफिरिजाहुकिसम्मुखलरहू ॥ सुनतदूषमुखमाहुरबानी । फिरेसुभटसबमाखिभवानी ॥ लागेसमरकरैयकबारा । मारहिं विविधशस्त्रहथियारा ॥ कुशविलोकिसेनारिपुमाखे । अनुजहिबोलिवचनअसभाखे ॥ तुम

मारहुभूपतिकटकाई । मैंदेखौंनरेशप्रभुताई ॥ असससुभायअनुजकुशवीरा । धापुचलेजहँ रथरघुवीरा ॥ आयेजबप्रभुयानसमीपा । कहिदुर्वचनसुनायमहीपा ॥ राजनसमरकरहुकि नआई । कीरणतेअबजाहुपराई ॥ दो० ॥ असकहिपरिचारयोप्रभुहि विशिखबाणधरिचाप । लखिखींचतशारंगकुश उठेदेवसबकांप ॥ चौ० ॥ आसमानहुरत्नपयमुनीशा । विधिहरिहर पदनायोशीशा ॥ नाथकौनकारणयहदेखी । कहौबुझायकृपालुविशेखी ॥ काकेप्रभुबालकये दोऊ । प्रबलप्रचण्डनजगअसकोऊ ॥ जाकेसमरसेनरघुनाथा । विकलपुकारतयथाअनाथा ॥ वयकिशोरमृदुगातसुहाई । रूपदेखिबहुकामलजाई ॥ तेपुनिकीन्हसमरअतिभारी । दल दशचारिक्षोहिणीमारी ॥ उरसन्देहनाथलखिहोई । बेगिबुझायकहोप्रभुसोई ॥ तबविरं चिप्रभुकथारसाला । कहिसमुझायसुरनतेहिकाला ॥ परमकौतुकीकोशलभूपा । अलख अखण्डअनामअरूपा ॥ छन्द ॥ निष्कामनामनिरूपसोप्रभुप्रकटहैअवधेशके । मखराखि विश्वामित्रमुनि प्रणसिद्धकियमिथिलेशके ॥ स्वइब्रह्मअजयअरूपअविगतदेहधरिलीलाक री । नहिंजानकोउअजानसबलखिचरितभवसागरतरी ॥ सुखधामरामनमामिअसकहि चारमुखअस्तुतिकियो । वैराटरूपलखायदेवनआपपारिपूरणभयो ॥ दो० ॥ जबहिंजीति लंकेशरण आयेपुरश्रीराम । गर्वबढ्योसबअनुजके कहिविधिगेनिजधाम ॥ त्यहिकारण कौतुककियो कृपासिंधुरघुराज । गर्वनिवारयोअनुजसब सुनअसभारद्वाज ॥ चौ० ॥ तब प्रभुदेखबलीरिपुआछे । कटिमेंरुचिरकाछनीकाछे ॥ करसरोजधनुबाणविराजै । कोटिन भानुज्योतिछविछाजै ॥ निपटनिरंकुशयुगलकुमारा । बिनसंख्यायोधारणमारा ॥ मोहिं यहँआयसमरकेकाजा । जोनलड़ौंतोहोयअकाजा ॥ असविचारिप्रभुशोचेभाई । निजउर मंत्रसमरठहराई ॥ भयोक्रोधगिरिराजकुमारी । सजगभयेरथरामखरारी ॥ धनुषचढायविषम शरजोरे । बोलेवचनसुधारसबोरे ॥ मैंअबलगत्वहिंबालविचारी । कीनक्षमासबचूक तुम्हारी ॥ यदपिअनीतिमहातुमकीन्हीं । तदपिनमैंएकोचितदीन्हीं ॥ दो० ॥ सजगहोहु रणखेतमें कहौंवचनपरमान । रिसबशशरजोरतभये खींचचापलगकान ॥ चौ० ॥ कुशवि लोकिकोप्योयुवराजा । लियधनुबाणसमरकेकाजा ॥ सुमिरिमातुपदबारंबारा । भयो क्रोधखगराजअपारा ॥ विशिखबाणछांड़ेतेहिकाला । चलेतुरतजहँअवधभुवाला ॥ आ वतदेखविषमशरभारी । प्रभुकौतुकीकाटिमहिडारी ॥ ज्वइज्वइबाणगयेकुशप्रेरे । स्वइस्वइ शरनमारिप्रभुफेरे ॥ देखिप्रतापनरेशअपारा । हुवनसियानिजहृदयविचारा ॥ यहकोउ भूपमहाबलवाना । जासुसमीपजायनहिंबाना ॥ हृदयकोपवरषाशरकीन्हें । तुरतविमान तोपिप्रभुलीन्हें ॥ दण्डएकप्रभुयानभवानी । परयोनदेखिसुरनभयमानी ॥ छन्द ॥ नहिं परयोदेखिविमानप्रभुयकदण्डअसकौतुकभयो । हैपरमविकलपुकारिदेवनधीरनहिंकाहुइ रह्यो ॥ अवलोकिचरितअपारप्रभुनरनागमुनिशोचहिंखड़े । ब्रह्मादिविष्णुगणेशसुरपतिदे वसबवाहनचढे ॥ प्रभुदेखिरिपुपरतापबलहँसिचापशायककरलई । सबबाणबाणनकाटि अपने निमिषमहँरजसमकई ॥ असचरितकरिप्रभुशायकनपुनिआयतरकसमेंभरे । रथनिर खिशोभितअवधपतिसुरसुमनकीबरषाकरे ॥ सो० ॥ देखिप्रतापमहीप अस्तुतिनभतेकरतसुर ।

बोलेजायसमीप परमक्रोधकरिनीरकुश ॥ चौ० ॥ कहिबहुवचनबहुरिशरमारा । सोउशरराम
काटिमहिडारा ॥ अमितानिषंगशरनविनकीन्हें । बाणनखण्डिडारिमहिदीन्हें ॥ उवइउवइ
लवशरमारखगेशा । स्वइस्वइकाटिदीन्हअवधेशा ॥ यहिप्रकारतहँहोयलड़ाई । देखौताद
सुनहुगिरिजाई ॥ तबलवएकबाणअतिभारी । अतिसकोपिप्रभुऊपरमारी ॥ बाचेअवकोशल
रघुराई । ध्वजापताकाकाटिगिराई ॥ परमनिडरलखिप्रभुमुसुकाने । चापचढ़ायश्रवणलगताने ॥
छोड़ेबाणअमिततेहिकाला । कहिकहिसुन्दरवचनरसाला ॥ मारनयोगसुवनदोउनाहीं ।
भयदेखायआवहुमोहिंपाहीं ॥ सो० ॥ प्रभुआयसुधरिशीश चलेचापतजिबाणसब । कीन
कहानिजईश लीनघेरिचहुँदिशिरिपुहि ॥ चौ० ॥ लवहिघेरिबहुत्रासदिखावैं । प्रभुरुखपाय
पासनहिंआवैं ॥ ऐसीभांतिसुनोमुनिराई । घेरेहुलवहिबाणरघुराई ॥ लीनछायबाणनरण
खेतू । सूझिनपरैकतहुँखगकेतू ॥ भयोविकलत्यहिक्षणलवबीरा । बोलेरिपुसम्मुखमति
धीरा ॥ होहुसजगभूपतियहिकाला । मारिविषमशरकरौंबिहाला ॥ छांड्यो अतिकराल
बहुबाना । चल्योसोसम्मुखश्रीभगवाना ॥ तेजवन्तशरविषमविलोका । प्रभुनिजबाणघेरि
तेहिरोका ॥ भैबाणनतेविविधलड़ाई । रघुवरशरतेहिमारिगिराई ॥ लखिप्रभुतालवअवध
भुवारा । वनैनकछुउरकरतविचारा ॥ सो० ॥ बनैनकरतविचार समुझिभूपबलबालअति ।
छिनछिनहोतखभार बरणिनजायखगेशगति ॥ दो० ॥ उमासुभटसबमारिकुश मुदितपूरिरण
खेत । अनुजपासगवनेतुरत परमअनन्दसमेत ॥ चौ० ॥ देखिलवहिकुशसंकटभारी ॥ चलेसज
गधनुबाणसँवारी ॥ जायदेखिगतिअनुजदुखारी । घेरेचहुँदिशिबाणनिहारी ॥ तबकि
सकोपदूणशरखींचे । फौंकसुधारिचापगहिखींचे ॥ छांड़्योबाणकोपिकुशवीरा । फिरेउप्र
प्रभुकेसबतीरा ॥ प्रविशेशरनिषंगसबआई । देखिप्रतापहँसेरघुराई ॥ पूंछाकुशअनुजहिदुदु
बानी । सकलकथालवतुरतबखानी ॥ सुनिरिसभैकुशसुनहुभवानी । चलेसकोपचापधनु
तानी ॥ मारौंभूपहिअसप्रणठाना । सम्मुखआयकह्योबलवाना ॥ सजगहोहुमहिपालसको
ही । तजौंनआजशपथमुनियोही ॥ दो० ॥ कहिकहिकोटिकवचनकटु उमाकरैंकोकान । छांड़े
बाणप्रचण्डअति सम्मुखश्रीभगवान ॥ चौ० ॥ प्रभुजानाकोपेदोउभाई । सुमिरिशिवाशिवचाप
चढ़ाई ॥ चलेदुहूंदिशिबाणकराला । महातेजबड़वानलज्वाला ॥ उलटोउबन्धुइतैरघुराई । स
मरभूमिखगहोइलड़ाई ॥ कोउकाहूसेमरैनमारा । युद्धकरैंकरिक्रोधअपारा ॥ बीतेबहुत
दिवसयहिभांती । चलैंबाणतीक्षणदिनराती ॥ टूटेचापअमितमुनिज्ञानी । भरेसीरतरकस
नभबानी ॥ दोउदिशितेनभबाणनछाई । शशिअरुभानुनपरैलखाई ॥ असंसंग्रामविलो
किखगेशा । डगीधरणिव्याकुलभयेशेशा ॥ सुरनरअसुरसिद्धमुनिझारी । भेसबजीवसचेत
दुखारी ॥ छन्द ॥ सबभेसचेतअचेततबनहिंधीरमनकाहूधरा । दशचारपुरकेमध्यमैंनभयो
रहरसबमुनिपरा ॥ रघुनाथअरुदोउतनय सियसंग्रामबहुदिनसेमची । कहिदासचेरेकहैंसब
असहोयजोविधनारची ॥ सो० ॥ जानिनजायखगेश गूढ़चरितरघुवंशमणि । कहिनसकैंश्रु
तिशेश गिराशारदामूकभइ ॥ दो० ॥ सोमैंकौनीभांतिखग कहिसमुझावौंतोहि । प्रभुलीलाअ
वगाहनद पारनसूझैमोहिं ॥ चौ० ॥ असकहिकागभुशुण्डिमुनीशा । बारबारप्रभुपदधरिशीशा ॥

लाग्योकहनखगेशसुनाई । पितापुत्रजसकरहिंलड़ाई ॥ अत्तनाथअङ्गदहनुमाना । प्रभुसमी
पठादेबलवाना ॥ देखिमहारणकरहिंविचारा । परमसभीतनजाहिनिहारा ॥ तबहिंचितैबो
लेसुरत्राता । ठाढ़रहोधरिधीरजताता ॥ कुसमयदेखिविपादनकीजै । ईशरजायशीशपरली
जै ॥ करमप्रधानसमुझिमनमाहीं । धीरधरहुकुछसंशयनाहीं ॥ इतनाकहिप्रभुयानचलावा ।
देखिबीरदोउविस्मयपावा ॥ रिपुबलवानदेखिदोउभाई । अतिशयकोपिबाणझरिलाई ॥
दो० ॥ प्रभुकौतुकीविलोकितक्रोधवंतदोउबीर । कीन्हचरितअनुहारनरकृपासिन्धुरघुवी
र ॥ चौ० ॥ सुनहुखगेशबखानाहिंयोगू । पावइँमोहसुनतसबलोगू ॥ मनुजदेहधरिकीरति
काजा । कीनचहहिंप्रभुसोखगराजा ॥ देखिकुँवरदोउसियअनुहारी । उमारामअसहृदय
विचारी ॥ यहांबासकहुँजनककुमारी । तासुतनयदोऊबलधारी ॥ इनसोंयुद्धकियेभल
नाहीं । हैहितहानिअयशजगमाहीं ॥ असबिचारिप्रभुसुनुउरगारी । धनुषबाणकरसोंमहि
डारी ॥ बन्धुशोकव्याप्योउरभारी । परेबिकलरथपरदनुजारी ॥ जामवन्तअङ्गदहनुबीरा ।
देखिचरितप्रभुभयेअधीरा ॥ निरखिबन्धुदोउमुनित्यहिकाला । मुरछितरथदेखेमहिपाला ॥
दो० ॥ धायेहरषसमेतदोउदेख्योआयसमीप । गिरयोबाणधनुहाथसोंव्याकुलपरयोमही
प ॥ चौ० ॥ जायनिकटबहुभांतिजगावा । अङ्गसचेतनेकनहिंपावा ॥ हैनिरभयतबदोउर
णधीरा । लीनछीनपटभूषणबीरा ॥ करसुन्दरशरमुकुटअनूपा । लीनछड़ायतुरँगरथभूपा ॥
असकौतुकलखिबालिकुमारा । सन्मुखआयतुरतललकारा ॥ लवकुशदेखिमहाभटभारी ।
भेरिसबशगिरिराजकुमारी ॥ बाणनबेधिलईकपिदेही । बांदरसोजनुहैगयोसेही ॥ मारि
कपिहिरणभूमिसुवाई । गवनेभवनमुदितदोउभाई ॥ बांधिऋक्षपतिसुवनसमीरा । चले
अश्वचढ़िदोउरणधीरा ॥ पहुँचेसदनअनुजदोउसाथा । जायमातुपदनायोमाथा ॥ दो० ॥
बिनयकीनदोउचरणगहिमातादीनअशीश । रहहुचिरंजिविबन्धुदोउजबलगमहिअजईश ॥
चौ० ॥ आशिषपायमुदितदोउभाई । भूपलूटसबमातदिखाई ॥ मुकुटअनूपअमोलनिहारी ।
सुन्दरिनिरखिशोचभइभारी ॥ यहसुन्दरिकोशलपुरभूपा । मुकुटशीशप्रभुअधिकअनूपा ॥
सोकौनीविधिबिधिइनपाई । इतनाकहिपुनिबाहरआई ॥ देखिऋक्षपतिपवनकुमारा । लागी
रोदनकरैअपारा ॥ परीबिकलमहिसुधिनहिंतेही । करतबिलापबिबिधवैदेही ॥ सुवननहीं
येजनम्योकाला । अवधनरेशबंशसबघाला ॥ देखिदशामातादोउभाई । परेचरणमुख
वचननआई ॥ रोदनकरतबिदेहकुमारी । छूटेकेशनदेहसँभारी ॥ छन्द ॥ नहिंदेहकीसुधि
रहीकछुव्याकुलमहाकरुणाकरै । दोउहाथछातीमारिपुनिपुनिमुरछिभूतलमेंपरै ॥ तेहिस
मयसियगतिदेखिखगपतिजातनाहिंकबिसोंकही । बिनबैनकेलोचनबिलोकतमीनाबिनपानी
रही ॥ दो० ॥ छतरूटतकरुणाकरतनेकनदेहसँभार । लखिनिजपतिभूषणबसनबाढ़तशो
चअपार ॥ चौ० ॥ तेहिक्षणजायनिकटहनुमाना । पदशिरनायकह्योबलवाना ॥ मातुधीरधरु
कुसमयजानी । मिटैनबिधिकरलिखाभवानी ॥ मैंसबचरितसुनावोंमाता । ज्यहिकारण
असभयउतपाता ॥ दशरथकुलनन्दनरघुराई । यज्ञआरम्भकीनहरषाई ॥ त्यहिलगिअश्व
सुरेशमँगावा । पूजितुरँगचहुंचक्रफिरावा ॥ रहेसाथरिपुसूदनबीरा । फिरेजीतिचहुंदि

शिरणधीरा ॥ तबलगिहययाहिकाननआवा । मुनिवरबागचरतइनपावा ॥ सोहयबांध्योतनय
तुम्हारे । करिरणरिपुसूदनकोमारे ॥ तासुखोजभारतपुनिआये । कटकसमेतसोउमुरछाये ॥
दो० ॥ आयेफिरसानुजलषणलैसँगसुभटअपार । मुरछितकीन्ह्योसमरकरिताहूतनयतुम्हा
र ॥ चौ० ॥ प्रभुकहिलषणगयेनहिंआये । यज्ञसभामुनिवरहिसुनाये ॥ गननगिरात्यहित्तणयह
माता । जूझेरणलक्ष्मणसुरत्राता ॥ सुनिनभगिराकृपालभवानी । भयेशोचवशशारँगपानी ॥
चलेतुरतगुरुआयसुपाई । देखाआयदशानिजभाई ॥ कुसमयदेखिभरथोउरधीरा । लागे
युद्धकरनरघुबीरा ॥ सोचरिअसुनुजनककुमारी । भेमुरछितरथरामखरारी ॥ तनयतुम्हार
निकटतबजाई । पटभूषणसबलीनछड़ाई ॥ सेवकसहितभालुकुलजाता । लायेबांधिभवन
दोउभ्राता ॥ बिनजानेअसअनरथभयऊ । कथासमस्तपवनसुतकह्यऊ ॥ सो० ॥ धीरज
धरहुसँभारिपरिहरिरिसदोउसुवनसन । मातुसकैकोटारिहोनहारसबसेकठिन ॥ चौ० ॥
कीशबचनसुनिनयनउघारी । चितैचहूंदिशिसुवननिहारी ॥ देखिमातुतेहित्तणदोउभाई ।
महाबिकलह्वैपदशिरनाई ॥ बोलेबचनबिगतअभिमाना । करनलगेदोउबहुबिधिआना ॥
मातुबृथाजोबचनसुनावैं । पापदहैंबालकवधपावैं ॥ तुमहूंकबहुंनकहिसमुझावा । बिनजा
नेकसदोषलगावा ॥ गिरैंसुपंथसुबुधिजलजाता । जोहमजानिकीनरणमाता ॥ सोवधद्विज
मारेकरदोषा । देहिंहमहिंविधिकरिबहुरोषा ॥ विधिहरिहरपदपङ्कजआनी । कीनकुचा
ल नजानिभवानी ॥ जोकछुकहीसोशिरपरलीना । बड़अपराधमातुहमकीना ॥ दो० ॥
ऐसीबिधिकहिबचनदोउकरहिंबिबिधबिधिआन । तदपिनहोयप्रतोषसियलगहिंबचनजनु
बान ॥ चौ० ॥ पतिदेवरगुणशीलबखानी । शीशधुनहिंसियसुनहुभवानी ॥ तेहिऔसर
करदुसहविषादू । कहिनजायअतिआरतनादू ॥ बालमीकिमुनिवरविज्ञानी । निजआश्रम
चरित्रसबजानी ॥ बलिसोंमांगिबिदामुनिराई । सुधाकमण्डलुलीनभराई ॥ शोचबिवश
मुनिराजसिधाई । कछुकदिवसमहँआश्रमपाई ॥ देखासियहिदुखितअतिदीना । जिमि
अहिपतिमणिखोयमलीना ॥ पूंछामुनिसबशिषनबुलाई । काकेचलतसियादुखपाई ॥ ते
सबकारणमुनिहिसुनाई । आदिहुसेसबकहिसमुझाई ॥ सुनतमहामुनिभयोदुखारी । ली
नसुवनदोउसियाहँकारी ॥ दो० ॥ अतिमलीनमनबन्धुदोउबालमीकिरुखपाय । कीनदण्ड
वतआयतबबैठेपदाशिरनाय ॥ चौ० ॥ मुनिदोउअनुजलायउरलीन्हे । आशिरबादबिबिधबिधि
दीन्हे ॥ तजहुशोचउरधीरजआनहु । कालकर्मवशईश्वरजानहु ॥ जायबहुरिसियकोसमुझा
ई । बहुइतिहासपुराणसुनाई ॥ महितेसियउठायबैठाई । जलमँगायविधुवदनधुवाई ॥ कछु
धीरजआन्यहुवैदेही । सुमिरिरामपदपरमसनेही ॥ तबबोलेमुनिराजसुबानी । सुनहुसिया
निश्चयउरआनी ॥ तोपतिअजरअमरनिष्कामी । पारब्रह्मईश्वरउरयामी ॥ ताहिकोसकैसमर
रणजीती । कहँपुराणवेदअसनीती ॥ संशयअसनकरियउरकाऊ । तुमजानहुरघुबीरसुभाऊ ॥
छन्द ॥ जानहुप्रभावस्वभावप्रभुकेहिहेतुअसकरुणाकरहु । करिछोहसुवनबुलायकण्ठल
गायउरधीरजधरहु ॥ यहिभांतिबारम्बारमुनिसियज्ञानउपदेशतभये । पुनिबोलिलीन्हकुमा
रदोउशिषसंगलैप्रभुपहँगये ॥ दो० ॥ पहुँचेमुनिवरभूमिरणसियासुवनदोउसंग । सोवत

रथपरदीखतहँरघुकुलकमलपतंग ॥ सो० ॥ विनयकीनकरजोरबारबारपदकंजप्रभु । मुनि
बरप्रीतिनथोरलागेतबअस्तुतिकरन ॥ चौ० ॥ अस्तुतिकीनमहामुनिज्ञानी । भाषिसबबे
दपुराणनज्ञानी ॥ मुनिजोअस्तुतिकीनभवानी । अगमनिगमनहिंजायबखानी ॥ सुनतबि
नयरघुनायकजागे । उठेहरषिमुनिवरपदलागे ॥ मुनिहुलीनप्रभुकोउरलाई । लखिनख
शिखछबिनयनजुड़ाई ॥ पूँछिकुशलमुनिवरमृदुबानी । तुम्हरीकृपाकुशलमुनिज्ञानी ॥ अ
तासाहिलसुभटयहिदेशू । जूझेकरिसंग्राममुनेशू ॥ कोमुनिराजकुवँरवैदोऊ । जेहिसमान
जगबीरनकोऊ ॥ इन्द्रजीतलोनासुरमारे । ताहिसमरदोउकुवँरसँहारे ॥ कहोमुनीशगुबनदो
उकाके । परयोंमुरछिलागेशरजाके ॥ सो० ॥ कहोनाथसमुझायकेहिनरेशकेकुवँरदोउ ।
सुनिमुनिवरमुसकायजोरिपाणिलागेकहन ॥ चौ० ॥ जबआज्ञालक्ष्मणप्रभुपाई । त्यागि
सियहिबनअवधसिधाई ॥ टेढ़विपिनअवलोकिकुमारी । कीन्हकलापबिलापपुकारी ॥
तेहिअवसरमैंशिषनसमेता । फिरतरह्योंवनकृपानिकेता ॥ देख्योंजायबैठितरुछाहीं । व्या
कुलअधिकदेहसुधिनाहीं ॥ धीरजदीनताहिसमुझाई । सकलचरिततिनमोहिंसुनाई ॥
जानामैंतबजनककिशोरी । लैआयोंआश्रमहिंबहोरी ॥ कछुदिनगयेकुवँरदोउजाई । भई
मुदितसुधिअवधमुलाई ॥ पूँछिलगनशुभघड़ीसुहाई । चूड़ाकरणउछाहकराई ॥ यज्ञो
पवीतभलीविधिकीना । विविधदानमहिदेवनदीना ॥ दो० ॥ बैठेपुनिविद्यापढ़नमम
निकेतदोउसाथ । अल्पदिवसमहँलीनपढ़िसबविद्यारघुनाथ ॥ चौ० ॥ बहुरिधनुषवि
द्यासबसीखी । मैंपुनिदीनप्रेमदृढ़देखी ॥ भयेकुवँरबलबुद्धिनिधाना । फिरहिंविपिनली
न्हेधनुबाना ॥ तेहिअवसरबालिमोहिंबुलायो । मख्यकरनहितन्योतिपठायो ॥ निजबाटि
कासौंपिदोउभाई । गयोंपतालसुनहुरघुराई ॥ समयपायविधिबातबिगारा । होनीहोयको
रोकनहारा ॥ तजोसोकोहआजुरघुराई । मिलहुकुवँरदोउकण्ठलगाई ॥ सुनिमृदुपुञ्जवच
नमुनिधीरा । मिल्योतनयदोउहँसिरघुबीरा ॥ अतिआदरसमीपबैठारे । बरबारदोउसुत
ननिहारे ॥ प्रभुकेनिकटतनयदोउसोहैं । देखतनभवासीसबमोहैं ॥ छन्द ॥ मोहेनभवासी
शिवकैलासीविधिहरिसुरपतिदेवसबे । कहिमंगलमूलाबरषहिंफूलाशंखनिशानबजायचले ॥
निरखतसुखपावैंसेवालावैंनभमहिलौंध्वनिछायरही । कहिगयननिकेताशक्तिसमेताअतिआ
नँदनहिंजायकही ॥ दो० ॥ यावाधिदेवनरामकहँसुवनसमेतनिहार । मांगिविदागवनेभव
नअश्वविमानप्रचार ॥ चौ० ॥ तबमुनिसोंबोलेभगवाना । तुममुनीशसर्वज्ञसुजाना ॥ अब
सोयतनकरियमुनिराई । जेहिप्रकारकोशलपुरजाई ॥ मुरछाअनुजसुभटसमुदाई । जाते
जायसोकरियउपाई ॥ सुनिप्रभुवचनकह्योमुनिनाथा । दीजैरथआपनरघुनाथा ॥ बलि
केसभाचरितसबजाना । जानिसुकाजसुधामैंआना ॥ चढ़िरथनभऊपरप्रभुजाई । बरषि
सुधाभटदेउँजियाई ॥ दीनसुरतरथरामखरारी । तेहिचढ़िमुनिनभपन्थसिधारी ॥ सुधा
वारिमुनिबरषनलागे । वृन्दपरतयोधासबजागे ॥ जागेरिपुसूदनभैलेनू । भारतलक्ष्मणसै
नसमेतू ॥ दो० ॥ गेमुरछाजागेसुभटजिमिमदगतमतवार । साजिबलनहारिमारसबभये
अश्वअसवार ॥ चौ० ॥ भरतलषणरिपुसूदनवीरा । भूषणबसनभयेरणधीरा ॥ कपि

तरकसधनुबाणउठाई । चढ़िचढ़िरथनिजदेवमनाई ॥ लियोताकिमुनिनायकबागू । चतुरंगिणीसुभटकरआगू ॥ देख्योजायबागमुनिराई । नहिंतहँतुरँगनरिपुदोउभाई ॥ तौनेसमयदूतरघुराई । पहुंचेजायजहांदोउभाई ॥ शीशनायबोलेकरजोरी । मधुरबचनगिरिराजकिशोरी ॥ चलियनाथरघुनाथबुलाई । बाणीसुनतपरमसुखपाई ॥ बालमीकिमुनिआश्रमतीरा । कछुदिनतेआयेरघुबीरा ॥ दूतबचनसुनितीनौभाई । हांक्योरथकछुबिलमनलाई ॥ छन्द ॥ हांकेबिमानप्रचारिघोड़ेपवनतेआतुरचले । जरबफ्तकीतम्बूकनातैंतनीहैंझलकैंभले ॥ बहुशामियानेबादलामुक्कैशकीझालरसजी । खींचीतनाबीरेशमीदिनराततहँनौबतबजी ॥ अगणितमतंगगयन्दपरबहुतासकीझूलैंपरी । बहुबाजिपवनसमानऊपरजीनरतननसौंजरी ॥ असकहतफिरतनकीबखगबीरौतयारीकीजिये । महराजकेसबअनुजआवतजायआगेलीजिये ॥ डेवढ़ीकसामसचोबदारामणिजड़ितआसालिये । कोउभूपमिलैनजानपावैबिनाकछुरिशवतदिये ॥ बहुबीरभटसुरआजयेजहँआपप्रभुकोशलधनी । प्रसनन्दताकियालागतहैंसुन्दरमुशज्जरकीतनी ॥ बहुचौघड़ेऔपानदानगुलाबपाशधरेजहां । सुन्दरगड़नकेअतरदानअनेकमुनिदेखेतहां ॥ दो० ॥ काहूतेनहिंजातकहिजसकछुबनीसमाज । देशदेशकेभूपसबबैठेतहँखगराज ॥ चौ० ॥ बहुआसेबरदारमुनीशा । खड़ेतहांजहँप्रभुजगदीशा ॥ बालमीकिदोउकुवँरसमेता । शोभिततहँजहँकृपानिकेता ॥ तेहिऔसरप्रभुकेसबभाई । कीनप्रवेशउपातहँआई ॥ दूतनप्रभुपहँजायसुनाई । कहप्रभुआनहुबेगिबुलाई ॥ जबप्रभुअनुजनआवतदेखी । सहितसभासबउठेविशेखी ॥ प्रथमहिंभरतदण्डवतकीन्हा । करगहिलायहृदयप्रभुलीन्हा ॥ पुनिलक्ष्मणप्रभुपदधरिशीशा । भुजपसारिभैंटेअवधेशा ॥ पाछेरिपुसूदनशिरनावा । प्रेमसमेतरामउरलावा ॥ पूंछतकुशलनिकटबैठारी । गईसकलश्रमभयेसुखारी ॥ दो० ॥ प्रभुआज्ञातेअनुजसबबैठिदण्डवतकीन । बहुरिमिलेप्रभुतनयदोउहरषितआशिषदीन ॥ चौ० ॥ तबप्रभुमुनिआगेभेठाढ़े । पुलकिशरीरनयनजलबाढ़े ॥ मोपरनाथकीनतुमदाया । जनमउऋणनहिंमुनिराया ॥ रौरेनाथअनुग्रहकीजै । अवधचलियसियसौंशिषदीजै ॥ पूरणयज्ञनहींबिनतीया । इतनानाथहमैंकरनीया ॥ असकहिप्रभुसुखपालमँगाई । बालमीकिमुनिसंगपठाई ॥ लैसुखपालमुनीशसिधाई । तेहिपाछेरिपुदवनबुलाई ॥ जाहुबेगिमुनिवरपहँभाई । आनहुजनकसुतासमुझाई ॥ आयसुपायभरतलघुभ्राता । चलेसियापहँहरषितगाता ॥ जायशत्रुहनपदशिरनाई । आशिषदीन्हलीन्हउरलाई ॥ दो० ॥ कुशलपूंछिबैठायढिगअतिआदरसियमात । पूंछनलागींकुशलप्रभुलषणभरतदोउभ्रात ॥ चौ० ॥ मातुआजसबकुशलहमारी । चरणसरोजबिलोकतुम्हारी ॥ तबमुनिवरमृदुवचनसुनाई । सुनोसियाअसकहेरघुराई ॥ जेहिविधिअवधचलैचहेजाई । सोइउपदेशदेवमुनिराई ॥ सुनिप्रभुवचनसुतासुखपायौं । तोहितवचनहारिमैंआयौं ॥ करप्रतिपालवचनअवमोरा । होयसुयशतिहुंपुरअतितोरा ॥ रिपुसूदनहुंलिवावनआये । चरणपरेअबलौंशिरनाये ॥ जिमिजिमिमुनिवरकहिगिरिजाई । तिमितिमिअवनिसुतासकुचाई ॥ शोचतहृदयबिदेहकुमारी । पतिगुरुआयसुसकैंकोटारी ॥ जाउँअवधतोसबबिधिहानी । जोनजाउँकोपैंमुनिज्ञानी ॥

दो० ॥ दुहूँभांतिसङ्कटसिया बनैरहतनहिंजात। वन्दिचरणमुनिनाथके बोलीं अतिमृदुगात ॥ चौ० ॥ तुमतोनाथनीकिशिषदीन्ही । सबहिप्रकारमोरहितचीन्ही ॥ मैंतजिलाजकहौंमुनि आजू । अबनहिंअवधमोरकछुकाजू ॥ बिनअपराधतजामोहिंस्वामी । तुमहिंविदितसबअन्तरयामी ॥ तापरमोहिंकहतप्रभुजाना । यहसबमोरअभागनआना ॥ आयसुनाथशीशपर लीन्हा । जोकछुकहियसोचाहियकीन्हा ॥ मुनिवरसुनिसीताप्रियबानी । रहेसकुचितेहिसमयभवानी ॥ तजिसकोचपुनिकह्योमुनेशू । सुनपुत्रीतुपितामिथिलेशू ॥ असइर्षासपनेहुंनहिंआनी । पतिव्रतधर्म्मपुराणबखानी ॥ यद्यपिपतिसबऔगुणखानी । तेहिकोउचितदेव करिजानी ॥ सो० ॥ असविचारिउरआनि करहुआजजोमैंकहहुं । कीजैशिषसुखमानि सबप्रकारतुमकहँसुखद ॥ चौ० ॥ धर्म्मनीतिइतिहाससुनाई । सियागमनसुखपालमँगाई ॥ तुरतकहारनलीनउठाई । चलेजहांराजितरघुराई ॥ मुनिरिपुसूदनपाछेजाहीं । परिहरि शोचहरषमनमाहीं ॥ जहँराजितप्रभुअवधनरेशू । गेरिपुसूदनसहितमुनेशू ॥ भरतअनुजप्रभुपदशिरनाई । मुनिवरआशिषबचनसुनाई ॥ मुनिहिंदण्डवतकरिरघुराई । रिपुसूदनहिं लीनउरलाई ॥ सियआगमनकह्योमुनिराजू । सुनिहरषेतिहुंपुरशिरताजू ॥ करिअस्तुतिपुनिकहिसियरौनू ॥ आयसुहोयकरौंपुरगौनू ॥ भलीनाथकहिमुनिमतधीरा । तुरितपयानकीनरघुबीरा ॥ दो० ॥ बहुरिनिशानबजायबहु चलनसाजसबसाज। बाहनचढिभटभीरमुनि चलेजहां रघुराज ॥ चौ० ॥ गजराजनपरकसीअमारी । बाजिनपररचिजीनसवाँरी ॥ कोतलतुरँग अमितकोलेखे । लाजैंहयरथसूरजदेखे ॥ बृषभऊँटबाहनसँगजेते । वस्तुअनेकभरेसबतेते ॥ नित्यक्रियाकरिपूजिपुरारी । प्रभुनिजभूषणबसनसवाँरी ॥ पुनिपटभूषणविविधमँगाई । अनुजनसुवनबोलिपहिराई ॥ बांधितुणीरसुनहुमुनिराया । लीनहाथधनुशररघुराया ॥ अस्तुति वालमीकिमुनिकीन्हे । निजरथमुनिनायककहँदीन्हे ॥ तीनौंअनुजकुवँरदोउसाथा । चढेवाजिपरमुनिरघुनाथा ॥ गणपतिगौरिमनायखरारी । करिआगेसबसैनहँकारी ॥ दो० ॥ तेहि औसरकरुणायतन देखिसजगकटकाय। चलेअवधपुरविहँगपति शम्भुचरणशिरनाय ॥ चौ० ॥ आगेकीनतुरगमखआछे । सियसुखपालजायतेहिपाछे ॥ तेहिपाछेमुनिवररथजाई । चले साथसेवकरघुराई ॥ तेहिपाछेकुशलवदोउभाई । छबिनिधानकछुवरणिनजाई ॥ हयसवारपरचढबहुसाथे । धनुषबाणशोभितदोउहाथे ॥ तेहिपाछेगजतीनौंअनुजा । भरतलषण रिपुसूदन गिरिजा ॥ तुरगसवारबागमुरकाये । जाहिंचलेकरिवरहिंमिलाये ॥ सुभटअमित आगेकछुपाछे । सजिहथियारकाछनीकाछे ॥ तेहिपाछेगिरिवररघुबीरा । बैठिखवासीसुवनसमीरा ॥ शोभितहाथछत्रवतभाना । चामरविविधनजायबखाना ॥ दो० ॥ यहिविधि राजाराममुनि भ्रातासुवनसमेत । भयेपारतमसाउतर शोभासींवनिकेत ॥ चौ० ॥ बोलिदूतदुइअवधपठाई । आयसुपायचलेशिरनाई ॥ प्रथमहिंगुरुवशिष्ठपहँआई । गहिपदमुनिप्रभु कुशलसुनाई ॥ आवतकुशलअवधपतिनाथा । सीताअनुजसुवनदोउसाथा ॥ सुनिमुनिउर दूतनप्रियबानी । हरषेऋषिनसमेतभवानी ॥ बहुरिदूतगयेराजदुवारे । जायतहांनृपसचिवनिहारे ॥ शीशनायमृदुबैनसुनाई । नाथकुशलआयेरघुराई ॥ सुनतसुमन्तउठ्योहरषाई ।

मृतकशरीरप्राणजनुआई ॥ गयोतुरितजहँप्रभुमहतारी । समाचारसबकह्योसुखारी ॥ सिया सहितदोउशिशुसबभ्राता । लैमखबाजिफिरेसुरत्राता ॥ दो० ॥ बचनसुनतउच्छाहमय सुनहरषींसबमात । बोलविप्रयाचकनगर दानदीनबहुभांत ॥ चौ० ॥ समाचारपुरबासिनपावा । घरघरमङ्गलबाजबधावा ॥ सुघरप्रचारिकबेगिबोलाई । बहुरचनागृहद्वारबनाई ॥ राजद्वारकी शोभाजैसी । कहँमतिमोरकहूंअबतैसी ॥ गजमुक्ताकीचौकपुराई । कञ्चनकलशअनूपसोहाई ॥ दधिअच्छतरोचनमिष्टाना । पानफूलपूगीफलनाना ॥ कौशल्यादिराममहतारी । मुदितआरतीथारसवाँरी ॥ मणिगणहेमनिछावरिहेतू । लियेसखीसबप्रेमसमेतू ॥ जबप्रभुआयनगरनियराने । आगेजायसचिवसनमाने ॥ चरणबन्दिसादरसुरत्राता । बैठ्योअनुजसहितदोउभ्राता ॥ दो० ॥ कीनसचिवपुनिदण्डवत बालमीकिमुनिदेख । सियपदबन्दिसुखेन अति धन्यभाग्यनिजलेख ॥ चौ० ॥ तबप्रभुहरषिअवधपुरआई । आगेबाणनिशानसुहाई ॥ हयगजकेडङ्कामुनिबाजे । सुनिरवमधुरमेघघनलाजे ॥ गलिनभीरहयमत्तगयन्दा । मगपावैंनहिंपदचरबृन्दा ॥ नरनारीचढ़धायअटारी । निरखैंछबिप्रभुहोइँसुखारी ॥ लखिसुखपालविदेहकुमारी । युवतिनहृदयभयोसुखभारी ॥ देखितनयसुन्दरसियदोऊ । जेहिशोभाउपमानहिंकोऊ ॥ भरतलषणरिपुसूदनदेखी । पुरबासीसुखलह्योविशेखी ॥ उतसबपरमदेखिअनुरागे । मणिगणहेमलुटावनलागे ॥ दिव्यसुखदसबपुरनरनारी । भूपदुआरआयदनुजारी ॥ दो० ॥ पुरवासिनकहँदेतसुख रविकुलकमलपतङ्ग । सैनसहितआयेउमा शोभाकोटिअनङ्ग ॥ चौ० ॥ सियसुखपालसुनोउरगारी । जायकहारनद्वारउतारी ॥ सखिनसंगमन्दिरसियआई । पतिदेवरमातहिंशिरनाई ॥ सासुसबीसियकोउरलाई । बदनअनूपनिरखिसुखपाई ॥ तबमुनिप्रभुसबअनुजसमेता । तजिबाहनकियगौननिकेता ॥ कौशल्यादिमातुहरषाई । करहिंआरतीमंगलगाई ॥ वारहिंमणिगणविविधप्रकारा । जोजेहिभावसोदीन्हअपारा ॥ तेहिऔसरपुरग्रामउछाहू । वरणिनजायसुनहुखगनाहू ॥ दोउसियसुवनराममहतारी । हृदयलगायगोदबैठारी ॥ विविधदानमहिदेवनदीन्हें । याचकसकलअयाचककीन्हें ॥ सो० ॥ ताहिसमयरघुनाथ चरणसरोरुहमातुसब । सादरनायोमाथ मातहिंआशिषदीन्हतब ॥ चौ० ॥ गुरुकरपदुमगहेरघुराई । बारबारमुनिवरउरलाई ॥ जहँलगऋषयमुनीशसमाजू । दण्डप्रणामकीनरघुराजू ॥ भरतलषणरिपुसूदनजाई । कुशलवसहितचरणशिरनाई ॥ आशिरबादयथारुचिजेही । दीन्हहरषिमुनिनायकतेही ॥ पूंछेहुमुनिप्रभुकुशलवहोरी । कहप्रभुनाथअनुग्रहतोरी ॥ देखिप्रीतिबहुशीलसनेहू । ऋषिनसहितमुनिभयोविदेहू ॥ अतिसुकुमारगातदोउवारे । पितुभ्रातहिंकेहिविधिरणमारे ॥ बहुरिबिचारिरामप्रभुताई । सुतनविलोकिरहेमुनिराई ॥ बारबारप्रभुसुयशबखानी । सकुचिरामबोलेमृदुबानी ॥ दो० ॥ यज्ञकाजहितनाथअब जसमोहिंआयसुहोय । उठिप्रभातकरुणायतन करौंशीशधरिसोय ॥ चौ० ॥ मुनिप्रभुवचनहरषिमुनिनायक । लागेकहनसुनोरघुनायक ॥ भूपअमितकुलहतेतुम्हारे । तुमसमऔरननयननिहारे ॥ हममोहितरविकुलभगवाना । मिलेनकोउतुमसमयजमाना ॥ यहनबड़ाईतहांतुम्हारी । दीनदयालुभक्तहितकारी ॥ मुनिवाशिष्ठरघुवीर

षड़ाई । करतबदनपरसबहिंसुनाई ॥ प्रभुकहसकुचकृपामुनिकीन्ही । सकलषड़ाईआ
पुहिदीन्ही ॥ मैंसेवकसबभांतितुम्हारा । परमधर्मयहनाथहमारा ॥ मुनिरघुवीरगूढ़ब्यवहा
रा । कोसमरथजगकरैविचारा ॥ सुनहुरामअसकहमुनिराजा । भोरहिकीजैमखकाकाजा ॥
दो० ॥ भलेनाथकहिनायशिर प्रभुमुनिआयसुपाय । राजद्वारगवनेतुरत निशादण्डयुगआय ॥
चौ० ॥ गईनिशायुगदण्डमुनेशा । राजद्वारआयेअवधेशा ॥ सचिवआयसादरशिरनाई ।
प्रेमपुलकबोलेरघुराई ॥ गुरुपितुमातुअनुग्रहताता । आयोंकुशलसहितसबभ्राता ॥ सुनि
प्रभुवचनसचिवहरपाई । कहिजैजीवचरणशिरनाई ॥ कहहुवचनअतिनीतिसुहाई । तुम
समानतुमहींरघुराई ॥ सेवकविनयनाथसुनिलीजै । महलजायभोजनकछुकीजै ॥ सु
नियहवचनभवनप्रभुआये । दासीदासतुरतजललाये ॥ भ्रातासुतनबोलिरघुनाथा ।
उठेकरनभोजनयकसाथा ॥ षट्रसब्यञ्जनभरिभरिथारी । सादरपरसिदीनमहतारी ॥
दो० ॥ लागेजेवनरामतब अनुजनसुवनसमेत । जोइभोजनप्रभुचाहते सोइकौशल्यादेत ॥
चौ० ॥ करिभोजनगिरिजारघुराई । कीन्होशयनमहलनिजजाई ॥ अनुजहिसुवनहिबो
लिसप्रीती । सोवहुतातनिशाबहुबीती ॥ आयसुपायचरणशिरनाई । निजनिजभवनगयेसब
भाई ॥ राममातुपहँगेदोउभाई । सुन्दरपलँगबिछायसोवाई ॥ सियासासुअनुशासनपाई ।
गईजहांराजितरघुराई ॥ करिबहुभांतिचरणसेवकाई । सोईसियप्रभुआयसुपाई ॥ सोवतसि
यसुखसेजविलोकी । देखिकलाविधुनिजरथरोकी ॥ आपतेअधिकदेखिसियशोभा । बहु
मयंकहिरदयअतिक्षोभा ॥ शोभाकोटिकामरतिथोरी । नहिंउपमाछविजनककिशोरी ॥
दो० ॥ रतिसमेतलाज्योमदन रजनीपतिसकुचाय । सियमुखशोभासुरसलखि गहँगहँरहे
लजाय ॥ चौ० ॥ प्रातसमयरघुनायकजागे । बन्दीजनगुणगावनलागे ॥ भोरहिंसियउठ
भीतमपासू । गईमहलजहँसोवतसासू ॥ कौशल्यापदचापनलागी । परसतहाथसासुतबजा
गी ॥ पदशिरनायविदेहकुमारी । आशिषदीन्हराममहतारी ॥ निशाविगतजागेदोउभाई ।
पितुमातहिसादरशिरनाई ॥ निजमाताहिप्रणामपुनिकीन्हा । देखिसुवनसियआशिषदीन्हा ॥
तबरघुनाथमातपहँजाई । चरणबन्दिबैठेमुनिराई ॥ मातादीनअशीशसुखारी । सुनहरषेर
घुवंशखरारी ॥ तातचरणबन्धोदोउभ्राता । प्रभुसकुचेविलोकिढिगमाता ॥ दो० ॥ तेहि
औसरभारतलषण रिपुसूदनमुनिआय । बन्दिरामपदमातपद सियपदशीशनवाय ॥ चौ० ॥
तबअनुजनविलोकिदोउभाई । दण्डप्रणामकीनशिरनाई ॥ अनुजनसुवनसमेतमुनेशा ।
मञ्जनकरनचलेअवधेशा ॥ नित्यक्रियाकरिसरयूतीरा । गुरुसमीपआयेरघुवीरा ॥ गुरुहिं
प्रणामकीनशिरनाई । दईअशीषहरषिमुनिराई ॥ अवनिसुताकहँवेगिबुलाई । कीजैका
जसमयरघुराई ॥ गिरिजाप्रभुगुरुआयसुपाई । रिपुसूदनहिंकह्योसमुझाई ॥ जाहुवेगिमा
तापहँभाई । सादरजनकसुतहिलैआई ॥ गेरिपुघनकौशल्यापाहीं । गहिपदकह्योहरषमनमा
हीं ॥ मातुसियहिमुनिनाथबुलाई । सुनिरघुनाथजननिहरषाई ॥ सो० ॥ सादरसियअन्ह
वाय भूषणबसनअनूपसजि । युवतिनसंगपठाय चलीसियापदसासुगहि ॥ चौ० ॥ मखस
भाजसियजबपगधारी । रूपराशिनिहिंजायनिहारी ॥ नखशिखभूषणबसनबिराजैं । नूपुर

शब्दमधुरध्वनिबाजैं ॥ ऋषिनदेखिसियकीनप्रणामा । जानिशिरोमणितेहिसुखधामा ॥
जायसियागुरुपदशिरनाई । दीनअशीषहरषिमुनिराई ॥ कुशकसाथरीमुनिनमँगाई । कल
शसमीपमुनीशबिछाई ॥ गांठिजोरिमुनिवरबैठारी । रामसियहिसनशीशदुलारी ॥ प्रथम
हिंगुरुअभिषेकमुनेशू । पुनिसबऋषिमुनिकीनखगेशू ॥ वेदनध्वनित्यहिसमयसुहाई । नभ
तेसुरनसुमनझरिलाई ॥ बरणतछबिसियरामभवानी । शारदशेषहुमतिसकुचानी ॥ छन्द ॥
सकुचातमतिश्रुतिशेषशारद अपरकीगिनतीकई । ब्रह्मादिशिवसनकादिअसछबिदेखिमतिच
कृतभई ॥ अविगतअभेदअपारअगमनपारलखिकाहूपरै । सोनीचनिपटअयानचेरेकौनविधिबर
णनकरै ॥ दो० ॥ जक्तमातुपितुरामसिय शोभाशीलनिधान । सोकेहिविधिबरणनकरों सुनहु
सुताहिमवान ॥ चौ० ॥ श्यामलगौरमनोहरजोरी । भुवनचतुर्दशकीछबिथोरी ॥ पूजासकलमु
नीशकराई । तुरँगयज्ञतेहिसमयमँगाई ॥ करमंत्रवतअश्वअन्हवाई । पूजाकीनवेदजसगाई ॥
ऋषिनतहांमुनिआयसुपाई । मखहयहत्योअबारनलाई ॥ घृतकपूरपयकरेमिलाई । अति
पुनीतशाकल्यबनाई ॥ ऋषिमुनिवरकोबिदमखजेते । करहिंवेदध्वनिसादरतेते ॥ देवनस
हितसमाजसुरेशा । ऋषिअट्ठासीसहसखगेशा ॥ विधिहरिहरसुनिअवधउछाहू । यज्ञसभा
आयेखगनाहू ॥ जसबिधानमखवेदनगाई । तसप्रभुकीनसुनोखगराई ॥ दो० ॥ घृतकपूर
हयमांसयव रुचिशाकल्यखगेश । करतहोमरघुकुलतिलक शोभितसभाऋषेश ॥ चौ० ॥
भयोहोमबहुदिवसभवानी । बसुधाअनलतेजअकुलानी ॥ जहँलगमहिअकाशऔकासू ।
धूमहोमसबकीननिवासू ॥ भानुतेजशशिशीतलताई । परयोनलखिकाहूगिरिजाई ॥ ज्वा
लाहोमप्रचण्डबखानी । नभपाईआहुतिहरषानी ॥ जयजयकाररह्योमखछाई । नभतेसुर
दुन्दुभीवजाई ॥ पूरणआहुतिकीनकृपाला । बोलेमुनितबबचनरसाला ॥ यज्ञदानयहि
औसरकीजै । शुभआशिषऋषिमुनिद्विजलीजै ॥ प्रभुआयसुलखिसचिवसुजाना । अमितगय
न्दतुरँगसजियाना ॥ भूषणवसनहेममणिहीरा । प्रभुपहँराखिसचिवमतिधीरा ॥ दो० ॥ आय
सुपायवशिष्ठमुनि सुनोउमाचितलाय । दीनदानरघुबंशमणि याचकविप्रबुलाय ॥ चौ० ॥ का
हूहयकाहूगजराजा । काहूरथभूषणखगराजा ॥ जोजेहिभावदीनस्वइदाना । रंकहिकीन्ह्यो
रावसमाना ॥ याचकबहुविधिकीरतिगावैं । भूसुरआशिषबचनसुनावैं ॥ अवनिकुमारि
दीनजोदाना । सोखगपतिनहिंजायबखाना ॥ सुनहुरामकहमुनितेहिकाला । कीजैपैकर
मामखशाला ॥ सुनिप्रभुगुरुमृदुगिरासुहाई । सियसमेतपरदक्षिणलाई ॥ बहुरिकीनऋषि
मुनिहिप्रणामा । सीतासहितरामसुखधामा ॥ पुनिप्रभुगुरुवशिष्ठपहँजाई । सीतासहित
चरणशिरनाई ॥ दैआशिषअसकहमुनिराई । अग्निविनयकीजैरघुराई ॥ दो० ॥ भली
नाथकहिअवधपति सियसमेतखगपाल । जायकीनअस्तुतिअमित जहांहोमकीज्वाल ॥
चौ० ॥ प्रभुहिनिहोरतनेहनिहारी । ज्वालराहमखबाजिनिकारी ॥ दीनतुरँगप्रभुलीनसुखा
री । जयध्वनिछायोतिहुँउरगारी ॥ तबप्रभुतुरँगसुरेशहिदीना । पदशिरनायविनयतिनकी
ना ॥ करिबहुभांतिविनयसुरराजू । गयोलोकतजिसहितसमाजू ॥ बिदाकीनप्रभुऋषिन
बुलाई । करिसन्मानसुनहुखगराई ॥ निजनिजभवनगवनसबकीन्हे । तबप्रभुमुनिकहँआयसु

दीन्हे ॥ अबप्रभुभवनगवननिजकीजै । मन्दिरजायदानबहुदीजै ॥ आगेमुनिसियरघुवरपाछे । गानकरहिंयाचकसबआछे ॥ भेरिनिशानद्वारबहुबाजे । ऋतुपावसकेघनजनुगाजे ॥ दो० ॥ सियसमेतरघुवंशमणि गुरुवशिष्ठमुनिसाथ । शुभनक्षत्रप्रवेशकिय निजमन्दिररघुनाथ ॥ चौ० ॥ मन्दिरभीरयाचकनदेखी । प्रभुसेतबमुनिकह्योविशेखी ॥ प्रथमहिंधेनुद्विजनकहँदीजै । महिदेवनशुभआशिषलीजै ॥ तेहिपाछेयाचकहिबुलाई । दीजैदानदेवसुखदाई ॥ सुनिप्रभुगुरुमृदुवयनरसाला । कोटिधेनुमांगींतेहिकाला ॥ कामधेनुहैंसुरसमुनीशा । कीनकुशस्थकौशलाधीशा ॥ सुरभिदानमहिदेवनदीन्हें । पदगहिविनयभांतिबहुकीन्हें ॥ दैआशिषमहिदेवसिधाये । तबप्रभुयाचकनगरबुलाये ॥ याचकजोजिदीनबहुदाना ॥ चलेभवनयशकरतबखाना ॥ गुरुसतकारकीनरघुराई । विविधप्रकारसुनहुमुनिराई ॥ दो० ॥ हाथजोरिप्रभुविनयकरि चरणकमलशिरनाय । हयगयन्दभूषणवसन दीनलीनमुनिराय ॥ चौ० ॥ कहमुनिप्रभुआशिषममलेहू । आयसुहोयजाउँमैंगेहू ॥ सियसमेतप्रभुगहिमुनिपाऊ । भवनगयेमुनिवरखगराऊ ॥ छोरीगांठिसुमित्राआई । तबसियसासुचरणशिरनाई ॥ केकैकौशल्यापदलागी । दीनअशीशप्रेमअनुरागी ॥ तीनिउमातुचरणजलजाता । गह्योकृपानिधिजनसुखदाता ॥ रानीसबन्योछावरवारैं । सियरघुनन्दनबदननिहारैं ॥ उतसबविविधकौशल्याकीन्ही । पटभूषणयुवतिनकहँदीन्ही ॥ देतअशीशगईनिजधामा । हियेराखिमूरतिसियरामा ॥ कृपासिन्धुप्रभुदीनदयाला । बोलिसचिवअसकहखगपाला ॥ दो० ॥ ब्रह्मभोजविधिवेगिसब तातकरहुतुमजाय । न्योतोद्विजसुरद्वीपभर है आयसुमुनिराय ॥ चौ० ॥ जसकछुब्रह्मभोजविधिहोई । कीजैतातजायअबसोई ॥ मैंजोराजरआयसुपावों । प्रागआदितीरथकरिआवों ॥ सुनिप्रभुवचनसचिवमहिपाला । बन्दिचरणबोलेतेहिकाला ॥ प्रभुसर्वज्ञचराचरईशा । जगपालकघालकरजनीशा ॥ मैंसेवकसबविधिरघुराई । प्रभुतानिजमोहिंदीनबड़ाई ॥ अवशिनाथतीरथसबकीजै । तीरथबासिनकहँसुखदीजै ॥ मोहिंजोआयसुदेहिंगुसाईं । सोमैंकरबदासकीनाईं ॥ सचिववचनसुनिप्रभुरणधीरा । नित्यक्रियाकरिसरयूतीरा ॥ सियसमेतचढ़िसुभगविमाना । गुरुपदबन्दिचलेभगवाना ॥ दो० ॥ प्रथमधपापनहायप्रभु काशीकीनप्रवेश । भोरहिंउठिअस्नानकिय सीतारामखगेश ॥ चौ० ॥ शिवहिंपूजिमिलितीरथबासी । चलेप्रागकहँप्रभुसुखरासी ॥ पवनतेवेगचलेहयरथके । आयेनिकटराजतीरथके ॥ उत्तरदेवसरिकृपानिधाना । सीतासहितकीनअस्नाना ॥ प्रोहिततीरथराजबुलाई । विविधदानदीन्होरघुराई ॥ पूजिदेवतीरथअतिहेतू । भरद्वाजपहँगेखगकेतू ॥ करिप्रणाममुनिवरहिखगेशा । सीतासहितचलेअवधेशा ॥ यमुनउतरिकरिमज्जनपाना । चित्रकूटआयेभगवाना ॥ मन्दाकिनीपुनीतनहाई । भरतकूपआयेरघुराई ॥ भरतकूपसबतीरथखानी । निशाजानिप्रभुरहेभवानी ॥ दो० ॥ होतप्रभातनहायप्रभु मिलिमुनिऋषिनसमाज । बालमीकिमुनिआश्रमहिं चलेहराषिरघुराज ॥ चौ० ॥ मुनिवरनिकटजायरघुराई । दण्डप्रणामकीनाशिरनाई ॥ मुनिहुँबहुतप्रभुअस्तुतिकीन्ही । कन्दमूलफलभोजनदीन्ही ॥ रैनिविहायभानुकुलकेतू । चलेयानचढ़िसियासमेतू ॥ नीमषारमिश्रिषप्रभुआये ।

मिलिसनकृपैनारमसुखगाये ॥ जनकसुतासमेतरघुराई । करिअस्नानतहांगिरिजाई ॥
दीनदानमहिदेवबुलाई । तीरथपूजिचलेरघुराई ॥ सइँउतरिगोमतीनहावा । तमसापाररा
मरथआवा ॥ कौशलपुरआयेरघुनाथा । गुरुपदबन्दिजोरिदोउहाथा ॥ जायभवनमातहि
शिरनावा । प्रेमपुलकिमातहिंउरलावा ॥ सो० ॥ पूंछिकुशलपुनिमात कहप्रभुचरणमतापहुँच ।
तेहिऔसरसबभ्रात आयरामपदहुमगह ॥ चौ० ॥ अनुजनसुखनबोलिरघुराई । भोजनकीन
जायखगराई ॥ अर्द्धनिशालखिदीनदयाला । कीन्हशयनजायतेहिकाला ॥ प्रातउठेगुरु
पदशिरनाई । बन्दिविप्रमुनिआयसुपाई ॥ करिअस्नानपूजित्रिपुरारी । कृपासिन्धुसेवकहित
कारी ॥ अतिआदरभूसुरनबुलाई । चरणधोयभोजनकरवाई ॥ उठेजेसँभूसुरखगपाला ।
पानदक्षिणादीनकृपाला ॥ बहुरिप्रणामकीनरघुबीरा । चलेअशीशतद्विजमतिधीरा ॥
प्रभुआयसुमुनिनायकपाई । बैठेराजसभातबजाई ॥ वर्षसहस्रदशकीन्होराजू । सुखीभये
सबअवधसमाजू ॥ छन्द ॥ भयेसुखीअवधसमाजसबसपनेहुकलेशनपावहीं । नरनारिहर्ष
समेतविधिसोंजोरिहाथमनावहीं ॥ बरदेहुअसविधिनाहमैंजोकहैंयहवानीपढ़ैं । कहदासचेरे
रामसियनितराज्यकौशलपुरकरैं ॥ सो० ॥ ऐसेइवचनखगेश कहैंपरस्परनारिनर । शारद
शेषगणेश ग्रामदेवशिरनायसव ॥ चौ० ॥ मखइतिहासरुचिरमैंगाई । रामचरितसबतुम्हैं
सुनाई ॥ आगेसुनहुअपरइतिहासा । कहौंयथामतिबुधिपरकासा ॥ हरनमोहतमभानुसमा
नू । दहनविपिनअघप्रबलकृशानू ॥ मृतकशरीरसजीवनमूरी । जनमनपापकरहिंसबदूरी ॥
सोमोसोंकयहिविधिकहिजाई । पोतनेकहीरागतिपाई ॥ पाछेयज्ञभयोउतसाहा । सोउछाह
सुनियेखगनाहा ॥ प्रभुअनुजनरनिवासविहँगवर । कीनप्रकटदुइदुइसुतसुन्दर ॥ रामसातु
मुनिवरहिंबुलाई । पूंछीजन्मलगनहरषाई ॥ मुनिवरवचनविचारबखानी । शुभनक्षत्रभेवा
लकरानी ॥ दो० ॥ भयेलगनसुन्दरतनय कहौंबचनसुनुरानि । होइहैंसुतयुगविदितसब सु
यशोभागुणखानि ॥ चौ० ॥ असकहिमुनिरघुपतिपहँआई । कृपासिन्धुमुनिपदशिरनाई ॥
परसिचरणसादरबैठारी । बोलेवचनभक्तभयहारी ॥ नाथकृपातवसिन्धुअपारा । ममस्वा
रथअनुसारतारा ॥ रयँनतभैमवारिअधिकाई । अतिमृदुचितराउरमुनिराई ॥ थकरिनि
[illegible] यनरतनछीना । भूषणवसनभिक्षाचरिलीना ॥ युवतीसुनततुरतउठिधाई । गावतमंगल
मन्दिरआई ॥ द्वारनिबहुविधिसाहिलगावैं । नाचिगायरनिवासरिझावैं ॥ भेरिनिशान
ढोलसहनाई । [illegible] द्वारबरणिनहिंजाई ॥ नाचहिंरम्भअधिकउरगारी । गानकराहिंसुरपा
लसँभारी ॥ दो० ॥ इय [illegible] धामधन र उद्धाररघुनाथ । देतयाचकनबोलिप्रभु विवि
धभांतिखगनाथ ॥ चौ० ॥ रावनकुलजसरीतिभवानी । कीन्हींतसकौशल्यारानी ॥ नामक
रणजबऔसरआई । रामपठ मुनिवरहिबुलाई ॥ सुनतमह मुनिमन्दिरआये । कौशल्यहि
शिशुनप्रभुनाये ॥ जसमुनिवरशिशुनामसुनावा । सोकहुनेगउचितसोपावा ॥ दैआशिष
मुनिराजसिधाये । याचकविविधदानतनपाये ॥ कछुदिवसबीतेमुनिराई । लागेफिरनसुव
नअँगनाई ॥ बालविनोदनिरखिसबरानी । होहिंमुदितनहिंजायबखानी ॥ भूपआगिरखे
लहिंसबभाई । मातहिगोदबसहिंपुनिजाई ॥ माताहरषिगोदतबलीन्हीं । क्षुधितबिलोकि

बीरमुखदीन्हीं ॥ दो० ॥ कीनमुदितचूड़ाकरण दीनभूसुरनदान । यज्ञोपवीतकियोफिर कृपा
सिन्धुभगवान ॥ चौ० ॥ विद्याकहँगुरुपासपठाई । लागेपढ़नकुँवरसबजाई ॥ अल्पकाल
विद्यासबलीन्ही । गुरुसतकारभांतिबहुकीन्ही ॥ लैशरधनुकरकमलनमाहीं । कुशलनसँग
बनखेलनजाहीं ॥ मारैंमृगखगविविधवराहू । फिरहिंअशंकनभयउरकाहू ॥ यज्ञवयस्करसु
नजेहिदेशा । जायँतहांसबअनुजखगेशा ॥ करिछलबलबहुविधिसंग्रामा । कुंवरविजयहिंफिरैं
लैधामा ॥ सबेअनुजयहिविधिमुनिराई । कियेब्याहभुजबलबरिआई ॥ कुवँरकुवँरिमृदुबद
नानिहारी । कौशल्यादिमुदितमहतारी ॥ उतसवअमितभवनअतिथोरा । उमँगिचल्योपुर
तेचहुँओरा ॥ सो० ॥ देखितनयमतिधीर नीतिधर्मअतिसाधुचित । चेरेप्रभुरघुवीर पायसमय
मुनिसनकह्यो ॥ चौ० ॥ प्रभुअभिलाषएकमनमाहीं । तुमतजिनाथकहौंकेहिपाहीं ॥ भयेअनुज
आठौनृपयोग । देहुराज्यसुखपावहिंलोगू ॥ बहुतदिवसबीतेमोहिंस्वामी । तुमहिंविदितसबअंत
र्यामी ॥ मुनिरघुनाथमनेहरबानी । प्रेमपुलकिबोलेमुनिज्ञानी ॥ कसनकहहुअसनीतिकृपा
ला । दीजैसुतहिंराज्यमहिपाला ॥ आठभागवसुधासबकीन्हीं । आठोसुतनबांटिप्रमुदी
न्हीं ॥ गजहयरथसुखपालभवानी । सोसबदीननजायबखानी ॥ पुनिसबतनयसमीपबु
लाई । निजकुलधर्मआसमुझाई ॥ दो० ॥ गुरुसमीपसबसुतनकहँ दीनरामउपदेश । क
रहुराज्यधर्मनीतिसों प्रजहिनहोयकलेश ॥ चौ० ॥ असकहिप्रभुगिरिराजकुमारी । कीन
चरितबहुअवधविहारी ॥ सोप्रसङ्गनहिंसकौंबखानी । प्रभुमहिमामतिदृष्टभवानी ॥ अति
शयपूतचरितरघुराई । आगमनिगमपुराणनगाई ॥ रामचरितअवगाहअपारा । कोसमरथ
जगजाहैपारा ॥ वेदौजासुअन्तनहिंपावै । सोकेहिभांतिउमाकोउगावै ॥ गुणगावतशारद
श्रुतिशेषा । सकुचिरहेकरिशोचविशेषा ॥ रामचरितपावनखगकेतू । भवसागरतरिबैहित
सेतू ॥ रामचरितसुन्दरसुखदाई । कलिमलदहनसुनौमुनिराई ॥ छन्द ॥ प्रभुसकलकलिमल
हरनसंशयशोकमोहनशावनी । कहिदासचेरेभजनबिनपावैनगतिअनपावनी ॥ असजानि
जियकोऊचतुरजगमोहमायात्यागहीं । भवसिन्धुतरिच्छणमाहिंतेरघुवीरपदअनुरागहीं ॥
सो० ॥ रामविनयइतिहास कहैंसुनैंजेप्रेमसों । तेकाटहिंभवफाँस रहैंसुखीतिहुँकालमा ॥
माघहिमासअनूप शुक्लपक्षतिथिदुइजशुभ । कहीहैमतिअनुरूप लवकुशकथाविचित्रअति ॥

इति श्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसने विमलवैराग्यसम्पादनो
नाम अष्टमस्सोपानः ॥

श्रीरामचंद्रकेचतुर्दशवर्ष बनवासकीजंत्री ॥

विश्वामित्रके साथ श्रीरामचन्द्रजी और लक्ष्मणजी श्रीअयोध्याजी से जाकर ऋषिका यज्ञ सम्पूर्णकरके सहितविश्वामित्र और लक्ष्मणजीके मिथिलापुरमें गये वहां राजाजनककी यज्ञशालामें धनुर्भंग किया और श्रीजानकीजीने जयमाल श्रीरामचन्द्रजी के गलेमें डाली तब राजाजनककी आज्ञानुसार दो दूत श्रीअयोध्याजी में दशरथ महाराज के पासजाकर सर्व वृत्तांत धनुष तोड़ने और जानकीजी के जयमाल पानेका कह सुनाया ॥

उसदिनतक १५ पंचदशदिन श्रीरघुनाथजी को सहितलक्ष्मण और विश्वामित्रके श्रीअयोध्या से गये व्यतीतहुयेथे और श्रीरामचन्द्र और जानकीजीका विवाह हिमऋतु अगहनमास शुक्लपक्ष पंचमीतिथि वृश्चिक के सूर्य्य और मीनलग्न में हुआ विवाह के समय १५ वर्षके श्रीरघुनाथजी और ६ वर्षकी जानकीजी थीं और विवाहके पीछे श्रीअयोध्याजी में श्रीरामचन्द्रजी ने १२ वर्ष निवासकरके सहित जानकी और लक्ष्मणजीके बनको पयान किया॥

नीचे लिखीहुई जंत्री श्रीमद्रामचरित्रकीहै इसमें वे चरित्र जो भगवान्ने चतुर्दश वर्ष बनबास में किये वे सबदिनोंकी संख्या से लिखे हैं ॥

(१) श्रीराम लक्ष्मण और जानकीजीने श्रीअयोध्याजी से गमन करके तीनदिन जलमात्र पानकिया तब श्रीरामजीकी आयु २७ वर्ष और जानकीजी की १८ वर्षकी थी ॥

(२) चतुर्थदिवस राम लक्ष्मण और जानकीजी ने शृंगबेरपुर में पहुंचकर फल फूल खाये ॥

(३) पांचवेंदिन राम लक्ष्मण जानकी श्रीगंगाजी पार उतरकर भरद्वाज तथा बाल्मीकिजीको मिलकर चित्रकूट पहुंचे और जयंत का नेत्र भंगकिया और वहां कुछ दिन निवासकिया ॥

(४) राम लक्ष्मण जानकी चित्रकूट से चलकर विराधबध शरभंग सुतीक्ष्ण से मिल अगस्त्य आज्ञानुसार पंचवटी में पहुंचकर १२ वर्ष निवासकिया और १३ वर्ष के प्रारम्भ में शूर्पणखा की नाक हीनकर खर दूषणको मारा ॥

(५) माघ शुक्ल ८ के दिन श्रीजानकी को मध्याह्न समय रावण हरलेगया ॥

(६) पांचवें मास श्रीराम लक्ष्मणजी ने मारीच बधकर श्रीजानकीजी के विरह में जटायू को उद्धारकर कबन्धमार शबरी को सद्गतिदे आषाढ़ महीनें में सुग्रीव को मिले ॥

(७) ४ मासतक श्रीराम लक्ष्मणजीने बालिको मारकर सुग्रीवको राज्य दे प्रवर्षण पर्वतपर निवास किया ॥

(८) मार्गशिर में कृष्ण ११ को हनुमान् वानरों सहित सीताजी को खोजते २ विवर प्रवेश करके सिन्धु तटपर पहुंचे वहां संपाति से सीता की सुधि पाय सिन्धु फांद पार पहुंचे ॥

(९) मार्गशिर कृष्ण १३ को श्रीहनुमान् ने श्रीजानकीजी को मिल मुद्रिका दे अशोकबन उजारा ॥

(१०) मार्गशिर कृष्ण १४ को हनुमान्जी अक्षयकुमारादि राक्षसमार लंकादाहकरके सीताजी से चूड़ामणिले सिन्धु को उतर अपनी सेना में आये ॥

(११) मार्गशिर शुक्ल ६ को हनुमान्जी सेना सहित समुद्र तटसे पयानकर पांच दिन मार्गमें व्यतीतकर किष्किन्धा में पहुंचे ॥

(१२) मार्गशिरशुक्ल ७ को हनुमान्जीने श्रीरामचन्द्रजीको प्रणामकर चूड़ामणिदे सीता सुध कहसुनाई श्रीजानकी जी के हरजाने के १० मास पीछे फिर श्रीरामचन्द्रजीने सुधि पाई ॥

(१३) मार्गशुक्ल ८ को श्रीरामचन्द्रजीने सेनासहित मध्याह्न समय उत्तराफाल्गुनि नक्षत्र में लंका की ओर पयानकिया ॥

(१४) मार्गशिर १५ पूर्णमासीको श्रीरामादि सातदिन मार्ग में रहकर समुद्र तटपर पहुंचे ॥

(१५) पौषवदिकृष्ण १ से ३ तक श्रीरामादि सेना ने समुद्रतीरपर निवासकिया ॥

(१६) पौषवदिकृष्ण ४ को श्रीविभीषणजी श्रीरामजी की शरण आये ॥

(१७) पौषवदि ५ से ८ तक श्रीरामचन्द्रजी समुद्रके आगे विनय करते रहे ॥

(१८) पौषवदि ९ को विप्ररूप सिन्धु श्रीरघुनाथ की शरण आया ॥

(१९) पौषवदि १० को सेतु बांधने को प्रारम्भ किया और १० दश योजनलम्बा तिस दिन बांधा ॥

(२०) पौषवदि ११ के दिन बीस योजन सेतु बांधा ॥

(२१) पौषवदि १२ के दिन तीस योजन सेतु बांधा ॥

(२२) पौषवदि १३ के दिन चालीस योजन सेतु बांधा सब १०० योजन लम्बा और १० योजन चौड़ा सेतु तय्यार किया ॥

(२३) पौषकृष्ण १४ से शुक्ल २ तक श्रीरघुनाथजी सब सेना समेत सिन्धुपारउतरे इस सेना में अठारह पद्म यूथपति थे ॥

(२४) पौषशुदि ३ से १० तक श्रीरघुनाथजी ने लंकाको घेरलिया ॥

(२५) पौषशुदि ११ को शुक और सारण मंत्री रावण के श्रीरघुनाथजी की सेना देखने आये ॥

(२६) पौषशुदि १२ को श्रीरघुनाथजी ने अपनी सेना की चारअनी किया और इस दिन श्रीरघुनाथजी ने एक बाणसे रावणके मुकुट और छत्र मन्दोदरि के कर्ण भूषण पृथ्वीपर गिरादिये ॥

(२७) पौषशुदि १३ से १५ तक रावण की सेना सन्नद्धबद्ध हुई ॥

(२८) माघवदि १ को अंगदजी लंकामें जाय रावणको बहुत समुझाय फिर रघुनाथजी के पास आये ॥

(२९) माघवदि २ से ९ तक श्रीराम रावण दोनों की सेनाका महायुद्ध हुआ और मेघनादने नागफांस डाली ॥

(३०) माघवदि १० को गरुड़ नागफांस काट निजलोकको गये ॥

(३१) माघवदि ११ से १२ तक बहुत युद्ध होकर धूम्रलोचनदैत्य मारागया ॥

(३२) माघवदि १३ से अमावस तक नीलादि दैत्य मारेगये ॥

(३३) माघशुदि १ से ४ तक रावण वानरों से लड़कर लंकाको चलागया ॥

(३४) माघशुदि ५ से ८ तक रावण ने अपने भ्राता कुम्भकर्ण को जगाया ॥

(३५) माघशुदि ९ से १४ तक कुम्भकर्ण श्रीरघुनाथजीसे लड़तारहा और अंत को मारागया ॥

(३६) माघशुदि १५ को रावण कुम्भकर्ण के मारेजानेसे शोकवालाहो नहीं लड़ा ॥

(३७) फाल्गुनवदि १ से ५ तक श्रीरामजीने नारान्तकादि दैत्योंका वधकिया ॥

(३८) फाल्गुनवदि ५ से ८ तक बहुत दैत्य रावणके श्रीरघुनाथजीके हाथसे मारेगये ॥

(३९) फाल्गुनवदि ८ से १३ तक श्रीरघुनाथजीके हाथसे कुम्भ निकुम्भ दैत्य मारेगये ॥

(४०) फाल्गुनवदि १४ से शुक्ल ३ तक जृम्भक दैत्य सेना दैत्योंकी सेनासहित श्रीरामजीके हाथसे [illegible] हुआ ॥

(४१) फाल्गुनशुदि २ से १३ तक श्रीलक्ष्मणजीने मेघनादको वध किया ॥

(४२) फाल्गुनशुदि १४ को रावणने पुत्रके शोकसे युद्ध नहीं किया ॥

(४३) फाल्गुनशुदि १५ पूर्णमासी को रावण समरभूमि में लड़ने को आया ॥

(४४) चैत्रबदि १ से ८ तक रावणने श्रीरघुनाथजीसे बहुत युद्धकिया और रावण के सब सेनापति मृत्यु को प्राप्त हुये ॥

(४५) चैत्रबदि ९ को लक्ष्मणजी रावणके हाथसे शक्ति लगनेसे मूर्च्छितहोगये और इसीदिन श्रीहनुमान्जी के सजीवनलाने से लक्ष्मणजी सचेत हुये ॥

(४६) चैत्रबदि १० को रावण और रघुनाथजीका बहुत युद्ध हुआ ॥

(४७) चैत्रबदि ११ को श्रीरघुनाथजीके वास्ते इन्द्र रथलाया ॥

(४८) चैत्रबदि १२ को श्रीरामजी रथारूढ़ होकर समरभूमि में आये ॥

(४९) चैत्रबदि १२ से १४ तक श्रीरघुनाथजीने रावणको बहुत सेना और दैत्यों के समेत बधकिया और १८ रोज रावण लड़कर कालबश हुआ ॥

(५०) चैत्रशुदि १६ को रावणका शरीरदाह कियागया ॥

(५१) बैशाखबदि १ को श्रीरामादिने शत्रुबध होनेसे बहुत उत्साह किया और इन्द्रसे अमृत मँगवाकर मृत्यु हुये वानरों को जीवितकिया ॥

(५२) बैशाखबदि २ को लक्ष्मणजी ने श्रीरघुनाथजी की आज्ञानुसार विभीषणको राजतिलक लंकामें जाकर बड़े उत्साह से दिया ॥

(५३) बैशाखबदि ३ को श्रीसीताजी ने श्रीरामजी की आज्ञानुसार अग्नि में प्रवेश किया और जानकी १४ मास १० दिन लंका में रहीं ॥

(५४) बैशाखबदि ४ को श्रीरघुनाथजीने जानकीजी और लक्ष्मणजी और हनुमदादि सहित विमानारूढ़हो श्रीअयोध्याजीकी ओर गमन किया ॥

(५५) बैशाखबदि ५ को श्रीरामजी सहित समाज के प्रयागराज में आये ॥

(५६) बैशाखबदि ६ को श्रीरामजी सहित समाज नन्दीग्रामसे श्रीभरतजी के पास आये बड़े आनन्द हर्षसे भेंटे और १४ वर्ष बनबासके व्यतीतहुये ॥

(५७) बैशाखबदि ७ को श्रीमन्महाराजाधिराज रघुनाथजी समेत श्रीजानकीजीके सिंहासनपर बैठे तब आयु श्रीरामचन्द्रजीकी ४१ वर्षकी और जानकीजीकी ३२ वर्षकी थी ॥

(१) भाद्रपद ९ नवमी को श्रीजानकीजीके गर्भ हुआ ॥

(२) चैत्रद्वादशी १२ को लक्ष्मणजी श्रीरघुनाथजी की आज्ञानुसार श्रीसीताजी को बनमें छोड़ आये तब सप्तमासका गर्भ था ॥

(३) आषाढ़ ९ नवमीको लवकुश जन्मे ९६६ वर्ष श्रीजानकीजी बनबासमेंरहीं और ११००० वर्ष श्रीराजाधिराज रामचन्द्र ने राज्यकिया ॥

यह जंत्री श्रीरामचन्द्र बनयात्रादिनावलि रामभक्तों वा सज्जनोंकेवास्ते भक्तजनोद्धारक श्रीगुरुजी महाराज श्रीयुत पण्डित श्रीरामजी कपूरथलानिवासी की कृपासे श्रीमत्पण्डित दुरारीरामजी के पुत्र मिश्र गंगाराम संगरब्राह्मण कपूरथलानिवासी ने संग्रह किया ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥

सप्तदेवस्तुति ॥

गणेशस्तुति आरती ॥

जयलंबोदरईशा । संकटदूरकरोतुममेरो जिमिरवितमखीशा (टेक) विघन निवारन काज सँवारन तुव सबके सुखदाता । जनरंजन दुखभंजनहो शिव गौरी ताता (१) एक दन्त करि बदन सुहावे मूसे असवारी । ऋद्धि सिद्धि दोउ सहित विराजे छवि अतुलित भारी (२) इन्द्रादिक सब देवन पूजैं गणनाथैं धीरा । तूर्य ढोल मृदंगबजावें जयजय बलवीरा (३) तुमसम दीनदयाल न कोई देवकृपाकरियो । रामगंग इकशरणतुम्हारी संकट सब हरियो (४) जयलंबोदर ईशा ॥

सूर्य्यस्तुति आरती ॥

जय रजनी तमहारी । जड़ चेतनके प्राण अधारा तीनलोक हितकारी (टेक) नीलवर्ण वरवाजि विशाला रथके राज रहे । ज्योतिस्वरूप अनूप दिवाकर शोभा अमितलहे (१) कानन कुण्डल जगमगछाजै ज्योतिकला चहुँओरा । सुन्दरबदन सदन मुद मंगल मनसिज मनचोरा (२) गणेश महेश करैं गुणगाना चन्दन धूपसजैं । अगरु कपूर सुहावत बाती भेरी बीन बजैं (३) जगउजियारक मोहनिशि घालक प्रकट प्रभाव खरो । रामगंगपै कृपाकर स्वामी हियतम नाशकरो (४) जयरजनी तमहारी ॥

दुर्गास्तुति आरती ॥

जय जननी सुखदैनी । मङ्गलकरणि अमङ्गल हरणि तप ताप निसैनी (टेक) शुभ्रवर्ण अरुण तन वस्त्र भूषण भूरि सजै । नयन विशाल लालसम वारिज मृगमन देखलजै (१) बेंदीभाल लाल मणिमाला नाक बुलाकलसे । नूपुर धुनि सुनि मुनि मनमोहे धीरज ध्यान नसे (२) सिंहचढ़ी कर गदा विराजे असुर सँहार करे । रक्तबीज सम नीच घनेरे चणमें सकल दरे (३) सुरेश महेश अन्त नहिं पावैं महिमा अलख बनी । जगकरणी इक चण में हरणी माया अमित घनी (४) जानु युगल कर जोर करतहूँ विनती तुमपाहीं । रामगङ्ग की सुधि जनि भूलो निजहियवरमाहीं (५) जय जननी सुखदैनी ॥

शिवस्तुति आरती ॥

जय गिरिजा हितकारी । जटाजूट गल रुण्डन माला गङ्गा शिरधारी (टेक) श्वेतवर्ण तन भस्म लसतहै मृगअम्बरधारी । भूषण भूरि भुजग छवि छाई साहित उमा प्यारी (१) नयन विशाल भाल शशि बालक आनन पाँचबने । भानु कोटि सम बदन सुहावन भृकुटी धनुष तने (२) करधर डमरू विषम त्रिशूला बाहन वरद तरे । भूत प्रेत सहिसेन अपारा भयंकर वेष धरे (३) ब्रह्मादिक सुर असुरन नागा अस्तुति वेदकरे । ढोलक डमरू डफ धुनि

झांझर नयभव ईशहरे (४) हे जगदीश्वर ईश्वर स्वामी प्रभुतुम अन्तरयामी । रामगङ्ग स्वप्ने जनि भूलेउ अभिमूरख कामी (५) जय गिरिजा हितकारी ॥

महावीरस्तुति आरती ॥

जय अंजनीसुत बीरा । बलप्रताप जग रेख तुम्हारी प्रथमे रणधीरा (टेक) रक्तवर्ण तनगातन तेजा गिरिसम देहलसे । गमन दमन मद चलन खगेशा बलनिधि असुर त्रसे (१) रविको फल भल जान्यो ताहि कियो भच्छा । देवन त्राहि करी तब छांड्यो बेगकरी रच्छा (२) लक्ष्मण मूर्छितपरे रणमाहीं रघुबर शोकभरे । लाये सजीवन जीवनकीनो देवन सुमन झरे (३) रावण दुष्ट हरी वैदेही चिन्तारामभई । लंकाजार सँभार सुधि सीता रघुबर आन दई (४) बल अतुल तुव विपुल बड़ाई निजमुख रामकही । रामगंग तप तापन घेरयो तुम्हरी शरणलही (५) जय अंजनीसुत बीरा ॥

आरती श्रीस्वामी श्रीरामचन्द्रजीकी ॥

जय रघुबर धनुधारी । खरासि खलन दलनदलदूषन सन्तन हितकारी (टेक) श्याम शरीर चीरवरपीता भूषण छवि भारी । बाहुविशाल धनुषकर सोहै सहित सियाप्यारी (१) क्रीट मुकुट कर्णकल कुण्डल हार हरण मन विलसे । चरण चिह्न उर महिसुरराजे मस्तक तिलक लसे (२) सुन्दर बदन सदन मुद मंगल चितवन चितचोरा । लोचन ललित दलित मद खंजन बाल मराल किशोरा (३) गौतमनारि उद्धार हत निशिचर ऋषिका यज्ञकीनो । चापफोड़ तोड़दल राजन जनकसुता बरलीनो (४) शबरी तार मार रणरावण धरणीभार हरा । रामगंग कलिमलको ग्रस्यो तुम्हरी शरणपरा (५) जय रघुबर धनुधारी ॥

आरती कृष्णदेव ॥

जय गोवर्द्धनधारी । सुरपति गर्व सर्वकरमोचन राखी ब्रजसारी (टेक) मोर मुकुट शिर गच कचकारे कुण्डल मनहारी । मोतिनहार चारु बनमाला नूपुर धुनि न्यारी (१) पीत वसन वर बरण तमाला मुरली अधर धरी । गौरवरण तरुण सँगराधे जोरी अमित खरी (२) कंसदुष्ट बहु दुष्ट पठाये महिमा नाहिं जानी । ताको मार पछार सब असुरन सुखी किये रजधानी (३) कौरव अनीतिकरी बरजोरी द्रौपदिचीरखसे । भक्ताधीन बसन बहुकीनो उतारत हाथखसे ४) वेश्या विप्रसम नीच घनेरे चरण में तारदियो । रामगंग शिरमौर पतित को काहे राखि लियो (५) जय गोवर्द्धनधारी ॥ समाप्तम् ॥

यह सर्व आरती गणेश, सूर्य, दुर्गा, शिवजी, हनुमानजी, श्रीस्वामी रामचन्द्रजी और श्री कृष्णदेव की ॥

भक्तजनोद्धारक श्रीगुरुजी महाराज श्रीयुत पण्डित श्रीरामजी कपूरथला निवासी की आज्ञानुसार श्रीमत्पण्डित मुरारीरामजी के पुत्र मिश्र गंगाराम संगरब्राह्मण कपूरथला निवासी ने भक्तजनों व सज्जनों के वास्ते रचना की ॥

अ

अकथ, गु० वा० पुं० अकथ्य, कहने के योग्य नहीं

अकथनीय, गु० वा० पुं० सं० तथा

अकनि, क्रि० त्रि० सुनकरके भा०

अकरन, त्रि० पुं० भा० विनाकारण

अकल, त्रि० पुं० सं० हाथ पांव रहित और बेहोश

अकसर, ना० वा० भा० केवल

अकामैन, क्रि० वा० भा० अकाम क्रिया, मरना

अकाम, त्रि० पुं० सं० कामना वा इच्छारहित

अकाल, अ० वा० पुं० सं० कुसमय, विना ऋतुके

अकिञ्चन, त्रि० पुं० सं० दरिद्री, जिसके पास कुछ न हो

अकुल, वि० पुं० सं० कुलहीन

अकुलाना, क्रिया वा० घबराना

अकण्टक, वि० पुं० सं० विनाशत्रुका बेखटके

अकुंठ, त्रि० पुं० सं० बाधारहित, तीक्ष्ण, तेज

अक्षय, त्रि० पुं० भा० अक्षय, जिसका नाश न हो

अखण्ड, त्रि० पुं० सं० जिसके खण्ड न हों, सम्पूर्ण

अखारा, अ० वा० भा० नाच, लड़ने और साधुओं के रहने का स्थान

अखिल, गु० वा० नपुं० सं० सब

अंग, ना० वा० सं० पुं० पर्वत, अचल

अगनित, प्र० वा० भा० बेशुमार, बेप्रमाण

अगम, त्रि० भा० पुं० जहां कठिनता से जा सके, ना० वा० सं० पुं० शास्त्र

अगर, भा० वा० सं० पुं० एक प्रकारकी सुगन्धि वस्तु

अग्र, ना० वा० सं० आगे, मुख्य

अगड़, प्रा० आगे,

अगाध, ना० वा० सं० नपुं० अथाह

अगुन, ना० वा० सं० पुं० निर्गुण ब्रह्म, भगवान्

अगोचर, त्रि० सं० पुं० जो इन्द्री और अन्तःकरणादि से न जाना जावे

अघ, ना० वा० सं० पुं० पाप, दुःख

अघटित, त्रि० सं० कृदन्त० अयोग्य, जो न होसके

अघात, ना० वा० सं० चोट, शिकारी का स्थान

अघाती, त्रि० सं० पुं० जिसके घाव न लगा हो भा० पुं० दुखहुआ, अघायगया

अचगरी, भा० वा० भा० दुबला, बढ़ी

अचल, ना० वा० सं० पुं० पर्वत, स्थिर, थिर

अचञ्चल, ना० वा० सं० पुं० थिर

अछूत, वि० भाषा० जो छुआ न हो और पूजा में अक्षत जो चढ़ाये जाते हैं वो नाम है

अज, ना० वा० सं० पुं० जो जन्मे नहीं ब्रह्मा, बकरा, अज

अज्ञ ना० वा० सं० पुं० मूर्ख, जो कुछ न जाने

अज्ञात, त्रि० सं० पुं० जिसको न जाना हो

अज्ञता, भा० वा० सं० स्त्री० मूर्खपन

अजर, त्रि० सं० पुं० जरारहित, बुढ़ापा जिसको न हो, ब्रह्माजी और देवताओं का नाम भी है

अजामिल, ना० वा० पुं० एकब्राह्मण का नाम है जो पापी था पर नारायणके कहने से तरा

अजित, त्रि० सं० पुं० जो न जीता जावे

अजिन, ना० वा० सं० नपुं० मृगछाला, चमड़ा

अजिर, ना० वा० सं० पुं० आंगन

अजै, भाषा पुं० जो जीतनेयोग्य न हो

अटन, नाम पुं० भाषा अटारी घूमना

अट्टहास, ना० वा० पुं० सं० खिलखिलाके हँसना

अतनु, ना० वा० सं० पुं जो विना शरीर के हो, कामदेव को भी कहते हैं

अतर्क्य, त्रि० सं० पुं० जो तर्क के योग्य न हो

अतिथि, ना० वा० सं० अभ्यागत, पाहुन

अतिशय, ना० वा० सं० पुं० बहुत बड़ा, अतिशय

अतीत, ना० वा० सं० पुं० रहित, बीता

अतुलित, वि० सं० पुं० जो तोला नहीं गया, बड़े

अत्र, अव्यय यहां, इससे

अत्रिप्रिया, ना० वा० सं० स्त्री० अनसूया, अत्रिऋषिकी स्त्रीकानाम

अथाई, भा० पुं० बैठक

अदभ्र, त्रि० सं० नपुं० बहुत पूर्ण

आश्चर्यित, सं० पुं० अपूर्व

अदिति, ना० वा० सं० स्त्री० देवताओंकी माता

अदेय, भा० वा० सं० नपुं० जो देने योग्य न हो

अदृश्य, भा० वा० सं० नपुं० छिपा जो न दीखे

अद्भुत, ना० वा० सं० पुं० अपूर्व आश्चर्यका

अद्रि, ना० वा० सं० पुं० पहाड़

अद्वैत, ना० वा० सं० भेदरहित, जिसके समान दूसरा नहीं

अधः, अव्यय सं० तले, नीचे

अधगो, ना० वा० भा० पुं० गुदामार्ग

अधर, ना० वा० सं० नपुं होठ ओठ

अधिकारी, त्रि० सं० पुं० जो अधिकारके लायक हो

अधिप, नाम वा० सं० पुं० राजा मालिक

अधिवास, नाम वा० सं० नपुं० बस-ने की जगह

अधीश, नाम वा० भा० सं० पुं० राजा, स्वामी, अधीश

अनअड़ियात, भा० वा० भा० वि-चत्रापन

अनइस, भा० वि० पुं० बुरा

अनख, ना० वा० भा० पुं० क्रोध, ईर्षा, डाह

अनघ, वि० सं० पुं० जो पापरहितहो

अनट, भाषा० पुं० अन्याय

अनत, भाषा० पुं० और जगह

अनपायिनी, वि० सं० स्त्री० नित्य, जिसका नाश न हो

अनन्य, ना० वा० सं० पुं० जिसको दूसरे का भरोसा न हो

अनल, ना०वा०सं०पुं०आग,अग्नि

अनवद्य, ना० वा० सं० नपुं० निर्दोष

अनयास,भा० वा० अ० पुं० अना-यास, बेयत्न

अनहित, ना० वा० भा० पुं० शत्रु, बैरी, गु० वा० बुरा

अनाथ, ना० वा० सं० पुं० बे मालिक

अनादि, वि० सं० पुं० जिसका आ-दि न हो

अनामय, ना० वा० सं० पुं० नीरोग, भला, चंगा

अनिन्दित, ना० वा० सं० पुं० जिस की बुराई न हो

अनिप, वि० वा० नाम भा० वा० पुं० सिपहसालार, सेनापति

अनिमनि, ना० वा० भा० पुं० उदा-स, अनमनी,

अनिल, ना० वा० सं० पुं० वायु, ब्यार, हवा

अनिर्वाच्य, वि० सं० पुं० जो कहने के योग्य न हो

अनीमा, ना० वा० स्त्री० [illegible], अपुराय

अनीक, ना० वा० सं० नपुं० सेना, फ़ौज

अनीश, ना० वा० प्रा० पुं० अनीश, और जो ईश न हो

अनीह, ना० वा० सं० पुं० चेष्टार-हित, मन्द

अनु, अव्यय, सं. आगेपीछेभापाथोड़ा

अनुकथन, क्रि० वि० सं० नपुं० बारम्बार कहना

अनुकूल, ना० वा० सं० पुं० प्रसन्न अनुसार

अनुग, ना० वा० सं० पुं० पीछेचलने-वाला नौकर

अनुग्रह, नाम वा० सं० पुं० दया, कृपा

अनुगामी, नाम वा० सं० पुं० पीछे चलने वाला

अनुचर, नाम वा० सं० पुं० दास

अनुचरी, नाम वा० सं० स्त्री दासी

अनुज, ना० वा० सं० पुं० जो पीछे पैदाहो, छोटा भाई

अनुजा, ना० वा० सं० स्त्री० छोटीबहिन

अनुदिन, ना० वा० सं० नपुं० हमेशा-ह, हररोज़

अनुपम, वि० सं० नपुं० उपमारहित

अनुभव, नाम वा० सं० पुं० यथार्थ जानना

अनुमान, नाम वा० सं० पुं० विचार, अटकल

अनुमानी, नाम वा० सं० पुं० विचा-रने वाला

अनुराग, नाम वा० सं० पुं० प्रीति, थोड़ा लाल

अनुरूप, ना० वा० सं० पुं० योग्य, अनुसार

अनुरोधु, ना० वा० सं० पुं० रोकनेवाला

अनुमोदन, क्रि० वि० सं० प्रशंसा, सराहना

अनुवाद, क्रि० वि० सं० बारम्बारकहना

अनुसारी, नाम वा० सं० अनुकूल होय बोली

अनुभाऊ, नाम वा० भा० पुं० अनु-भाव, माहात्म्य

अनुसासन, ना० वा० भा० पुं० अ-नुशासन, आज्ञा

अनुसन्धान, ना० वा० सं० नपुं० चाहना, खोजना

अनुहर, ना० वा० सं० पुं० अनुहार योग्य

अनृत, नाम वा० सं० नपुं० झूठ

अनेक, ना० वा० सं० पुं० कईएक, बहुत

अनैसे, क्रि० वि० भा० कुदृष्टि से

अनंग, नाम वा० सं० पुं० जो अंग-रहितहो, कामदेवका नाम है

अन्यथा, अव्यय० सं० झूठ और प्रकार से

अन्वहं, क्रि० वि० सं० हररोज़, ल-गातार

अपडर, ना० वा० झूठ, डर

अपत, नाम वा० सं० पुं० पापी, अप्रतिष्ठित

अपभय, ना० वा० सं० नपुं० भय, डर

अपर, ना० वा० सं० नपुं० दूसरा और

अपलोक, ना० वा० सं० पुं० अपयश

अपवर्ग, नाम वा० सं० पुं० मोक्ष, मुक्ति

अपवाद, नाम वा० सं० पुं० अपय-श, निन्दा

अपहरना, क्रि० वा० भा० दूरकरना

अपहारी, ना० वा० सं० पुं० नाश करने वाला

अपान, नाम वा० भा० पुं० अपना सं० पुं० गुदा कीवायु

अपि, अव्यय० सं० भी, निश्चय

अपेल, नाम वा० भा० पुं० अचल

अप्रतिहत, वि० पुं० सं० जिसका रोक न हो

अर्पो, क्रि० वा० सं० देदिया, सौंपा

अबला, नाम वा० सं० स्त्री, औरत

अबाधा, नाम वा० सं० स्त्री० बाधारहित, बेरोक, दे दुःख

अबुध वा० वा० सं० पुं० अज्ञानी

अपि, अव्यय० सब ओरसे
अभिअन्तर, नाम वा० सं० नपुं० भीतर
अभिजित, नाम वा० सं० पुं० एक नक्षत्रका नाम है
अभिनन्दन, नाम वा० सं० नपुं० सराहना
अभिमत, नाम वा०सं० पुं० वांछित, चाहा गया
अभिराम, नाम वा०सं० पुं० सुंदर, सुखद
अभिषेक, नाम वा० सं० नपुं० जल छिरकना, स्नान
अभीष्ट, नामवा० सं० पुं०चाहागया
अभूतारिपु, वि० सं० पुं० शत्रुरहित
अभेद, नाम वा० सं० पुं० भेदरहित, जो न टूटे
अभंगु, नाम वा० सं०पुं०जो न मिटे
अमराइ, नाम, वा० भा० आम का बगीचा
अमरावती, नाम वा० सं० स्त्री० स्वर्ग, इन्द्रलोक
अमान, नाम वा० सं० नपुं० मानरहित, प्रमाणसे परे
अमानुष, नाम वा० सं० नपुं० जो मनुष्य से न हो
अमित, नाम वा० सं० नपुं० जिस का प्रमाण नहीं
अमिय, नाम वा० भा० पुं० अमृत संजीवनी
अमोघ,नाम वा० सं० नपुं० सफल
अमियमूरि, नाम वा० भा० स्त्री० संजीवनी, बूटी
अमंगल, नाम वा० सं० पुं० अशुभ
अय, नाम वा० सं० नपुं० लोहा
अयन,नाम वा, सं०नपुं०घर, स्थान
अयम्, सर्वनाम० पुं० यह
अयुत, नाम वा० सं० पुं० दशहज़ार
अरगाई, नाम वा०पुं० चुप, अलग

अर्धांग, नाम वा० सं० पुं० आधा शरीर, आधा अंग,
अर्ध, नाम वा० सं० नपुं० आधा
अरनव, नाम वा० भा० पुं० अर्णव, समुद्र
अरनी, नाम वा० भा० स्त्री० आग मथने की लकड़ी
अरि, भा० वा० सं० पुं० वैरी,शत्रु
अरुन, नाम वा० भा० पुं० लाल, सूर्यका रथ हांकनेवाला
अरुनचूड़, नाम वा० भा० पुं०मुर्गा
अरुनाट, नाम वा० भा० पुं० लाल
अरुनशिखा, नाम वा०भा०पुं० मुर्गा
अलखित, क्रि० वि० अलक्षित, जो दिखे नहीं
अलच्छि, नाम वा० भा० स्त्री० अलक्ष्मी, धनहीन
अलान, नाम वा० सं० पुं० जंजीरा, गजबंधन
अलि, नाम वा० सं० पुं० भ्रमर, भौंरा, स्त्री, सखी
अलिनि, नाम वा० भा० स्त्री० भ्रमरी, भौंरी
अलीका, नाम वा० सं० पुं० झूठ
अलीहा, नाम वा० भा० पुं० झूठ
अलुहि, क्रि० वि० अलुक करके
अलोला, नाम वा० थिर
अलौकिक, नाम वा० सं० नपुं० जो लोकमें न हो
अलंकृति, नाम वा० सं० स्त्री० अलंकार, शोभा
अवकलित,नामवा०सं०पुं० निश्चित
अवगति, नाम वा० सं० पुं०जानना
अवगाह, अव्यय सं० अथाह, स्नान, नहाना
अवघट, नाम वा० सं० पुं० अड़बड़
अवघट, नाम वा० सं० पुं० औचक
अवज्ञा, नाम वा०सं० स्त्री० अपमान
अवडेरि, क्रि० वि०भा० त्यागकरके पेंच में फसाके

अवढर, नाम वा० भा० पुं० जो नीचे से चढ़े, दयाकरे
अवतंस, नाम वा० सं० पुं० माथे का गहना
अवध, नाम वा० सं० पुं० अयोध्या
अवधि, नाम वा० सं० स्त्री० हद, सीमा प्रतिज्ञा
अवनि, नाम वा० सं० स्त्री० पृथ्वी
अवनिप, नाम वा० सं० पुं० राजा
अवनीश, नाम वा० सं० पुं० अवनीश, राजा
अवर्त, नाम वा० सं० पुं० भँवर जलचुम्बर
अवराधक, नाम वा० सं०पुं० सेवक
अवराधना, क्रि० वा० सेवना
अवरेखी, नाम वा० पुं०भा० लिखी
अवरेख, नाम वा० पुं० भा०लौटके पदको जोड़ना
अवलोकय, वि० क्रि० सं० देखो
अवसान, नाम वा० सं०नपुं०अन्त, नाश
अवशि, नाम वा० भा० पुं०अवश्य ज़रूर
अवशेषित, वि० सं० पुं०बाक़ीबचा
अवसेरी, नाम वा० भा० स्त्री० देर, क़ुबाहिश, हाजत
अवाधी, नाम वा० सं० पुं० सुखी
अविकारी, वि०सं०पुं०विकाररहित जन्म आदि ६ छः विकारहीन
अविगत, नाम वा०सं० पुं० व्यापक
अविचल, नाम वा० सं० पुं० स्थिर
अविछीन नाम वा०भा०पुं०निरन्तर
अविद्या, नाम वा०सं० स्त्री० अज्ञान
अविद्यापंच, वि० नाम सं० नपुं० अविद्या १ स्मित २ अभिनिवेश ३ राग ४ द्वेष ५
अविनय, नाम वा० सं० पुं० ढिठाई
अविनाशी, वि० भाषा पुं० जिसका नाश नहीं
अविरल, नाम वा० सं० पुं० निरन्तर

अविरोध, नाम वा० सं० पुं० विरोध न हो

अविवेक, नाम वा० सं० पुं० अज्ञान

अव्यक्त, नाम वा० सं० पुं० प्रकृति, ईश्वर, गुप्त

अष्टाहास, नाम वा० सं० पुं० बेरोक

अष्टादश, सं० वा० सं० पुं० अठारह

अस, अव्यय० भा० ऐसे

असन, नाम वा० भा० नपुं० भोजन, अशन, खाना

असनि, नाम वा० भा० पुं० अशनि, वज्र

असमय, नामवा० कुसमय, विनाऋतु

असमशर, वि० नाम भा० पुं० जिसके बाणतीव्र हों, कामदेव का नाम है

असहाई, नाम वा० भा० पुं० विना सहायके

असमंजस, नाम वा० सं० पुं० दुविधा

असाधी, नाम वा० भा० पुं० असाध्य, जो दूर न हो

असि, नाम वा० सं० पुं० तरवार अ० ऐसी क्रियापद है

असिव, नाम वा० भा० पुं० अशिव, अमंगल

असुर, नाम वा० सं० पुं० दैत्य, राक्षस

असुरसेन, वि०नाम पुं० भा० गया

अशेष, नाम वा० सं० पुं० सब सम्पूर्ण

अशौच, नाम वा भा० पुं० अपवित्रता

असम्भावना, नाम वा० सं० स्त्री० अनिश्चय, जिसकी उम्मेद न हो

असम्मत, नाम वा० सं० नपुं० प्रतिकूल

अस्थिमात्र, नाम वा० सं० नपुं० हाड़भर

अह, नाम वा० सं० पुं० कष्ट, अहंकार, दिन

अहह, अव्यय० हाय, कष्टकी अधिकता

अहमिति, नाम वा० सं० पुं० अहंकार

अहि, नाम वा० सं० पुं० सांप, नाग

अहिनी, नाम० वा० सं० स्त्री० सांपिना, नागिनी

अहिराज, वि० नाम सं० पुं० शेषनाग, जो सांपों का राजा है

अहिवात, नाम वा० सं० पुं० सुहाग, सौभाग्य

अहेर, नाम वा० भा० पुं० शिकार, आखेट

अहेरी, वि० भा० पुं० शिकारी,

अहो, अव्यय, आश्चर्य,

अहं, स० सं० भा० पुं० मैं

आ

आकर, नाम वा० सं० पुं० खानि

आकुल, नाम वा० सं० पुं० व्याकुल, विकल, पूर्ण

आकृति, नाम वा० सं० स्त्री० आकार, सूरत, शकल

आखर, नाम वा० भा० पुं० अक्षर, हर्फ

आगार, नाम वा० पुं० भा० मुख्य, मुहजुबानी, घर

आगरी, नाम वा० स्त्री० भा० कोठरी, नागरी

आगर, नाम वा० सं० पुं० घर, हवेली

आगिल, नाम वा० भा० पुं० होनहार, सात्री

आचरण, नाम वा० सं० पुं० आचार, करतूत

आचारहीं, क्रि० वा० सं० करते हैं

आतप, नाम वा० सं० पुं० धूप, घाम

आत्महन, नाम वा० सं० पुं० आत्मघाती, जो अपने को मारे

आतुर, नाम वा० सं० पुं० बीमार, रोगी, दुःखी

आदिकवि, नाम सं० पुं० वाल्मीकिजी

आन, नाम वा० भा० पुं० अन्य, और, सौगन्द

आनन, नाम वा० सं० नपुं० मुख, मुहँ

आनयो, वि० क्रिया० लाइयो

आपन्न, कर्म० वा० सं० पुं० आपत्तिमें पड़ा

आभीर, नाम वा० सं० पुं० अहीर, गोप, भील

आमलक, नाम वा० सं० नपुं० आंवरा, आंवला

आयत, गु० वा० सं० पुं० चौड़ा विशाल, बड़ा

आयतन, नाम वा० सं० नपुं० घर

आयसु, नाम वा० भा० स्त्री० आज्ञा, हुक्म

आयुध, नाम वा० सं० नपुं० शस्त्र, हथियार

आर्ज, नाम वा० भा० पुं० आर्य श्रेष्ठ, ससुर

आरत, नाम वा० भा० पुं० आर्त, दुःख

आरति, नाम, वा० भा० स्त्री० आर्ति, पीड़ा, अतिप्रीति

आराती, नाम वा० भा० पुं० अराती, वैरी, शत्रु

आराम, नाम वा० सं० पुं० सुख दाता बागीचा

आरूढ़, नाम वा० सं० पुं० चढ़ा

आरो, नाम वा० भा० पुं० शब्द, आरव, आहट

आलय, नाम वा० सं० न० घर, स्थान

आलवाल, नाम वा० सं० पुं० थांवला

आव, नाम वा० भा० स्त्री० आयुष्य, उमर

आवलि, नाम वा० भा० स्त्री० अवलि, सतर

आवाहन, नाम वा० सं० नपुं० बुलाना

आश्रित नाम वा० सं० पुं० आश्रित जो किसी के भरोसे व आसरे से हो
आश्रमी, नामवा० सं० पुं० ब्रह्मचारी
आशक्त, कर्मवाचक सं० पुं० जो लगाहो
आसा, नाम वा० स्त्री० भा० आशा, दिशा, भरोसा, आसरा
आसाव्रसन, नामवा० पुं० दिगम्बर, नंगा, सन्तोषी, तृष्णारहित
आसीन, नाम वा० सं० पुं० बैठा
आसु, नाम वा० नपुं० भा० जल्दी, आशु
आक, नाम वा० भा० पुं० निश्चय
आंकुरे, नाम वा० भा० पुं० बहु० व० अंकुर, अंखुए

इ

इकअंग, नाम वा० भा० पुं० एक पलरा अंग
इच्छित, नाम वा० पुं० सं० चाहना या वाञ्छित
इत, अव्यय इधर
इतराई, गु० वा० भा० स्त्री० ऐंठके चलना, इतराना
इदम्, सं० नाम नपुं० यह
इदमित्थम्, सं० नाम अ० वा० यह ऐसा है
इव, सादृश्यार्थक अव्यय जैसे सदृश
इष्टदेव, नामवा० सं० पुं० पूज्यदेवता
इह, अव्यय यहां, इस लोक में
इन्दिरा, नाम वा० सं० स्त्री, लक्ष्मी
इन्दु, नाम वा० सं० पुं० चन्द्रमा
इन्द्रजाल, नाम वा० सं० पुं० बाजीगर
इन्द्रजीत, नाम वा० सं० पुं० मेघनाद
इन्द्री, नाम वा० भा० स्त्री० इन्द्रिय नेत्रादि

ई

ईति, नाम वा० सं० स्त्री० एकप्रकार की दैवी उपाधि जो राज्य में होती है उनके ६ भेद हैं १ अति पानी बरसना २ पानी न बरसना ३ टीड़ी अधिक होना ४ चूहे अधिक होना ५ सूए अधिक होना ६ रतुआ अन्नादिमें लगना
ईशान, नाम वा० सं० पुं० ईश्वर, शिव, महादेवजी
ईषणा, नाम वा० सं० स्त्री० चाह ३ प्रकारकी संसारमें होतीहै १ उत्तम लोक की २ पुत्र की ३ धन की
ईश, नाम वा० सं० पुं० ईश, ईश्वर, शिवजी, राजा
ईंधन, नाम वा० पुं० भा० जलाने की लकड़ी

उ

उकठा, नाम वा० पुं० भा० उकठा, उकठना
उकलाई, क्रि० वा० भा० ऊंचेहोना, लिखना
उग्र, नाम वा० सं० पुं० भयङ्कर, श्रेष्ठ
उघरे, गु० वा० भा० पुं० व० खुले, नंगे
उचाट, नाम वा० भा० पुं० उचाटन, उचाटन
उचित, नाम वा० सं० पुं० योग्य, जोग
उछंग, नाम वा० भा० पुं० उत्संग, गोदी
उजागर, नाम वा० भा० प्रसिद्ध, उज्ज्वल
उज्जैनी, नाम वा० भा० स्त्री० एक नगर का नाम है जहां के राजा भोज थे
उडु, नाम वा० सं० स्त्री० तारा, नक्षत्र
उक्ति, नाम वा० सं० स्त्री० कहना, वचन
उत्कण्ठा, नाम वा० सं० स्त्री० अभिलाषा
उत्कर्ष, नाम वा० सं० पुं० बड़ाई, अधिकता
उत्पात, नाम वा० सं० पुं० उपाधि, उपद्रव
उत्सव, नाम वा० सं० पुं० उत्साह, खुशी
उत्तुंग, गु० वा० सं० पुं० ऊंचा
उदक, ना० वा० सं० नपुं० जल, पानी
उदघाटी, नाम वा० भा० स्त्री० प्रकटना
उदधि, नाम वा० सं० पुं० समुद्र
उद्भव, नाम वा० सं० पुं० उत्पात
उदयगिरि, वि० ना० सं० पुं० उदिताचल, जहां से सूर्य उदयहोताहै
उदर, ना० वा० भा० पुं० पेट
उदरवृद्धि, ना० वा० सं० जलोदररोग
उद्वेग, ना० वा० सं० पुं० क्षोभ, घबराहट
उदार, नाम वा० सं० पुं० दाता, देनेवाला
उदासा, ना० वा० भा० पुं० बेपरवाह
उदासी, ना० वा० सं० पुं० संन्यासी
उदासीन, ना० वा० सं० पुं० शत्रु मित्र भावरहित
उपचार, नाम वा० सं० पुं० उपाय
उपधान, नाम वा० सं० पुं० तकिया
उपनिषद्, ना० वा० सं० पुं० वेद का रहस्य
उपपातक, नाम वा० सं० पुं० छोटा पाप
उपवन, नाम वा० सं० नपुं० विहार करने की बगीची
उपरागा, नाम० वा० भा० पुं० ग्रहण, गहन
उपल, नाम वा० सं० नपुं० पत्थर
उपबरहन, नामवा० भा० पुं० तकिया
उपवासा, ना० वा० भा० उपवास, व्रत, भूखारहना
उपवीत, नाम वा० सं० नपुं० जनेऊ
उपराजा, क्रि० वा० उपजाना
उपहार, नाम वा० सं० पुं० भेट, पूजा, नजर

उपाटी, क्रि० वि० उखाड़ के
उपाधी, नाम वा० समीप प्राप्ति, उपद्रव
उपाये, कर्म वा० उपजाये
उपारे, क्रि० वा० उखारे,उपारे
उपाया,क०वा०पैदाकिया, उपजाया
उपासा, नामवा०भा० पुं० उपवास, भूखा
उपासक, नाम वा० सं० पुं० भक्त
उपासना, नाम वा० सं०स्त्री० भक्ति, सेवा
उबरे, नाम वा० उबरगया
उबारा, नाम वा० बचा, उबरगया
उभय, नाम वा० सं० पुं० दो, दोनों
उभौ, नाम वा० सं० पुं० दो, दोनों
उमा, नाम वा०सं० स्त्री० पार्वतीजी
उयेउ, क० वा० उदयहुआ
उर, नाम वा० सं०पुं० छाती, हृदय
उरग, नाम वा० सं० पुं० सांप
उरगाद, नाम वा० सं० पुं० सांप को जो खाय,गरुड़
उरगारी, नाम वा० सं० पुं० सांपों का वैरी अर्थात् गरुड़
उरु, नाम वा० सं० पुं० बहुत, अधिक
उर्विजा, नाम वा० सं० स्त्री० जो पृथ्वी से पैदाहुई हो श्री सीता जीका नाम है
उलूक, नाम वा० सं० पुं० उल्लू, घुघुआ
उहारउ, नाम वा० भा० पुं० उहार, परदा

ऊ

ऊमर, नाम वा० भा०पुं०उदुम्बर, गूलर
ऊना, नाम वा० सं० पुं० कम

ए

एक, सं० वा० सं० पुं० एकही अवल, मुख्य

एकरस, नाम वा० सं० पुं० जिसमें ६ विकार अर्थात् १ काम २ क्रोध ३ लोभ ४ मोह ५ मद ६ मात्सर्य्य ये न हों
एकाकिन, नाम वा० सं० पुं० अकेला, एकाकी
एकाकी, नाम वा० सं० पुं० अकेला,
एतादृश, सं० ना० ऐसा
एवमस्तु, आ० वा० ऐसा हो

ऐ

ऐक, नाम वा० सं० पुं० अटकल

ओ।

ओघ, नाम वा० सं० पुं० समूह
ओदन, नाम वा० भा० पुं० चावल पकाहुआ, भात
ओधे, क्रि० वा० लगे
ओर, अव्यय, तर्फ़, अन्त
ओरे, नाम वा० व० व० भा० पुं० ओराके बहुवचन ओले

अं

अङ्क, नाम वा० सं० पुं० अक्षर, गोदी, निशान, गिनती
अङ्कित, क० वा० सं० पुं० चिह्नयुत
अंग, नाम वा० सं० पुं० शरीर प्रिय हस्त आदि राज्य के ७ अंग होते हैं १ स्वामी २ दीवान ३ मित्र ४ कोष ५ राज्य६ क़िलाह ७ फौज
अंगरी, नाम वा० भा० पुं० बख़तर
अंगवन, क्रि० वा० सहना
अंचल, नाम वा० भा० पुं० आंचर
अम्बा, नाम वा० सं० पुं० स्त्री० माता, अम्मा, महतारी
अम्बक, नाम वा० पुं० सं० आंख
अम्बर, नाम वा० सं० नपुं० वस्त्र, कपड़ा
अम्बरीस, नाम वा० भा० पुं० अम्बरीष, एक राजाका नाम है

अम्बु, नाम वा० सं० नपुं० जल, पानी
अम्बुधर, नाम वा० सं० पुं० मेघ, बादर
अम्बुधि, नाम वा० सं० पुं० समुद्र
अम्बुपति, नाम वा० सं० पुं० वरुण, बरुन
अम्भोज, नाम वा० सं० पुं० कमल
अंजि, क्रि० वि० अंजन लगा के, आंज करके
अंगुलि, नाम वा० सं० नपुं० अंगुरी
अण्ड, नाम वा० सं० पुं० ब्रह्मांड
अन्तर, अव्यय भीतर, भेद
अन्तरजामी, वि० सं० पुं० मनका जाननेवाला
अन्तरधान, क्रि० वा० छिपना
अन्तर्हित, क्रि० वा० छिपे, गुप्त
अन्तावरि, नाम वा० भा० स्त्री० अन्तड़ी, आंत
अम्बा, नाम वा० भा० पुं० आंब

क

कइकई, भा० वा० स्त्री० भा० कैकेयी
कच, नाम वा० सं० पुं० बाल, केश
कच्छप, नाम वा० सं० पुं० कछुआ
कज्जलगिरि, नाम वा० सं० अंजन पर्वत
कटक, नाम वा० सं० पुं० सेना, कड़ा
कटाह, नाम वा० भा० पुं० कड़ाह
कटि, नाम वा० सं० स्त्री० कमर
कटिसूत्र, नाम वा० सं० नपुं० करधनी, तागड़ी
कटु, नाम वा० सं० नपुं० कड़ुवा
कड़िहार, नाम वा० भा० पुं० कर्णधार, मलाह
कत, सं० काहे, किसलिये
कति, सं० नपुं० कितना
कथनीय, क० वा० सं० पुं० कहने योग्य
कदली, नाम वा० सं० स्त्री० केला, केरा

कदम्ब, नाम वा० सं० पुं० वृक्षवि-
शेष, समूह

कद्रु,नामवा०सं०स्त्री० सांपोंकीमाता

कनककशिपु,नामवा० सं० पुं० हि-
रण्यकशिपु, एक दैत्य का नाम

कनकलोचन,नाम वा० सं० पुं० हि-
रण्याक्ष

कनी, नाम वा० भा० स्त्री० कन्द,
कनिका

कपटका, भू० नाम वा० सं० स्त्री०
मायाभू भूमि

कपाट, नाम वा० सं० पुं० किवाड़

कपाल. नाम वा० सं० पुं० खोपड़ी

कपि, नाम वा० सं० पुं० वानर

कपिकुंजर,नाम वा० सं० पुं० कपि-
श्रेष्ठ

कपिन्द्र, नाम वा० सं० पुं० कपी-
न्द्र, वानरोंका राजा

कपिल, नाम वा०सं० पुं० एकमुनि
कानामहै, सांख्यशास्त्रकाप्रवर्त्तक

कपोत, नाम वा० सं० पुं० कबूतर

कपोल, नाम वा० सं० पुं० गाल

कमारू,नाम वा० भा० पुं० हुनर,
गुण

कमूल, नाम वा०भा० पुं०कमूल क-
राई, पक्षीविशेष

कमठ, नाम वा० सं० पुं० कछुआ

कमनीय,नाम वा० सं० नपुं० सुन्दर

कमला,नाम वा०सं०स्त्री० लक्ष्मीजी

कर्म, नाम वा० सं० नपुं०काम,कार्य

कर,नाम वा०सं० पुं० किरण, हाथ,
सूंड़, महसूल

करक, नाम वा० भा० पुं० पीड़ा,
तकलीफ़

करज, नाम वा० सं० पुं० अंगुली

करतल, नाम वा० सं० पुं०हाथपर

करतारी, नाम वा० भा० स्त्री० हाथ
की ताली

करण, नाम वा० सं० नपुं० कान
इन्द्रिय, साधन, कारण करना

करनीया, वि० सं० इति-करने के
योग्य

करवटे, नाम वा० भा० निवत

करषा, नाम वा० भा० स्त्री० ईर्षा,
वैर, रिस

करषि, क्रि० वि० भा० खैंच करके,
करखना, कर्षना

कराला,नाम वा० भा० पुं० कराल,
भयंकर, किनारा, तट

कराल, नाम वा० सं० पुं० कठोर,
भयंकर

करि, नाम वा० सं० पुं० हाथी

करिणी, नाम वा० सं०स्त्री० हथिनी

करील, नाम वा० भा० पुं० वृक्ष
विशेष जिसमें पत्ता नहीं

करुई, नाम वा० भा० स्त्री० कटु,
कड़ुवाई

करुण, नाम वा० सं० पुं० दया,
करुणा

करुणाकरति, त्रि० भा० स्त्री०गुणा-
नुवाद कहकर विलाप करती

कर्त्तव्य, वि० सं०नपुं० करने योग्य

कर्णधार नाम वा० सं० पुं० मल्लाह

कल, नाम वा०सं० पुं० सुन्दर,मीठा

कलकंठ, नाम वा० सं० पुं० कोइल

कल्प, नाम वा० सं० पुं० कल्प,
ब्रह्माजीका दिन, प्रलय, मनोरथ,
समर्थ, कल्पना, रचना

कल्पतरु, नाम वा०सं०पुं०कल्पवृक्ष

कल्पना, नाम वा० सं० स्त्री० तर्क
लालसा, कष्ट, रचना

कलपि, क्रि० वि० सूक्ष्मकरके, बना
लेना, दुःखपाना

कल्पित, नाम वा० सं० पुं० झूठ
सच्चा मान लिया

कलबर, नामवा०सं०पुं०स्पष्ट नहीं

कलभ, नाम वा० सं० पुं० हाथी
का बच्चा

कलमले, त्रि० चंचलभये, चले हिले,
कलमलाये

कलश,नाम वा०सं०पुं० कलस,घड़ा

कलहंस, नाम वा० सं०पुं०राजहंस

कला, नाम वा० सं० स्त्री० चन्द्र
मण्डल का १६ अंश भाग

कलाप, नाम वा० सं० पुं० समूह

कलि, नाम वा० सं० पुं० कलियुग,
बहेड़ा, कलह, बहेड़े का वृक्ष

कलिकवि, नाम वा० सं० पुं० कलि-
युग के कवि, कालिदास आदि

कलित, त्रि० पहिरा, पहिना, बना-
या, सुन्दर, रचित

कलिमलसरि, नाम वा० भा० स्त्री०
कर्मनाशा

कलिल, नाम वा० सं० नपुं० की-
चड़, पंक

कलुष, नाम वा० सं० नपुं० पाप

कलेवर, नामवा०सं०नपुं०शरीर,देह

कलेश, नाम वा०भा०पुं० क्लेश,दुःख,
चन्द्रमा

कलंक, नाम वा० सं० पुं० निशान,
चिह्न, सिद्ध पारा

कल्लोलिनी, नाम वा० सं० स्त्री०
लहराई नदी

कवल, नामवा०सं०नपुं०ग्रास,कवर

कवि, नाम वा० सं० पुं० काव्यकर्ता

कवित्त, नाम वा० भा० पुं० काव्य,
कविता,

कबन्ध, नाम वा० सं० पुं० दैत्य
का नाम है, धड़

कश्यप, नाम वा० सं० पुं० ऋषि
का नाम है

कसे, क्रि० वा० भा० कसना, क-
सौटी पर रगड़े

कहानी नाम वा० भा० स्त्री० कथा,
काऊ, कबहुं, कभी

काक. नाम वा०सं०पुं०कौवा, काग

काकपच्छ, नामवा० भा० पुं० पट्टे

काकु—व्यंग वचन

काखासोंती, नाम वा० भा० स्त्री०
कन्धों से कमर तक

काहे नि० क्यों
कानन, नाम वा० सं० नपुं० वन
कानी, नाम वा० भा० स्त्री० संकोच, मर्यादा
काम, नामवा० सं० भा० पुं० कामना, कामदेव, विषय, वन्धा, सुन्दर
कामद, वि० वा० पुं० कामना देनेवाला, मनोरथ देनेवाला
कामदगाई, वि० ना० भा० स्त्री० कामधेनु
कामना, नाम वा० सं० स्त्री० मनोरथ, चाह, वासना, इच्छा
कामरूप, नाम वा० सं० पुं० इच्छाचारी
कार्मुक, नाम वा० सं० नपुं० धनुष
कारक, नाम वा० सं० पुं० करनेवाला
कारज, नाम वा० भा० पुं० कार्य, पृथ्वी १ जल २ तेज ३ वायु ४ आकाश ५
कारन, नाम वा० भा० पुं० प्रयोजन, पिता, निमित्त, माया, प्रकृति
कारन करन, नाम वा० भा० पुं० महत्तत्त्वादि के कारण
कारी, नाम गु० वा० भा० स्त्री० काली
काल, नाम वा० सं० पुं० समय, मृत्यु, नेम, मीच, यमराज, काला, श्याम
कालकूट, नाम वा० सं० पुं० विष, ज़हर
कालराति, नाम वा० भा० स्त्री० प्रलय की रात
कालिका, नाम वा० सं० स्त्री० देवी, भगवती
काली, नाम वा० सं० स्त्री० श्याम
कांजी, नाम वा० भा० स्त्री० सिरका, राई का खट्टा पानी, मट्टा
कांधी, क्रि० वि० अंगीकार करके
किन, नाम वा० सं० पुं० घाव, क्यों नहीं

किन्नर, नाम वा० सं० पुं० देवजातिविशेष
किमपि, सं० ना० अ० कुछ भी
किंवा, सं० नाम अ० अथवा
किरातिन, नामवा० भा० स्त्री० भीलनी
किरिच, नाम वा० भा० पुं० टुकड़ा
किरीट, नाम वा० सं० पुं० मुकुट
किलकिला, नाम वा० सं० पुं० वानरों की चिल्लाहट
किसलय, नाम वा० भा० पुं० नयापत्ता, किसलय
किस, सं० ना० किसको
किशोर, नाम वा० भा० पुं० किशोर लड़का १६ वर्षकी अवस्थावाला
किंकर, नामवा० सं० पुं० नौकर, दास
किंकरी, नाम वा० सं० स्त्री० दासी, टहलनी
किंकिनी, नाम वा० भा० स्त्री० क्षुद्रघंटिका, करधनी, तागड़ी
किंसुक, नामवा० भा० पुं० किंशुक, पलाश, ढाक वृक्ष
कीती, नाम वा० भा० स्त्री० कीर्ति, जस
कीट, नामवा० भा० पुं० तोता, सुआ
कीरति, नाम वा० भा० स्त्री० कीर्ति, यश, जस
कील, नाम वा० भा० पुं० सरिका,
कुना, वा० सं० स्त्री० भूमि, पृथ्वी, नीच, बुरा
कुचाह, नाम वा० भा० स्त्री० बुरा समाचार
कुंचित, वि० क्रि० वा० घुँघुराले, टेढ़ा
कुंजर, नाम वा० सं० पुं० हाथी
कुजोगी, नाम वा० भा० पुं० कुयोगी, विषयी
कुठार नाम वा० भा० स्त्री० कुल्हाड़ा
कुठारी, नाम वा० सं० स्त्री० टांगी
कुठाहर नाम वा० भा० पुं० नीच जगह
कुतर्क, गु० वा० सं० पुं० नीचविचार

कुदृष्टि, गु० वा० सं० स्त्री० पापदृष्टि
कुधातु, नाम वा० सं० पुं० लोहा
कुपथ, नामवा० सं० नपुं० बुरी राह, कुमार्ग
कुपथ्य, नामवा० सं० नपुं० बदपरहेज़ी
कुवलय, नामवा० सं० नपुं० कमल
कुविहग, नामवा० भा० पुं० बाज़पक्षी
कुम्भज, वि० ना० सं० पुं० ऋषिविशेष, अगस्त्य
कुमार, नामवा० सं० पुं० कुँवारा, बालक बिन ब्याहा
कुमारी, नामवा० सं० स्त्री० कन्या बिन ब्याही
कुमुद, वि० नाम सं० पुं० १ कोई, २ वानरविशेष
कुमुदबन्धु, नाम वा० सं० पुं० कमल नामवा० चन्द्रमा
कुररी, नामवा० सं० पुं० पक्षीविशेष, कूंज
कुराई, नाम वा० भा० स्त्री० पांव फँसने का छिद्र
कुरी, नामवा० भा० पुं० कुलजाति
कुरुचि, नामवा० सं० स्त्री० नीचवासना
कुरंग, नामवा० सं० पुं० हरिन, मृग
कुल, नामवा० सं० नपुं० १ वंश २ समूह ३ घर
कुलह, नाम वा० भा० स्त्री० टोपी, कुलाह
कुलि, गु० वा० भा० पुं० सब
कुलिस, नामवा० भा० नपुं० कुलिश, १ वज्र, २ हीरा
कुलसी, वि० सं० पुं० सुखी
कुशकेतु, वि० ना० पुं० जनकके भाई का नाम
कुशल, गु० वा० भा० पुं० कुशल, चतुर, कल्याण
कुसमउ, गु० वा० भा० पुं० अनवसर, बुरा समय
कुसुमित, वि० सं० क्रि० प्रफुल्लित, फूलाहुआ

कुम्हड़,ना॰वा॰भा॰पुं॰कोहड़ाफल
कुंकुम, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ १ केशर, २ रोरी
कुंभ, ना॰ वा॰ सं॰ नपुं॰ कुंभ, घड़ा, हाथी का माथा
कुंत, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ भाला
कुंवर,ना॰ वा॰भा॰ पुं॰ राजकुमार
कूजहिं, क्रि॰ वा॰ कूजते हैं, बोलते हैं, कूजना
कूट, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ १ पहाड़ की चोटी, २ निहाई
कूटी, गु॰ वा॰ सं॰ स्त्री॰ व्यंग्यवचनी
कूप, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ कूआ
कूर, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ १ कठोर, २ कपटी, ३ टेढ़ा
कूल,ना॰वा॰सं॰नपुं॰तट, किनारा
कूल्हिा, वा॰भा॰स्त्री॰ जोड़ेकीटोपी
कृत, कृ॰ वा॰ किया, कर्म,करतूति
कृतकृत्य, वि॰ सं॰ पुं॰ कृतार्थ
कृतांत, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ यमराज
कृतनिन्दक, वि॰ सं॰ पुं॰ कृतघ्न
कृतज्ञ, वि॰ सं॰ पुं॰ उपकार मानने वाला
कृपानि, ना॰वा॰ भा॰ पुं॰ कृपाण, तरवार
कृपिन, ना॰वा॰भा॰पुं॰ कृपण,सूम
कृमि,ना॰वा॰सं॰पुं॰कीड़ा,किरौना
कृस, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ १ कृश, दुर्बल, दूबर
कृसानु, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ कृशानु, आग, अग्नि
कृषी, ना॰ वा॰ सं॰ स्त्री॰ खेती
कियन्ह, १ व्यवहार, क्रिया शब्दका बहुवचन, २यज्ञादि, ३प्रीति, ४भक्ति
केकी, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ मोर
केतु, ना॰वा॰ सं॰ पुं॰ १ नौवग्रह, २ ध्वजा
केर,का, प्र॰ सम्बन्धकारकका चिह्न
केलि,ना॰वा॰सं॰ स्त्री॰क्रीड़ा, खेल
केवट,ना॰वा॰भा॰पुं॰ कैवर्त,मल्लाह
केवल, ना॰ वा॰ पुं॰ सं॰ मुख्य, एकही, अकेला
केसरी, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ केशरी, १ सिंह, २ हनुमान् के पिता
केहरी,ना॰वा॰भा॰पुं॰ केशरी,सिंह
कैकेय,ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ १ राजा, २ देशविशेष
कैटभ,ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ दैत्यविशेष
कैरव,ना॰सं॰नपुं॰कोई
कैवल्य,ना॰वा॰सं॰ पुं॰मोक्ष, मुक्ति
कोका, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ १ चकई, २ चकवा
कोंछे, ना॰ वा॰ भा॰ स्त्री॰ गोदी
कोटर, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ खोड़रा
कोटि, सं॰ वा॰ १ करोड़, २ पक्ष, ३ धनुष का छोर
कोदण्ड, ना॰ वा॰सं॰ नपुं॰ धनुष
कोदव,ना॰पुं॰वा॰ भा॰ कोदो,अन्न विशेष
कोपर,ना॰ वा॰भा॰ पुं॰पात्रविशेष
कोपी,वि॰सं॰ पुं॰ १ कोई,२ क्रोधी
कोविद, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ पंडित
कोये, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ आंखका संपूर्ण श्वेत ढेला
कोरि, क्रि॰ वा॰ खोद करके, कोरना, खुरचना
कोरी, सं॰ वा॰ भा॰ स्त्री॰ करोड़
कोल, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ १ शूकर, सुअर
कोश, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ १ कमल का मध्य, २ घर, ३ ख़ज़ाना
कोसल, ना॰ वा॰ भा॰ स्त्री॰ एक देशका नाम
कोसला, ना॰वा॰सं॰स्त्री॰अयोध्या
कोशलपुरी, ना॰ वा॰ सं॰ स्त्री॰ अयोध्या
कोह, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ क्रोध
कोहवर,ना॰ वा॰पुं॰ भा॰ कौतुक, घर ब्याहका
कोहाब, गु॰ वा॰ पुं॰ भा॰ रूठना
कोहाना, कोही, वि॰ प्रा॰ पुं॰ क्रोधी
कौ, अ॰ वा॰ सं॰ स्त्री॰ पृथ्वीमें
कौतुक, गु॰ वा॰ सं॰ पुं॰ १ तमाशा, २ अनायास
कौतूहल, गु॰ वा॰ सं॰ नपुं॰ कौतुक
कौमुदी, ना॰ वा॰ सं॰ स्त्री॰ चांदनी
कौल, वि॰ सं॰ पुं॰ वाममार्गी
कौशिक,वि॰ना॰सं॰पुं॰ विश्वामित्र
कंक, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ कुट्टी
कंकन,ना॰वा॰भा॰ पुं॰कड़ा कंकना
कंचन,ना॰वा॰सं॰नपुं॰सोना,सुवर्ण
कंज, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ कमल
कंटक, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ १ कांटा, २ शत्रु
कंडु, भा॰ वा॰ सं॰ स्त्री॰ खजुली
कंत, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ पति
कंद, १ कमल आदिकीजड़, २मेघ, ३ समूह
कंदरा, ना॰ वा॰ सं॰ स्त्री॰ गुफा
कंदुक, ना॰ वा॰ सं॰ नपुं॰ गेंद
कंधर, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ गला
कंध, ना॰वा॰सं॰पुं॰ १स्कंध,कांधा, २ मोटीदार
कंप, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ कांपना
कम्पति, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ समुद्र
कंवल, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ कमरा, पद्ममीना
कंबु, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ शंख

ख

खग, ना॰वा॰सं॰पुं॰पक्षी, चिड़िया
खग्ग, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ (खड्ग) तलवार
खगकेतु, ना॰ वा॰ पुं॰ सं॰ गरुड़
खगहा, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰गैंड़ा
खगेस, ना॰ वा॰भा॰ पुं॰(खगेश) गरुड़
खचित, वि॰ भा॰ पुं॰ जड़ाऊ
खची, वि॰ भा॰ स्त्री॰ जड़ाऊ

खटादि, ना० वा० पुं० भा० थिररहना
खद्योत, ना० वा० सं० पुं० जुगुनू
खनि, क्रि० वि० खोद करके
खप्पर, ना० वा० भा० पुं० खर्पर, खोपड़ी
खर्पर, ना० स्त्री० १ पीठ २ सिर ३ खोपड़ी
खर्व, गु० वा० सं० पुं० १ छोटा २ तुच्छ
खभारू, गु० वा० भा० पुं० छोभ
खर, ना० वा० सं० पुं० १ राक्षस, दूषण का भाई २ तीक्ष्ण ३ गदहा ४ तृण
खरभर, गु० वा० भा० पुं० छोभ
खरी, ना० वा० सं० स्त्री० गदही
खरो, ना० वा० भा० पुं० तृण
खल, ना० वा० सं० पुं० दुष्ट
खलु, अ० निश्चय करके
खस, ना० वा० भा० पुं० जातिविशेष
खसी, वि० भा० स्त्री० गिरी
खसेउ, वि० भा० पुं० गिरा, खसना
खांगे, न्यू० वा० पुं० भा० कमती
खानिक, वि० भा० पुं० ओखानिमेंहुआ
खानी, ना० वा० भा० स्त्री (खानि) घर
खाले, ना० वा० भा० पुं० नीचे, गड़हा
खिन्न, वि० सं० कृ० दुखिया
खीन, वि० भा० पुं० (क्षीण) दूबर दुर्बल
खीस, गु० वा० पुं० भा० नाश
खेत, ना० वा० भा० पुं० (क्षेत्र) समरभूमि, अन्नबोनेका स्थान
खेद, ना० वा० सं० पुं० दुःख
खेरे, ना० वा० भा० पुं० पुर, गांव
खेलवार, वि० भा० खेलाड़ी
खोडस, सं० वा० पुं० भा० (षोड़श) सोरह
खोरी, ना० वा० पुं० भा० १ दोष २ गली ३ चंदन की खोरी
खोरे, वि० भा० पुं० लँगड़े
खोह, ना० वा० भा० स्त्री० गुफा
खञ्जन, ना० वा० सं० नपुं० खंडरिच
खण्ड, ना० वा० सं० नपुं० टुकड़ा

ग

गगन, ना० वा० सं० नपुं० आकाश
गज, ना० वा० सं० पुं० हाथी
गजानन, ना० वा० सं० पुं० गणेशजी
गत, कृ० वि० १ गया २ प्राप्त ३ ज्ञात ४ निकृष्ट ५ विना ६ अप्रिय
गति, ना० वा० सं० स्त्री० १ मुक्ति २ रास्ता ३ चाल ४ ज्ञान ५ स्वरूप ६ दशा ७ आधार ८ उपाय
गथ, ना० वा० भा पुं० दाम
गदगद, ना० वा० सं० पुं० आनन्दयुक्त
गर्द, ना० वा० स्त्री० भा० धूरि
गन, ना० वा० भा० पुं० १ गण, शिव के प्रमथ आदि, २ विघ्न ३ समूह
गनराऊ, ना० वा० भा० पुं० गणेशजी
गणराज, ना० वा० भा० पुं० गणेशजी
गनि, क्रि० वि० १ गन करके २ विचार के
गनिक, ना० वा० भा० पुं० गणिक ज्योतिषी
गनिका, ना० वा० भा० स्त्री० वेश्या, कसबी
गनी, ना० वा० १ धनी २ विचार ३ गिनती
गने, त्रि० ना० पुं० गिनती के
गनेस, ना० वा० १ गणेश २ आरम्भ ३ रस
गर्वित, वि० सं० पुं० अभिमानी मानयुक्त
गभुवारे, ना० वा० भा० पुं० गर्भबाल, बालक के नये बाल
गमु, क्रि० वा० गमन, जाना
गम्य, कृ० वा० नपुं० सं० जानने के योग्य
गय, ना० वा० सं० पुं० हाथी
गयंद, ना० वा० सं० पुं० हाथी
गरल, ना० वा० सं० नपुं० विष
गरुता, भा० वा० गुरुता, गरुआई, भार
गरह, ना० वा० भा० पुं० १ ग्रह २ गठिआ वात
गलित, वि० सं० क्रि० गलगया, नाश
गवहिं, क्रि० वि० गंव से
गवाइा, ना० वा० भा० कसाई
गहगहे, ना० वा० भा० बजे, नक्कारे का शब्द
गहन, ना० वा० १ विकट २ वन ३ पकड़ना
गहवर, क्रि० वि० १ सघन, क्षोभ के साथ
गहरु, गु० वा० भा० स्त्री० देरी, विलम्ब
गायगोठ, ना० वा० भा० स्त्री० गोशाला,
गाजन, वि० भा० पुं० नाशकरनेवाला
गाड़, ना० वा० पुं० भा० गड़हा
गाडर, ना० वा० पुं० भा० घासविशेष खस का भेद
गाढ़ा, ना० वा० भा० पुं० कठिन, दृढ़
गात, ना० वा० सं० नपुं० गात्र, शरीर, अंग
गाथा, ना० वा० सं० स्त्री० कथा
गाथे, त्रि० पुं० भा० गूंथे
गादुर, ना० वा० भा० पुं० चमगिदुरा
गाधि, ना० वा० सं० पुं० एकराजा का नाम
गाना, क्रि० वा० कथन, कहना
गामी, वि० सं० पुं० चलनेवाला
गारुड़ी, त्रि० सं० पुं० विषहरनेवाला
गाल, ना० वा० भा० बतूनी
गालव, ना० वा० पुं० सं० एकऋषिका नाम
गालयजाई, क्रि० वि० बकवाद करके
गाहा, ना० वा० भा० स्त्री० कथा
गिरा, ना० वा० सं० स्त्री० १ सरस्वती २ कविताई ३ वचन
गिरि, ना० वा० सं० पुं० पहाड़
गिरिजा, ना० वा० सं० स्त्री० पार्वती

गिरिनाथ, ना० वा० सं० पुं० महादेव
गिरिराज, ना० वा० सं० पुं० सुमेरु पर्वत
गिरीश, ना० वा० सं० पुं० १ महादेव २ हिमाचल
गिरिन्दा, ना० वा० भा० पुं० सुमेरु पर्वत
गिलई, वि० भा० पुं० लीलजावे
गीध, ना० वा० भा० पुं० जटायु
गुंजा, ना० वा० सं० स्त्री० घुंघुची
गुदरत, क्रि० वि० जनावत
गुन, ना० वा० भा० पुं० गुण १ ज्ञानआदि २ डोरा रस्सी ३ सत्व रज तम
गुनहु, ना० वा० १ विचारी २ अपराध, गुनाह
गुनज्ञ, वि० भा० पुं० गुणकाजाननेवाला
गुनि, वि० भा० पुं० १ गुणी २ विचारकरके
गुनिय, क्रि० वा० विचारना चाहिये
गुरु, ना० वा० सं० पुं० १ उपदेश करने वाला, २ बृहस्पति ३ बड़ा ४ भारी
गुरुजन, ना० वा० सं० पुं० बड़ेलोग
गुसाईं, ना० वा० भा० पुं० स्वामी, संन्यासी
गुहा, ना० वा० भा० स्त्री० १ गुफा २ निषाद
गुहारी, वि० भा० पुं० १ रक्षक, सहायक
गूढ़, वि० सं० कृ० गुप्त, छिपा
गृहादि, ना० वा० सं० पुं० गृहआदि
गृही, ना० वा० सं० पुं० गृहस्थ
गृहीत, वि० सं० पुं० पकड़ा
गे, क्रि० वा० गये
गेह, ना० वा० सं० पुं० घर
गेरू, ना० वा० भा० पुं० गेरू
गो, ना० वा० सं० पुं० १ गाय, २ बैल, पृथ्वी, ३ इन्द्रिय, ४ पानी

गोई, वि० भा० स्त्री० छिपीछिपायी
गोए, वि० पुं० छिपाये
गोचर, वि० भा० नपुं० विषय, जो इन्द्रिय से जानाजाय
गोदावरी, ना० वा० सं० स्त्री० नदी विशेष
गोपद, ना० वा० सं० नपुं० गायकाखुर
गोप्य, वि० सं० कृ० छिपानेके योग्य
गोलक, ना० वा० सं० पुं० चक्षुइन्द्रिय का स्थान
गोविन्द, ना० वा० सं० पुं० वेदलभ्य
गौतम, ना० वा० सं० पुं० ऋषिविशेष
गौतमनारी, ना० वा० सं० स्त्री० अहल्या
गौन, क्रि० वा० गमन, जाना
गौर, गु० वा० भा० पुं० गोरा, सफ़ेद
गौरव, गु० सं० नपुं० बड़ाई
गौरीस, ना० वा० भा० पुं० गौरीश, शिव
गंजन, क्रि० वा० नाशकरना
गंजा, वि० भा० पुं० नाशकिया
गंभीर, गु० वा० सं० नपुं० गहिरा
ग्रह, ना० वा० सं० पुं० सूर्य आदि ग्रह
ग्रहदशा, ना० वा० भा० स्त्री० शनीचरी
ग्रहै, वि० भा० १ पकड़ै २ सूंघै
ग्राम, ना० वा० सं० नपुं० १ गवांर २ गांव समूह
ग्राही, ना० वा० सं० पुं० संग्रही, ग्रहण करनेवाला
ग्रीवा, ना० वा० सं० पुं० गला, कंठ
ग्रीषम, ना० वा० भा० पुं० ग्रीष्म गरमी की ऋतु
ग्रंथ, ना० वा० सं० पुं० पुस्तक
ग्रन्थि, ना० वा० सं० पुं० गांठ

घ

घट, ना० वा० सं० नपुं० १ घड़ा २ हृदय
घटज, ना० वा० सं० पुं० कुम्भज ऋषि अगस्त्य
घटब, क्रि० वा० करब
घटा, ना० वा० सं० स्त्री समूह
घटि, ना० वा० भा० पुं० १ घटिका २ कमती
घटिहि, क्रि० वा० १ करेगी २ होगी
घन, ना० वा० सं० नपुं १ बादल २ घटा ३ लोहेकाघन ४ अद्भुत
घमोइ, ना० वा० भा० पुं० १ भड़भांड़ २ बांस
घरनी, वि० भा० स्त्री० स्त्री, गृहस्थिनी
घवरि, ना० वा० भा० पुं० गुच्छा
घाउ, ना० वा० भा० पुं० चोट, घाव
घात, ना० वा० सं० पुं० १ दांवपेच २ घाव चोट
घातिनी, ना० वा० सं० स्त्री० नाश करनेवाली
घालक, ना० वा० भा० पुं० नाश करनेवाला
घाला, वि० भा० पुं० नाशकिया घालना
घालि, क्रि० वि० अक्षमारि
घाली, ना० वा० भा० स्त्री० डारी, फेंकी, घालना
घुनाक्षर, क्रि० वि० घुनकृत अक्षर, लकड़ीमें न्याय करके प्रसिद्ध है
घुम्मरहिं, क्रि० वा० नगारेकी आवाज़की नकल
घूमिति, क्रि० वि० घूमा, घूमकरके
घृत, ना० वा० सं० नपुं० घी
घ्रान, ना० वा० भा० पुं० घ्राण, नाक

च

चकित, वि० सं० कृ० आश्चर्यित
चक्कवै, ना० वा० प्रा० पुं० चक्रवर्ती, चक्रवर्तीराजा
चक्र ना० वा० सं० नपुं० १ सुदर्शनचक्र २ पहिया
चख, ना० वा० भा० पुं० चक्षु, आंख
चतुरंग, ना० वा० सं० पुं० सेनाके

चारअंग अर्थात्, हाथी, घोड़ा, रथ और पैदल

चतुरानन, ना० वा० सं० पुं० ब्रह्मा

चपरि, गु० वा० तुरत

चपल, ना० वा० सं० नपुं० चंचल

चर, ना० वा० सं० नपुं० १ भक्षण २ चलन, ३ दूत

चरम, ना०वा० सं०नपुं० १ चर्म चमड़ा, २ अंत ३ ढाल

चरफराहिं, क्रि० वा० डोलतहैं, चरफराना, तरफराहिं, विकल

चरनपीठ, ना० वा०भा०पुं०खड़ाऊं

चराचर, ना० वा० सं०पुं० चल अचल, चैतन्य और जड़

चरित, ना० वा० सं० नपुं० चरित्र, हाल

चरु, ना० वा० सं० पुं० १ खीर २ बरतन

चवइ, क्रि० वा० बहइ, चवना, बहना

चहुंयुग, ना० वा० भा० पुं० चारों युग, अर्थात् सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग

चाख, ना० वा० भा० पुं० नीलकंठपक्षी

चाका, ना०वा०भा०पुं० चक्र, पहिया

चांकी, ना०वा०भा० स्त्री० राशिकोगोठदेना, चांकना, छापना, बिजुली

चाड़, ना० वा० भा० पुं० चाह, जोर, बिजुली

चाप, ना० वा० सं० नपुं० १ धनुष २ दाबना

चापन, ना० वा० सं० पुं० चापना, पगचंपी दाबना

चापी, वि० भा० स्त्री० दबाई

चामर, ना० वा० सं० नपुं० चवँर

चामुण्डा, ना० वा० सं० स्त्री० योगिनीभेद

चार, ना० वा० सं० पुं० दूत, चुगुल, खबार

चारिपद, ना० वा० भा० पुं० धर्मके चारपांव अर्थात्, सत्य, शौच, दान, दया

चारिअवस्था, ना० वा० भा० स्त्री० जाग्रत्, स्वप्न, सुषुप्ति, तुरीय

चारिभांति, ना०वा० भा०पुं०भोजन, भक्ष्य, भोज्य, लेह्य, चोष्य

चारी, सं० वा० भा० स्त्री० १ चार ४, २ चलनेवाला ३ चुगुली

चारु, गु० वा० सं० पुं० सुन्दर

चालति, क्रि० वा० डोलती, चालना, डोलना

चाहि, क्रि० वा० १ देखकरके २ उसकी ओर से चाहना, देखना

चाही, वि० भा० स्त्री० १ चाह २ देखना

चित, ना० वा० नपुं० सं० १ चेतन, ज्ञान २ मन

चितचेता, ना० भा० पुं० सावधान

चितव, क्रि. वा० देखता है, चितवना, देखना

चित्रकेतु, ना० वा० सं० पुं० एक राजाका नाम

चिन्तामनि, ना० वा० भा०पुं०मणिविशेष

चितेरा, ना०वा० भा०पुं० चित्रकार

चिदाकाश, ना० वा० सं०नपुं० चैतन्य आकाश, परमात्मा

चिराना, क्रि० वा० पुराना

चिरंजीवी, ना० वा० सं० पुं० मार्कण्डेय ऋषि

चीर, ना० वा० सं० नपुं० १ चीरना २ वस्त्र

चुनौती, ना० वा० भा० पुं० सलाक, ईर्षा, धिक्कार

चुम्बत, क्रि० वि० चूमता, छूता

चूड़ाकरन, ना०वा० सं० नपुं० मुंडन

चूड़ामनि, ना०वा० सं०नपुं० चोटी की मनि

चेता, ना० वा० भा० पुं० चित्त

चेरा, ना० वा० भा० पुं० चाकर, दास

चेरी, ना० वा० भा० स्त्री. दासी

चोखो, ना० वा० भा० स्त्री १ अच्छी वस्तु २ जल्दी

चोप, ना० वा० भा० पुं० उत्साह उछाह

चौतनी, ना० वा० भा० स्त्री० चौगोशियाटोपी

चौथपन, ना० वा० भा० स्त्री० बुढ़ौती

चौहट, ना० वा० भा० पुं० चौहट्टा चौरहा

चंग, ना० वा० भा० पुं०गुड्डी, पतंग

चंचरीक, ना० वा० भा०पुं० भ्रमर, भवँर

चण्ड, ना० वा० पुं० सं० तेजस्वी

चन्दिनी, ना०वा०स्त्री० भा० चांदनी

चन्द्रमौलि, ना०वा० सं० पुं० शिव, महादेव

चन्द्रमामुनि, ना० वा० सं० पुं० (निशाकरनाम) अत्रिमुनिके पुत्र का नाम

चन्द्रहास, ना० वा० सं०पुं०तरवार

चन्द्रिका, ना०वा० सं०स्त्री० चांदनी

छ

छुई, ना० वा० भा० पुं० रोगविशेष

छठें, वि० पुं० भा० छः

छत, ना० वा०भा० पुं०क्षत, फोड़ा घाव

छति, ना० वा० भा० स्त्री० हानि

छन्न, वि. सं० कृ० नपुं० ढम्पा

छवि, ना० वा० सं० स्त्री०शोभा

छबीले, वि० भा० पुं० सुन्दर

छमा, ना० वा० भा० स्त्री० क्षमा, १ पृथ्वी २ सहना

छमि, क्रि० वि० क्षमाकरके

छरे, वि० भा० पुं० छटे

छत्रक, ना० वा० भा० पुं० भुइँफोर

छत्रबन्धु, ना० वा० सं० पुं० क्षत्री जाति में नीच

छाक, ना० वा० भा० पुं० मतवाला, मत्त

छाछी, ना० वा० स्त्री० भा० मठा

छाजा, वि० स्त्री० सोहा, छाजना, सोहना

छाया, ना० वा० सं० स्त्री० १ छांह २ अंश

छारा, ना० वा० भा० स्त्री० राख

छाला, ना० वा० स्त्री० चर्म, चमड़ा

छांड़ा, वि० पुं० भा० त्याग, छोड़ा, राख

छिति, ना० वा० स्त्री० भा० क्षिति, पृथ्वी

छिद्र, ना० वा० पुं० भा० छेद

छीजहिं, क्रि० वि० घटते, छीजना, घटना

छीना, वि० पुं० भा० क्षीण, दूबर, रहित

छीने, वि० भा० पुं० काटे

छीर, ना० वा० नपुं० भा० क्षीर, दूध

छुद्र, ना० वा० भा० नपुं० क्षुद्र, छोट, तुच्छ

छुधित, वि० क्रि० भा० क्षुधित, भूखा

छुद्दे, वि० भा० पुं० चित्रित

छूछ, ना० वा० पुं० भा० खाली

छेका, ना० वा० पुं० भा० घेरा, रोकना, छेकना

छेमकरी, ना० वा० भा० पुं० पक्षी विशेष

छेमा, ना० वा० भा० पुं० क्षेम, सुख

छेत्र, ना० वा० भा० पुं० क्षेत्र, भूमि, खेत

छैल, ना० वा० भा० पुं० बांका

छोनिप, ना० वा० पुं० भा० क्षोणिप, राजा

छोभा, ना० वा० भा० स्त्री० क्षोभ, घबड़ाहट

छांहा, ना० वा० भा० स्त्री० परिछाहीं

छन्द, ना० वा० सं० नपुं० १ गायत्री आदि २ इच्छा ३ स्वतंत्र

ज

जग, ना० वा० सं० पुं० १ जंगम २ संसार

जगजोनी, ना० वा० भा० पुं० जगयोनि, ब्रह्मा

जगत, ना० वा० भा० पुं० पृथ्वी

जगदीश, ना० वा० भा० पुं० जगदीश, १ राजा २ ईश्वर

जगदम्बा, ना० वा० भा० स्त्री० जगत्‌की माता

जजाति, ना० वा० सं० पुं० ययाति, एक राजाका नाम

जटिल, वि० सं० पुं० जटाधारी

जठर, ना० वा० पुं० भा० १ बूढ़ा २ पेट

जठरी, ना० वा० स्त्री० भा० बड़ीबूढ़ी

जड़, ना० वा० पुं० सं० १ मूढ़ २ पर्वत आदि, निर्जीव

जत, अ० वा० १ जितना २ यत्न, जतन

जतन, ना० वा० भा० पुं० यत्न रक्षा, उपाय

जती, ना० वा० पुं० भा० यती, संन्यासी

जथा, अ० यथा, जैसे

जथाथित, यथास्थित, जैसा पहिले, जैसा था

जथोचित, क्रि० वि० यथोचित, यथायोग्य

जनक, ना० वा० सं० पुं० १ पिता २ सीताके पिता का नाम

जनकौरा, ना० वा० भा० सं० जनक, जनकसम्बन्धी

जनयित्री, वि० स्त्री० सं० जननी, माता

जनि, नि० अ० नहीं, मत

जनित, वि० सं० कृ० उत्पन्न

जनेत, ना० वा० भा० पुं० बरात, जनता

जनेस, ना० वा० भा० पुं० जनेश, राजा

जनेषु, अ० वा० मनुष्यों में

जपन्ति, क्रि० वा० सं० जपते हैं

जपामि, क्रि० वा० सं० मैं जपताहूं

जम, ना० वा० सं० पुं० १ यम, यमराज २ अहिंसा आदि

जमी, गु० वा० सं० पुं० यमी, संयमी

जमुन, ना० वा० भा० स्त्री० यमुना, जमुना नदी

जयति, क्रि० वा० जय होता है

जयेउ, कृ० वा० जीता, विजयकिया

जयंत, ना० वा० सं० पुं० जयंता, इन्द्र के बेटे का नाम

जर, ना० वा० भा० पुं० जुर, ज्वर

जरि, ना० वा० भा० जड़, मूल

जर्जर, ना० वा० सं० पुं० चीरेफारे, झांझर

जलअलि, ना० वा० भा० पुं० जलभौंरा

जलकुक्कुट, ना० वा० भा० पुं० जलमुरगा, मुर्गाबी

जलचर, ना० वा० सं० पुं० मछली आदि

जलज, ना० वा० सं० नपुं० कमल

जलजात, ना० वा० सं० नपुं० कमल

जलजान, ना० वा० प्रा० नपुं० जलयान, नाव, जहाज़

जलद, ना० वा० सं० पुं० मेघ, बादल

जलधर, ना० वा० सं० मेघ, बादल

जलधि, ना० वा० सं० पुं० समुद्र

जलमल, ना० वा० सं० नपुं० फेन आदि

जलरासी, ना० वा० भा० पुं० जलराशि, समुद्र

जलरुह, ना० वा० सं० नपुं० कमल

जलविहंग, ना० वा० सं० पुं० जलपक्षी

जलासय, ना० वा० भा० पुं० जलाशय, तलाव

जलंधर, ना० वा० सं० पुं० दैत्यविशेष

जल्पक, ना० वा० सं० पुं० बोलने वाला, बकनेवाला

जल्पत, क्रि॰ वा॰ बकता है

जल्पसि, क्रि॰ वा॰ तू बकता है, जलपना

जल्पहिं, क्रि॰ वा॰ कहतेहैं, जल्पना

जवनिका, ना॰ वा॰ सं॰ स्त्री॰ १ कनात, २ मैल

जस, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ १ जैसा, २ यश, सुकीर्त्ति

जसोमति, ना॰ वा॰ भा॰ स्त्री॰ यशोमति, यशोदा, जसोदा

जहि, वि॰ क्रि॰ जेहि, जिसको, त्यागो, छोड़ो

जक्षपति, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ यक्ष-पति, कुबेर

जज्ञउपवीत, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ यज्ञोपवीत, जनेऊ

जाई, ना॰ वा॰ भा॰ स्त्री॰ १ बेटी २ पैदाभई

जाग, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ यज्ञ

जागी, वि॰ स्त्री॰ भा॰ जाहिर, प्रगट

जाचक, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ याच-क, मंगन

जाचत, क्रि॰ वा॰ मांगता है

जाचा, वि॰ भा॰ पुं॰ मांगा, जांच-ना, मांगना

जातकर्म, ना॰ वा॰ सं॰ नपुं॰ लड़-के के जन्म समय की नान्दी श्राद्ध आदि

जातना, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ यातना, पीड़ा, तीव्रवेदना

जातरूप, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ सोना, सुवर्ण

जातुधान, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ राक्षस

जान, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ १ ज्ञान, २ जीव, ३ सवारी, यान

जानपनी, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ स्वरूप ज्ञान

जानी, गु॰ वा॰ भा॰ पुं॰ १ ज्ञानी २ स्त्री

जानु, ना॰ वा॰ सं॰ नपुं॰ घुटना

जापक, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ जप क-रनेवाला

जाम, ना॰ वा॰ प्रा॰ पुं॰ याम, पहर

जामाता, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ दामाद

जामिक, ना॰ वा॰ प्रा॰ पुं॰ यामि-क, पाहरू, पहरुआ, चौकीदार

जामिनि, ना॰ वा॰ प्रा॰ स्त्री॰ या-मिनी, रात्रि, रात

जाय, अ॰ वृथा

जाया, ना॰ वा॰ स्त्री॰ सं॰ १ स्त्री २ उत्पन्न

जारा, वि॰ भा॰ पुं॰ १ जलाया, जारना २ समूह

जाल, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ १ समूह २ झरोखा ३ फन्दा

जावक, ना॰ वा॰ प्रा॰ पुं॰ यावक, महावर

जाबाली, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ एक ऋषिका नाम

जिनस, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ जाति

जिमि, अ॰ जैसे

जियाये, वि॰ वा॰ पुं॰ भा॰ पाले, जियाना, पालना

जीव, आ॰ वा॰ १ जीते रहो २ जीवात्मा

जीवन, ना॰ वा॰ सं॰ नपुं॰ १ आ-जीविका, रोजी २ जीना ३ जल, पानी

जीह, ना॰ वा॰ भा॰ स्त्री॰ जिह्वा, जीभ

जुग, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ युग, २ सत्ययुग आदि

जुगल, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ १ युगल, दो

जुगविधि, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ युगविधि शीत उष्ण दो विधिका ज्वर

जुझारा, वि॰ पुं॰ लड़वैया, लड़ने वाला

जुटत, क्रि॰ वा॰ १ लड़ते हैं, जुटना २ लड़ना ३ इकट्ठा होना

जुड़ान, वि॰ शीतल भये, ठंढे भये

जुवती, ना॰ वा॰ भा॰ स्त्री॰ युवति, जवानस्त्री

जुवराज, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ युवराज, कुंवर, नायब, राज्याधिकारी

जुवा, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ युवा, जवान

जुवान, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ जवानपुरुष

जुवारी, ना॰ वा॰ स्त्री॰ भा॰ जुवारी

जूझा, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ लड़ाई, युद्ध

जूथ, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ यूथ, समूह

जूथप, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ यूथप, सेनापति

जून, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ १ पुराना २ समय

जूरी, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ १ समूह २ जोड़ करके, जुरना, जोड़ना

जूहा, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ यूथ, समूह

जेंई, क॰ वा॰ भोजनकिया, जेवना, खाना

जोई, वि॰ भा॰ स्त्री॰ देखी, जोवना

जोऊ, क्रि॰ वा॰ देखना, जोवना

जोग, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ १ योग अष्टांग २ योग्य ३ मिलाप, सम्बन्ध

जोगवत, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ परि-खत, खबरदारी करना, जतन करना

जोजन, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ योजन, चारकोस

जोड़ा, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ जोड़ी, दोनों

जोती, ना॰ वा॰ सं॰ स्त्री॰ १ ज्यो-ति, प्रकाश २ सूर्य

जोनी, ना॰ वा॰ भा॰ स्त्री॰ १ योनि, कारण २ जाति

जोवा, वि॰ भा॰ पुं॰ देखा, जोव-ना, देखना

जोषिता, ना॰ वा॰ भा॰ स्त्री॰ योषि-त, स्त्री

जोहारे, ना॰ वा॰ पुं॰ वि॰ भा॰ प्रणाम किया, जोहारना, प्रणा-म करना

जोही, क्रि॰ वि॰ देखकरके, खोजकरके

जंगम, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ चलनेवाला

जंतु, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ क्षुद्रजीव

जंत्रित, क॰ वा॰ यंत्रित, तालादेदिया

झंत्री, क० वा० बशकिया, ताला देदिया

जम्बु, ना० वा० सं० पुं० जामुन

जम्बुक, ना० वा० सं०पुं० सियार, श्रगाल

ज्याये, वि० व० भा० पुं० पाले, ज्याना, पालना

झ

झगुलिया, ना० वा० भा० पुं० चोलना, लड़कों का कुर्ता

झटाति, अ० झटित, जलदी

झषकेतु, ना० वा०सं० पुं०कामदेव

झारी, ना० वा० भा० पुं० समूह

झापा, क्रि०वा० झंखना

झोटिंग, ना० वा० भा० पुं०प्रेतभेद

झाई, ना० वा० भा०पुं० तिरमिरा-ना, आंख के आगे अंधेरा

झपेउ, ना० वा० भा० पुं० ढंपा, झंपना, दपना

झाई, ना० वा० भा० स्त्री० पर-छाहीं, तिरमिराना

झोटी, ना० वा० स्त्री० भा० चोटी

ट

टकोर, ना० वा० सं० स्त्री० ध्वनि, धुनि

टिट्टिभ, ना० वा० सं० पुं० टिटिहरी पत्ती

टेई, क० वा० चोखाकिया, तीखी किया, टेवना, चोखाकरना

टेक ना० वा० पुं० भा० १ हठ २ अवलम्ब

टेकी, ना० वा० भा० स्त्री० १ हठ करके २ निश्चययुत ३ धापी

टेव, ना०वा० भा० पुं० बान, आदत

टेर, ना० वा० भा० पुं० पुकार

ठ

ठकुर, ना० वा० भा० पुं० ठाकुर

ठट्ठा, ना० वा० सं० पुं० समूह

ठठकि, क्रि० वि० रुक करके, ठठ-कना, रुकना

ठयेउ, क० वा० किया, ठाना

ठवनि, ना० वा० भा० पुं० चाल उठने की रीति

ठाठ, ना० वा० पुं० भा० १ रचना २ समूह

ठाना, क्रि० वा० १ किया २ निश्चय ठानना

ठाहरु, ना० वा० भा० पुं०जगह,ठहर

ठीका, ना०वा० भा० पुं० निश्चय,ठीक

ठांऊ, ना० वा० पुं० भा० ठांव, घर, जगह

ड

डगै, क्रि० वा० हिलना

डमरुआ, ना० वा भा० पुं० घु-टने की गांठमेंका रोग, गठिया

डसि, क्रि० वि० काटकरके, डसना, काटना

डहकि, क्रि० वि० ठगकरके, डह-कना, ठगना

डाढ़ा, ना० वा० भा० पुं० आग

डाढे, वि० पुं० भा० जरे

डाबर, ना० वा० भा० पुं० गड़हा

डासन, ना० वा० पुं० भा०बिछौना, दसौना

डासां, क्रि० वि० बिछाकरके

डिंडिमी ना० वा० पुं० भा० एक प्रकारका बाजा

डीठा, क० वा० देखा, दृष्ट

डीठी, क० वा० वि० दृष्टि, देखी

डेवढ़, प्र० वा० डेवढ़ा

डोल, ना० वा० पुं० भा० १ डोल-ना २ तालाब ३ हिंडोला

डोली, वि० स्त्री०भा० गई, डोलना

ढ

ढरी, क्रि० वा० खोजी, ढँढोरना, खोजना

ढनमनी, वि० स्त्री० भा० लुढुकगई, ढनमनाना, लुढ़कना

ढाबर, ना० वा० मैला

ढिग, अ० समीप

ढेक, ना०वा०भा०पुं० सारसपक्षी

ढोटा, ना० वा० पुं० भा० बेटा

त

तर्जनी, ना० वा० सं० स्त्री० अंगूठे के पास की अंगुली

तज्ञ, ना० वा० सं० पुं० स्वरूप ज्ञाता (तद, वह, ज्ञ,जाननेवाला)

तट, ना० वा० सं० नपुं० तीर, किनारा, निकट

तड़ाग, ना, वा० पुं० भा० तलाव

तड़ित, ना० वा० सं० स्त्री० तड़ित, बिजुली

तत्त्व, ना० वा० सं० नपुं० १ सार वस्तु २ प्रकृति आदि

तथा, अव्यय तैसे

तथापि, अव्यय तौभी

तदपि, अव्यय तौभी

तन, अ० ओर

तनकाऊ, अ० थोड़ा भी

तनय, ना० वा० पुं० सं० पुत्र, बेटा

तनया, ना०वा० सं० स्त्री० पुत्री, बेटी

तनु, ना० वा० सं० पुं० १ शरीर २ अल्प, थोड़ा ३ विस्तार

तनुजा, ना० वा० सं० स्त्री० बेटी

तनोतु, आ०वा०विस्तारकरे, फैलावे

तनोरुह, ना० वा० सं० नपुं० रोम, रोवां, जो शरीर में हुआ

तपोधन, ना० वा० सं० पुं० तपस्वी

तम, ना० वा० सं० नपुं० १ अज्ञान २ अंधेरा ३तमोगुण ४ अत्यन्त

तमकि, क्रि० वि० सरोष होकरके, तमक करके, तमकना

तमारि, ना० वा० सं० पुं० सूर्य

तमाल, ना०वा०सं०नपुं० वृक्षविशेष

तमी, ना० वा० स्त्री०सं०रात्रि, रात

तमीचर, ना० वा० सं० पुं० राक्षस

तर, ना० वा०सं० पुं० १ तल,तरे २ अत्यन्त

तरक, ना० वा०पुं०भा० तर्कविचार

तरकेउ, क्रि० वा० कूदा, तरकना, कूदना

तरजत, क्रि० वा० तड़पता, तरजना, तड़पना

तरजन, क्रि० वा० झिझकारना

तरजा, कृ०वा०कूदा, तरजना, कूदना

तरनतारन, ना० वा० सं० पुं० जो आप तरै और दूसरों को तारै

तरनि, ना० वा० सं० पुं० १ तरणि, सूर्य २ नाव

तरपहिं, क्रि० वा० तड़पते हैं

तरल, ना० वा० सं० पुं० १ चंचल २ तीक्ष्ण, चोखा

तरु, ना० वा० सं० पुं० वृक्ष, पेड़

तरुन, ना० वा० सं० पुं० तरुण, जवान

तरुनाई, भा० वा० भा० स्त्री० तारुण्य, जवानी

तरुनी, ना० वा० भा० स्त्री० तरुणी, जवानस्त्री

तरंग, ना० वा० पुं० सं० लहर

तरंगी, ना० वा० सं० पुं० बहुरंगी, उच्छाहवाले,

तरंगिनि, ना० वा० स्त्री० सं० तरंगिनी, नदी

ताग, ना० वा० भा० पुं० डोरा, तागा

ताजी, ना० वा० भा० पुं० घोड़ाविशेष

ताटंक, ना० वा० पुं० भा० तरकी, बिरिया, करनफूल

ताड़त, क्रि० वि० पीटता, मारता

तात, ना० वा० सं० पुं० १ पुत्र २ पिता ३ गरम, तप्त ४ भाई ५ सखा ६ प्रिय

तापस, ना० वा० सं० पुं० तपस्वी

तापे, ना० वा० भा० पुं० तपे, तापना, तपना

तामरस, ना० वा० सं० नपुं० कमल

तामस, ना० वा० सं० पुं० तमोगुणी

तारक, ना० वा० सं० स्त्री० १ मंत्र २ दैत्यविशेष ३ तारनेवाला ४ तारा, सितारा ५ पुतली, आंख का तारा

तारा, ना० वा० सं० स्त्री० १ बालिकी स्त्री का नाम २ तरई

तालू, ना० वा० भा० पुं० १ तलाव २ वृक्षविशेष ३ ताड़ी बजाना

ताल, ना० वा० भा० पुं० ताल वृक्ष

तिमिर, ना० वा० सं० नपुं० अन्धकार

तिमुहानी, ना० वा० भा० स्त्री० त्रिमुख, जहां तीन नदी मिलती हैं

तिय, ना० वा० स्त्री० भा० स्त्री, मेहरारू

तिरहुति, ना० वा० भा० पुं० एक देशका नाम

तिलक, ना० वा० सं० नपुं० १ टीका २ श्रेष्ठ

तिष्ठै, क्रि० रहै, तिष्ठना, रहना (सं० स्था०)

तिहुंलोक, ना० वा० भा० पुं० तीनों लोक अर्थात् स्वर्ग, मृत्युलोक, पाताल

तीछै, वि० वा० तीक्ष्ण, चोखा, तेज

तीनकाल, ना० वा० भा० पुं० भूत, भविष्यत, वर्त्तमान

तीरथपति, ना० वा० पुं० सं० तीर्थपति, प्रयाग

तीरथराज, ना० वा० सं० पुं० तीर्थराज, प्रयाग, इलाहाबाद

तीव्र, ना० वा० सं० पुं० तीक्ष्ण

तुम्हें, स० ना० पुं० सं० तुम्हारे लिये, तुमको

तुरग, ना० वा० पुं० सं० घोड़ा

तुराई, ना० वा० भा० पुं० १ तोसक २ वेगसे ३ तोड़ करके

तुला, ना० वा० भा० स्त्री० तराजू

तुसार, ना० वा० भा० पुं० तुषार, पाला

तुहिन, ना० वा० सं० पुं० पाला

तूनीर, ना० वा० भा० पुं० तूणीर, तरकश

तूरी, ना० वा० भा० पुं० तुल्य

तूल, ना० वा० सं० पुं० १ रूई २ तुल्य, बराबर

तूंबरी, ना० वा० भा० स्त्री० तुंबड़ी

तृजग, ना० वा० प्रा० पुं० तिर्यंच, पशुपक्षी आदि

तृन, ना० वा० भा० पुं० तृण, तिनका

तृषित, वि० प्यासा

ते, स० ना० वा० १ वे २ तेरा ३ तुमको

तेज, ना० वा० भा० पुं० तेजस्, प्रताप, आंच

तेति, सं० ना० वि० तैं, अति, वे, बहुत

तोप्यो, वि० तोपा, ढांपा, तोपना, ढांपना

तोमर, ना० वा० सं० पुं० १ शस्त्रविशेष २ एक प्रकारका छन्द

तोरावलि, ना० वा० भा० स्त्री० त्वरावली, वेगवती

तोष, ना० वा० सं० पुं० संतोष, तृप्ति

तोषये, संप्रदान० प्रसन्नता के लिये

त्वच, ना० वा० बकला, त्वचा, स्पर्श की इन्द्री

त्वदीय, वि० तुम्हारा, तेरा

त्वदंघ्रि वि० तुम्हारा चरण

थ

थकित, कृ० वा० पुं० भा० थकाहुआ

थल, ना० वा० भा० पुं० स्थल, भूमि, स्थान

थलचर, ना० वा० भा० पुं० स्थलचर, थलचारी, मनुष्य आदि

थाना, ना० वा० भा० पुं० स्थान, ठिकाना

थिति, ना० वा० भा० स्त्री० स्थिति १ ठहराव २ पालन

थीरा, ना० वा० स्त्री० भा० अचल, थिर

द

द, ना० वा० सं० पुं० दाता, देनेवाला

दच्छ, गु० वा० सं० पुं० दक्ष १ प्रजापति २ चतुर, निपुण

दच्छसुत, ना० वा० सं० पुं० प्रचेता

दच्छसुता, ना० वा० सं० स्त्री० सती

दत्त, कृ० वा० दियागया

दधि, ना० वा० सं० पुं० दही
दधीचि, ना० वा० सं० पुं० दधीच एक ऋषिकानाम
दनुज, ना०वा०सं०नपुं० दैत्य, दानव
दम, ना० वा० सं० पुं० इन्द्रियों का रोकना
दमक, ना० वा० पुं० भा० चमक, दमकना
दमनीय, वि० सं० पुं० १ तोड़ने वाला २ दमनके योग्य
दमनु, वि० भा० पुं०नाश,नाशकरने वाला
दम्पति, ना० वा० पुं० सं० स्त्री पुरुष, जोड़ा
दर, ना० वा० सं० पुं० १ घंटा २ भय, डर ३ छेद
दरबार, ना० वा० भा० पुं० सभा
दरस, ना० वा० भा० पुं० १ रूप २ दर्श, दर्शन
दरसी, वि० पुं०भा० दर्शी,देखनेवाला
दर्पो, ना० वा० पुं० भा० दर्प, अभिमान
दर्भ, ना० वा० सं० पुं० कुश, कुस, एक प्रकार की घास
दल, ना० वा० सं० नपुं० १ नाश २ पत्ता ३ सेना ४ भाग
दलकि, क्रि० वि० दरकि, फटना, कूद उठना
दलमले, वि० वा० पीसडाले, दल मलना
दलन, ना० वा० सं० पुं० नाश
दलित, वि० सं० कृ० टूटा
दव, ना० वा० सं० नपुं० वनकीआग
दवारि, ना० वा० सं० पुं० दावानल, वनकी आग
दसन, ना०वा० पुं०भा० दशन, दांत
दहन, ना० वा० सं० पुं० आग, अग्नि, जलानेवाला, जलाना
दा, ना० वा० सं० स्त्री० देनेवाली
दाड़िम, ना० वा० सं० पुं० अनार

दाता, ना० वा० सं० पुं० देनेवाला
दातार, ना० वा० सं० पुं० दान देनेवाला
दादुर, ना० वा० पुं० दर्दुर, मेंडक, मेंढुका
दाप, ना० वा० भा० पुं० दर्प १ बल २ गर्व, अभिमान
दाम, ना० वा० भा० पुं० १ माला २ रस्सा ३ रुपया
दामिनि, ना०वा०भा०स्त्री०दामिनी, बिजुली
दायक, ना० वा० सं० पुं० देनेवाला
दारन, ना० वा० पुं० भा० दारण, फाड़ना
दारय, वि० क्रि० नाशकरो, फाड़ो
दारा, ना० वा० सं० स्त्री० स्त्री
दारिद, भा०वा०पुं० भा० दरिद्रता, दरिद्र
दारिका, ना० वा० स्त्री० सं०लड़की, कन्या
दारु, ना० वा० सं० स्त्री० लकड़ी, काठ
दारुन, ना० वा० भा० पुं० दारुण, घोर
दारुनारि, ना० वा० भा० स्त्री० कठपुतली
दावन, ना० भा० सं० पुं० नाश
दाह, ना०वा०सं०पुं० जरना, जलाना
दिआसे, ना० वा० पुं० भा० दीपक, चिराग़ासा
दिगम्बर, ना० वा० सं० पुं० नंगा, वस्त्रहीन
दितिसुत, ना०वा०सं०पुं०हिरण्याक्ष
दिनकर, ना० वा० सं० पुं० सूर्य्य
दिनदानी, ना० वा० सं० पुं० अति उदार, दिनदिन देनेवाला
दिनमनि, ना० वा० पुं० दिनमणि सूर्य
दिनेस, ना० वा०भा०पुं० दिनेश, सूर्य
दिलिप, ना० वा० भा० पुं० इन्द्र, कुबेर आदि

दिवस, ना० वा० सं० पुं० दिन
दिव्यतन, ना० वा० भा० स्त्री० दिव्यतनु अप्सरा
दिव्यदृष्टि, ना० वा० सं० स्त्री० अलौकिकज्ञान
दिसि, ना०वा०भा०स्त्री०दिशा,ओर
दिसिराज, ना० वा० भा० पुं०इन्द्र कुबेर आदि
दीक्षा, ना० वा० भा० स्त्री० दीक्षा, मंत्रोपदेश
दीनता, भा० वा० सं० स्त्री०गरीबी
दीसा, वि० पुं० देखा, दीसना
दुकूल, ना० वा० सं० नपुं० वस्त्र, पट, रेशमी कपड़ा
दुर्ग, ना० वा० सं० पुं० १ गढ़, क़िला २ अगम
दुर्गम, ना० वा० सं० पुं० अजय
दुर्घट, ना०वा०सं०पुं०अगम,कठिन
दुनी, ना० वा० भा० पुं० दुनिया, संसार
दुर्वचन, ना०वा०सं०नपुं० दुष्टवचन गाली
दुर्वाद, ना० वा० सं० पुं० दुर्वाद, दुष्टवचन, गाली
दुर्वासा, ना० वा० सं० पुं०दुर्वासा एकऋषिका नाम
दुरंत, ना० वा० सं० पुं० अन्तविना
दुरतिक्रम, ना० वा० सं०पुं० दुस्तर
दुराधर्ष, ना० वा० सं० पुं०जो शत्रु से नहीं दबता
दुराराध्य, वि० दुःखसेसेवनेके योग्य
दुराव, ना० वा० भा० पुं० छिपाना, कपट
दुरासा, ना० वा० सं० स्त्री० नीच आश
दुरित, ना० वा० सं० पुं० १ पाप २ छिपा
दुसह, भा० वा० सं० नपुं० दुस्सह जो सहने के योग्यनहीं
दुष्टजंतु, ना० वा०सं० पुं० सर्पआदि

दुहाई, ना० वा० भा० स्त्री० १ दोह २ सौगन्द, कसम

दुहि, ना० वा० भा० स्त्री० कामना

दुंदुभि, ना० वा० भा० पुं० १ नगारा, २ एक दैत्यका नाम

दूत, ना० वा० पुं० सं० हलकारा

दूना, प्रभा० वा० दुगुना, द्विगुण

दूधमुख, ना० वा० भा० पुं० बच्चा, लड़का

दूषन, ना० वा० भा० पुं० १ एक राक्षस का नाम २ दोष

दृग, ना० वा० सं० पुं० आंख

दृगंचल, ना० वा० सं० पुं० पलक

देव०, ना० वा० सं० पुं० १ देखो २ देवता ३ मेघ ४ राजा

देवक, ना० वा० सं० पुं० देवका

देवतरु, ना० वा० सं० पुं० कल्पवृक्ष

देवधुनि, ना० वा० सं० स्त्री० गङ्गा

देवऋषि, ना० वा० सं० पुं० नारद

देवसर, ना० वा० सं० पुं० मानसआदि

देश, ना० वा० सं० पुं० देश, स्थान, मुल्क

दैआहिं, क्रि० भा० का० दैव को, भाग्यको

द्वैत, ना० वा० सं० पुं० भेद, मैं, तूं

दोष, ना० वा० सं० पुं० काम, क्रोध आदि

दंड, ना० वा० सं० पुं० १ लकड़ी २ राजदण्ड, सजा ३ घड़ी

दंडक, ना० वा० सं० पुं० १ राजा, २ राजा नाम विशेष

दंभ, ना० वा० सं० पुं० पाखण्ड

द्रुम्स, ना० वा० सं० पुं० वनमाली

द्रवी, क्रि० वा० कृपा करो वा कर, द्रवना, देवरना

द्रुम, ना० वा० सं० पुं० पेड़, वृक्ष

द्रव्य ना० वा० सं० नपुं० वस्तु

द्वंद्व, ना० वा० सं० पुं० दो, रागदोषादि

द्वादस, ना० वा० बारह १२

द्विजराज, ना० वा० सं० पुं० द्विजराज, चन्द्रमा

ध

धन, ना० वा० सं० नपुं० १ द्रव्य २ धान्य

धनद, ना० वा० सं० पुं० कुबेर

धनिक, वि० पुं० धनी

धनी, वि० सं० पुं० स्वामी, धनवान, दौलतमन्द

धनु, ना० वा० सं० नपुं० धनुष

धनेसा, ना० वा० सं० पुं० धनेश, कुबेर

धन्या, ना० वा० सं० स्त्री० नदीविशेष

धन्वी, वि० पुं० सं० धनुषधारी

धर्मध्वज, ना० वा० सं० पुं० पाखण्डी

धर, ना० वा० सं० पुं० १ धड़ २ भूमि

धरनी, ना० वा० भा० स्त्री० पृथ्वी

धरषि, क्रि० वि० दबाकर, धरषना, दबाना

धरा, ना० वा० सं० स्त्री० पृथ्वी

धरासुर, ना० वा० सं० पुं० विप्र, ब्राह्मण

धवल, ना० वा० सं० पुं० श्वेत, सफेद

धाता, ना० वा० सं० पुं० ब्रह्मा

धाम, ना० वा० सं० नपुं० १ घर २ तेज ३ वैकुण्ठादि

धारि ना० वा० भा० स्त्री० सेना, फौज

धारी, ना० वा० भा० स्त्री० १ सेना २ धरनेवाला

धावन, ना० वा० सं० पुं० दूत, हरकारा

धिग, अ० धिक, धिक्कार

धुआं, ना० वा० भा० पुं० १ मुरदा २ मरण ३ धूम

धुनि, क्रि० वि० ना० वा० सं० पुं० १ धुनकरके, कम्पाकरके २ शब्द आवाज़ ३ व्यंग, धुनना, कम्पाना

धुर, ना० वा० सं० पुं० १ बोझा २ मुख्य

धुरीन, ना० वा० सं० पुं० बोझाधरने वाला

धूति, क्रि० वि० ठग करके, धूर्तता करके, धूतना, छलना

धूमकेतु, ना० वा० भा० पुं० धूमकेतु, अग्नि, आग

धृति, ना० वा० स्त्री० सं० धीरता धीरज

धेनु, ना० वा० सं० स्त्री० गैया, गौ

धेनुमति, ना० वा० सं० स्त्री० गोमती नदी

धोरी, ना० वा० भा० पुं० मुख्यबैल

धंधक, ना० वा० भा० पुं० धंधा, काम

धौं, अ० क्रि० याकि

ध्रुव, ना० वा० पुं० सं० १ ध्रुव, एक भक्त का नाम २ निश्चय ३ एक ताराका नाम

न

नई, ना० वा० स्त्री० भा० १ नदी २ नवीन

नए, क० वा० १ झुके २ नवीन, नया

नकुल, ना० वा० सं० पुं० नेउर, नेवला

नक्र, ना० वा० सं० पुं० नाक एक प्रकार का जलजन्तु

नटत, क्रि० वा० नाचता है

नतरु, नि० अ० नहीं तो

नति, ना० वा० सं० पुं० नवना, प्रणाम

नफीरी, ना० वा० भा० पुं० सहनाई, एक प्रकार का बाजा

नभग, ना० वा० सं० पुं० पक्षी

नभगेस, ना० वा० सं० पुं० नभगेश गरुड़

नभचर, ना० वा० सं० पुं० पक्षीआदि

नमत, क्रि० वा० नमति, नमस्कार करता है

नमामहे क्रि० वा० हमलोग प्रणाम करते हैं

नमामी, क्रि० नमामि, प्रणामकरताहूं

नमित, क० वा० नवाया, नीचेकिया

नम्र ना० वा० सं० पुं० झुका

नय, ना० वा० सं० पुं० नीति, धर्म

नयन, ना० वा० सं० पुं० आंख

नयनपट, ना० वा० सं० पुं० पलक

नरहरि, ना० वा० सं० पुं० १ नरहरिदास तुलसीदासकेगुरूकानाम २ नृसिंह

नर्तक, ना० वा० पुं० सं० नट, नचनियां

नरतकी, ना० वा० सं० स्त्री० नटिन

नलिन, ना० वा० सं० नपुं० कमल

नर्मद, ना० वा० सं० पुं० सुखद
नलिनी, ना० वा० सं० स्त्री० कुमुदिनी, कमलिनी
नव० ना० वा०सं० पुं० नया,नूतन
नवजल, ना० वा० पुं० सं० वर्षा का पानी
नवधा, प्र० वा० नव प्रकार का
नवनीत, ना० वा० सं० पुं० नवनीत मक्खन
नवभक्ति, ना० वा० सं० स्त्री० नौ प्रकारकीभक्ति, (टिप्पनीमेंदेखो)
नवरस, ना० वा० सं० पुं० शृंगारादि नवरस
नवल, ना० वा० सं० पुं० १ नया २ जवान
नवसप्त, ना० वा० सं० पुं० नव और सात अर्थात् सोलहशृंगार
नस, ना० वा०भा० स्त्री० नाड़ी
नसाय, ना० वा० भा० पुं० बिगड़े, नाशहो, नसाना, बिगड़ना
नसावा, क० वा० नाशकिया
नसावना, नाश करना
नस्वर, ना० वा० पुं० भा० नश्वर, विनाशी, नाश होनेवाला
नखत, ना० वा० पुं० भा० नक्षत्र
नहरुआ, ना० वा० भा० पुं० जांघ में सूतसारोग जो निकलता है
नहारु, ना० वा० भा० पुं० १ चाम का टुकड़ा, २ व्याघ्र, बाघ
नाइ, क्रि० वि० नवाकरके, झुकके
नाईं, सा० वा० क्रि० वि० सदृश, की तरह
नाऊ, ना० वा० भा० पुं० नाम
नाक, ना० वा० भा० पुं० १ स्वर्ग २ नासिका
नाकनटी, ना० वा० सं० स्त्री० अप्सरा
नाग, ना० वा० सं० पुं० १हाथी २सांप
नागर, ना० वा० भा० पुं० चतुर
नागरिपु, ना० वा० सं० पुं० सिंह

नाठी, वि० स्त्री० नष्टहुई
नाद, ना० वा० सं० पुं० शब्द, आवाज नाना, अ० अनेक
नानाकार, ना० वा० सं० पुं० वत्सदंत, क्षुरप्र, अर्धचन्द्रादि भेदवाले अनेक आकारके
नामी, ना० वा० सं० पुं० नामवाला
नामानी, ना० वा० सं० पुं० नाम का समूह
नायक, ना० वा० सं० पुं० स्वामीसर्दार
नयो, वि० पुं० भा० झुकाया
नारकी, ना० वा० सं० पुं० नारकीय, नरकवासी
नाराच, ना० वा० सं० पुं० बाण,तीर
नाल, ना० वा० सं० नपुं० डांड़ी
नावरि, ना० वा० भा० पुं० नावघुमाना
नाह, ना० वा० भा० पुं० नाथ, पति, मालिक
निकर, गु० वा० सं० नपुं० समूह
निकाई, भा० वा० स्त्री० भा० भलाई, शोभा
निकाम, गु० वा० सं० पुं० १ अति, बहुत २ कामनारहित
निकाय, ना० वा० सं० पुं० समूह
निकेत, ना० वा० सं० पुं० घर
निकेतन, ना० वा० सं० नपुं० घर
निकंद, ना० वा० सं० पुं० नाश
निकन्दन, ना० वा० सं० पुं० १ नाश, २ नाशकरनेवाला
निगम, ना० वा० सं० पुं० वेद
निगूढ़ा, वि० सं० स्त्री० अतिगुप्त, बहुत छिपा
निग्रह, ना० वा० सं० नपुं० १रोष २दंड
निघटत, क्रि० वि० अतिक्रमतीहोना
निज ना० वा० सं० नपुं० १ अपना २ उत्कृष्ट
निजगति, ना० वा० सं० पुं० अपनी गति
निजतंत्र, ना० वा० सं० पुं० स्वतंत्र
निजधर्म, ना० वा० सं० पुं० मुख्यधर्म

निजानन्द, ना० वा० सं० पुं० स्वरूपानन्द
निजसुख, ना० वा० सं० पुं० आत्मसुख
निजसंधि, ना० वा० सं० पुं० १ अपना छिद्र २ अवसर
नित ना० वा० भा० पुं० १ सदा २ निमित्त, वास्ते
नित्य, ना० वा० सं० नपुं० १ सदा २ नित्यकर्म, जैसे संध्या आदि
निदान, ना० वा० सं० नपुं० १ अन्त २ कारण
निदरि, क्रि० वि० निरादर करके
निधन, ना० वा० सं० पुं० मृत्यु, मौत, मरण
निधान, ना० वा० सं० पुं० १ धन २ आधार ३ ख़ज़ाना
निधि, ना० वा० सं० पुं० १ बहुत धन, ख़जाना, २ आधार, ३ संख्या विशेष
निपट, गु० वा० सं० पुं० अति, बहुत
निपाता, क० वा० नाश किया
निपुनाई, भा० वा० भा० स्त्री० निपुणता, चतुराई
निःपापा, ना० वा० सं० स्त्री० पापरहित
निविड़, ना० वा० सं० पुं० सघनघन
निबेरी, ना० वा० भा० स्त्री० १ चुकाई २ जवान स्त्री
निबेही, ना० वा० भा० स्त्री० १ निवहि निबाह २ निरंतर
निबुकि, क्रि० वि० छोड़ाकरके निबुकना, छुड़ाना
निवृत्ति, ना० वा० सं० पुं० निवृत्ति संसारसे छूटना
निभ, ना० वा० सं० नपुं० तुल्यसदृश
निमि, ना० वा० सं० पुं० एकराजा का नाम
निमेष, ना० वा० सं० पुं० १ [illegible] मूंदना २ कालविशेष
नियराई क्रि० वा० निकट पहुंचे नियराना, निकट आना

नियोगा०ना०वा० सं०स्त्री०नियोग, आज्ञा

निरत, ना०वा० सं० पुं० अतिप्रीति युक्त, लगा, तत्पर

निरबहई, ना० वा० भा० स्त्री० निबहे, निबहना

निरबहा, वि० निबहा, बचगया

निर्बाह, ना.वा, भा० पुं० निबाहक्रिया

निरखि०क्रि० वि०देखकरकेनिरीक्षण

निरस, ना० वा०भा० पुं० रसबिना सूखा, स्वादबिना

निरस,क्रि०वि०निरस्य,त्याग करके

निर्गम, ना०वा०सं०नपुं० निकसना

निर्गता, ना० वा०सं० स्त्री० निकली

निर्जोष, ना०वा० सं० नपुं०निश्चय

निर्झर, ना० वा० सं० पुं० झरना

निर्लेप, ना० वा० सं० पुं० बेलाग, लगाव नहीं

निर्विकल्प,ना०वा० सं०पुं०भेदरहित

निर्वहा,ना० वा० सं० पुं० बीतगया

निर्बान, ना०वा०सं०नपुं० निर्वाण, मोक्ष, मुक्ति

निर्भर, ना० वा० सं० पुं० पूर्ण, पूरन, अतिशय

निर्मयउ, ना०वा० भा० पुं० निर्माण किया, बनाया, रचा

निर्मूल, ना० वा० सं० नपुं० मूल रहित, नाश

निरामिष,ना०वा० सं० नपुं० मांस विना

निरीस,ना० वा० भा० पुं० निरीश, विनामालिक

निरुपाधि, ना० वा०सं० नपुं० निरुपाधि,उपाधिरहित,विनाप्रयोजन

निरुवारे, ना० वा० भा० पुं० खोले, निरुवारना खोलना

निरुपन, ना० वा०भा०पुं० निरूपण विस्तार से कहना

निरंकुस, ना० वा० भा० पुं० निरंकुश स्वतंत्र

निरम्बु,ना०वा०सं० नपुं० जलविना

निरंजन, ना०वा०सं०नपुं० अविद्या रहित, रागरहित

निवारक, ना०वा०सं० पुं० दूरकरने वाला

निवारन,ना०वा०सं० पुं० निवारण दूरकरना, हटाना

निवास, ना० वा० सं० पुं० घर

निवेदित, वि०सं०कृ० अर्पित, नैवेद्य किया

निषाद, ना०वा० सं० पुं० मल्लाह

निषंग, ना० वा० सं० पुं० तरकश

निकेवल, ना०वा०सं० पुं० अकेला

निसरी, ना० वा० भा० स्त्री० निकली; निसरना, निकलना

निसागम, वि० भा० पुं० रातआये

निसाना, ना०वा०भा०पुं० नगारा, निशान

निसि, ना०वा० भा० स्त्री० निशा, रात्रि, रात

निसिचर, ना०वा०भा० पुं० राक्षस

निसित, ना०वा०भा० क्रि० निशित तीखा, चोखा

निसेनि, ना० वा० भा० स्त्री० सीढ़ी

निसेस, ना० वा० भा० पुं० निशेश चन्द्रमा, निशाके ईश

निसोत, ना०वा०सं० पुं० निराला, केवल

निहारा, ना० वा० भा० पुं० देखा निहारना, निरीक्षण, देखना

निहार, ना० वा० भा० पुं० कुहिरा,

निहोर,ना०वा०भा० पुं० निहोरा १ विनती २ उपकार

नीक, गु० वा० भा० पुं० अच्छा

नीच, ना० वा० भा० पुं०१ गड़हा २ नीच, कमीना

नीड़,ना.वा०सं० पुं०खोता, घोसला

नीर, ना०वा०सं० नपुं० पानी, जल

नीरज, ना० वा० सं० नपुं० कमल

नीरधर,ना०वा०सं०पुं० बादल,मेघ

नील, ना० वा० सं० पुं० श्यामरंग

नीलकंठ,ना०वा०सं०पुं०मोर, मयूर

नीलोपल, ना०वा० सं० नपुं०नीलमणि

नेइ, निषेधार्थकनेव, इसतरह नहीं

नेकु, ना० वा० भा० पुं थोड़ासा थोरिक

नेग,ना०वा०भा०पुं० पुरोहितआदि का कर

नेति, निषेधार्थक न इति नहीं ऐसा

नेम, ना०वा० भा०पुं० शौच संतोष आदि नियम

नैहर, ना० वा० भा० पुं० स्त्री का निजघर, मातुघर, मैका

नोइ, ना० वा० भा० स्त्री० गाय के पांवबांधनेकीरस्सीदुहने के समय

नौमि, क्रि० वा० मैं स्तुति करताहूं

नौमी,ना०वा०भा०स्त्री०नवमीतिथि

नचहिं, क्रि० वा० नाचते हैं

नन्दिनि, ना० वा० सं० स्त्री०नंदिनी

नंदीमुख,ना.वा०सं०पुं० श्राद्धविशेष

प

पशु,ना०वा०भा०पुं० १ पांत्र २ खगन

पटल, ना० वा० सं० पुं० १ समूह २ ढपना

पटतर, ना० वा० भा० पुं० उपमा बरोबर

पट, ना०वा० सं० पुं० कपड़ा, वस्त्र

पटु, ना० वा० सं० पुं०चतुर, सुन्दर

पटोरे,ना०वा०पुं०भा० पटोरे रेशमी कपड़ा

पटखी, ना० वा० भा० स्त्री० पंगति

पठ, ना० वा० भा० पुं० पढ़ना

पचि, ना० वा० भा० स्त्री० १ पची २ कामसे

पताका, ना० वा० सं० स्त्री० ध्वजा

पति, ना० वा० सं० पुं० १ राजा, स्वामी २ भर्ता, खसम ३ प्रतिष्ठा

पतिदेवता,ना.वा०सं०स्त्री० पतिव्रता

पतिनिर्दिं, कर्मकारक पत्नी को

पतिलोक, ना० वा० सं० नपुं० हिमाचल

पतंग, ना० वा० सं० पुं० १ सूर्य २ क्षुद्र जीव, पतिंगा ३ गेंद ४ लालरंग

पतंति, क्रि० वा० गिरते हैं

पत्र, ना० वा० सं० नपुं० चिट्ठी, पत्ता

पथिक, ना० वा० सं० पुं० राही, मुसाफिर, बटोही

पथ्य, ना० वा० सं० पुं० गुनकारी

पंथ, ना० वा० सं० पुं० राह, मार्ग

पद, ना० वा० सं० पुं० १ पांव २ स्वरूप ३ अधिकार

पदचर, ना० वा० सं० पुं० पैदल, प्यादे

पदज, ना० वा० सं० पुं० पांवकीअंगुरी

पदचारी, ना० वा० सं० पुं० प्यादे, पैदल

पदत्रान, ना० वा० सं० पुं० जूता

पदपीढ़ा, ना० वा० भा० पुं० खराऊं, पांवरखने की चौकी

पदाति, ना० वा० सं० पुं० प्यादे, पैदल

पदादपि, पद से भी

पदारथ, ना० वा० भा० पुं० पदार्थ, वस्तु, सब चीज़

पदिक, ना० वा० भा० पुं० जड़ाऊचौकी

पदुम, ना० वा० प्रा० पुं० पद्मकमल

पदुमराग, ना० वा० सं० पुं० लालमणि

पन, ना० वा० भा० पुं० प्रण, प्रतिज्ञा, अवस्था

पणव, ना० वा० सं० पुं० ढोल

पनस, ना० वा० सं० कटहर

पनिघट, ना० वा० भा० पुं० पानी भरने का घाट

पवारे, क्रि० वा० फेंके, डारे, पवारना, फेंकना

पवि, ना० वा० सं० पुं० हीरा, पवि, वज्र

पय, ना० वा० सं० नपुं० १ दूध २ पानी

पयद, ना० वा० सं० पुं० १ थन २ बादल

पयनिधि, ना० वा० प्रा० पुं० क्षीरसमुद्र

पयाना, ना० वा० भा० स्त्री० प्रयाण, यात्रा

पयोधि, ना० वा० पुं० सं० समुद्र

पयोनिधि, ना० वा० सं० पुं० समुद्र

पर, ना० वा० सं० पुं० १ और २ शत्रु ३ शिरोमणि ४ परे ५ तत्पर ६ उपरांत

परछिद्र, ना० वा० सं० पुं० १ इन्द्री छिद्र २ परायेका दोष

परत्र, अ० वा० परलोक

परधाना, ना० वा० भा० पुं० प्रधान, मुख्य

परना, ना० वा० भा० पुं० पर्ण, पत्ता

परब, ना० वा० भा० पुं० १ पर्व २ गांठ

परम, ना० वा० सं० पुं० बड़ा-अति, उत्तम

परमा, ना० वा० सं० स्त्री० बहुत शोभा

परमिति, ना० वा० सं० स्त्री० अवधि, मर्यादा

परमान, ना० वा० सं० नपुं० १ यथार्थ २ प्रत्यक्ष आदि प्रमाण

परमारथ, ना० वा० सं० पुं० तत्त्ववस्तु

परस, ना० वा० भा० पुं० १ छूना २ पारसपत्थर

परसि, क्रि० वि० छू करके

परसु, ना० वा० भा० पुं० फरसा

परसुधर, ना० वा० सं० पुं० परशुराम

पराई, वि० स्त्री० भा० १ भागा २ दूसरेका ३ पराना, भागना, पलायन

परागा, ना० वा० सं० पुं० पराग, धूलि, कमल का रज

पराभव, ना० वा० सं० पुं० १ निरादर २ प्रलय

परावर, ना० वा० सं० पुं० ब्रह्मादि और मनुष्यादि

परि, गु० वा० भा० पुं० अति, चारोंओर

परिकर, ना० वा० सं० पुं० कमर

परिघ, ना० वा० सं० पुं० ब्योंड़ा

परिचरजा, ना० वा० भा० स्त्री० परिचर्या, सेवा

परिचारक, ना० वा० सं० पुं० सेवक

परिचारिका, ना० वा० सं० स्त्री० दासी, लौंडी

परिच्छिन्न, ना० वा० सं० कृ० व्यापक, घेरागया

परिताप, ना० वा० सं० पुं० सन्ताप

परितापी, ना० वा० सं० पुं० दुःख देनेवाला

परितोष, ना० वा० सं० पुं० प्रसन्नता, संतोष

परित्राता, ना० वा० सं० पुं० रक्षक

परिधान, ना० वा० सं० नपुं० पहिरावा

परिनाम, ना० वा० भा० पुं० १ अवस्था २ अन्त ३ फल

परिपाका, ना० वा० भा० पुं० अंत का फल

परिपाटी, ना० वा० सं० स्त्री० परम्पराकी रीति

परिहरि, ना० वा० पुं० भा० छोड़ करके, परिहरण

परिहास, ना० वा० भा० स्त्री० व्यंग वचन के साथ निन्दा

परुष, ना० वा० सं० पुं० कठोर

परे, ना० वा० सं० पुं० परलोक में

परेस, ना० वा० भा० पुं० परेश, परमेश्वर

परंतु, अ० लेकिन, उपरांत

पलोटत, ना० वा० पुं० भा० धीरे से पांव दाबता, पलोटना

पल्लव, नया पत्ता

पल्लवित, वि० सं० कृ० १ नयेपत्ते के साथ २ रोमांचित

पवन, ना० वा० सं० पुं० वायु, बतासा

पश्यंति, क्रि० वा० देखते हैं

पश्यामि, क्रि० वा० मैं देखताहूं

पखाउज, ना० वा० भा० पुं० मृदंग

पखारे, ना० वा० पुं० भा० प्रक्षालन, धोये, पखारना, धोना

पखवारा, ना० वा० पुं० भा० पक्ष, पन्द्रह दिन

पसाऊ, ना० वा० भा० पुं० प्रसाद, प्रसन्नता, कृपा
पहुनई, ना०वा०भा०स्त्री० मेहमानी
पाइक, ना० वा० पुं० भा० १ पिं- यादा २ मल्ल
पाक, ना० वा० सं० पुं० १ रसोई २ एक असुर का नाम ३ पक्क
पाकरिपु, ना० वा० सं० पुं० इन्द्र
पाकी, ना० वा० सं० पुं० परिपक्क
पागे, वि० भा० पुं० साने, पागना
पाट, ना० वा० सं० पुं० रेशम
पाटमहिषी, ना० वा० स्त्री० सं० पटरानी
पाटल, ना०वा० सं० पुं० १ गुलाब २ वृक्षविशेष
पाटे, वि० पुं० भरदिया, पाटना, भरदेना
पाठ, ना० वा० सं० पुं० पढ़ना
पाठक, ना०वा०सं०पुं० पढ़ानेवाला
पाठीन, ना० वा० भा० पुं० पढ़िना मछरी
पातक, ना० वा० सं० नपुं० पाप
पात्र, ना० वा० सं० नपुं० बरतन योग्य
पाथ, ना० वा० सं० पुं० जल, पानी
पाथोज, ना० वा० सं० नपुं० कमल
पाथोद, ना० क्रि० सं० पुं० बादल, मेघ
पाथोधि, ना० वा० सं० पुं० समुद्र
पादप, ना० वा० सं० पुं० वृक्ष, पेड़
पान, ना० वा० सं० नपुं० १ पीना २ पत्ता ३ मद्यपान, शराबपीना
पानि, ना० वा० भा० स्त्री० पाणि, हाथ
पारथिव, ना० वा० भा० पुं० पार्थिव, शिव
पारहिं, क्रि० वा० सकते हैं, पारना, सकना
पारा, १ वि० गिराया, पारना २ समर्थ ३ पार
पारावत, ना० वा० सं० पुं० कबूतर
पारी, वि० स्त्री० भा० डारी, फेंकी परना, फेंकना

पालव, ना० वा० भा० पुं० १ प- ल्लव, पत्ता २ शाखा, डार
पाले, वि० भा० पुं० अधीन
पावक, ना०वा०सं०पुं० अग्नि, आग
पावन, ना० वा० सं० पुं० पवित्र
पावस, ना० वा० भा० पुं० वर्षाऋतु
पाष, ना० वा० भा० पुं० पक्ष, पंद्रहदिन
पास, ना० वा० भा० पुं० पाश, फांसी, फँसड़ी
पाहन, ना० वा० भा० पुं० पाषाण, पत्थर
पांवर, ना० वा० सं० पुं० पामर, नीच, मूढ़
पांवरी, ना० वा० स्त्री० भा० पा- दुका, खड़ाऊं
पांवड़े, ना० वा० भा० पुं० पांव रखने का वस्त्र
पाहि, क्रि०वा० वि० क्रि० रक्षाकरो
पाहीं, ना० वा० भा० पुं० पास
पिक, ना० वा० सं० पुं० कोयल
पिता, ना० वा० सं० पुं० बाप, रक्षक
पिनाक, ना० वा० सं० पुं० महादेव का धनुष
पिपीलिका, ना० वा० सं० स्त्री० चिउँटी
पिरीते, ना० वा० भा० पुं० प्रीत, प्रीतम, प्रीतियुत
पिरोजा, ना० वा० भा० पुं० जंगाली रंग का मणि
पिसुन, ना० वा० सं० पुं० चुगुल
पी, ना० वा० भा० पुं० प्रिय, पति
पीठ, ना० वा० सं० नपुं० आसनपीढ़ा
पीन, गु० वा० सं० पुं० पुष्ट, मोटा
पीयूष, ना० वा० सं० नपुं० अमृत
पीवर, गु० वा० सं० पुं० पुष्ट, मोटा
पुट, ना० वा० सं० पुं० दोना
पुटी, ना० वा० सं० स्त्री० दोना
पुनी, ना० वा० सं० स्त्री० पवित्र
पुनीत, ना० वा० सं० क्रि० पवित्र
पुर, ना० वा० सं० पुं० १ नगर, पु-

रा, गांव २ दैत्यविशेष
पुरट, ना० वा० सं० नपुं० सोना, कंचन
पुरान, ना० वा० भा० नपुं० १ पु- राण २ पुराना
पुराकृत, वि० कृ० सं० पहिलेकियागया
पुरारि, ना० वा० सं० पुं० शिव, महादेव
पुरुष, ना० वा० सं० पुं० १ मनुष्य २ पुरुखा
पुरोडास, ना० वा० सं० पुं० यज्ञकाहव्य
पुरोधा, ना० वा० सं० पुं० पुरोहित
पुरन्दर, ना० वा० सं० पुं० इन्द्र
पुलक, ना० वा० सं० पुं० रोमांच
पुलस्ति, ना० वा० सं० पुं० एक ऋषिकानाम
पुहुमि, ना० वा० भा० स्त्री० पृथ्वी
पुंगव, ना० वा० सं० पुं० श्रेष्ठ
पुंज, ना० वा० सं० पुं० समूह
पूग, ना० वा० सं० पुं० १ सोपारी २ समूह
पूजनीय, ना० वा० सं० पुं० सेवा के योग्य
पूजिहि, क्रि० वा० पूर्णहोगा, पूजना, पूर्णहोना
पूजी, वि० स्त्री० भा० पूरीहुई
पूज्य, वि० सं० कृ० पूजने के योग्य
पूतरी, ना० वा० भा० स्त्री० १ कठपुतली २ आंखकी पूतली
पूप, ना० वा० सं० पुं० मालपुआ
पूय, ना० वा० सं० पुं० पीब
पूर, ना० वा० सं० पुं० १ सम्पूर्ण २ उत्तर ३ कान का गहना
पुरुष, ना० वा० सं० पुं० पुरुष
पूषन, ना० वा० सं० पुं० सूर्य
पृथक्, अव्यय अलग, जुदा
पृथुराज, ना० वा० सं० पुं० एक राजाका नाम जिसने पृथ्वीको दोहा है
पृष्ठ, ना० वा० सं० पुं० पीठ
पेखिहहिं, क्रि० वा० ना० त्यागना

पेली, ना० वा० सं० पुं० त्याग
पेषन, क्रि० वा० प्रेक्षण, देखना, तमाशा
पेषिय, क्रि० वि० सं० प्रेक्षय, देखनेके योग्य
पैसार, वि० क्रि० प्रवेश, पैठाव
पोच, गु० वा० सं० पुं० नीच, बुरा
पोत, ना० वा० सं० पुं० १ जहाज २ बालक
पोतक, ना० वा० सं० पुं० बालक
पोषत, क्रि० वा० पुष्टकरताहै, पोषण, पोषना
पोसो, वि० भा० पाला, पोषना, पालना
पंकरुह, ना० वा० सं० नपुं० कमल
पंगु, ना० वा० सं० पुं० लंगड़ा
पंचकवल, ना० वा० सं० पुं० पंचग्रास
पंचदस, सं० वा० पन्दरह
पंचसबद, ना० वा० भा० पुं० पांच बाजा नगाराआदि
पंजर, ना० वा० सं० पुं० पिंजरा
पंथ, ना० वा० सं० पुं० रस्ता
प्रकार, ना० वा० सं० पुं० रीति
प्रकासक, ना० वा० भा० पुं० प्रकाशक, प्रकाश करनेवाला
प्रकास्य, क० वा० कृ० प्रकाश्य, प्रकाश के योग्य
प्रकृति, ना० वा० सं० स्त्री० १ माया २ स्वभाव ३ संसार
प्रकृष्टि, गु० वा० सं० पुं० श्रेष्ठ
प्रगल्भ, ना० वा० सं० पुं० शास्त्रसे विजयी
प्रचार, ना० वा० सं० पुं० विस्तार, फैलाव
प्रचारी, क्रि० वि० ललकारके
प्रजारी, वि० स्त्री० भा० जलाई
प्रजारना, क्रि० वा० जलाना
प्रजासन, ना० वा० भा० पुं० प्रजाशन, प्रजाका भोजन
प्रजेस, ना० वा० भा० पुं० प्रजेश, ब्रह्मप्रजापति

प्रजन्त, अव्यय पर्यन्त, तक, लौं
प्रति, अव्य० १ पास २ संमुख ३ विरुद्ध
प्रतिउपकार, ना० वा० सं० पुं० प्रत्युपकार, उपकार का बदला
प्रतिकूला, ना० वा० सं० पुं० विमुख
प्रतिछाहीं, ना० वा० भा० स्त्री० प्रतिछाया, परिछाहीं
प्रतिपच्छी, ना० वा० सं० पुं० प्रतिपक्षी, शत्रु
प्रतिपाल, वि० सं० कृ० वर्तनेके योग्य
प्रतिभट, ना० वा० अव्ययीभाव, समान वीर
प्रतिमा, ना० वा० सं० स्त्री० मूर्ति
प्रतिमूर्ति, ना० वा० सं० स्त्री० प्रतिबिम्ब, परिछाहीं
प्रतिबिम्ब, ना० वा० सं० पुं० परिछाहीं
प्रत्यूह, ना० वा० सं० पुं० विघ्न
प्रथम, ना० वा० सं० पुं० पहिले, मुख्य
प्रथमगति, ना० वा० सं० पुं० दान
प्रद, वि० सं० पुं० देनेवाला
प्रदेश, ना० वा० भा० पुं० प्रदेश १ खंडभूमि २ परदेश
प्रदोष, ना० वा० सं० पुं० संध्याकाल, रात्रिका आना
प्रधान, ना० वा० सं० पुं० १ मुख्य २ मंत्री
प्रनत, ना० वा० सं० पुं० अतिनम्र, शरणागत
प्रनय, भा० वा० भा० पुं० प्रणय, प्रेम
प्रनवौं, क्रि० वा० प्रनामकरताहूं, प्रनवना
प्रपंच, ना० वा० सं० पुं० १ संसार २ कपट, छल
प्रबंध, ना० वा० सं० पुं० १ रचना २ बन्दोबस्त
प्रबीन, ना० वा० भा० पुं० प्रवीण, चतुर
प्रबोध, ना० वा० सं० पुं० उपदेश, ज्ञान
प्रबोधक, वि० सं० पुं० जगानेवाला
प्रभा, ना० वा० सं० स्त्री० प्रकाश

प्रभाऊ, ना० वा० भा० पुं० प्रभाव, प्रताप
प्रभु, ना० वा० सं० पुं० १ स्वामी २ राजा ३ समर्थ
प्रभंजन, ना० वा० सं० पुं० पवन, हवा
प्रमदा, ना० वा० सं० स्त्री० स्त्री, मेहरारू
प्रमाद, भा० वा० भा० असावधानता
प्रयांति, क्रि० वा० प्राप्त होते हैं
प्रलम्ब, ना० वा० सं० पुं० विशाल, बड़ा
प्रलाप, ना० वा० सं० पुं० अर्थरहित वचन
प्रसन्न, वि० कृ० सं० १ हर्षित २ निर्मल
प्रसव, ना० वा० सं० पुं० उत्पत्ति
प्रसाद, ना० वा० सं० पुं० १ प्रसन्नता, कृपा २ जूठन
प्रसीद, क्रि० वा० प्रसन्नहो
प्रसूती, ना० वा० सं० स्त्री० उत्पत्ति,
प्रसून, ना० वा० सं० पुं० फूल
प्रसंग, ना० वा० सं० पुं० संबन्ध, कथा की चर्चा
प्रसंसक, वि० पुं० भा० प्रशंसक, स्तुति करनेवाला
प्रसंसा, ना० वा० भा० स्त्री० प्रशंसा, स्तुति, सराहना
प्रस्थिति, ना० वा० सं० स्त्री० कीर्ति
प्रहार, ना० वा० सं० पुं० मार, मारना
प्राकृत, ना० वा० सं० पुं० १ अयोग्य २ मायाका विकार ३ साधारण मनुष्य
प्राकृतकवि, ना० वा० सं० पुं० सूरदास आदि
प्राची, ना० वा० सं० स्त्री० पूर्वदिशा, पूरब
प्रात, अव्यय सवेरा, तड़का
प्रातकृत, ना० वा० सं० पुं० स्नान संध्याआदि
प्रातक्रिया, ना० वा० सं० स्त्री० स्नान संध्याआदि

प्राणनाथ, ना० वा० सं० पुं० प्राण-
नाथ, पति
प्रावृट्, ना० वा० सं०स्त्री० वर्षाऋतु
प्रियतम, ना०वा०सं०पुं० अत्यंतप्रिय
प्रीता, वि० सं० पुं० मित्र
प्रेत, ना० वा० सं० पुं० शव, मुरदा
प्रेतनिवास, ना०वा० सं० पुं० मसान
प्रेरक, वि० सं० पुं० आज्ञाकरनेवाला,
प्रेरणाकरनेवाला
प्रेरित, क० वा० सं० पुं० आज्ञा
कियागया
प्रेरे, क्रि० पठाये, भेजा, प्रेरणा, भेजना
प्रोक्त, वि० सं० कृ० कहागया, कहा
प्रौढ़, गु०वा०सं०पुं० १ बड़ा २ मोटा
प्रौढ़ि, ना० वा० सं० स्त्री० अभि-
मान से कहना

फ

फटिक, ना०वा० भा० पुं० स्फटिक,
बिल्लौर
फनि, ना०वा० सं० पुं० फणी, सर्प,
सांप
फल, ना० वा० सं० पुं० १ अर्थ धर्म
काम मोक्ष २ मेवा
फलित, वि० कृ० पुं० फलसमेत
फहराई, क्रि० वा० कूदते हैं, फह-
राते हैं
फबी, वि० स्त्री० भा० १ मजबूत
२ फबी, फबना, सजना
फुर, ना० वा० भा० पुं० सत्य, सांच
फुलवाई, ना० वा० भा० स्त्री० फुल-
वारी, फूलकाबाग

ब

बक ना० वा० भा० पुं० बक, बगुला
बकता, वि० सं० पुं० वक्ता, कहनेवाला
बकुल, ना० वा० सं० पुं० मौलसिरी,
मुरसली
बक्र, गु० वा० सं० पुं० वक्र, टेढ़ा
बगमेल, क्रि० वि० बाग मिलाके
वा इक्का करके
बगरे, क्रि० वा० फैले, बगरना, फैलना
बच, ना० वा० सं० नपुं० वचन, बात
बचांसि, ना० वा० सं० नपुं० बातें,
वचन
बच्छ, ना० वा० भा० पुं० १ वत्स,
बछरू २ पुत्र
बच्छल, ना० वा० भा० पुं० वत्सल,
दयायुत
बज्र, ना० वा०सं० नपुं० इन्द्रकाशस्त्र
बट, ना० वा० सं० पुं० बटका पेड़
बटु, ना० वा० सं० पुं० ब्रह्मचारी
बटोही, ना० वा० भा० पुं० पथिक,
राही
बड़वानल, ना० वा०सं०पुं० समुद्रकी
आग
बत, ना० वा० भा० पुं० बात, वार्ता
बतकही, ना० वा० भा० पुं० बात
बताई, भा० वा० भा० स्त्री० बुताई,
बुझाई
बताना, क्रि० वा० बुताना, बुझाना
बतासा, ना० वा० पुं० भा० बतास,
हवा
बतिया, ना०वा० भा० पुं० छोटाफल
बद, वि० क्रि० कहो
बदति, क्रि० वा० सं० कहता है
बदन, ना० वा० सं० नपुं० मुख
बदर, ना० वा० सं० पुं० बेरकाफल
बदरी, ना० वा०सं०स्त्री० बेरकापेड़
बदि, ना० वा० भा० पुं० कहकरके,
बदना, कहना
बधिक, ना० वा० सं० पुं० व्याधा,
बहेलिया
बधिर, ना० वा० सं० पुं० बहिरा
बधू, ना० वा० सं० स्त्री० स्त्री, बहू
बधूटी, ना० वा० सं० स्त्री० स्त्री
बन, ना०वा० सं०नपुं० १ जंगल २
पानी
बनचर, ना०वा० सं० पुं० १ वानर
२ जंगली
बनज, ना० वा० सं० नपुं० कमल
बनमाला, ना० वा० सं० स्त्री० फूल
और पत्तेका माला
बनिक, ना० वा० भा० पुं० वणिक,
बनियां
बनी, ना० वा० भा०स्त्री० मजूरीका
धन
बपु, ना०वा०सं०नपुं० वपुष, शरीर,
देह
बपुष, ना०वा० सं० नपुं० शरीर, देह
बमत, क्रि०वा० छांटताहै, रद्दकरताहै
बमन, ना० वा० सं० पुं० छांड़ना,
छांटकरना, रद्द
बयस, ना० वा० सं०स्त्री० १ वयस,
अवस्था, उमिर २ वैश्य, बनियां
बयारी, ना०वा०भा०स्त्री० पवन, हवा
बर, ना०वा०सं० पुं० १ श्रेष्ठ २ पति ३
वरदान ४ बरना, जलना ५ जोर,
बल ६ वटवृक्ष
बरन, ना० वा० पुं० भा० १ वर्ण,
अक्षर २ जाति ३ वर्णन
बरनी, वि० स्त्री० भा० कही
बरबरनी, ना० वा० स्त्री० सं० श्रेष्ठ
रंगवाली, गोरी
बरबस, ना० वा० भा० स्त्री० जोरावरी
बरहि, ना०वा० भा० पुं० बर्हिन, मोर
बराई, ना०वा०भा०स्त्री० दूरहांकना
बराएं, क्रि० वि० बचाकरके
बराह, ना० वा०सं०पुं० वराह, शूअर
बरि, क्रि० वि० बटकरके, बरना
बटना, जहुरि
बरिआर, ना० वा० भा० पुं० बली,
जोरावर
बरिआं, ना० वा०भा० पुं० १ बेला
समय २ बाग
बरिवंड, वि० भा० पुं० बलवन्त,
तेजस्वी, बली
बरी, क्रि० भा० स्त्री० ब्याही, बरना,
ब्याहकरना
बरीसा, ना०वा०भा०पुं० वर्ष, बरिस
बरु, अव्यय बल्कु, बरुक, बरिक

बरुन, ना० वा० सं० पुं० वरुण
बरुथ, ना०वा०सं०पुं० समूह, झुंड
बरोरु, ना० वा० सं० स्त्री० स्त्री, सुन्दर जांघवाली
बरोनी, ना० वा० सं० पुं० बरौनी, परदेखौनी, दुलह दहराना
बर्ग, ना०वा० भा० पुं० वर्ग, जाति, समूह
बर्बर, ना० वा० सं० पुं० १ अधम, नीच २ बकवादी
बर्म, ना० वा० सं० नपुं० बखतर
बर्ष, ना० वा० सं० पुं० वर्ष, मेंह
बर्षाशन, ना० वा० सं० नपुं० वर्षाशन, वर्षदिनका भोजन
बल, ना० वा० सं० नपुं० जोर, सेना
बलकल, ना०वा०सं० नपुं० १ वल्कल, बोकला
बलकाना, ना० वा० भा० स्त्री० ऐंठ की बातें
बलाक, ना० वा० सं० पुं० बगुला
बलाहक, ना०वा०सं०पुं० बादल, मेघ
बलि, ना० वा० भा० स्त्री० १ बख-रा, हिस्सा २ पूजा ३ बलिदान ४ राजाबली ५ नेवछावर
बलित, वि० सं० कृ० वेष्टित, घेरागया
बलीमुख, ना० वा० सं० पुं० बानर
बल्ली, ना० वा० सं० स्त्री० बेंवर, लता
बखाना, ना०वा०भा०स्त्री० १ स्तुति २ कहा
बसत, क्रि० वा० वि० बसैं, रहैं
बसन, ना० वा० सं० नपुं० कपड़ा
बसवर्ती, ना० वा० वि० वशवर्ती, अधीन
बससि, अस्त वा० तू बसता है
बसह, ना० वा० पुं० भा० बैल
बसीठी, ना० वा० पुं० भा० दूत, हरकारा
बसुधा, ना० वा० सं० स्त्री० पृथ्वी
बस्य, ना०वा०सं०पुं० वश्य, अधीन
बह, क्रि० वा० चलना, बहना

बहराना, वि० भा० पुं० तहटिआना, सुनकरके अनसुनी किया
बहहिं, क्रि० वा० उठाते हैं
बहना, ना.वा.भा.पुं. उठाना, लेजाना
बहुकालीना, ना०वा०सं०स्त्री० बहु-कालीन, बहुतकालका
बहुधा, अव्यय, बहुत प्रकार से
बहुबाहु, ना० वा० सं० पुं० रावण
बहुरहिं, क्रि० वा० फिरैं
बहुरि, अव्यय, फिर
बहुरे, वि० पुं० वा० फिरे
बहुरना, ना०वा० भा० पुं० फिरना
बहू, ना० वा० भा० स्त्री० १ वधू, स्त्री २ बहुत, बहु
बहोरी, अव्यय १ बनाय २ फिर
बा, अव्यय, वा, अथवा, वा
बाउ, ना०वा०भा० स्त्री० वायु, पवन
बाग, ना०वा०सं० स्त्री० वाच, वाणी
बागीशा, ना० वा० सं० स्त्री० वागीशा, ब्रह्मवाणी
बागुर, ना०वा०भा०पुं० फंदा, जाल
बाचाल, ना० वा० पुं० भा० वाचाल १ पंडित २ बकवादी
बाजा, ना० वा० भा० पुं० लड़ा, बड़ाई, बाजना, लड़ना
बाजिमेध, ना० वा० सं० पुं० अ-श्वमेधयज्ञ
बाजि, ना०वा०सं०पुं० वाजी, घोड़ा
बाट, ना०वा.भा०पुं०पथ, राह, रस्ता
बाटपरै, क्रि० वा० रोजगार जाय
बाटिका, ना०वा०सं०स्त्री० वाटिका, फुलवारी, बाग
बात, ना० वा० सं० स्त्री० वात, पवन, हवा, बाई
बाति, ना०वा०सं०स्त्री० बत्ती, वर्तिका
बातुल, ना० वा० भा० पुं० बातुल, बौरहा, बाईचढ़ी
बादलै, ना०वा०भा०पुं०बादल, मेघ
बादि, ना० वा० भा० पुं० १ वृथा २ वास्ता, प्रयोजन

बादिनि, ना०वा० सं०स्त्री० वादिनी बोलनेवाली
बादी, ना० वा० सं० पुं० वादी, कहनेवाला
बाधक, ना० वा० सं० पुं० दुःखद, विघ्न, रोकनेवाला
बाधा, ना० वा० सं० पुं० विघ्न, रोक, दुःख
बान, ना० वा०भा०पुं० १ बाणासुर २ बाण, तीर ३ रंग ४ स्वभाव ५ आगा
बानैत, ना० वा० पुं० भा० तीरचलाना फेंकनेवाला, विरदैत
बापिका, ना० वा० स्त्री० सं० बावली
बापुरो, ना० वा० भा० पुं० १ दुखी रोगवाला २ तुच्छ, बपुरा
बाम, ना० वा० सं० पुं० १ वाम, स्त्री २ बायां
बाय, क्रि० वि० पसारकरके, बाना पसारना
बायन, ना०वा०भा०पुं० बैना, नेवता
बायस, ना०वा०सं०पुं० वायस, कौवा
बायें, वि० पुं० भा० वाम, बायां
बार, ना०वा० सं० पुं० १ बारंबार २ दिन ३ समूह ४ देर ५ केश ६ काल
बारन, ना०वा०सं०पुं० वारण, हाथी
बारय, वि० क्रि० दूरकरो, बारना, दूरकरना
बारहबाट, ना० वा० भा० पुं० तहस नहस, मोहादि बारह रस्ता
बारहि, भा०वा०भा०पुं० लड़कापन
बारि, भा०वा०सं० पुं० वारि, जल
बारिचरकेतु, ना०वा.सं०पुं० कामदेव
बारिज, ना०वा० सं०नपुं० वारिज, कमल
बारिद, ना० वा० सं० पुं० वारिद मेघ, बादल
बारिधर, ना०वा०सं०पुं० बादल, मेघ
बारिधि, ना० वा० सं० पुं० समुद्र
बारिश, ना०वा.भा.पुं. बारिश, समुद्र
बारिदनाद, ना०वा०सं०पुं० मेघनाद

बारी, ना०वा०भा०पुं० १जल, पानी २ फुलवारी ३ छोटी ४ निछावर, वारना

बारुनी, ना०वा० भा० स्त्री० वारुणी, मदिरा, शराब

बारे, ना०वा०पुं०भा० १ छोड़करके २ बालक

बाल, ना० वा० सं० पुं० १ बालक २ मूर्ख ३ केश

बाला, ना० वा० सं० स्त्री०बाला, स्त्री

बासन, ना० वा० पुं० भा० १बरतन २ सुगन्ध ३ निवास

बासर, ना० वा०सं०पुं० वासर, दिन

बासव, ना०वा०सं०पुं० वासव, इन्द्र

बाहन, ना० वा० भा० पुं० वाहन, असवारी

बाहिज, ना०वा० भा० पुं० बाह्य, बाहरी, बाहरसे

बाहिनी, ना०वा०भा०स्त्री० वाहिनी, सेना

बिकट, गु० वा० भा० पुं० १ विकट, भयंकर, टेढ़ा

बिकराल, गु०वा०भा०पुं०विकराल, भयंकर

बिकसे, वि०वा०भा०पुं०फूले, विकसना, फूलना

बिकार, ना०वा०सं० पुं० विकार १ अवगुण, ऐगुन २जन्मादि ३ काय, कारज

बिक्रम, गु०वा०भा०पुं०विक्रम, पराक्रम, जोर, बल

बिगत, वि०सं०कृ. विगत, रहित, हीन

बिगोये, वि०भा० पुं०व० नाशकिये, विगोना, नाशकरना

बिग्रह, ना०वा० भा० पुं० १ विग्रह, विरोध, झगड़ा २शरीर, देह ३ हठ

बिख्यात, वि० पुं० कृ० विख्यात, विदित, प्रसिद्ध

बिघटन, ना० वा०भा० पुं० विघटन, तोड़ना

बिचरहिं, क्रि०वा० फिरते हैं, विचरना, फिरना

बिचक्षण, ना०वा०भा०पुं०विचक्षण, चतुर

बिचित्र, गु० वा० भा० पुं० विचित्र, अनेक प्रकारका, आश्चर्यरूप

बिजयी, वि०भा०पुं०विजयी, विशेष जयवाला, विजय करनेवाला

बिज्ञान, गु० वा०भा० पुं० विज्ञान, अनुभव

बिज्ञानबिहीना, ना० वा० भा० पुं० विज्ञान विहीन, ज्ञानऊन भीर, ज्ञानकी हानि

बिटपना, वा. भा.पुं. विटप, वृक्ष, पेड़

बिडरो, क्रि०वि०वा०वा० १ विशेष भय, छितराकरके, विडरना, छितराना

बिडारी, वि०स्त्री. भगाई, विडारना, भगाना

बिडंब, ना० वा० भा० पुं० विडंब, वञ्चन, ठगी, छल

बिढ़इ, क्रि०वि. कमाकरके, बिढ़वना, कमाना

बित्त, ना० वा० भा० पुं० वित्त, धन, मकदूर

बितान, ना०वा०भा०पुं० १ वितान, विस्तार, फैलाव २चंदवा ३मंडप

बिथकहिं, क्रि० वा० चकित होते हैं, विथकना, चकितहोना

बिथकि, क्रि० वि० लीनवृत्ति

बिथुरे, वि० वा० भा० पुं० फैले, विथुरना, फैलना

बिद, ना० वा०सं० पुं० विद, ज्ञाता, जाननेवाला

बिंदक, वि० पुं० सं० विंदक, नाम युत, पानेवाला

बिदरेउ, वि० भा० पुं० विदीर्ण, फटगया, विदरना, फटना

बिदारे, वि० वा० भा० पुं० विदीर्ण, फाड़े, विदारना, फाड़ना

बिदारहिं, क्रि० वा० फाड़ते हैं, विदारना, फाड़ना

बिदित, वि० सं० कृ० विदित, प्रसिद्ध, जतायागया

बिदिसि, ना० वा० भा०पुं० विदिश, विदिशा, दिशाका कोना

बिदुषन्ह, ना० वा० भा० पुं० पंडितलोग, विदुषशब्द का बहुवचन

बिदूषक, वि० सं० पुं० १ विदूषक, भांड़ २ निन्दक

बिदूषहिं, क्रि० वा० निंदाकरते हैं, विदूषना, निंदाकरना

बिदेह, ना० वा० सं० पुं० १ विदेह, राजाजनक २ देह बिना

बिद्यमान, ना० वा० सं० पुं० विद्यमान, वर्तमान, है, होता

बिद्या, ना०वा० सं०पुं० शिक्षा, इल्म

बिद्रुम, ना०वा०सं०पुं० विद्रुम, मूंगा

बिधवा, ना०वा० सं० स्त्री० विधवा, रंडा, जिस स्त्रीका पति मरगया

बिधाता, ना० वा० सं० पुं० विधाता, ब्रह्मा

बिधात्री, ना०वा०सं०स्त्री० विधात्री, ब्रह्माणी

बिधि, ना० वा० सं० पुं० १ विधि ब्रह्मा २कर्म, भाग्य ३ विधान, रीति

बिधिअंड, ना०वा०भा०पुं० ब्रह्माण्ड

बिधिवत, क्रि० वि० विधिवत, यथायोग्य, विहित

बिधु, ना० वा० सं० पुं० विधु, चन्द्रमा

बिधुन्तुद, ना० वा० सं० पुं० राहु

बिनता, ना० वा० सं० स्त्री० विनीता, गरुड़जीकी माताका नाम है.

बिनय, गु० वा०सं० पुं० विनय १ विनती २ विशेषनीति

बिनयी, ना० वा० सं० पुं० १ विनयी, अतिनीतिवाला २ विनय करनेवाला

बिनवा, ना० वा० भा० पुं० विनय किया, बिनवना, विनयकरना
बिनीत, वि०वा०सं०कृ० विनीत १ विशेषनीति २ नम्र, सुअदब
बिनोद, ना० वा० सं० पुं० विनोद, क्रीड़ा, खेल
बिपरीति,ना० वा० सं० पुं० विपरीत उलटा, प्रतिकूल
बिपिन, ना० वा० सं० नपुं० विपिन वन, जंगल
बिपुल, ना० वा० सं० पुं० विपुल, बहुत विस्तार
बिप्रचरन, ना०वा०भा०पुं० भृगुलता भृगुजीने जो भगवान्‌की,छातीमें लात मारीथी उसकाचिह्न
बिवर,ना.वा.नपुं. विवर, बिल, छेद
बिवरन, ना० वा०भा०पुं० १विवर्ण, बेरंग, बुरारंग २ जुदा, अलग
बिवर्द्ध,ना०वा०भा०पुं० बहुतबढ़ता
बिबस,ना०वा०सं०पुं० १ विवश,विकल, व्याकुल २ विशेष वश
बिवाकी, ना० वा० भा० पुं० नाश
बिबक्ति, वि० सं० पुं० विवक्ति १ एकांत २ त्याग
बिबुध,ना०वा० सं०पुं० १ विबुध, देवता २ पण्डित
बिबुधबन,ना०वा० सं० नपुं०विबुध वन, नन्दनवाटिका,स्वर्गकाबगीचा
बिबुधबैद, ना० वा० भा० पुं० विबुधवैद्य, अश्विनीकुमार देवतोंके वैद्य
बिबेक, ना० वा० सं० पुं० १ विवेक,ज्ञान२सत्यअसत्यकाविचार
बिभव,ना० वा० सं० पुं० १ विभव, ऐश्वर्य, २ पालन
बिभाग, ना० वा० सं० पुं० १ विभाग जुदाई २ बांट, बखरा ३ भाग्यहीन ४ खंड, टुकड़ा
बिभाती, क्रि, वा० विभाति, प्रकाशित होता है, सोहताहै
बिभिचारी,ना. वा०भा०व्यभिचारी, परतियगामी, पराई स्त्रीके पास जानेवाला
बिभु, ना० वा० सं० पुं० १ विभु-व्यापक २ समर्थ
बिभुन्ह, ना० वा० भा० पुं० विभुश ब्दका बहुवचन, विश्व तैजस प्राज्ञ ब्रह्म
बिभूती, ना० वा० भा० स्त्री०१ विभूति, राख २ संपदा ३ भक्ति
बिभेद, ना० वा० सं० पुं० विभेद, फूट, शत्रु मित्रभाव
बिभंजन,ना० वा०सं०पुं०नाशकरने वाला
बिभंजनि, ना० वा० सं० स्त्री० विभंजनि, तोड़नेवाली
बिमल, ना० वा० सं० पुं० विमल निरमल, करचा
बिमात्र, ना० वा० सं० पुं० विमात्र में भा महतारी से जो बेटा
बिमुख, ना० वा० सं० पुं० विमुख, विरोधी
बियोगी, ना० वा० सं० पुं० वियोगी, अलग, जुदा
बिरक्त, ना० वा० सं० पुं० विरक्त, वैराग्यवान्, त्यागी, विरागी
बिरचि, क्रि० वि० रचकरके, बना करके, विरचना, बनाना
बिरज, ना० वा० सं० पुं० विरज, निर्मल, करचा, जो रजवीर्य से उत्पन्न नहीं है
बिरत, ना० वा० सं० पुं० विरत, वैराग्यवान्, मुमुक्षु
बिरति, ना० वा० सं० पुं० १ विरत, वैराग्य, त्याग २ अतिप्रीति
बिरथ, वि० सं० पुं० विरथ, रथ के विना
बिरद, ना० वा०सं० पुं० १ विरद, जस २ वीरों का बाना
बिरध, ना० वा० पुं० सं० वीरे, छोटापेड़, पौधा
बिरहित,वि०सं० पुं० कृ० विरहित, रहित, छूटा, त्यक्त
बिराग, ना० वा० सं० पुं० १विराग वैराग्य, त्याग
बिराजति, क्रि० वा० विराजती है, सोहती है
बिराट, ना० वा० सं० पुं० विराट विश्वरूप
बिरुज, ना० वा० सं० पुं० विरुज, निरोगी, रोगहीन
बिरुदैत्य, ना० वा० सं० पुं० बाना वाले वीर
बिरुद्ध, ना० वा० सं० पुं० विरुद्ध, विरोधयुत, वैरयुत
बिरंचि,ना०वा० सं०पुं. विरंचि,ब्रह्मा
बिलग, ना० वा० सं० पुं० १ न्यारा, अलग, २ बुरा
बिलपाती, ना० वा० भा० स्त्री० विलाप करती
बिलप, ना० वा० भा० पुं० उदास
बिलषाइ, क्रि० वि० विषाद करके विलखावा, विषादकरना
बिलास,ना०वा०सं०पुं०१ विलास क्रीड़ा, खेल २ चमत्कार ३ सुख ४ कार्य,काम५ ऊंचे नीचेकरना
बिलासिनी, ना० वा० सं० स्त्री० विलासिनी, स्त्री,विलासकरनेवाली
बिलाहीं,क्रि.ना.बिलाते हैं, नष्टहोतेहैं
बिलोकि, क्रि० वि० विलोक्य, देख करके, विलोकना, देखना
बिलोचन,ना० वा० सं० पुं० विलोचन, आँख
बिषम, ना० वा० सं० पुं० १ विषम शत्रुमित्रभावयुत २ भयंकर ३ पांच
बिषमता,भा० वा० स्त्री० सं० विषमता, रागद्वेष
बिषय, ना० वा० सं० पुं० विषय, शब्द रूप रस गंध स्पर्श

विषयक, अ० वा० ना० सं० पुं० विषयक विषे, विषयमें, बाबत
बिष.., ना० वा० सं० पुं० विषई विषय करनेवाला संसारी
बिषाद, ना० वा० सं० पुं० विषाद. शोक, दुःख
बिषान, ना.वा.भा.पुं० विषाण सींग
बिष्टा, ना० वा० सं० स्त्री० विष्ठा, मल, गुह, गलीज़
बिसद, ना० वा० भा० पुं० १विशद, सफ़ेद २ स्पष्ट, साफ़
बिसमय, ना० वा० भा० पुं० विस्मय, अचरज
बिसमित, वि० सं० कृ० विस्मित, अचरजयुत
बिसारद, ना० वा० भा० पुं० विशारद, चतुर, प्रवीण, निपुण
बिसाल, ना० वा० भा० पुं० १ विशाल, बड़ा २ पीड़ा बिना
बिसिख, ना० वा० भा० पुं० विशिख, तीर, बाण
बिसूरति, क्रि० वा० चिन्ताकरतीहै बिसूरना, चिन्ताकरना
बिसेष, गु० वा० भा० पुं० १ विशेष कोई २ अधिक ३ भेद
बिसोक, वि० भा० पुं० विशोक, शोकरहित
बिस्तक, गु० वा० सं० पुं० विस्तर, विस्तार
बिस्व, ना० वा० भा० पुं० १ विश्व, संसार २ सर्व, सब
बिस्वरूप, ना० वा० पुं० भा० विश्वरूप, संसाररूप, सर्वरूप
बिहग, ना० वा० पुं० भा० विहग, पक्षी, पखेरू
बिहरति, क्रि० वा० फटतीहै, बिहरना, फटना
बिहरन, ना० वा० भा० पुं० विहरण, क्रीड़ा, खेल
बिहरु, ना० वा० भा० पुं० फटना
बिहाइ, क्रि० वि० विहाइ, छोड़करके
बिहान, ना० वा० भा० पुं० १विहान, भोर, प्रात २ बीतजाना
बिहार, ना० वा० सं० पुं० विहार, क्रीड़ा, खेल
बिहीना, गु० वा० भा० पुं० विहीन, बिना, रहित, अतिनीच
बीथी, ना० वा० सं० स्त्री० गली
बीर, ना० वा० सं० पुं० वीर १ भाई २ वीरतायुत
बीरभद्र, ना० वा० सं० पुं० शिवकेगण
बुझाई, क्रि० वि० समझाकरके, बुझाना, समझाना
बुध, ना० वा० सं० पुं० १ पण्डित २ चन्द्रपुत्र
बूता, ना० वा० भा० पुं० बल, जोर
बूक, ना० वा० भा० पुं० हुंडार
बृषकेतु, ना० वा० भा० पुं० महादेव का नाम
बृष्टि, ना० वा० सं० स्त्री० वर्षा, बूंद समूह
बृष, ना० वा० सं० पुं० बैल
बृषभ, ना० वा० सं० पुं० बैल
बृषली, ना० वा० सं० स्त्री० शूद्री
बृंदारका, ना० वा० सं० पुं० देवता
बेत, ना० वा० पुं० भा० १ वियत, आकाश २ छड़ी
बेद, ना० वा० सं० पुं० वेद, चारों वेद ऋक् यजु आदि
बेदिका, ना० वा० सं० स्त्री० वेदी पद को देखो
बेदी, ना० वा० सं० स्त्री० वेदी कर्मकांडकरने के लिये छोटाचबूतरा
बेध, ना० वा० सं० पुं० वेध, छेद
बेनी, ना० वा० सं० स्त्री० वेणी, १ त्रिवेणी २ चोटी
बेनु, ना० वा० सं० पुं० १ वेणु, बांस २ मुरली ३ एक राजाका नाम
बेरे, ना० वा० भा० पुं० बेड़ा, जहाज
बेसर, ना० वा० भा० पुं० नथबड़
बेहड़, ना० वा० भा० पुं० विकट स्थान, बीहड़
बेह, ना० वा० भा० पुं० छेद
बैतरनी, ना० वा० सं० स्त्री० यमपुरकी नदी
बैदिक, ना० वा० सं० पुं० वैदिक १ वेदकी रीति से २ वेदपाठी
बैदेही, ना० वा० सं० स्त्री० वैदेही सीताजी का नाम
बैनतेय, ना० वा० सं० पुं० वैनतेय, गरुड़
बैना, ना० वा० भा० पुं० वचन
बैभव, ना० वा० पुं० सं० १ वैभव ऐश्वर्य, २ पालन
बैषानस, ना० वा० सं० पुं० वानप्रस्थ
बैस, ना० वा० भा० पुं० वयस, अवस्था
बैसा, ना० वा० भा० पुं० बैठा, बैसना, बैठना
बोहित, ना० वा० भा० पुं० जहाज
बौड़, ना० वा० पुं० भा० लवँर लता
ब्योम, ना० वा० सं० पुं० व्योम, आकाश
बंगा, वि० भा० पुं० लुचा
बंचक, ना० वा० सं० पुं० वंचक, ठग
बंचन, ना० वा० सं० पुं० वंचन, ठगना
बन्दन, ना० वा० सं० पुं० वंदन, प्रणाम
बन्दनीय, वि० सं० पुं० वन्दनीय, नमस्कार के योग्य
बंद्य, वि० सं० पुं० वंद्य, नमस्कार के योग्य
बंधु, ना० वा० सं० पुं० १ भाई २ बांधना ३ सम्बन्धी
बंस, ना० वा० भा० पुं० १ वंश-बांस २ कुल
ब्रजन्ति, क्रि० वा० जाते हैं, प्राप्त होते हैं
ब्रन, ना० वा० भा० पुं० व्रण, घाव, फोड़ा
ब्रह्मगिरा, ना० वा० सं० स्त्री० ब्रह्माकी बानी
ब्रह्मधाम, ना० वा० सं० नपुं० ब्रह्मलोक

ब्रह्मभवन,ना०वा०सं०नपुं०ब्रह्मलोक

ब्रह्मानन्द, ना० वा० सं० पुं० स्वरूपानन्द, भगवान्का सुख

व्रात, ना०वा०सं० पुं० समूह, झुण्ड

व्रीड़ा,ना०वा०सं०स्त्री०लज्जा, शर्म

व्यग्र,ना०वा० सं० पुं०व्यग्र, विकल

व्यजन,ना० वा० सं० नपुं० व्यजन, पंखा

व्यथा,ना०वा०सं०स्त्री० व्यथा,दुःख

व्यलीक, ना० वा० सं० पुं० व्यलीक, कपट

व्यसनी, ना० वा० सं० पुं० बानि, शौक, व्यसनी

व्याज, ना० वा० सं० पुं० १ बहाना, छल, २ सूद

व्याप्य, क्रि० वि० जगत्

व्याधि, ना० वा० सं० पुं० रोग

व्याधू,ना०वा० भा० पुं०बहेलिया, चिड़ीमार

व्याल,ना०वा.सं०पुं०१सांप,२हाथी

व्याली, ना०वा०सं० पुं० सर्पधारी, मन्तरधारी

व्यास, ना० वा०सं०पुं० १ विस्तार २ एकमुनिकानाम जिन्होंने वेदान्तसूत्र और पुराणआदि बनाया

भ

भगवान्, ना० वा० सं० पुं० ईश्वर

भगिनी, ना० वा० सं० स्त्री० बहिन

भजई, क्रि० वा० सेवै वा सुमिरै

भजन, ना० वा० सं० नपुं० भक्ति

भजामि, क्रि० वा० सं० मैं भजताहूं

भजामहे,क्रि० वा० सं० हम भजते हैं

भजी,ना०वा० भा०स्त्री० अंगीकार किया, भजना

भजे, क्रि० वा० मैं भजता हौं

भट,ना०वा०सं०पुं०योद्धा, सिपाही

भटभेरे,क्रि०वा०धक्काखाते फिरते हैं

भड़िहाई,ना० वा० सं० स्त्री० चोरी, भांड़ा चाटके

भदेस, ना०वा०भा० पुं० १ गँवारी, गँवरऊ, २ निन्दा योग्य

भद्र, ना० वा० सं० नपुं० कल्याण, भला

भनई, क्रि० वा० कहते हैं

भनित, ना०वा० भा० पुं० भाषित, कविता

भनी, क्रि० वि० कह करके

भनु, वि० क्रि०वा० कहो, कहते हो

भने, वि० क्रि० वा० कहे

भनंता, क्रि० वा० कहते हैं

भभरि, क्रि० वि० घबरा करके

भभरा, वि० भा० पुं० घबराया

भयानक, ना० वा० सं० नपुं० १ भयंकर २ रसविशेष

भयावह, वि० भा० पुं० डरानेवाला

भरा,वि०भा०पुं०१बोझा२पोषणा, पोसना ३ धारण

भरन, ना० वा० भा० पुं०१धारण २ पोषण

भरनी, ना० वा० भा० स्त्री० १ एक नक्षत्रकानाम, २ सर्पकुलवर्णन, गीत ३ मूसजोब्रजदेशमेंप्रसिद्ध हैं

भरि, ना० वा० भा० पुं० पूरन

भरिता, ना० वा० भा० पुं० पूरन

भव, भा० वा० सं० पुं० १ संसार २ शिव ३ जन्म ४ भया, हुआ

भवदंघ्रि,वि०सं० पुं० आपकाचरण

भवन, ना० वा० सं० नपुं० घर

भवन्त, वि० भा० पुं० आपकी

भवांबुनाथ, ना०वा०सं०पुं०संसारसमुद्र

भँवर,ना०वा० भा० पुं० १ नदीका चकोहा २ भौंरा, भ्रमर

भा,ना० वा० सं०स्त्री०प्रकाश, चमक

भाउ, ना० वा० भा० पुं० १ प्रेम २ भावना ३ सत्ता ४ जन्म

भाग, ना० वा० पुं० भा० १ बखरा, हिस्सा २ भाग्य, नसीब

भाजन, ना० वा० सं० नपुं० पात्र, बरतन

भाथा,ना० वा० भा० पुं० तरकश

भानु, ना० वा० सं० पुं० सूर्य

भांड़े, ना० वा० ब०व०पुं०भा०बरतन, भांड़

भामा० ना० वा० सं० स्त्री० स्त्री

भामिनि, ना० वा० सं० स्त्री० १स्त्री, क्रोधयुक्ता

भायप, भा०वा० पुं० भा० भाईपना

भाये, वि०ब०व०पुं०१भात २सुन्दर

भारती, ना०वा०सं०स्त्री० सरस्वती

भाल, ना० वा० सं० पुं० माथा

भाव,भा०वा०सं०पुं.१प्रेम२ भावना ३ सत्ता ४ जन्म

भावन, ना० वा० सं० पुं० सोहात, अच्छालगता

भावी, वि० सं० पुं० होनहार

भाषा,वि.भा.पुं.कहा.भाषना,कहना

भाषे, क्रि०वा०ब०व० कहे,भाषना, कहना

भिन्न,वि०सं०क्रु०अलग, जुदा, फूट गया

भिंदिपाल,ना०वा०सं० पुं० ढेलवांस

भीती, ना० वा० भा० स्त्री० १ भय २ भीति, दीवार

भीम, ना० वा० सं० नपुं० भयंकर

भीरा, ना० वा० भा० पुं० १ दोक्षा २ भीड़ ३ डर

भीरु, ना० वा० सं० पुं० डरपोकना

भुजंग, ना० वा० सं० पुं० साप

भुवन, ना० वा० सं० नपुं० ब्रह्मांड

भुवाल,ना.वा.भा.पुं.भूपाल.राजा

भुवि,ना० वा० अ०सं०स्त्री० पृथ्वी, पृथ्वी में

भुवंग, ना०वा०भा०पुं० भुजंग,सांप

भुवंगिनि, ना०वा०भा० स्त्री० भुजंगिनी, सांपिन

भुंजब, भविष्यत् क्रिया भोगकरेगा

भूत, ना० वा० सं० पुं० १जीव२प्रेत ३ भयाहुआ

भूतल,ना०वा०अ० पृथ्वीमें,भूमिपर

भूति,ना०वा०सं० स्त्री० १ सम्पदा, ऐश्वर्य २मोक्ष,मुक्ति ३राख,विभूति

भूधर, ना० वा०सं० पुं० १ पहाड़ २ शेषनाग

भूप, ना० वा० सं० पुं० राजा

भूमिनाग,ना०वा० सं०पुं०पृथ्वीपर के सांप

भूरि, अव्य० गु० वा० बहुत

भूर्जतरु,ना० वा० सं० पुं० भोज-पत्र वृक्ष

भूषित, वि० सं० कृ० भूषणयुक्त, शोभित

भूसुर, ना० वा० सं० पुं० ब्राह्मण

भृकुटि, ना०वा० सं० पुं० भौंह

भृगुनाथ,ना०वा०सं०पुं० परशुराम

भे, त्रि० अ०व० पुं० भा० भये, हुये

भेई, ना० वा० भा० स्त्री० गीली, भिगोया, भेवला, भिगोना

भेऊ, वि० क्रि०वा० भेंदपदको देखो

भेक,ना०वा० सं०पुं० मेंडक,मेंकुका

भेंट, ना० वा० भा० पुं० १ मिलना मुलाक़ात २ नज़र, भेंट, पूजा

भेद, ना० वा० सं० पुं० १ जुदाई २ फूटकरना, तोड़ना ३ मर्म

भेरी,ना०वा०सं०स्त्री०१बड़ानगारा २ बड़ामुँहवाला पीतरकाबाजा

भेव, ना० वा०भा०पुं० १ जुदाई २ भेद,मर्म, ३ फूटकरना, तोड़ना

भेष, ना० वा भा० पुं० वेष

भेषज,ना०वा०सं०नपुं०औषध,दवाई

भोग,ना०वा०सं०पुं० सुगन्धादिक, भोग, विलास, सुख उठाना

भोगवति,ना० वा० सं० स्त्री० भो-गवती, सर्पनगरी

भोजनखानी,ना०वा०भा०पुं०रसोई का घर

भोरा, ना०वा०भा०पुं० दोप,भोला, सूधा

भोरी,ना०वा०त्रि०भा०स्त्री०भोली, सीधी

भोरे,निश्चयात्मकवाक्य,भूलकोभी

भौम, ना० वा० सं० पुं० मंगलग्रह

भंग,ना०वा०सं०पुं०१नाश २टेढ़ाई

भंजन,त्रि० ना० वा० सं० नपुं० १ नाश २ नाशकरनेवाला

भृंग, ना० वा० सं० पुं०भ्रमर,भौंरा

भृंगी,ना०वा०सं०पुं०महादेवकागण

भ्रम, ना०वा०सं०पुं०भूलना, धोखा

भ्राजा, ना० वा० वि०सं० शोभित, भ्राजना, शोभना

भ्रू, ना० वा० सं० स्त्री० भौंह

म

मइके, ना० वा० भा० पुं० नैहर, माता का घर

मक, अव्य० बरुक, बल्कि

मकर,ना०वा०सं०पुं० १ दसईराशि २ मच्छ ३ मगर

मकरी, ना० वा० सं० स्त्री० मकुरी

मकरंद,ना० वा०सं०पुं०फूलका रस

मख, ना० वा० सं० पुं० यज्ञ

मग, ना० वा० भा० पुं० १ मार्ग, रास्ता २ मगध, मगह

मगन, ना० वा० भा० पुं० मग्न, डूबा, लवलीन, प्रसन्न, खुश

मघवा, ना० वा० सं० पुं० इन्द्र

मघवान, ना० वा० सं० पुं० इन्द्र

मज्जहिं, क्रि० वा० नहाते हैं

मज्जा, ना० वा० सं० स्त्री० चर्बी

मझारी,अ०वा०मध्य,भीतर,मांझ

मत, ना० वा० सं० पुं० सलाह

मति, ना० वा० सं० स्त्री० बुद्धि

मत्सर, ना०वा० सं० पुं० ईर्षा, डाह

मद, ना० वा० सं० पुं० १ अभि-मान २ मदिरा, शराब

मदन, ना० वा० सं० पुं० कामदेव

मधु, ना० वा० सं० पुं० १ चैत महीना २ मकरंद, फूलका रस ३ शहद ४ जल ५ वसन्त ६ एक दैत्य का नाम

मधुकर,ना०वा०सं०पुं०भौंरा,भ्रमर

मधुप, ना०वा० सं०पुं०भ्रमर,भौंरा

मधुपर्क, ना० वा० सं० नपुं० दही शहदघीमिलाहुआ कांसेकेपात्रमें

मधुर,गु०वा०सं०पुं० मीठा, सुन्दर

मध्यगति,ना०वा०सं० पुं०उदासीन

मध्यदिवस, ना०वा०सं०पुं०दोपहर

मध्यम, ना० वा० सं० नपुं० उदा-सीन, बिचवैत

मनजात, ना०वा०सं०पुं० मनोजात, कामदेव

मनमथ, ना० वा० भा० पुं० म-न्मथ, कामदेव

मनमारे, ना० वा० भा० पुं० क्रि० वि० उदास

मनसहिं, ना० वा० अधि० भा० नपुं० मनमें

मनसा,ना०वा०भा०स्त्री०इच्छा,मन

मनसिज,ना०वा०सं०नपुं०कामदेव

मनाक,अव्य० मनाक्, थोड़ासा

मनि, ना० वा० भा० पुं०मणि, सर्प के शिरमें की मणि, शिरोमणि

मनियारा, ना० वा० वि० भा० पुं० मणियुत

मनुज, ना० वा० सं० पुं० मनुष्य, आदमी

मनुजाद, ना० वा० सं० पुं० राक्षस

मनुसाई,भा०वा०पुं०भा० पुरुषारथ

मनोज, ना० वा० सं० पुं० कामदेव

मनोभव, ना० वा० सं० पुं० कामदेव

मनोभूत, ना०वा०सं० पुं० कामदेव

मनोरथ, ना० वा० सं० पुं० अभि-लाष, इच्छा

मनोरम,ना० वा० सं० पुं० सुन्दर

मम, सम्बन्धवा० सं० मेरा, ममता

मय,ना०वा०सं०पुं०१कारज२बहुत प्राचुर्य३प्रधान४रूप५असुरविशेष

मयत्री, ना० वा० भा० स्त्री० मैत्री, मित्रता

मयन, ना० वा० भा० पुं० कामदेव

मयूख, ना० वा० सं० पुं० किरण

मयंक, ना० वा० सं० पुं० चन्द्रमा
मरकत, ना०वा०सं० पुं० नीलमणि
मरकट, ना०वा० भा० पुं० मर्कट, वानर
मरजाद, ना० वा० भा० स्त्री० १ मर्यादा, हद २ रीति
मरम, ना०वा०भा०पुं० १भेद२हृदय आदि अङ्ग
मराल, ना० वा० सं० पुं० हंस
मरु, ना० वा० सं० पुं० निर्जलदेश
मर्दन, ना० वा० वि० सं० भा० पुं० नाश करनेवाला
मर्दि, क्रि० वि० मर्दन करके
मर्मी, ना० वा० वि० पुं० भेदी
मल, ना०वा०सं० नपुं० १ पाप २ मैल
मलय, ना० वा० सं० पुं० चन्दन
मलान, ना० वा० भा० पुं० म्लान, मैला, उदास
मलिन, ना०वा०सं०पुं० मैला, उदास
मष्ट, ना० वा० सं० पुं० चुप
मसक, ना० वा० भा० पुं० १ मच्छर २ बिलार
मसि, ना० वा० सं० स्त्री० स्याही, रोशनाई
महति, ना० वा० भा० स्त्री० महती, बड़ी
महा, गु० वा० सं० पुं० बड़ा
महागद, ना० वा० सं० पुं० बड़ारोग
महान, ना० वा० सं० पुं० बड़ा, महत्तत्त्व
महामनि, ना० वा० भा० पुं० जहरमोहरा आदि
महामोह, ना० वा० सं० पुं० अज्ञान
महिदेव, ना० वा० सं० पुं० महीदेव, ब्राह्मण
महिपाल, ना० वा० सं० पुं० महीपाल, राजा
महिषी, ना० वा० सं० स्त्री० १ भैंस २ पटरानी
महिषेस, ना० वा० पुं० भा० महिषेश १ महिषासुर २ यमराज
महीधर, ना० वा० सं० पुं० पहाड़
महीसुर, ना० वा० सं० पुं० ब्राह्मण
महेस, ना० वा० भा० पुं० महेश, महादेव
महोत्सव, ना० वा० सं० नपुं० बड़ा उत्सव, महोच्छो
महोष, ना० वा० सं० पुं० एकप्रकार का पक्षी
माजा, ना० वा० सं० पुं० नयेवर्षा के जल का फेन
माझ, भा० पुं० मध्य, बीच
मातलि, ना० वा० सं० पुं० इन्द्रका सारथी
मातहि, वि० मतवारा
मात्र, अव्य० वहीभर, इतनाही, परिमाण
माधुरी, भा० वा० सं० स्त्री० मिठाई, माधुर्य्य
मान, ना० वा० सं० पुं० अहङ्कार, अभिमान
मानस, ना०वा०सं०पुं० १ तालाब, सरोवर २ मन
मानसिक, वि० पुं० सं० मनद्वारा, मनसम्बन्धी
मानिक, ना० वा० भा० पुं० जवाहिर, लाल
मान्यता, भा०वा०सं० स्त्री० पूज्यता, मान
मापा, वि० पुं० भा० व्यापा, मापना, व्यापना
मापी, वि० स्त्री० भा० मतवारी
माया, ना० वा० सं० स्त्री० १ दया २ त्रिगुणा शक्ति ३ कपट
मायापति, ना०वा०सं०पुं० रामचन्द्र
मायिक, ना० वा० सं० पुं० मिथ्या, मायासम्बन्धी
मार, ना० वा० सं० पुं० १ कामदेव २ मारना
मारगन, ना० वा० भा० पुं० १ मार्गण, बाण, तीर २ खोजना
मारीच, ना० वा० सं० पुं० एक राक्षस का नाम
मारुत, ना० वा० सं० पुं० पवन, वायु
मारुति, ना० वा० सं० पुं० हनुमान्
माल, ना० वा० सं० पुं० १ समूह २ कुश्तीबाज ३ माला, हार
मालव, ना० वा० सं० पुं० सजल, मालवादेश
माला, ना०वा०सं० स्त्री० १ पंगति, पंक्ति २ हार, माला
माष, ना० वा० सं० पुं० क्रोध
माखी, ना० वा० भा० स्त्री० १ मक्खी २ शहद
मासा, ना०वा०भा०पुं० मास, महीना
माहुर, ना०वा० भा० पुं० जहर, विष
मां, क० वा० पुं० मुझको
मिति, ना० वा० सं० पुं० १ अन्त २ मर्याद ३ थोड़ासा ४ नाप
मिथिला, ना० वा० सं० स्त्री० एक नगरी का नाम
मिथिलेसि, ना० वा० स्त्री० भा० जनकजीकी रानीका नाम
मिलित, वि. सं. कृ. पुं. युक्त, मिलाहुआ
मिसु, ना० वा० पुं० भा० बहाना, मिष
मीच, ना० वा० भा० पुं० मृत्यु, मौत
मीन, ना० वा० पुं० वा स्त्री० सं० मछरी
मीला, क्रि० वि० मिल करके
मुकुता, ना०वा०भा०पुं० मुक्ता, मोती
मुकताहल, ना० वा० भा० पुं० मुक्ताहल, मोती
मुकुर, ना० वा० सं० पुं० दर्पण
मुकुन्द, ना०वा० सं० पुं० मुक्तिदाता
मुखर, ना० वा० सं० नपुं० १ शब्द २ बकवादी
मुखागर, ना०वा० पुं० भा० जुबानी
मुठभेरी, अपादानकारक० निकट से नगीच से
मुदित, वि० सं० कृ० पुं० हर्षित, खुश

मुद्रिका, ना० वा० सं० स्त्री० मुँदरी, अंगूठी

मुधा, अव्य० झूठ

मुनिपट, ना० वा० सं० पुं० बोकले का कपड़ा

मुनिराजू, ना० वा० भा० पुं० मुनिराज वशिष्ठ जी

मुनिवर, ना० वा० सं० पुं० मुनिश्रेष्ठ शुक्राचार्य

मुनिन्दा, ना० वा० भा० पुं० मुनीन्द्र, मुनियों में प्रधान

मूक, ना० वा० सं० पुं० गूंगा

मूरि, ना० वा० स्त्री० भा० मूल, जड़ी का जमा

मूल, ना० वा० सं० नपुं० १ जड़ २ कारन ३ पूंजी

मूलक, ना० वा० सं० नपुं० मूली

मूषक, ना० वा० सं० पुं० चूहा, मूसा

मृगपति, ना० वा० सं० पुं० सिंह

मृगजल, ना० वा० सं० नपुं० मृगतृष्णा

मृगमद, ना० वा० सं० नपुं० कस्तूरी

मृगया, ना० वा० सं० स्त्री० शिकार

मृगराज, ना० वा० सं० पुं० सिंह

मृगाधीस, ना० वा० भा० पुं० सिंह

मृदु, ना० वा० सं० नपुं० कोमल

मृदुल, ना० वा० सं० नपुं० कोमल

मृनाल, ना० वा० भा० नपुं० कमल की जड़

मृषा, अव्य० झूठ

मेकलसुता, ना० वा० सं० स्त्री० नर्मदा नदी

मेघडंबर, ना० वा० भा० पुं० छत्रविशेष

मेचक, ना० वा० सं० पुं० श्याम

मेदुकनि, ना० वा० भा० स्त्री० मेकुकी

मेदिनी, ना० वा० सं० स्त्री० पृथ्वी

मेधा, ना० वा० सं० स्त्री० बुद्धि

मेरु, ना० वा० सं० पुं० सुमेरुपर्वत

मेलो, ना० वा० भा० स्त्री० डालो, मेलना, डालना

मेष, ना० वा० सं० पुं० भेड़ा

मेखला, ना० वा० सं० स्त्री० करधनी

मैना, ना० वा० सं० स्त्री० पार्वती की माताका नाम

मैनाक, ना० वा० सं० पुं० एक पर्वत का नाम

मोई, क्रि० वा० मोही, मोना, मोहना

मोचन, ना० वा० सं० पुं० छोरना

मोद, ना० वा० सं० पुं० हर्ष, खुशी

मोदक, ना० वा० सं० पुं० लड्डू

मोरपच्छ, ना० वा० भा० पुं० मोरकी पांख

मोरहुति, सं० वा० मेरी ओर से

मोह, ना० वा० सं० पुं० अज्ञान

मोहमय, ना० वा० सं० पुं० झूठा

मौलि, ना० वा० सं० पुं० माथा

मंगलद्रव्य, ना० वा० सं० पुं० पुष्पादि

मंच, ना० वा० सं० पुं० मचान, तख्तपोश

मंजिर, ना० वा० सं० पुं० पांवका भूषण, पांयजेब आदि

मंजुल, ना० वा० सं० नपुं० सुन्दर

मंडन, ना० वा० सं० नपुं० भूषण, गहना

मंडल, ना० वा० सं० पुं० १ चौरस २ तेज

मंडली, ना० वा० सं० स्त्री० समूह

मंडलिक, ना० वा० सं० पुं० मण्डलेश्वर, राजा

मंडित, वि० सं० कृ० पुं० भूषित, शोभित

मंत्र, ना० वा० सं० पुं० १ रामतारक आदि मन्त्र २ सलाह, उपदेश

मंत्रराज, ना० वा० सं० पुं० रामतारकमन्त्र

मंद, ना० वा० सं० पुं० १ नीच २ धीरे ३ अभागी ४ मूढ़

मंदतर, ना० वा० सं० पुं० अतिनीच

मंदर, ना० वा० सं० पुं० मंदराचलपर्वत

मंदाकिनी, ना० वा० सं० स्त्री० गंगाजी

य

यह, दर्शक सर्वनाम-वह समय

यावत्, अव्य० जबतक, जितना

ये, स० ना० वा० पुं० सं० जो लोग, जे, यह

यं, स० ना० कर्म० सं० पुं० जिसको

र

रघुनाथ, ना० वा० सं० पुं० १ दशरथजी २ रामचन्द्रजी

रघुराज, ना० वा० सं० पुं० १ दशरथजी २ रामचन्द्रजी

रच्छक, ना० वा० भा० पुं० रक्षक रखवार

रज, ना० वा० सं० नपुं० धूलि

रजत, ना० वा० सं० नपुं० चांदी, रूपा

रजधानी, ना० वा० भा० स्त्री० राजधानी, राजाके रहनेकी जगह

रजनी, ना० वा० सं० स्त्री० रात्रि, रात

रजाई, ना० वा० भा० स्त्री० आज्ञा

रजायस, ना० वा० भा० स्त्री० राजाज्ञा, आज्ञा

रजु, ना० वा० भा० स्त्री० रज्जु, डोरी

रट, ना० वा० सं० स्त्री० बोलना

रतनारे, गु० वा० व० व० भा० पुं० लालरंग

रति, ना० वा० सं० स्त्री० १ प्रीति २ कामदेव की स्त्री

रथांग, ना० वा० सं० नपुं० चकई चकवा

रथी, ना० वा० त्रि० सं० पुं० रथयुत

रद, ना० वा० सं० पुं० दांत

रदपुट, ना० वा० सं० पुं० होठ, ओठ

रन, ना० वा० भा० पुं० रण, युद्ध

रनिवास, ना० वा० भा० पुं० १ रानी आदि २ जनाना स्थान

रवि, ना० वा० सं० पुं० रवि, सूरज

रविनंदिनि, ना० वा० सं० स्त्री० रविनंदिनी, यमुनानदी

रमन, ना० वा० सं० पुं० १ रमण, पति २ व्यापक ३ क्रीड़ा

रमा, ना० वा० सं० स्त्री० लक्ष्मी

रम्य, ना० वा० सं० पुं० सुन्दर

रय, ना० वा० सं० पुं० वेग, जल्दी

रये, क्रि० ब० व० रंगे

रवनी, ना०वा०भा०स्त्री०रमणी, स्त्री
रवन, ना०वा० भा० पुं० रमण, पति
रविमनि, ना० वा० भा० पुं० सूर्यकांतमणि
रस, ना०वा०सं०पुं० १ विषय २ सार ३ जल ४ मधुरआदि ५ श्रृंगार आदि ६ प्रेम ७ धीरे
रसना, ना० वा० सं० स्त्री० जीभ
रसा, ना० वा० सं० स्त्री० पृथ्वी
रसाल, गु० वा० सं० पुं० १ मीठा आमकापेड़, २ रसालय
रसिक, वि० सं० पुं० रसकाजाननेवाला
रहसि, ना० वा० अवि० सं० पुं० १ हर्ष २ एकांत
रहस्य, ना०वा०सं०पुं०गुप्ततत्त्व, भेद
राउत, ना० वा० भा० पुं० सरदार
राउर, ना० वा० भा० पुं० १ आपका २ राजमंदिर
राऊ, ना० वा० भा० पुं० राजा
राका, ना०वा० सं० स्त्री० पूर्णमासी
राकेस, ना० वा० भा० पुं० राकेश, पूर्णचन्द्र
राचा, वि० भा० पुं० लगा, राचना, लगना
राजत, ना० वा० भा० पुं० सोहता, शोभता, राजना, सोहना
राजति, क्रि० वा० सोहती है
राजनय, ना०वा०सं०पुं० राजनीति
राजी, ना० वा० वि० भा० स्त्री० १ राजि, पंगति २ प्रसन्न ३ शोभित
राजीव, ना० वा० सं० पुं० कमल
राजे, ना० वा० वि० ब० व० प्रसन्न
राता, ना० वा० वि० पुं० सं० रत, प्रीतियुत
रामायुध, ना० वा० सं० पुं० धनुष, बाण
राय, ना०वा०सं०पुं० १ राजा २ धन
रायमुनि, ना० वा० सं० पुं० लाल भाव पक्षी

रार, ना० वा० भा० पुं० झगड़ा
रासभ, ना० वा० सं० पुं० गधा
रासि, ना० वा० भा० पुं० राशि, ढेरी, समूह
राहु, ना० वा० सं० पुं० ग्रहविशेष
रिच्छेस, ना०वा०पुं०भा० जामवन्त
रितुराज, ना० वा० सं० पुं० ऋतुराज, वसन्त
रिपु, ना० वा० सं० पुं० वैरी
रिपुसूदन, ना० वा० सं० पुं० शत्रुघ्न
रिषि, ना० वा० सं० पुं० ऋषि, सूक्ष्मदर्शी
रिष्ट, गु० वा० सं० पुं० हर्षित, खुश
रिषिनायक, ना० वा० स० पुं० ऋषिनायक, अत्रिऋषि
रिसानी, ना० वा० भा० पुं० क्रोध, क्रुद्धभई, रिसाना
रीति, ना० वा० भा० पुं० खाली
रुख, ना० वा० भा० स्त्री० १ सम्मुख २ क्रोध, ३ दयादृष्टि
रुज, ना० वा० सं० पुं० रोग
रुह, ना० वा० सं० कृ० पुं० उत्पन्न
रुंड, ना० वा० सं० पु० धड़
रूखहु, वि० क्रि० कांटाका लांवा
रूरी, ना० वा० भा० स्त्री० सुन्दर
रेख, ना० वा० भा० स्त्री० १ रेखा, लकीर २ गिन्ती
रेता, ना० वा०भा०स्त्री० रेत, बालू
रेनु, ना० वा० भा० स्त्री० रेणु, धूरि
रेसू, ना० वा० भा० स्त्री० ईर्षा
रेंगाई, भा० वा० भा० स्त्री० चलाई, रेंगाना, चलाना
रोचन, ना० वा० सं० पुं० १ गोरोचन २ हरदी
रोदन, ना० वा० सं० नपुं० रोना
रोदिति, क्रि० वा० रोताहै
रोमपाट, ना० वा० भा० पुं० ऊनी कपड़ा
रोष, ना० वा० सं० पुं० क्रोध
रोहिनि, ना० वा० स्त्री० भा० रोहिणी, चन्द्रमा की स्त्री

रोहु, क्रि० वा० रोकना
रौताई, भा०वा०स्त्री०भा० सरदारी
रंक, ना० वा० सं० पुं० निर्धन
रंगभूमि, ना० वा० सं० स्त्री० धनुषयज्ञ की भूमि, रणभूमि
रंजनि, ना० वा०भा० स्त्री० रंजिनी, हर्ष देनेवाली
रंतिदेव, ना० वा० सं० पुं० एक राजाका नाम
रंध्र, ना० वा० सं० पुं० छेद

ल

लकुट, ना० वा० सं० पुं० लकड़ी
लगि, क्रि० वि० १ वास्ते २ तक ३ अवलम्ब
लघु, ना० वा० सं० पुं० १ हलुका २ थोड़ा ३ छोटा
लघुता, भा० वा० सं० स्त्री० हलुकई
लघुतापस, ना०वा०सं०पुं०लछिमन
लछ, ना० वा० भा० पुं० १ निसान, लच्छन २ लक्ष
लच्छा, ना० वा० भा० पुं० लक्ष, लाख, १०००००
लछि, ना० वा० भा० स्त्री० लक्ष्मी
लटत, क्रि० वा० मरताहै, घटना
लय, ना० वा० सं० पुं० १ चित्तवृत्ति २ नाश
ललना, ना० वा० स्त्री० सं० स्त्री
ललाट, ना० वा० सं० पुं० माथा
ललाम, ना० वा० सं० पुं० १ श्रेष्ठ २ रतन
ललित, ना० वा० सं० पुं० सुंदर
लव, ना० वा० सं० पुं० १ अंश २ अल्प ३ काल
लवन, ना०वा०भा० नपुं०लवण, नोन
लवनसिंधु, ना० वा० पुं० भा० लवणसिंधु, खारासमुद्र
लवा, ना०वा० भा० पुं० पक्षीविशेष
लवाई, क्रि० वि० १ नई बियाई गौ २ बिवाकरके

लखन, ना० वा० भा० पुं० १ ल-खणा २ देखना

लखहीं, क्रि० वा० देखते हैं, लखना, देखना

लखाऊ, ना० वा० भा० पुं० १ चिह्न २ जानना

लसत. क्रि० वा० सोहत, लसना, सोहना

लाई, संप्रदान कारक–वास्ते, लिये

लागू, ना० वा० पुं० भा. आधार, लाग

लाघव, ना० वा० सं० नपुं० १ शीघ्र २ हलका

लाजा, ना० वा० सं० स्त्री० १ ला-वा २ लज्जा

लाटी, ना० वा० भा० स्त्री० तालू आदि सूखने से होठों पर पपड़ी पड़जाती है

लालसा, ना० वा० सं० स्त्री० इच्छा

लाली, ना० वा० सं० स्त्री० दुलारी, लालना, दुलारना

लावक, ना० वा० सं० पुं० लवा

लावन्य, ना० वा० भा० पुं० लाव-ण्य, शोभा

लाहु, ना० वा० पुं० भा० लाभ

लांघे, ना० वा० वि० ब० व० पाये

लिलहिं, करणकारक लीला से विनाश्रम

लिलार, ना० वा० भा. पुं. ललाट, माथा

लीका, ना० वा० सं० स्त्री० १ लीक, मर्यादा २ रेखा ३ गिनती

लुठन, क्रि० वा० लोटना, लुठन

लुबुध, ना० वा० भा० पुं० लुब्ध, लोभी

लूक, ना० वा० सं० पुं० तारा, लुक

लेखई, क्रि० वा० लखतीहै, देखतीहै

लेखति, क्रि० वा० खोदती है

लेखा, ना० वा० सं० स्त्री० १ रेखा २ देवता ३ लखा, देखा ४ हिसाब

लेस, ना० वा० भा० पुं० लेश, थोड़ासा

लोई, ना० वा० भा० पुं० लोग

लोक, ना० वा० सं० पुं० १ जगत् २ पंचालिका आदि

लोकप, ना० वा० सं० पुं० लोकपाल, इन्द्रादि

लोगाई, ना० वा० स्त्री० भा० स्त्री, मेहरारू

लोना, गु० वा० भा० पुं० सुंदर

लोनाई, भा० वा० भा० स्त्री० सुन्दरता

लोयनि, ना० वा० भा० पुं० आंख

लोला, ना० वा० सं० पुं० लोल, चंचल

लोलुप, ना० वा० सं० पुं० लंपट

लोवा, ना० वा० भा० स्त्री० लोमड़ी

लोंद, ना० वा० सं० पुं० लौंदा, ढेर

स

सई, ना० वा० भा० स्त्री० एकनदीका नाम

सक, ना० वा० भा० पुं० १ सन्देह २ समर्थ

सकरुन, वि० भा० पुं० सकरुण, करु-णाकेसाथ, दीनताके साथ

सकल, ना० वा० नपुं० सं० १ सब २ कलाकेसाथ, विद्यायुत ३ सावयव

सकाना, वि० भा० पुं० डरा, डरना

सकाली, ना० वा० वि० स्त्री० भा० सकुचानी, सकालगा, सकुचाना

सकिलि, क्रि० वि० बटुरकरके इकट्ठा होकरके, सकिलना, बटुरना

सकुनि, ना० वा० भा० पुं० शकुनि, पक्षी, चिड़िया,

सकृत, अव्य० १ एक २ एकबार

सकेलि, क्रि० वि० बटोरकरके, स-केलना, बटोरना

सक्ती, ना० वा० भा० स्त्री० १ शक्ति दल २ स्त्री ३ बरछी

सक्र, ना० वा० पुं० भा० शक्र, इंद्र

सखर, ना० वा० वि० पुं० खरसमेत राक्षस

सगरे, ना० वा० वि० ब० व० पुं० भा० सब, सकल

सगर्भ, वि० सं० पुं० तात्पर्ययुक्त

सगलानि, ना० वा० भा० पुं० १ सग्लानि, निरादरसे २ ग्लानि के साथ, हर्षविना

सगाई, ना० वा० भा० स्त्री० नाता

सचान, ना० वा० पुं० भा० सिकरा, पक्षी विशेष

सचिव, ना० वा० सं० पुं० मन्त्री

सची, ना० वा० स्त्री० भा० इंद्राणी

सचु, ना० वा० भा० पुं० सुख, आनंद

सचेता, ना० वा० भा० पुं० सचेत, सावधान

सजग, ना० वा० वि० भा० पुं० साव-धान, खबरदार

सजनी, ना० वा० सं० स्त्री० सखी

सजाई, ना० वा० भा० स्त्री० १ दण्ड, सजा २ साजकरके, साजना

सजिव, ना० वा० भा० पुं० सजीव १ सुखसे जीना २ प्राणसहित

सजोवन, ना० वा० भा० पुं० तयारी

सठ, ना० वा० भा० पुं० शठ, मूर्ख

सडसिन्ह, ना० वा० भा० स्त्री० सनसि

सत, ना० वा० सं० पुं० १ साधु २ अविनाशी ३ शत, सौ ४ अच्छा

सतपंच, ना० वा० भा० पुं० सातपांच

सतरूपा, ना० वा० सं० स्त्री० मनुकी स्त्रीका नाम

सतानन्द, ना० वा० सं० पुं० जनक जीके पुरोहित का नाम

सति, ना० वा० सं० स्त्री० सूधी, सीधी

सती, ना० वा० सं० स्त्री० १ पति-व्रता २ दक्षकी बेटी

सत्यलोक, ना० वा० भा० पुं० ब्रह्मलोक

सद, ना० वा० सं० पुं० श्रेष्ठ, बैठनेवाला

सदन, ना० वा० सं० नपुं० घर

सदय, ना० वा० वि० सं० पुं० दयास-हित

सदाचार, ना० वा० वि० सं० पुं० श्रेष्ठ आचार, अच्छा आचरण है जिसका

सदैव, अव्य० सदाही, सदा, हमेशह

सच, अव्य० जल्दी, उसीकाल में

सन, अव्य० से, साथ

सनकादि, ना० वा० सं०पुं० सनक आदि चार ब्रह्माके बेटे

सनकारे, क्रि० वा० इशारा किया, सनकारना, इशारा करना

सनाथ, ना० वा० वि० सं० पुं० १ स्वामीसहित २ कृतार्थ

सनाह, ना०वा०वि०सं०पुं० १बख्तर २ सनाथ, पतिके साथ

सपच्छ, ना० वा० सं० पुं० सपक्ष, पंख सहित

सपथ, ना०वा०भा०पुं० शपथ, सौगंद

सपदि, अव्य० जल्दी, तुरंत

सपरब, ना० वा० वि० सं० पुं० सपर्व गांठ के साथ

सपेला, ना० वा० भा० पुं० सांप का बचा

सप्त, सं० वा० सं० पुं० सात

सप्तावरन, ना०वा०भा०पुं० प्रकृति आदि सात आवरण

सभीत, ना० वा० वि० सं० पुं० डरके साथ

सम, ना० वा० सं० पुं० १ बरोबर २वासनाकात्याग ३ रागद्वेषरहित

समदरसी, ना० वा० भा० पुं० समदर्शी, बरोबर देखनेवाला

समदि, क्रि० वि० पूजा करके

समन, ना० वा० भा० पुं० १ शमन, नाश २ यमराज

समय, ना० वा० सं० पुं० १ काल २ अच्छेदिन

समररस, ना०वा० सं०पुं० वीररस

समर्पै, क्रि० वि० सौंपै, समर्पना

समस्त, ना० वा० सं० नपुं० सब

सम्यक, अव्य० अच्छीभांति

समागत, ना० वा० सं० पुं० सभा

समाज, ना० वा० सं० पुं० १ सभा २ समूह

समाधि, ना० वा० सं० स्त्री० १ सुख २ स्थिरता

समान, ना०वा०सं०नपुं० १ बरोबर २ प्रवेश, समाना

समिध, ना०वा०सं०स्त्री० लकड़ी

समास, ना०वा०सं०पुं० संक्षेप, थोड़ा

समीती, ना०वा० भा० स्त्री० मिताई, दोस्ती

समीप, ना० वा० सं० नपुं० निकट, नियरे

समीर, ना०वा०सं० पुं० पवन, हवा

समीहा, ना० वा० सं० पुं० कायादिक तीनका व्यवहार

समुदाई, ना० वा० भा० पुं० समुदाय, समूह

समुहानी, ना०वा०भा० पुं० सम्मुख भई, समुहाना, सम्मुखहोना

सय, सं० वा० भा० पुं० सौ, १००

सयन, ना०वा०भा० पुं० १ सोवना २ शय्या ३ इशारा

सर, ना० वा० सं० पुं० १ तालाब २ बाण ३ चिन्ता

सरद, ना० वा० भा० पुं० शरद, एक ऋतुका नाम

सरपि, ना० वा० भा० पुं० घी

सरल, ना० वा० सं० पुं० १ सीधा २ सड़ा

सरवरि, ना०वा०भा०पुं० बराबरी

शर्वरी, ना० वा० भा० स्त्री० रात्रि, रात

सरस, ना० वा० सं० पुं० १ प्रेम सहित २ मकरन्द समेत

सरसई, ना० वा० सं० स्त्री० सरस्वती नदी

सरसीरुह, ना० वा०सं० पुं० कमल (तालाब में जो पैदाहो)

सरासन, ना०वा०भा० पुं० धनुष

शरासुर, ना०वा०भा० पुं० बाणासुर

सरि, सरित, } ना० वा० सं० स्त्री० नदी

सरिस, ना० वा० भा० पुं० समान, बराबर

सरुज, ना० वा० सं० पुं० रोगी, बीमरिहा, रोगयुक्त

सरुष, ना० वा० सं० पुं० क्रुद्ध, कोप सहित

सरेन, ना० वा० करणकारक-बरसे, बाण से

सरोज, ना० वा० सं० नपुं० पद्म, कमल

सरोरुह, ना० वा० सं० नपुं० कमल

सरौं, ना० वा० भा० पुं० डरइ

सर्व, ना० वा० सं० पुं० १ सब, सकल २ सबरूप

सर्वकाल, ना० वा० सं०पुं सबदिन

सर्वज्ञ, ना० वा०सं० पुं०सब जाननेवाला

सर्वदा, अव्य० सबदिन, हमेशा

शलभ, ना० वा० सं० पुं० पतंग, फतिंगा

सलिल, ना० वा० सं० नपुं० पानी, जल

सलोक, ना०वा० सं० पुं०यश, जस

सलोने ना० वा० भा० पुं० सुन्दर

सव, ना० वा० भा० पुं० शव, मुर्दा

सवीज, ना०वा०वि०सं० पुं० बीजाक्षर सहित

सस, ना० वा० सं० पुं० शशा, खरहा, खरगोश

ससक, ना०वा० सं०पुं० शशक, खरहा

ससि, ना० वा०भा० स्त्री० १ शशि, चन्द्रमा २ रेवती

ससिरस, ना०वा० सं०पुं० शशिरस, अमृत

सह, अव्य० समेत, सहित

सहगामिनी, ना० वा० सं० स्त्री० सती

सहज, ना० वा० सं० नपुं० स्वाभाविक, स्वभाव से पैदाहुआ

सहनी, ना० वा० भा० पुं० दरोगा

सहस, ना० वा० सं० पुं० १ डर २ बेफिकिर

सहरोसा, ना० वा० भा० पुं० १ उत्साह २दोषसहना, क्रोधसहना

सहस्र सं० ना० भा० पुं० सहस, हज़ार

सहस्रबाहु, ना० वा० भा० पुं० सहस्रबाहु, सहस्रभुज राजा

सहसा ना० वा० भा० स्त्री० १ जल्दी २ हठ ३ बिना विचारके

सहस्राक्षी, ना० वा० भा० पुं० १ सहस्राक्षि, हज़ारआंखरखनेवाला इन्द्र २ गवाक्षसमेत, साक्षीसहित

सहस्रानन, ना० वा० भा० पुं० शेषनाग, हज़ारमुंह रखनेवाला

सहाया, ना० वा० भा० पुं० १ साथ २ मददगार, सहायक

सहित, अव्य० १ हितसमेत, मित्र समेत २ सङ्ग समेत

सही, अव्य० भा० वा० निश्चय

सहेली, ना० वा० भा० स्त्री० सखी

सहोदर, ना० वा० सं० पुं० एक पेट से जन्मा

साईं, ना० वा० भा० पुं० स्वामी, मालिक

सांउज, ना० वा० भा० पुं० मृग, हरिण

शाकवनिक, ना० वा० भा० पुं० १ कुंजड़ा, साग बेचनेवाला २ बिसाती

शाखामृग, ना० वा० सं० पुं० वानर

शाखोच्चार, ना० वा० सं० पुं० वंशावली कहना

सागर, ना० वा० सं० पुं० समुद्र

साज, ना० वा० भा० पुं० १ सामग्री २ सजना

साढ़सातो, ना० वा० भा० पुं० शनीचरी दशा

साथरी, ना० वा० भा० स्त्री० आसनी

शाखा, ना० वा० भा० स्त्री० १ डार २ बहुत प्रकार के विचार

सादर, ना० वा० सं० पुं० आदरपूर्वक

साधक, ना० वा० वि० सं० पुं० साधन समेत, उपाययुक्त

साधक, ना० वा० सं० पुं० उपाय, तदबीर

साधा, ना० वा० वि० सिखाया

साधु, ना० वा० सं० पुं० १ सज्जन, भलाआदमी २ अच्छा ३ मोक्ष पाने की इच्छा रखनेवाला

साधुमत, ना० वा० सं० पुं० सिष्टाचार, अच्छा व्यवहार

साध्य, वि० साधने के योग्य

सान, ना० वा० भा० पुं० १ बाढ़, तेज करना २ मिलाना, आदरमान

सानी, ना० वा० वि० भा० स्त्री० मिली

सापत, क्रि० वि० शाप देताहुआ

साबर, ना० वा० सं० पुं० किरातके भेष में शिवकृततंत्रिमन्त्र

सामय, ना० वा० सं० पुं० समधियों का मिलना

सायक, ना० वा० सं० पुं० शायक, बाण, तीर

सायुज्य, ना० वा० सं० नपुं० ब्रह्म में लीन

शारद, ना० वा० भा० स्त्री० १ सरस्वती २ सार देनेवाला

शारदी, ना० वा० सं० स्त्री० जो वस्तु शरद्ऋतु में होती है

सारस, ना० वा० सं० पुं० एक चिड़िया

सारा, वि० ना० वा० भा० पुं० १ पासा, पोसा २ किया

सारी, ना० वा० सं० स्त्री० मैना

शारंग, ना० वा० सं० पुं० १ धनुष २ भौंरा

शाल, ना० वा० सं० पुं० १ दुःख २ शोभा ३ वर

शालक, ना० वा० सं० पुं० दुखदायी

शाली, ना० वा० सं० पुं० १ धान २ शोभा युक्त ३ संयुत

शावक, ना० वा० सं० पुं० शावक, बच्चा, चिड़ियाका बच्चा

श्यामकर्ण, ना० वा० भा० पुं० श्यामकर्ण, काले कानवाला घोड़ा

सावकाश, ना० वा० भा० पुं० काम से छुट्टी

सास्वत, ना० वा० सं० पुं० अमर

सिकता, ना० वा० सं० स्त्री० बालू

सिख, ना० वा० भा० पुं० १ शिक्षा २ शिष्य, चेला

शिखा, ना० वा० भा० स्त्री० १ चोटी दीया की टेम

शिंजिनी, ना० वा० सं० स्त्री० मौर्वी

सित, गु० वा० सं० पुं० श्वेत, सफ़ेद

शिथिल, ना० वा० सं० पुं० ढीला,

सिद्ध, ना० वा० वि० सं० पुं० कृ० १ अणिमादिसिद्धि २मुक्त ३ सिधारा

सिधारी, वि० गई, सिधारना, जाना

सिद्धि, ना० वा० सं० स्त्री० १ अणिमादि आठ सिद्धि २ कामहोना

सिमटे, वि० ना० वा० पुं० ब० व० इकट्ठे, सिमटना

सिय, ना० वा० भा० स्त्री० सीता

सिवन, ना० वा० भा० पुं० सीना

सियरे, वि० जूड़े

सिरस, ना० वा० भा० पुं० सिरसवृक्ष

सिरानी, ना० वा० भा० स्त्री० बीती, सिराना

सिरावै, क्रि० वा० ठंढाकरे

सिराहिं, क्रि० वा० बीतते हैं

सिरिजा, वि० रचा, बनाया (सं. सृज्)

शिलीमुख, ना० वा० सं० पुं० १ बानर २ भ्रमर

सिल्प, ना० वा० सं० पुं० शिल्प, कारीगरी, राजगीरी

सिव, ना० वा० भा० पुं० १ शिव, महादेव २ कल्यान

शिवशैल, ना० वा० भा० पुं० कैलास पर्वत

सिवा, ना० वा० भा० स्त्री० शिवा, पार्वती

सिवि, ना० वा० भा० पुं० शिवि, राजा

शिविका, ना० वा० भा० स्त्री० पालकी
सिसिर, ना० वा० भा० पुं० शिशिरऋतु
सिसु, ना० वा० भा० पुं० शिशु, लड़का, बच्चा
सिंसपा, ना० वा० सं० स्त्री० १ सीसोंका पेड़ २ सरीफ़ाका पेड़
शिश्न, ना० वा० भा० पुं० लिंग
सिहाहीं, ना० वा० भा० पुं० १ देखके संतुष्ट होते हैं २ अभिलाष, डाह, सिहाना
शीकर, ना० वा० सं० पुं० छींटा, बूंद
सीत, ना० वा० भा० पुं० १ शीत २ पाला ३ छंद
सीदहिं, क्रि० वा० दुखी होते हैं
सीपी, ना० वा० भा० स्त्री० सुतुही
सृगाल, ना० वा० सं० पुं० शृगाल, सियार
सृष्टि, ना० वा० सं० स्त्री० १ संसार २ उत्पत्ति
सुआर, ना० वा० भा० पुं० रसोईदार
सुअञ्जन, ना० वा० सं० पुं० अच्छा अञ्जन, सिद्धअञ्जन
शुक, ना० वा० सं० पुं० १ सुग्गा २ शुकदेवमुनि
सुकर्कश, गु० वा० सं० पुं० अतिकठोर
सुकृत, ना० वा० सं० पुं० पुण्य, अच्छीकरणी
सुकृती, ना० वा० सं० पुं० धर्मात्मा, अच्छा कार्य्य करनेवाला
सुकेत, ना० वा० सं० पुं० यक्षविशेष
सुकंठ, ना० वा० सं० पुं० सुग्रीव
सुखमा, ना० वा० सं० स्त्री० अतिशोभा
सुखासन, ना० वा० सं० नपुं० सुखपाल
शुक्र, ना० वा० सं० पुं० १ वीर्य्य २ शुक्राचार्य
सुगाइ, क्रि० वि० सगाकरके
सुघटित, ना० वा० वि० सं० कृ० अच्छाबना
सुघाई, भा० वा० भा० स्त्री० सुधाई
शुचि, गु० वा० भा० पुं० शुचि, पवित्र

सुचिन्तित, ना० वा० वि० सं० कृ० अति विचारित
सुजन, ना० वा० सं० पुं० साधु, भलाआदमी
सुजान, ना० वा० सं० पुं० चतुर
सुटुकि, ना० वा० वि० कोड़ामारके
सुठि, गु० वा० भा० पुं० अति, बहुत
सुत, ना० वा० सं० पुं० पुत्र, बेटा
सुदेसु, } ना० वा० भा० पुं०
सुदेसें, } १ सुदेश, २ अंग, ३ सुंदर देश
सुधा, ना० वा० सं० स्त्री० १ अमृत २ जल
सुधाकर, ना० वा० सं० पुं० चंद्रमा
सुनयना, ना० वा० सं० स्त्री० जनक की पत्नी
सुनासीर, ना० वा० भा० पुं० इंद्र
सुपास, ना० वा० भा० पुं० सुख, आराम, सुबिस्ता
सुगम, ना० वा० भा० पुं० सुघट्ट, सड़क
शुभ, गु० वा० भा० पुं० १ अच्छा २ सुन्दर, शोभा
सुभग, गु० वा० सं० पुं० १ सुंदर २ ऐश्वर्य
सुभगुन, ना० वा० भा० पुं० ज्ञान वैराग्यादि अच्छे गुण
सुभाउ, ना० वा० भा० पुं० १ संस्कार २ अच्छाभाव
सुभुज, ना० वा० सं० पुं० सुबाहु दैत्य
शुभ्र, ना० वा० सं० पुं० सफ़ेद
सुमन, ना० वा० सं० पुं० १ फूल २ सुंदर मन
सुमिरत, क्रि० वि० ध्यानकरताहुआ
सुमृति, ना० वा० भा० पुं० स्मृति ग्रंथ, धर्मशास्त्र
सुमंत्र, ना० वा० सं० पुं० अच्छा मंत्र, सलाह
सुरभि, ना० वा० सं० स्त्री० १ गैया २ सुगंध
सुरमनि, ना० वा० भा० पुं० चिन्तामणि

सुरद्रुम, ना० वा० भा० पुं० मंदार आदि पांचवृक्ष
सुरसर, ना० वा० सं० पुं० मानसरोवर
सुरसरि } ना० वा० सं० स्त्री०
सुरसरिता } गंगानदी, मंदाकिनी
सुरसेनप, ना० वा० सं० पुं० कार्त्तिकेय
सुरवीथी, ना० वा० सं० स्त्री० देवता की राह
सुरा, ना० वा० सं० स्त्री० मदिरा, शराब
सुराई, ना० वा० भा० स्त्री० शूरता, वीरता
सुरुचि, ना० वा० सं० स्त्री० अच्छीरुचि
सुरंगा, ना० वा० सं० पुं० १ पीत रंग २ लालरंग ३ अच्छारंग
सुलभ, ना० वा० सं० पुं० सुगम
सुवन, ना० वा० सं० पुं० सूनु, पुत्र
सुवस, ना० वा० सं० पुं० १ सुगंध २ यश
सुवासिनि, ना० वा० सं० स्त्री० सुहासिनि
सुवेल, ना० वा० सं० पुं० १ समुद्रका किनारा २ पर्वत ३ सुंदर समय
सुहाई, भा० वा० भा० स्त्री० सुंदर
सूकरखेत, ना० वा० भा० पुं० वाराहक्षेत्र
सूच }
सूचक } क्रि० वि० जताता हुआ
सूचत }
सूत, ना० वा० सं० पुं० १ सारथी २ पुराण से स्तुति करनेवाला
सूत्रधार, ना० वा० सं० पुं० पुतरी नचानेवाला
सूनु, ना० वा० सं० पुं० पुत्र
सूप, ना० वा० सं० पुं० १ दाल २ छाज
सूपकारक, ना० वा० सं० पुं० रसोइया, रसोई करनेवाला
सूल, ना० वा० भा० पुं० १ शूल, २ दुःख, ३ त्रिशूल
सेतु, ना० वा० सं० पुं० १ पुल, बांध २ मर्य्यादा
सेनप, ना० वा० सं० पुं० सेनापति
सेला, ना० वा० भा० पुं० बरछी, भाला
सेवी, ना० वा० सं० पुं० सेवक, सेवा करनेवाला

सेष, ना० वा० भा०पुं० १ शेषनाग २ थोड़ा, बाक़ी

शैल, ना० वा० भा० पुं० पर्वत

शैलजा, ना०वा०भा० स्त्री० पार्वती, गिरिजा

शैलराज,ना०वा०भा०पुं० हिमालय

शोचनीय, ना०वा०भा० पु० सोचने के योग्य

सोधा, ना०वा० वि० भा० पुं० शुद्ध किया

सोधेउ,ना०वा०वि०भा०पुं० खोजा, तलाश किया

सोन,ना०वा० भा० पुं० १ सोनभद्र नदी २ लाल ३ सोना

शोणित, ना०वा० सं०पुं०लोहू, रक्त

सोपान, ना० वा० सं० स्त्री० सीढ़ी

सोपि, सोपी, } सर्वनाम, अव्य० वह भी

सोम, ना० वा० सं० पुं० चन्द्रमा

शोर, ना० वा० भा० पुं० आवाज़

सोवत, वि० भा० पुं० सोताहुआ

सोह, ना० वा० भा० स्त्री० शोभा

सोहमस्मि, वाक्य० वही मैं हूं

सौधाई, ना० वा० भा० स्त्री० अच्छासमय

शौच, ना० वा० सं० पुं० १ शुद्धता २ दण्डकवन आदि

सौध, ना० वा० सं० पुं० मन्दिर

सौमित्रि ना० वा० सं० पुं० सुमित्रा का बेटा लक्ष्मण

सौरभ,ना०वा० सं०पुं०आमकापेड़

सौरज, ना० वा० सं० पुं० शूरता

सं, अव्यय सं० कल्याण, भला

संकट, ना०वा० सं० पुं० १ मूर्च्छा २ विपत्ति

संकर, ना० वा० भा० पुं० १ शिव, महादेव २ मिला हुआ

सकाश, ना० वा० सं० पुं० तुल्य, बराबर

संकुल, ना०वा० सं० पुं० पूर्ण,भरा-दिकुल

संगा, ना० वा० भा० पुं० १ संबन्ध २ राग

संग्रह, ना० वा० सं० पुं० अंगीकार, लेना

संघट, ना० वा० सं० पुं० संयोग

संघर्षन, ना० वा० सं० पुं० रगर

संघात, ना० वा० सं० पुं० १ समूह २ संबंध

संजम, ना० वा० सं० पुं० नियम

संजात, वि० सं० कृ० उत्पन्न, पैदाहुआ

संजुग, ना०वा०सं०पुं०युद्ध, लड़ाई

संयोग, ना० वा० सं० पुं० उपाय, तदबीर

संतत, अव्य० निरन्तर, सर्वदा, सबदिन

संदोह, ना० वा० सं० पुं० समूह

संधाने, ना० वा० भा० पुं० जोड़ा

सम्पन्न, वि० सं० कृ० १ युक्त २ धनी

संपुट, ना० वा० सं० पुं० १ हाथ जोर के २ डब्बा

संभव, ना० वा० सं० पुं० जन्म, उत्पत्ति

संभावति, वि० सं० कृ० अति आदर व मान किया गया

संभूत, वि० सं० क्रि० उत्पन्न, पैदा हुआ

संभ्रम, ना० वा० सं० पुं० १ वेग, जल्दी २ भ्रम धोखा, ३ उत्साह

संमत, ना० वा० वि० सं० पुं० सलाह से

शंबल,ना०वा०सं०पुं०राहकाख़र्चा

संबुक, ना० वा० सं० पुं० घोंघा

संसर्ग, ना० वा० सं० पुं० संगति

संसृति, ना० वा० सं० पुं० संसार, दुनिया

सांति,ना० वा०भा०पुं०शांति, शमन

सांसत,ना०वा०भा,पुं०१दंड२पीड़ा

सिंगरौर, ना० वा० भा० पुं० शृंगबेरपुर

सिंघल, ना० वा० भा०पुं० उपद्वीप विशेष

सिंधु, ना० वा० सं० पुं० समुद्र

सिंधुर, ना० वा० सं० पुं० हाथी

सिंह, ना० वा० सं० पुं० १ श्रेष्ठ २ व्याघ्र, बाघ

सींव, ना०वा० भा० स्त्री०हद, सीवा

शृंग, ना० वा०सं० पुं० सींग, शिखर

सुंदरी, ना० वा० सं० स्त्री० स्त्री

स्फुरत, क्रि० वि० चमकता हुआ

स्मरामहे,क्रि.वा०हम ध्यान करते हैं

श्यामल, ना०वा०भा०पुं० कालारंग

श्यामा, ना० वा० भा० स्त्री० १ एक चिड़िया २ सोलहवर्षकी स्त्री

स्यन्दन, ना० वा० सं० नपुं० रथ

स्रग,ना०वा०सं० स्त्री० फूलकीमाला

स्रजत, क्रि० वि० बनाता हुआ

श्रम, ना० वा० भा० पुं० श्रम, मेहनत, थकजाना

श्रमबिन्दु, ना०वा० सं०पुं० पसीना

श्रमित,वि.सं.कृ०नपुं० श्रमित, थका

श्रवन, ना० वा० भा० पुं० १ श्रवण २ कान ३ सुनना

स्रवत, क्रि० वि० १ गिरताहुआ २ बहता हुआ

श्री, ना० वा० सं० स्त्री० १ लता २ लक्ष्मी ३ धन ४ शोभा

श्रीपति, ना० वा० सं० पुं० श्री पति, विष्णु

श्रीफल, ना० वा० सं० नपुं० १ नारियर २ बेल

श्रीवत्स, ना० वा० सं० पुं० श्रीवत्स, लक्ष्मीका चिह्न

श्रीरंग, ना०वा० सं०पुं०लक्ष्मीपति

श्रुति, ना० वा० सं० पुं० श्रुति १ वेद २ कान ३ सुनना ४

स्रुवा, ना० वा० सं० पुं० होम में का एक काठ

श्रेनी, ना० वा० सं०स्त्री० १ श्रेणी २ पंक्ति ३ पांति ४ समूह

स्व, ना० वा० सं० पुं० अपना
स्वच्छता, ना० वा० भा० स्त्री० निर्मलता, सफ़ाई
स्वच्छन्द, ना० वा० सं० पुं० स्वाधीन, पराधीन नहीं
स्वपच, ना० वा० भा० पुं० चांडाल
स्वयं, ना० वा० सं० पुं० आपही, स्वतंत्र
स्वयंभुवमनु, ना० वा० सं० पुं० एक राजा का नाम
स्वल्प, गु० वा० सं० नपुं० १ छोटा २ थोड़ा
स्ववश, ना० वा० सं० पुं० अपने वश, पराधीन नहीं
स्वसेव्य, ना० वा० सं० पुं० अपने रूप से सेवा करने के योग्य
स्वागत, ना० वा० सं० नपुं० कुशल से आया
स्वाती, ना० वा० सं० स्त्री० नक्षत्रविशेष
स्वान, ना० वा० सं० पुं० कुत्ता
स्वामिधर्म, राज्यपालन, स्वामीका काम
स्वामी, ना० वा० सं० पुं० मालिक, राजा
स्वारथ, ना० वा० भा० पुं० सेवा, अपने अर्थ
स्वेद, ना० वा० सं० पुं० पसीना

ह

ह, अव्य० कष्ट
हई, ना० वा० भा० स्त्री० नाश की
हए, ना० वा० भा० नपुं० ब० व० मारे
हकरावा, ना० वा० भा० पुं० बुलावा
हट्ट, ना० वा० सं० पुं० दूकान
हते, ना० वा० सं० वि० पुं० मारे, नष्ट किये
हथवासह्य, ना० वा० भा० पुं० हांड़ा
हनत, क्रि० वा० मारता हुआ
हनू, ना० वा० भा० पुं० हनुमान्
हने, ना० वा० वि० भा० पुं० मारे बजाये, हनना, मारना
हय, ना० वा० सं० पुं० घोड़ा

हयरूढ़, ना० वा० सं० पुं० घोड़सवार
हयो, ना० वा० वि० भा० पुं० मारा
हर, ना० वा० सं० पुं० १ लेजाना २ शिव ३ चोरी ४ काटना
हरषत, क्रि० वि० खुशी, प्रसन्न
हरागिरि, ना० वा० सं० पुं० कैलास
हरति, क्रि० वा० संहारती हुई
हरद, ना० वा० भा० स्त्री० हलदी
हरासू, ना० वा० भा० पुं० दुःख, शोक
हरि, ना० वा० सं० पुं० १ विष्णु २ कृष्ण ३ वानर ४ घोड़ा
हरिचंद, ना० वा० भा० पुं० राजा विशेष
हरिजाना, ना० वा० भा० पुं० गरुड़
हरित, गु० वा० सं० पुं० हरे रंग का
हरी, ना० वा० वि० सं० स्त्री० चोराई, हरना
हरु, ना० वा० भा० पुं० हलका
हरुवाई, ना० वा० भा० स्त्री० हलकापन
हलधर, ना० वा० सं० पुं० बलदेव
हवि, ना० वा० सं० स्त्री० खीर, हव्य
हस्त, ना० वा० सं० पुं० हाथ
हहरि, वाक्य अव्य० घबराकर
हा, अव्य० १ दुःख २ नाश
हाटक, ना० वा० सं० पुं० सोना
हानि, ना० वा० सं० पुं० १ नुकसान २ नाश
हि, अव्य० निश्चय
हिके, ना० वा० क० का० भा० पुं० हृदय के
हित, ना० वा० सं० पुं० १ मित्र, दोस्त २ भला, अच्छा
हिम, ना० वा० सं० पुं० १ ऋतु विशेष २ पाला
हिमउपल, ना० वा० भा० पुं० बनौरी
हिमकर, ना० वा० सं० पुं० चंद्रमा
हिमशैल, ना० वा० सं० पुं० हिमालय पर्वत

हिमवन्त, ना० वा० सं० पुं० हिमाचल पर्वत
हिय, ना० वा० भा० पुं० हृदय
हिलिवा, ना० वा० भा० स्त्री० बराबरी
हृदयनिकेत, ना० वा० सं० पुं० कामदेव
हृदयेशा, ना० वा० सं० पुं० अन्तर्यामी
हुनर, ना० वा० भा० पुं० चतुराई
हुने, ना० वा० वि० होम किया
हुमकि, क्रि० वि० कूदके
हुलसी, ना० वा० भा० स्त्री० १ सुखी २ तुलसीदासकी माता
हुलासु, ना० वा० भा० पुं० आनंद, खुशी
हेति, अव्य० हा इति, हा यह
हेतु, ना० वा० सं० पुं० १ कारण, सबब २ प्रेम ३ प्रयोजन, काम
हेम, ना० वा० सं० पुं० सोना
हेरि, वि० क्रि० १ देखके २ खोजके ३ विचारके
हेला, ना० वा० सं० स्त्री० १ क्रीड़ा २ अनायास, बेकाम
हंकारी, क्रि० वि० बुलाकर
हंसा, ना० वा० सं० पुं० १ पक्षी २ सूप
हांती, ना० वा० भा० पुं० नाश
हिंस, ना० वा० भा० पुं० घोड़े का शब्द
हिंसा, ना० वा० सं० स्त्री० जीवमारना
हिंहिनाहीं, ना० वा० भा० पुं० हिनहिनाते हैं
हौंचे, क्रि० वि० ढबके
ह्रद, ना० वा० सं० पुं० बहुतगहिरा तालाब, दह

त्र

त्रयरेखा, ना० वा० सं० स्त्री० त्रिवली, तीनपंक्ति
त्रसित, ना० वा० सं० पुं० डरा, भययुत
त्राता, ना० वा० सं० पुं० रक्षाकरनेवाला
त्रातु, क्रि० वा० रक्षाकरो

त्रास, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ डर, भय

त्रासक, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ भयंकर, डेरावनी

त्राहि, क्रि॰ वि॰ रक्षाकरो

त्रिकाल ना॰वा॰सं॰ पुं॰ तीनकाल भूत भविष्यत् और वर्त्तमान

त्रिधा, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ तीन-विधि

त्रिपुर,ना॰ वा॰सं॰ पुं॰ दैत्यविशेष

त्रिपुण्ड्,ना॰वा॰सं॰पुं॰तीनरेखाका तिलक

त्रिविक्रम, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ विराट् रूप

त्रिविध,ना॰वा॰सं॰पुं॰१सात्त्विका-दि तीनविधि, २ मन, कर्म,वचन

त्रिय, ना॰ वा॰ भा॰ स्त्री॰ स्त्री

त्रिकुटी, ना॰ वा॰ भा॰ पुं॰ तरकश

ज्ञ

ज्ञाति,ना॰वा॰सं॰पुं॰ जातिकेलोग

ज्ञान, ना॰ वा॰ सं॰ पुं॰ शास्त्रसे जो हुआ

—०—

ना॰ वा॰=नाम वाचक

क्रि॰ वि॰=क्रिया विशेषण

वि॰=विशेषण

अ॰वा॰=अधिकरण वाचक

प्र॰ वा॰=प्रमाण वाचक

अ॰=अव्यय

स॰=सर्वनाम

पुं॰=पुंल्लिंग

स्त्री॰= स्त्रीलिंग

नपुं॰=नपुंसकलिंग

सं॰=संस्कृत

भा॰=भाषा

प्रा॰=प्राकृत

गु॰ वा॰=गुणवाचक

वि॰ ना॰=विशेषनाम

वि॰ क्रि॰=विधिक्रिया

सं॰ वा॰=संख्यावाचक

भा॰ वा॰=भाव वाचक

ब॰ व॰=बहुवचन

द॰ स॰=दर्शक सर्वनाम

प्र॰ वा॰=प्रत्यक्ष वाचक

आ॰ वा॰=आशिष्य वाचक

स॰ना॰अ॰=सर्वनामवाचीअव्यय

कृ॰=कृदन्त

जा॰वा॰=जातिवाचक

प्र॰=प्रत्यय

अ॰=अनिश्चय वाचक सर्वनाम

त्रलिं॰=स्त्रीलिंग पुंलिंग स्त्री॰ नपुं॰

नि॰ अ॰=निषेधार्थक अव्यय

—०—

तथा मोटे और चिकने काग़ज़ की ॥

और इसके काण्ड भी अलग २ मिलते हैं॥

रामायण टीका रामचरणदासकृत किताबनुमा व पत्रानुमा ॥

इस विस्तृत टीकाको अयोध्यानिवासि रामचरणदासजी टीकाकारने निजदेशभाषा में करके रामायण को ऐसा सुगम करदिया कि जो थोड़ी भी विद्या रखते हों वे रामायणका पूरा आशय समझजावें और गूढ़ाशयों के समझने और भक्तिपक्ष के बढ़ाने के लिये श्रुति पुराण और अन्य आचार्यों के श्लोकों से विभूषितकरके अतिसुन्दर मनोहर बनादिया कोई सन्देह अब तुलसीकृत रामायणकी पुस्तक में इस टीका के देखने से रह नहीं गया ऐसा विचित्र और विस्तृत टीका आजतक रामायण में नहीं हुआ है अवलोकन करने से अतीवानन्द होगा ॥

श्रीमद्वाल्मीकीयरामायण ॥

पूरे सातोकाण्ड अयोध्यापाठशाला के तृतीयाध्यापक पण्डितमहेशदत्तकृत भाषा—यह वही पण्डितजी महाराज हैं जिन्होंने पहिले देवीभागवत और विष्णुपुराणका उल्था कियाहै दोभागोंमें याथातथ्य सुगमरीतिसे परिपूर्ण श्लोकके अनुसार हुआहै कोई शब्द भी छूटने नहीं पाया और श्लोक के जानने के लिये अंकभी लगादिये कि भ्रम न पड़े अक्षर टैपके बहुत पुष्ट डबलपैका अबकी दूसरी बार बड़ी होशियारी से छापीगई है ॥

रामायणतुलसीकृत टीका बैजनाथकृत ॥

इस उत्तमोत्तम व नवीन विस्तृत टीकाको श्रीनवाबगंज प्रदेशान्तर्गत डेहवामानपुरके नम्बरदार बैजनाथजीने सकल आगम निगम पुराण स्मृति वेदान्तादि का सम्मत लेकर निर्मित किया है प्रथम तो इस टीका में विशेष उत्तम वार्ता यह किया है कि सनातन भाषा अर्थात् देहातके बोलचालवाले शब्दों में अतिसरलतायुक्त है दूसरे रामायण के किसी गूढ़ व सरल स्थल

का आशय नहीं रहनेपाय। कहांतक प्रशंसा करें—आजतक तो ऐसा टीका देखने में नहीं आया कि जिसके अवलोकनमात्रसे रामायणका अर्थ अच्छे प्रकार भासित होजायगा—इसके सिवाय इन्हीं महाशयने—रामायणकवितावली—बरवै—छप्पै—कुण्डलिया—दोहावली—विनयपत्रिका—रामायणसतसयी और यावत् श्रीगोसाईंजीकी काव्य हैं उन सबका तिलक सुन्दर आर्य भाषा में किया है—और वे सब इस छापेखाने में छापीगई हैं आशा है कि जो विद्वान् दृष्टिगोचर करेंगे परमानन्द होंगे ॥

रामनिवासरामायण ॥

जानकीप्रसादजीकृत—जिसमें तुलसीकृतरामायण की रीति से सातो काण्ड श्रीरामचन्द्रजन्मोत्सवबाललीला, विश्वामित्रयज्ञरक्षण, धनुर्यज्ञ, जानकीस्वयंवर, धनुर्भङ्ग, परशुरामसंवाद, वनगमन, जानकीहरण, रावणवध, भरतमिलाप, राज्याभिषेक, ज्ञानमार्ग रामगीता, दयाधिकार, जानकीविजय, अश्वमेधयज्ञ, विनयनयनीतिविचारादि की ललित कथा अनेक छन्दों में वर्णित है ॥

रामायणअध्यात्मविचार भाषा ॥

पं॰ वसुधाशंकरजी रचित जिसमें श्रीरामचन्द्रादि चारोंभाई और सर्व्व रामायण की पूरी कथा वेदान्तशास्त्र की रीति श्रुतिसमन्वयपूर्व्वक वर्णन कीगई है ॥

अध्यात्मरामायण पं॰ उमादत्तजीकृतभाषाटीकासहित ॥

यह गुप्त रामायण श्रीशिवजी महाराज ने पहले पार्व्वती से वर्णन की वही ज्ञानामृत ब्रह्माजीने नारदजीसे उपदेशकिया और नारदजीसे वाल्मीकि व्यासआदि ऋषियों ने प्राप्तकिया व्यासजीसे सूत ने अध्यात्मज्ञान पाकर नैमिषारण्य में शौनकआदि ऋषियों को ब्रह्माण्डपुराण में सुनाया जिससे इस दिव्य ज्ञानरूपरामायणका प्रचार लोक में प्रसिद्ध हुआ ॥

पुस्तक वितरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित १५ वें दिन तक यह पुस्तक पुस्तकालय में वापिस आ जानी चाहिए। अन्यथा ५ नये पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब दण्ड लगेगा।

	४१,६०१	